



621452



गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय  
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान या दि  
न लगायें।

आरम्भ ।  
सा० संख्या २८ पंजिका संख्या  
पुस्तकों पर सर्वप्रकार की निशानियां लगाना  
अनुचित है।  
कोई विद्यार्थी पन्द्रह दिन से अधिक पुस्तक नहीं  
रख सकता ।



42,452

## पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या

५३४५२

आगत संख्या

५३४५२

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे आकर २ - निशान  
सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जाना  
चाहिए। अन्यथा ५० वें से प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब  
दण्ड लगेगा।







20-2-6  
१२

॥ अथ श्रीस्वामीचिदधनानंदगिरिकृततत्त्वानुसंधानप्रारंभः ॥

यह पुस्तक सन १८६७ का २५ कायदासुजव ग्रंथकर्त्ताने रजिष्टर कराया है

CHECKED

१७३

५२४५७













पत्र पृष्ठ पंक्ति

अशुद्धपाठ

शुद्धपाठ.

पत्र पृष्ठ पंक्ति

अशुद्धपाठ

शुद्धपाठ.





पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धपाठ	शुद्धपाठ.	पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धपाठ	शुद्धपाठ.
२	१	१२	येषां हृदि स्थितो....	येषां हृदि स्थो.	४९	१	८	सोनाभी....	सोनाभि.
५	१	२	अपणी स्थिति विषे.	आपणी स्थिति विषे.	५५	१	६	भूतेषु....	भूतेषु.
५	१	९	परी अवसान ....	परि अवसान.	६५	२	७	कल्पतरू....	कल्पतरू.
७	२	२	चक्षुरिन्द्रिय ....	चक्षुइन्द्रिय.	७०	१	१	सा उक्तवृत्तिभि....	सा उक्तवृत्तिभी.
८	२	१४	भूतौका....	भूतौका.	७५	१	६	यथार्थस्मृतिज्ञानविषे	आपणे सुखादिकों के यथार्थ स्मृतिज्ञानविषे.
१२	१	६	सौजन्मांतरका....	सौजन्मांतरका.	८२	२	३	सहकारीत्व ....	सहकारित्व.
१३	१	१३	सुखकी प्राप्तिरूप.	सुखकी प्राप्तिरूप.	८३	१	१७	प्रवृत्ति होणे तै	अवृत्ति होणे तै.
१३	१	१५	जो माहावाक्यार्थ....	जो महावाक्यार्थ.	८७	१	५	इस प्रमाण भूत ....	इस अप्रमाण भूत.
२४	१	१	गजत्व विषे....	जगत्व विषे.	८७	१	७	कारणता .....	करणता.
२६	१	३	तिरस्काकुं....	तिरस्कारकुं.	९२	२	१	ईहा ....	ईहां.
२७	२	६	तथा तथा....	तथा.	९६	१	५	और ....	और.
२८	१	९	अकाशादिक ....	आकाशादिक.	१०६	२	१७	न चेदिहावे दीन्महती	न चेदिहावे दिर्महती.
२९	२	८	नाना हीं ह....	नाना हीं हैं.	११२	२	९	इंद्रियों के....	इंद्रियों के.
३६	१	११	सर्वस्य कर्त्ता ....	सर्वस्य कर्त्ता.	१२५	१	४	तालक्षणविषे प्रमाणजन्य	तालक्षणविषे प्रमाणाजन्य
३७	१	१	तहा श्रुति....	तहां श्रुति.	१३९	१	१६	ताविसंवादी प्रवृत्ति	ताविसंवादि प्रवृत्ति.
४१	१	२	दापेरमाणु....	दोपरमाणु.	१३९	१	१७	विसंवादी प्रवृत्तिजनकत्वात्	विसंवादि प्रवृत्तिजनकत्वात्
४२	२	२	इंद्रियों विषे.....	इंद्रियों विषे.	१४१	२	७	मिथ्यावादि होणे तै	मिथ्यावादी होणे तै.
४४	२	८	स्थान के भेद तै ....	स्थान के भेद तै.	१४७	१	३	स्वप्रकाशपणेका....	स्वप्रकाशपणेका.
४४	२	११	गमनवाला ....	गमनवाला.					



तत्त्वा०

॥ १ ॥

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धपाठ	शुद्धपाठ.	पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धपाठ	शुद्धपाठ.
१९८	१	१७	जोरजतभ्रमहै ....	जोरजतभ्रमहै.	१९१	१	१३	प्राणसंपदका ....	प्राणस्पंदका.
१९८	२	९	अभासमात्र ....	आभासमात्र.	१९१	२	३	दक्षिणानासिका....	दक्षिणनासिका.
१६३	१	९	सजितेंद्रियाः ....	संजितेंद्रियाः	१९२	१	९	अहार....	आहार.
१७०	२	८	कोईअधिकारी....	कोईअधिकारीभी.	१९६	१	१६	तेमाहात्माजन ....	तेमहात्माजन.
१७९	२	९	विद्वत्संन्यासकूं ....	विद्वत्संन्यासकूं.	२०७	१	११	पदर्थोंके....	पदार्थोंके.
१८६	२	११	एकश्चरेद्रहसि....	एकश्चरन्रहसि.					



शुद्धि०

॥ १ ॥



श्रीगणेशायनमः ॥ इससंसारविषे मोक्षतैंपरे दूसराकोईपदार्थ अधिकनहींहै ॥ किंतु मोक्षहीं सर्वतैं अधिकहै ॥ काहेतैं मोक्षकूं प्राप्तहूआ यहअधिकारीपुरुष पुनः जन्ममरणादिरूपसंसारकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ यहवार्त्ता लोकविषे प्रसिद्धहै ॥ तथा ( नसपुनरावर्त्तते । यद्वत्त्वाननिवर्त्तते । अनावृत्तिःशब्दात् ) इत्यादिक श्रुति स्मृति सूत्र करिकैभी सिद्धहै ॥ यातैं इनअधिकारीपुरुषोंनैं तामोक्षकूंहीं संपादन कन्या चाहिये ॥ जिसकरिकै पुनः जन्ममरणादिरूपसंसारकीप्राप्ति नहींहोवै ॥ तहां इसजीवात्माकी जा अज्ञानकीनिवृत्तिपूर्वक आपणेसच्चिदानंदब्रह्मरूपतैंस्थितिहै ताकानाम मोक्षहै ॥ ब्रह्मलोकादिकोंकीप्राप्ति मोक्षरूपनहींहै ॥ जिसकारणतैं ( तद्यथेहकर्मचितोलोकःक्षीयते एवमेवामुत्रपुण्यचितोलोकःक्षीयते ) इसश्रुतिनैं इसलोककीन्यांई तेब्रह्मलोकादिकभी नाशवान्कह्येहैं ॥ और ( आब्रह्मभुवनालोकाःपुनरावर्त्तिनोऽर्जुन ) इसगीतावचनकरिकै श्रीभगवान्नेंभी तेब्रह्मलोकादिकलोक पुनरावृत्तिवाले कह्येहैं ॥ यातैं तिनलोकोंकीप्राप्ति मोक्षरूपनहींहै ॥ सोउक्तमोक्ष इनअधिकारीपुरुषोंकूं एकआत्मज्ञानकरिकैहीं प्राप्तहोवैहै ॥ अन्यकिसीकर्मउपासनादिकउपायकरिकै प्राप्तहोतानहीं ॥ काहेतैं ( ज्ञानादेवतुकैवल्यं । तमेवविदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय ) इत्यादिकश्रुतियोंनैं केवलआत्मज्ञानतैंहीं मोक्षकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और ( नास्त्यकृतःकृतेन । नकर्मणा नप्रजया नधनेन त्यागेनैकेअमृतत्वमानशुः ) इत्यादिकश्रुतियोंनैं कर्मउपासनादिकोंतैंमोक्षकीप्राप्तिका निषेधकन्याहै ॥ यातैं एकआत्मज्ञानहीं तामोक्षकेप्राप्तिका साधनहै ॥ तहां ब्रह्मतैंअभिन्नरूपकरिकै जो आपणेआत्माका अहंब्रह्मास्मि याप्र



तत्त्वा०

॥ १ ॥

प्रस्ता०

कारकाज्ञानहै ताकानाम आत्मज्ञानहै ॥ इसप्रकारके आत्मज्ञानकरिकैहीं सो उक्तमोक्ष प्राप्तहोवैहै ॥ जीवब्रह्मके भेदज्ञानतैं सो मोक्ष प्राप्तहोतानहीं ॥ काहेतैं ( उदरमंतरंकुरुतेऽथ तस्य भयं भवति । द्वितीयाद्वैभयं भवति ) इत्यादिक श्रुतियोंनैं भेददर्शीपुरुषकूं भयकी प्राप्ति कथनकरीहै ॥ तथा ( मृत्योः समृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति ) इत्यादिक श्रुतियोंनैं ता भेददर्शीपुरुषकूं पुनः पुनः जन्ममरणकी प्राप्ति कथनकरीहै ॥ और ( अथ योऽन्यादेवतामुपास्तेऽन्यो सावन्योऽहमस्मीति न स वेद यथा पशुः ) इत्यादिक श्रुतियोंनैं ता भेददर्शीपुरुषकूं पशुकह्याहै ॥ यातैं ता भेदज्ञानकूं मोक्षकी साधनता संभवतीनहीं ॥ उलटा इन उक्त श्रुतियोंतैं जन्ममरणरूप संसारकीहीं साधनता सिद्धहोवैहै ॥ और ( प्रज्ञानं ब्रह्म । अहं ब्रह्मास्मि । तत्त्वमसि । अयमात्मा ब्रह्म ) इत्यादिक श्रुतियोंनैं तथा ( क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि ) इत्यादिक स्मृतिवचनोंनैं ता जीवब्रह्मका अभेदहीं कथनकन्याहै ॥ यातैं अहं ब्रह्मास्मि या प्रकारका जीवब्रह्मका अभेदज्ञानहीं तामोक्षका साधन सिद्धहोवैहै ॥ सो मोक्षका साधनरूप आत्मज्ञान इन अधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्ता गुरुके मुखतैं वेदांत शास्त्रके श्रवण मनन निदिध्यासन करिकैहीं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं तामोक्षकी इच्छावाले अधिकारीपुरुषोंनैं श्रवणादिक साधनोंकरिकै सो आत्मज्ञान अवश्य संपादन कन्या चाहिये ॥ और जे पुरुष प्रमाद करिकै ता आत्मज्ञानकूं नहीं संपादन करेहैं ॥ तिन पुरुषोंकूं ( न चेदिहा वेदिर्महती विनष्टिः ) इस श्रुतिनैं जन्ममरणादिरूप महान् हानिकी प्राप्ति कथनकरीहै ॥ तथा ( यो वा एतदक्षरं गार्ग्यं विदित्वा स्मालोकात् प्रैतिसकृपणः ) इस श्रुतिनैं आत्मज्ञानतैं रहित पुरुषकूं कृपण कहाहै ॥ अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्ध कृपण पुरुष प्राप्तहु पणधनके उपभोगतैं रहितहोवैहै ॥ तैसे अज्ञानी पुरुषभी नित्य प्राप्त ब्रह्मानंदरूप धनके साक्षात्काररूप उपभोगतैं रहितहोनेतैं कृपणहींहै ॥ और जो अधिकारीपुरुष श्रवणादिक साधनोंकरिकै ता आत्मज्ञानकूं संपा

॥ १ ॥



दनकरेहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकूं ( अथयएतदक्षरंगार्गिविदित्वास्माल्लोकात्प्रैतिसब्राह्मणः ) इसश्रुतिनै  
 ब्राह्मण कहाहै ॥ तथा गीताविषे श्रीभगवाननैभी ( ज्ञानीत्वात्मैवमेतं ) इसवचनकरिकै ताज्ञानवा  
 नपुरुषकूं आपणाआत्माहीं कहाहै ॥ यातैं इनअधिकारीपुरुषोंनै मोक्षकीप्राप्तिवासतै सोआत्मज्ञान  
 श्रवणादिकोंकरिकै अवश्य संपादनकरणेयोग्यहै ॥ याकारणतैंहीं वेदविषे ( आत्मावाअरेद्रष्टव्यः ) इस  
 श्रुतिनै आत्मज्ञानकीअवश्यकर्तव्यताकूं कहिकै ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै ( श्रोतव्यो मंतव्यो निदि  
 ध्यासितव्यः ) इसश्रुतिनै श्रवण मनन निदिध्यासन यहतीनसाधन विधानकन्येहैं ॥ यातैं सर्ववेदों  
 का साक्षात् वा परंपरातैं ताआत्मज्ञानविषेहीं तात्पर्यहै ॥ तहां वेदकेकर्मकांडकातों अंतःकरणकीशु  
 द्धिद्वारा ताआत्मज्ञानविषे तात्पर्यहै ॥ और उपासनाकांडका चित्तकीएकाग्रताद्वारा तात्पर्यहै ॥ और  
 उपनिषद्रूपज्ञानकांडकातों साक्षात्हीं ताआत्मज्ञानविषे तात्पर्यहै ॥ इसप्रकार मनुभगवान् याज्ञव  
 ल्क्य पराशर आदिकऋषियोंनै जे धर्मशास्त्ररूपस्मृतियां करीहैं ॥ तथा श्रीव्यासभगवान् जे ब्रह्मसू  
 त्र तथाइतिहास पुराण कन्येहैं ॥ तिनसर्वोंकाभी ताब्रह्मात्मैकत्वज्ञानविषेहीं तात्पर्यहै ॥ तथा वाल्मी  
 कऋषिनैभी वासिष्ठरामायणविषे अनेकइतिहासोंकरिकै इसआत्मज्ञानकाहीं निरूपणकन्याहै ॥ ऐसे  
 अनादिश्रुतिस्मृतिआदिकोंकरिकैसिद्ध आत्मज्ञानकूंहीं श्रीभगवान्शंकराचार्यनै उपनिषद्भाष्यविषे त  
 थासूत्रभाष्यविषे तथागीताभाष्यविषे अतिस्पष्टकरिकै निरूपणकन्याहै ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवान्  
 नै शिवपुराणविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( व्याकुर्वन्व्याससूत्रार्थं श्रुतेरर्थयथोचिवान् श्रुतेर्न्या  
 य्यःसएवार्थः शंकरःसविताननः ) अर्थयह ॥ वेदोंकेअन्यथाअर्थकूंनिश्चयकरिकै अनर्थकूंप्राप्तहूएलोकोंकूं  
 देखिकै सर्वदेवतावोंकरिकैप्रार्थनाकन्याहूआ श्रीभगवान्शंकर पृथिवीविषे श्रीशंकराचार्यरूपअवतार



तत्त्वा०

॥ २ ॥

कूंधारणकरिकै श्रीव्यासभगवान्कृतब्रह्मसूत्रोंकाव्याख्यानकरतेहूए जिसप्रकारका श्रुतियोंकाअर्थ क  
 रतेभयेहैं ॥ सोईहीं श्रुतियोंकाअर्थ समीचीनहै ॥ तिसतैंअन्यप्रकारकाअर्थ समीचीननहींहै इति ॥  
 और ताभगवान्शंकराचार्यकी शिष्यपरंपराविषे अनेकविद्वान्संन्यासी तथाअनेकविद्वान्ब्राह्मण हूए  
 हैं ॥ तिनोंनैं तिनसूत्रभाष्यादिकोंऊपरि टीकाग्रंथ कन्येहैं ॥ तथा स्मृति इतिहास पुराण आदिकोंऊ  
 परि टीकाग्रंथकन्येहैं ॥ तथा स्वतंत्र अनेकप्रकरणग्रंथ कन्येहैं ॥ तेग्रंथ इदानींकालविषेभी सर्वत्रप्रसि  
 द्दहैं ॥ तिनग्रंथोंविषेभी सोजीवब्रह्मकाअभेदज्ञानहीं सिद्धकन्याहै ॥ तहां केईकग्रंथतों इतरमतोंकेखंड  
 नपूर्वक स्वमतकेस्थापनकरणेहारे रचेहैं ॥ जैसे चित्सुखी अद्वैतसिद्धि संक्षेपशारीरक स्वाराज्यसिद्धि  
 वेदांतपरिभाषा सिद्धांतलेश अद्वैतकौस्तुभ भेदधिकार इत्यादिकग्रंथहैं ॥ और केईकग्रंथतों केवल स्व  
 मतकेस्थापनकरणेहारेहीं रचेहैं ॥ जैसे पंचदशी वेदांतसार अपरोक्षानुभूति वाक्यवृत्ति वाक्यसुधा जी  
 वन्मुक्ति विवेकचूडामणि आत्मबोध तत्त्वबोध इत्यादिकग्रंथहैं ॥ इसप्रकार अधिकारीपुरुषोंकेबुद्धिकी  
 तारतम्यताकेअनुसार विद्वान्पुरुषोंनैं अत्यंतविस्तारवाले तथाथोडेविस्तारवाले तथाअत्यंतकठिन तथा  
 अत्यंतसुगम ऐसेअनेक वेदांतकेग्रंथ कन्येहैं ॥ तिनसर्वग्रंथकर्त्तापुरुषोंका इनअधिकारीपुरुषोंके आत्म  
 ज्ञानकरावणेविषेहीं तात्पर्यहै ॥ अर्थात् कोईप्रकारकरिकैभी इनअधिकारीपुरुषोंकूं आत्माकासाक्षात्का  
 रहोवै ॥ जिसकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवै ॥ और जेअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक तिनग्रंथोंकाविचारक  
 रेहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ परंतु तेसर्वग्रंथ संस्कृ  
 तवाणीविषेहैं ॥ यातैं सर्वअधिकारीपुरुषोंकी तिनग्रंथोंकेविचारविषे प्रवृत्ति होइसकेनहीं ॥ किंतु व्या  
 करण काव्य कोश आदिकसाधनग्रंथोंकेअभ्यासवालेपुरुषोंकीहीं तिनसंस्कृतग्रंथोंकेविचारविषे प्रवृत्ति

प्रस्ता०

॥ २ ॥



होवैहै ॥ और जे अधिकारी पुरुष शरीरकी अति अवस्थातैं अथवा कोई व्याधि आदिक निमित्त तैं तिन व्याकरणादिकों के संपादन करने विषे समर्थ नहीं हैं ॥ और आत्मज्ञानकी उत्कट इच्छा है ॥ तिन मुमुक्षुजनों के बोध वासतैं महात्माजनों तिस तिस देशकी भाषा विषे वेदांत के ग्रंथ क्ये हैं ॥ तिन भाषाग्रंथों के विचार करने तैं तिन अधिकारी पुरुषों कूं सो आत्मसाक्षात्कार अवश्य होवैहै ॥ काहे तैं संस्कृत वेदांत ग्रंथों विषे आत्मज्ञान के उपयोगी जे जे पदार्थ निरूपण क्ये हैं ॥ ते सर्व पदार्थ तिन भाषाग्रंथों विषे भी निरूपण क्ये हैं ॥ तिन पदार्थों विषे किंचित् मात्र भी विलक्षणता नहीं है ॥ या तैं तिन भाषाग्रंथों के विचार तैं अधिकारी पुरुषों कूं सो आत्मज्ञान अवश्य होवैहै ॥ किंवा तिस तिस देश विषे संस्कृत ग्रंथों के अध्यापक पुरुष जवी श्रोता पुरुषों के प्रति तिस संस्कृत वाक्य का उच्चारण करिके ता वाक्य का स्वदेशकी भाषा विषे अर्थ कहे हैं ॥ तबीहीं ता श्रोता पुरुष कूं ता वाक्य के अर्थ का बोध होवैहै ॥ केवल संस्कृत वाक्य के पाठ मात्र तैं ता श्रोता कूं बोध होता नहीं ॥ या प्रकारकी पठन पाठन की रीति इदानीं काल विषे सर्वत्र प्रसिद्ध है ॥ या तैं सो विद्वान् पुरुष कृत संस्कृत वाक्यों का देश भाषा विषे व्याख्यान जैसे श्रोता पुरुषों के बोध का हेतु होवैहै ॥ तैसे विद्वान् पुरुष कृत संस्कृत वाक्यों के व्याख्यान रूप ते भाषाग्रंथ भी अधिकारी पुरुषों के बोध का हेतु अवश्य होवेंगे ॥ किंवा भाषाग्रंथों के विचार कूं आत्मज्ञान की हेतुता केवल उक्त युक्ति करिके ही सिद्ध नहीं है ॥ किंतु प्रत्यक्ष अनुभव करिके भी सिद्ध है ॥ जो ऋषिकेशादिक स्थानों विषे कितने की महात्मा लोक केवल भाषाग्रंथों का ही विचार करे हैं ॥ परंतु तिन महात्मा लोकों विषे ज्ञान निष्ठा तथा दैवी संपदा के गुण तथा वेदांत शास्त्र के पद पदार्थ का ज्ञान परिपूर्ण देखने विषे आवैहै ॥ या तैं जैसे संस्कृत वेदांत के ग्रंथ अधिकारी पुरुषों के आत्मज्ञान के हेतु हैं ॥ तैसे भाषा वेदांत के ग्रंथ भी अधिकारी पुरुषों के आत्मज्ञान के ही हेतु हैं ॥ इस प्रकार के अभिप्राय करिके ही म



तत्त्वा०

॥ ३ ॥

हात्मापुरुषोंनैं तिसतिसदेशविषेस्थित अधिकारीपुरुषोंकेबोधवासतै तिसतिसदेशकीभाषाविषे वेदांतके ग्रंथ कन्येहैं ॥ यातैं अधिकारीपुरुषोंकेबोधकाहेतुहोणेतैं तिनभाषाग्रंथोंकीरचनाभी सफलहै ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै श्रीभावनगरराजधानीकेमुख्यप्रधान श्रीब्रह्मनिष्ठ गौरीशंकरनैं गुर्जरदेशकीभाषा विषे एकस्वरूपानुसंधाननामाग्रंथ रच्यहै ॥ तथा छपाइकैप्रसिद्धकन्यहै ॥ तिसग्रंथविषे श्रुतिस्मृति आचार्योंकेवाक्य प्रमाणदेकै पंचकोशादिक सर्ववेदांतकीप्रक्रिया लिखीहैं ॥ तथा उपनिषद्भाष्य सूत्र भाष्य गीताभाष्य आदिकोंका संक्षेपतैं तात्पर्यार्थ निरूपणकन्यहै ॥ यातैं सोस्वरूपानुसंधानग्रंथभी मुमुक्षुजनोंकूं विचारविषे बहुतउपयोगीहै ॥ और पूर्व श्रीस्वामीचिद्घनानंदगिरिनैं सर्वमुमुक्षुजनोंकेहितवासतै भगवद्गीताकी गूढार्थदीपिकानामा भाषाटीका करीथी ॥ तिसकूंभी इनोंनेहीं छपाइकैप्रसिद्धकन्याथा ॥ और अबी श्रीस्वामीसच्चिदानंदसरस्वतीनामयुक्त संन्यासआश्रमकंधारणकरिकैस्थित तिनोंनैं हीं सर्वमुमुक्षुजनोंकेहितवासतै यहतत्त्वानुसंधानग्रंथ छपाइकैप्रसिद्धकन्यहै ॥ तथा अन्यभीकई संस्कृतभाषाग्रंथ छपाइकैप्रसिद्धकन्येहैं ॥ ऐसेस्वधर्मविषेस्थित तथाब्रह्मविद्याकेप्रवर्तक पुरुष जगत्विषेदुर्लभहैं इति ॥

यहतत्त्वानुसंधानग्रंथ मुंबईमध्ये निर्णयसागरछापखानामें संवत् १९४३ शाके १८०८ मास का तिथि १ वार गुरु छपागयाहै ॥ इसपुस्तकविषे जोकिंचित् वर्णमात्रा अशुद्धछपागयाहै ॥ सो इसशुद्धिपत्रकंदेखिके सुधारलेणा ॥ यहपुस्तक ग्राहकलोकोकूं रुपयेदोसैं २ प्राप्तहोवैगा ॥ इसपुस्तकका सर्वहक ग्रंथकर्त्तानैं आपणेस्वाधीन राख्यहै ॥

॥

॥

॥

॥ ३ ॥

प्रस्तावनाकर्त्ता कवी भवानीशंकर नरोत्तम द्विवेदीब्राह्मण ॥



॥ ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥  
 अथ तत्त्वानुसंधानग्रंथप्रारंभः ॥ श्लोक ॥ श्रीगुरुचरणद्वंद्वं नमोव्यासमुखान्मुनीन् विघ्नहर्तृन्गणेशादी  
 न् पंडितांश्चविमत्सरान् ॥ १ ॥ नत्वाथशंकराचार्यं मुख्यान्सर्वान्गरीयसः तत्त्वानुसंधानग्रंथं वर्णयामि  
 यथामति ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ श्रीगुरुवोंकेदोनोंचरणोंकूं तथाश्रीव्यासभगवानतैंआदिलैकेवसिष्ठसनका  
 दिकसर्वमुनियोंकूं तथाविघ्नोंकेनष्टकरणेहारे श्रीगणेशतैंआदिलैके श्रीमहादेव विष्णु ब्रह्मा सूर्य देवी इ  
 त्यादिकसर्वदेवतावोंकूं तथामत्सरादिकसर्वदोषोंतैंरहित पंडितजनोंकूं मैं नमस्कारकरूंहुं ॥ १ ॥ किंवा  
 श्रीमहादेवकाअवताररूप जोश्रीशंकराचार्यहै ॥ तिसतैंआदिलैके जितनैंकी तिनोंके शिष्यप्रशिष्यादि  
 कसंप्रदायविषेस्थित श्रीसुरेश्वराचार्य श्रीपद्मपादाचार्य श्रीतोटकाचार्य श्रीहस्तामलकाचार्य श्रीसर्वज्ञ  
 महामुनि श्रीचित्सुखाचार्य इत्यादिकवृद्धमहात्माहैं ॥ तिनसर्वोंकूं नमस्कारकरिकैं मैं इसप्राकृततत्त्वानु  
 संधाननामाग्रंथकूं यथामति वर्णनकरूंहुं इति ॥ २ ॥ अब संस्कृततत्त्वानुसंधानग्रंथकेकर्त्ता श्रीमहादेव  
 सरस्वतीनैं ताग्रंथकीनिर्विघ्नसमाप्तिवासतैं जोमंगलकन्याहै ताकूं ईहांलिखेहैं ॥ श्लोक ॥ (ब्रह्माहंयत्प्र  
 सादेन मयिविश्वंप्रकल्पितं श्रीमत्स्वयंप्रकाशाख्यं प्रणौमिजगतांगुलं ॥ १ ॥ देहोनाहंश्रोत्रवागादिका  
 नि नाहंबुद्धिर्नाहमध्यासमूलं नाहंसत्यानंदरूपश्चिदात्मा मायासाक्षीकृष्णएवाहमस्मि ॥ २ ॥) अब इनदो  
 श्लोकोंविषे प्रथमश्लोककाअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ जिसगुरुकेप्रसादकरिकैं मैं ब्रह्मरूपहुं ॥ तथा यहसर्व  
 विश्व मेरेविषेकल्पितहै ॥ ऐसाजो श्रीमत्स्वयंप्रकाशसरस्वतीनामा हमारागुरुहै ॥ तथा अधिकारीजन  
 रूपसर्वजगत्कागुरुहै ॥ तिसगुरुकूं मैं नमस्कारकरूंहुं इति ॥ अब इसीश्लोकका विस्तारतैं अर्थनिरू  
 पणकरेहैं ॥ तहां उक्तश्लोकविषे ब्रह्माहं इसवचनविषेस्थित ब्रह्मशब्दकरिकैं मायातैंरहित अखंडचैतन्य



तत्त्वा०

॥ १ ॥

का ग्रहणकरणा ॥ और अहंशब्दकरिके स्थूल सूक्ष्म कारण इनतीनशरीरोंतैरहित प्रत्यक्चैतन्यका ग्रहणकरणा ॥ और ब्रह्म अहं इनदोनोंपदोंका सामानाधिकरण्यहै ॥ सोपदोंकासामानाधिकरण्य अर्थ केअभेदस्थलविषेहींहोवैहै ॥ यातें ब्रह्माहं इसवचनकरिके ग्रंथकारनैं तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि इत्यादिक महावाक्योंकाअर्थरूप ब्रह्मआत्माकाअभेद इसतत्त्वानुसंधानप्रकरणका विषय सूचनकन्या ॥ और तिसब्रह्मात्माकेअभेदज्ञानतैं अज्ञानकीनिवृत्तिद्वारा जापरमानंदकीप्राप्तिहै ॥ सो इसग्रंथका प्रयोजन सूचनकन्या ॥ और तापरमानंदकेप्राप्तिकीइच्छावाला जोविवेकादिक चतुष्टयसाधनसंपन्नपुरुषहै ॥ सो इसग्रंथका अधिकारी सूचनकन्या ॥ और विषयग्रंथादिकोंका परस्पर प्रतिपाद्यप्रतिपादकभावादि रूपसंबंधभी सूचनकन्या ॥ सोदिखावैहैं ॥ तहां ब्रह्मात्मएकत्वरूपविषयका तथाग्रंथका परस्पर प्रतिपाद्यप्रतिपादकभाव संबंधहै ॥ तहां यहवेदांतग्रंथतों प्रतिपादकहै ॥ और सोउक्तविषय प्रतिपाद्यहै ॥ तहां जो प्रतिपादनकरणेवालाहोवैहै ॥ सो प्रतिपादक कहाजावैहै ॥ और जो प्रतिपादनकरणेकूं योग्यहोवैहै ॥ सो प्रतिपाद्य कहाजावैहै ॥ और फलका तथाअधिकारीका परस्पर प्राप्यप्रापक भाव संबंधहै ॥ तहां अज्ञानकीनिवृत्तिउपलक्षित परमानंदकीप्राप्तिरूपफलतों प्राप्यहै ॥ और उक्तअधिकारी प्रापकहै ॥ तहां जोवस्तु प्राप्तहोणेकूंयोग्यहोवैहै ॥ सोवस्तु प्राप्यकहाजावैहै ॥ और जिस पुरुषकूं सोवस्तु प्राप्तहोवैहै ॥ सोपुरुष प्रापक कहाजावैहै ॥ और अधिकारीका तथाविचारका परस्पर कर्तृकर्तव्यभाव संबंधहै ॥ तहां उक्तअधिकारीतों कर्त्ताहै ॥ और विचार कर्त्तव्यहै ॥ तहां करनेवालेकूं कर्त्ता कहैहैं ॥ और करनेयोग्यअर्थकूं कर्त्तव्य कहैहैं ॥ और ज्ञानका तथाग्रंथका परस्पर जन्यजनकभाव संबंधहै ॥ तहां विचारद्वारा ग्रंथ ज्ञानकाजनकहोवैहै ॥ और सोज्ञान जन्यहोवैहै ॥

परि०

१

॥ १ ॥



तहां उत्पत्तिकरणेवालेकानाम जनकहै ॥ और उत्पन्नहोणेहारेकार्यकानाम जन्महै ॥ इसतैंआदिलैके औरभीसंबंध जानिलेणे ॥ तहां विषय १ प्रयोजन २ अधिकारी ३ संबंध ४ यहचारिअनुबंध विवेकीपुरुषोंकीग्रंथविषयकप्रवृत्तिके हेतुहोवैहैं ॥ अर्थात् इनचारिअनुबंधोंकूंजानिकैहीं बुद्धिमानपुरुष ग्रंथविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं ग्रंथकारनैं ब्रह्माहं इसवचनकरिकै सूचनकन्येहूए तेअनुबंध ईहां स्पष्ट करिकैनिरूपणकन्येहैं ॥ और ताग्रंथकारनैं ब्रह्माहं इसवचनकरिकै साक्षात्तों ग्रंथकीनिर्विघ्नसमाप्तिवासतैं तत्त्वानुसंधानरूपमंगलहीं कथनकन्याहै ॥ ईहां ब्रह्मआत्माकाजोएकत्वहै सोईहींतत्त्वहै ॥ तातत्त्वकाजोस्मरणहै ताकानाम तत्त्वानुसंधानहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तातत्त्वानुसंधानकीमंगलरूपताविषे कौनप्रमाणहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ व्यासादिकमुनियोंने स्मृतिवचनोंविषे तापरमात्माकेस्मरणकूं मंगलरूपता कथनकरीहै ॥ तहांस्मृति ॥ ( स्मृतेसकलकल्याणभाजनंयत्रजायते पुरुषस्तमजंनित्यंव्रजामिशरणंहरिं ॥ १ ॥ ) अर्थयह ॥ यहपुरुष जिसहरिकेस्मरणकीयेहूए सर्वकल्याणोंकाभाजनहोवैहै ॥ तिसजन्मतैरहितनित्यहरिकेशरणकूं मैंअधिकारीजन प्राप्तहूं इति ॥ १ ॥ अन्यस्मृति ॥ ( सर्वदासर्वकार्येषु नास्तितेषाममंगलं येषां हृदिस्थितो भगवान् मंगलायतनो हरिः ॥ २ ॥ ) अर्थयह ॥ जिनपुरुषोंकेहृदयविषे सर्वमंगलोंकाआश्रयभूत भगवान्हरि स्थितहै ॥ तिनपुरुषोंकूं सर्वकालविषे सर्वकार्योंविषे अमंगल नहींहै ॥ किंतु सर्वदा सर्वकार्योंविषे मंगलहींहै इति ॥ २ ॥ अन्यस्मृति ॥ ( अशुभानिनिराचष्टे तनोति शुभसंततिं स्मृतिमात्रेण यत्पुंसां ब्रह्मतन्मंगलं विदुः ॥ ३ ॥ ) अर्थयह ॥ जोब्रह्म आपणेस्मरणमात्रकरिकै इनअधिकारीपुरुषोंके सर्वअशुभोंकूं निवृत्तकरेहै ॥ तथा सर्वशुभोंकूंविस्तारकरेहै ॥ तिसब्रह्मकूं वेदवेत्तापुरुष मंगलरूपजानेहैं इति ॥ ३ ॥ अन्यस्मृति ॥ ( हरिर्हरति पापानि दुष्टचित्तरपि स्मृतः



तत्त्वा०  
॥ २ ॥

परि०  
१

अनिच्छयापिसंस्पृष्टो दहत्येवहिपावकः ॥ ४ ॥) अर्थयह ॥ जैसे विनाइच्छातैस्पर्शकन्याहूआभी  
अग्नि दाहहीकरेहै ॥ तैसे दुष्टचित्तवालेपुरुषोंनेभी स्मरणकन्याहूआ हरि तिनपुरुषोंकेपापोंकूं नाशही  
करेहै इति ॥ ४ ॥ इत्यादिकस्मृतिवचनोंनै तापरमात्माकेस्मरणरूप तत्त्वानुसंधानविषे मंगलरूपताही  
कथनकरीहै ॥ यातै ब्रह्माहं इसतत्त्वानुसंधानविषे मंगलरूपता संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ब्रह्माहं  
इसवचनकरिकै कथनकन्याजो ब्रह्मआत्माकाएकत्व सोसंभवतानहीं ॥ काहेतै सोब्रह्म तथाजीवात्मा  
दोनों परस्परविरुद्धधर्मोंकरिकैयुक्तहैं ॥ और जेपदार्थ परस्पर विरुद्धधर्मवालेहोवैहैं ॥ तिनपदार्थोंकी  
एकताहोतीनहीं ॥ जैसे उष्णस्पर्शवालेअग्निका तथाशीतस्पर्शवालेवरफका एकत्वहोतानहीं ॥ तैसे  
ताजीवब्रह्मकाभी एकत्वसंभवतानहीं ॥ तहां (यःसर्वज्ञःसर्ववित्) इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंकरिकै  
सोब्रह्मतौ जगत्कल्पनाकाअधिष्ठानरूप तथासर्वज्ञरूप जान्याजावैहै ॥ और (अनीशयाशोचतिमु  
ह्यमानः) इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंकरिकै सोजीवात्मा ताब्रह्मतैविपरीत अल्पज्ञत्वादिकधर्मवाला  
जान्याजावैहै ॥ और मैंब्रह्मनहींहूं याप्रकारका प्रत्यक्षअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ सोअनुभवभी  
जीवब्रह्मकेभेदकूंहीं सिद्धकरेहै ॥ यातै ब्रह्माहं इसवचनकरिकैकथनकरी जीवब्रह्मकीएकता सं  
भवतीनहीं ॥ ऐसीवादीकीशंकाकेहूए कहेहैं ॥ (मयिविश्वंप्रकल्पितंइति) मैंअंतःकरणउपल  
क्षितसाक्षीआत्माविषे यहगिरिनदीआदिकभेदकरिकैभिन्न ब्रह्मांडपर्यंत सर्वविश्व कल्पित कहीये  
अध्यस्तहै ॥ ईहां यहतात्पर्यहै ॥ अहंशब्दकावाच्यअर्थ जोजीवहै ॥ ताजीवकी ब्रह्मशब्दकेवा  
च्यअर्थसैं विलक्षणताकेहूएभी ॥ ताअहंशब्दकालक्ष्यअर्थ जोअंतःकरणादिकोंकासाक्षी प्रत्यक्आत्मा  
है ॥ ताप्रत्यक्आत्माका मायाउपलक्षितब्रह्मकेसाथि नाममात्रतैहींभेदहै ॥ वास्तवतै तिनदोनोंलक्ष्यअ

॥ २ ॥



थींका अभेदहीहै ॥ यातैं जैसे ब्रह्मविषे जगत्कल्पनाका अधिष्ठानपणाहै ॥ तैसे प्रत्यक् आत्माविषेभी जगत्कल्पनाका अधिष्ठानपणा संभवैहै ॥ यातैं ताउक्तविरोधकेअभावतैं तिनदोनोलक्ष्यअर्थोंकी एकता संभवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( मय्येव सकलं जातं मयि सर्वं प्रतिष्ठितं मयि सर्वं लयं याति तद्ब्रह्मा द्वयमस्म्यहं ) अर्थ यह ॥ यह सर्वजगत् मै प्रत्यक् आत्माविषेहीं उत्पन्न होवैहै ॥ तथा मेरेविषेहीं यह सर्वजगत् स्थितहै ॥ तथा मेरेविषेहीं यह सर्वजगत् लयभावकूं प्राप्त होवैहै ॥ यातैं ब्रह्मकीन्याई सर्वजगत्कल्पनाका अधिष्ठानहोणेतैं मै प्रत्यक् आत्मा अद्वितीय ब्रह्मरूपहीहूं इति ॥ यहश्रुति अंतःकरण उपलक्षित प्रत्यक् साक्षी आत्माविषे सर्वजगत्की कल्पनाकूं दिखाइकै ताप्रत्यक् आत्माका ब्रह्मके साथ अभेदकूंहीं बोधन करेहै ॥ यातैं ब्रह्माहं इसवचन करिकै जो ग्रंथकारनैं जीवात्मा ब्रह्मका अभेद कथन कन्याहै ॥ सो सर्वप्रकारतैं अविरुद्धहै ॥ किंवा ( मयि विश्वं प्रकल्पितं ) इसवचन करिकै ग्रंथकारनैं प्रपंचविषे मिथ्यापणाभी सूचन कन्याहै ॥ सो प्रपंचका मिथ्यापणा अनेक श्रुतियों करिकै सिद्धहै ॥ तथा अनुमान प्रमाण करिकै भी सिद्धहै ॥ ता अनुमानका यह आकारहै ॥ ( व्यावहारिकः प्रपंचः मिथ्या दृश्यत्वात् शुक्तिरूप्यवत् ) अर्थ यह ॥ यह व्यावहारिक प्रपंच मिथ्या होणे कूं योग्यहै दृश्यरूप होणेतैं ॥ जो जो पदार्थ दृश्य होवैहै ॥ सो सो पदार्थ मिथ्या हीं होवैहै ॥ जैसे शुक्तिविषे प्रतीत हू आरूप्य दृश्य होणेतैं मिथ्या हीं है इति ॥ किंवा पूर्वभेदवादीनैं मै ब्रह्मन हीं हूं यह जो जीव ब्रह्मके भेदका ग्राहक प्रत्यक्ष कह्याथा ॥ तावादीसैं यह पूछा चाहिये ॥ सो तु मारा प्रत्यक्ष अंतःकरणादि विशिष्ट आत्माविषे ब्रह्मके भेद कूं ग्रहण करेहै ॥ अथवा शुद्ध आत्माविषे ब्रह्मके भेद कूं ग्रहण करेहै ॥ तहां सोवादी जो प्रथम पक्ष अंगीकार करै ॥ सो हमारे कूं भी इष्टहै ॥ अर्थात् ता विशिष्ट आत्माका ब्रह्मके साथ अभेद हम भी अंगीकारक



तत्त्वा०

॥ ३ ॥

रतेनहीं ॥ और सोवादी जो दूसरा पक्ष अंगीकारकरै ॥ सो संभवतानहीं ॥ काहेतैं सो शुद्ध आत्मा अति इंद्रिय है ॥ अर्थात् इंद्रियजन्य ज्ञान का विषय नहीं है ॥ ऐसे शुद्ध आत्मा के ग्रहण करने वासतै चक्षु आदिक इंद्रियों की प्रवृत्ति कदाचित् भी नहीं होवैगी ॥ जबी ता भेद का धर्म रूप शुद्ध आत्मा इंद्रियों करिकै ग्रहण नहीं हुआ ॥ तबी ता शुद्ध आत्मा के आश्रित सो ब्रह्म का भेद इंद्रियों करिकै कैसे ग्रहण होवैगा ॥ किंतु नहीं ग्रहण होवैगा ॥ जिस कारणतैं धर्म के तथा प्रतियोगी के ज्ञानतैं विना ता भेद का ज्ञान होतानहीं ॥ किंतु धर्म प्रतियोगी के ज्ञान हुए ही ता भेद का ज्ञान होवै है ॥ जैसे । घटः पटोन । इस प्रतीति तैं घट विषे प्रतीत भया जो पट का भेद है ॥ ता भेद का सो घट तों धर्म होवै है ॥ और सो पट प्रतियोगी होवै है ॥ ता घट रूप धर्म के तथा पट रूप प्रतियोगी के ज्ञान हुए ही ता घट विषे पट के भेद का ज्ञान होवै है ॥ तैसे तुम नैं शुद्ध आत्मा विषे अंगीकार कन्या जो ब्रह्म का भेद है ॥ ता भेद का भी सो शुद्ध आत्मा तों धर्म होवैगा ॥ और सो ब्रह्म प्रतियोगी होवैगा ॥ ता धर्म प्रतियोगी के ज्ञानतैं विना ता भेद का ज्ञान होवैगा नहीं ॥ और ता भेद का सो शुद्ध आत्मा रूप धर्म तथा ब्रह्म रूप प्रतियोगी दोनों अति इंद्रिय हैं ॥ यातैं ता धर्म प्रतियोगी के प्रत्यक्षतैं विना ता भेद का प्रत्यक्ष कैसे होवैगा ॥ किंतु नहीं होवैगा ॥ यातैं जीव ब्रह्म के भेद का ग्राहक प्रत्यक्ष प्रमाण है यह वादी का कहना केवल मनोरथ मात्र है इति ॥ किंवा विचार करिकै देखियेतों किसी भी भेद की कहां स्थिति संभवती नहीं ॥ काहेतैं जो वादी ता भेद कूं अंगीकार करे है ॥ ता वादी सैं यह पूछा चाहिये ॥ सो भेद अभिन्न धर्म विषे रहे है ॥ अथवा भिन्न धर्म विषे रहे है ॥ ईहां भेद तैरहित कानाम अभिन्न है ॥ और भेद वाले कानाम भिन्न है ॥ तहां सो वादी जो प्रथम पक्ष अंगीकार करै ॥ तों एक तों व्याघात दोष की प्राप्ति होवै है ॥ काहेतैं परस्पर विरुद्ध धर्मों का जो एक अधिकरण विषे समुच्चय है ता कानाम व्याघात है ॥ जैसे प्रसंग विषे भेद तैर

परि०

१

॥ ३ ॥



हितपणा तथाभेद यहदोनों परस्परविरुद्धहैं ॥ अर्थात् जहां भेदरहेहैं ॥ तहां भेदरहितपणा नहीरहेहैं ॥ और जहां भेदरहितपणा रहेहैं ॥ तहां भेदनहीरहेहैं ॥ ऐसे विरुद्धधर्मोंका एकअधिकरणविषे समुच्चयमाननेमें सोव्याघातदोष स्पष्टहीप्रतीतहोवैहैं ॥ और दूसरा भेदरहितधर्मोंविषे भेदकृग्रहणकरणेहारे प्रत्यक्षज्ञानविषे भ्रमरूपताकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ यातें अभिन्नधर्मोंविषेभेदकावर्तना संभवतानहीं ॥ और सोवादी ताउक्तदोनोंदोषोंकीनिवृत्तिकरणेवासतै सोभेद भिन्नधर्मोंविषेरहेहैं यहद्वितीयपक्ष जोअंगीकार करै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोभेद आपणेकरिकैभिन्नकन्येहूएधर्मोंविषे आपरहेहैं ॥ अथवा कि सीदूसरेभेदकरिकैभिन्नकन्येहूएधर्मोंविषे सोभेदरहेहैं ॥ तहां सोवादी जोप्रथमपक्ष अंगीकारकरै ॥ तों आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ काहेतें आपणीउत्पत्तिविषे जोआपणीअपेक्षाहै अथवा आपणीस्थितिविषे जोआपणीअपेक्षाहै अथवा आपणेज्ञानविषे जोआपणीअपेक्षाहै ताकानाम आत्माश्रयहै ॥ जैसे ईहांप्रसंगविषे तिसभेदविशिष्टधर्मोंविषे तिसभेदकीस्थितिमाननेविषे सोआपणीस्थितिविषेआपणीअपेक्षारूपआत्माश्रयदोष स्पष्टहीप्रतीतहोवैहैं ॥ यातें तिसभेदविशिष्टधर्मोंविषे तिसभेदकावर्तना संभवैनहीं ॥ और ताआत्माश्रयदोषकेनिवृत्तिकरणेवासतै सोवादी किसीदूसरेभेदकरिकैभिन्नकन्येहूएधर्मोंविषे सोभेदरहेहैं यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोदूसराभेदभी अभिन्नधर्मोंविषेरहेहैं ॥ अथवा भिन्नधर्मोंविषेरहेहैं ॥ तहां सोवादी जोप्रथमपक्ष अंगीकारकरै ॥ तों पूर्वकीन्यांई पुनः व्याघातदोषकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ ताव्याघातदोषकीनिवृत्तिकरणेवासतै सोवादी जोद्वितीयपक्ष अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोदूसराभेदभी आपणेकरिकैभिन्नकन्येहूएधर्मोंविषे आपरहेहैं ॥ अथवा ताप्रथमभेदकरिकैभिन्नकन्येहूएधर्मोंविषे सोदूसराभेद रहेहैं ॥ अथवा



तत्त्वा०

॥ ४ ॥

किसी तीसरे भेद करिकै भिन्न कन्ये हूए धर्मी विषे सो दूसरा भेद रहे है ॥ तहां प्रथम पक्ष विषे तौ पूर्व की न्यां ई पुनः आत्मा श्रय दोष की प्राप्ति होवैगी ॥ और दूसरे पक्ष विषे अन्योन्या श्रय दोष की प्राप्ति होवैगी ॥ काहेतें दोष दार्थी कूं आपणी उत्पत्ति विषे अथवा आपणी स्थिति विषे अथवा आपणे ज्ञान विषे जो परस्पर अपेक्षा है ताका नाम अन्योन्या श्रय है ॥ जैसे ईहां प्रसंग विषे प्रथम भेद कूं आपणी स्थिति वासतै दूसरे भेद की अपेक्षा होवै है ॥ और ता दूसरे भेद कूं आपणी स्थिति वासतै प्रथम भेद की अपेक्षा होवै है ॥ यातें प्रथम भेद विशिष्ट धर्मी विषे ता दूसरे भेद की स्थिति मानने विषे सो अन्योन्या श्रय दोष स्पष्ट ही प्रतीत होवै है ॥ और ता अन्योन्या श्रय दोष की निवृत्ति करने वासतै सो वादी जो तीसरा पक्ष अंगीकार करै ॥ अर्थात् किसी तीसरे भेद करिकै भिन्न कन्ये हूए धर्मी विषे सो दूसरा भेद रहे है यह तीसरा पक्ष जो वादी अंगीकार करै ॥ ता वादी सैं यह पूछा चाहिये ॥ सो तीसरा भेद भी अभिन्न धर्मी विषे रहे है ॥ अथवा भिन्न धर्मी विषे रहे है ॥ तहां प्रथम पक्ष विषे तौ पूर्व की न्यां ई पुनः व्याघात दोष की प्राप्ति होवैगी ॥ ता दोष की निवृत्ति वासतै सो वादी जो द्वितीय भिन्न पक्ष अंगीकार करै ॥ ता वादी सैं यह पूछा चाहिये ॥ सो तीसरा भेद भी आपणे करिकै भिन्न कन्ये हूए धर्मी विषे आपर रहे है ॥ अथवा ता दूसरे भेद करिकै भिन्न कन्ये हूए धर्मी विषे सो तीसरा भेद रहे है ॥ अथवा ता प्रथम भेद करिकै भिन्न कन्ये हूए धर्मी विषे सो तीसरा भेद रहे है ॥ अथवा किसी चतुर्थ भेद करिकै भिन्न कन्ये हूए धर्मी विषे सो तीसरा भेद रहे है ॥ तहां प्रथम पक्ष विषे तौ पूर्व की न्यां ई पुनः आत्मा श्रय दोष की प्राप्ति होवैगी ॥ और द्वितीय पक्ष विषे भी पूर्व की न्यां ई पुनः अन्योन्या श्रय दोष की प्राप्ति होवैगी ॥ और तृतीय पक्ष विषे चक्रिका दोष की प्राप्ति होवैगी ॥ काहेतें प्रथम कूं अपेक्षित जो द्वितीय है ता द्वितीय कूं अपेक्षित जो तृतीय है तिन तृतीयादिकों कूं जो पुनः ता प्रथम की अपेक्षा है ताका नाम चक्रिका है ॥ जैसे ईहां प्रसंग विषे ता प्र

परि०

१

॥ ४ ॥



थमभेदकूं आपणीस्थितिविषे दूसरेभेदकी अपेक्षा है ॥ और तादूसरेभेदकूं आपणीस्थितिविषे तीसरेभेदकी अपेक्षा है ॥ और तातीसरेभेदकूं अपणीस्थितिविषे पुनः ताप्रथमभेदकी अपेक्षा है ॥ इसरीतिसें चतुर्थपंच मादिकोंविषेभी पुनः प्रथमकी अपेक्षातें चक्रिकादोषकी प्राप्ति जानिलेणी ॥ और ताचक्रिकादोषकी निवृत्ति वासतै सोवादी जो चतुर्थपक्ष अंगीकारकरै ॥ अर्थात् सोतीसराभेद किसीचतुर्थभेदकरिकै भिन्नकन्येहूएध मीविषेरहेहै यहचतुर्थपक्ष अंगीकारकरै ॥ तौं अनवस्थादोषकी प्राप्तिहोवैंगी ॥ काहेतें सोचतुर्थभेदभी पूर्वउक्त व्याघात आत्माश्रय अन्योन्याश्रय चक्रिका आदिकदोषोंकी प्राप्तिके भयतें अभिन्नधर्मीविषे वा स्वविशिष्टधर्मीविषे वा तृतीयभेदविशिष्टधर्मीविषे वा प्रथमभेदविशिष्टधर्मीविषे रहेंगानहीं ॥ किंतु किसीपंचमभेदविशिष्टधर्मीविषेही रहेंगा ॥ आगेतें सोपंचमभेदभी किसीषष्ठेभेदविशिष्टधर्मीविषेही रहेंगा ॥ इसप्रकार आगे आगेभेदोंकी धारामाननेविषे अनवस्थादोषकी प्राप्तिहोवैंगी ॥ तहां परी अवसानतैरहित जो पूर्वपूर्वकूं उत्तर उत्तरकी अपेक्षा है ताकानाम अनवस्था है ॥ तहां व्याघात आत्माश्रय अन्योन्याश्रय चक्रिका अनवस्था इनदोषोंके संस्कृतलक्षण न्यायप्रकाशके षष्ठेपरिच्छेदविषे तर्कनिरूपणविषे हमनें विस्तारतें कथनकन्ये हैं ॥ जिसकूं जिज्ञासा होवै ॥ तिसनें तहांसें जानिलेणे ॥ इसप्रकारतें जीवब्रह्मके भेदके असंभवहुए ब्रह्माहं इसवचनकरिकै सोतत्त्वानुसंधानरूपमंगल संभवैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ब्रह्माहं इसतत्त्वानुसंधानरूपमंगलकरिकैहीं ग्रंथकी निर्विघ्नपरिसमाप्ति संभवहोइसकेहै ॥ यातें ग्रंथकारनें ( गुरुप्रणौमि ) इसवचनकरिकै पुनः गुरुकानमस्कार किसवासतैकन्याहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इसपुरुषकूं सोतत्त्वानुसंधान ब्रह्मवेत्ता गुरुकी भक्तितै विना प्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु गुरुकी भक्तिकरिकैहीं सोतत्त्वानुसंधान प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहां श्रुति ॥ ( यस्य देवे पराभक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ । तस्यै ते कथिता ह्यर्थाः प्र



तत्त्वा०  
॥ ५ ॥

काशंतेमहात्मनः ) अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे परमभक्तिहोवैहै ॥ और जैसीप  
रमात्मादेवविषेपरमभक्तिहोवैहै ॥ तैसीहीं जबी ब्रह्मवेत्तायुरुविषे परमभक्तिहोवैहै ॥ तबीहीं तिसमहा  
त्माअधिकारीपुरुषकूं यहवेदांतप्रतिपादित जीवब्रह्मकाएकत्वादिरूपअर्थ बुद्धिविषेप्रकाशमानहोवैहैं ॥  
तायुरुभक्तितैरहितपुरुषकूं तेवेदांतप्रतिपादितअर्थ कदाचित्भी प्रकाशमानहोतेनहीं इति ॥ इसश्रुतिनै  
तायुरुभक्तिकूं तातत्त्वानुसंधानकेप्रति अंतरंगसाधनता कथनकरीहै ॥ याकारणतैहीं ग्रंथकारनै सायु  
रुकानमस्काररूपभक्ति ईहांकरीहै ॥ इतिप्रथमश्लोकव्याख्या ॥ १ ॥ अथ द्वितीयश्लोकव्याख्या ॥  
तहां प्रथमश्लोकविषे ब्रह्माहं इसवचनकरिकै अनुसंधानकन्याजो ब्रह्मात्मतत्त्व ॥ तिसब्रह्मात्मतत्त्वकूंहीं  
इसद्वितीयश्लोकविषे अहंशब्दार्थकेविवेचनपूर्वक इष्टदेवतावाचककृष्णशब्दतैकथनकरिकै पुनः अनुसं  
धानकरैहैं ( देहोनाहमिति ) स्वप्नविषे यहस्थूलदेह प्रतीतहोतानहीं ॥ और मैतौ तास्वप्नविषेभी सा  
क्षीरूपकरिकैप्रकाशमानहूं ॥ यातै मैं स्थूलदेहनहींहूं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ स्थूलोऽहं कृशोऽहं मनुष्यो  
ऽहं याप्रकारकाअनुभव सर्वप्राणीयोंकूंहोवैहै ॥ ताअनुभवतै यहस्थूलदेहहीं आत्मासिद्धहोवैहै ॥ का  
हेतै सर्वशास्त्रवालोंकेमतविषे अहंशब्दकाअर्थ तथाअहंप्रतीतिकाविषय आत्माहींहोवैहै ॥ और उक्त  
रीतिसै साअहंप्रतीतिकीविषयता स्थूलत्व कृशत्व मनुष्यत्व आदिकधर्मविशिष्ट स्थूलदेहविषेहीं प्रतीत  
होवैहै ॥ और तास्थूलदेहतैभिन्न कोईआत्मा प्रतीतभीहोतानहीं ॥ और स्वप्नविषेभी स्थूलोऽहं याप्र  
कारकाअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ यातै यहस्थूलदेहहीं आत्माहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इसस्थूल  
शरीरकी उत्पत्ति तथाविनाश सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै और जोवस्तु उत्पत्तिविनाशवालाहोवै  
है ॥ सोवस्तु अनात्माहींहोवैहै ॥ जैसे घटादिकवस्तु उत्पत्तिविनाशवालेहोणेतै अनात्माहींहै ॥ तैसे

परि०  
१

॥ ५ ॥



यहस्थूलशरीरभी उत्पत्तिविनाशवालाहोणेतें अनात्माहीहोवैगा ॥ किंवा इसस्थूलशरीरकूंहीं जोआ  
 त्मामानिये ॥ तौ कृतनाश अकृताभ्यागम इनदोनोंदोषोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तहां कन्येहूएपुण्यपापकर्मका  
 जोसुखदुःखरूपफलकेभोगतैंविनाहीं नाशहै ताकानाम कृतनाशहै ॥ और नहींकन्येहूएपुण्यपापकर्मके  
 सुखदुःखरूपफलकीजाप्राप्तिहै ताकानाम अकृताभ्यागमहै ॥ तहां इसस्थूलदेहकूंहीं जोआत्मामानिये ॥  
 तौ इसदेहरूपआत्माकेनाशहूए तादेहतैंभिन्नभोक्ताआत्माकेअभावतैं तादेहकृतपुण्यपापकर्मका फलके  
 भोगतैंविनाहीं नाशहोवैगा ॥ और अबी नवीनउत्पन्नभयाजोदेहरूपआत्माहै ॥ तिसनैं पूर्व कोईपुण्य  
 पापकर्म कन्यानहीं ॥ और तिसकूंभी जन्मकालतैंलैकेहीं सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तितां होवैहै ॥ साफल  
 कीप्राप्ति तापुण्यपापकर्मतैंविनाहीं मानणीहोवैगी ॥ सोकन्येहूएकर्मका फलकेभोगतैंविनाहींनाशमान  
 णा तथानकन्येहूएकर्मकेफलकीप्राप्तिमानणी सर्वशास्त्रतैंविरुद्धहै ॥ यद्यपि प्रायश्चित्तादिकोंकरिकै तथा  
 तत्त्वज्ञानकरिकै तापुण्यपापकर्मका फलभोगतैंविनाहींनाश शास्त्रोंविषेकह्याहै ॥ तथापि तिनशास्त्रउ  
 क्तप्रायश्चित्तादिकउपायोंतैंविनाहीं जोफलभोगतैंविना कर्मोंकानाशहै ताकानाम कृतनाशहै ॥ यातैं  
 यहस्थूलदेह आत्मानहींहै ॥ किंवा तादेहात्मवादीनैं यास्थूलदेहकीआत्मताविषे जो स्थूलोऽहं कृशो  
 ऽहं इत्यादिकप्रत्यक्षअनुभव कह्याथा ॥ सोअनुभवतौ । लोहितःस्फटिकः । इसअनुभवकीन्यांई भ्रमरूप  
 है ॥ अर्थात् जैसे । लोहितःस्फटिकः । यहअनुभव लोहितपणेतैंरहित शुक्लस्फटिकविषे तालोहितपणे  
 कूंविषयकरताहूआ भ्रमरूपहै ॥ तैसे सोउक्तअनुभवभी स्थूलकृशादिभावतैंरहितआत्माविषे स्थूलकृशा  
 दिभावकूंविषयकरताहूआ भ्रमरूपहींहै ॥ यातैं सोउक्तअनुभव तास्थूलदेहकीआत्मताकूं सिद्धकरिसकैन  
 हीं ॥ जिसकारणतैं यथार्थअनुभवहीं अर्थकासाधकहोवैहै ॥ किंवा तादेहात्मवादीनैं जोयहकह्याथा ॥



तत्त्वा०  
॥ ६ ॥

इसस्थूलदेहतैभिन्न कोईआत्मा प्रतीतहोतानहीं ॥ सोयहकहणाभीअसंगतहै ॥ काहेतैं मेरादेह रोगीहै मेरादेह निरोगहै याप्रकारकाअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ ताअनुभवतैं देहकाद्रष्टासाक्षीआत्मा तादेहतैं भिन्नहींसिद्धहोवैहै ॥ और श्रुति स्मृति इतिहास पुराण युक्ति विद्वान्पुरुषोंकाअनुभव इनसर्वप्रमाणोंकरि कैभी यास्थूलदेहतैभिन्नहींआत्मासिद्धहोवैहै ॥ ऐसेअनेकप्रमाणसिद्धआत्माका निषेधसंभवतानहीं ॥ किंवा तादेहात्मवादीनैं जोस्वप्नविषेभी स्थूलोऽहं इसअनुभवतैं स्थूलदेहकीसिद्धिकरीथी ॥ सोभी असंगतहै ॥ काहेतैं स्थूलोऽहं यहजोस्वप्नविषे अनुभवहोवैहै ॥ सोअनुभव जाग्रतअवस्थाके स्थूलोऽहं इसप्रकारकेअनुभवजन्यसंस्कारोंकरिकैजन्यहोवैहै ॥ यातैं सोस्वप्नकाअनुभव ताजाग्रतकेस्थूलदेहकूंविषयकरतानहीं ॥ किंतु सोअनुभव स्वप्नकेवासनामयशरीरकूंहीं विषयकरैहै ॥ जोकदाचित् सोस्वप्नकाअनुभव जाग्रतकेस्थूलदेहकूंहीं विषयकरताहोवै ॥ तों काशीविषेसोयाहूआपुरुष स्वप्नविषे रामकृतसेतुविषे रामनाथकूंअनुभवकरताहूआ जबी जाग्रतकूंप्राप्तहोवै ॥ तबी सोपुरुष तिसरामसेतुविषेहीं स्थितहोणाचाहिये ॥ काशीविषेस्थित नहींहोणाचाहिये ॥ सोऐसादेखनेविषेआवतानहीं ॥ यातैं स्वप्नविषे इसस्थूल शरीरका अभावहींहोवैहै ॥ और आत्मातों तास्वप्नविषेभी तिनस्वप्नपदार्थोंका द्रष्टासाक्षीरूपकरिकै अनुभवहोवैहै ॥ यातैं मैं स्थूलदेहनहींहूं यहउक्तअर्थ संभवैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वउक्तदोषोंतैं स्थूल देहकूं आत्मरूपता मतहोवो ॥ तथापि चक्षुआदिकइंद्रियहीं आत्माहैं ॥ काहेतैं काणोऽहं सूकोऽहं इस प्रकारकाअनुभव लोकविषे देखनेमेंआवैहै ताअनुभवतैं काणत्वसूकत्वादिकधर्मविशिष्टचक्षुआदिकइंद्रियोंविषेहीं आत्मरूपतासिद्धहोवैहै ॥ और वेदविषेभी प्राणका तथाइंद्रियोंका आपणीआपणीश्रेष्ठताविषे परस्परसंवाद कथनकन्याहै ॥ सोपरस्परसंवाद चेतनोंकाहींहोवैहै ॥ जडपदार्थोंका होतानहीं ॥ और

परि०  
१

॥ ६ ॥



चेतन आत्माहीहोवैहै ॥ यातैं ताप्राणसंवादश्रुतितैंभी चक्षुआदिकइंद्रियहीं आत्मासिद्धहोवैहै ॥ यातैं ते  
इंद्रियहीं आत्माहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे स्थूलदेह आत्मानहीहै ॥ तैसे तेचक्षुआदिकइंद्रियभी  
आत्मानहीहैं ॥ काहेतैं चक्षुइंद्रियकरिकैं मैं रूपकूं देखताहूं और श्रोत्रइंद्रियकरिकैं मैं शब्दकूं श्रवणकर  
ताहूं याप्रकारकाअनुभव सर्वलोकोकूंहोवैहै ॥ ताअनुभवतैं तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकूं दर्शनादिकक्रिया  
केप्रति करणरूपताहींसिद्धहोवैहै ॥ और जोजोपदार्थ क्रियाकेप्रति करणहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ अनात्मा  
हीहोवैहै ॥ जैसे छेदनक्रियाकेप्रति करणरूपहोणेतैं कुठारादिक अनात्माहीहैं ॥ तैसे दर्शनादिकक्रियाके  
प्रति करणरूपहोणेतैं तेचक्षुआदिकइंद्रियभी अनात्माहीहोवैंगे ॥ इतनैंकरिकैं यहअनुमान बोधनकन्या ॥  
( इंद्रियाणि अनात्मा करणत्वात् कुठारवत् ) किंवा जैसे छेदनादिकक्रियाका पुरुष कर्त्ताहोवैहै ॥ तैसे  
ताइंद्रियआत्मवादीनैं सोइंद्रियरूपआत्माहीं तिनदर्शनादिकक्रियावोंकाकर्त्ता मानणाहोवैंगा ॥ सोअत्यं  
तविरुद्धहै ॥ काहेतैं लोकविषे जोपदार्थ जिसक्रियाकेप्रति करणहोवैहै ॥ सोपदार्थ तिसक्रियाकेप्रति कर्त्ता  
होतानहीं ॥ और जोपदार्थ जिसक्रियाकेप्रति कर्त्ताहोवैहै ॥ सोपदार्थ तिसक्रियाकेप्रति करणहोतानहीं ॥  
किंतु सोकरण तथाकर्त्ता भिन्नभिन्नहीहोवैहैं ॥ जैसे छेदनरूपक्रियाकेप्रति करणरूपकुठारकूं कर्त्तारूपता  
नहींहै ॥ और ताछेदनरूपक्रियाकेप्रति कर्त्तारूपपुरुषकूं करणरूपतानहींहै ॥ किंतु सोकुठाररूपकरण तथा  
पुरुषरूपकर्त्ता भिन्नभिन्नहीहैं ॥ और तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकूं दर्शनादिकक्रियाकेप्रति करणरूपतातों  
पूर्वउक्तअनुभवकरिकैंसिद्धहीहै ॥ यातैं एकहीचक्षुआदिकइंद्रियकूं एकहीदर्शनादिरूपक्रियाकेप्रति कर  
णपणा तथाकर्त्तापणा मानणा प्रत्यक्षप्रमाणतैंविरुद्धहै ॥ याकारणतैंभी तेइंद्रिय आत्मानहीहैं ॥ किंवा  
जोवादी इंद्रियोंकूंही आत्मामानेहै ॥ तावादीकेमतविषे एकहीशरीरविषे चक्षुःश्रोत्रादिरूप अनेकआ



तत्त्वा०

॥ ७ ॥

त्मा सिद्धहोवेंगे ॥ और तेचक्षुःश्रोत्रादिकसर्वइंद्रिय एकहींपदार्थकूं ग्रहणकरतेनहीं ॥ किंतु रूपशब्दा  
 दिकभिन्नभिन्नअर्थोंकूंहीं ग्रहणकरेहैं ॥ यातैं पूर्वदिशाविषेस्थितरूपकेदर्शनवासतै चक्षुरिंद्रिय इसशरीरकूं  
 तापूर्वदिशाविषे आकर्षणकरेंगा ॥ और पश्चिमदिशाविषेस्थितशब्दकेश्रवणकरणेवासतै श्रोत्रइंद्रिय इस  
 शरीरकूं तापश्चिमदिशाविषे आकर्षणकरेंगा ॥ इसप्रकार दूसरेत्वगादिकइंद्रियभी तिसतिसदक्षिणादिक  
 दिशाविषेस्थित स्पर्शादिकोंकेग्रहणकरणेवासतै इसशरीरकूं तिसतिसदक्षिणादिकदिशाविषे आकर्षणकरें  
 गे ॥ यातैं जैसे अनेकगजोंकरिकै आकर्षणकन्याहूआ कदलीवृक्ष शीघ्रहीं नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे  
 परस्परविरुद्धअभिप्रायवालेचक्षुआदिकइंद्रियोंनैं तिसतिसदिशाविषेआकर्षणकन्याहूआ यहशरीरभी ना  
 शकूंप्राप्तहोवेंगा ॥ याकारणतैंभी तेइंद्रिय आत्मानहींहैं ॥ किंवा एकहींशरीरविषे जोइंद्रियरूपबहुतआ  
 त्मामानियें ॥ तौं जोमैं पूर्व रूपकूंदेखताभया सोईमैंअबी स्पर्शकूंग्रहणकरताहूं इसअनुभवकाभी बाध  
 होवेंगा ॥ काहेतैं यहउक्तअनुभव रूपद्रष्टाआत्माके तथास्पर्शकर्त्ताआत्माके एकताकूंहींविषयकरेहै ॥  
 और तुमारेमतविषे ताचक्षुइंद्रियरूपआत्माकी तथात्वक्इंद्रियरूपआत्माकी एकताहैनहीं ॥ यातैं तुमारे  
 मतविषे ताउक्तअनुभवका मिथ्यात्वरूपबाधहोवेंगा ॥ किंवा ताइंद्रियआत्मवादीनैं इंद्रियोंकीचेतनरूप  
 ताविषे जोप्राणसंवाद प्रमाणकह्याथा ॥ सोसंवादतौं तिनइंद्रियोंकेअभिमानीडेवताविषयकहै ॥ इंद्रिय  
 विषयकनहींहै ॥ यातैं तासंवादतैंभी इंद्रियोंकीआत्मतासिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा स्थूलदेहकीन्याई चक्षु  
 आदिकइंद्रियोंकाभी उत्पत्तिविनाशहोवैहै ॥ ऐसेउत्पत्तिविनाशवानइंद्रियोंकूं आत्मामानणेविषे पूर्वउ  
 क्तस्थूलदेहकीन्याई ईहांभी कृतनाश अकृताभ्यागम यहदोनोंदोष प्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैंभी यहइ  
 द्रिय आत्मानहींहैं ॥ और काणोऽहं मूकोऽहं यहउक्तअनुभवतौं लोहितःस्फटिकः इसअनुभवकीन्याई

परि०

१

॥ ७ ॥



भ्रमरूपहै ॥ यातैं ताअनुभवतैंभी तिनइंद्रियोंकीआत्मरूपता सिद्धहोवैनहीं ॥ और मेराचक्षु मंददृष्टि  
वालाहै इत्यादिकअनुभवतैं तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकाद्रष्टाआत्मा तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंतैं भिन्नहींप्र  
तीतहोवैहै ॥ और श्रुति स्मृति इतिहास पुराण इत्यादिकोंनैंभी तिनइंद्रियोंतैंभिन्नहींआत्मा कथनक  
न्याहै ॥ यातैं तेचक्षुआदिकइंद्रिय आत्मानहींहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ उक्तदोषोंतैं इंद्रियोंकूं आ  
त्मरूपता मतहोवो ॥ तथापि प्राणहीं आत्माहै ॥ काहेतैं । क्षुत्पिपासावान्अहं । याप्रकारका लोकों  
काअनुभव क्षुधापिपासाधर्मविशिष्टप्राणकीहीं आत्मरूपतासिद्धकरेहै ॥ और ( अन्योऽतरात्माप्राणम  
यः ) यहश्रुतिभी प्राणकूंहीं आत्माकहेहै ॥ और स्वप्नसुषुप्तिविषे तिनइंद्रियोंकेलयद्वएभी सोप्राण वि  
द्यमानहै ॥ यातैं सोप्राणहीं आत्माहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ वायुकाविकारहोनेतैं सोप्राणभी वा  
ह्यवायुकीन्यांई आत्मानहींहै ॥ और । क्षुत्पिपासावान्अहं । यहउक्तअनुभवतों लोहितःस्फटिकः इस  
अनुभवकीन्यांई भ्रमरूपहै ॥ यातैं ताअनुभवतैंभी प्राणकीआत्मरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ और प्राणकी  
आत्मताविषे जोतुमनैं श्रुतिकहीथी ॥ ताश्रुतिका प्राणकीआत्मताबोधनविषे तात्पर्यनहींहै ॥ किंतु  
मुमुक्षुजनोंकेप्रति सोपानक्रमकरिकै शुद्धआत्माकेजनावणेविषेहीं तात्पर्यहै ॥ जोकदाचित् ताश्रुतिका  
प्राणकीआत्मताविषेहीं तात्पर्यहोवै ॥ तों ( अन्योऽतरात्मामनोमयः ) यहश्रुति ताप्राणतैंभीअंतर दू  
सरेमनोमयकीआत्मरूपताकूंकथनकरणेहारी असंगतहोवैंगी ॥ जिसप्रकारतैं इनश्रुतियोंका शुद्धआत्मा  
केजनावणेविषे तात्पर्यहै ॥ सोप्रकार आत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे हमनैं विस्तारतैंनिरूपणकन्या  
है ॥ सो तहांसैंजानिलेणा ॥ यातैं सोप्राणभी आत्मानहींहै ॥ इसउक्तसर्वअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै  
ग्रंथकार कहेहै ॥ ( श्रोत्रवागादिकानिनाहंइति ) अर्थयह श्रोत्रवागादिकभी मैंनहींहूं ॥ ईहां श्रोत्रइं



तत्त्वा०  
॥ ८ ॥

द्रियकरिकै चक्षुआदिकसर्वज्ञानइंद्रियोंका ग्रहणकरणा ॥ और वाक्इंद्रियकरिकै हस्तपादादिकसर्वकर्म  
इंद्रियोंका ग्रहणकरणा ॥ और आदिशब्दकरिकै वायुरूपमुख्यप्राणका ग्रहणकरणा ॥ यातें यहअर्थ  
सिद्धभया ॥ मैं श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियरूपभीनहींहूं तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रियरूपभीनहींहूं तथापंच  
प्राणरूपभीनहींहूं ॥ जिसकारणतैं स्वप्नसुषुप्तिअवस्थाविषे तिनइंद्रियप्राणोंका लयहोइजावैहै ॥ और मैं  
आत्मातों तास्वप्नसुषुप्तिविषेभी द्रष्टासाक्षीरूपकरिकै विद्यमानहूं ॥ यद्यपि स्वप्नसुषुप्तिविषे अन्यपुरुषोंकी  
दृष्टिकरिकै सोप्राण प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि तासोयेदूएपुरुषकीदृष्टिकरिकै सोप्राण तहां प्रतीतहोतान  
हीं ॥ यातें स्वप्नसुषुप्तिविषे ताप्राणकालय कथनकन्याहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ उक्तदोषोंतैं तिनइं  
द्रियोंकूं तथाप्राणकूं आत्मरूपता मतहोवो ॥ तथापि विज्ञानहीं आत्माहै ॥ काहेतैं अहंकर्ता अहंभो  
क्ता यहलोकोंकाअनुभव कर्तृत्वभोक्तृत्वधर्मविशिष्टविज्ञानकीहीं आत्मरूपताकूं सिद्धकरैहै ॥ और (अ  
न्योऽतरात्माविज्ञानमयः) यहश्रुतिभी ताविज्ञानकूंहीं आत्माकहेहै ॥ यातें सोविज्ञानहीं आत्माहै ॥  
ऐसीशंकाकेप्राप्तदूए कहेहैं ॥ (बुद्धिर्नाहंइति) अर्थयह मैं बुद्धिभीनहींहूं ॥ ईहां बुद्धिशब्दकरिकै  
अंतःकरणकीवृत्तिकाग्रहणकरणा ॥ साबुद्धि अंतःकरणकाभीउपलक्षणजानणी ॥ यातें यहअर्थसिद्ध  
भया ॥ मैं अंतःकरण तथाअंतःकरणकीवृत्ति दोनों नहींहूं ॥ काहेतैं श्रुतिविषे आकाशादिकभूतों  
केसत्त्वअंशतैं अंतःकरणकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ यातें भूतोंकाविकारहोणेतैं सोअंतःकरणघटादिकों  
कीन्याई जडहींहै ॥ और सुषुप्तिविषे ताअंतःकरणका लयहींदेखाहै ॥ जोलयवालाहोवैहै ॥ सो आ  
त्माहोवैनहीं ॥ यातें सोअंतःकरण आत्मानहींहै ॥ और अहंकर्ता अहंभोक्ता यहउक्तअनुभवतों लो  
हितःस्फटिकः इसअनुभवकीन्याई भ्रमरूपहै ॥ यातें ताअनुभवतैंभी अंतःकरणकीआत्मरूपता सिद्ध

परि०  
१

॥ ८ ॥



होवैनहीं ॥ और ( अन्योऽतरात्माविज्ञानमयः ) इसश्रुतिकाभी ताविज्ञानमयकीआत्मताविषे तात्पर्यन  
हींहै ॥ जिसकारणतैं ( अन्योऽतरात्माऽऽनंदमयः ) यहश्रुति ताविज्ञानमयतैंभीअंतर दूसरेआनंदमयकूं  
हीं आत्माकहेहै ॥ यातैं ताश्रुतितैंभी ताविज्ञानमयकीआत्मरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं अंतःकरण त  
थाअंतःकरणकीवृत्ति आत्मानहींहै ॥ इसकहणेकरिकै मनोमयकोशकाभी आत्मपणा खंडनकन्या ॥ जि  
सकारणतैं बुद्धिकीन्याई सोमनभी ताअंतःकरणकीवृत्तिहींहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ उक्तदोषोंतैं ता  
विज्ञानमयकूं आत्मरूपताकेअभावहूएभी ॥ सर्वअध्यासकाकारण तथाआनंदमयशब्दकावाच्यअर्थ जो  
अज्ञानहै ॥ सोअज्ञानहीं आत्माहै ॥ काहेतैं ( अज्ञोऽहं ) यहअनुभव ताअज्ञानकीहींआत्मताकूंसिद्धकरे  
है ॥ और ( अन्योऽतरात्माऽऽनंदमयः ) यहश्रुतिभी ताआनंदमयकूंहीं आत्माकहेहै ॥ ऐसीशंकाकेप्रा  
प्तहूए कहेहैं ( अध्यासमूलनाहंइति ) अर्थयह मैं अध्यासकामूलभीनहींहूं ॥ ईहां तिसधर्मतैरहितपदार्थ  
विषे जोतत्त्वधर्मवत्ताबुद्धिरूप विपर्ययहै जिसविपर्ययकूं मिथ्याज्ञानकहेहैं ताकानाम अध्यासहै ॥ जैसे आ  
त्मत्वधर्मतैरहितदेहइंद्रियादिकोंविषे जाआत्मत्वबुद्धिहै तथारजतत्वधर्मतैरहितशुक्तिविषे जारजतत्वबुद्धि  
है ताकानाम अध्यासहै ॥ यहअध्यास द्वितीयपरिच्छेदविषे विस्तारकरिकैनिरूपणकरेंगे ॥ तिसअध्या  
सका मूल कहीये कारण जोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञानभी मैं नहींहूं ॥ काहेतैं सोअज्ञान महावाक्यजन्य  
ज्ञानकरिकै निवृत्तहोइजावैहै ॥ तथा सोअज्ञान देहादिकोंकीन्याई जडहींहै ॥ और समाधिअवस्थावि  
षे तत्त्ववेत्तापुरुषोंकूं सोअज्ञान प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं सोअज्ञानभी आत्मानहींहै ॥ और अज्ञोऽहं य  
हउक्तअनुभवतों लोहितःस्फटिकः इसअनुभवकीन्याई भ्रमरूपहै ॥ यातैं ताअनुभवतैंभी अज्ञानकीआ  
त्मरूपता सिद्धहोवैनहीं ॥ और ( ब्रह्मपुच्छप्रतिष्ठा ) यहश्रुति ताआनंदमयकोशतैंभिन्न ताआनंदमयको



तत्त्वा०

॥ ९ ॥

शके अधिष्ठानरूप तथा साक्षीरूप आत्माकं प्रतिपादनकरे है ॥ यातैं ( अन्योऽतरात्माऽऽनंदमयः ) इस उक्त श्रुतिका ता आनंदमयकी आत्मताविषे तात्पर्यनहीं है ॥ यातैं ता श्रुतिताैं भी ता आनंदमयकी आत्मता सिद्ध होवै नहीं ॥ यातैं सो अज्ञानभी आत्मानहीं है इति ॥ तहां शरीर इंद्रिय प्राण मन बुद्धि इनो कूं यथाक्रमतैं आत्मा मानणे हारेवादीयो के मतों का विस्तारतैं प्रतिपादन तथा खंडन न्यायप्रकाशके द्वितीयपरिच्छेदविषे आत्मनिरूपणविषे हमनैं निरूपणकन्या है ॥ यातैं ते मत ईहां संक्षेपतैं निरूपणकरे हैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जबी पूर्वउक्तरीतिसैं देह इंद्रियादिकोंकी आत्मरूपता तुमारे कूं अंगीकार नहीं है ॥ तबी तुमारे मतविषे कौन आत्मा है ॥ जिस आत्माका अहं ब्रह्मास्मि इस प्रकारतैं ब्रह्मरूपत्व तुम अनुभव करो हो ॥ ऐसी शंकाके प्राप्त हूए कहे हैं ॥ ( सत्येति ) अज्ञानका तथा ता अज्ञानके कार्यका जो साक्षी है सोईहीं हमारे मतविषे आत्मा है ॥ और सो साक्षी आत्माहीं अहं इस प्रकारतैं अनुभव होवै है ॥ तिस साक्षी आत्माकाहीं अहं ब्रह्मास्मि इस प्रकारतैं ब्रह्मरूपत्व हम अनुभवकरे हैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ता साक्षी आत्माविषे जिस ब्रह्मरूपता कूं तुम अनुभव करते हो ॥ सो ब्रह्म कौन है ॥ ऐसी शंकाके प्राप्त हूए कहे हैं ॥ ( कृष्ण एवाहमस्मि इति ) अर्थ यह कृष्णहीं परब्रह्म है ॥ तहां स्मृति ॥ ( कृषिर्भूवाचकः शब्दो णश्च निर्वृत्तिवाचकः तयोरेक्यं परंब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते ) अर्थ यह ॥ कृष् यह शब्द सत्ताका वाचक होवै है ॥ और ण यह शब्द आनंदका वाचक होवै है ॥ ता सत्ता आनंद दोनोंका जो एकत्व है सो परब्रह्म है ॥ सो परब्रह्महीं कृष्ण इस नाम करिके कहा जावै है इति ॥ यह स्मृति परब्रह्म कूंहीं कृष्ण नाम करिके कथनकरे है ॥ यातैं ( कृष्ण एवाहमस्मि ) इस वचनका ब्रह्महीं मैं हूं यह अर्थ सिद्ध भया ॥ ईहां यह अभिप्राय है ॥ ( तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत् । अनेन जीवेनात्मनाऽनुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणि । स एष इह प्रविष्ट आनखाग्रेभ्यः ) अर्थ यह ॥ सो परमा

परि०

१

॥ ९ ॥



त्मादेव इस जगत्कूँरचिकै आपहीं तिस जगत्विषे प्रवेश करता भया ॥ और इस आपणे जीवरूपतैं जगत् विषे प्रवेश करिकै मैं परमात्मा नामरूपकूँ प्रगट करों ॥ और सो परमात्माहीं इन संघातों विषे नखों के अग्र भाग पर्यंत प्रवेश करता भया इति ॥ इत्यादिक श्रुतियां इस अर्थकूँ कथन करेहैं ॥ वास्तवतैं जन्म मरणादिक सर्व विकारों तैं रहित तथानित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव ऐसा जो आत्मा है ॥ सो आत्मा अनादि अनिर्वचनी यमायाशक्तिकरिकै आकाशतैं आदिलै के स्थूल शरीर पर्यंत सर्व जगत्कूँ उत्पन्न करिकै पुनः तिस जगत् विषे प्रवेश करिकै तिस जगत्का साक्षी हूँ आभी अविवेकतैं तिस जगत्के धर्मोंकूँ आपणे विषे आरोपण करिकै मैं कर्त्ता हूँ मैं भोक्ता हूँ मैं मनुष्य हूँ मैं ब्राह्मण हूँ इस प्रकार के संसारकूँ अनुभव करेहैं ॥ सोई ही आत्मा जबी कोई पूर्वले पुण्य कर्म के प्रभावतैं साधन संपन्न होइके श्रुति आचार्य के प्रसादतैं विवेककूँ प्राप्त होवैहैं ॥ तबी ता विवेकतैं तिस कर्त्तृत्व भोक्तृत्वादिरूप संसारकूँ परित्याग करिकै तथा आपणे स्वरूप के साक्षात्कारतैं तामायाकूँ नाश करिकै आपणे परमानंद स्वरूपकूँ अनुभव करेहैं ॥ यातैं इस साक्षी आत्मा की ब्रह्मरूपता विषे कोई भी विरोध नहीं है ॥ इस अर्थकूँ आगे भी स्पष्ट करिकै निरूपण करेंगे ॥ अब आपणा आत्मारूप करिकै साक्षात्कार करण योग्य ब्रह्म के स्वरूप लक्षणकूँ तथा तटस्थ लक्षणकूँ निरूपण करेहैं ॥ ( सत्यानंदरूपश्चिदात्मा माया साक्षी इति ) अर्थ यह ॥ सो परब्रह्म सत्यरूप है तथा आनंदरूप है तथा चिदात्मारूप है तथा माया का साक्षी है ॥ ईहां माया साक्षी इस पद करिकै ता ब्रह्मका तटस्थ लक्षण कथन कन्या ॥ तहां जगत्के उपादान कारण भूत माया कूँ जो साक्षात् प्रकाश करेहैं सो माया साक्षी कहा जावैहैं ॥ इस माया का स्वरूप आगे कथन करेंगे ॥ और सत्यादिक पदों करिकै ता ब्रह्मका स्वरूप लक्षण कथन कन्या है ॥ तहां तीन काल विषे जाका बाध नहीं होवैहैं सो सत्य कहा जावैहैं ॥ और जो निरतिशय सुखरूप होवैहैं सो आनंद कहा जावैहैं ॥ और जो ज्ञान स्वरूप



तत्त्वा०

॥ १० ॥

पहोवैहै सोचिदात्माकह्याजावैहै ॥ इसप्रकारका सत्य आनंद चिदात्मा सोब्रह्महीहै ॥ इहां ब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्त जोमिथ्यावस्तुकातादात्म्यहै ताकी सत्यइसविशेषणकरिकै निवृत्तिकरी ॥ और ब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्त जोदुःखका तथातादुःखकेसाधनोंका तादात्म्यहै ताकी आनंदइसविशेषणकरिकै निवृत्तिकरी ॥ और ब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्त जोजडकातादात्म्यहै ताकी चिदात्माइसविशेषणकरिकै निवृत्तिकरी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ सत्यरूपहोणेतैं सोब्रह्म मिथ्यावस्तरूपनहीं ॥ और आनंदरूपहोणेतैं सोब्रह्म दुःखतत्साधनरूपनहीं ॥ और चिदात्मारूपहोणेतैं सोब्रह्म जडरूपनहीं ॥ ऐसासत्चित्आनंदस्वरूप सर्वकासाक्षीपरमात्मा मैंहूं ॥ जिसकारणतैं तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकश्रुतिवचन इस जीवात्माकूं ब्रह्मरूपहीकहेहैं ॥ इतिद्वितीयश्लोकव्याख्या ॥ २ ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वदोश्लोकोंकरिकै ब्रह्माहं याप्रकारका तत्त्वानुसंधानरूपमंगलकन्या ॥ सोग्रंथकेआरंभविषे मंगलकरणा योग्यनहींहै ॥ काहेतैं जिसकेकरणेविषे कोईप्रमाणहोवैहै ॥ तथा जिसकेकरणेका कोईप्रयोजनहोवैहै ॥ सोईहीं करणे योग्यहोवैहै ॥ और मंगलकेकरणेविषे कोईप्रमाणनहींहै ॥ तथा कोईप्रयोजनभीनहींहै ॥ सोदिखावैहैं ॥ तहां तामंगलाचरणविषे प्रत्यक्षप्रमाणतों संभवतानहीं ॥ काहेतैं सामंगलाचरणकीकर्तव्यता धर्माधर्मकी न्याई अतिइंद्रियहै ॥ ताअतिइंद्रियअर्थविषे इंद्रियरूपप्रत्यक्षप्रमाण संभवतानहीं ॥ किंवा कोईकनास्तिका दिकोंकेग्रंथकी मंगलाचरणतैंविनाहीं समाप्तिदेखनेविषेआवैहै ॥ और कोईग्रंथकीतों तामंगलकेकीयेहू एभी समाप्तिदेखनेविषेआवतीनहीं ॥ यहव्यतिरेकव्यभिचारज्ञान तथाअन्वयव्यभिचारज्ञान तामंगलविषे ग्रंथसमाप्तिकेकारणताज्ञानका प्रतिबंधकहै ॥ यातैं तामंगलविषे ग्रंथसमाप्तिकीकारणता ताप्रत्यक्षप्रमाणकरिकै जानणेकूंहींअशक्यहै ॥ और तामंगलाचरणविषे अनुमानप्रमाणभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं **जोहेतु**

परि०

१

॥ १० ॥



जिससाध्यकीव्याप्तिवालाहोवैहै ॥ सोहेतुहीं तिससाध्यकीसिद्धिकरैहै ॥ जैसे वन्हिरूपसाध्यकीव्याप्तिवा  
लाहोणेतैं धूमरूपहेतु तावन्हिरूपसाध्यकीसिद्धिकरैहै ॥ तैसे तामंगलकीकर्त्तव्यतारूपसाध्यकेव्याप्तिवा  
ला कोईहेतुरूपलिंगहैनहीं ॥ ताहेतुरूपलिंगतैंविना अनुमानहोवैनहीं ॥ और तामंगलाचरणविषे वेदरूपश  
ब्दभी प्रमाणनहींहै ॥ काहेतैं तामंगलाचरणकीकर्त्तव्यताकाबोधक कोईवेदवाक्य इसकालविषे प्रत्यक्षदेख  
णेविषेआवतानहीं ॥ और तामंगलाचरणविषे अर्थापत्तिप्रमाणभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् ता  
मंगलाचरणतैंविना ग्रंथकीसमाप्ति नहींहोती ॥ तौं साग्रंथकीसमाप्ति तामंगलाचरणतैंविना अनुपपन्नहूई  
तामंगलाचरणकीकल्पना करावती ॥ जैसे दिनविषेनहींभोजनकरणेहारेपुरुषकापीनत्व रात्रिभोजनतैंवि  
नाअनुपपन्नहूआ तारात्रिभोजनकीकल्पनाकरावैहै ॥ परंतु साग्रंथकीसमाप्तितां तामंगलतैंविनाहीं देखणे  
विषेआवैहै ॥ यातैं तामंगलाचरणविषे अर्थापत्तिप्रमाणभी संभवतानहीं ॥ किंवा जैसे तामंगलाचरणविषे  
कोईप्रमाणनहींहै ॥ तैसे तामंगलाचरणका कोईप्रयोजनभी देखणेविषेआवतानहीं ॥ तहां ग्रंथकीसमाप्ति  
तौं तामंगलाचरणतैंविनाभी देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं साग्रंथकीसमाप्तिभी तामंगलाचरणकाप्रयोजन  
नहींहै ॥ जो जिसतैंविना कदाचित्भी नहींहोवैहै ॥ सोईहीं तिसकाप्रयोजनहोवैहै ॥ और जिसपुरु  
षविषे स्वतःसिद्ध विघ्नोंकाअत्यंताभावहै ॥ तिसपुरुषविषे कन्याहूआभीसोमंगलाचरण विघ्नध्वंसकाजन  
कहोतानहीं ॥ यातैं सोविघ्नोंकाध्वंसभी तामंगलाचरणका प्रयोजननहींहै ॥ जिसकेहूए जोअवश्यहो  
वैहै ॥ सोईहीं तिसकाप्रयोजनहोवैहै ॥ और ग्रंथकीसमाप्ति विघ्नोंकाध्वंस इनदोनोंतैंभिन्न दूसराकोई  
मंगलाचरणकाप्रयोजन शास्त्रकारोंनैं मान्यानहीं ॥ यातैं प्रमाण प्रयोजन दोनोंकेअभावतैं सोमंगला  
चरण करनेकूंयोग्यनहींहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ग्रंथकेआरंभविषे सोमंगलाचरण अवश्यकरणेयोग्य



तत्त्वा०

॥ ११ ॥

है ॥ तहां तामंगलाचरणविषे वादीनैं जोप्रमाणकाअभाव कहाथा ॥ सोभी असंगतहै ॥ जिसकारण तैं ( निर्विघ्नसमाप्तिकामोमंगलमाचरेत् ) यहश्रुतिहीं तामंगलाचरणविषे प्रमाणहै ॥ यद्यपि इदानींका लविषे किसीभीवेदकीशाखाविषे यहश्रुति प्रत्यक्षदेखनेविषेआवतीनहीं ॥ तथापि शिष्टाचारत्वरूपहेतु तैं ताश्रुतिकाअनुमानहोवैहै ॥ ताश्रुतिघटित कोईकवेदकीशाखा उच्छिन्नहोइगईहै ॥ यातैं इदानींका लविषे साश्रुति प्रत्यक्षदेखनेविषेआवतीनहीं ॥ ऐसीकल्पनाहोवैहै ॥ ताअनुमानका यहआकारहै ॥ ( मंगलं वेदबोधिताभीष्टोपायताकं अलौकिकावगीतशिष्टाचारत्वात् दर्शादिवत् ) ॥ अर्थयह ॥ वेदनैं बोधनकरीहै निर्विघ्नसमाप्तिरूपइष्टकीउपायता जिसविषे ताकानाम वेदबोधितअभीष्टउपायताकहै ॥ ऐसावेदबोधितअभीष्टकाउपाय मंगलहै ॥ अलौकिक तथाअविगीत ऐसाजो शिष्टपुरुषोंकाआचारहै ताआचाररूपहोणेतैं ॥ जोजो अलौकिकअविगीतशिष्टाचारहोवैहै ॥ सोसो वेदबोधितइष्टकाउपायहीं होवैहै ॥ जैसे दर्शपूर्णमासकर्म अलौकिकअविगीतशिष्टाचाररूपहै ॥ यातैं ( दर्शपूर्णमासाभ्यांस्वर्गका मोयजेत ) इसवेदवाक्यकरिकैबोधित स्वर्गरूपइष्टकाउपायभीहै ॥ तैसे यहमंगलभी अलौकिकअविगीतशिष्टाचाररूपहै ॥ यातैं वेदबोधित निर्विघ्नसमाप्तिरूपइष्टकाउपायभी अवश्यहोवैंगा ॥ ईहां मंगल पक्ष है ॥ और वेदबोधितइष्टार्थकीउपायता साध्यहै ॥ और अलौकिकअविगीतशिष्टाचारत्व हेतुहै ॥ और दर्शपूर्णमासादिरूपकर्म दृष्टांतहै ॥ यहअनुमानकीरीति आगेभीजानिलेणी ॥ तहां प्रत्यक्षादिकप्रमाणों के तथाअनुमानकेअंगभूत पक्षदृष्टांतादिकोंके लक्षण द्वितीयपरिच्छेदविषे कथनकरेंगे ॥ ईहां हेतुविषे स्थित अलौकिक अविगीत शिष्ट इनतीनोंपदोंका यहअर्थहै ॥ शास्त्रकीआज्ञातैंविनाहीं केवलरागकरिकैप्राप्त जेआहारादिकहैं तिनोंकानाम लौकिकहै ॥ तिनलौकिकव्यवहारोंतैं जोभिन्नहोवै सो अलौ

परि०  
१

॥ ११ ॥



किक कहाजावैहै ॥ और जोआचार नरकादिरूपबलवानअनिष्टकाअजनकहूआ स्वर्गादिरूपइष्टका साधनहोवैहै ॥ सोआचार अविगीत कहाजावैहै ॥ और जोपुरुष वेदोंकीप्रमाणताकूं अंगीकारकरेहै ॥ सोपुरुष शिष्ट कहाजावैहै इति ॥ इसप्रकारकेअनुमानकरिकैसिद्ध जाउक्तश्रुतिहै ॥ ताश्रुतिप्रमाणतैंहीं तामंगलकूं निर्विघ्नग्रंथसमाप्तिकीकारणता निश्चयहोवैहै ॥ यातैं जिननास्तिकादिकोंकेग्रंथकी मंगलाचरणतैंविनाहीं समाप्तिदेखनेविषेआवैहै ॥ तिननास्तिकादिकोंविषेभी ताग्रंथसमाप्तिरूपकार्यतैं जन्मांतरकेमंगलाचरणका अनुमानकन्याजावैहै ॥ सोजन्मांतरकामंगलाचरणहीं ताग्रंथसमाप्तिका कारणहै ॥ यातैं सोपूर्वउक्तव्यतिरेकव्यभिचार संभवतानहीं ॥ और जहां मंगलकेकीयेहूएभी ग्रंथकीसमाप्तिनहींभई ॥ तहां तिसग्रंथकर्त्तापुरुषविषे विघ्नोंकीबाहुल्यताजानणी ॥ अथवा कोईअतिबलवानविघ्न जानणा ॥ तिनबहुतविघ्नोंकीनिवृत्ति तथाताअतिबलवानविघ्नकीनिवृत्ति बहुतमंगलोंकरिकै तथाअतिबलवानमंगलकरिकैहीं होवैहै ॥ सोइसप्रकारका विघ्ननिवर्त्तकमंगल तिनग्रंथोंविषेहैनहीं ॥ यातैं सोपूर्वउक्त अन्वयव्यभिचारभी ईहां प्राप्तहोवैनहीं ॥ इसप्रकार तामंगलाचरणविषे उक्तश्रुतिप्रमाणकेसंभवहूए तथानिर्विघ्नग्रंथसमाप्तिरूपप्रयोजनकेसंभवहूए ग्रंथकेआरंभविषे सोमंगलाचरण अवश्यकरणेयोग्यहै ॥ और केईकग्रंथकारतों ग्रंथसमाप्तिकेप्रतिबंधकविघ्नोंकाध्वंसहीं तामंगलाचरणकाप्रयोजनमानेहैं ॥ इसमंगलवादका विस्तारतैंनिरूपणतों न्यायप्रकाशकेप्रथमपरिच्छेदविषे हमनें कन्याहै ॥ यातैं ईहां संक्षेपतैंनिरूपणकन्याहै ॥ जिसकूं अधिकजानणेकीइच्छाहोवै ॥ तिसनें तहांसैंजानिलेणा इति ॥ ॥ अथग्रंथारंभः ॥ ॥ तहां श्रीमत्शंकराचार्यकृतभाष्यसहित जोश्रीव्यासभगवान्कृत सूत्रोंकासमूहरूप शारीरकमीमांसाशास्त्रहै ॥ ताकेविषे (अथातोब्रह्मजिज्ञासा) इसप्रथमसूत्रकरिकै विवेकादिकचतुष्टयसाधनसंपत्तितैंअनंतर



तत्त्वा०

॥ १२ ॥

अधिकारी पुरुषों के प्रति ब्रह्मज्ञान की इच्छा विधान करी है ॥ तहां विचार कन्ये दूए तत्त्वमसि आदिक वाक्य करि कै जन्म तथा जीव ब्रह्म के एकत्व कूं विषय करणे हारा जो अहं ब्रह्मास्मि या प्रकार का फल रूप ज्ञान है ॥ सो ज्ञान ही ता इच्छा का कर्म है ॥ और सो मोक्ष का हेतु फल रूप ज्ञान तत्त्व पदार्थ के ज्ञान के अधीन है ॥ जिस कारण तें पदार्थ ज्ञान तें रहित पुरुष कूं वाक्यार्थ ज्ञान होतान हीं ॥ किंतु पदार्थ ज्ञान वाले पुरुष कूं हीं सो वाक्यार्थ ज्ञान होवै है ॥ और सो वाक्यार्थ ज्ञान का हेतु भूत पदार्थ ज्ञान भी ता तत्त्व पदार्थ के विचार अधीन है ॥ ता तत्त्व पदार्थ के विचार तें विना सो पदार्थ ज्ञान होतान हीं ॥ या तें ता उक्त सूत्र नें अर्थ तें ता विचार की कर्त्तव्यता हीं विधान करी है ॥ अर्थात् सा धन चतुष्टय संपत्ति तें अनंतर इस अधिकारी पुरुष नें ब्रह्म का विचार करणा ॥ यह ता सूत्र का अर्थ सिद्ध होवै है ॥ तहां सो विचार भी दो प्रकार का होवै है ॥ एक तो प्रधान विचार होवै है ॥ और दूसरा सहकारी विचार होवै है ॥ तहां अहं ब्रह्मास्मि या प्रकार के वाक्यार्थ ज्ञान करि कै प्राप्त होने कूं अति वांछित होने तें ब्रह्म प्रधान है ॥ ऐसे प्रधान ब्रह्म का जो विचार है ॥ सो विचार प्रधान विचार कहा जावै है ॥ और सो ब्रह्म का विचार समन्वय आदिकों के विचार तें विना संभवतान हीं ॥ या तें समन्वय अविरोध साधन फल इन चारों के जे विचार हैं ॥ ते विचार सहकारी विचार कहे जावै हैं ॥ तहां उपनिषद् रूप वेदांतों विषे स्थित जे वाक्य हैं ॥ तिन वाक्यों का ब्रह्म आत्मा के अभेद की प्रतिपादक तारूप करि कै जो तात्पर्य है ता कानाम समन्वय है ॥ ता समन्वय का विचार ता शारीरक मीमांसा शास्त्र के प्रथम अध्याय विषे कन्या है ॥ और श्रुति के विरोध दूए स्मृति आदिकों कूं तथा प्रत्यक्षादिक प्रमाणों कूं आभासरूपता होने तें ता वेदांत समन्वय का तिन स्मृति प्रत्यक्षादिक प्रमाणांतरों के साथ जो विरोध का अभाव है ता कानाम अविरोध है ॥ सो अविरोध का विचार भी ता शारीरक मीमांसा शास्त्र के द्वितीय अध्याय विषे कन्या है ॥ और ज्ञान की प्राप्ति के जे उपाय हैं तिनों कानाम साधन है ॥ ते साधन भी अं

परि०  
१

॥ १२ ॥



तरंग बहिरंग इसभेदकरिकै दो प्रकारके होवै हैं ॥ तिनदोनों प्रकारके साधनोंका विचार ताशारीरकमीमांसाशास्त्रके तृतीय अध्याय विषे कन्या है ॥ और तिनसाधनोंकरिकै प्राप्त होने योग्य जो अर्थ है ताका नाम फल है ॥ सो फल भी पर अपर इसभेदकरिकै दो प्रकारका होवै है ॥ तिसदो प्रकारके फलका विचार ताशारीरकमीमांसाशास्त्रके चतुर्थ अध्याय विषे कन्या है ॥ इसप्रकारके समन्वयादिक चारोंके विचारकूं सहकारी विचार कहे हैं ॥ तहां तिनसाधनोंके मध्य विषे जो तत्त्वमसि आदिक महावाक्योंके अर्थका विचार है ॥ तिसविचारकूं ब्रह्मज्ञानके प्रति अंतरंग साधनता है ॥ और तिसवाक्यार्थविचारका तत्त्वंपदार्थका विचार सहकारी है ॥ यातैं तिस तत्त्वंपदार्थके विचारकूं भी ताब्रह्मज्ञानके प्रति अंतरंग साधनता ही है ॥ या कारणतैं इसग्रंथके आदि विषे प्रथम ता तत्त्वंपदार्थके विचारकूं हीं निरूपण करे हैं ॥ तात्पर्य यह ॥ चतुष्टय साधन संपन्न अधिकारी पुरुषकूं मोक्ष की प्राप्ति तत्त्वमसि आदिक महावाक्यके अर्थज्ञानतैं हीं होवै है ॥ और तावाक्यार्थज्ञान की प्राप्ति तत्त्वंपदार्थके ज्ञानतैं हीं होवै है ॥ और तापदार्थज्ञान की प्राप्ति तत्त्वंपदार्थके विचारतैं हीं होवै है ॥ यातैं सो तत्त्वंपदार्थका विचार मुमुक्षु जनकूं अवश्य कन्या चाहिये ॥ ॥ शंका ॥ ॥ लोक विषे तथाशास्त्र विषे सुख की प्राप्ति कूं तथा दुःख की निवृत्ति कूं हीं पुरुषार्थरूपता देखी है ॥ सो पुरुषार्थ हीं संपादन करने योग्य होवै है ॥ और सो तत्त्वंपदार्थका ज्ञान तो सुख की प्राप्ति रूप भी नहीं है ॥ तथा दुःख की निवृत्ति रूप भी नहीं है ॥ यातैं अपुरुषार्थरूप होनेतैं सो पदार्थज्ञान संपादन करने योग्य नहीं है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि तापदार्थज्ञानकूं स्वरूपतैं पुरुषार्थरूपता नहीं है ॥ तथापि ता पुरुषार्थका साधन जो महावाक्यार्थज्ञान है ॥ तावाक्यार्थज्ञानके प्रति तापदार्थज्ञानकूं हेतुता है ॥ यातैं तावाक्यार्थज्ञान द्वारा ता पुरुषार्थका साधन होनेतैं सो पदार्थज्ञान अवश्य संपादन करने योग्य है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसमोक्ष वासतै तुम तत्त्व



तत्त्वा०

॥ १३ ॥

पदार्थकानिरूपणकरतेहो ॥ सोमोक्ष क्यावस्तुहै ॥ तहां अज्ञानकीनिवृत्तिकानाम मोक्षहै ॥ अथवा ब्रह्मभावकानाम मोक्षहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरो सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं सोअज्ञानकीनिवृत्तिरूपमोक्ष ब्रह्मकेस्वरूपतैंभिन्नहींहोवैगा ॥ ताकरिकै ( एकमेवाद्वितीयब्रह्म ) इसश्रुतिकाविरोधहोवैगा ॥ यद्यपि ताब्रह्मतैंभिन्न दूसराकोईभावपदार्थ नहींहै ॥ साअज्ञानकीनिवृत्ति अभावरूपहै ॥ यातैं ताकेविद्यमानहूएभी ब्रह्मकीअद्वितीयरूपता निवृत्तहोवैनहीं ॥ इसरीतिसैं भावाऽद्वैतपरताकरिकै ताश्रुतिकाविरोधहोतानहीं ॥ तथापि ब्रह्मतैंभिन्न भावअभावरूपसर्वप्रपंचकानिषेधकरणेहारेअद्वैतपदका संकोचकरिकै केवल भावपदार्थोंकेनिषेधपरत्वमानणेविषे कोईप्रमाणहैनहीं ॥ किंवा तुमारेमतविषे ब्रह्मतैं भिन्नसर्वपदार्थोंकूं कल्पितपणाहीं अंगीकारकन्याहै ॥ यातैं ब्रह्मतैं भिन्नहोणेतैं साअविद्याकीनिवृत्तिभी कल्पितहींहोवैगी ॥ और जोजोपदार्थ कल्पितहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ श्रुतिरजतकीन्याई मिथ्याहीं होवैहै ॥ यातैं ताअविद्याकीनिवृत्तिरूपमोक्षकूंभी कल्पितपणेकरिकै अनित्यपणाहीं प्राप्तहोवैगा ॥ किंवा तुमारेमतविषे साअविद्याभी कल्पितहीं मानीहै ॥ और कल्पितवस्तुकाअभावभी कल्पितहींहोवैहै ॥ यातैं ताकल्पितअविद्याकीनिवृत्तिभी कल्पितहींहोवैगी ॥ और कल्पितवस्तुकूं सत्यरूपतासंभवतीनहीं ॥ याकारणतैंभी ताअविद्याकीनिवृत्तिरूपमोक्षकूं अनित्यपणाहीं प्राप्तहोवैगा ॥ और तामोक्षकाअनित्यपणा तुमारेकूंभी इष्टनहींहै ॥ जिसकारणतैं सर्वमोक्षवादीयोंनैं मोक्षकानित्यपणाहीं अंगीकारकरीताहै ॥ कोईभीमोक्षवादी मोक्षकूंअनित्यमानतानहीं ॥ जोकदाचित् मोक्षभीअनित्यहोताहोवै ॥ तौं मुक्तपुरुषों कीभी पुनःउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और ( नसपुनरावर्तते । यद्वत्त्वाननिवर्ततेतद्वामपरमंमम ) इत्यादिक श्रुतिस्मृतियोंनैं तामुक्तपुरुषकेपुनःउत्पत्तिकानिषेधकन्याहै ॥ यातैं अविद्याकीनिवृत्तिकूं मोक्षरूपता सं

परि०

१

॥ १३ ॥



भवेनहीं ॥ और ब्रह्मभावकानाम मोक्षहै यहद्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरो सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतै सोब्रह्मभाव अनादिहोणेतै नित्यसिद्धहै ॥ जोपदार्थ नित्यसिद्धहोवैहै ॥ सोपदार्थ किसीसाधनकरिकैसाध्यहोवैनहीं ॥ अनित्यपदार्थहीं साधनकरिकैसाध्यहोवैहै ॥ यातै ताब्रह्मभावरूपमोक्षकूं आत्मज्ञानकरिकैसाध्यपणा नहींहोवैगा ॥ और तुमोंनै मोक्षकूं आत्मज्ञानकरिकैसाध्य मान्याहै ॥ यातै ताब्रह्मभावकूं भी मोक्षरूपतासंभवेनहीं ॥ इसप्रकार मोक्षके अनिरूपणहूए तामोक्षकीसाधनतारूपकरिकै महावाक्यार्थ ज्ञानकीप्रयोजनवत्ताभी निरूपणकरणेकूंअशक्यहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ हमारेमतविषे अविद्याकीनिवृत्तिहीं मोक्षहै ॥ साअविद्याकीनिवृत्ति ब्रह्मतैभिन्ननहींहै ॥ किंतु अधिष्ठानब्रह्मरूपहींहै ॥ काहेतै कल्पितवस्तुकाअभाव अधिष्ठानतैभिन्नहोतानहीं ॥ जैसे कल्पितसर्परजतादिकोंकाअभाव रज्जुशुक्तिआदिकअधिष्ठानतै भिन्नहोतानहीं ॥ किंतु अधिष्ठानरूपहींहोवैहै ॥ तैसे ताकल्पितअविद्याकीनिवृत्ति भी अधिष्ठानब्रह्मरूपहींहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताअविद्यानिवृत्तिरूपमोक्षकूं जोब्रह्मरूपमानोंगे तों ता ब्रह्मरूपमोक्षकूं ज्ञानकरिकैसाध्यपणा नहींहोवैगा ॥ और तुमोंनै मोक्षकूं ज्ञानकरिकैसाध्यमान्याहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ज्ञानकरिकैमोक्षसाध्यहै ईहां साध्यशब्दकरिकै हमारेकूं जन्यपणा विवक्षितनहींहै ॥ अर्थात् ज्ञानकरिकै मोक्षजन्यहोवैहै ऐसाहमारेकूं विवक्षितनहींहै ॥ जिसकारणतै अनादिसिद्धहोणेतै ताब्रह्मभावकीउत्पत्तिहीं संभवतीनहीं ॥ किंतु तासाध्यशब्दकरिकै हमारेकूं अभिव्यक्तिमात्र विवक्षित है ॥ अर्थात् ज्ञानकरिकै तामोक्षकीअभिव्यक्तिमात्रहोवैहै यहहमारेकूं विवक्षितहै ॥ तहां अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेज्ञानकरिकै जोद्वैतभ्रमकीनिवृत्तिहै तथाअखंडएकरसआनंदकीस्फूर्तिहै ॥ यहहीं तामोक्षकी अभिव्यक्तिहै ॥ यातै अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेवाक्यार्थज्ञानकूं तामोक्षकासाधनपणा संभवैहै ॥ ऐसा



तत्त्वा०

॥ १४ ॥

वाक्यार्थज्ञान तत्त्वंपदार्थकेज्ञानकरिकैहींहोवैहै ॥ और सोपदार्थज्ञान तातत्त्वंपदार्थकेनिरूपणकरिकैहीं होवैहै ॥ यातें प्रथम तत्पदार्थकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां असाधारणधर्मरूपजोलक्षणहै तथाप्रत्यक्षादिरूप जोप्रमाणहै तिनदोनोंकरिकैहीं वस्तुकीसिद्धिहोवैहै ॥ तालक्षणप्रमाणतैंविना वस्तुकीसिद्धिहोतीनहीं ॥ इसप्रकारकेन्यायकूंअंगीकारकरिकै प्रथम तातत्पदार्थकालक्षणकरैहैं ॥ तहां तिसब्रह्मरूपतत्पदार्थकालक्षण दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतों तटस्थलक्षणहोवैहै ॥ और दूसरा स्वरूपलक्षणहोवैहै ॥ तहां ( कादाचित्कत्वेसतिव्यावर्तकं तटस्थलक्षणं ) ॥ अर्थयह ॥ जोलक्षण आपणे लक्ष्यविषे कदाचित्त्वर्त्तताहूआ ता आपणे लक्ष्यकूं अन्यपदार्थोंतैंभिन्नकरैहै ॥ सोलक्षण तटस्थलक्षण कहाजावैहै ॥ जैसे पृथिवीका गंधवत्त्वलक्षण तटस्थलक्षणहै ॥ तहां महाप्रलयविषे सर्वकार्यकानाशहोवैहै ॥ यातें नैयायिकोंकेमतविषे सो गंधगुण तामहाप्रलयविषे परमाणुरूपपृथिवीविषेरहतानहीं ॥ और नैयायिकोंकेमतविषे जिसक्षणविषे द्रव्यउत्पन्नहोवैहै ॥ तिसक्षणविषे ताद्रव्यविषेरूपादिकगुण उत्पन्नहोतेनहीं ॥ किंतु द्वितीयक्षणविषे तेरूपादिकगुण उत्पन्नहोवैहैं ॥ ताप्रथमक्षणविषे सोद्रव्य निर्गुणहींउत्पन्नहोवैहै ॥ इसअर्थविषेयुक्तितों न्यायप्रकाशकेद्वितीयपरिच्छेदकेआदिविषे विस्तारतैंकथनकरीहै ॥ सो तहांसैंजानिलेणी ॥ यातें पृथिवीकेउत्पत्तिक्षणविषेभी सोगंधगुण तापृथिवीविषेरहतानहीं ॥ किंतु मध्यकालविषेहीं सोगंधगुण तापृथिवीविषे रहेहै ॥ यातें सोगंधगुण कादाचित्कहै ॥ और सोगंधगुण आपणेआश्रयभूतपृथिवीकूं दूसरेजलादिक पदार्थोंतैंभिन्नभीकरावैहै ॥ यातें कादाचित्कहोणेतें तथाव्यावर्तकहोणेतें सोगंधवत्त्व तापृथिवीका तटस्थलक्षणहींहै ॥ इसप्रकार तत्पदार्थरूपब्रह्मकाभी ( सृष्टिस्थितिलयकारणत्व ) यह तटस्थलक्षणहै ॥ इहां सृष्टिशब्दकरिकै जगत्केउत्पत्तिका ग्रहणकरणा ॥ और स्थितिशब्दकरिकै जगत्केपालनका ग्र

परि०  
१

॥ १४ ॥



हणकरणा ॥ और लयशब्दकरिकै जगत्केप्रलयका ग्रहणकरणा ॥ सोजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकाका  
रणत्व ब्रह्मविषेसर्वदारहतानहीं ॥ किंतु मायाकीअधिष्ठानताकालविषेहींरहेहै ॥ यातें सोसृष्टिस्थितिल  
यकाकारणत्व कादाचित्कहै ॥ और सांख्यनैयायिकादिकोंनैं जगत्काकारणरूपकरिकैकल्पनाक्ये  
जे प्रधानपरमाणुआदिकहैं ॥ तिनोंतें तालक्ष्यरूपब्रह्मकूं भिन्नभीकरावैहै ॥ यातें व्यावर्त्तकभीहै ॥ इस  
प्रकार कादाचित्कहोणेतें तथाव्यावर्त्तकहोणेतें सोसृष्टिस्थितिलयकाकारणत्व ब्रह्मका तटस्थलक्षण क  
ह्याजावैहै ॥ अब तालक्षणविषेस्थितपदोंका प्रयोजनकहेहैं ॥ तहां लयकारणत्व इतनामात्रहीं जोताब्र  
ह्मका तटस्थलक्षणकरते ॥ तौ ब्रह्मकूं केवल जगत्काउपादानकारणपणाहीं सिद्धहोता ॥ काहेतें जो  
कार्य जिसकारणविषे लयहोवैहै ॥ तिसकार्यकेप्रति तिसकारणकूं केवल उपादानकारणपणाहीं दे  
खाहै ॥ जैसे घटकेलयकाकारणमृत्तिका ताघटका केवलउपादानकारणहींहोवैहै ॥ निमित्तकारण  
होवैनहीं ॥ तैसे ताब्रह्मतेंभिन्नहींकोई जगत्कानिमित्तकारण अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ ताकरिकै  
( एकमेवाद्वितीयंब्रह्म ) इसश्रुतिका विरोधहोवैगा ॥ तादोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे स्थि  
तिकारणत्व कहाहै ॥ किंवा स्थितिलयकारणत्व इतनामात्रहीं जोब्रह्मका तटस्थलक्षणकरते ॥ तौ  
जैसे घटकीउत्पत्तिकेदंडादिकनिमित्तकारणहोवैहैं ॥ तैसे ताब्रह्मतेंभिन्नहींकोई जगत्कानिमित्तकारण  
होवैगा ॥ ताकरिकै पुनः ताअद्वैतश्रुतिकाविरोधहोवैगा ॥ तादोषकीनिवृत्तिकरणेवासतै तालक्षणविषे  
सृष्टिकारणत्व कहाहै ॥ किंवा सृष्टिस्थितिकारणत्व इतनामात्रहीं जोब्रह्मका तटस्थलक्षणकरते ॥ तौ  
जैसे कुलालकूं घटकेप्रति निमित्तकारणताहै ॥ तैसे ताब्रह्मकूंभी केवल जगत्कानिमित्तकारणपणाहीं  
होवैगा ॥ उपादानकारण कोईअन्यहींहोवैगा ॥ ताकरिकै वेदांतसिद्धांतकाविरोधहोवैगा ॥ तादोषके



तत्त्वा०  
॥ १५ ॥

निवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे लयकारणत्व कहाहै ॥ इसप्रकार सृष्टि स्थिति लय इनतीनोंकाकारण त्वरूप तटस्थलक्षणकेकहणेकरिकै ब्रह्मकूं जगत्का अभिन्ननिमित्तउपादानपणा सिद्धहोवैहै ॥ अर्थात् एकहींब्रह्म जगत्का उपादानकारण तथानिमित्तकारणहै ॥ याकहणेतैं ब्रह्मका यहतटस्थलक्षण सिद्धम या ॥ ( जगत्कर्तृत्वेसतिजगदुपादानत्वं ) अर्थयह ॥ जगत्केकर्तृत्वविशिष्ट जोजगत्काउपादानपणा है यहीं ब्रह्मकातटस्थलक्षणहै ॥ तहां जगत्उपादानत्व इतनामात्रहीं जोब्रह्मका तटस्थलक्षणकरते ॥ तौ मायाविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ काहेतैं शुद्धब्रह्मकूंतौ जगत्कीउपादानताहैनहीं ॥ किंतु मायाविशिष्टब्रह्मकूंहीं जगत्कीउपादानताहै ॥ और विशिष्टविषेवर्तनेहाराधर्म विशेषणविषेभी अवश्य रहेहै ॥ यातैं ताब्रह्मकाविशेषणरूपमायाकूंभी सोजगत्काउपादानकारणपणा अवश्यहोवैगा ॥ और ( मायांतुप्रकृतिविद्यात् ) यहश्रुतिभी तामायाकूं जगत्काउपादानकारणपणा कहेहै ॥ ताअतिव्याप्ति दोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे जगत्कर्तृत्व यहपद कथनकन्याहै ॥ तहां कार्यकेउपादानका जोअपरोक्षज्ञानहै ॥ तथा ताकार्यकेकरणेकीजाइच्छाहै ॥ तथा ताइच्छाजन्य जाप्रयत्नरूपकृतिहै ॥ यहतीनों जिसविषेरहेहैं ॥ सोईहीं कर्त्ताकहाजावैहै ॥ जैसे कुलालादिक ताज्ञानइच्छाप्रयत्नवालेहो णेतैं घटादिककार्योंकेकर्त्ता कहेजावैहैं ॥ इसप्रकारकाकर्त्तापणा चेतनविषेहीं संभवेहै ॥ जडमायावि षे संभवतानहीं ॥ यातैं जगत्कर्तृत्व पदकेकहणेतैं तामायाविषे ताउक्तलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा जगत्कर्तृत्व इतनामात्रहीं जोब्रह्मका तटस्थलक्षणकरते ॥ तौ नैयायिकोंने जगत्का केवलक र्त्तारूपकरिकैमान्याजोईश्वरहै ॥ ताकेविषे ताउक्तलक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनि वृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे जगत्उपादानत्व यहपद कथनकन्याहै ॥ तहां तेनैयायिक परमाणुवों

परि०  
१

॥ १५ ॥



कूंतौ जगत्काउपादानकारण मानेहैं ॥ और ईश्वरकूं जगत्काकर्त्ता मानेहैं ॥ इसप्रकार नैयायिकोंने जगत्के उपादानका तथाकर्त्ताका भेदहींअंगीकारकन्याहै ॥ और हमसिद्धांतियोंनेतौ ब्रह्मकूं जगत् का अभिन्ननिमित्तउपादानकारण मान्याहै ॥ यातैं जगत्उपादानत्व इसपदकेकहणेतैं तानैयायिक अभिमतईश्वरविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सोअतिव्याप्तिवालालक्ष णभी आपणेल्क्ष्यकीसिद्धि क्युंनहींकरता ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ लक्षणके अतिव्याप्ति १ अव्याप्ति २ असंभव ३ यहतीनदोषहोवैहैं ॥ तिनतीनोंदोषोंविषे एकभीदोष जिसलक्षणविषेरहेहै ॥ सोलक्षण दुष्टक ह्याजावैहै ॥ तादुष्टलक्षणतैं तालक्ष्यकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ और तिनतीनोंदोषोंतैं जोलक्षण रहितहोवैहै ॥ सोलक्षण अदुष्टकह्याजावैहै ॥ ताअदुष्टलक्षणतैंहीं तालक्ष्यकीसिद्धिहोवैहै ॥ यातैं तालक्षणविषे पदोंका निवेशकरिकैं ताअतिव्याप्तिआदिकदोषकीनिवृत्ति अवश्यकरीचाहिये ॥ तहां जोलक्षण आपणेल्क्ष्यवि पेवर्त्तताहूआ अलक्ष्यविषेभी वर्त्तेहै ॥ सोलक्षण अतिव्याप्तिदोषवालाहोवैहै ॥ जैसे गौकाशृंगित्वलक्षण तागौरूपल्क्ष्यविषेवर्त्तताहूआ महिषअजादिरूपअलक्ष्यविषेभी वर्त्तेहै ॥ यातैं सोगौकाशृंगित्वलक्षण अतिव्याप्तिदोषवालाहै ॥ और जोलक्षण आपणेल्क्ष्यके एकदेशविषेवर्त्तेहै ॥ सोलक्षण अव्याप्तिदोषवा लाहोवैहै ॥ जैसे गौकाकपिलत्वलक्षण कोईकगौवोंविषेरहेहै सर्वगौवोंविषेरहतानहीं ॥ यातैं सोकपि लत्वलक्षण अव्याप्तिदोषवालाहै ॥ और जोलक्षण आपणेल्क्ष्यमात्रविषेहीं नहींरहेहै ॥ सोलक्षण असं भवदोषवाला होवैहै ॥ जैसे गौका एकशफवच्चलक्षण कोईभीगौविषेरहतानहीं ॥ यातैं असंभवदोषवा लाहै ॥ शफनाम खुरकाहै ॥ और जिसपदार्थका जोलक्षणकरीये ॥ तिसलक्षणका सोपदार्थल्क्ष्यक ह्याजावैहै ॥ यातैं अतिव्याप्तिआदिकसर्वदोषोंतैंरहितहोणेतैं सोउक्तब्रह्मकातटस्थलक्षण समीचीनहै



तत्त्वा०

॥ १६ ॥

इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ एकहींब्रह्मकूं जगत्का उपादानपणा तथाकर्त्तापणा संभवतानहीं ॥ काहेतें लोकविषे ऐसादेखणेमें आवतानहीं ॥ जैसे घटकाकर्त्ताजोकुलालहै सो ताघटकाउपादानकारणहोता नहीं ॥ और ताघटकाउपादानकारणजोमृत्पिंडहै सो ताघटका कर्त्ताहोतानहीं ॥ किंतु सोमृत्पिंड तों ताघटका उपादानकारणहींहोवैहै ॥ और सोकुलाल ताघटका कर्त्ताहींहोवैहै ॥ इसप्रकार घटादिककार्योंविषे उपादानकारणका तथाकर्त्ताका भेदहीं देखणेविषेआवैहै ॥ और दृष्टार्थकेअनुसारहीं अदृष्टार्थकीकल्पनाहोवैहै ॥ दृष्टार्थतैंविरुद्ध अदृष्टार्थकीकल्पना होवैनहीं ॥ और एकहींब्रह्मकूं जगत्का उपादान तथाकर्त्ता मानणा यहभी अदृष्टार्थकीकल्पनाहै ॥ सा दृष्टार्थतैंविना कैसेसंभवैंगी ॥ किंतु नहींसंभवैंगी ॥ यातें दृष्टविरोधतैं एकहींब्रह्मकूं जगत्का उपादान तथाकर्त्ता मानणा असंगत है ॥ किंतु ईश्वरकूं तों जगत्का कर्त्तामान्याचाहिये ॥ और ताईश्वरतैंभिन्न परमाणुआदिकोंकूं ताजगत्का उपादानकारण मान्याचाहिये ॥ इसअर्थविषे सोदृष्टविरोधहोवैनहीं ॥ किंतु घटादिककार्योंविषे सोउपादानकर्त्ताकाभेद सर्वलोकोंकूं प्रसिद्धहींहै ॥ याकहणेतें यहअनुमानसिद्धभया ॥ ( इदंजगत् भिन्ननिमित्तोपादानकं कार्यत्वात् घटादिवत् ) अर्थयह ॥ यहजगत् उपादानकारणके तथाकर्त्तारूपनिमित्तकारणके भेदवालाहै ॥ कार्यरूपहोणेतें ॥ घटादिककार्योंकीन्यांई इति ॥ किंवा जोतुम यहकहो ॥ ब्रह्मकूं जगत्का अभिन्ननिमित्तोपादानपणा हम नहींकल्पनाकरते ॥ किंतु ( तदैक्षतबहुस्यांप्रजाये य ) यहश्रुतिहीं ताअर्थकूं बोधनकरेहै ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतें पूर्वउक्तरीति सैं दृष्टार्थकेविरोधहूए ताश्रुतिका सोउक्तार्थ संभवतानहीं ॥ किंतु अन्यहींअर्थ संभवैहै ॥ यातें ब्रह्मकूं जगत्का अभिन्ननिमित्तोपादानपणा संभवैनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ( तदैक्षतबहुस्यां सो

परि०

१

॥ १६ ॥



(कामयतबहुस्यांप्रजायेय ) अर्थयह ॥ सोपरमात्मादेव मैंबहुतरूपहोवों याप्रकारका संकल्पकरताभ  
 या ॥ और सोपरमात्मादेव मैंबहुतरूपहोइकैउत्पन्नहोवों याप्रकारकीकामनाकरताभया इति ॥ इसश्रु  
 तिनैं एकहींब्रह्मकू बहुतरूपहोणेकीकामना कथनकरीहै ॥ साकामना चेतनकाहींधर्महोवैहै ॥ जडका  
 धर्महोवैनहीं ॥ यातैं ताश्रुतिकेबलतैं चेतनब्रह्मकूहीं जगत्का उपादानपणा तथाकर्त्तापणा निश्चयहो  
 वैहै ॥ और तात्पर्यकेनिश्चायक जेउपक्रमउपसंहारादिकषट्‌लिंगहैं ॥ तिनलिंगोंकरिकै सर्ववेदांतवाक्यों  
 का अद्वितीयब्रह्मविषेहीं तात्पर्यनिर्णयकन्याहै ॥ यातैं ताउक्तअनुमानकरिकै ताश्रुतिअर्थका बाधहोइ  
 सकैनहीं ॥ उलटा श्रुतिकेविरोधहूए तेप्रत्यक्षअनुमानादिकप्रमाणहीं आभासरूपताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ उपक्र  
 मादिकषट्‌लिंगोंकास्वरूप आगेद्वितीयपरिच्छेदविषेकहेंगे ॥ किंवा तावादीनैं जोपूर्वयहकह्याथा ॥ लो  
 कविषे किसीभीकारणकूं कार्यकाअभिन्न निमित्तउपादानपणा देखीतानहीं ॥ यातैं जगत्के उपादा  
 नकारणका तथानिमित्तकारणका भेदहींअंगीकारकन्याचाहिये ॥ सोयहवादीकाकहणाभी असंगत  
 है ॥ काहेतैं लोकविषेभी ऊर्णनाभिआदिकजंतुविशेषकूं स्वरचिततंतुरूपकार्यकेप्रति अभिन्ननिमित्तउपा  
 दानकारणपणाहीं देखणेविषेआवैहै ॥ अर्थात् सोऊर्णनाभिजंतु तातंतुरूपकार्यकेप्रति आपहीं उपादान  
 कारणहोवैहै तथाआपहीं कर्त्तारूपनिमित्तकारणहोवैहै ॥ किंवा जैसे नैयायिकोंकेमतविषे घट ईश्वर  
 दोनोंका जोसंयोगसंबंधहै ॥ सोसंयोग समवायसंबंधकरिकै ताघटईश्वरदोनोंविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं  
 ताईश्वरकूं तासंयोगकेप्रति उपादानकारणपणाभीहै ॥ और सोईश्वर कार्यमात्रकेप्रति निमित्तकारण  
 होवैहै ॥ यातैं तासंयोगरूपकार्यकेप्रति सोईश्वर निमित्तकारणभीहै ॥ इसप्रकारतैं नैयायिकोंनैं जैसे  
 तासंयोगरूपकार्यकेप्रति ईश्वरकूं अभिन्ननिमित्तउपादानकारणता अंगीकारकरीहै ॥ तैसे हमसिद्धांती



तत्त्वा०

॥ १७ ॥

भी ब्रह्मकूं जगत्की अभिन्ननिमित्तउपादानकारणता अंगीकारकरेहैं ॥ यातैं सो पूर्वउक्तदृष्टविरोधभी प्राप्त होवैनहीं ॥ यातैं सो जगत्का अभिन्ननिमित्तउपादानकारणत्व ब्रह्मका तटस्थलक्षण संभवैहै यह सिद्धभया इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ यह उक्त ब्रह्मका तटस्थलक्षण तबी संभवै ॥ जबी कोई प्रमाण करिकै ता ब्रह्मविषे जगत्की कारणता सिद्ध होवै ॥ ता कारणता की सिद्धितैं विना सो उक्तलक्षण संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ता ब्रह्मकूं जगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकी कारणता साक्षात्श्रुतिप्रमाण करिकै ही सिद्ध है ॥ तथा व्यासभगवान् के सूत्र करिकै भी सिद्ध है ॥ तहां श्रुति ॥ ( यतो वा इमानि भूतानि जायंते येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयंत्यभिसंविशन्ति ) अर्थ यह ॥ जिस ब्रह्मतैं यह सर्वभूत उत्पन्न होवैहैं ॥ और उत्पन्न हुए यह सर्वभूत जिस ब्रह्म करिकै जीवनकूं प्राप्त होवैहैं ॥ और मृत्युकूं प्राप्त हुए यह सर्वभूत जिस ब्रह्मविषे लयभावकूं प्राप्त होवैहैं इति ॥ तहां सूत्र ॥ ( जन्माद्यस्य यतः ) अर्थ यह ॥ जिस सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् कारणतैं इस आकाशादिक प्रपंचके जन्म स्थिति लय होवैहैं ॥ सोई ही ब्रह्म है इति ॥ तहां इतने पर्यंत ब्रह्मका तटस्थलक्षण निरूपण कन्या ॥ और ता तटस्थलक्षणके ज्ञान हुए भी जब पर्यंत ता ब्रह्मके स्वरूपलक्षणका ज्ञान नहीं होवैहै ॥ तब पर्यंत सो ब्रह्म यथावत् स्वरूप करिकै जान्या जावैनहीं ॥ यातैं ता तत्पदार्थरूप ब्रह्मका अब स्वरूपलक्षण कहेहैं ॥ तहां ( स्वरूपं सत् व्यावर्तकं स्वरूपलक्षणं ) अर्थ यह ॥ जो लक्षण आपणे लक्ष्यका स्वरूपभूत हू आ ता आपणे लक्ष्यकूं अन्यपदार्थोंसैं भिन्न करावैहै ॥ सो लक्षण स्वरूपलक्षण कहा जावैहै ॥ जैसे पृथिवी का पृथिवीत्व स्वरूपलक्षण है ॥ तहां जाति व्यक्ति दोनोंका सिद्धांतविषे तादात्म्य ही अंगीकार कन्या है ॥ यातैं ता पृथिवीत्व जाति का भी ता पृथिवीव्यक्तिके साथ तादात्म्य ही है ॥ यातैं सा पृथिवीत्व जाति ता पृथिवीका स्वरूपभूत हूई ता पृथिवीकूं जलादिक इतरपदार्थोंतैं भिन्न करावैहै ॥ यातैं सा पृथिवीत्व जाति

परि०

१

॥ १७ ॥



तापृथिवीका स्वरूपलक्षणहै ॥ तैसे सत्य ज्ञान आनंद यहतीनों ब्रह्मकेस्वरूपलक्षणहैं ॥ तहां तेसत्या  
दिकतीनों ताब्रह्मकास्वरूपभूतहूँ ताब्रह्मकू असत्जडदुःखरूपजगततैं भिन्नकरावैहैं ॥ यातैं तिनसत्या  
दिकोंविषे ब्रह्मकास्वरूपलक्षणपणा संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सत्यादिकोंकू जोब्रह्मकास्वरूप मानों  
गे ॥ तौ तिनसत्यादिकोंविषे ब्रह्मकालक्षणपणा नहींहोवैंगा ॥ तथा ताब्रह्मविषे तासत्यादिकलक्षणका  
लक्ष्यपणा नहींहोवैंगा ॥ जिसकारणतैं सोलक्ष्यलक्षणभाव भेदकेअधीनहींहोवैहै ॥ अभेदविषे सोलक्ष्य  
लक्षणभाव होतानहीं ॥ जोकदाचित् अभेदविषेभी सोलक्ष्यलक्षणभाव होताहोवै ॥ तौ पृथिवीभी पृ  
थिवीकालक्षणहोणाचाहिये ॥ तथा ब्रह्मभी ब्रह्मकालक्षणहोणाचाहिये ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तेस  
त्यादिक यद्यपि वास्तवतैं ब्रह्मकास्वरूपहींहैं ॥ तथापि तिनसत्यादिकोंविषे ब्रह्मकाकल्पितभेद हम अंगी  
कारकरेहैं ॥ ताकल्पितभेदकूअंगीकारकरिकैहीं ताब्रह्मका तथासत्यादिकोंका लक्ष्यलक्षणभाव संभवै  
है ॥ यहवार्त्ता वृद्धपुरुषोंनैंभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( आनंदोविषयानुभवोनित्यत्वंचेतिसंतिधर्माः ब्रह्म  
णोऽपृथक्तेपिपृथगिवावभासंतइति ) अर्थयह ॥ आनंद ज्ञान नित्यता यहतीनोंधर्म ब्रह्मकेहैं ॥ तेतीनों  
धर्म वास्तवतैं ब्रह्मतैंअपृथक्हूँभी पृथक्हूँकीन्याई प्रतीतहोवैहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तेसत्यादि  
कधर्म जोवास्तवतैं ब्रह्मतैंअपृथक्हींहोवै ॥ तौ तिनसत्यादिकोंकी ब्रह्मतैंपृथक्होइकैप्रतीति किसकारण  
तैंहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ अंतःकरण तथाताअंतःकरणकेधर्मरूपउपाधिकेवशतैं तिनसत्यादिकों  
की ताब्रह्मतैंपृथक्प्रतीति बनिसकेहै ॥ सोदिखावैहैं ॥ तहां बाधाऽभावविशिष्टचैतन्य सत्यपदका वाच्य  
अर्थहै ॥ और वृत्तिअवच्छिन्नचैतन्य ज्ञानपदका वाच्यअर्थहै ॥ और प्रीतिआदिकवृत्तिअवच्छिन्नचैतन्य  
आनंदपदका वाच्यअर्थहै ॥ यातैं तिनसत्यादिकोंका तथाब्रह्मका वास्तवतैंभेदकेअभावहूँभी उपाधि



तत्त्वा०

॥ १८ ॥

परि०

१

कृतभेदकेविद्यमानहूए सोलक्ष्यलक्षणभाव संभवैहै ॥ और तेसत्यादिकपद भागत्यागलक्षणाकरिकै अ  
खंडब्रह्मकूंहीं बोधनकरैहैं ॥ यातैं तालक्षणवाक्यतैं सत्यादिकोंका तथाब्रह्मका गुणगुणीभाव सिद्धहोवै  
नहीं ॥ और तिनसत्यादिकपदोंकेवाच्यअर्थकाभेद पूर्वकथनकन्याहै ॥ यातैं तिनसत्यादिकपदोंविषे  
पर्यायताभीहोवैनहीं ॥ अब तालक्षणवाक्यविषेस्थितसत्यादिकपदोंकेप्रयोजनकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां ।  
सत्यंब्रह्म । इतनामात्रहीं जोताब्रह्मकास्वरूपलक्षणकरते ॥ तौं नैयायिकोंनैं अंगीकारकरी जासत्ताजा  
तिहै तिसविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ तथा तालक्ष्यब्रह्मकूं जडपणेकीप्राप्तिहोती ॥ तादोषकेनि  
वृत्तकरणेवासतैं तालक्षणविषे ज्ञान यहपद कथनकन्याहै ॥ तहां तासत्ताजातिविषे ज्ञानरूपताहैनहीं ॥  
यातैं तासत्ताविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तथा ब्रह्मविषेभी जडपणाहोवैनहीं ॥ किंवा ।  
ज्ञानंब्रह्म । इतनामात्रहीं जोब्रह्मकालक्षणकरते ॥ तौं नैयायिकोंनैं अंगीकारकन्याजो आत्माकाज्ञान  
गुणहै ताकेविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ तथा तालक्ष्यब्रह्मकूं अनित्यपणा तथाअपुरुषार्थपणा  
प्राप्तहोता ॥ तादोषकेनिवृत्तकरणेवासतैं तालक्षणविषे आनंद यहपद कथनकन्याहै ॥ तहां ताज्ञानगुण  
विषे आनंदरूपताहैनहीं ॥ यातैं ताज्ञानगुणविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तथा तालक्ष्यब्रह्म  
कूं अपुरुषार्थरूपताभी होवैनहीं ॥ किंवा । आनंदोब्रह्म । इतनामात्रहीं जोताब्रह्मकालक्षणकरते ॥  
तौं विषयजन्यसुखविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ और तालक्ष्यब्रह्मकूं जडपणाभीप्राप्तहोता ॥  
तादोषकेनिवृत्तकरणेवासतैं तालक्षणविषे ज्ञान यहपद कथनकन्याहै ॥ ताविषयसुखविषे ज्ञानरूपताहै  
नहीं ॥ यातैं ताकेविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तथा तालक्ष्यब्रह्मकूं जडपणाभीहोवैनहीं ॥ और ताल  
क्ष्यब्रह्मकेअनित्यपणेकेनिवृत्तकरणेवासतैं सत्य यहपद कथनकन्याहै ॥ इसप्रकारकेप्रयोजनवालेहोणेतैं

॥ १८ ॥



ते सत्यादिक तीनों पद सार्थक हैं ॥ यातें सत्य ज्ञान आनंद यह तीनों धर्म मिलिके ब्रह्मका स्वरूप लक्षण होवै हैं  
इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तिन सत्यादिकों कूं ब्रह्मका स्वरूप लक्षण पणा तबी सिद्ध होवै ॥ जबी ता ब्रह्मकी  
सत्यादिरूपता किसी प्रमाण करिके सिद्ध होवै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ता ब्रह्मकी सच्चिदानंद रूपता विषे सा  
क्षात्श्रुति भगवती ही प्रमाण है ॥ तथा व्यास भगवान् का सूत्र भी प्रमाण है ॥ तहां श्रुति ॥ ( सत्यं ज्ञानमनंतं  
ब्रह्म आनंदो ब्रह्म ) अर्थ यह ॥ ब्रह्म सत्य रूप है तथा ज्ञान रूप है तथा अनंत रूप है तथा आनंद रूप है इति ॥ इहां  
अंतनाम परिच्छेद का है सो जिस विषे नहीं विद्यमान होवै ताका नाम अनंत है ॥ अर्थात् देश परिच्छेद  
काल परिच्छेद वस्तु परिच्छेद इन तीनों परिच्छेद रूप अंततैं जोर हित होवै ताका नाम अनंत है ॥ ऐसी अनंत रू  
पता ब्रह्म विषे ही है ॥ यह वार्ता अन्य शास्त्र विषे भी कही है ॥ तहां श्लोक ॥ ( नव्यापित्वा देशतोऽतो नि  
त्यत्वान्नापिकालतः न वस्तुतोपि सार्वआत्म्यादानंत्यं ब्रह्मणि त्रिधा ) अर्थ यह ॥ ब्रह्म सर्व देश विषे व्यापक है ॥  
यातें ता ब्रह्मका देशतैं भी अंत नहीं है ॥ और सो ब्रह्म नित्य है ॥ यातें ता ब्रह्मका कालतैं भी अंत नहीं है ॥  
और सो ब्रह्म सर्वका आत्मारूप है ॥ यातें ता ब्रह्मका वस्तुतैं भी अंत नहीं है ॥ इसरीति सैं ता ब्रह्म विषे तीन  
प्रकारका अनंत पणा है इति ॥ तहां व्यास सूत्र ॥ ( आनंदादयः प्रधानस्य ) अर्थ यह ॥ आनंद सत्य ज्ञान  
इत्यादिक गुण ब्रह्मके स्वरूप भूत हुए ता ब्रह्मके लखावणे हारे हैं ॥ यातें निर्गुण ब्रह्मके ध्यान वासतै तिन आनं  
दादिक गुणोंका वेदकी सर्व शाखाओं विषे उपसंहार करणे योग्य है इति ॥ इस उक्त श्रुति सूत्र करिके ता ब्रह्म  
की सत्य ज्ञानादिरूपता सिद्ध है ॥ यातें तिन सत्य ज्ञानादिकों विषे ब्रह्मका स्वरूप लक्षण पणा संभवै है इति ॥  
॥ शंका ॥ ॥ इस स्वरूप लक्षण के संभव हुए भी पूर्व कथन कन्या जो जगत्के उत्पत्ति स्थिति लय का कार  
णत्वरूप ब्रह्मका तटस्थ लक्षण सो संभवतानहीं ॥ काहेतैं ब्रह्म कूं तुमों नैं जगत्का उपादान कारण तथानि



तत्त्वा०  
॥ १९ ॥

परि०  
१

मित्तकारण मान्याहै ॥ ताकेविषे प्रथम उपादानकारणपणाहीं ब्रह्मकूं संभवतानहीं ॥ काहेतैं सोउपादा  
नकारण आरंभक १ परिणामी २ विवर्त्ताऽधिष्ठान ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तिनतीनों  
विषे ब्रह्मकूं कौनउपादानकारण तुम मानतेहो ॥ तहां तुमारेमतविषे सोब्रह्म एकअद्वितीयरूपहै ॥ यातैं  
ताब्रह्मकूं जगत्काआरंभकपणा संभवतानहीं ॥ परस्परसंयुक्तअनेकद्रव्योंकूंहीं आरंभकपणाहोवैहै ॥  
जैसे नैयायिकोंकेमतविषे परस्परसंयुक्तअनेकपरमाणुवोंकूं जगत्काआरंभकपणाहै ॥ और ( साक्षीचे  
ताःकेवलोनिर्गुणश्च निष्कलंनिष्क्रियंशांतं अविकार्योयमुच्यते ) इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंनैं ताब्रह्मकूं नि  
र्गुण निष्क्रिय निरवयव कहाहै ॥ यातैं ताब्रह्मकूं परिणामीउपादानपणाभी संभवतानहीं ॥ जिसका  
रणतैं गुणक्रियावालेसावयवदुग्धादिकहीं दधिआदिकपरिणामकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तीसरा विवर्त्ताऽधि  
ष्ठानत्वरूपउपादानपणाभी ब्रह्मकूं संभवतानहीं ॥ काहेतैं घटःसन् पटःसन् इसप्रकार घटपटादिकप्रपं  
चका सत्यरूपकरिकैहीं लोकोंकूंअनुभवहोवैहै ॥ ऐसेसत्यप्रपंचकूं ब्रह्मकीविवर्त्तरूपताकरिकै मिथ्याप  
णाकल्पनाकरणेविषे कोईभीप्रमाणनहींहै ॥ और ताप्रपंचकेमिथ्यापणेतैंविना ताब्रह्मकूं विवर्त्ताऽधिष्ठा  
नपणा संभवतानहीं ॥ यातैं उक्ततीनप्रकारकेउपादानपणेविषे कोईप्रकारकाभीउपादानपणा ताब्रह्मकूं  
संभवतानहीं ॥ किंवा ताब्रह्मकूं जगत्काकर्त्तापणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं कार्यकीउत्पत्तिकेअनु  
कूल ज्ञान इच्छा प्रयत्न यहतीन जिसविषेरहेहैं सो कर्त्ताहोवैहै ॥ यह पूर्वकहिआयेहैं ॥ तहां तेब्रह्मके  
ज्ञानइच्छाप्रयत्नतीनों नित्यहैं अथवा अनित्यहैं ॥ जोकहोनित्यहै ॥ तों सर्वकालविषे जगत्कीउत्पत्ति  
हींहोणीचाहिये ॥ कोईभीकालविषे जगत्काप्रलयनहींहोनाचाहिये ॥ ताकरिकै प्रलयकेप्रतिपादनक  
रणेहारेशास्त्रकाविरोधहोवैगा ॥ और जोकहो तेज्ञानादिकअनित्यहैं ॥ तों जगत्कीन्याई तेज्ञानइच्छा

॥ १९ ॥



दिकभी कार्यरूपहीहोवेंगे ॥ यातैं तिनज्ञानादिकोंकूं ब्रह्मकाआश्रितपणा नहींहोवेंगा ॥ जिसकारण तैं ब्रह्मकूं पूर्व अपरिणामीपणाहीं कथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकार ताब्रह्मविषे उपादानपणेके तथाकर्त्ता पणेके असंभवहूए अभिन्ननिमित्तउपादानकारणताभी संभवैनहीं ॥ यातैं पूर्वकथनकन्या जगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूप ब्रह्मकातटस्थलक्षण असंगतहै ॥ और कारणतैंविना कार्यकीउत्पत्तिहोती नहीं ॥ यातैं इसजगत्कार्यकाभी ताब्रह्मतैंभिन्न कोईकारण मान्याचाहिये ॥ सोऐसाकारण सत्व रज तम यहतीनगुणरूप प्रधानहै ॥ ताप्रधानतैंहीं महत्तत्वादिकक्रमकरिकै यहजगत्उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसप्रधानकूं परिणामीरूपहोनेतैं जगत्केजन्मादिकोंकीकारणता संभवैहै ॥ और आत्मारूपपुरुषतों असंगतहै तथा निर्विकारहै ॥ यातैं तापुरुषविषे जगत्कीकारणतासंभवतीनहीं ॥ इसप्रकारकीशंकाकरणेशारे सांख्यीयों केखंडनकरणेवासतै ताउक्ततत्पदार्थका विभागकरेहैं ॥ सोतत्पदकाअर्थ दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतों वाच्यअर्थहोवैहै ॥ और दूसरा लक्ष्यअर्थहोवैहै ॥ तहां जोअर्थ जिसपदकीशक्तिवृत्तिकरिकै जान्याजावैहै ॥ सोअर्थ तिसपदका वाच्यअर्थ कहाजावैहै ॥ और जोअर्थ जिसपदकीलक्षणावृत्तिकरिकै जान्याजावैहै ॥ सोअर्थ तिसपदका लक्ष्यअर्थ कहाजावैहै ॥ ताशक्तिलक्षणाकास्वरूप आगेद्वितीयपरिच्छेदविषेकहेंगे ॥ तहां मायाउपहितचैतन्यतों तत्पदका वाच्यअर्थहै ॥ और मायातैंरहितशुद्धचैतन्य तत्पदका लक्ष्यअर्थहै ॥ ईहां यहतात्पर्यहै ॥ यद्यपि मायातैंरहितनिर्विकारशुद्धब्रह्मकूं जगत्काउपादानपणा संभवतानहीं ॥ तथापि मायाउपहितब्रह्मकूं सोउपादानपणा संभवेहै ॥ सोउपादानपणाभी आरंभकतारूप वापरिणामितारूप नहींहै ॥ किंतु विवर्त्ताधिष्ठानत्वरूपहै ॥ तहां अधिष्ठानवस्तुका जोअवास्तवतैं अन्यथाभावहै ताकानाम विवर्त्तहै ॥ जैसे रज्जुशुक्तिआदिकअधिष्ठानका अवास्तवतैं सर्परजतादिरूपअन्यथाभावहै ॥ तैसे ता



तत्त्वा०

॥ २० ॥

ब्रह्मकाभी यहजगत् अवास्तवतैं अन्यथाभावहै ॥ ऐसेजगत् रूपविवर्तका अधिष्ठानपणा तामायाउप  
 हितब्रह्मकूं संभवैहै ॥ किंवा घटःसन् पटःसन् इत्यादिकअनुभवतैं जगत्कासत्यपणाहीं सिद्धहोवैहै ॥  
 यातैं ताजगत्विषे ब्रह्मकेविवर्तपणेकरिकै मिथ्यापणासंभवतानहीं ॥ यहजोपूर्व वादीनैं कथनकन्या  
 था ॥ सोभी असंगतहै ॥ काहेतैं सोउक्तअनुभवतों तिनघटपटादिकोंविषे अधिष्ठानचैतन्यकेसत्यपणे  
 कूंहीं विषयकरैहै ॥ कोईघटादिकोंकेसत्यपणेकूं विषयकरतानहीं ॥ यातैं सोअनुभव ताप्रपंचकेमिथ्या  
 पणेका बाधकनहींहै ॥ और ( नेहनानास्ति किंचन ) यहश्रुति ब्रह्मतैंभिन्नसर्वप्रपंचका निषेधकरैहै ॥  
 यातैं ताप्रपंचकी स्वतःसत्ता संभवतीनहीं ॥ और तावादीनैं जोजगत्केमिथ्यापणेविषे प्रमाणकाअ  
 भाव कह्याथा ॥ सोभीअसंगतहै ॥ जिसकारणतैं ( वाचारंभणंविकारोनामधेयं ) यहश्रुतिहीं साक्षात्  
 जगत्केमिथ्यापणेकूंकथनकरैहै ॥ किंवा ताब्रह्मकूं जगत्काउपादानपणा अवश्यमान्याचाहिये ॥ का  
 हेतैं ( यत्प्रयंत्यभिसंविशंति ) यहश्रुति तिसब्रह्मविषेहीं जगत्केलयकूंकथनकरैहै ॥ और जिसकार्य  
 का जिसकारणविषे लयहोवैहै ॥ तिसकार्यका सोकारण उपादानहींहोवैहै ॥ जैसे घटादिककार्यका  
 मृत्तिकादिककारणविषेहीं लयहोवैहै ॥ यातैं ताघटादिककार्यका सोमृत्तिकादिककारण उपादानहीं दे  
 खनेविषेआवैहै ॥ तैसे श्रुतिप्रतिपादित जगत्केलयकाआधारहोणेतैं ताब्रह्मकूं जगत्काउपादानपणा  
 अवश्यमान्याचाहिये ॥ किंवा ( बहुस्यांप्रजायेय ) इसश्रुतिनैं ब्रह्मकाहींबहुतहोणा कथनकन्याहै ॥  
 और लोकविषे मृत्तिकादिकउपादानकारणोंकाहीं ॥ घटशरावादिरूपतैंबहुतहोणा देखनेविषेआवैहै ॥  
 याकारणतैंभी ताब्रह्मकूंहीं जगत्काउपादानपणा संभवैहै ॥ किंवा सांख्यवादीनैं जोप्रधानकूंज  
 गत्काउपादान मान्याथा ॥ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं सोप्रधान जगत्काउपादानकारणहै इसअर्थ

परि०

१

॥ २० ॥



विषे कोईभीप्रमाणनहींहै ॥ अर्थात् कोईभीश्रुतिविषे त्रिगुणात्मकप्रधानकूं जगत्काउपादानपणा क  
 ह्यानहीं ॥ किंतु ( आत्मनआकाशःसंभूतः ) इत्यादिकसर्वश्रुतियोंविषे चेतनब्रह्मकूंहीं जगत्काउपादा  
 नपणा कथनकन्याहै ॥ यद्यपि इसउक्तश्रुतितैं आत्माकूंहीं उपादानता प्रतीतहोवैहै ॥ ब्रह्मकूं उपादा  
 नता प्रतीतहोतीनहीं ॥ तथापि ( तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशत् ) इत्यादिकश्रुतियोंविषे ब्रह्मकाहीं जीव  
 भावकरिकै जगत्विषेप्रवेश कथनकन्याहै ॥ यातैं यहआत्मा ब्रह्मतैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु सोब्रह्महीं आ  
 त्मारूपहै ॥ यातैं आत्मा जगत्काउपादानकारणहै इसकहणेतैंभी ताब्रह्मकूंहीं उपादानतासिद्धहोवै  
 है ॥ किंवा ( तदैक्षत सोऽकामयत बहुस्यांप्रजायेय ) इत्यादिकश्रुतियोंविषे बहुरूपहोणेहारेकारण  
 निष्ठ ईक्षणकाकर्त्तापणा तथाकामनाकाकर्त्तापणा कथनकन्याहै ॥ तिसतैंभी ब्रह्मकूंहीं उपादानतासि  
 द्धहोवैहै ॥ ताप्रधानकूं उपादानतासिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोईक्षणकामनाकाकर्त्तापणा चेतनकाहीं  
 धर्महोवैहै ॥ जडकाधर्म होतानहीं ॥ और सोतुमाराप्रधानभी जडहै ॥ यातैं ताप्रधानविषे सोईक्षणका  
 मनाकाकर्त्तापणा संभवतानहीं ॥ यातैं ताब्रह्मकूंहीं जगत्काउपादानपणाहै ताप्रधानकूंनहींहै यह  
 सिद्धभया ॥ किंवा जैसे तामायाउपहितब्रह्मकूं जगत्काउपादानपणा संभवैहै ॥ तैसे जगत्काकर्त्ता  
 पणाभी तामायाउपहितब्रह्मकूंहीं संभवैहै ॥ सोपूर्व कथनकरिआयेहैं ॥ और तामायाउपहितईश्वरके  
 ज्ञान इच्छा प्रयत्न यहतीनों जन्यहोवैहैं तथाअनित्यहोवैहैं ॥ ऐसेज्ञानइच्छाप्रयत्नकाआश्रयपणा य  
 द्यपि निर्विकारशुद्धब्रह्मकूं संभवतानहीं ॥ तथापि तामायाउपहितब्रह्मकूं तिनोंकाआश्रयपणा संभवै  
 है ॥ जिसकारणतैं तामायाउपहितब्रह्मकूंहीं सर्वविवर्त्तजगत्का अधिष्ठानपणाहै ॥ यातैं सोपूर्वउक्तदो  
 ष प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं सोपूर्वउक्त अभिन्ननिमित्तउपादानकारणत्व ब्रह्मकातटस्थलक्षण संभवैहै यहसि



तत्त्वा०

॥ २१ ॥

द्वभया इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसमायाकरिकैउपहितहूआब्रह्म जगत्काकारणहोवैहै ॥ सामाया क्यावस्तुहै ॥ अर्थात् तामायाका स्वरूप तथालक्षण तथाप्रमाण तीनों निरूपणहोइसकतेनहीं ॥ यातैं सा माया कोईवस्तुनहींहै ॥ अब तामायाके स्वरूप लक्षण प्रमाण इनतीनोंकेअसंभवकूं यथाक्रमतैं निरूपण करैहैं ॥ तहां सामाया सत्यहै अथवा मिथ्याहै ॥ तहां प्रथमसत्यपक्षविषेभी सामाया ब्रह्मतैं भिन्नहै अथ वा अभिन्नहै ॥ तहां प्रथम भिन्नपक्षजोअंगीकारकरोंगे ॥ तों ( एकमेवाद्वितीयब्रह्म ) इसश्रुतिकाविरो धहोवैगा ॥ काहेतैं यहश्रुति ब्रह्मकूं अद्वितीयकहेहै ॥ साब्रह्मकीअद्वितीयरूपता ब्रह्मतैंभिन्नसत्यमाया केविद्यमानहूए संभवतीनहीं ॥ किंवा ( असंगोनहिसज्जते ) इत्यादिकश्रुतियोंविषे ब्रह्मकूं असंगकह्या है ॥ ऐसेअसंगब्रह्मका कोईकेसाथिभी संबंधसंभवतानहीं ॥ तासंबंधतैंविना ब्रह्मविषे मायाउपहितप णाहीं संभवतानहीं ॥ किंवा ताब्रह्मका मायाकेसाथि कौनसंबंधहै ॥ संयोगसंबंधहै ॥ अथवासमवाय संबंधहै ॥ अथवा तादात्म्यसंबंधहै ॥ अथवा भेदाऽभेदसंबंधहै ॥ तहां प्रथम संयोगपक्षतों संभवतान हीं ॥ काहेतैं सोसंयोग अव्याप्यवृत्तिहोणेतैं सावयवद्रव्योंकाहींधर्महोवैहै ॥ जैसे पक्षीका जोवृक्षकेसा थि संयोगहै ॥ सोसंयोग सर्ववृक्षविषेरहतानहीं ॥ किंतु तावृक्षके कोईकशाखारूपदेशविषेहीं सोसंयोग रहेहै ॥ मूलादिकदेशविषेरहतानहीं ॥ यातैं सोसंयोग अव्याप्यवृत्तिहै ॥ याकारणतैंहीं सोसंयोग ताप क्षीवृक्षरूपसावयवद्रव्यकाहीं धर्महै ॥ और ब्रह्मतों निरवयवहै ॥ यातैं ताब्रह्मका मायाकेसाथि संयोग संबंध संभवतानहीं ॥ और दूसरा समवायपक्षभी संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं सोसमवायसंबंध तुमा रेमतविषे अंगीकारहींनहींहै ॥ और गुणगुणी क्रियाक्रियावान् जातिव्यक्ति अवयवअवयवी इनोंका हीं समवायसंबंधहोवैहै ॥ तेगुणगुणीभावादिक ब्रह्ममायाविषेहैनहीं ॥ यातैं ताब्रह्मका मायाकेसाथि सो

परि०

१

॥ २१ ॥



समवायसंबंध संभवताहीनहीं ॥ और तीसरा तादात्म्यपक्षभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं भेदतैरहितपदा  
थोंकाहीं सोतादात्म्यहोवैहै ॥ और ब्रह्म माया दोनों परस्परभेदवालेहैं ॥ यातैं तिनदोनोंका परस्पर  
तादात्म्य संभवतानहीं ॥ और चतुर्थ भेदाऽभेदपक्षभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं तेभेदअभेददोनों परस्पर  
विरुद्धहोणेतैं एकअधिकरणविषे रहतेनहीं ॥ इसप्रकार ब्रह्मका मायाकेसाथ संबंधकेअनिरूपणहूए ता  
ब्रह्मविषे मायाउपहितपणा संभवतानहीं ॥ और सामाया ब्रह्मतैंअभिन्नहै यहद्वितीयपक्ष जोअंगीकार  
करौ ॥ सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं ब्रह्मतों चेतनहै और माया जडहै ॥ ताजडचेतनका अभेद सं  
भवतानहीं ॥ और सामाया मिथ्याहै यहआद्यद्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरौ ॥ सोभी संभवतानहीं ॥  
काहेतैं तामायाकेमिथ्याहूए तामायाविशिष्टईश्वरकूंभी मिथ्यापणा प्राप्तहोवैंगा ॥ और ताईश्वरकूंभी  
जोमिथ्यामानोंगे ॥ तों ताईश्वरकेज्ञानतैं मोक्षकीप्राप्तिकूं कथनकरणेहारा मोक्षशास्त्रहीं अप्रमाणहोवैंगा ॥  
जिसकारणतैं मिथ्यावस्तुकेज्ञानकरिकै मोक्षकीप्राप्तिसंभवतीनहीं ॥ इसउक्तप्रकारतैं तामायाकास्वरूप  
दुर्निरूप्यहै ॥ और तामायाकेदुर्निरूप्यहूए तामायाकालक्षणभी दुर्निरूप्यहींहै ॥ काहेतैं धर्मीकेविद्यमा  
नहूएहीं ताकेधर्माकाविचारहोवैहै ॥ जबी सोधर्मीहीं दुर्निरूप्यहोवैहै ॥ तबी ताधर्मीकाअसाधारणध  
र्मरूपलक्षणतों अत्यंत दुर्निरूप्यहोवैहै ॥ और तामायाकेदुर्निरूप्यहूए तामायाकाप्रमाणभी दुर्निरूप्यहीं  
है ॥ जिसकारणतैं विषयतैंविना कोईभीप्रमाणकीप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ इसप्रकार स्वरूप लक्षण प्रमाण  
इनतीनोंकरिकै मायाकूंदुर्निरूप्यहूए तामायाउपहितचेतन्यकूं तत्पदकावाच्यार्थपणा संभवतानहीं ॥  
ऐसीशंकाकेप्राप्तहूए ॥ अब स्वरूप लक्षण प्रमाण इनतीनोंसहित मायाकेनिरूपणकरणेवासतै प्रथम ता  
केउपोद्घातकरिकै दृष्टांतसहित परमात्माविषे सामान्यतैंअध्यासकूं निरूपणकरेहैं ॥ तहां आगेप्रतिपा



तत्त्वा०  
॥ २२ ॥

दनकरणेयोग्यअर्थकं बुद्धिविषेराखिकै तिसअर्थकीसिद्धिवासतै जोपूर्व अन्यअर्थकाकथनहै ताकानाम  
उपोद्घातहै ॥ तहां जैसे शुक्तिरज्जुआदिकोंविषे रजतसर्पादिक कल्पितहोवैहैं ॥ तैसे चेतनविषे अचे  
तन कल्पितहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ चेतनविषे अचेतन कल्पितहै इसअर्थविषे कौनप्रमाणहै ॥ ॥ स  
माधान ॥ ॥ इसअर्थविषे श्रुताऽर्थापत्तिहीं प्रमाणहै ॥ तहां श्रवणकन्येहूएवाक्यार्थकीअनुपपत्तिक  
रिकै जोअर्थांतरकीकल्पनाहै ताकानाम श्रुताऽर्थापत्तिहै ॥ सोप्रकार दिखावैहैं ॥ तहां ( इदंसर्वयदय  
मात्मा । आत्मैवेदंसर्व । ब्रह्मैवेदंसर्व । पुरुषएवेदंविश्वं । सर्वखल्विदंब्रह्म । वासुदेवःसर्व । नारायणःसर्वमिदंपुरा  
णः ) इत्यादिकअनेकश्रुतिस्मृतिवाक्योंविषे चेतनतैंभिन्नकरिकै अचेतनकाअभावहीं प्रतिपादनकन्याहै ॥  
तहां इनउक्तश्रुतिवचनोंविषे । इदंसर्व । इसवचनकरिकैतों प्रत्यक्षादिकप्रमाणकरिकैसिद्ध यहआकाशादि  
कजडजगत् कथनकन्याहै ॥ और आत्मा ब्रह्म पुरुष वासुदेव नारायण इनशब्दोंकरिकै अद्वितीय तथासर्व  
कासाक्षी तथाप्रत्यकरूप ऐसापरमात्मा कथनकन्याहै ॥ तहां प्रथमश्रुतिविषे प्रपंचकावाचक जो इदंसर्व  
यहशब्दहै ॥ तथा परमात्माकावाचक जो आत्मा यहशब्दहै ॥ तिनदोनोंशब्दोंका सामानाधिकरण्य प्रती  
तहोवैहै ॥ तहां जडजगत्का तथाचेतनआत्माका वास्तवतैंएकपणा संभवतानहीं ॥ यातैं चेतनअचेतनका  
अभेदप्रतिपादकत्वरूप मुख्यसामानाधिकरण्यतों तहांसंभवतानहीं ॥ किंतु जैसे ( योऽयंचोरःसस्थाणुः )  
इसवचनविषे चोर स्थाणु इनदोनोंशब्दोंका बाधसामानाधिकरण्यहै ॥ तैसे ताउक्तश्रुतिविषे आत्मा  
सर्व इनदोनोंपदोंकाभी बाधसामानाधिकरण्यहींहै ॥ अर्थात् जैसे दृष्टांतवाक्यविषे चोर स्थाणु इनदोनोंप  
दोंकेसामानाधिकरण्यतैं स्थाणुतैंभिन्नकरिकै चोरकाअभाव प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे दार्ष्टान्तिकश्रुतिवाक्य  
विषेभी आत्मा सर्व इनदोनोंपदोंकेसामानाधिकरण्यतैं आत्मातैंभिन्नकरिकै सर्वजडजगत्काअभावहीं

परि०  
१

॥ २२ ॥



प्रतीतहोवैहै ॥ अर्थात् प्रपंचाभाववान् आत्मा याप्रकारकाबोध ताश्रुतिवाक्यतैहोवैहै ॥ तहां सोजड प्रपंचकाअभाव तबीसंभवै ॥ जबी ताजडप्रपंचकूं ब्रह्मविषे कल्पितमानिये ॥ ताप्रपंचकेकल्पितपणेतै विना सोप्रपंचकाअभावसंभवतानहीं ॥ यातै सोश्रुतिउक्त जडप्रपंचकाअभाव आपणेप्रतियोगीभूतज डप्रपंचकेकल्पितपणेतैविना अनुपपन्नहूआ ताजडप्रपंचकेकल्पितपणेतै कल्पनाकरावैहै ॥ इसप्रकारकी श्रुतार्थापत्तिकरिकैहीं चेतनविषे अचेतनकाकल्पितपणा निश्चयहोवैहै ॥ इसप्रकारकाअर्थ पूर्वउक्तदू सरेश्रुतिस्मृतिवचनोंकाभी जानिलेणा इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व चेतनविषे अचेतनकूं कल्पितक ह्या ॥ तहां चेतन कौनवस्तुहै तथाअचेतन कौनवस्तुहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ नित्य शुद्ध बुद्ध मु क्त सत्य परमानंद अद्वय ऐसाजोब्रह्महै सोचेतन कहाजावैहै ॥ और अज्ञानतैआदिलैकेजितनाकी जडसमूहहै सोअचेतन कहाजावैहै ॥ अब ताब्रह्मके नित्यादिकसप्तविशेषणोंकाफल तथातिनोंविषेश्रु तिप्रमाण कथनकरैहैं ॥ तहां ब्रह्मविषे वास्तवतै कोईभीअनात्मवस्तुकातादात्म्य नहींहै ॥ तथापि भ्रां तिकरिकै ताब्रह्मविषे अनात्मवस्तुकातादात्म्य प्रतीतहोवैहै ॥ ताभ्रांतिसिद्धतादात्म्यकूं तेनित्यादिकवि शेषण निवृत्तकरैहैं ॥ ताकेविषेभी कार्यप्रपंचकेतादात्म्यकूं नित्य यहविशेषण निवृत्तकरैहै ॥ सोब्रह्मका नित्यपणा ( आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः ) इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरिकैहींसिद्धहै ॥ और ताकार्यप्रपंचके धर्मोंकेतादात्म्यकूं शुद्ध यहविशेषण निवृत्तकरैहै ॥ सोब्रह्मकाशुद्धपणा ( अस्त्वाविरंशुद्धमपापविद्धं ) इ त्यादिकश्रुतिप्रमाणकरिकैहींसिद्धहै ॥ तहां रागद्वेषादिकविकारोंतैजोरहितपणाहै यहहीं ताब्रह्मविषेश्रु द्धपणाहै ॥ और कारणभूतअज्ञानकेतादात्म्यकूं बुद्ध यहविशेषण निवृत्तकरैहै ॥ तहां सर्वदा एकरसज्ञा नरूपताकानाम बुद्धपणाहै ॥ सोब्रह्मकाबुद्धपणा ( प्रज्ञानघनः ) इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरिकैहींसिद्धहै ॥



तत्त्वा०

॥ २३ ॥

और अज्ञानकृत आवरणादिकोंके तादात्म्यकूं मुक्त यहविशेषण निवृत्तकरेहै ॥ तहां बंधतैरहितपणेकाना  
म मुक्तपणाहै ॥ सोब्रह्मकामुक्तपणा ( विमुक्तश्चविमुच्यते ) इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरिकैहींसिद्धहै ॥  
और मिथ्यापणेकूं सत्य यहविशेषण निवृत्तकरेहै ॥ तहां तीनकालविषे जाकाबाधनहींहोवै सो सत्यक  
ह्याजावैहै ॥ सोब्रह्मकासत्यपणा ( सत्यंज्ञानमनंतं ब्रह्म । सदेवसोम्येदमग्र आसीत् ) इत्यादिकश्रुतिप्रमा  
णकरिकैहींसिद्धहै ॥ और आनंद यहविशेषण ताब्रह्मके पुरुषार्थपणेकूं कथनकरेहै ॥ साब्रह्मकी आनंदरू  
पता ( आनंदो ब्रह्मेति व्यजानात् विज्ञानमानंदं ब्रह्म ) इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरिकैहींसिद्धहै ॥ और अ  
द्वय यहविशेषण ताब्रह्मकी अखंड एकरसताकूं कथनकरेहै ॥ तहां नहींविद्यमानहै द्वैतजिसविषे ताका  
नाम अद्वयहै ॥ अर्थात् भेदवादीयोंनै कल्पनाकज्येजे पंचभेदहैं तिनोतैरहितकानाम अद्वयहै ॥ ते पंच  
भेद यहहैं ॥ जीवोंका परस्परभेद ॥ १ ॥ जीव ईश्वर दोनोंका परस्परभेद ॥ २ ॥ घटादिकजडपदा  
र्थोंका परस्परभेद ॥ ३ ॥ ईश्वरका तथाजडजगत्का परस्परभेद ॥ ४ ॥ जीवका तथाजडजगत्का प  
रस्परभेद ॥ ५ ॥ इसप्रकार जीवईश्वरादिरूपप्रतियोगियोंके भेदकरिकै ते भेद पंचप्रकारके होवैहैं ॥ ते  
सर्वभेद कल्पितहैं ॥ यातैं तिनपंचभेदोंतैरहितपणा ब्रह्मविषे संभवैहै ॥ अथवा सजातीयभेद १ विजा  
तीयभेद २ स्वगतभेद ३ इनतीनभेदोंतैरहितहोवै ताकानाम अद्वयहै ॥ साब्रह्मकी अद्वयरूपता ( ए  
कमेवाद्वितीयं ) इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरिकैहींसिद्धहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व अज्ञानादिकजड  
समूहकूं अचेतनकह्या ॥ तहां ताअज्ञानका स्वरूपक्याहै तथालक्षणक्याहै तथाप्रमाणक्याहै ॥ ऐसीशं  
काके प्राप्तहूए ॥ अब यथाक्रमतैं ताअज्ञानके स्वरूपकूं तथालक्षणकूं तथाप्रमाणकूं निरूपणकरेहैं ॥ त  
हां सोअज्ञान त्रिगुणात्मकहै ॥ अर्थात् सत्व रज तम यहतीनगुणहैं आत्मा कहीये स्वरूप जिसका

परि०  
१

॥ २३ ॥



ऐसा त्रिगुणात्मक अज्ञान है ॥ तहां अज्ञानके कार्यभूत गजतविषे सुख दुःख मोह रूपता प्रत्यक्ष प्रतीत हो  
 वै है ॥ और ते सुखादिक तीनों यथाक्रम तैं सत्त्वादिक तीन गुणों के ही परिणाम होवै हैं ॥ और कारण के समा  
 नस्वभाव वाला ही कार्य होवै है ॥ या तैं जगत् रूप कार्यविषे त्रिगुण रूपता कूं देखिकै कारणभूत अज्ञान विषे भी  
 सा त्रिगुण रूपता कल्पना करी जावै है ॥ और ( अजामेकांलोहित शुक्ल कृष्णां ) यह श्रुति भी ता अज्ञान कूं  
 त्रिगुण रूप कहै है ॥ इन तैं करिकै अज्ञान का स्वरूप कह्या ॥ अब ता अज्ञान का लक्षण कहै हैं ॥ ( सदसद्वि  
 लक्षणं अज्ञानं ) अर्थ यह ॥ सत्य पदार्थ तैं तथा असत्य पदार्थ तैं जो विलक्षण होवै सो अज्ञान कह्या जावै है ॥  
 अर्थात् जिसका सत्य रूप करिकै तथा असत्य रूप करिकै निरूपण नहीं होइ सकै सो अज्ञान कह्या जावै है ॥  
 तहां अज्ञान कूं जो सत्य मानिये ॥ तौ सत्य ब्रह्म की न्यांई ता अज्ञान का नाशन ही होना चाहिये ॥ और ब्र  
 ह्म ज्ञान करिकै ता अज्ञान का नाश होइ जावै है ॥ या तैं सो अज्ञान सत्य रूप करिकै भी निरूपण कन्या जावै  
 नहीं ॥ और ता अज्ञान कूं जो असत्य मानिये ॥ तौ असत्य वंध्या पुत्र की न्यांई ता अज्ञान का प्रत्यक्ष नहीं  
 होना चाहिये ॥ और सो अज्ञान तौ मँ ब्रह्म कूं नहीं जानता हूं या प्रकार के प्रत्यक्ष अनुभव का विषय हूँ आ हीं  
 प्रतीत होवै है ॥ या तैं सो अज्ञान असत्य रूप करिकै भी निरूपण कन्या जावै नहीं ॥ या कारण तैं ता अज्ञान  
 कूं अनिर्वचनीय कहै हैं ॥ तहां । असत् विलक्षणं अज्ञानं । इतना मात्र हीं जो ता अज्ञान का लक्षण करते ॥ तौ  
 वंध्या पुत्रादिक असत्य पदार्थ तैं विलक्षण जो सत्य ब्रह्म है ताके विषे तालक्षण की अति व्याप्ति होती ॥ ता अ  
 ति व्याप्ति दोष के निवृत्त करने वास तैं तालक्षण विषे । सत् विलक्षण । यह पद कथन कन्या है ॥ ब्रह्म सत् तैं वि  
 लक्षण नहीं है ॥ या तैं ताके विषे अति व्याप्ति होवै नहीं ॥ और । सत् विलक्षणं अज्ञानं । इतना मात्र हीं जो  
 ता अज्ञान का लक्षण करते ॥ तौ सत्य ब्रह्म तैं विलक्षण जे वंध्या पुत्रादिक असत्य पदार्थ हैं तिनों विषे तालक्षण की



तत्त्वा०

॥ २४ ॥

परि०

१

अतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे । असत्विलक्षण । यहपद कथन  
कन्याहै ॥ तेवंध्यापुत्रादिक असत्तैविलक्षणनहींहैं ॥ यातैं तिनोंविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ और वा  
स्तवतैंविचारकरिकैदेखीयेतों । सत्विलक्षणं अज्ञानं । इतनामात्रहीं ताअज्ञानकालक्षण संभवैहै ॥ अ  
सत् यहपद व्यर्थहींहै ॥ काहेतैं जोकोईअसत्वस्तुहोवै ॥ तों ताका असत्पणा नहींसंभवैगा ॥ और  
जोकोईअसत्वस्तुहैहींनहीं ॥ तों किसविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैंगी ॥ यातैं ताअज्ञानकेलक्षण  
विषे । असत्विलक्षण । यहजोपद ग्रंथकारोंनैदीयाहै ॥ सोकेवल शिष्योंकेबुद्धिकीवृद्धिवासतैदीयाहै ॥

॥ शंका ॥ ॥ जैसे अज्ञान सत्तैविलक्षणहै ॥ तैसे यहकार्यप्रपंचभी तासत्तैविलक्षणहींहै ॥ यातैं  
कार्यप्रपंचविषे ताअज्ञानकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताउक्तलक्षणविषे अना  
दि इसपदकेकहणेकरिकै साअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ अर्थात् ( सद्विलक्षणमनादि अज्ञानं ) यहअज्ञान  
कालक्षणहै ॥ ताकार्यप्रपंचविषे अनादिपणाहैनहीं ॥ यातैं ताप्रपंचविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैन  
हीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ इसउक्तलक्षणकीभी जीवईश्वरविषे अतिव्याप्तिहींहोवैहै ॥ काहेतैं सोजीवईश्व  
र कल्पितहोणेतैं सत्तैविलक्षणभीहै तथाअनादिभीहै ॥ तहां ( जीवेशावाभासेनकरोति ) इसश्रुतिवच  
नकरिकै तथा ( मायाभासेनजीवेशौकरोतीतिश्रुतत्वतः कल्पितावेवजीवेशौताभ्यांसर्वप्रकल्पितं ) इस  
विद्यारण्यस्वामीकेवचनकरिकै ताजीवईश्वरविषे कल्पितपणाहींसिद्धहोवैहै ॥ और ( जीवेशौचविशुद्धा  
चिद्विभागस्तुतयोर्द्वयोः अविद्यातच्चित्तोर्योगःषडस्माकमनादयः ) अर्थयह ॥ जीव १ ईश्वर २ शुद्धचै  
तन्य ३ तिनोंकापरस्परभेद ४ अविद्या ५ ताअविद्याकाचेतनकेसाथिसंबंध ६ यहषट्पदार्थ हमारेमत  
विषे अनादिहैं इति ॥ इससांप्रदायिकवचनतैं ताजीवईश्वरविषे अनादिपणा सिद्धहोवैहै ॥ यातैं ताजी

॥ २४ ॥



विषय अनादिह इति ॥ इससांप्रदायिकवचनतः ताजिविषयविषय अनादिपणा सिद्धहोविह ॥ यात ताजि  
 वईश्वरविषे ताउक्तलक्षणकीअतिव्याप्ति वज्रलेपहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्त  
 करणेवासतै तालक्षणविषे । ज्ञाननिवर्त्य । यहपदभी हम कथनकरेहैं ॥ तहां ( यतोज्ञानमज्ञानस्यैवनि  
 वर्त्तकं ) इसवचनकरिकै श्रीपंचपादिकाचार्यनैं ज्ञानकरिकै केवलअज्ञानमात्रकीहीनिवृत्ति कथनकरी  
 है ॥ अन्यकीनिवृत्तिकथनकरीनहीं ॥ और जीवईश्वरादिभावकीनिवृत्तितौ ताअज्ञानकीनिवृत्तिकरिकै  
 हीहोवैहै ॥ यातैं ताजीवईश्वरविषे ज्ञानकरिकैनिवर्त्यपणाहैनहीं ॥ यातैं ताजीवईश्वरविषे ताउक्तलक्षण  
 कीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं ताअज्ञानका ( सद्विलक्षणमनादिज्ञाननिवर्त्य अज्ञानं ) यहलक्षणसि  
 द्धभया ॥ अथवा ( अनाद्युपादानंज्ञाननिवर्त्य अज्ञानं ) यहद्वितीय अज्ञानकालक्षण करणा ॥ तहां  
 इसलक्षणविषे अनादिप्रागभावविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै उपादान यहपद कथनकन्याहै ॥  
 और घटादिककार्योंकेउपादानकारणभूतमृत्तिकादिकोंविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै अनादि य  
 हपद कथनकन्याहै ॥ और अनादि तथाविवर्त्तउपादानरूप ब्रह्मविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै  
 ज्ञाननिवर्त्य यहपद कथनकन्याहै ॥ ईहां अज्ञानविषे परिणामिउपादानता ग्रहणकरणी ॥ और केईक  
 वादी ज्ञानकेअभावकूंहीं अज्ञानकहेहैं ॥ तिनोंकेखंडनकरणेवासतै सिद्धांतविषे ताअज्ञानकूं भावरूपमा  
 न्याहै इति ॥ अब ताअज्ञानविषे प्रमाणकूंकहेहैं ॥ तहां अहंब्रह्मनजानामि अर्थात् मैंब्रह्मकूंनहींजान  
 ताहूं याप्रकारका अज्ञानविषयकप्रत्यक्षअनुभव सर्वप्राणीयोंकूंहोवैहै ॥ यातैं ताअज्ञानविषे एकतों यह  
 प्रत्यक्षहीप्रमाणहै ॥ और दूसरा श्रुतिस्मृतिभीप्रमाणहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( तेध्यानयोगानुगताअपश्यन्  
 देवात्मशक्तिस्वयुणैर्निगूढां ) अर्थयह ॥ कालस्वभावादिककारणोंविषे नानाप्रकारकेदोषोंकाविचारकरि  
 कै जगत्केकारणकानिश्चयकरणेवासतै ब्रह्मकेध्यानपरायणहूए तेब्रह्मवेत्तापुरुष देवात्मशक्तिकूंहीं जग



तत्त्वा०

॥ २५ ॥

तत्काकारणरूपकरिकैदेखतेभये ॥ जाअज्ञानरूपशक्ति आपणेसत्वादिकगुणोंकरिकैनिगूढ़है इति ॥ इस श्रुतिकाअर्थ आत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे विस्तारतैंकथनकन्याहै ॥ तहांस्मृति ॥ ( अज्ञानेनावृतं ज्ञानंतेनमुह्यंतिजंतवः । ज्ञानेनतुतदज्ञानंयेषांनाशितमात्मनः ) अर्थयह ॥ जिनजीवोंकाज्ञान अज्ञानकरिकैआवृतहूआहै ॥ तेजीव तिसअज्ञानकृतआवरणकरिकै संसारकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥ और जिनजीवोंका सोअज्ञान गुरुशास्त्रकेप्रसादजन्यज्ञानकरिकैनिवृत्तहूआहै ॥ तिनपुरुषोंका अहंब्रह्मास्मि यहज्ञान प्रत्यक् अभिन्नब्रह्मकूं प्रकाशकरेहै इति ॥ यहगीतास्मृतिभी ताअज्ञानविषेप्रमाणहै ॥ किंवा इसस्मृतिविषे अज्ञानकूं ब्रह्मकेस्वरूपकाआवरकपणा कथनकन्याहै ॥ सोआवरकपणा भावपदार्थविषेहींहोवैहै ॥ अभावपदार्थविषेहोतानहीं ॥ यातैं ज्ञानकेअभावकूं अज्ञानरूपमानणेहारे नैयायिकोंनेभी इसस्मृतिवचनके विरोधतैं ताअज्ञानकूं भावरूपहीं मान्याचाहिये ॥ यातैं सोगीतावचन ताअज्ञानकीभावरूपताविषेभी प्रमाणहै ॥ और इसउक्तगीतावचनविषे ज्ञानकरिकैअज्ञानकानाश कथनकन्याहै ॥ ताकरिकै त्रिगुणात्मक अचेतन स्वतंत्र पारमार्थिक परिणामी नित्य ऐसाजोप्रधानहै सोईहीं अज्ञानहै यहसांख्यीयोंका मतभी खंडनहूआजानणा ॥ तहां लोकविषे अचेतनरथादिकोंकी चेतनकेअधीनहींप्रवृत्ति देखणेविषे आवैहै ॥ स्वतंत्रप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं ताप्रधानकूं अचेतनमानिके पुनःस्वतंत्रमानणा अत्यंतविरुद्ध है ॥ और लोकविषे परिणामीक्षीरादिकोंकूं सावयवताकरिकै अनित्यपणाहीं देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं ताप्रधानकूं परिणामीमानिकै पुनःनित्यमानणा यहभी अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं सोसांख्यीयोंकामत समीचीननहींहै इति ॥ इतनैपर्यंत अज्ञानका स्वरूप तथालक्षण तथाप्रमाण कथनकन्या ॥ अब ताअज्ञानके विभागकूं कथनकरेहैं ॥ तहां सोउक्तअज्ञान माया १ अविद्या २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां

परि०

१

॥ २५ ॥



शुद्धसत्त्वगुणप्रधानहूआ सोअज्ञान माया कहाजावैहै ॥ और मलिनसत्त्वगुणप्रधानहूआ सोअज्ञान अविद्या कहाजावैहै ॥ तहां जोसत्त्वगुण रज तम इनदोनोंगुणोंकरिकै तिरस्कारकूंनहींप्राप्तभयाहै ॥ सो सत्त्वगुण शुद्ध कहाजावैहै ॥ और जोसत्त्वगुण तारजोतमोगुणकरिकै तिरस्कारकूंप्राप्तभयाहै ॥ सो सत्त्वगुण मलिन कहाजावैहै ॥ इसप्रकार सोएकहींअज्ञान सत्त्वगुणकीशुद्धिकरिकै मायारूपहोवैहै ॥ और सत्त्वगुणकीमलिनताकरिकै अविद्यारूपहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( मायाचाविद्याचस्वयमेवभवति ) अर्थयह ॥ सोमूलप्रकृतिरूपअज्ञान आपहीं मायारूप तथाअविद्यारूप होवैहै इति ॥ और माया अविद्या इनदोनोंउपाधियोंकरिकै सोएकहींचैतन्य जीव ईश्वर इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां ता मायाविषेप्रतिबिंबितचैतन्यतों ईश्वर कहाजावैहै ॥ और ताअविद्याविषेप्रतिबिंबितचैतन्य जीव कहा जावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( जीवेशावाभासेनकरोति ) अर्थयह ॥ सोअज्ञान स्वनिष्ठआभासकरिकै जीव ईश्वर दोनोंकूंकरैहै इति ॥ और केईकग्रंथकारतों तामायाअविद्याका इसप्रकारतें भेदवर्णनकरैहैं ॥ ता अज्ञानकी दोप्रकारकीशक्ति होवैहै ॥ एकतों ज्ञानशक्ति होवैहै ॥ और दूसरी क्रियाशक्ति होवैहै ॥ तहां कार्यकाजनक जोकारणनिष्ठसामर्थ्यहै ताकानाम शक्तिहै ॥ ताकेविषेभी ज्ञानकाजनक जाशक्ति है साज्ञानशक्ति कहीजावैहै ॥ और क्रियाकाजनक जाशक्तिहै साक्रियाशक्ति कहीजावैहै ॥ तहां रज तम इनदोनोंगुणोंकरिकै नहींअभिभवकूंप्राप्तभया जोसत्त्वगुणहै ॥ सोसत्त्वगुण ज्ञानशक्ति कहाजा वैहै ॥ तहां ( सत्वात्संजायतेज्ञानं ) इसवचनकरिकै गीताविषे श्रीभगवान्ने सत्त्वगुणतेंज्ञानकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ यातें तासत्त्वगुणकूं ज्ञानशक्तिरूपताविषे सोगीताकावचनहींप्रमाणहै ॥ और सत्त्वगुणक रिकै नहींअभिभवकूंप्राप्तभये जे रज तम यहदोगुणहैं ॥ तेदोनोंगुण क्रियाशक्ति कहेजावैहैं ॥ साक्रि



तत्त्वा०

॥ २६ ॥

याशक्तिभी दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतों आवरणशक्तिहोवैहै ॥ और दूसरी विक्षेपशक्तिहोवैहै ॥ तहां आवरणकेजनकशक्तिकूं आवरणशक्ति कहेहैं ॥ और विक्षेपकेजनकशक्तिकूं विक्षेपशक्ति कहेहैं ॥ तहां सत्व रज इनदोगुणोंकरिकै नहींअभिभवकूंप्राप्तभया जोतमोगुणहै ॥ सोतमोगुण आवरणशक्ति कह्याजावैहै ॥ यहवार्त्ता भगवान्भाष्यकारनैभीकहीहै ॥ तहांभाष्यवचनं ( कृष्णंतमःआवरणात्मकत्वात् ) अर्थयह ( अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णां ) इसमंत्रविषेस्थित जोकृष्ण शब्दहै ॥ सो तमोगुणकाहींवाचकहै ॥ तमोगुणकूं आवरणरूपहोणेतैं इति ॥ इसवचनकरिकै श्रीभाष्यकारोंनै तातमोगुणकूंआवरकपणा इस उक्तश्रुतिकेव्याख्यानविषे कथनकन्याहै ॥ यातैं तिसतमोगुणविषे आवरणशक्तिरूपता संभवैहै ॥ यह आवरणशक्तिकास्वरूपकह्या ॥ अब ताआवरणशक्तिका लक्षणकहेहैं ॥ ( नास्तिनप्रकाशतेइतिव्यवहारहेतुः आवरणशक्तिः ) अर्थयह ॥ ब्रह्महैनहीं तथा ब्रह्मभासतानहीं याप्रकारकेव्यवहारकाजोकारणहोवै सोआवरणशक्ति कह्याजावैहै इति ॥ इसीप्रकारतैं पूर्वज्ञानशक्तिकाभी ( अस्तिप्रकाशतेइतिव्यवहारकारणं ज्ञानशक्तिः ) याप्रकारकालक्षण जानिलेणा ॥ यहआवरणशक्तिकालक्षण श्रीविद्यारण्यस्वामी नैभीकह्याहै ॥ ( नभातिनास्तिकूटस्थइत्यापादनमावृत्तिः ) अर्थयह ॥ कूटकीन्यांई निर्विकाररूपकरिकै जोस्थितहोवैहै ताकानाम कूटस्थहै ॥ ऐसापरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मा नहींहै तथाभासतानहीं याप्रकारकेव्यवहारकाजोकारणहै सो आवरणशक्ति कह्याजावैहै इति ॥ अब विक्षेपशक्तिकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां तम सत्व इनदोनोगुणोंकरिकै नहींअभिभवकूंप्राप्तभया जोरजोगुणहै ॥ सोरजोगुण विक्षेपशक्ति कह्याजावैहै ॥ तहां ( रजसोलोभएवच ) इसगीतावचनविषे रजोगुणतैं लोभादिकोंकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ और लोभ मद मत्सर इत्यादिकोंकूं विक्षेपकीकारणता प्रसिद्धहीहै ॥ यातैं ताउक्तविक्षेप

परि०

१

॥ २६ ॥



शक्तिविषे सोगीतावाक्यहींप्रमाणहै ॥ अब ताविक्षेपशक्तिकालक्षणकहेहैं ॥ ( आकाशादिप्रपंचोत्पत्ति हेतुः विक्षेपशक्तिः ) अर्थयह ॥ आकाशादिकप्रपंचकेउत्पत्तिकाकारण जाशक्तिहै साविक्षेपशक्ति कही जावैहै ॥ यहविक्षेपशक्तिकालक्षण आचार्योंनैभी कथनकन्याहै ॥ ( विक्षेपशक्तिर्लिङ्गादिब्रह्मांडांतजगत्सृ जेत ) अर्थयह ॥ समष्टिव्यष्टिरूपलिङ्गशरीरतैंआदिलैके चतुर्दशभुवनरूपब्रह्मांडपर्यंत सर्वजगत्कूं सा विक्षेपशक्तिहीं उत्पन्नकरेहै इति ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ सोपूर्वउक्तअज्ञानहीं ताउक्तआवरणशक्ति प्रधानहूआ अविद्या कह्याजावैहै ॥ और ताउक्तविक्षेपादिशक्तिप्रधानहूआ माया कह्याजावैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताआवरणशक्तिप्रधानअज्ञानकूं मायारूपता क्युंनहींहोवै ॥ तथा ताविक्षेपादिशक्तिप्रधा नअज्ञानकूं अविद्यारूपता क्युंनहींहोवै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं तामायाका तथा अविद्याका यहलक्षणकन्याहै ॥ ( स्वाश्रयाऽव्यामोहकरी माया ) अर्थयह ॥ आपणेआश्रयकूं जा व्यामोहकीप्राप्तिनहींकरेहै सा मायाकहीजावैहै इति ॥ ( स्वाश्रयव्यामोहकरी अविद्या ) अर्थयह ॥ आपणेआश्रयकूं जा व्यामोहकीप्राप्तिकरेहै सा अविद्याकहीजावैहै इति ॥ तहां ताआवरणशक्तिकूंतां मोहकारीपणाहै ॥ यातैं ताआवरणशक्तिप्रधानअज्ञान अविद्याहींकह्याजावैहै ॥ मायाकह्याजावैनहीं ॥ और ताविक्षेपादिकशक्तिकूं सोमोहकारीपणाहैनहीं ॥ यातैं ताविक्षेपादिशक्तिप्रधानअज्ञान मायाहींक ह्याजावैहै ॥ अविद्याकह्याजावैनहीं ॥ ईहां विक्षेपादि इसआदिशब्दकरिकै पूर्वउक्तज्ञानशक्तिकाभीग्र हणकरणा ॥ इसप्रकारका मायाअविद्याकाभेद स्मृतिविषेभीकह्याहै ॥ तहांस्मृति ॥ ( तरत्यविद्यांवि ततांहृदियस्मिन्निवेशिते योगीमायाममेयायतस्मैविद्यात्मनेनमः ) अर्थयह ॥ हृदयविषे जिसपरमात्मा केसाक्षात्कारहूए ब्रह्मवेत्तायोगीपुरुष ताआवरणशक्तिप्रधानअज्ञानरूपअविद्याकूं तथाताविक्षेपशक्तिप्र



तत्त्वा०

॥ २७ ॥

धानअज्ञानरूपमायाकूं नाशकरेहै ॥ तिसज्ञानस्वरूपअप्रमेयब्रह्मकेताई हमारा नमस्कारहै इति ॥ अब  
 तामायाअविद्याविभागकेनिरूपणकाफल कहेहैं ॥ ताउक्तमायाकरिकैउपहितजोचैतन्यहै ॥ सोमायाउ  
 पहितचैतन्यतों ईश्वरकह्याजावैहै ॥ तथा जगत्काकारण कह्याजावैहै ॥ तथा अंतर्दामी कह्याजावैहै ॥  
 तहां ( एषसर्वेश्वरः ) यहश्रुतितों तामायाउपहितचैतन्यकूं ईश्वर कहेहै ॥ और ( एषोऽंतर्दामी ) यहश्रु  
 ति ताकूं अंतर्दामी कहेहै ॥ और ( एषोयोनिःसर्वस्य ) यहश्रुति ताकूं सर्वकाकारण कहेहै ॥ यातें  
 तामायाउपहितचैतन्यके ईश्वरपणेविषे तथातथाअंतर्दामीपणेविषे तथा जगत्कारणपणेविषे यहउक्तश्रु  
 तिहीं प्रमाणहै ॥ सोमायाउपहितचैतन्यहीं तत्पदकावाच्यअर्थहै ॥ और पूर्वउक्तअविद्याकरिकैउपहि  
 त जोचैतन्यहै ॥ सो जीव कह्याजावैहै ॥ तथाप्राज्ञ कह्याजावैहै ॥ सोजीवहीं त्वंपदकावाच्यअर्थहै ॥  
 ईहां उपहितशब्दकरिकै प्रतिबिंबितकाग्रहणकरणा ॥ अर्थात् तामायाविषेप्रतिबिंबितचैतन्य ईश्वरकह्या  
 जावैहै ॥ और ताअविद्याविषेप्रतिबिंबितचैतन्य जीवकह्याजावैहै ॥ यहवार्त्ता श्रीविद्यारण्यस्वामीनें पं  
 चदशीग्रंथविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( तमोरजःसत्वगुणाप्रकृतिर्द्विविधाचसा सत्वशुद्धविशुद्धिभ्यां  
 मायाऽविद्येचतेमते ॥ १ ॥ मायाबिंबोवशीकृत्यतांस्यात्सर्वज्ञईश्वरः अविद्यावशगस्त्वन्यस्तद्वैचित्र्यादनेक  
 धा ॥ २ ॥ ) अर्थयह ॥ सच्चिदानंदब्रह्मकेप्रतिबिंबकरिकैयुक्त तथासत्त्वरजतमतीनगुणरूप जाप्रकृतिहै ॥  
 साप्रकृति माया अविद्या इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां शुद्धसत्वगुणकीप्रधानताकरिकैतों  
 साप्रकृति मायाकहीजावैहै ॥ और मलिनसत्वगुणकीप्रधानताकरिकै साप्रकृति अविद्याकहीजावैहै ॥  
 तहां तामायाविषेप्रतिबिंबितजोचैतन्यहै ॥ सो तामायाकूंआपणेवशकरिकै सर्वज्ञ तथाईश्वर होवैहै ॥  
 और ताअविद्याविषेप्रतिबिंबितजोचैतन्यहै ॥ सो जीवकह्याजावैहै ॥ सोजीवचैतन्य ताअविद्याकेवश

परि०

१

॥ २७ ॥



हूआ तिसअविद्याकीविचित्रतातैं आपभी देवमनुष्यादिरूपकरिकै अनेकप्रकारकाहींहोवैहै ॥ ईहांयह तात्पर्यहै ॥ सापूर्वउक्त शुद्धसत्वगुणप्रधानमाया एकहींहोवैहै ॥ यातैं तामायाविषेप्रतिबिंबितईश्वरचैतन्यभी एकहींहोवैहै ॥ और सापूर्वउक्त मलिनसत्वप्रधानअविद्या तामलिनताकीविचित्रतातैं अनेकप्रकारकीहींहोवैहै ॥ यातैं ताअविद्याविषेप्रतिबिंबितजीवचैतन्यभी अनेकप्रकारकाहींहोवैहै ॥ यातैं इस उक्तपक्षविषे नानाजीवहींसिद्धहोवैहैं इति ॥ अब इसउक्तअर्थविषे श्रुतिप्रमाणभी कहेहैं ॥ ( अस्मान्मायीसृजतेविश्वमेतत्तस्मिंश्चान्योमाययासन्निरुद्धः । मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरं ) अर्थयह ॥ मायाउपाधिकपरमात्मा सृष्टिकेआदिकालविषे आकाशादिकब्रह्मांडांतजगत्कूं वेदकेशब्दोंतैं उत्पन्नकरताभया ॥ अर्थात् सोपरमात्मा भू इसप्रकारकेवेदशब्दकूंउच्चारणकरिकै पृथिवीकूंउत्पन्नकरताभया ॥ इसप्रकार अकाशादिकशब्दोंकूंउच्चारणकरिकै तिनआकाशादिकोंकूंभी उत्पन्नकरताभया ॥ यहवार्त्ता ( सभूरित्युक्ताभुवमसृजत् । वेदशब्देभ्यएवादौनिर्ममेसमहेश्वरः ) इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंविषे अतिप्रसिद्धहींहै ॥ तिसउत्पन्नहूएजगत्विषे सोअविद्याउपाधिकजीव पूर्वउक्तमायाकरिकै देहादिकोंविषेअहंमम अभिमानकरिकै बंधायमानहोवैहै ॥ और मायाकूं जगत्काउपादानकारण जानणा ॥ और तामाया उपाधिवालेचैतन्यकूं जगत्काकर्त्ता महेश्वर जानणा ॥ ईहां यहअभिप्रायहै ॥ शुद्धब्रह्मकूंतों जगत्की कारणताहैनहीं ॥ किंतु मायाउपाधिकपरमात्माकूंहीं जगत्कीकारणताहै ॥ तहां सोपरमात्मा तामायाउपाधिकीप्रधानताकरिकैतों जगत्का उपादानकारणहै ॥ और आपणेचैतन्यरूपकीप्रधानताकरिकै ताजगत्का कर्त्तारूपनिमित्तकारणहै इति ॥ तहां पूर्वउक्तदोमतोंविषे अज्ञानकेएकहूएभी मायाअविद्याकेभेदकूंसिद्धकरिकै जीवईश्वरकाभेद तथाजीवोंकानानापणा दिखाया ॥ अब जेग्रंथकार ताअ



तत्त्वा०

॥ २८ ॥

ज्ञानकूँएकमानिकै तथातामायाअविद्याकेभेदकूँनमानिकै विंभप्रतिविंभभावकरिकै ताजीवईश्वरकेभेदकूँ मानेहैं तथाजीवकूँएकहीं मानेहैं ॥ तिनोंकेमतकानिरूपणकरेहैं ॥ जैसे एकहीदेवदत्तनामापुरुष पाक पाठक्रियारूपनिमित्तकेभेदकरिकै पाचक पाठक इनदोनामोंकरिकै कहाजावैहै ॥ तैसे सोएकहींअज्ञान विक्षेपआवरणशक्तिरूपनिमित्तकेभेदकरिकै माया अविद्या इनदोनामोंकरिकै कहाजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे पाचक पाठक यहदोनोंशब्द ताएकहीदेवदत्तपुरुषकेवाचकहैं ॥ तिनवाचकशब्दोंकेभेद करिकै तादेवदत्तपुरुषकाभेद होतानहीं ॥ तैसे माया अविद्या यहदोनोंशब्दभी ताएकहींअज्ञानकेवाचकहैं ॥ तिनवाचकशब्दोंकेभेदकरिकै ताअज्ञानकाभेद संभवतानहीं ॥ यातैं तामायाअविद्याका भेद नहींहै ॥ ऐसेएकअज्ञानरूपअविद्याविषे जोचैतन्यकाप्रतिविंभहै सोतौ जीव कहाजावैहै ॥ और सो अविद्याउपहितविंभचैतन्य ईश्वर कहाजावैहै ॥ इसप्रकार तामायाअविद्याकेभेदकूँनहींअंगीकारकरिकै भी विंभप्रतिविंभभावकरिकै सोजीवईश्वरकाभेद संभवैहै ॥ यहवार्ता श्रीव्यासभगवान्नेभीकहीहै ॥ तहांसूत्र ॥ ( आभासएवच ) अर्थयह ॥ जैसे जलादिकउपाधियोंविषे सूर्यचंद्रादिकोंका प्रतिविंभहोवै है ॥ तैसे यहजीवभी चैतन्यका प्रतिविंवरूपहीहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जैसे सूर्यादिकोंकेप्रतिविं वका जलादिक उपाधिहोवैहैं ॥ तैसे इसजीवरूपप्रतिविंभका तथाविंभभूतईश्वरका कौनउपाधिहै ॥ ऐ सीशंकाकेप्राप्तहूए ॥ अब मतभेदसैं ताजीवईश्वरकेउपाधिकावर्णनकरेहैं ॥ तहां केईकग्रंथकारतों अंतः करणकूँहीं ताजीवकाउपाधिमानेहैं ॥ काहेतैं अंतःकरणविशिष्टचैतन्यविषेहीं अहंकर्ता अहंभोक्ता या प्रकारतैं कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकसंसारकाअनुभवहोवैहै ॥ और ( कार्योंपाधिरयंजीवः ) यहश्रुतिभी ताअंतःकरणरूपकार्यकूँहीं जीवकाउपाधिपणा कहेहै ॥ यातैं ताप्रतिविंवरूपजीवका सोअंतःकरणहीं उपा

परि०

१

॥ २८ ॥



धिहैं ॥ तेअंतःकरण नानाहैं तथापरिच्छिन्नहैं ॥ यातैं तिनअंतःकरणोंविषे प्रतिबिंबरूपतेजीवभी नाना हैं तथापरिच्छिन्नहैं इति ॥ और केईकग्रंथकारतों ऐसेकहेहैं ॥ सोअंतःकरण अज्ञानकाकार्यहोणेतैं अ स्वतंत्रहै ॥ यातैं ताअंतःकरणविषे बिंबत्वप्रतिबिंबत्वरूपतैं जीवपरमात्माकाभेदकपणा संभवतानहीं ॥ यातैं सोअंतःकरण जीवकाउपाधि नहींहै ॥ किंतु स्वतंत्रहोणेतैं सोअज्ञानहीं ताजीवकाउपाधिहै ॥ सो जीवकाउपाधिरूपअज्ञानभी एकनहींहै ॥ किंतु नानाहींहै ॥ ताअज्ञानरूपउपाधिकेनानापणेकरिकै ताअज्ञानविषेप्रतिबिंबरूपजीवभी नानाहींहैं ॥ और ब्रह्मविषेआरोपितहोणेतैं तेअज्ञान परिच्छिन्नहैं ॥ यातैं तिनअज्ञानोंविषेप्रतिबिंबरूप तेजीवभी परिच्छिन्नहींहैं ॥ तथा परस्पर भेदवालेहैं ॥ यातैं पुण्यपा पकर्मकेसुखदुःखरूपफलका व्यतिकरहोवैनहीं ॥ तहां एक्के सुखीहूए वादुःखीहूए जोसर्वोंकूं तासुख की वादुःखकी प्राप्तिहै ताकानाम कर्मफलव्यतिकरहै ॥ सो जैसे एकजीवपक्षविषेप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे इस नानाजीवपक्षविषे प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं तेनानाअज्ञानहीं ताबिंबरूपईश्वरका तथाप्रतिबिंबरूपजीवोंका परस्परभेदकरणेहारा उपाधिहैं ॥ याप्रकारका ताव्याससूत्रकाअर्थ नानाजीववादियोंकेमतविषेसिद्ध होवैहै इति ॥ और केईकग्रंथकारतों यहकहेहैं ॥ ताजीवईश्वरकाभेदकरणेहारा उपाधि स्वतंत्रहोणे तैं अज्ञानहींहै ॥ परंतु सोअज्ञान नानानहींहै ॥ किंतु एकहींहै ॥ तिसएकअज्ञानविषे जोचेतन्यका प्रतिबिंबरूपजीवहै ॥ सोजीवभी ताअज्ञानरूपउपाधिकेएकपणेकरिकै एकहींहै ॥ तथा अपरिच्छिन्नहै ॥ तहां ( अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णां ) यहश्रुतिहीं ताअज्ञानकेएकपणेविषे प्रमाणहै ॥ और ( इंद्रोमाया भिःपुरुषरूपईयते ) इसश्रुतिविषे जोमायावोंकाबहुतपणा कथनकन्याहै ॥ सो तामायारूपअज्ञानके शक्तियोंकेबहुतपणेकूं वा सत्वादिकगुणोंकेबहुतपणेकूं लैकेकथनकन्याहै ॥ यातैं ताश्रुतिकाभीविरोधहो



तत्त्वा०  
॥ २९ ॥

वैनहीं ॥ और ( अजोहोकोछुपमाणोऽनुशेते ) यहश्रुति ताजीवकेएकपणेविषेप्रमाणहै ॥ तथा ( आभासएवच ) इसउक्तसूत्रविषे एकवचनकरिकै सूत्रकारनेंभी ताजीवका एकपणाहीं कथनकन्याहै ॥ यातैं सोजीव एकहीमान्याचाहिये ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जीवकूं जोएकमानोंगे ॥ तों तुमारेमतविषे बंधमोक्षकीव्यवस्था कैसेहोवेंगी ॥ अर्थात् तत्वज्ञानकरिकै केईकजीवतों मुक्तहोवेंहैं ॥ और ताज्ञानकी अप्राप्तिकरिकै केईकजीव बद्धहोवेंहैं ॥ याप्रकारकी बंधमोक्षकीव्यवस्था जैसे नानाजीवपक्षविषे संभवैहै ॥ तैसे एकजीवपक्षविषे साव्यवस्था संभवतीनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ अज्ञानके तथाजीव के एकहूएभी ताएकअज्ञानकेकार्यभूत जेअंतःकरणहैं तेनानाहैं और अंतःकरणविशिष्टचैतन्यकानाम प्रमाताहै ॥ यातैं तिनअंतःकरणोंकेनानाहूए तेप्रमाताभी नानाहींह ॥ तहां तत्वज्ञानकरिकै एकप्रमाताकेमुक्तहूएभी तातत्वज्ञानतैंरहित दूसरेप्रमाता बद्धहीहोवेंहैं ॥ इसप्रकार प्रमातावोंकेभेदकूंअंगीकारकरिकै ताएकजीवपक्षविषेभी साबंधमोक्षकीव्यवस्था संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तुमएकजीववा दीयोंकेमतविषे मोक्ष क्यावस्तुहै ॥ जोकहो अविद्याकीनिवृत्तिहीं मोक्षहै ॥ ताकेविषेभी यहविचारकन्याचाहिये ॥ क्या कार्यअविद्याकीनिवृत्ति मोक्षहै ॥ अथवा मूलाविद्याकीनिवृत्ति मोक्षहै ॥ तहां प्रथमपक्षतों संभवतानहीं ॥ काहेतैं देहादिकोंविषे आत्मत्वादिकबुद्धिरूप जेभ्रांतिज्ञानहैं तिनोंकानाम कार्यअविद्याहै ॥ तिनसकलभ्रांतिज्ञानोंकीनिवृत्तिहींसंभवतीनहीं ॥ और मूलाविद्याकेविद्यमानहूए पुनः तिनभ्रांतिज्ञानोंकीउत्पत्ति अवश्यहोवेंगी ॥ और यत्किंचित्भ्रांतिज्ञानकीनिवृत्तिकूं पुरुषार्थरूपताहींनहींहै ॥ यातैं ताकार्यअविद्याकीनिवृत्तिकूं मोक्षरूपता संभवतीनहीं ॥ और जोऐसाकहो ॥ ताअज्ञानकीजाआवरणशक्तिहै ताकानाम अविद्याहै ॥ तेआवरणशक्तिरूपअविद्या नानहैं ॥ यातैं जिसप्रमा

परि०  
१

॥ २९ ॥



ताकूं तत्वज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसप्रमाताकूं आपणेसंसारकाहेतुभूत ताअविद्याकीनिवृत्तिहीं मुक्ति है ॥ और जिसप्रमाताकूं सोतत्वज्ञान नहींउत्पन्नभयाहै ॥ तिसप्रमाताकूं ताअविद्याकेविद्यमानहूए बंधहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं ताएकजीवपक्षविषेभी साबंधमोक्षकीव्यवस्था संभवैहै ॥ सोयहतुमाराकहणा भी संभवतानहीं ॥ काहेतैं ताअविद्याकूं नानामानिकै जोबंधकाहेतु मानोंगे तों ताअविद्याकेआश्र यभूतजीवोंकाभी भेदहींमानणाहोवैगा ॥ ताकरिकै तुमारेमतविषेभी नानाजीववादकीहीं प्राप्तिहोवै गी ॥ सोतुमारेकूंइष्टनहींहै ॥ किंवा मूलाविद्याकीनिवृत्तिकानाम मोक्षहै ॥ यहदूसरापक्ष जोअंगीका रकरौ ॥ सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं तत्वज्ञानकरिकै ताएकमूलाविद्याकेनिवृत्तहूए सर्वकीमुक्तिहो णीचाहिये ॥ और जोऐसाकहो ॥ एकहींजीवहै इसपक्षविषे सर्वकीमुक्तिहोणीचाहिये यहकहणाहीं विरुद्धहै ॥ सोयहभीकहणासंभवतानहीं ॥ काहेतैं तुमारेमतविषे पूर्वउत्पन्नहूएशुकवामदेवादिकोंकीमु क्ति अंगीकारहै अथवानहीं ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरौ ॥ तों तिनशुकवामदेवादिकोंकेतत्व ज्ञानकरिकै ताएकमूलाविद्याकेनिवृत्तहूए अस्मदादिकोंकूं अवीसंसारकीप्रतीतिनहींहोणीचाहिये ॥ और जोद्वितीयपक्ष अंगीकारकरौ ॥ तों तिनशुकवामदेवादिकोंकेमुक्तिकूंप्रतिपादनकरणेहाराशास्त्र अप्रमाणहोवैगा ॥ और तिनशुकवामदेवादिकमहान्पुरुषोंकीभी जबीमुक्तिनहीभई ॥ तबी अस्मदा दिकोंकूं तामुक्तिकेप्राप्तिकीक्याआशाहोवैगी ॥ किंवा ( यावदधिकारमवस्थितिराधिकारिकाणां ) इससूत्रकेव्याख्यानविषे भगवान्भाष्यकारनैं यहकह्याहै ॥ उपासनाकरिकै इंद्रादिकपदकूंप्राप्तभये जेअ धिकारीपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं कोईवरशापादिकनिमित्तकेवशतैं जन्मांतरकीप्राप्तिकेहूएभी तत्वज्ञानकाप्रति बंधहोतानहीं ॥ यातैं तिनअधिकारीपुरुषोंकूं ताइंद्रादिरूपअधिकारकेअंतविषे मोक्ष अवश्यकरिकैहो



तत्त्वा०

॥ ३० ॥

वैहै ॥ यहसर्वकथन ताएकजीवपक्षविषे मिथ्याहींहोवेंगा ॥ किंवा साक्षात्कारकन्याहै प्रत्यक्अभिन्न  
 ब्रह्म जिसनें ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेशिष्योंकेताई ताब्रह्मकाउपदेशकरैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिस्मृतिवि  
 पेप्रसिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( तद्विज्ञानार्थसगुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिःश्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठं ) अर्थयह ॥ ब्र  
 ह्मकेसाक्षात्कारवासतै सोअधिकारीपुरुष हस्तविषेकिंचित्भेटाकूंलैके श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजावै  
 इति ॥ तहांस्मृति ॥ ( उपदेक्ष्यंतितेज्ञानंज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ) अर्थयह ॥ तत्ववेत्ताज्ञानीपुरुष तुमारेतां  
 ई ज्ञानकाउपदेशकरेंगे इति ॥ तहां एकजीवपक्षविषे साक्षात्कारवालेगुरुकाहींअभावहै ॥ यातैं गुरुशि  
 ष्यकीव्यवस्थाहीं संभवतीनहीं ॥ ताव्यवस्थाकेअभावहूए कोईकूंभी मोक्षकीप्राप्तिनहींहोवेंगी ॥ किंवा  
 ताएकजीवपक्षविषे वेदकेकर्मकांडका तथाज्ञानकांडका भिन्नभिन्नअधिकारी संभवतानहीं ॥ यातैं ता  
 अधिकारीकेअभावतैं ताकर्मज्ञानकांडकूंभी अप्रमाणताहीं प्राप्तहोवेंगी ॥ यातैं अज्ञानभी एकहींहै त  
 थाताअज्ञानउपहितजीवभी एकहींहै यहएकजीवपक्ष समीचीननहींहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ( अ  
 जामेकांलोहितशुक्लकृष्णां ) इत्यादिकश्रुतियोंविषे तथा ( अज्ञानेनावृतंज्ञानं मममायादुरत्यया ) इत्या  
 दिकस्मृतियोंविषे ताअज्ञानका एकपणाहीं निश्चयहोवैहै ॥ यातैं सोअज्ञान एकहींमान्याचाहिये ॥  
 ताअज्ञानकाएकत्वसिद्धहूए ताअज्ञानउपहितजीवभी एकहींमान्याचाहिये ॥ ताएकजीवपक्षविषे स्वप्न  
 केदृष्टांततैं बंधमोक्षादिकसर्वव्यवस्था संभवैहै ॥ सोदिखावैहैं ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे इसस्वप्नद्रष्टापुरुषनें  
 आपणीभ्रांतिकरिकै कल्पनाकन्येजेअनेकप्रमाताहैं ॥ तिनोंविषे किसीप्रमाताकेतों बंधकूंदेखैहै ॥ और  
 किसीप्रमाताकेमुक्तिकूंदेखैहै ॥ ताबंधमोक्षकेदर्शनकरिकै तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं सोबंधमोक्ष होतानहीं ॥  
 तैसे जाग्रतअवस्थाविषेभी ताएकजीवनें कल्पनाकन्येजेअनेकप्रमाताहैं ॥ तिनोंविषे कोईवदहोवैहै ॥

परि०

१

॥ ३० ॥



कोई मुक्त होवै है ॥ तिनों के बंध मोक्ष के दर्शन तैं ता एकजीव कूं सो बंध मोक्ष होतानहीं ॥ या तैं ता एकजीव पक्ष विषे सा बंध मोक्ष व्यवस्था भी संभवै है ॥ इस प्रकार स्वप्न के दृष्टांत करिकै गुरुशिष्यादिक सर्व व्यवस्था जानि लेणी ॥ या तैं इस एकजीव पक्ष विषे ते पूर्व उक्त दोष प्राप्त होवैं नहीं ॥ और ता एकजीव विषे अंतःकरण विशिष्ट अनेक प्रमाता कल्पित हैं ॥ तिन प्रमाता वों विषे कोई प्रमाता सुखी है कोई प्रमाता दुःखी है ॥ या प्रकार तैं सुख दुःख की व्यवस्था भी संभवै है इति ॥ तहां प्रतिबिंबत्व धर्म विशिष्ट चैतन्य कानाम जीव है ॥ और बिंबत्व धर्म विशिष्ट चैतन्य कानाम ईश्वर है ॥ इस उक्त पक्ष विषे अंतःकरणादिरूप उपाधिकृत दोष ता प्रतिबिंब रूप जीव विषे ही वर्त्तें हैं ॥ ता बिंब भूत ईश्वर विषे वर्त्तें ते नहीं ॥ जिस कारण तैं सो उपाधि प्रतिबिंब के पक्ष पाती ही होवै है ॥ बिंब के पक्ष पाती होवैं नहीं ॥ जैसे जलादिक उपाधिके चलनादिक धर्म ता प्रतिबिंब विषे ही प्रतीत होवैं हैं ॥ बिंब विषे प्रतीत होते नहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व अज्ञानादिकों विषे चैतन्य के प्रतिबिंब कूं जीव कहा ॥ सो संभवतानहीं ॥ काहे तैं रूपवान् वस्तु का ही प्रतिबिंब होवै है ॥ रूपरहित वस्तु का प्रतिबिंब होता नहीं ॥ जैसे रूपवान् सूर्य चंद्रादिकों का जलादिकों विषे प्रतिबिंब होवै है ॥ और ब्रह्म तों रूपादिक गुणों तैं रहित है ॥ या तैं ता ब्रह्म का अज्ञान विषे प्रतिबिंब ही संभवतानहीं ॥ और जो यह कहो ॥ जैसे रूपरहित आकाश का जल विषे प्रतिबिंब होवै है ॥ तैसे रूपरहित ब्रह्म का भी ता अज्ञान विषे प्रतिबिंब संभवै है ॥ सो यह कहणा भी संभवतानहीं ॥ काहे तैं रूप तैं रहित होणें तैं ता आकाश का जलादिकों विषे प्रतिबिंब संभवतानहीं ॥ किंतु ता आकाश के आश्रित जे अभ्र प्रभा नक्षत्र आदिक रूपवान् पदार्थ हैं ॥ तिनों का ही जलादिकों विषे प्रतिबिंब पड़े है ॥ और जलादिकों विषे आकाश का प्रतिबिंब है यह जो लोकों कूं अनुभव होवै है सो भ्रम रूप ही है या तैं बिंब प्रतिबिंब भाव करिकै जो ब्रह्म का जीव ईश्वर विभाग पूर्व कहा है सो संभवतानहीं ॥ ॥ समा



तत्त्वा०

॥ ३१ ॥

धान ॥ ॥ रूपवान्वस्तुकाहीं प्रतिबिंबहोवैहै याप्रकारकानियम सर्वत्रसंभवतानहीं ॥ किंतु कोईक स्थलविषे रूपरहितवस्तुकाभी प्रतिबिंब देखणेविषेआवैहै ॥ जैसे रूपादिकगुण रूपतैरहितहोवैहै ॥ तौ भी जपाकुसुमादिकोंकेलोहितादिकरूपोंका स्फटिकादिकोंविषेप्रतिबिंब प्रत्यक्षदेखणेविषेआवैहै ॥ और जोकहो रूपरहितद्रव्यका प्रतिबिंबनहींहोवैहै यहनियम हममानतेहैं ॥ तेरूपादिकगुण द्रव्यरूपनहींहैं ॥ यातैं तिनरूपादिकोंकेप्रतिबिंबहूएभी ताउक्तनियमकाभंग होवैनहीं ॥ सोयहकहणाभीसंभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं रूपरहितआकाशद्रव्यकाभी जलादिकोंविषेप्रतिबिंब देखणेविषेआवैहै ॥ तहां जैसे बाह्य नीलतावाला तथाविशालतावाला आकाश प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे कूपतटाकादिकोंकेस्वल्पजलविषेभी सो नीलताविशालतावालाआकाश प्रतीतहोवैहै ॥ तहां तास्वल्पजलविषे वास्तवतैंतौ सोविशालतादिवा लाआकाशहैनहीं ॥ यातैं ताजलविषेभासमानसोआकाश ताबाह्यआकाशका प्रतिबिंबरूपहींमानणा होवैगा ॥ और इनजलादिकोंविषे यहआकाशकाहींप्रतिबिंबहै याप्रकारकाअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ ताअनुभवका कोईबाधकहैनहीं ॥ यातैं ताअनुभवकूं भ्रमरूपतासंभवतीनहीं ॥ विरोधीज्ञानरूपबाधक केविद्यमानहूएहीं अनुभवकूंभ्रमरूपताहोवैहै ॥ जैसे नेदंरजतं इसविरोधीज्ञानरूपबाधककेहूएहीं शुक्ति विषे इदंरजतं इसअनुभवकूं भ्रमरूपताहोवैहै ॥ तैसे यहआकाशकाप्रतिबिंबनहींहै याप्रकारका विरोधी ज्ञानरूपबाधक तहांहैनहीं ॥ यातैं सोउक्तअनुभव भ्रमरूपनहींहै ॥ इसप्रकार रूपरहितआकाशद्रव्यके प्रतिबिंबकेसिद्धहूए ताब्रह्मका बिंबप्रतिबिंबभावकरिकै सोजीवईश्वरविभाग संभवैहै इति ॥ और रूपर हितद्रव्यका प्रतिबिंबनहींहोवैहै इसअर्थविषे जोतुमारा आग्रहहोवै ॥ तौ हमसिद्धांती ब्रह्मकूं द्रव्यमान तेनहीं ॥ काहेतैं नैयायिकोंने गुणकेआश्रयकूं तथासमवायिकारणकूंहीं द्रव्यमान्याहै ॥ और ( साक्षी

परि०

१

॥ ३१



चेताः केवलो निर्गुणश्च ) यह श्रुति ब्रह्मकूं निर्गुण कहै है ॥ यातैं ता ब्रह्मकूं गुणोंका आश्रयपणा संभवतानहीं ॥ और समवायके अनंगीकारतैं ता ब्रह्मकूं समवायिकारणपणाभी संभवै नहीं ॥ यातैं रूपरहितरूपादिक गुणोंकी न्याई ता ब्रह्मका प्रतिबिंबमानने विषे कोई भी विरोध नहीं है इति ॥ अथवा अज्ञानविषे ब्रह्मके प्रतिबिंबकूं नहीं अंगीकार करिकै भी या प्रकारतैं सो जीव ईश्वरका विभाग बनिसके है ॥ तहां ता अज्ञानरूप अविद्या करिकै विशिष्ट जो चैतन्य है सो तो जीव कहा जावै है और ता अविद्या करिकै उपहित जो चैतन्य है सो ईश्वर कहा जावै है ॥ यह वार्त्ता पूर्व आचार्योंनै भी कही है ॥ तहां श्लोक ॥ ( विबत्वं प्रतिबिबत्वं यथा पूषणिकल्पितं जीवत्वमीश्वरत्वं च तथा ब्रह्मणिकल्पितं ) अर्थ यह ॥ जैसे सूर्यविषे बिंबपणा तथा प्रतिबिंबपणा कल्पित है ॥ तैसे ब्रह्मविषे जीवपणा तथा ईश्वरपणा कल्पित है इति ॥ और केईक ग्रंथकारतों नाना अज्ञानोंकूं अंगीकार करिकै या प्रकारतैं ता जीव ईश्वरका विभाग वर्णन करे हैं ॥ जैसे अनेक वृक्षोंका जो समूह है सो वन कहा जावै है ॥ तहां सो वनतों समष्टि कहा जावै है ॥ और प्रत्येक वृक्ष व्यष्टि कहा जावै है ॥ तैसे तिन नाना अज्ञानोंका जो समूह है सो तो समष्टि कहा जावै है ॥ और प्रत्येक अज्ञान व्यष्टि कहा जावै है ॥ तहां ता समष्टि अज्ञान उपहित चैतन्यतों ईश्वर कहा जावै है ॥ और ता व्यष्टि अज्ञान उपहित चैतन्य जीव कहा जावै है ॥ ते अज्ञान नाना हैं ॥ यातैं ते जीव भी नाना हैं ॥ तहां इस मतवालेका यह अभिप्राय है ॥ श्रुति स्मृति आदिक शास्त्रोंविषे शुक वामदेवादिकोंका मोक्ष कथन कन्या है ॥ और अस्मदादिक जीवोंकूं इदानीं कालविषे संसारकी प्रतीति होवै है ॥ और प्रत्येक पुरुषविषे । अहं अज्ञः न जानामि । या प्रकारका भिन्न भिन्न अज्ञान विषयक अनुभव भी होवै है ॥ और ( इंद्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते ) इस श्रुतिविषे भी ता मायारूप अज्ञानका नाना पणाहीं कथन कन्या है ॥ और इस श्रुतिविषे स्थित मायापदके मुख्य अर्थ



तत्त्वा०

॥ ३२ ॥

कापरित्यागकरिकै मायाकी शक्तियोंविषे वा सत्वादिकगुणोंविषे तामायापदकीलक्षणाकरणमें कोईभी प्रमाणनहींहै ॥ यातें तेअज्ञान नानाहींमाननेयोग्यहैं ॥ और ( अजामेकां ) इत्यादिकउक्तश्रुतिस्मृति योंविषे जोअज्ञानका एकपणा कथनकन्याहै ॥ सोतों ताअज्ञानसमूहकेएकत्वकूलैकेकथनकन्याहै ॥ यातें तिनश्रुतिस्मृतिवचनोंकाभी विरोधहोवैनहीं ॥ इसप्रकार अज्ञानकेनानात्वकरिकै जीवकेनानात्व सिद्धहूए जिसजीवकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसजीवकूंहीं ताआपणेअज्ञानकीनिवृत्तिरूपमो क्ष होवैहै ॥ ताब्रह्मसाक्षात्कारतैरहितपुरुषोंकूं ताआपणेआपणेअज्ञानकेवशतें संसाररूपबंधहींरहेहै ॥ इसप्रकारतें बंधमोक्षव्यवस्थाभी इसनानाजीवपक्षविषे भलीप्रकारतेंसंभवैहै ॥ ताएकअज्ञानएकजीवपक्ष विषे साबंधमोक्षकीव्यवस्थासंभवतीनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अज्ञानकेभेदकरिकै जोजीवोंकाभेद अं गीकारकरौंगे ॥ तों जीवजीवकेप्रति प्रपंचकाभीभेदहींहोवैंगा ॥ जोकदाचित् इसअर्थविषे तुम इष्टाप त्तिकरौंगे ॥ तों जोघट तुमनै अनुभवकन्याहै सोईहींघट हमनैभी अनुभवकन्याहै याप्रकारकी घटादि कप्रपंचकेएकताकूंविषयकरणेहारी प्रत्यभिज्ञाका विरोधप्राप्तहोवैंगा ॥ जिसकारणतें अन्यकेअज्ञानकल्पितप्रपंचका अन्यकूंप्रत्यक्ष संभवतानहीं ॥ और बाधककेअभावहूए ताप्रत्यभिज्ञाकूं भ्रमरूपताभीसंभव तीनहीं ॥ और एकहींपरमेश्वर सर्वजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहै इससर्वशास्त्रकेसिद्धांतकाभी विरोधहोवैंगा ॥ किंवा इसउक्तदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै जोऐसामानोंगे ॥ समष्टिअज्ञानउपहितचैतन्य रूपईश्वरकरिकै रच्याहूआयहप्रपंच सर्वजीवोंकेप्रति साधारणहै ॥ तों अनिमोक्ष होवैंगा ॥ अर्थात् किसीभीजीवका मोक्षनहींहोवैंगा ॥ सोदिखावैहैं ॥ तहां निर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिकानाम मोक्षहै ॥ और नानाअज्ञानपक्षविषे एकजीवकेतत्त्वज्ञानकरिकै एकअज्ञानकेनिवृत्तहूएभी तिनसर्वअज्ञानोंकीनि

परि०

१

॥ ३२ ॥



वृत्ति होवैंगीनहीं ॥ और तिनअज्ञानोंकेविद्यमानहूए ईश्वरका तथाजगत्काभी बाधहोवैंगानहीं ॥ ताअज्ञानईश्वरजगत्केविद्यमानहूए ताब्रह्मविषे निर्गुणपणाहीं संभवतानहीं ॥ यातैं सोनिर्गुणब्रह्मकी प्राप्तिरूपमोक्ष किसीभीजीवकूंनहींहोवैंगा ॥ किंवा सिद्धांतविषे अद्वितीयब्रह्मकेज्ञानतैंहीं मोक्षमान्या है ॥ सोअद्वितीयब्रह्मकाज्ञान तानानाजीवपक्षविषे संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं ताज्ञानकालविषेभी तामुक्तपुरुषतैंभिन्न दूसरेजीव तथाईश्वर तथाअज्ञान तथाजगत् विद्यमानहींहैं ॥ तिनोंकरिकै सोब्रह्म सद्वितीयहींहै ॥ याकारणतैंभी किसीजीवकामोक्ष नहींहोवैंगा ॥ किंवा श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकीप्रमाण तातैं जोकदाचित् जिसीकिसीप्रकारकरिकै ज्ञानतैंमोक्षकीप्राप्तिका उपपादनभीकरोंगे ॥ तोंभी सगु णब्रह्मकीप्राप्तिहीं मोक्षरूपसिद्धहोवैंगी ॥ निर्गुणब्रह्मकीप्राप्तिकूं मोक्षरूपतासिद्धनहींहोवैंगी ॥ सोअत्यंत अनिष्टहै ॥ काहेतैं ( अनंतरोऽबाह्यःकृत्स्नःप्रज्ञानघनएव । अस्थूलमनण्वहस्वमदीर्घ । यत्रत्वस्यसर्व मात्मैवाभूत्तत्केनकंपश्येत् ) इत्यादिकश्रुतियोंविषे निर्गुणब्रह्मकूंहीं मोक्षरूपकह्याहै ॥ तिनसर्वश्रुतियों का विरोधहोवैंगा ॥ यातैं नानाअज्ञानोंकूंअंगीकारकरिकै नानाजीवमानणे **अयुक्तहैं** ॥ ॥ समा धान ॥ ॥ अज्ञानकेभेदकरिकै जीवोंकाभेद अवश्यमान्याचाहिये ॥ अन्यथा बंधमोक्षशास्त्रकी अप्र माणताहींहोवैंगी ॥ और इसनानाजीवपक्षविषे पूर्वकथनकन्याजो प्रत्येकजीवकेप्रति प्रपंचकाभेद सोह मारेकूं अंगीकारहींहै ॥ अर्थात् जीवजीवकेप्रति सोप्रपंच भिन्नभिन्नहींहै ॥ और प्रपंचकेनानापणेवि षे जोपूर्व प्रत्यभिज्ञाकाविरोध कह्याथा ॥ सोभीसंभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं साप्रत्यभिज्ञा भ्रमरूपहीं है सोदिखावैहैं ॥ जहां एकहींशुक्तिविषे दशपुरुषोंकूं रजतकाभ्रमहोवैहै ॥ तहां एकएकपुरुषकेअज्ञानकरि कैकल्पित सोरजत भिन्नभिन्नहींहोवैहै ॥ एकरजतहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् तिनदशपुरुषोंकेभ्रमका ए



तत्त्वा०

॥ ३३ ॥

कहीं रजत विषय होवै ॥ तौ एक पुरुष कूं ता शक्ति रूप अधिष्ठान के ज्ञान करिकै तारजत भ्रम के निवृत्त हुए ता अधिष्ठान ज्ञान तैरहित दूसरे पुरुषों कूं सोरजत नहीं प्रतीत होना चाहिये ॥ और तहां दूसरे पुरुषों कूं तौ सोरजत प्रतीत होवै है ॥ या तै सोरजत एक नहीं है ॥ किंतु तिन दश पुरुषों के प्रत्येक अज्ञान करिकै कल्पित दश रजत तहां उत्पन्न होवै हैं ॥ और एक पुरुष के अज्ञान करिकै कल्पित रजत का अन्य पुरुष कूं प्रत्यक्ष होता नहीं ॥ तथापि तिन दश पुरुषों कूं किसी प्रसंग पाइ कै जोरजत तुम नैं अनुभव कन्याथा सोई ही रजत हम नैं भी अनुभव कन्याथा या प्रकार की भ्रम रूप प्रत्यभिज्ञा जैसे उत्पन्न होवै है ॥ तैसे प्रसंग विषे भी प्रत्येक जीव के अज्ञान कल्पित प्रपंच के भेद हुए भी तथा अन्य के अज्ञान कल्पित प्रपंच का अन्य कूं अप्रत्यक्ष हुए भी जो घट तुम नैं अनुभव कन्या है सोई ही घट हम नैं भी अनुभव कन्या है या प्रकार की भ्रम रूप प्रत्यभिज्ञा संभवै है ॥ या तै जीव जीव प्रति प्रपंच के भेद मानने विषे ता प्रत्यभिज्ञा का विरोध होवै नहीं ॥ अथवा तिन जीवों के नाना हुए भी समष्टि अज्ञान उपहित चैतन्य रूप ईश्वर करिकै रचित यह प्रपंच तिन सर्व जीवों के प्रति एक ही साधारण है ॥ या तै ता पूर्व उक्त प्रत्यभिज्ञा का भी विरोध होवै नहीं ॥ तथा एक ही परमेश्वर सर्व जगत् के उत्पत्ति स्थिति लय का कारण है इस सर्व शास्त्र के सिद्धांत का भी विरोध होवै नहीं ॥ तथा जीव जीव प्रति प्रपंच के भेद मानने में जो कल्पना गौरव रूप दोष प्राप्त होता था सो भी अबी प्राप्त होवै नहीं ॥ और श्रुति आचार्य के प्रसाद तै उत्पन्न भया जो अहं ब्रह्मास्मि या प्रकार का ब्रह्म ज्ञान है ॥ ता ब्रह्म ज्ञान करिकै इस अधिकारी पुरुष कूं आपने आपने अज्ञान के निवृत्त हुए तिस अज्ञान के कार्य भूत लिंग शरीरादिकों की निवृत्ति तै निर्गुण ब्रह्म भाव की प्राप्ति रूप मोक्ष भी संभवै है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तानाना जीव पक्ष विषे ता मुक्त पुरुष तै भिन्न दूसरे जीव तथा ईश्वर तथा जगत् विद्यमान ही है ॥ या तै मैं मुक्त हूं यह अन्य जीव बद्ध हैं यह अन्य प्रपंच है यह अन्य ईश्वर है या प्रकार की भे

परि०

१

॥ ३३ ॥



दृष्टि तामुक्तपुरुषकूं अवश्य करिके होवेंगी ॥ ताभेददृष्टिके विद्यमान हूँ अद्वितीयब्रह्मका साक्षात्कार ही नहीं होवेंगा ॥ तासाक्षात्कारके अभाव हूँ निर्गुणब्रह्मभावकी प्राप्तिरूपमोक्ष ही संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ (इदं सर्वं यदयमात्मा वाचारंभणं विकारो नामधेयं मायामात्रमिदं द्वैतमद्वैतं परमार्थतः) इत्यादिक श्रुतियोंके विचार करिके ता अधिकारी पुरुषनें अज्ञानादिक सर्वजडप्रपंचका ब्रह्मविषे कल्पितपणानि श्रय करिके मिथ्यापणा हीं निश्चय कन्या है ॥ और मिथ्यावस्तु द्वैतभाव कूं करता नहीं ॥ यातें ता अधिकारी पुरुषकूं अद्वितीयब्रह्मका साक्षात्कार संभवै है ॥ तासाक्षात्कार करिके तिस विद्वानपुरुषकूं ब्रह्मभावकी प्राप्तिरूपमोक्ष संभवै है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ इस नानाजीवपक्षविषे आत्मज्ञान करिके आपणे अज्ञानकी निवृत्ति हूँ भी अन्यजीवोंके अज्ञानके विद्यमान हूँ ब्रह्मविषे ईश्वरपणे की निवृत्ति नहीं होवेंगी ॥ यातें इस पुरुषकूं ज्ञान करिके सगुणब्रह्मभावकी हीं प्राप्ति होवेंगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ लोकविषे भी अन्यवस्तुके ज्ञानतें अन्यवस्तुकी प्राप्ति होती नहीं ॥ जैसे शुक्तिके ज्ञानतें इस पुरुषकूं रजतकी प्राप्ति होती नहीं ॥ किंतु ताशुक्ति की हीं प्राप्ति होवै है ॥ तैसे गुरुशास्त्रके उपदेशतें इस अधिकारी पुरुषकूं निर्गुणब्रह्मका हीं ज्ञान भया है ॥ सगुणब्रह्मका ज्ञान भयानहीं ॥ यातें तानिर्गुणब्रह्मके ज्ञानतें इस तत्त्ववेत्ता पुरुषकूं तानिर्गुणब्रह्मकी हीं प्राप्ति होवै है ॥ मायामय सगुणब्रह्मकी प्राप्ति होवै नहीं ॥ जैसे शुक्तिविषे अन्य पुरुषकूं रजतभ्रांतिकालविषे भी दूसरा विशेष दर्शी पुरुष ताशुक्तिके ज्ञानतें ताशुक्ति कूं हीं प्राप्त होवै है ॥ तारजत कूं प्राप्त होवै नहीं ॥ जिस कारणतें ताशुक्तिविषे सो रजत वास्तवतें है नहीं ॥ और अन्य पुरुषके अज्ञानकल्पित रजत कूं अन्य पुरुषके प्रत्यक्ष ज्ञानकी विषयता होती नहीं ॥ तैसे अन्य अज्ञानी पुरुषों कूं आपणे आपणे अज्ञानके वशतें ताब्रह्मविषे जीव ईश्वर जगत् रूपभ्रांतिके विद्यमान कालविषे भी श्रुति आचार्यके प्रसादतें दूसरा विशेष दर्शी पुरुष मैं ब्रह्म हूं इस प्रकारके अ



तत्त्वा०

॥ ३४ ॥

द्वितीयब्रह्मकेसाक्षात्कारतैं ताआनंदएकरसअद्वितीयनिर्विशेषब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ तासगुणईश्वरकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं सोसगुणईश्वर मायामयहोणेतैं तानिर्गुणब्रह्मतैंभिन्ननहींहै ॥ और भ्रांतिकरिकैदेख्याहूआपदार्थ वास्तवतैंहोतानहीं ॥ जैसे भ्रांतिकरिकैदेख्याहूआ श्रुक्तिविषेरजत ताश्रुक्तिविषे वास्तवतैंहोतानहीं ॥ तैसे ताअद्वितीयनिर्गुणब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैकल्पित सोजीवईश्वरजगत्भावभी वास्तवतैं ताब्रह्मविषेहैनहीं ॥ यातैं इसनानाजीवपक्षविषे सर्वजीवोंकेप्रति साधारणप्रपंचके वा असाधारणप्रपंचके अंगीकारकीयेहूएभी सोनिर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्ष बनिसकेहै इति ॥ और केईकग्रंथकारतों याप्रकारतैं ताजीवईश्वरकाविभाग वर्णनकरैहैं ॥ पूर्वकथनकन्याजो सर्वजगत्काकारणभूतअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानउपहितजोचैतन्यहै अर्थात् ताअज्ञानविषेप्रतिबिंबितजोचैतन्यहै सोतों ईश्वरकह्याजावैहै ॥ और ताअज्ञानकेकार्यभूतजोअंतःकरणहैं ॥ ताअंतःकरणउपहितचैतन्य जीवकह्याजावैहै ॥ अर्थात् ताअंतःकरणविषेप्रतिबिंबितचैतन्य जीवकह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( कार्योपाधिरयंजीवःकारणोपाधिरीश्वरः ) अर्थयह ॥ अंतःकरणरूपकार्यउपाधिवालाचैतन्य जीवकह्याजावैहै ॥ और अज्ञानरूपकारणउपाधिवालाचैतन्य ईश्वरकह्याजावैहै इति ॥ किंवा ( स्वमपीतोभवति ) इसश्रुतिनैं सुष्ठुसि विषे जीवका ब्रह्मविषे औपाधिकलय कथनकन्याहै ॥ अर्थात् उपाधिकेलयप्रयुक्तलय कथनकन्याहै ॥ तहां ताजीवका जोअंतःकरण उपाधिमानिये ॥ तों ताअंतःकरणरूपउपाधिकेलयकरिकै ताजीवका औपाधिकलयसंभवैहै ॥ और ताजीवका जोअविद्याउपाधिमानिये ॥ तों ताअविद्याका सुष्ठुसि विषेलयहोतानहीं ॥ यातैं सुष्ठुसि विषे जीवकेऔपाधिकलयकूंकथनकरणेहारा सोश्रुतिवचन असंगतहोवैंगा ॥ यातैं ताश्रुतिवचनतैंभी अंतःकरणहीं जीवकाउपाधि सिद्धहोवैहै ॥ इसपक्षविषेभी अंतःकरणरूपउपा

परि०

१

॥ ३४ ॥



धियोंके नानापणेकरिकै तथापरिच्छिन्नपणेकरिकै तेजीवभी नानाहैं तथापरिच्छिन्नहैं इति ॥ तहां जीव ईश्वरकेस्वरूपनिर्णयविषे पूर्वकथनकन्येजेपंचपक्ष तिनोंविषे मायाउपहितचैतन्य जगत्काकारणईश्वर है यहअर्थ तिनसर्वग्रंथकारोंकूंसंमतहै ॥ अर्थात् अज्ञानकेएकत्वनानात्वकरिकै अथवा अंतःकरणोंकेना नात्वकरिकै जीवकेएकत्वनानात्वविषे ग्रंथकारोंकेविवादहूएभी मायाउपहितचैतन्यईश्वरहै इसअर्थविषे कोईभीग्रंथकारका विवादनहींहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ईश्वरविषेविवादकेअभावहूएभी जीवकेएकत्वनानात्वविषे ग्रंथकारोंका परस्परविवाद देखनेविषेआवैहै ॥ तिनपक्षोंविषे कौनपक्ष ग्रहणकरणेयोग्यहै ॥ और कौनपक्ष परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ ॥ समाधान ॥ सर्वव्यवहारोंकूं मायामयहोणेतैं तेसर्वपक्ष ग्रहणकरणेयोग्यहैं ॥ तथा तेसर्वपक्ष परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जबी तेसर्वपक्ष परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ तबी तिनसर्वपक्षोंका त्यागकरणाहींउचितहै ॥ कोईभीपक्ष ग्रहणकरणेयोग्यनहीं ॥

॥ समाधान ॥ ॥ अध्यारोप अपवाद इनदोनोंकरिकैहीं अद्वितीयब्रह्मकाज्ञानहोवैहै ॥ ताअध्यारोपअपवादतैंविना ताब्रह्मकाज्ञान होतानहीं ॥ तहां वास्तवतैं द्वैतप्रपंचतैंरहितब्रह्मविषे जोद्वैतप्रपंचकाआरोपहै ताकानाम अध्यारोपहै ॥ और ताआरोपितप्रपंचका जो (नेहनानास्तिकिंचन) इत्यादिकश्रुतिकरिकैनिषेधहै ताकानाम अपवादहै ॥ ताअध्यारोपअपवादकीसिद्धिवासतैं तेसर्वपक्ष ग्रहणकरणेयोग्यहींहैं ॥ परंतु ताकेविषेभी इतनीविशेषताहै ॥ पूर्वउक्त जीवके एकत्वपक्षविषे वा नानात्वपक्षविषे जोपक्ष जिसमुमुक्षुकेमनकूं भावताहोवै ॥ तिसपक्षकूं सोमुमुक्षु अंगीकारकरिकै प्रत्यक्आत्माकाविवेचनकरिकै अर्थात् अन्नमयादिकपंचकोशोंतैंआत्माकूंभिन्नकरिकै तिसप्रत्यक्आत्माकेब्रह्मरूपताकूं साक्षात्कारकरै ॥ अर्थात् अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेसाक्षात्कारकूंसंपादनकरै ॥ ताब्रह्मसाक्षात्कारकूं



तत्त्वा०

॥ ३५ ॥

संपादनकरिकै ताजीवके एकत्वविषे तथानानात्वविषे केवल विवादमात्रकूंहींनहींकरै ॥ जिसकारणतैं  
 सर्वमतोंविषे दूषण तथाभूषण तुल्यहींहोवैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ इसमुमुक्षुजनकूं सोप्रत्यक्आत्माकाबोध  
 जिसप्रकारकरिकैहोवै ॥ सोईहींप्रकार इसमुमुक्षुजनकूं संपादनकरणे योग्यहै ॥ सोईहीं शास्त्रकाअर्थ  
 है ॥ यहवार्त्ता श्रीवार्त्तिकाचार्यनैभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( ययाययाभवेत्पुंसांव्युत्पत्तिःप्रत्यगात्मनि  
 सासैवप्रक्रियेहस्यात्साध्वीसाचानवस्थिता ) अर्थयह ॥ इनअधिकारीपुरुषोंकूं जिसजिसप्रक्रियाकरिकै  
 प्रत्यक्आत्मविषयकबोधहोवै ॥ सासाप्रक्रियाहीं इसवेदांतशास्त्रविषे निर्दोष तथागुणभूत जानणी  
 इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व मायाउपहिततत्पदार्थईश्वरकूं जगत्केजन्मादिकोंकाकारणपणाकह्या ॥  
 सोकारणपणाभी उपादानतारूपकरिकै तथाकर्तृत्वरूपकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां ताईश्वरकूं  
 किसरूपकरिकैउपादानपणाहै तथाकिसरूपकरिकैकर्त्तापणाहै ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहूए ॥ अब सोदो  
 नोंप्रकारकाकारणपणा यथाक्रमतैंनिरूपणकरैहैं ॥ तहां सोईश्वर ज्ञानशक्तिवालेअज्ञानउपहितस्वरूप  
 करिकैतों जगत्काकर्त्ताहोवैहै ॥ ईहां यहतात्पर्यहै ॥ ताज्ञानशक्तिवालेअज्ञानरूपउपाधितैंविना  
 शुद्धब्रह्मकूं असंगपणेकरिकै कर्त्तापणासंभवतानहीं ॥ काहेतैं कार्यकाजोउपादानकारणहै ताउपा  
 दानकारणविषयक जोअपरोक्षज्ञानहै तथाइच्छारूपचिकीर्षाहै तथाप्रयत्नरूपकृतिहै ॥ ताज्ञानचिकी  
 र्षाकृतितीनोंवालाजोहोवैहै ॥ सो कर्त्ताकह्याजावैहै ॥ यहकर्त्ताकालक्षण पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ सोइ  
 सप्रकारकाकर्त्तापणा शुद्धब्रह्मविषे संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं ( असंगोह्ययंपुरुषः । असंगोनहिस  
 जते ) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै ताब्रह्मकाअसंगपणाहीं जान्याजावैहै ॥ ऐसेअसंगब्रह्मविषे तेज्ञानइ  
 च्छाकृति संभवतेनहीं ॥ और ताअज्ञानउपहितईश्वरविषेतों तेज्ञानइच्छाप्रयत्न संभवैहैं ॥ यातैं ताउक्त

परि०

१

॥ ३५ ॥



ईश्वरकूँहीं सोजगत्काकर्त्तापणा सिद्धहोवैहै ॥ और सोईहींईश्वर विक्षेपादिशक्तिवालेअज्ञानउपहितरूप करिकै जगत्काउपादानकारणहोवैहै ॥ तहां अज्ञानकी ज्ञानशक्ति विक्षेपशक्ति आवरणशक्ति इन तीनोंकास्वरूप पूर्वनिरूपणकरिआयेहैं ॥ सोईहांभीजानिलेणा ॥ इसप्रकार एकहींब्रह्मकूं जगत्का उपादानपणा तथाकर्त्तापणा संभवैहै ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे ऊर्णनाभिनामाजंतुविशेष तंतुकूंउत्पन्नकरे है ॥ तातंतुरूपकार्यकेप्रति सोऊर्णनाभि आपणेशरीरकीअपेक्षाकरिकैतों उपादानकारणहोवैहै ॥ और आपणेचेतनतारूपकरिकै कर्त्तारूपनिमित्तकारणहोवैहै ॥ तैसे पूर्वउक्तरीतिसैं सोएकहींब्रह्म जगत्का उपादानकारण तथाकर्त्तारूपनिमित्तकारण होवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताएकहींब्रह्मकूं जगत्का उपादानपणा तथानिमित्तपणाहै इसअर्थविषे कौनप्रमाणहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ब्रह्मविषे सोअभिन्ननिमित्तोपादानपणा साक्षात्श्रुतिप्रमाणकरिकैहींसिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( यथोर्णनाभिःसृजतेगृह्णाति च । यथापृथिव्यामौषधयःसंभवन्ति यथासतःपुरुषात्केशलोमानि तथाऽक्षरात्संभवतीहविश्वं । यथाऽग्नेःक्षुद्राविस्फुलिंगाव्युच्चरन्ति एवमेवास्मादात्मनःसर्वेप्राणाः । यःसर्वज्ञःसविश्वकृत्सहिसर्वस्यकर्त्ता ) अर्थयह ॥ जैसे ऊर्णनाभिजंतु आपणेतैं तंतुवोंकूंउत्पन्नकरेहै ॥ तथा आपणेविषेहीं तिनतंतुवोंकूंलयकरेहै ॥ तैसे सोब्रह्मभी आपणेतैंहीं इसजगत्कूंउत्पन्नकरेहै ॥ तथा आपणेविषेहींलयकरेहै ॥ और जैसे पृथिवीतैं नानाप्रकारकेऔषध उत्पन्नहोवैहैं ॥ और जैसे इसपुरुषतैं केशलोम उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे अक्षरब्रह्मतैं यहविश्व उत्पन्नहोवैहै ॥ और जैसे प्रज्वलितअग्नितैं क्षुद्रविस्फुलिंग उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे इसआत्मातैं सर्वप्राणउत्पन्नहोवैहैं ॥ और जोपरमेश्वर सर्वज्ञहै ॥ सोपरमेश्वरहीं विश्वकूंकरणेहाराहै ॥ और सोपरमेश्वरहीं सर्वकाकर्त्ताहै इति ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतियां ताब्रह्मकूं जगत्का अभिन्न निमित्तउपादानका



तत्त्वा०

॥ ३६ ॥

रण कहेहैं ॥ तथा ( अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ) इत्यादिकस्मृतिभी तिसउक्त अर्थ कूंकथन करे है ॥ यातैं ताएकहीं ब्रह्म कूं जगत्का उपादान पणा तथा कर्त्ता पणा संभवै है ॥ किंवा इसउक्त ईश्वर कूं जो सर्वज्ञ नही मानिये ॥ तौ ताईश्वर कूं सर्वजगत्का कर्त्ता पणा ही नहीं संभवैगा ॥ और तेउक्त श्रुतियां ताईश्वर कूं सर्वजगत्का कर्त्ता कहेहैं ॥ यातैं ताईश्वर कूं सर्वज्ञ अवश्य मान्या चाहिये ॥ सोईश्वर का सर्वज्ञ पणा श्रुति प्रमाण करिकै भी सिद्ध है ॥ तहां श्रुति ॥ ( यः सर्वज्ञः सर्ववित् यस्य ज्ञानमयं तपः ) अर्थ यह ॥ जोईश्वर सर्वज्ञ है अर्थात् सामान्य रूपतैं सर्वजगत् कूं जानने हारा है ॥ तथा जोईश्वर सर्ववित् है अर्थात् विशेष रूपतैं सर्वजगत् कूं जानने हारा है ॥ और जिसईश्वर का सर्वजगत् विषयक ज्ञानमय ही तप है इति ॥ ऐसे सर्वज्ञ ईश्वर कूं सर्वजगत्का कर्त्ता पणा संभवै है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पुराणादिकों विषेतों ब्रह्मा विष्णु महेश इनती नों तैं ही जगत्की उत्पत्ति स्थिति लय कथन कन्या है ॥ और तुमनैं ईहां माया उपहित परमेश्वर तैं ही जगत्की उत्पत्ति स्थिति लय कथन कन्या है ॥ यातैं तिन पुराणादिकों के वचनों का विरोध प्राप्त होवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यहउक्त माया उपहित परमेश्वर ही ब्रह्मा विष्णु महेश इनतीन रूपों कूं प्राप्त होवै है ॥ सो प्रकार दिखावैहैं ॥ पूर्वउक्त माया विषे ह्याहू आजो निरतिशय सत्व गुण है ॥ सो सत्व गुण ता परमेश्वर की इच्छा करिकै लोकों के अनुग्रह वासतैं ब्रह्मा विष्णु महेश इनतीन मूर्ति आकार करिकै परिणाम कूं प्राप्त होवै है ॥ तहां दंडक मंडल कूं धारण करने हारी चतुर्मुख मूर्ति करिकै उपहित हूआ सो परमेश्वर जगत्का स्रष्टा ब्रह्मा होवै है ॥ और शंख चक्र गदा पद्म यह चारोहैं हस्त विषे जिसके ऐसी चतुर्भुज मूर्ति करिकै उपहित हूआ सो परमेश्वर जगत्के पालन करने हारा विष्णु होवै है ॥ और तीनहैं नेत्र जिसके तथा त्रिशूल है हस्त विषे जिसके ऐसी मूर्ति करिकै उपहित हूआ सो परमेश्वर जगत्का संहार कर्त्ता महेश्वर होवै है ॥ इस प्रकार

परि०

१

॥ ३६ ॥



सो एकपरमेश्वरही ब्रह्माविष्णुमहेशरूपहोवैहै ॥ तहाश्रुति ॥ ( सत्रह्मासशिवःसेंद्रःसोऽक्षरःपरमः स्वराट्स एवविष्णुः ) अर्थयह ॥ सोमायाउपहितपरमेश्वरही ब्रह्मारूपहै तथाशिवरूपहै तथाइंद्ररूपहै तथाविष्णु रूपहै इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ पूर्वविद्वान्आचार्योंनैभी कथनकन्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( एकैवमूर्ति विभिदेविधासौ सामान्यमेषांप्रथमाऽवत्वं हरेर्हरस्तस्यहरिःकदाचिद्वेधातयोस्तावपिधातुराद्यौ ) अर्थ यह ॥ साएकहीपरमेश्वरमूर्ति ब्रह्मा विष्णु महेश इसतीनप्रकारकेभेदकंप्राप्तहोवैहै ॥ और इनतीनोंका प्रथमपणा तथापश्चात्पणाभी समानहीहोवैहै ॥ तहां कोईकालविषेतों विष्णुका महेश आदिहोवैहै ॥ और कोईकालविषे तामहेशका विष्णु आदिहोवैहै ॥ और कोईकालविषे ताविष्णुमहेशदोनोंका ब्रह्मा आदिहोवैहै ॥ और कोईकालविषे तेदोनों ब्रह्माका आदिहोवैहैं इति ॥ तहां ब्रह्मा विष्णु शिव यह तीनोंदेव अधिकारीजनोंने आपणीआपणीभक्तिकेअनुसार उपासनाकरणेयोग्यहैं ॥ और केईकग्रंथ कारतों ऐसेकहेहैं ॥ जगत्कास्रष्टा हिरण्यगर्भरूपब्रह्मा ईश्वरनहींहै ॥ किंतु जीवविशेषहै ॥ तथा अंत र्यामीपरमेश्वरकरिकैआविष्टहै ॥ तथा समष्टिलिंगशरीरकाअभिमानहीहै ॥ तथा सत्यलोकविषेनिवासक रणेहाराहै ॥ ऐसेहिरण्यगर्भकीजीवरूपता ( सवैशरीरीप्रथमः ) इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरिकैहींसिद्धहै ॥ और शिव विष्णु यहदोमूर्तितों तामायाकेशुद्धसत्वगुणकापरिणामहोणेतें ईश्वररूपहैं ॥ यहवार्ता महा भारतविषेभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( रुद्रोनारायणश्चैवेत्येकंसत्वंद्विधाकृतं लोकेचरतिकौंतेयव्यक्तिस्थं सर्वकर्मसु ) अर्थयह ॥ हेकौंतेय तापरमेश्वरने आपणीमायाका एकहीशुद्धसत्वगुण रुद्र नारायण इस रूपकरिकै दोप्रकारकाकन्याहै इति ॥ तिनदोनोंविषेभी विष्णुकीभक्तितों मोक्षकेप्रति अंतरंगसाधन है ॥ और शिवादिकोंकीभक्तितों किंचित्व्यवधानकरिकै मोक्षकासाधनहै ॥ जिसकारणतें सत्वगुण



तत्त्वा०

॥ ३७ ॥

काप्रवर्त्तकपणा विष्णुकुंहींहै ॥ यहवार्त्ता पुराणविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( आरोग्यंभास्करादिच्छे  
च्छ्रियमिच्छेदुताशनात् ज्ञानंमहेश्वरादिच्छेन्मोक्षमिच्छेज्जनार्दनात् ) अर्थयह ॥ यहपुरुष सूर्यदेवतातैंतों  
अरोगताकूं मागे ॥ अर्थात् अरोगताकीप्राप्तिवासतैं सूर्यदेवताकीउपासनाकरै ॥ इसप्रकारकाअर्थ आ  
गेभीजानिलेणा ॥ और अग्निदेवतातैं संपदाकूंमागे ॥ और महेश्वरतैं ज्ञानकूंमागे ॥ औ विष्णुतैं मो  
क्षकूंमागे इति ॥ इहां केईकशैवमतवालेतों यहकहेहैं ॥ चंद्रमाहैशिरकाभूषण जिसका तथानीलकंठ त्रि  
नयन उमासहित ऐसीजा शुद्धसत्वमूर्त्तिहै ॥ तामूर्त्तिकरिकैउपहितहूआ सोमायाउपहितपरमेश्वर परम  
शिवहोवैहै ॥ सोपरमशिवहीं मुमुक्षुजनोंने उपासनाकरणेयोग्यहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( उमासहायंपरमेश्वरं  
प्रभुं त्रिलोचनंनीलकंठंप्रशांतं ध्यात्वामुनिर्गच्छतिभूतयोनिं समस्तसाक्षितमसःपरस्तात् ) अर्थयह ॥  
जोपरमशिव उमासहितहै तथापरमईश्वरहै तथासमर्थहै तथातीनलोचनवालाहै तथानीलकंठहै तथाअति  
शांतस्वभावहै ॥ ऐसेपरमशिवकाध्यानकरिकै यहमुमुक्षुजन परब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जोपरब्रह्म मायाकेसं  
बंधतैं सर्वभूतोंकाकारणहै ॥ तथा सर्वकासाक्षीहै ॥ और वास्तवतैं ताअज्ञानरूपतमतैंपरहै इति ॥ ति  
सपरमशिवकीहीं ब्रह्मा विष्णु महेश यहतीनों विभूतिहैं ॥ तहां ( सब्रह्मासशिवःसेंद्रःसोऽक्षरःपरमःस्व  
राट् ) इत्यादिकश्रुति ब्रह्मा विष्णु महेश इनतीनोंकूं तापरमशिवकीहींविभूतिरूपता कथनकरेहै ॥ त  
था पुराणविषेभी यहवार्त्ताकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( यस्याज्ञयाजगत्स्रष्टाविरंचिःपालकोहरिः संहर्त्ताका  
लरुद्राख्योनमस्तस्मैपिनाकिने ) अर्थयह ॥ जिसपरमशिवकीआज्ञाकरिकै ब्रह्मा जगत्कूंउत्पन्नकरेहै ॥  
और विष्णु पालनकरेहै ॥ और कालरुद्र संहारकरेहै ॥ तिसपरमशिवकेताई हमारानमस्कारहै इति ॥  
और केईकवैष्णवमतवालेतों यहकहेहैं ॥ शंख चक्र गदा पद्म यहचारिहैंचारोंहस्तोंविषेजिसके तथाल

परि०

१

॥ ३७ ॥



क्ष्मीसहितविराजमान ऐसीजा निरतिशयसत्वमूर्तिहै ॥ तामूर्तिकरिकैउपहितहूआ सोमायाउपहितपर  
 मात्माहीं परमवासुदेव होवैहै ॥ सोपरमवासुदेवहीं मुमुक्षुजनोंने उपासनाकरणेयोग्यहै ॥ और ब्रह्मा  
 विष्णु शिव यहतीनों तापरमवासुदेवकीहींविभूतिहैं ॥ और ( सब्रह्मासशिवःसैद्रःसोऽक्षरःपरमःस्वराट् )  
 इत्यादिकश्रुतिभी तिनब्रह्मादिकतीनोंकूं तापरमवासुदेवकीहींविभूतिरूपता कथनकरेहै ॥ और ( तमेव  
 विद्वानमृतइहभवतिनान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय ) इत्यादिकश्रुति तथा ( मोक्षमिच्छेज्जनार्दनात् ) इत्या  
 दिकपुराणकेवचन तापरमवासुदेवकेध्यानतैहीं मोक्षकीप्राप्तिकथनकरेहैं ॥ यातैं मुमुक्षुजननें सोपरमवा  
 सुदेवहीं ध्यानकरणेयोग्यहै इति ॥ और हिरण्यगर्भतों यहकहेहै ॥ हिरण्यगर्भहीं मायाउपहितपरमेश्वर  
 है ॥ तिसहिरण्यगर्भकीपरमेश्वरताविषे बहुतश्रुतिस्मृतिप्रमाण विद्यमानहैं ॥ यातैं सोहिरण्यगर्भहीं मु  
 मुक्षुजनोंने उपासनाकरणेयोग्यहै इति ॥ तहां पूर्व शैवोंने तथावैष्णवोंने ब्रह्मा विष्णु महेश इनतीनमू  
 र्तियोंतैंभिन्न एक परमशिव तथापरमवासुदेव कल्पनाकन्याहै ॥ परंतु तिसविषे कोईप्रमाण देखनेविषे  
 आवतानहीं ॥ और तिनोंतैं ताअर्थकीसिद्धिविषे जे ( सब्रह्मासशिवःसैद्रः ) इत्यादिकश्रुतिवचन प्रमा  
 णकहेहैं ॥ तेश्रुतिवचनतों तामायाउपहितपरमेश्वरकूंहींकथनकरेहैं ॥ यातैं तिनवचनोंकूं तीनमूर्तितैंभि  
 न्न तापरमशिवविषे तथापरमवासुदेवविषे प्रमाणरूपतासंभवतीनहीं ॥ यातैं सोमायाउपहितपरमेश्वरहीं  
 ब्रह्मा विष्णु महेश्वर इनतीनरूपोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं तेतीनोंरूप समानहैं ॥ यहपूर्वउक्तमतहीं  
 मुमुक्षुजनोंकूं आश्रयणकरणेयोग्यहै इति ॥ तहां पूर्व मायाउपहित तत्पदार्थरूपब्रह्मका जगत्केउत्प  
 त्तिस्थितिलयकाकारणत्वरूप तटस्थलक्षण कथनकन्याथा ॥ अब तिसीलक्षणकेस्पष्टकरणेवासतैं तिसमा  
 याउपहितपरमेश्वरतैं आकाशादिकजगत्केउत्पत्तिक्रमकूं कथनकरेहैं ॥ तहां उत्पन्नहोणेयोग्यप्राणीयों



तत्त्वा०

॥ ३८ ॥

परि०

१

के पुण्यपापकर्मकरिकैसहकृत जो पूर्व उक्त विक्षेपादि शक्ति प्रधान माया उपहित ईश्वर है ॥ सोईश्वर प्रथम अ  
 वीयह जगत् उत्पन्न करने योग्य है या प्रकारका संकल्प करता भया ॥ ता संकल्प विशिष्ट ईश्वर तै प्रथम आका  
 श उत्पन्न होता भया ॥ ता आकाश तै वायु उत्पन्न होता भया ॥ ता वायु तै अग्नि उत्पन्न होता भया ॥ ता  
 अग्नितै जल उत्पन्न होता भया ॥ ता जल तै पृथिवी उत्पन्न होती भई ॥ तहां श्रुति ॥ ( तस्माद्वा एतस्मादा  
 त्मन आकाशः संभूत आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवी ) अर्थ यह ॥ तिस माया उपहित ब्रह्म तै  
 आकाश उत्पन्न होता भया ॥ ता आकाश तै वायु ता वायु तै अग्नि ता अग्नितै जल तिन जलों तै पृथिवी उत्प  
 न्न होता भया इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अचेतन तथा कल्पित ऐसे आकाशादिक भूतों कूं वायु आदिक  
 भूतों का उपादान कारण पणा कैसे संभवेगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ईहां आकाशादिकों कूं वायु आदि  
 कों का उपादान पणा विवक्षित नहीं है ॥ किंतु आकाशादि उपहित चैतन्य कूं ही वायु आदिकों का उपादान  
 पणा विवक्षित है ॥ अर्थात् आकाश उपहित चैतन्य तै वायु उत्पन्न होता भया ॥ ता वायु उपहित चैतन्य तै  
 अग्नि उत्पन्न होता भया ॥ ता अग्नि उपहित चैतन्य तै जल उत्पन्न होता भया ॥ ता जल उपहित चैतन्य तै पृथि  
 वी उत्पन्न होती भई ॥ इस प्रकार तिस तिस उपाधि वाले चैतन्य कूं ही सर्वत्र कारणता है ॥ जो कदाचित् कल्प  
 त अचेतन कूं ही कारणता मानिये ॥ तों चेतन ब्रह्म कूं सर्वजगत् का कारण कहने हारी श्रुतिका विरोध प्राप्त हो  
 वेगा ॥ तात्पर्य यह ॥ जैसे माया कूं कारण ब्रह्म का उपाधिरूपता करिकै आकाशादिक प्रपंच का कारण प  
 णा है ॥ तैसे आकाशादिकों कूं भी ता कारण ब्रह्म का उपाधिरूपता करिकै ही वायु आदिकों का कारण पणा  
 है ॥ स्वतंत्र नहीं इति ॥ ईहां वैशेषिक शास्त्र वाले तों ऐसा कहें हैं ॥ द्रव्य १ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४  
 विशेष ५ समवाय ६ अभाव ७ यह सप्त ही पदार्थ होवें हैं ॥ तहां गुणादिक पदार्थ द्रव्य के ही परतंत्र होवें हैं ॥

॥ ३८ ॥



और सर्वभावकार्य समवायिकारण असमवायिकारण निमित्तकारण इनतीनकारणोंकरिकैजन्यहोवै  
 हैं ॥ तहां जन्यद्रव्य जन्यगुण कर्म यहतीनों भावकार्य कहेजावैहैं ॥ तहां समवायिकारणतातों ए  
 कद्रव्यपदार्थविषेहीहोवैहै ॥ गुणकर्मादिकोंविषेहोवैनहीं ॥ और असमवायिकारणता गुण कर्म इनदो  
 पदार्थोंविषेहीहोवैहै ॥ अन्यपदार्थोंविषेहोवैनहीं ॥ और निमित्तकारणतातों द्रव्यादिकसर्वपदार्थोंविषे  
 होवैहै ॥ **तहां** पृथिवी १ जल २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५ काल ६ दिक् ७ आत्मा ८ मन ९ यहन  
 व द्रव्यकहेजावैहैं ॥ तहां पृथिवीआदिकचारिद्रव्योंकेपरमाणु तथाआकाशादिकपंचद्रव्य यहसर्व नि  
 त्यद्रव्य कहेजावैहै तथानिरवयव कहेजावैहैं ॥ और तिनपरमाणुवोंतेंउत्पन्नभये जेद्रव्यगुणकतेंआदिलैके  
 ब्रह्मांडपर्यंतसर्वकार्यद्रव्य तेअनित्यद्रव्य कहेजावैहैं तथाअवयवी कहेजावैहैं ॥ तहां सृष्टिकेआदिका  
 लविषे परमेश्वरकीइच्छाकरिकै तिनपरमाणुवोंविषे क्रियाउत्पन्नहोवैहै ॥ तिसतेंअनंतर दोदोपरमाणुवों  
 का संयोगहोवैहै ॥ तिनसंयुक्तदोपरमाणुवोंतें प्रथम द्व्यणुक रूपकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ ताद्व्यणुक रूप  
 कार्यका तेदोपरमाणुतों समवायिकारणहोवैहैं ॥ और तिनदोपरमाणुवोंकासंयोग असमवायिकारण  
 होवैहै ॥ और ईश्वरइच्छादिक निमित्तकारणहोवैहै ॥ इसप्रकार आगेत्र्यणुकादिककार्योंकेभी समवा  
 यिकारणादिक जानिलेणे ॥ इसप्रकार ताद्व्यणुक रूपकार्यकीउत्पत्तितेंअनंतर पुनःक्रियाकरिकैसंयुक्त  
 तीनद्व्यणुकोतें त्र्यणुक रूपकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसतेंअनंतर पुनःक्रियाकरिकैसंयुक्तचारित्र्यणुकोतें  
 चतुरणुक रूपकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकारकेक्रमकरिकै यह महान्पृथिवी महान्जल महान्तेज महा  
 न्वायु उत्पन्नहोवैहै ॥ यातें तेपरमाणुहीं सर्वजगत्काउपादानकारणहैं ॥ सोमायाउपहितब्रह्म जगत्  
 काउपादानकारणनहींहै ॥ इसप्रकार वैशेषिकशास्त्रवालेमानेहैं ॥ सोयहवैशेषिकशास्त्रकामत न्यायप्र



तत्त्वा०

॥ ३९ ॥

काशग्रंथविषे हमनें बहुतविस्तारतै निरूपणकन्याहै ॥ जिसकूंजानणेकीइच्छाहोवै ॥ तिसनें तहांसैंजा  
 निलेणा इति ॥ सोयहवैशेषिकोंकामतभी समीचीननहींहै ॥ काहेतैं शक्तिसादृश्यादिकबहुतपदार्थोंके  
 विद्यमानहूएभी सप्तहींपदार्थहैं यहवैशेषिकोंकीप्रतिज्ञा असंगतहै ॥ तहां मणिमंत्रादिकोंकीसमीपता  
 हूए वन्हितैं दाहरूपकार्य होतानहीं ॥ और तिनमणिमंत्रादिकोंकेदूरकरणेतैं तावन्हितैं सोदाहहोवै  
 है ॥ ताकरिकैं तावन्हिविषे दाहकेअनुकूलशक्तिका विनाश तथाउत्पत्ति अवश्यमानणाहोवैगा ॥ अ  
 र्थात् तिनमणिमंत्रादिकोंकेविद्यमानहूए सादाहानुकूलशक्ति नष्टहोइजावैहै ॥ और तिनमणिमंत्रादि  
 कोंकेदूरकरणेतैं साशक्ति पुनःउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं तावन्हिविषे सादाहानुकूलशक्ति अवश्यमानीचा  
 हिये ॥ इसप्रकार मृत्तिकादिकसर्वकारणोंविषे आपणेआपणेघटादिककार्यकेअनुकूलशक्तिरहेहै ॥ साश  
 क्ति तिनद्रव्यादिकसप्तपदार्थोंतैं भिन्नहींपदार्थहै ॥ तहांवैशेषिक ताउक्तस्थलविषे मणिमंत्रादिकप्रतिबंध  
 ककेअभावकूंहीं तादाहकाकारण मानेहैं ॥ सोतिनोंकाकहणा श्रुतिसूत्रतैंविरुद्धहोणेतैं असंगतहै ॥ त  
 हांश्रुति ॥ ( कथमसतःसज्जायेत ) अर्थयह ॥ अभावरूपअसत्तैं सत्कार्यकीउत्पत्ति कदाचित्भीहोती  
 नहीं इति ॥ तहांसूत्र ॥ ( नासतोऽदृष्टत्वात् ) अर्थयह ॥ अभावरूपअसत्तैं कार्यकीउत्पत्ति युक्तनहीं  
 है ॥ जिसकारणतैं लोकविषे असत्नरशृंगादिकोंतैं किसीभीकार्यकीउत्पत्ति देखणेविषेआवतीनहीं ॥  
 किंतु सत्मृत्तिकादिकोंतैंहीं घटादिककार्योंकीउत्पत्ति देखणेविषेआवैहै इति ॥ यातैं प्रतिबंधकाभावकूं  
 कार्यकाकारणमानणा इसश्रुतिसूत्रतैंविरुद्धहोणेतैं असंगतहै ॥ इसप्रकार चंद्रवत्मुखं इत्यादिकअनुभव  
 तैं मुखादिकोंविषे चंद्रादिकोंकासादृश्य सिद्धहोवैहै ॥ यातैं सोसादृश्यभी ताशक्तिकीन्यांई तिनद्रव्या  
 दिकसप्तपदार्थोंतैंभिन्नहींपदार्थहै ॥ इसशक्तिसादृश्याका विस्तारतैंनिरूपणतों न्यायप्रकाशकेचतुर्थपरिच्छे

परि०

१

॥ ३९ ॥



दिकसप्तपदार्थोंतैभिन्नहीपदार्थहै ॥ इसप्रकार शक्तिसादृश्यादिकअधिकपदार्थोंकेविद्यमानहूए  
सप्तहीपदार्थहैं यहवैशेषिककाकहणा असंगतहै ॥ किंवा अंधकाररूपदशमद्रव्यकेविद्यमानहूए नवहीद्र  
व्यहैं यहभीवैशेषिकोंकाकहणा असंगतहै ॥ तहां नीलंतमश्चलति इसप्रत्यक्षप्रतीतितैं ताअंधकाररूपत  
मविषे नीलरूप तथाचलनक्रिया सिद्धहोवैहै ॥ और गुणका तथाक्रियाका आश्रय द्रव्यहीहोवैहै ॥  
यातैं ताअंधकाररूपतमकूं द्रव्यरूपतासंभवैहै ॥ और वैशेषिक तातमकूं आलोककाअभावरूप माने  
हैं ॥ सोतिनोंकाकहणा असंगतहै ॥ काहेतैं जोजोअभावहोवैहै ॥ सोसो प्रतियोगीसापेक्षप्रतीतिका  
हीं विषयहोवैहै ॥ प्रतियोगीनिरपेक्षप्रतीतिकाविषय कोईभीअभावहोतानहीं ॥ जैसे घटाभाव पटाभा  
व इत्यादिकअभाव घटपटादिरूपप्रतियोगीसापेक्षप्रतीतिकेहीं विषयहोवैहैं ॥ और यहअंधकाररूपतम  
तों ताआलोकरूपप्रतियोगीसापेक्षप्रतीतिकाविषयहोतानहीं ॥ यातैं ताअंधकारकूं आलोकाभावरूप  
तामानणेविषे कोईभीप्रमाणनहींहै ॥ किंतु उक्तयुक्तितैं ताअंधकारकूं दशमद्रव्यहीमान्याचाहिये ॥ त  
हां ताअंधकाररूपतमकी द्रव्यरूपता तथाआलोकाभावरूपता न्यायप्रकाशकेद्वितीयपरिच्छेदकेअंतवि  
षे विस्तारतैंनिरूपणकरीहै ॥ सोतहांसैंजानिलेणी ॥ किंवा वैशेषिकोंने आत्माकूंभी ज्ञानादिकगुणों  
का आश्रयरूपकरिकैं तथासमवायिकारणरूपकरिकैं द्रव्यहीमान्याहै ॥ सोभीतिनोंकाकहणा असंग  
तहै ॥ काहेतैं श्रुति स्मृति विद्वानोंकाअनुभव इनतीनोंकरिकैं आत्माका निर्गुणपणा तथासत्चित्आ  
नंदरूपताहीं निश्चयहोवैहै ॥ तहां ( साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च ) यहश्रुतितों ताआत्माकूं निर्गुण क  
हेहै ॥ और ( सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म आनंदोब्रह्म ) यहश्रुति ताआत्माकूं सत्चित्आनंदरूप कहेहै ॥ या  
तैं सोआत्मा द्रव्यरूपनहींहै ॥ तहां सोआत्मा अद्रव्यहोणेतैं गुणादिकोंकीन्यांई परतंत्रहोवैंगा ॥ यह



तत्त्वा०

॥ ४० ॥

जो वैशेषिक कहें हैं ॥ सो भी असंगत है ॥ काहेतैं श्रुति स्मृतियों विषे ता आत्मा कूंहीं सर्व कल्पनाओं का अधिष्ठान तथा सर्व का प्रेरक कहा है ॥ ऐसे आत्मा कूं अद्रव्य रूप ता करिके परतंत्र कहना तिन श्रुति स्मृति वा क्योंतैं विरुद्ध है ॥ यातैं अद्रव्य रूप हू आभी सो आत्मा सर्व का अधिष्ठान होणेतैं तथा सर्व का प्रेरक होणेतैं स्वतंत्र ही है ॥ या कारणतैं भी नवहीं द्रव्य हैं यह तिनों की प्रतिज्ञा असंगत है ॥ किंवा तिन वैशेषिकोंनैं आकाशादिक अनेक नित्य पदार्थ माने हैं ॥ सा तिनों की कल्पना भी श्रुति तैं विरुद्ध होणेतैं असंगत है ॥ जिस कारणतैं श्रुति ब्रह्मतैं भिन्न सर्व जगत् कूं अनित्य ही कहें हैं ॥ तहां श्रुति ॥ ( अतोऽन्यदार्त्तं । मायामात्रमिदं द्वैतमद्वैतं परमार्थतः ) अर्थ यह ॥ इस ब्रह्मतैं भिन्न सर्व जगत् आर्त्त कहीये मिथ्या है ॥ और यह सर्व द्वैत प्रपंच मायामात्र है अर्थात् मिथ्या है ॥ अद्वैत ब्रह्म ही परमार्थ सत्य है इति ॥ किंवा ( आत्मन आकाशः संभूतः तन्मनोऽकुरुत ) इस श्रुति विषे आकाश की तथा मन की ब्रह्मतैं उत्पत्ति कथन करी है ॥ और ( जा तस्य हि ध्रुवो मृत्युः ) इस वचन करिके श्री भगवान् नैं उत्पत्ति मान पदार्थ का नियम तैं नाश कहा है ॥ यातैं उत्पत्ति विनाश वाले होणेतैं ते आकाशादिक अनित्य ही होवेंगे ॥ किंवा तिन वैशेषिकोंनैं परमाणुओं कूं जो निरवयव तथा नित्य मान्या है ॥ सो भी असंगत है ॥ काहेतैं लोक विषे जो जो पदार्थ रूपादि गुणवाला होवै है तथा परिच्छिन्न होवै है ॥ सो सो पदार्थ सावयव तथा अनित्य ही होवै है ॥ जैसे घट पटादिक पदार्थ हैं ॥ तैसे ते परमाणु भी तुमारे मत विषे रूपादिक गुणों वाले हैं तथा परिच्छिन्न हैं ॥ यातैं ते परमाणु भी घटादिकों की न्यांई सावयव तथा अनित्य ही होवेंगे ॥ किंवा परमाणुओं कूं सावयव मानने विषे जो वैशेषिकोंनैं अनवस्था दोष की प्राप्ति करी है ॥ सो भी असंगत है ॥ जिस कारणतैं ईश्वर रूप परम कारण विषे ही ता अवयव धारा की विश्रान्ति संभवै है ॥ किंवा सूक्ष्म भूतों तैं भिन्न परमाणुओं के सदभाव विषे कोई भी प्रमाण नहीं है ॥

परि०

१

॥ ४० ॥



अनवस्थादोषकाप्रोक्तकहीह ॥ सोभी असंगतह ॥ जिसकारणत इश्वररूपपरमकारणविषयताजिप  
वधाराकीविश्रान्ति संभवैहै ॥ किंवा सूक्ष्मभूतोंकीभिन्नपरमाणुवोंकेसदभावविषे कोईभीप्रमाण नहींहै ॥

किंतु सूक्ष्मभूतोंकाहीं परमाणुनामहै ॥ तिनसूक्ष्मभूतोंकीउत्पत्ति पूर्वउक्तरीतिसैं ईश्वरतैंहींहोवैहै ॥  
याकारणतैंभी तेपरमाणु सावयव तथाअनित्यहीं सिद्धहोवैहैं ॥ किंवा तिनवैशेषिकोंनैं संयुक्तदोपरमा  
णुवोंतैं द्व्यणुककीउत्पत्तिकहीहै ॥ सोभी संभवतीनहीं ॥ काहेतैं तिनवैशेषिकोंनैं परमाणुवोंकूंतों नि  
खयव मान्याहै ॥ और संयोगकूं अव्याप्यवृत्ति मान्याहै ॥ तहां जिसद्रव्यविषे सोसंयोगरहेहै ॥ ति  
सीद्रव्यविषे तासंयोगकाअभावभीरहेहै ॥ जैसे एकहीवृक्षके शाखादेशविषे पक्षीकासंयोगहोवैहै और  
मूलदेशविषे तासंयोगकाअभावहोवैहै ॥ यहहीं तासंयोगविषे अव्याप्यवृत्तिपणाहै ॥ सोसंयोग साव  
यवद्रव्योंकाहींसंभवैहै ॥ निखयवद्रव्योंका सोसंयोग संभवतानहीं ॥ और वैशेषिकोंनैं तेपरमाणु नि  
खयवहीं मानेहैं ॥ यातैं तिनपरमाणुवोंकेसंयोगकेअसंभवहूए तिनपरमाणुवोंतैं द्व्यणुककीउत्पत्ति  
कहणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा (येनाऽश्रुतंश्रुतंभवति) इत्यादिकश्रुतिनैं एककारणब्रह्मकेज्ञानकरिकै  
सर्वकेज्ञानकीप्रतिज्ञाकरीहै ॥ साप्रतिज्ञा ब्रह्मतैंभिन्न परमाणुआदिकोंकूं अनादि तथानित्य मानणेविषे  
बाधितहोवैंगी ॥ जोकदाचित् साप्रतिज्ञा बाधितहोवै ॥ तों तिसप्रतिज्ञातैंअनंतर मृतिकादिकदृष्टांतों  
करिकै कार्यका कारणतैंअव्यतिरेकपणेकूंसिद्धकरिकै ताप्रतिज्ञातार्थकाजोउपपादनकन्याहै सोअनर्थ  
कहोवैंगा ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ ब्रह्मतैंभिन्नसर्वजगत् ताब्रह्मतैंउत्पन्नहोवैहै तथाताब्रह्मविषेहींलयहोवै  
है इति ॥ ईहां सांख्यशास्त्रवालेतों त्रिगुणात्मकप्रधानतैंहीं महत्तत्त्वादिकमकरिकै जगत्कीउत्पत्ति मा  
नेहैं ॥ यहसांख्यकामत आगेस्पष्टहोवैंगा ॥ सोयहसांख्यीयोंकामतभी समीचीननहींहै ॥ काहेतैं ति  
नसांख्यीयोंनैं ताप्रधानकूं जड तथानित्य तथास्वतंत्र मान्याहै ॥ सोप्रधानहीं जगत्काकारणहै इस  
अर्थविषे कोईभीप्रमाणनहींहै ॥ और (मायांतुप्रकृतिविद्यात् । अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णांबहीःप्रजाः



तत्त्वा०

॥ ४१ ॥

परि०  
१

सृजमानांस्वरूपाः ) इत्यादिकश्रुतियांतों सिद्धांतसंमतमायाकूंहीं जगत्काकारण कहें हैं ॥ ताप्रधानकूं  
 कहतीयांनहीं ॥ यातें ताप्रधानकूं जगत्काउपादानकारणपणा संभवतानहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सो  
 प्रधान कपिलस्मृतिकरिकैसिद्धहै ॥ यातें ताप्रधानकूं अप्रामाणिककहणा अयुक्तहै ॥ ॥ समाधा  
 न ॥ ॥ श्रुतिकेविरोधहूए ताकपिलस्मृतिकूं प्रमाणरूपताहींनहींहै ॥ श्रुतिमूलकस्मृतिहीं प्रमाणरूप  
 होवैहै ॥ श्रुतिविरुद्धस्मृति प्रमाणरूपहोवैनहीं ॥ यातें मायाउपहितब्रह्मतेंहीं आकाशादिक्रमकरिकै प्र  
 पंचकीउत्पत्तिहोवैहै यहपूर्वउक्तसिद्धांतमतहीं सर्वोंकूं अंगीकारकन्याचाहिये इति ॥ अब पूर्वउक्तआ  
 काशादिकपंचभूतोंतें सूक्ष्मशरीरोंकी तथास्थूलभूतोंकी उत्पत्तिकाप्रकार वर्णनकरें हैं ॥ तहां पूर्वईश्वर  
 काउपाधिरूपकरिकैकथनकरीजामायाहै ॥ सामाया सत्व रज तम यहतीनगुणरूपहै ॥ और कारणके  
 गुणहीं कार्यकेगुणोंकाआरंभकहोवैहैं ॥ यातें तामायाकेकार्यरूप तेआकाशादिकपंचभूतभी सत्व रज  
 तम यहतीनगुणरूपहींहोवैहैं ॥ और तेआकाशादिकपंचभूत प्रत्यक्षव्यवहारकेअयोग्यहोणेतें सूक्ष्म क  
 ह्येजावैहैं ॥ और पंचीकरणकेअभावतें अपंचीकृत कह्येजावैहैं ॥ ऐसेअपंचीकृतसूक्ष्मभूतोंतें सप्तदशलिं  
 गरूप सूक्ष्मशरीर उत्पन्नहोताभया ॥ तेसप्तदशलिंग यहहैं ॥ पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण मन  
 बुद्धि ॥ तहां श्रोत्र १ त्वक् २ चक्षु ३ रसन ४ घ्राण ५ यहपंचइंद्रिय ज्ञानकेसाधनहोणेतें ज्ञानइंद्रि  
 य कह्येजावैहैं ॥ और वाक् १ पाणि २ पाद ३ पायु ४ उपस्थ ५ यहपंचइंद्रिय क्रियाकेसाधनहोणे  
 तें कर्मइंद्रिय कह्येजावैहैं ॥ तहां शब्दज्ञानकासाधनइंद्रिय श्रोत्रकह्याजावैहै ॥ और स्पर्शज्ञानकासाध  
 नइंद्रिय त्वक्कह्याजावैहै ॥ और रूपज्ञानकासाधनइंद्रिय चक्षुकह्याजावैहै ॥ और रसज्ञानकासाधनइं  
 द्रिय रसनकह्याजावैहै ॥ और गंधज्ञानकासाधनइंद्रिय घ्राणकह्याजावैहै ॥ और वचनक्रियाकासाधन

॥ ४१ ॥



इंद्रिय वाक्कह्याजावैहै ॥ और ग्रहणक्रियाकासाधनइंद्रिय पाणिकह्याजावैहै ॥ और गमनक्रियाका  
 साधनइंद्रिय पादकह्याजावैहै ॥ और विसर्गक्रियाकासाधनइंद्रिय पायुकह्याजावैहै ॥ और सुखक्रिया  
 कासाधनइंद्रिय उपस्थकह्याजावैहै ॥ यद्यपि मन बुद्धि चित्त अहंकार इसभेदकरिकै अंतःकरण चारि  
 प्रकारकाहोवैहै ॥ तथापि ईहां मनविषेचित्तका तथाबुद्धिविषेअहंकारका अंतर्भावमानिकै मन बुद्धि इ  
 नदोनोंकाहींग्रहणकन्याहै ॥ अब तिनआकाशादिकपंचभूतोंतैं तिनसप्तदशलिंगोंकेउत्पत्तिकाक्रम कहे  
 हैं ॥ तहां ( सत्वात्संजायतेज्ञानं ) इसगीतावचनविषे सत्वगुणतैं ज्ञानकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ और  
 श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंविषे पूर्वउक्तरीतिसैं ज्ञानकीसाधनता स्पष्टहीहै ॥ यातैं तिनआकाशादिकपं  
 चभूतोंकेअमिलितसात्विकअंशतैं श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ तहां आकाशकेसात्विकअं  
 शतैं श्रोत्रइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ और वायुकेसात्विकअंशतैं त्वक्इंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ और तेजकेसा  
 त्विकअंशतैं चक्षुइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ और जलकेसात्विकअंशतैं रसनइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ और पृ  
 थिवीकेसात्विकअंशतैं घ्राणइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ते श्रोत्रादिकपंचइंद्रिय उक्तक्रमतैं  
 आकाशादिकपंचभूतोंतैंउत्पन्नहूएहैं यहवार्त्ता कैसेजानीजावै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ शब्द स्पर्श रूप  
 रस गंध इनपांचगुणोंकेमध्यविषे जिसजिसगुणकूं जोजोइंद्रिय ग्रहणकरेहै ॥ सोसोइंद्रिय तिसतिसगुण  
 वालाहीहोवैहै यहनियमहै ॥ जैसे श्रोत्रइंद्रिय शब्दगुणकूंग्रहणकरेहै ॥ यातैं सोश्रोत्रइंद्रिय शब्दगुणवा  
 लाहीहै ॥ तैसे त्वकादिकइंद्रियभी तिसतिसस्पर्शादिकगुणकूं ग्रहणकरेहैं ॥ यातैं तेत्वकादिकइंद्रियभी  
 तिसतिसस्पर्शादिकगुणवालेहीहोवेंगे ॥ और तिसतिसशब्दादिकगुणवालेद्रव्यकूं आकाशादिरूपता प्र  
 सिद्धहीहै ॥ इसप्रकारकीयुक्तिकरिकै तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं यथाक्रमतैं तिनआकाशादिकभूतोंका



तत्त्वा०

॥ ४२ ॥

परि०  
१

कार्यपणाहीं सिद्धहोवैहै ॥ जोकदाचित् तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आकाशादिकभूतोंकाकार्यपणा न हींमानिये ॥ तौ तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंविषे शब्दादिकगुणोंकाग्राहकपणाहीं नहींहोवैगा ॥ किंवा केवल इसउक्तयुक्तिकरिकैहीं श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषे आकाशादिकभूतोंकाकार्यपणा सिद्धनहींहै ॥ किंतु श्रुतिप्रमाणकरिकैभी सिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( श्रोत्रमाकाशे वायौत्वक् अमौचक्षुरप्सुजिह्वा पृथिव्यां घ्राणं ) इसश्रुतिविषे आकाशादिकभूतोंकेसात्विकअंशतैं यथाक्रमतैं श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ यातैं आकाशादिकभूतोंकेसात्विकअंशतैं श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकीउत्पत्तिमाननी श्रुतियुक्तिकरिकैसिद्धहै इति ॥ और तिनआकाशादिकपंचभूतोंके जेमिलितसात्विकअंशहैं तिनों तैं अंतःकरण उत्पन्नहोवैहै ॥ तहां सोअंतःकरण तिनश्रोत्रादिकपंचइंद्रियद्वारा तिनशब्दादिकपांचोगुणोंकूं ग्रहणकरेहै ॥ यातैं ताअंतःकरणकूं तिनआकाशादिकपंचभूतोंकेमिलितसात्विकअंशोंकाकार्यपणा अवश्यमान्याचाहिये ॥ जोकदाचित् ताअंतःकरणकूं तिनपंचभूतोंकाकार्यपणा नहींमानिये ॥ तौ ताअंतःकरणकूं तिनशब्दादिकपंचगुणोंका ग्राहकपणाहीं नहींसंभवैगा इति ॥ इहां सांख्यशास्त्रवालेतौ ऐसाकहेहैं ॥ सोअंतःकरण बुद्धि १ अहंकार २ मन ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां मूलप्रकृतितैं बुद्धि उत्पन्नहोवैहै ॥ जिसबुद्धिकूं महत्त्वभी कहेहैं ॥ तामहत्त्वनामाबुद्धितैं अहंकार उत्पन्नहोवैहै ॥ सोअहंकार सत्व रज तम इनतीनगुणोंकेभेदकरिकै सात्विक राजस तामस यहतीनप्रकार काहोवैहै ॥ तहां सात्विकअहंकारतैंतौ श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय एकमन यहएकादशइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं और तामसअहंकारतैं शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गंध ५ यहपंच तन्मात्रा उत्पन्नहोवैहैं ॥ और राजसअहंकारतैं तिनदोनोंअहंकारोंका प्रवर्तकहोणेतैं केवल सहकारी

॥ ४२ ॥



मात्रहोवैहै ॥ और तिनपंचतन्मात्रावोंतें यथाक्रमतें आकाश १ वायु २ अग्नि ३ जल ४ पृथिवी ५ यहपंचमहाभूत उत्पन्नहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता सांख्यतत्त्वकौमुदीविषेभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त षोडशकस्तुविकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः) अर्थयह ॥ सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकीजासाम्यअवस्थाहै ताकानाम प्रधानहै ॥ सोप्रधान जगत्कामूलकारणहोणेतें मूलप्रकृति कहाजावैहै ॥ सामूलप्रकृति किसीकाभीविकृतिनहींहै ॥ ईहांसर्वत्र प्रकृतिशब्दकरिकै परिणामीउपादानकारणका ग्रहणकरणा ॥ और विकृतिशब्दकरिकै कार्यका ग्रहणकरणा ॥ और महत्त्व अहंकार पंचतन्मात्रा यहसप्त प्रकृतिभीहोवैहैं तथाविकृतिभीहोवैहैं ॥ तहां मूलप्रकृतिकीअपेक्षाकरिकैतों महत्त्व विकृतिहै ॥ और अहंकारकीअपेक्षाकरिकै प्रकृतिहै ॥ ऐसे अहंकारभी तामहत्त्वकीअपेक्षाकरिकैतों विकृतिहै ॥ और इंद्रियतन्मात्रावोंकीअपेक्षाकरिकै प्रकृतिहै ॥ इसप्रकार तेपंचतन्मात्राभी ताअहंकारकीअपेक्षाकरिकैतों विकृतिहैं ॥ और पंचमहाभूतोंकीअपेक्षाकरिकै प्रकृतिहैं ॥ और पूर्वउक्त एकादश इंद्रिय तथापंचमहाभूत यहषोडशतों विकृतिहींहोवैहै ॥ किसीकेभीप्रकृतिहोतेनहीं ॥ और असंगहोणेतें पुरुषतों प्रकृतिभीनहींहोवैहै तथाविकृतिभीनहींहोवैहै इति ॥ इससांख्यमतका विस्तारतेंनिरूपणतों न्यायप्रकाशग्रंथकेद्वितीयपरिच्छेदविषे आत्मनिरूपणविषे हमनें कन्याहै ॥ सो तहांसैंजानिलेणा इति ॥ सोयहसांख्यीयोंकामतभी श्रुतिसूत्रतेंविरुद्धहोणेतें असंगतहै ॥ काहेतें ब्रह्मसूत्रकारश्रीव्यासभगवाननें ( ईक्षतेर्नाशब्दं ) इत्यादिकसूत्रोंकरिकै ताप्रधानकारणवादका खंडनहींकन्याहै ॥ इससूत्रकायहअर्थहै ॥ वैदिकशब्दकरिकैअप्रतिपादितहोणेतें अप्रामाणिक ऐसाजोप्रधानहै ॥ सोप्रधान जगत्काकारणनहींहै ॥ जिसकारणतें ( तदैक्षतबहुस्यां ) इसश्रुतिनें जगत्केकारणविषे ज्ञानरूपईक्षण कथनकन्या



तत्त्वा०

॥ ४३ ॥

परि०  
१

है ॥ सोईक्षण चेतनविषेहीसंभवैहै ॥ जडप्रधानविषेसंभवतानहीं ॥ यातैं सोप्रधानकारणवाद असंगत है ॥ किंवा ( अन्नमयंहिसोम्यमनःआपोमयःप्राणःतेजोमयीवाक् ) इसश्रुतितैं तथा ( श्रोत्रमाकाशेवा यौत्वक् ) इसपूर्वउक्तश्रुतितैं अंतःकरण प्राण इंद्रिय इनतीनोंविषे भूतोंकाकार्यपणाहीं निश्चयहोवैहै ॥ और सांख्यीयोंनैं तिनोंकूं भूतोंकाकार्य मान्यानहीं ॥ यातैंभी सोसांख्यीयोंकामत श्रुतिप्रमाणतैंविरुद्धहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तुमवेदांतीयोंकेमतविषेभी ब्रह्म असंगहै ॥ ऐसेअसंगब्रह्मविषे ताईक्षणपूर्व क जगत्काउपादानपणामानणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ ऐसेविरुद्धअर्थकूंश्रुतिभी कैसेप्रतिपादनकरैंगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ शुद्धब्रह्मकूं असंगरूपहोणेतैं यद्यपि जगत्काउपादानपणा संभवतानहीं ॥ तथापि मायाउपहितब्रह्मकूं सोउपादानपणा संभवैहै ॥ और श्रुतिनैंभी तामायाउपहितब्रह्मकूंहीं जगत्काउपादानपणा कथनकन्याहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वहींविस्तारतैंप्रतिपादनकरिआयेहैं इति ॥ ईहां नैयायिकतों मनकूं निरवयव मानेहैं तथाअणुमानेहैं तथानित्यमानेहैं ॥ यहनैयायिकोंकामत न्यायप्रकाश केद्वितीयपरिच्छेदविषे मनकेनिरूपणविषे विस्तारतैंप्रतिपादनकन्याहै ॥ सोयहनैयायिकोंकामतभी श्रुतितैंविरुद्धहोणेतैं असंगतहै ॥ काहेतैं मनकूं जोनित्यमानिये ॥ तों ( एकमेवाद्वितीयंब्रह्म ) एकतों इसश्रुतिकाविरोध प्राप्तहोवैंगा ॥ और दूसरा ( एतस्माज्जायतेप्राणोमनःसर्वेन्द्रियाणिच तन्मनोऽकुरुत ) इत्यादिकश्रुतियोंविषे तामनकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ और जोजोभावकार्यहोवैहै ॥ सोसो अनित्यहींहोवैहै ॥ जैसे घटपटादिक भावकार्यहोणेतैं अनित्यहैं ॥ तैसे भावकार्यहोणेतैं सोमनभी अनित्यहींहोवैगा ॥ किंवा नैयायिकोंनैं मनकूं मूर्त्तद्रव्य मान्याहै ॥ और जोजोमूर्त्तद्रव्यहोवैहै सोसो परिच्छिन्नहींहोवैहै ॥ और जोजो परिच्छिन्नहोवैहै सोसो सावयवहींहोवैहै ॥ और जोजो सावयवहोवैहै सो

॥ ४३ ॥



सो अनित्यहीं होवै है ॥ या प्रकार का नियम घटपटादिक मूर्त्तद्रव्यों विषे देखने में आवै है ॥ यातें मूर्त्तद्रव्य  
 होणेतें सो मन भी सावयव तथा अनित्यहीं होवैगा ॥ किंवा नैयायिकों नें मन कूं अणु मान्या है तथा ताम  
 न के संयोग तें आत्मा विषे सुख दुःखादिकों की उत्पत्ति मानी है ॥ सो भी असंगत है ॥ काहेतें ता अणु मन  
 के संयोग जन्य सो सुख भी किसी अणु प्रदेश विषे ही होवैगा ॥ सर्व अंग व्यापी न ही होवैगा ॥ और शीतल  
 गंगा जल विषे निमग्न पुरुष कूं सर्व अंग व्यापी सुख का अनुभव होवै है ॥ यातें सो मन अणु न ही है ॥ किंवा मेरे  
 कृपाद विषे पीडा है और शिर विषे सुख है इस प्रकार एक ही काल विषे सुख दुःख का अनुभव होवै है ॥ सो भी नै  
 यायिकों के मत विषे असंगत होवैगा ॥ जिस कारण तें ता अणु मन का एक काल विषे ता पाद शिर दोनों के सा  
 थि संयोग संभवतान ही इति ॥ तहां भूतों के कार्य रूप मन विषे विभुपणा संभवतान ही ॥ तथा विभु मन का  
 विभु आत्मा के साथि संयोग संभवतान ही ॥ इन उक्त युक्तियों करिके मन का विभुपणा भी खंडन हुआ जान  
 ना ॥ तहां मीमांसक मन कूं विभु माने हैं ॥ सो मन के विभुपणे का प्रतिपादन तथा नैयायिकों की रीति से ता  
 का खंडन न्याय प्रकाश के द्वितीय परिच्छेद विषे मन के निरूपण विषे विस्तार तें कथन कन्या है ॥ सो तहां सैं जा  
 निलेना ॥ यातें आकाशादिक पंच भूतों के मिलित सात्विक अंशों तें सो अंतःकरण उत्पन्न होवै है तथा साव  
 यव है यह सिद्धांत सिद्ध भया इति ॥ और सो अंतःकरण संकल्प निश्चय अभिमान स्मरण इन चारि वृत्ति  
 यों के भेद करिके मन १ बुद्धि २ अहंकार ३ चित्त ४ यह चारि प्रकार का होवै है ॥ तहां संकल्प वृत्ति वाला  
 अंतःकरण मन कहा जावै है ॥ और निश्चय वृत्ति वाला अंतःकरण बुद्धि कहा जावै है ॥ और अभिमान वृत्ति  
 वाला अंतःकरण अहंकार कहा जावै है ॥ और स्मरण वृत्ति वाला अंतःकरण चित्त कहा जावै है इति ॥ अब  
 कर्म इंद्रियों के उत्पत्तिका प्रकार वर्णन करे हैं ॥ तहां पूर्व उक्त आकाशादिक पंच सूक्ष्म भूतों के परस्पर अमिलि



तत्त्वा०

॥ ४४ ॥

परि०

१

तराजसअंशोंतें कर्मइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ तहां आकाशकेराजसअंशतें वाक्इंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ और वायुकेराजसअंशतें हस्तइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ और तेजकेराजसअंशतें पादइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ और जलकेराजसअंशतें पायुइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ और पृथिवीकेराजसअंशतें उपस्थइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ ईहां केईकग्रंथकारतों जलकेराजसअंशतें उपस्थइंद्रियकीउत्पत्तिमानेहैं ॥ और पृथिवीकेराजसअंशतें पायुइंद्रियकीउत्पत्तिमानेहैं ॥ तहां ( कस्मिन्नापःप्रतिष्ठिताइतिरेतसि ) इसश्रुतिविषे जलोंकीरेतविषेस्थितिकथनकरीहैं ॥ यातें ताउपस्थइंद्रियकी जलतेंहींउत्पत्तिमानणी उचितहै इति ॥ अब प्राणोंकेउत्पत्ति कावर्णनकरेहैं ॥ तहां पूर्वउक्तआकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतोंके मिलितराजसअंशोंतें प्राण उत्पन्नहोवैहैं ॥ सोप्राणभी क्रियाकेभेदतें वा स्थानकेभेदतें प्राण १ अपान २ व्यान ३ उदान ४ समान ५ यहपंच प्रकारकाहोवैहैं ॥ तहां सर्वदाऊर्ध्वगमनवालावायु प्राणकह्याजावैहैं ॥ यद्यपि उदानवायुभी ऊर्ध्वगमनवालाहोवैहैं ॥ तथापि सोउदान मरणकालविषेहीं ऊर्ध्वगमनवालाहोवैहैं ॥ सर्वदा ऊर्ध्वगमनवालाहोवै नहीं ॥ और यहप्राणतों सर्वदा ऊर्ध्वगमनवालाहोवैहैं ॥ यातें इसप्राणकेलक्षणकी ताउदानविषेअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ और सोप्राण नासिकातेंलैके नाभिपर्यंतस्थानोंविषे रहेहै ॥ तहां ( वायुःप्राणोभूत्वानासिकेप्राविशत् ) इसएतरेयश्रुतिनैं ताप्राणकी नासिकादिकस्थानविषेहीं स्थितिकहीहै ॥ और अधो गमनवालावायु अपानकह्याजावैहैं ॥ सोअपान नाभितेंलैकेपायुपर्यंतस्थानोंविषे रहेहै ॥ तहां ( मृत्युरपानोभूत्वानाभिप्राविशत् ) इसश्रुतिनैं ताअपानकी नाभिआदिकस्थानविषेहीं स्थितिकहीहै ॥ और सर्वओरतेंगमनकरणेहारावायु व्यानकह्याजावैहैं ॥ सोव्यानवायु समग्रशरीरविषेरहेहै ॥ और मरणकालविषे ऊर्ध्वगमनकरणेहारावायु उदानकह्याजावैहैं ॥ सोउदान कंठस्थानविषेरहेहै ॥ और भोजनकन्ये

॥ ४४ ॥



हुए अन्नके तथा पानक-ये हुए जलके स्थूल मध्यम सूक्ष्म इन तीन भागोंकं तिस तिस स्थान विषे प्राप्त करने  
 हारा वायु समान कहा जावै है ॥ तहां विष्टा मूत्र का हेतु भूत जो अन्न जल का स्थूल भाग है तिसकूं शरीर तैं  
 बाह्य निकासने वासतैं सो समान वायु अपान विषे प्राप्त करे है ॥ और मांस रुधिर का हेतु भूत जो अन्न जल का  
 मध्यम भाग है तिसकूं नाडी द्वारा सर्व अंगों विषे प्राप्त करे है ॥ और मन प्राण दोनों का उपकारक जो ता अ  
 न्न जल का सूक्ष्म भाग है तिसकूं तामन प्राण विषे प्राप्त करे है ॥ या कारण तैं ही श्रुति विषे मनकूं अन्नमय क  
 ह्या है ॥ और प्राणकूं जलमय कहा है ॥ सो यह समान वायु भी समग्र शरीर विषे रहे है ॥ और कोई ग्रंथ  
 विषे जो इस समान का नाभि स्थान कहा है ॥ सो मुख्यताकूं लै के कहा है ॥ अर्थात् ता समान वायु का सो  
 नाभी मुख्य स्थान है इति ॥ ईहां केई कशास्त्र वाले तों नाग १ कूर्म २ कृकल ३ देवदत्त ४ धनंजय ५  
 इन पंच वायुओंकूं मिलाइ के सो प्राण वायु दश प्रकार का कहें हैं ॥ तहां उदगार करने हारा वायु नाग कहा जा  
 वैं है ॥ और नेत्रों के उन्मीलन कूं करने हारा वायु कूर्म कहा जावैं है ॥ और छिका कूं करने हारा वायु कृकल क  
 ह्या जावैं है ॥ और जूंभण कूं करने हारा वायु देवदत्त कहा जावैं है ॥ और शरीर के पोषण कूं करने हारा वायु  
 धनंजय कहा जावैं है इति ॥ तहां पूर्व उक्त प्राणादिक पंच वायुओं तैं इन नागादिक पंच वायुओंकूं पृथक् मान  
 ने विषे एक तों गौरव दोष की प्राप्ति होवैं है ॥ और दूसरा तिन नागादिक पांचों विषे श्रुति आदिक प्रमाण का  
 भी अभाव है ॥ या तैं वेदांत ग्रंथों विषे तिन नागादिक पांचों का तिन प्राणादिक पांचों विषे अंतर्भाव मानि  
 के ते पंच ही प्राण कथन कये हैं इति ॥ अब पूर्व उक्त इंद्रियों के तथा अंतःकरण के देवताओं का वर्णन करे  
 हैं ॥ तहां श्रोत्र १ त्वक् २ चक्षु ३ रसन ४ घ्राण ५ इन पंच ज्ञान इंद्रियों के यथाक्रम तैं दिक् १ वायु २  
 आदित्य ३ वरुण ४ अश्वी ५ यह पंच देवता होवैं हैं ॥ ईहां कोई ग्रंथ विषे घ्राण का पृथिवी देवता भी क



तत्त्वा०

॥ ४५ ॥

परि०

१

॥ ४५ ॥

ह्याहै ॥ और वाक् १ पाणि २ पाद ३ पायु ४ उपस्थ ५ इनपंचकर्मइंद्रियोंके यथाक्रमतैं वन्हि १  
 इंद्र २ उपेंद्र ३ मृत्यु ४ प्रजापति ५ यहपंचदेवताहोवैहैं ॥ और मन १ बुद्धि २ अहंकार ३ चित्त ४  
 इनचारिअंतःकरणोंके यथाक्रमतैं चंद्र १ चतुर्मुख २ शंकर ३ अच्युत ४ यहचारिदेवताहोवैहैं ॥ ॥  
 शंका ॥ ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंके तेदिकादिकअधिष्ठातादेवताहैं इसअर्थविषे कौनप्रमाणहै ॥ ॥ स  
 माधान ॥ ॥ सुबालउपनिषदविषे ( श्रोत्रमध्यात्मंश्रोतव्यमधिभूतंदिशस्तत्राधिदैवतं ) इत्यादिकवच  
 नोंकरिकै ज्ञानकर्मइंद्रियोंके तथाअंतःकरणके तेपूर्वउक्तसर्वदेवता कथनकरैहैं ॥ यातैं तेइंद्रियअंतःकरण  
 केअधिष्ठातादेवता श्रुतिप्रमाणतैंहींसिद्धहैं ॥ किंवा तेअधिष्ठातादेवता केवल श्रुतिप्रमाणकरिकैहीसिद्ध  
 नहींहैं ॥ किंतु अनुमानप्रमाणकरिकैभीसिद्धहैं ॥ सोदिखावैहैं ॥ इसलोकविषे जोजोअचेतनकारण  
 होवैहै ॥ सोसो चेतनकेआश्रितहूआहीं कार्यकाजनकहोवैहै ॥ जैसे मृत्तिका अचेतनकारणहोणेतैं चे  
 तनकुलालकेआश्रितहूईहीं घटादिककार्यकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तैसे तेइंद्रियभीअचेतनकारणहोणेतैं चेतनदे  
 वतावोंकेआश्रितहूएहीं आपणेआपणेकार्यकूं उत्पन्नकरैंगे ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जीवचेतनहीं तिनस  
 र्वइंद्रियोंका अधिष्ठाताहोवैंगा ॥ ताजीवचेतनतैंभिन्न दूसरेअधिष्ठातादेवतामानणेव्यर्थहैं ॥ ॥ समा  
 धान ॥ ॥ जीवचेतनकूं जोइंद्रियोंकाप्रेरकमानिये ॥ तौं सोजीवचेतन आपणेअनुकूलअर्थविषेहीं ति  
 नइंद्रियोंकूं प्रवृत्तकरैंगा ॥ प्रतिकूलअर्थविषेप्रवृत्तकरैंगानहीं ॥ सोऐसादेखणेविषेआवतानहीं ॥ किंतु  
 जीवचेतनकूंप्रतिकूल जोशत्रुकादर्शन तथादुर्गंधादिकोंकाज्ञानहै ॥ तिसकूंभी तेचक्षुघ्राणादिकइंद्रिय उ  
 त्पन्नकरैहैं ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ सोजीवचेतन तिनइंद्रियोंका प्रेरकनहींहै ॥ किंतु तेउक्तदेवताहीं  
 प्रेरकहैं ॥ तेदेवता ताजीवकेपापकर्मकेवशतैं प्रतिकूलअर्थविषेभी तिनइंद्रियोंकूंप्रवृत्तकरैहैं इति ॥ तहां इ



तर्नैपर्यंत सप्तदशलिंगरूपसूक्ष्मशरीरकानिरूपणकन्या ॥ अब तैत्तिरीयउपनिषदविषे कथनकन्येजे कार्य  
 कारणरूप अन्नमयादिकपंचकोशहैं तिनोंका स्थूल सूक्ष्म कारण इनतीनशरीरोंविषे अंतर्भाववर्णनकरे  
 हैं ॥ तहां अन्नमय १ प्राणमय २ मनोमय ३ विज्ञानमय ३ आनंदमय ५ यहपंच आत्माकेआच्छाद  
 कहोणेतैं कोशकह्येजावैहैं ॥ तहां आगेकथनकरीयेंगाजोस्थूलशरीर सो अन्नमयकोश कह्याजावैहै ॥  
 सोअन्नमयकोशभी कार्य कारण इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां अस्मदादिकजीवोंका व्य  
 टिस्थूलशरीरतों कार्यरूपअन्नमयकोशहै ॥ और विराट्का समष्टिस्थूलशरीरतों कारणरूपअन्नमयको  
 शहै ॥ इसप्रकार आगे प्राणमयादिककोशोंकाभी व्यष्टिसमष्टिरूपतैं कार्यकारणभाव जानिलेणा ॥  
 और पूर्वकथनकन्याजो सप्तदशलिंगरूपसूक्ष्मशरीरहै सो प्राणमय मनोमय विज्ञानमय यहतीनकोशरू  
 पहै ॥ तहां पूर्वउक्त वाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंसहित जोप्राणहै सो प्राणमयकोश कह्याजावैहै ॥ और  
 तिनकर्मइंद्रियोंसहित जोमनहै सो मनोमयकोश कह्याजावैहै ॥ और पूर्वउक्त श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रि  
 योंसहित जाबुद्धिहै सो विज्ञानमयकोश कह्याजावैहै ॥ यहविज्ञानमयकोशहीं आत्माविषे कर्त्तापणे  
 काउपाधिहै ॥ अर्थात् वास्तवतैंअकर्त्ताहूआभीआत्मा इसविज्ञानमयकोशविशिष्टहूआ कर्त्ताकह्याजा  
 वैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (विज्ञानंयज्ञंतनुतेकर्माणितनुतेपिच) अर्थयह ॥ यहविज्ञानमयउपाधिवालाजीवात्मा  
 हीं यज्ञकूंकरेहै तथासर्वकर्मोंकूंकरेहै इति ॥ अब पंचमेआनंदमयकोशकेकहणेवासतै प्रथम ताअंतःकर  
 णकेसात्विकवृत्तिकाविभाग कहेहैं ॥ तहां ताउक्तअंतःकरणकीसात्विकवृत्ति दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एक  
 तों निश्चयवृत्ति ॥ दूसरी सुखाकारवृत्ति ॥ तहां निश्चयवृत्तिवालाअंतःकरणतों बुद्धिकह्याजावैहै ॥ ति  
 सबुद्धिकूं विज्ञानमयकोशरूपहोणेतैं ताबुद्धिउपाधिवाला जीवात्मा कर्त्ता ज्ञाता प्रमाता कह्याजावैहै ॥



तत्त्वा०

॥ ४६ ॥

परि०

१

और दूसरी सुखाकारवृत्तिवाला अंतःकरण आत्माविषे भोक्तापणेका उपाधि है ॥ अर्थात् वास्तवतः अभोक्ताहू आभी आत्मा ता सुखाकारवृत्तिवाले अंतःकरण करिके विशिष्ट हू आ भोक्ता कह्या जावै है ॥ तहां ते सुखाकारवृत्तियां तैत्तिरीय उपनिषद विषे प्रिय मोद प्रमोद नाम करिके कथन करी हैं ॥ तहां इष्टवस्तु के दर्शन जन्य सुखकूं प्रिय कहै हैं ॥ और ता इष्टवस्तु के प्राप्ति जन्य सुखकूं मोद कहै हैं ॥ और ता इष्टवस्तु के भोग जन्य सुखकूं प्रमोद कहै हैं ॥ सो भोक्तापणेका उपाधिरूप अंतःकरण हीं अज्ञान पर्यंत आनंदमय कोश कह्या जावै है ॥ ता आनंदमय कोश रूप उपाधिवाला चेतन आत्मा भोक्ता कह्या जावै है ॥ और केई कग्रंथकार तों के बल अज्ञान कूं हीं आनंदमय कोश कहै हैं ॥ इस आनंदमय कोश का कारण शरीर विषे अंतर्भाव है ॥ इन पंचकोशों का विस्तार तै निरूपण तों आत्मपुराण के दशम अध्याय विषे हम नै कन्या है ॥ सो तहां सै जानिले पा इति ॥ अब पूर्व उक्त सूक्ष्म शरीर का विभाग कहै हैं ॥ तहां सो सप्तदशलिंग रूप सूक्ष्म शरीर समष्टि व्यष्टि इस भेद करिके दो प्रकार का होवै है ॥ तहां पूर्व कथन कन्येजे अपंचीकृत आकाशादिक पंचभूत हैं ॥ तथा तिन भूतों के कार्य रूप जे इंद्रिय अंतःकरण प्राण रूप सप्तदशलिंग हैं ॥ ते सर्व मिलिके समष्टि सूक्ष्म शरीर कह्या जावै है ॥ ता समष्टि सूक्ष्म शरीर रूप उपाधिवाला चैतन्य हिरण्यगर्भ प्राण सूत्रात्मा इन नामों करिके कह्या जावै है ॥ तहां सो समष्टि सूक्ष्म शरीर ज्ञानशक्तिवाले अंतःकरण ज्ञान इंद्रियों करिके घटित होणें तै ज्ञानशक्तिवाला है ॥ या कारण तै ता शरीर उपहित चैतन्यकूं हिरण्यगर्भ कहै हैं ॥ और सो समष्टि सूक्ष्म शरीर क्रियाशक्तिवाले प्राण कर्म इंद्रियों करिके घटित होणें तै क्रियाशक्तिवाला है ॥ या कारण तै ता शरीर उपहित चैतन्यकूं प्राण कहै हैं ॥ और पटविषे सूत्र की न्याईं सो समष्टि सूक्ष्म शरीर सर्व ब्रह्मांड विषे व्यापक है ॥ या कारण तै ता शरीर उपहित चैतन्यकूं सूत्रात्मा कहै हैं ॥ अथवा पूर्व उक्त अपंचीकृत पंचभूतों तै एक पृथक् हीं

॥ ४६ ॥



सर्वत्रव्यापकलिंगशरीर उत्पन्नहोवैहै ॥ सोलिंगशरीरहीं समष्टि कहाजावैहै ॥ तासमष्टिलिंगशरीरउप  
 हितचैतन्य हिरण्यगर्भ कहाजावैहै इति ॥ अब प्रसंगतैं समष्टिका तथाव्यष्टिका लक्षण कहेहैं ॥ तहां  
 जैसे नैयायिकोंकेमतविषे गोत्वजाति सर्वगोव्यक्तियोंविषे अनुस्यूतहोइकैरहेहै ॥ तैसे सर्वव्यष्टिव्यक्ति  
 योंविषे जो अनुस्यूतहोइकैरहेहै ॥ सो समष्टि कहाजावैहै ॥ तहांप्रमाण ॥ ( तेभ्यःसमभवत्सूत्रंलिंगं  
 सर्वात्मकंमहत् ) अर्थयह ॥ तिनअपंचीकृतपंचभूतोंतैं एकसर्वत्रव्यापक सूत्रनामा समष्टिसूक्ष्मशरीर उ  
 त्पन्नहोताभया ॥ सोसूक्ष्मशरीर परमात्माकाबोधकहोणेतैं लिंग कहाजावैहै ॥ और इसीसमष्टि  
 सूक्ष्मशरीरकूं सांख्यशास्त्रवाले महत्त्व इसनामकरिकैकहेहैं इति ॥ ईहां केईकग्रंथकारतों यहकहेहैं ॥  
 जैसे अनेकवृक्षोंकेसमुदायकूं वनकहेहैं ॥ तैसे सर्वव्यष्टिलिंगशरीरोंकाजोसमुदायहै सो समष्टि कहा  
 जावैहै ॥ और एकएकवृक्षकीन्यांई प्रत्येकलिंगशरीर व्यष्टि कहाजावैहै इति ॥ तहां जैसे एकगोव्य  
 क्ति दूसरीगोव्यक्तियोंविषे अनुस्यूतहोवैनहीं ॥ किंतु तिनोंतैंव्यावृत्तहोवैहै ॥ तैसे एकलिंगशरीर दूस  
 रेलिंगशरीरोंविषे अनुस्यूतहोवैनहीं ॥ किंतु तिनोंतैं व्यावृत्तहोवैहै ॥ यहव्यावृत्तपणाहीं तालिंगशरीर  
 विषे व्यष्टिपणाहै ॥ ऐसेव्यष्टिलिंगशरीरकरिकैउपहितहूआ चैतन्य तैजस कहाजावैहै ॥ तहां तेजकावि  
 काररूपजोअंतःकरणहै तउपहितहोणेतैं चैतन्य तैजसकहाजावैहै ॥ तहां जैसे घटत्वादिकजातिका त  
 थाघटादिकव्यक्तिका तादात्म्यहोवैहै ॥ तैसे तासमष्टिलिंगशरीरका तथाव्यष्टिलिंगशरीरकाभी तादात्म्य  
 हींहोवैहै ॥ तासमष्टिव्यष्टिलिंगशरीररूपदोनोंउपाधियोंकेतादात्म्यहूए तउपहित सूत्रात्मा तैजस इन  
 दोनोंकाभी तादात्म्यहींहोवैहै ॥ तहां ( भिन्नत्वेसत्यऽभिन्नसत्ताकत्वं तादात्म्यं ) अर्थयह ॥ जेदोपदार्थ  
 व्यवहारदृष्टितैं परस्परभिन्नहूएभी वास्तवतैं एकसत्तावालेहोवैहैं ॥ तिनदोपदार्थोंका तादात्म्यसंबंध होवै



तत्त्वा०

॥ ४७ ॥

परि०

१

है ॥ जैसे तंतुपटादिकोंका तथागुणगुणीआदिकोंका तादात्म्यसंबंधहै ॥ तहां हिरण्यगर्भकीअभेदउपासनाकरिकै इसपुरुषकूं ताहिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिरूपफलहोवैहै ॥ याकारणतैं ईहां समष्टिव्यष्टिसूक्ष्मशरीररूपउपाधिका तादात्म्यवर्णनकरिकै ताहिरण्यगर्भतैंजसदोनोंकातादात्म्य वर्णनकन्याहै ॥ यातैं सोवर्णननिष्फलनहींहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ नैयायिकोंने जातिव्यक्तिदोनोंका तादात्म्यसंबंध अंगीकारकन्यानहीं ॥ किंतु समवायसंबंधहीं अंगीकारकन्याहै ॥ यातैं जातिव्यक्तिकेतादात्म्यदृष्टांतकरिकै समष्टिव्यष्टिका तादात्म्यमानणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ लक्षण प्रमाण इनदोनोंकरिकैहीं वस्तुकीसिद्धिहोवैहै ॥ यहशास्त्रकारोंकानियमहै ॥ और तासमवायका कोईलक्षण तथाप्रमाण संभवतानहीं ॥ यातैं सोसमवाय अंगीकारकरणेयोग्यनहींहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ( नित्यसंबंधः समवायः ) अर्थयह ॥ नित्य ऐसाजोसंबंधहै सो समवायकह्याजावैहै ॥ यहसमवायकालक्षण विद्यमानहै ॥ तथा तासमवायविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणभी विद्यमानहैं ॥ यातैं तासमवायके लक्षणप्रमाणकाअभावकहणा असंगतहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ( एकमेवाद्वितीयंब्रह्म ) इत्यादिकश्रुतियोंनैं ब्रह्मकूं अद्वितीय कह्याहै ॥ साब्रह्मकीअद्वितीयरूपता समवायकूंनित्यमाननेविषे संभवतीनहीं ॥ यातैं ताअद्वैतश्रुतितैंविरुद्धहोणेतैं सोसमवायकानित्यपणा संभवतानहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तुमारेमतविषेभी अज्ञान तथाताअज्ञानकाचेतनकेसाथिसंबंध इत्यादिकपदार्थ अनादिमानेहैं ॥ तथा भावरूपमानेहैं ॥ और जोजोपदार्थ अनादिभावरूपहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ नित्यहींहोवैहै ॥ यातैं तिनअज्ञानादिकनित्यपदार्थोंकेविद्यमानहूए सोब्रह्मकाअद्वितीयपणा कैसेसंभवेगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ वेदांतसिद्धांतविषे तेअज्ञानादिक ब्रह्मविषेअध्यस्तमानेहैं ॥ याकारणतैं ताअधिष्ठानब्रह्मतैं तेअज्ञानादिक भिन्नसत्तावालेनहींहैं ॥ यातैं तिनअ

॥ ४७ ॥



ज्ञानादिकोंके विद्यमान हूँ एभी सो ब्रह्मका अद्वितीयपणा संभवै है ॥ और ते अज्ञानादिक अनादिभावरूप हूँ  
 एभी ब्रह्मविषे आरोपित हैं ॥ यातैं ता ब्रह्मके ज्ञान करिकै ते अज्ञानादिक निवृत्त होइ जावैं हैं ॥ अनारोपित  
 अनादिभावपदार्थ हीं नित्य होवैं हैं ॥ सा अनारोपित अनादिभावरूपता एक अधिष्ठान ब्रह्मविषे हीं हैं ॥ तिन  
 अज्ञानादिकों विषे हैं हीं ॥ यातैं तुमारे समवाय की न्यां ई ते अज्ञानादिक भी अनित्य हीं हैं ॥ यातैं नित्य सं  
 बंध समवाय है यह समवाय कालक्षण संभवतान हीं ॥ किंवा युक्ति सैं विचार करिकै देखिये तौ भी ता सम  
 वाय का स्वरूप सिद्ध होतान हीं ॥ तहां तुम नैयायिकों नैं गुणगुणीका तथा क्रिया क्रियावालेका तथा अव  
 यव अवयवीका तथा जातिव्यक्तिका तथा विशेष नित्यद्रव्योंका समवाय संबंध अंगीकार कन्या है ॥ सो स  
 मवाय तिन गुणगुणी आदिक आपणे संबंधीयों तैं भिन्न है अथवा अभिन्न है ॥ तहां प्रथम भिन्न पक्ष जो अं  
 गीकार करो ॥ ताके विषे भी यह कह्या चाहिये ॥ सो समवाय तिन संबंधीयों विषे किस संबंध करिकै रहे है ॥  
 संयोग संबंध करिकै रहे है ॥ अथवा समवाय संबंध करिकै रहे है ॥ अथवा किसी अन्य संबंध करिकै रहे है ॥  
 तहां प्रथम संयोग पक्ष तौ संभवतान हीं ॥ काहेतैं दो द्रव्यों का हीं संयोग संबंध होवैं है ॥ और सो समवाय  
 द्रव्य हैं हीं ॥ तैसे ते गुणकर्मादिक भी द्रव्य हैं हीं ॥ यातैं ता समवाय का तिन संबंधीयों विषे संयोग संब  
 ध करिकै वर्तना संभवतान हीं ॥ और सो समवाय तिन आपणे संबंधीयों विषे समवाय संबंध करिकै रहे है  
 यह द्वितीय पक्ष जो अंगीकार करेंगे ॥ तौ आत्मा श्रय १ अन्योन्या श्रय २ चक्रिका ३ अनवस्था ४  
 यह चारि दूषण प्राप्त होवैंगे ॥ सो दिखावैं हैं ॥ सो समवाय जिस समवाय करिकै आपणे संबंधीयों विषे रहे है ॥  
 सो समवाय ता समवाय तैं अभिन्न है अथवा भिन्न है ॥ जो कहो अभिन्न है ॥ तौ आत्मा श्रय दोष की प्राप्ति हो  
 वैंगी ॥ तहां ता समवाय कूं आपणी स्थिति विषे जो आपणी अपेक्षा है यह हीं आत्मा श्रय दोष है ॥ और



तत्त्वा०

॥ ४८ ॥

परि०

१

जोकहो सोसमवाय भिन्नहै ॥ तौं सोद्वितीयसमवायभी ताप्रथमसमवायकीन्याई आपणेसंबंधीयोंविषे कि  
 सीसमवायकरिकैहींरहैगा ॥ तहां सोद्वितीयसमवाय जोआपणेकरिकैहींआपरहैगा ॥ तौं पूर्वकीन्याई  
 पुनःआत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ और सोद्वितीयसमवाय जोप्रथमसमवायकरिकैरहैगा तौं अन्यो  
 न्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ तहां प्रथमसमवायतौं द्वितीयसमवायकरिकैरह्या ॥ औ सोद्वितीयसम  
 वाय ताप्रथमसमवायकरिकैरह्या ॥ यहहीं अन्योन्याश्रयदोषहै ॥ और इसअन्योन्याश्रयदोषकेनिवृत्त  
 करनेवासतै सोद्वितीयसमवाय किसीतीसरेसमवायकरिकैरहेहै यहजोमानोंगे ॥ तौं सोद्वितीयसमवाय  
 भी जोतौं आपणेकरिकैआपरहैगा ॥ तौं पूर्वकीन्याई पुनः आत्माश्रयदोष प्राप्तहोवैंगी ॥ और जो  
 द्वितीयसमवायकरिकैरहैगा ॥ तौं पूर्वकीन्याई पुनः अन्योन्याश्रयदोष प्राप्तहोवैंगी ॥ और सोद्वितीय  
 समवाय जोप्रथमसमवायकरिकैरहैगा ॥ तौं चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ तहां प्रथमसमवायकूं आ  
 पणीस्थितिवासतै द्वितीयसमवायकीअपेक्षा ॥ और ताद्वितीयसमवायकूं आपणीस्थितिवासतै तृतीय  
 समवायकीअपेक्षा ॥ और तातृतीयसमवायकूंआपणीस्थितिवासतै पुनःताप्रथमसमवायकीअपेक्षा ॥  
 यहहीं चक्रिकादोषहै ॥ और ताचक्रिकादोषकेनिवृत्तकरनेवासतै जो तातृतीयसमवायकीस्थितिवास  
 तै चतुर्थसमवाय ताचतुर्थकीस्थितिवासतै पंचमसमवाय इसप्रकार विश्रांतितैरहित समवायोंकीधारा  
 मानोंगे ॥ तौं अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ यातै सोसमवाय समवायसंबंधकरिकै आपणेसंबंधी  
 योंविषेरहेहै यहद्वितीयपक्ष संभवतानहीं ॥ और सोसमवाय अन्यकिसीसंबंधकरिकैरहेहै यहतृतीयपक्ष  
 जोअंगीकारकरौ ॥ सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं संयोग समवाय इनदोनोंसंबंधोंतैंभिन्न तीसराकोई  
 संबंध तुमारेसैंनिरूपणहोइसकतानहीं ॥ जोकहो सोसमवाय स्वरूपसंबंधकरिकैरहेहै ॥ सोभी संभव

॥ ४८ ॥



तानहीं ॥ जिसकारणतैं तास्वरूपसंबंधविषे कोईभीप्रमाणनहींहै ॥ और जोकदाचित् तुम तास्वरूप  
 संबंधकूंअंगीकारकरोगे ॥ तौं जिनगुणगुणीआदिकोंका तुमोंनैं समवायसंबंध मान्याहै ॥ तिनगुणगु  
 णीआदिकोंकाभी सोस्वरूपसंबंधहीं संभवहोइसकेहै ॥ यातैं तहां समवायकोसिद्धिहींनहींहोवैंगी ॥  
 और सोसमवाय आपणेसंबंधीयोंतैंअभिन्नहै यहआदिद्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरौ ॥ सोभी संभवता  
 नहीं ॥ काहेतैं तुमनैयायिकोंनैं तासमवायकूं तिनगुणगुणीआदिकपदार्थोंतैं भिन्नहींपदार्थमान्याहै ॥  
 तिसतुमारेसिद्धांतकीहानिहोवैंगी ॥ यातैं कोईप्रकारकरिकैभी तासमवायकेस्वरूपकीसिद्धिहोतीनहीं ॥  
 किंवा प्रमाणकेअभावहोणेतैंभी तासमवायकोसिद्धि होइसकतीनहीं ॥ तहां तासमवायविषे प्रत्यक्षप्र  
 माणभी संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं तुमोंनैं तासमवायकूं अतिइंद्रियहीं मान्याहै ॥ अतिइंद्रियअर्थ  
 विषे इंद्रियरूपप्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ और ( घटेरूपंसमवेतं ) यहसमवायविषयकप्रतीतितों  
 केवल तुमोंनहीं कल्पनाकरीहै ॥ सर्वशास्त्रवालोंकूं साप्रतीति संमतनहींहै ॥ यातैं ताप्रतीतिकूं प्रमा  
 णरूपताहींनहींहै ॥ इसप्रकार हेतुरूपलिंगकेअभावतैं तासमवायविषे अनुमानप्रमाणभी संभवतानहीं ॥  
 ॥ **॥ शंका ॥** ॥ ( रूपीघट इतिविशिष्टबुद्धिः विशेषणविशेष्यसंबंधविषया विशिष्टबुद्धित्वात् दंडी  
 पुरुषइतिबुद्धिवत् ) ॥ अर्थयह ॥ रूपवालाघटहै यहविशिष्टबुद्धि रूपविशेषणके तथाघटविशेष्यके संबंध  
 कूंविषयकरेहै ॥ विशिष्टबुद्धिहोणेतैं ॥ लोकविषे जाजाविशिष्टबुद्धिहोवैहै ॥ सासा विशेषणविशेष्यदो  
 नोंकेसंबंधकूं अवश्य विषयकरेहै ॥ जैसे दंडीपुरुषः यहविशिष्टबुद्धि दंडरूपविशेषणके तथापुरुषरूपविशे  
 ष्यके संयोगसंबंधकूंविषयकरेहै ॥ तैसे रूपवान्घटः यहविशिष्टबुद्धिभी तारूपगुणरूपविशेषणके तथाता  
 घटरूपविशेष्यके समवायसंबंधकूंहींविषयकरेहै ॥ इसप्रकारकेअनुमानप्रमाणकेविद्यमानहूए तासमवाय



तत्त्वा०

॥ ४९ ॥

परि०

१

विषे अनुमानप्रमाणका अभाव कहना असंगत है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ पूर्वउक्तरीतिसें तासमवायके स्वरूपकीहींसिद्धिहोतीनहीं ॥ यातें इसअनुमानकरिकै तारूपघटके तादात्म्यसंबंधकीहींसिद्धिहोवैहै ॥ तासमवायकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ इसप्रकार लक्षण प्रमाण दोनोंके अनिरूपणहूए तासमवायकीसिद्धि हो इसकैनहीं ॥ तासमवायके असिद्धहूए ताजातिव्यक्तिका तादात्म्यसंबंधहींसिद्धहोवैहै ॥ यातें ताजाति व्यक्तिके तादात्म्यदृष्टांतकरिकै तासमष्टिव्यष्टिसूक्ष्मशरीरोंका तादात्म्य संभवैहै ॥ ईहां केईकनैयायिक स मवायकूं अतिइंद्रिय मानेहैं ॥ और केईकनैयायिक तासमवायकूं प्रत्यक्षमानेहैं ॥ तथा केईकनैयायि क तासमवायकूं एकमानेहैं ॥ और केईकनैयायिक तासमवायकूं नानामानेहैं ॥ तेसर्वनैयायिकोंके मत न्यायप्रकाशकेचतुर्थपरिच्छेदविषे समवायनिरूपणविषे विस्तारतेंनिरूपणकरेहैं ॥ जिसकूंजानणेकी इच्छाहोवै ॥ तिसनें तहांसैंजानिलेणे इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वआपनें समष्टिसूक्ष्मशरीरका तथा व्यष्टिसूक्ष्मशरीरका तादात्म्य वर्णनकन्या ॥ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतें कार्यका आपणेउपादानकार णविषे तादात्म्यहोवैहै ॥ जैसे पटरूपकार्यका आपणेतंतुरूपउपादानकारणविषे तादात्म्यहोवैहै ॥ और ताव्यष्टिसूक्ष्मशरीरका सोसमष्टिसूक्ष्मशरीर उपादाननहींहै ॥ किंतु पूर्वउक्तरीतिसें आकाशादिकपंचसू क्ष्मभूतहीं उपादानहैं ॥ यातें समष्टिव्यष्टिसूक्ष्मशरीरोंका तादात्म्यवर्णनकरणा असंगतहै ॥ ॥ समा धान ॥ ॥ जेअपंचीकृतसूक्ष्मभूत ताव्यष्टिसूक्ष्मशरीरकेउपादानहैं ॥ तेहींसूक्ष्मपंचभूत तासमष्टिसूक्ष्म शरीरकेअंतर्गतहैं ॥ यातें तासमष्टिसूक्ष्मशरीरविषे ताव्यष्टिसूक्ष्मशरीरकाउपादानपणा संभवैहै ॥ ताउ पादानउपादेयभावकेसंभवहूए तिनदोनोंका तादात्म्यभीसंभवैहै इति ॥ अब ताउक्तसूक्ष्मशरीरकूं पुर्य ष्टकरूपकरिकैवर्णनकरेहैं ॥ तहां सोपूर्वउक्तसूक्ष्मशरीरहीं अविद्या १ काम २ कर्म ३ इनतीनोंकरिकैयु

॥ ४९ ॥



कहूँ आ पुर्यष्टक इसनामकरिकै कहा जावै है ॥ तहां अष्टपुरियोंके समूहकानाम पुर्यष्टक है ॥ ते अष्टपुरि  
 यहैं ॥ पंचज्ञानइंद्रिय १ पंचकर्मइंद्रिय २ चतुष्टयअंतःकरण ३ पंचप्राण ४ पंचसूक्ष्मभूत ५ अविद्या  
 ६ काम ७ कर्म ८ ॥ तहां इंद्रिय अंतःकरण प्राण पंचभूत इनोकातों पूर्वनिरूपणकरिआये हैं ॥  
 यातें अब अविद्या काम कर्म इनतीनोंकानिरूपणकरे हैं ॥ ईहां अविद्याशब्दकरिकै कार्यअविद्या ग्र  
 हणकरणी ॥ तहां अन्यविषे अन्यबुद्धिकानाम कार्यअविद्या है ॥ साकार्यअविद्याभी चारिप्रकारकी हो  
 वै है ॥ अनित्यविषे नित्यत्वबुद्धि १ अशुचिविषे शुचित्वबुद्धि २ असुखविषे सुखबुद्धि ३ अनात्मविषे आ  
 त्मबुद्धि ४ ॥ तहां कर्मउपासनाकाफलरूपहोनेतें अनित्य ऐसेजे स्वर्गब्रह्मलोकादिकहैं ॥ तिनोंविषे  
 जानित्यत्वबुद्धि है सा प्रथमअविद्याकही जावै है ॥ और मलमूत्रादिकोंकरिकै पूर्णहोनेतें अशुचि ऐसा  
 जो आपणाशरीर है तथा स्त्रीपुत्रादिकोंका शरीर है ॥ तिनशरीरोंविषे जाशुचित्वबुद्धि है सा दूसरी अवि  
 द्या कही जावै है ॥ और पीडारूपदुःखविषे जासुखबुद्धि है ॥ तथा तादुःखके साधनब्रह्महत्यासुरापानादि  
 कोंविषे जासुखसाधनबुद्धि है ॥ सा तीसरी अविद्या कही जावै है ॥ और अनात्मरूपदेहइंद्रियादिकोंवि  
 षे जाअहंइसप्रकारकी आत्मबुद्धि है ॥ सा चतुर्थी अविद्या कही जावै है इति ॥ और यहवस्तु हमारे कृपा  
 सहो वै याप्रकारकी जाअंतःकरणकीवृत्तिविशेष है ताकानाम राग है ॥ तारागकाहीनाम काम है ॥ और  
 कर्मतों संचित १ आगामी २ प्रारब्ध ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवै है ॥ सोतीनप्रकारकाहीक  
 र्म विहित १ निषिद्ध २ इसभेदकरिकै पुनः दोप्रकारकाहोवै है ॥ तहां श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं जिसकर्म  
 केकरणेकाविधानकन्या है ॥ सोकर्म विहित कहा जावै है ॥ जैसे संध्यावंदन अग्निहोत्र आदिकर्म  
 है ॥ और ताश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं जिसकर्मकेकरणेका निषेधकन्या है ॥ सोकर्म निषिद्ध कहा जावै



तत्त्वा०

॥ ५० ॥

परि०

१

हे ॥ जैसे ब्रह्महत्यासुरापानादिककर्महै ॥ तहां ताविहितकर्मतैंतों इसपुरुषविषे धर्म उत्पन्नहोवैहै ॥ और तानिषिद्धकर्मतैं अधर्म उत्पन्नहोवैहै ॥ ताधर्मअधर्मकूंहीं शास्त्रविषे अदृष्ट अपूर्व इसनामकरिकैकहे हैं ॥ तहां सोधर्मरूपअदृष्टतों इसपुरुषकूं सुखरूपफलकीप्राप्तिकरेहै ॥ और सोअधर्मरूपअदृष्ट इसपुरुष कूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरेहै ॥ अब संचित आगामी प्रारब्ध इनतीनोंकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ तहां पूर्व जन्मोंविषे वा इसजन्मविषे कन्याहूआजोकर्म आपणेफलकूंनदेकरिकै केवल अदृष्टरूपकरिकैरहेहै ॥ सो कर्म संचितकह्याजावैहै ॥ और तत्त्वज्ञानतैंपश्चात्कन्याजोकर्महै ॥ सोकर्म आगामी कह्याजावैहै ॥ और तिनसंचितकर्मोंतैंनिकसिकै जोकर्म इसवर्त्तमानशरीरका आरंभकहोवैहै ॥ सोकर्म प्रारब्ध क ह्याजावैहै इति ॥ अब प्रसंगतैं तिनकर्मोंकेनाशकावर्णनकरेहैं ॥ तहां संचित आगामी इनदोनोंकर्मों कातों फलकेभोगकरिकैनाशहोवैहै ॥ अथवा विरोधीकर्मकरिकैनाशहोवैहै ॥ अथवा ब्रह्मज्ञानकरिकै नाशहोवैहै ॥ यद्यपि क्रियारूपकर्मका ताफलभोगादिकोंतैंविना आपेहीनाशहोइजावैहै ॥ तथापि ई हांकर्मशब्दकरिकै ताकर्मजन्यधर्मअधर्मरूपअदृष्टका ग्रहणकरणा ॥ ताअदृष्टका तिनभोगादिकोंकरि कैहीनाशहोवैहै ॥ और प्रारब्धकर्मकातों केवल फलकेभोगकरिकैहीनाशहोवैहै ॥ तत्त्वज्ञानकरिकै वा विरोधीकर्मकरिकै नाशहोतानहीं ॥ तहां ( अवश्यमेवभोक्तव्यं कृतंकर्मशुभाशुभं नाभुक्तंक्षीयतेकर्म कल्पकोटिशतैरपि ) अर्थयह ॥ इसपुरुषनैं कन्याहूआ शुभकर्म वा अशुभकर्म अवश्यभोगीताहै ॥ कल्प कोटिशतोंकरिकैभी भोगतैंविना सोकर्म नाशहोतानहीं ॥ इत्यादिकवचनतों भोगकरिकै ताकर्मका नाश कहेहैं ॥ और ( प्रायश्चित्तैरपेत्येनोयदज्ञानकृतंभवेत् ) अर्थयह ॥ अज्ञानकरिकैकन्याजोपापहै ॥ सोपाप प्रायश्चित्तोंकरिकैनिवृत्तहोवैहै ॥ इत्यादिकवचन प्रायश्चित्तरूपविरोधीकर्मकरिकैभी तापापकर्म

॥ ५० ॥

कानाश कहेहैं ॥ याकेविषेभी इतनीविशेषताहै ॥ पापकर्मोंकातों प्रायश्चित्तैरपेत्येनोयदज्ञानकृतंभवेत्



कानाश कहेहैं ॥ याकेविषेभी इतनीविशेषताहै ॥ पापकर्मोंकातों प्रायश्चित्तरूपविरोधीकर्मकरिके ना  
 शहोवैहै ॥ और पुण्यकर्मोंका कर्मनाशानदीकेजलस्पर्शादिरूपविरोधीकर्मकरिके नाशहोवैहै ॥ और  
 ( क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे । ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुतेतथा ) अर्थयह ॥ अहंब्रह्मा  
 स्मि याप्रकारकेब्रह्मसाक्षात्कारहूए इसविद्वान्पुरुषके प्रारब्धकर्मतैंभिन्नसर्वकर्म नाशहोवैहैं ॥ और ज्ञा  
 नरूपअग्नि सर्वकर्मोंकूं भस्मकरेहै ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचन ब्रह्मज्ञानकरिकेभी ताकर्मकानाशकहे  
 हैं ॥ और ( प्रारब्धंभोगतो नश्येत् । भोगेनत्वितरेक्षपयित्वासंपद्यते ) अर्थयह ॥ प्रारब्धकर्मतों केवल  
 भोगकरिकेहींनिवृत्तहोवैहै ॥ और विद्वान्पुरुष फलकेभोगतैंप्रारब्धकर्मोंकानाशकरिके शरीरपाततैंअ  
 नंतर निर्विशेषब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इत्यादिकवचनतों ताप्रारब्धकर्मका केवलभोगकरिकेहींनाश  
 कहेहैं ॥ यातैं भोगादिकोंकरिके सोकर्मकानाश उक्तश्रुतिस्मृतिआदिकप्रमाणोंकरिकेहींसिद्धहै ॥  
 ॥ ॥ शंका ॥ ॥ संचितकर्मोंकातों प्रायश्चित्तकरिके वा तत्त्वज्ञानकरिके नाशहोवो ॥ परंतु तत्त्व  
 ज्ञानतैंअनंतरकन्येहूए जेआगामिकर्महैं ॥ तिनोंका तिसतत्त्वज्ञानकरिकेनाश कैसेसंभवेगा ॥ ॥ स  
 माधान ॥ ॥ ज्ञानवान्पुरुषकूं ताब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं तिनआगामिकर्मोंका लेपहोतानहीं ॥ याकार  
 णतैं तेआगामिकर्म तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकेप्रति फलकाजनकहोतेनहीं ॥ यहहीं तिनआगामिकर्मोंका  
 नाश जानणा ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवान्नेभी ब्रह्मसूत्रोंविषेकहीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ ( तदधिगमउ  
 त्तरपूर्वाघयोरश्लेशविनाशौतद्व्यपदेशात् ) अर्थयह ॥ ब्रह्मसाक्षात्कारकेहूए ज्ञानवान्पुरुषके पूर्वलेसंचित  
 पापकर्मोंकातों नाशहोइजावैहै ॥ और ज्ञानतैंउत्तरकन्येहूए आगामिपापोंका ताज्ञानवानकूं लेपहीं  
 नहींहोवैहै ॥ यहदोनोंवार्त्ता श्रुतिविषे कथनकरीहैं ॥ तहांश्रुति ॥ ( तद्यथेपीकातूलममौप्रोतंप्रदूयेतैवं



तत्त्वा०

॥ ५१ ॥

परि०

१

हास्यसर्वेपाप्मानः प्रदूयन्ते ) अर्थ यह ॥ जैसे मुंजकी इषीका का तूल अग्निविषे पाया हुआ शीघ्र ही दग्ध हो  
 जावे है ॥ तैसे इस विद्वान् पुरुष के पूर्वले सर्वसंचित पापकर्म ब्रह्मज्ञानरूप अग्निकरि कै शीघ्र ही दग्ध हो  
 जावे है ॥ यह श्रुति तो तत्त्ववेत्ता पुरुष के पूर्वले संचित पापकर्मों के नाश कहे है ॥ और ( यथा पुष्करपलाश  
 आपो न श्लिष्यन्त एवमेवं विदिपापं कर्म न श्लिष्यते ) अर्थ यह ॥ जैसे जलविषे स्थित कमल के पत्र कूं सो जल  
 लिपायमान करता नहीं ॥ तैसे इस विद्वान् पुरुष कूं पापकर्म लिपायमान करते नहीं ॥ यह श्रुति ता विद्वान्  
 पुरुषविषे आगामि पापकर्म का अलेप पणा कहे है ॥ तहां उक्त सूत्रविषे तथा श्रुतिविषे स्थित जो पापश  
 ब्द है ॥ सो पापशब्द पुण्यकर्म का भी उपलक्षण जानना ॥ जिस कारण तैं ( सुहृदः साधुकृत्यं द्विषन्तः पाप  
 कृत्यं ) इस श्रुतिविषे तत्त्ववेत्ता पुरुष के आगामि पुण्यकर्मों की सेवा करणे हारे भक्तजनों कूं प्राप्ति की है ॥  
 और पापकर्मों की द्वेष करणे हारे निंदक पुरुषों कूं प्राप्ति की है ॥ या तैं ता पापशब्द करि कै पुण्यपाप दोनों  
 का ग्रहण करणा युक्त है इति ॥ किंवा ब्रह्मसाक्षात्कार करि कै विद्वान् पुरुष के केवल कर्मों का ही नाश नहीं हो  
 वै है ॥ किंतु अविद्यादिक पंचक्लेशों का भी नाश हो वै है ॥ तहां योगशास्त्रविषे अविद्या १ अस्मिता २ रा  
 ग ३ द्वेष ४ अभिनिवेश ५ यह पंचक्लेश कहे हैं ॥ तहां कार्य अविद्या कारण अविद्या यह दो प्रकार की अ  
 विद्या हो वै है ॥ सा दोनों प्रकार की अविद्या पूर्वनिरूपण करि आये हैं ॥ और अहंकार का कारण रूप जासू  
 क्षम अवस्था है सा अस्मिता कही जावे है ॥ इसी अस्मिता कूं सांख्यमतवाले तथा योगमतवाले महत्तत्त्व  
 इस नाम करि कै कहे हैं ॥ और वेदांतशास्त्रविषे ता अस्मिता कूं सामान्य अहंकार इस नाम करि कै कथन करे  
 हैं ॥ और यह वस्तु हमारे कूं प्राप्त होवै या प्रकार की जा अंतःकरण की वृत्ति विशेष है ताका नाम राग  
 है ॥ और क्रोध का नाम द्वेष है ॥ और अहंममरूप तैं ग्रहण करने जे देहादिक पदार्थ हैं ॥ तिनों के त्याग

॥ ५१ ॥



कूं नहीं सहारणा याकानाम अभिनिवेशहै ॥ इन पंचकेशोंका विस्तारतें निरूपणतों आत्मपुराणके अष्टमें अध्यायविषे कन्याहै ॥ सो तहांसैं जानिलेणा ॥ इन पंचकेशोंकीभी ताब्रह्मज्ञानकरिकैहीं निवृत्ति होवैहै ॥ तहां स्मृति ॥ ( ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः ) अर्थ यह ॥ यह अधिकारी पुरुष स्वयं प्रकाश परब्रह्म कूं अहं ब्रह्मास्मि या प्रकार साक्षात्कार करिकै अविद्यादिक पंचकेशरूपपाशोंतें मुक्त होवैहै इति ॥ तहां इतने पर्यंत सूक्ष्मशरीरके उत्पत्तिका प्रकार वर्णन कन्या ॥ अब स्थूलभूतोंके उत्पत्तिका प्रकार वर्णन करेहैं ॥ तहां पंचीकरणभाव कूं प्राप्त भये जे पंचभूत हैं ते स्थूलभूत कह्ये जावैहै ॥ ते स्थूलभूत पूर्व उक्त अपंचीकृत पंचभूतोंके तामस अंशतें उत्पन्न होवैहैं ॥ सो पंचभूतोंका पंचीकरण इस प्रकार होवैहै ॥ तहां तमो अंश प्रधान जे पूर्व उक्त आकाशादिक पंच सूक्ष्मभूत हैं ॥ तिन भूतोंविषे एक एक भूतके प्रथम समान दो दो भाग कन्ये ॥ तिन दोनों भागोंविषे एक एक भाग कूं पृथक् कराखिकै दूसरे भागके पुनः चारि चारि भाग कन्ये ॥ तिन चारि भागों कूं यथाक्रमतें जो दूसरे चारि भूतोंके अर्द्ध भागविषे मिलावणाहै याकानाम पंचीकरणहै ॥ जैसे एक आकाशके समान दो भाग कन्ये ॥ तिन दोनोंविषे एक भाग तों पृथक् कराख्या ॥ और दूसरे भागके पुनः चारि भाग कन्ये ॥ तिन चारों भागोंविषे एक भाग तों वायुविषे मिलाया ॥ और दूसरा भाग तेजविषे मिलाया ॥ और तीसरा भाग जलविषे मिलाया ॥ और चतुर्थ भाग पृथिवीविषे मिलाया ॥ इस प्रकार वायुकेभी समान दो भाग करिकै एक भाग कूं पृथक् कराखिकै दूसरे भागके पुनः चारि भाग करिकै तिनोंविषे एक भाग आकाशविषे मिलाया ॥ दूसरा भाग तेजविषे मिलाया ॥ तीसरा भाग जलविषे मिलाया ॥ चतुर्थ भाग पृथिवीविषे मिलाया ॥ यहरीति तेजादिक तीन भूतोंविषेभी जानिलेणी ॥ इस प्रकारतें आकाशादिक पंचभूतोंका अर्द्ध अर्द्ध भाग तों आपणा सिद्ध होवैहै ॥ और अर्द्ध अर्द्ध भाग वायु आदिक चारि भूत मय सि



तत्त्वा०

॥ ५२ ॥

परि०

१

॥ ५२ ॥

द्वहोवैहै ॥ और केईकग्रंथकारतों एकएकभूतके विषमदोदोभागकरिकै अर्थात् एकभागतों चारिअंश  
 रूप दूसराभाग एकअंशरूप करिकै ताएकअंशरूपअल्पभागके पुनःपंचभागकरिकै तिनपंचभूतोंविषे  
 यथाक्रमतें एकएकभागकेमिलावणेकरिकै पंचीकरणमानेहैं ॥ यहपंचीकरणकाप्रकार आत्मपुराणकेए  
 कादशेअध्यायविषे स्पष्टकरिकैलिखाहै ॥ सो तहांसैंजानिलेणा इति ॥ ईहां वाचस्पतिमिश्रका यहम  
 तहै ॥ छांदोग्यउपनिषदविषे तेज जल पृथिवी इनतीनभूतोंकीउत्पत्तिकथनकरिकै ( तासांत्रिवृत्तंत्रिवृ  
 त्तमेकैकंकरवाणी ) इसश्रुतिकरिकै तिनतेजादिकतीनभूतोंका त्रिवृत्करणहीं कथनकन्याहै ॥ तहां ए  
 कतेजके समानदोभागकन्ये ॥ तिनदोभागोंविषे एकभागकूंपृथक्कराखिकै दूसरेभागके पुनःदोभागक  
 न्ये ॥ तिनदोनोंभागोंविषे एकभाग जलविषेमिलाया ॥ दूसराभाग पृथिवीविषेमिलाया ॥ यहरीति ज  
 लविषे तथापृथिवीविषेभी जानिलेणी ॥ याकानाम त्रिवृत्करणहै ॥ इसत्रिवृत्करणविषे साउक्तश्रुति  
 तथाव्यासभगवान्कासूत्र प्रमाणहै ॥ और ताउक्तपंचीकरणविषे कोईश्रुतिसूत्र प्रमाणहैनहीं ॥ यातें  
 सोपंचीकरणकाप्रतिपादन असंगतहै इति ॥ और आचार्यतों ऐसाकहेहैं ॥ तैत्तिरीयश्रुतिविषे आ  
 काशादिकपंचभूतोंकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ ताश्रुतिकेविरोधनिवृत्तकरणेवासतै ताछांदोग्यश्रुतिविषे  
 भी आकाशवायुकीउत्पत्तितैंअनंतरहीं तेजादिकतीनभूतोंकीउत्पत्ति ग्रहणकरणी ॥ और ताछांदोग्य  
 श्रुतिविषे तथाव्याससूत्रविषे जोत्रिवृत्करण कहाहै ॥ सोत्रिवृत्करण तापंचीकरणकाभी उपलक्षणहै ॥  
 जोकदाचित् तापंचीकरणकूंनहींमानिये ॥ तों आकाशवायुके शब्दस्पर्शगुणकी पृथिवीआदिकोंविषे  
 प्रतीतिनहींहोणीचाहिये ॥ और पृथिवीआदिकोंविषे ताशब्दस्पर्शगुणकीप्रतीतिहोवैहै ॥ यातें प्रामा  
 णिकहोणेतैं सोपंचीकरण अवश्यमान्याचाहिये इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ उक्तपंचीकरणकरिकै जोस



वभूतोंका एकीभावमानोंगे ॥ तों यहपृथिवीहै यहजलहै इसप्रकारकाविशेषव्यवहार नहींसंभवेंगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तापंचीकरणकेहूएभी तिनपृथिवीआदिकभूतोंविषे आपणाआपणाअंश अधिकहोवैहै ॥ और इतरभूतोंकाअंश अल्पहोवैहै ॥ ताअधिकअंशकूलैकेहीं यहपृथिवीहै यहजलहै याप्रकारकाविशेषव्यवहार होवैहै ॥ यातैं तापंचीकरणकेमानणेविषेभी सोविशेषव्यवहार संभवैहै ॥ यहहीव्यवस्था (वैशेष्यानुतद्वादस्तद्वादः) इससूत्रविषे श्रीव्यासभगवान्नेन तथाश्रीभाष्यकारोंनेन कथनकरीहै इति ॥ अब इसउक्तपंचीकरणकाप्रयोजन कहैहैं ॥ इसप्रकार तिनआकाशादिकपंचभूतोंकेपंचीकरणहूएतैंअनंतर तापंचीकृतआकाशविषेतों एकशब्दगुण अभिव्यक्तहोताभया ॥ और तापंचीकृतवायुविषे शब्द स्पर्श यहदोगुण अभिव्यक्तहोतेभये ॥ और तापंचीकृततेजविषे शब्द स्पर्श रूप यहतीनगुण अभिव्यक्तहोतेभये ॥ और तापंचीकृतजलविषे शब्द स्पर्श रूप रस यहचारिगुण अभिव्यक्तहोतेभये ॥ और तापंचीकृतपृथिवीविषे शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपंचगुण अभिव्यक्तहोतेभये ॥ यद्यपि तेशब्दादिकपंचगुण यथाक्रमतैं अपंचीकृतआकाशादिकभूतोंविषेभीथे ॥ तथापि तिनअपंचीकृतभूतोंविषे तेशब्दादिकगुण प्रत्यक्षकेयोग्यनहींथे ॥ और पंचीकरणहूएतैंअनंतर तिनपंचीकृतभूतोंविषे तेशब्दादिकगुण प्रत्यक्षकेयोग्यहोतेभये ॥ यहहीं तिनशब्दादिकोंविषे अभिव्यक्तपणाहै ॥ तिनपंचगुणोंविषेभी एकएकभूतका एकएकगुणहीं असाधारण जानणा ॥ और दूसरेगुणतों कारणतैंप्राप्तहूएजानणे ॥ जैसे पृथिवीविषे आपणाअसाधारणगुण एकगंधहै ॥ और दूसरेशब्दादिकचारिगुण आकाशादिककारणोंके गुणहैं ॥ इसप्रकार जलादिकोंविषेभी जानिलेणा ॥ और तिनपंचीकृतपृथिवीआदिकभूतोंतैं ब्रह्मांड उत्पन्नहोताभया ॥ तथा तिसब्रह्मांडकेअंतर्गत सप्तऊपरिकेलोक तथासप्तनीचैकेलोक यहचतुर्दशलोक



तत्त्वा०

॥ ५३ ॥

परि०

१

उत्पन्नहोतेभये ॥ और ताब्रह्मांडरूपविराट्पुरुषतैं मनु शतरूपा यहदोनों उत्पन्नहोतेभये ॥ और तिन दोनोंतैं मनुष्यादिकसृष्टि उत्पन्नहोतोभई ॥ तहां जिसप्रकारतैं ताविराट्पुरुषतैं मनुशतरूपाकीउत्पत्ति भईहै ॥ तथा तामनुशतरूपातैं मनुष्यादिकसृष्टिकीउत्पत्तिभईहै ॥ सोप्रकार आत्मपुराणकेचतुर्थअध्यायविषे हमनैं विस्तारतैंनिरूपणकन्याहै ॥ सो तहांसैंजानिलेणा ॥ और ताब्रह्मांडकेअंतर्गत जापंची कृतपृथिवीहै ॥ तापृथिवीतैं ब्रीहियवादिकऔषधि उत्पन्नहोतेभये ॥ तिनऔषधियोंतैं ब्रीहियवादिकअन्न उत्पन्नहोतेभये ॥ ताअन्नकूं स्त्रीयां तथापुरुष भोजनकरतेभये ॥ तहां पुरुषशरीरविषेतों सोअन्न शुक्ररूपपरिणामकूंप्राप्तहोताभया ॥ जिसशुक्रकूं रेतभीकहेहैं ॥ और तास्त्रीशरीरविषे सोअन्न शोणितरूपपरिणामकूंप्राप्तहोताभया ॥ तहां पुरुषकेवीर्यकानाम शुक्रहै ॥ और स्त्रीकेवीर्यकानाम शोणितहै ॥ तापितामाताकेशुक्रशोणिततैं मनुष्यादिकस्थूलशरीर उत्पन्नहोतेभये ॥ और सोस्थूलशरीरभी जरायुज १ अंडज २ स्वेदज ३ उद्भिज ४ इसभेदकरिकै चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां माताकेउदरविषे गर्भकूं आच्छादनकरणेहारा जोचर्मविशेषहै ताकानाम जरायुहै ॥ ताजरायुतैंउत्पन्नहोणेहारेशरीर जरायुज कहेजावैहैं ॥ जैसे मनुष्य गौ अश्व अजा आदिकशरीरहैं ॥ और अंडतैंउत्पन्नहोणेहारेशरीरहैं ते अंडजकहेजावैहैं ॥ जैसे पक्षीसर्पादिकशरीरहैं ॥ और उष्णताविशेषरूपस्वेदतैंउत्पन्नहोणेहारेशरीरहैं ते स्वेदजकहेजावैहैं ॥ जैसे यूक मशक मत्कुण कृमि आदिकशरीरहैं ॥ और भूमिकूंभेदनकरिकै आपणेआपणेबीजतैं जेशरीर उत्पन्नहोवैहै ॥ तेशरीर उद्भिज कहेजावैहैं ॥ जैसे वृक्ष लता तृण आदिक शरीरहैं ॥ तहां मनुष्यादिकशरीरोंकीन्यांई वृक्षलतादिकभी जोवात्माकेशरीरहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता न्याय प्रकाशकेद्वितीयपरिच्छेदविषे पृथिवीकेनिरूपणविषे विस्तारतैंकथनकरीहै ॥ सो तहांसैंजानिलेणी इति ॥

॥ ५३ ॥



अब तास्थूलशरीरका अन्यप्रकारतें भेदकहेहैं ॥ सो उक्तस्थूलशरीर समष्टि १ व्यष्टि २ इसभेदकरिके पुनः दो प्रकारका होवैहै ॥ तहां पूर्वउक्त पंचीकृतपंचमहाभूत तथातिनभूतोंका कार्यब्रह्मांड तथाताब्रह्मांडके अंतर्वर्त्तिकार्य यहसर्वमिलिके समष्टिस्थूलशरीर कहाजावैहै ॥ अथवा जैसे अनेकगोव्यक्तियोंविषे गोत्वजाति अनुस्यूतहोवैहै ॥ तैसे जोशरीर सर्वव्यष्टिस्थूलव्यक्तियोंविषे अनुस्यूतहोवैहै ॥ तथा पंचीकृतपंचमहाभूतोंका कार्यहोवैहै ॥ तथा सर्वब्रह्मांडरूपहोवैहै ॥ तथा व्यापकहोवैहै ॥ सोशरीर समष्टिस्थूलशरीर कहाजावैहै ॥ अथवा जैसे अनेकवृक्षोंके समूहकानाम वनहै ॥ तैसे सर्वव्यष्टिस्थूलशरीरोंका जोसमुदायहै ॥ सो समष्टिस्थूलशरीर कहाजावैहै ॥ ऐसेसमष्टिस्थूलशरीरकरिके उपहितजोचैतन्यहै ॥ सो विराट् वैश्वानर इनदोनामोंकरिके कहाजावैहै ॥ तहां विविधप्रकारतें प्रकाशमानहोणेतें ताकूं विराट् कहेहैं ॥ और सर्वनरोंका अभिमानीहोणेतें ताकूं वैश्वानर कहेहैं ॥ और जैसे एकगोव्यक्ति तें दूसरीगोव्यक्ति व्यावृत्तहोवैहै ॥ तैसे परस्परव्यावृत्त जोप्रत्येकस्थूलशरीरहै ॥ सो व्यष्टिस्थूलशरीर कहाजावैहै ॥ ताव्यष्टिस्थूलशरीरकरिके उपहितजोचैतन्यहै ॥ सो विश्व इसनामकरिके कहाजावैहै ॥ तहां सोचैतन्य सूक्ष्मशरीरकूंनपरित्यागकरिकेहीं तास्थूलशरीरविषे प्रवेशकरेहै ॥ याकारणतें ताकूं विश्वकहेहैं ॥ और जैसे घटादिकव्यक्तिका तथाघटत्वादिकजातिका परस्पर तादात्म्यहोवैहै ॥ तैसे इससमष्टिस्थूलशरीरका तथाव्यष्टिस्थूलशरीरकाभी परस्पर तादात्म्यहीहै ॥ तिनदोनोंउपाधियोंके तादात्म्यहूए तावैश्वानर विश्व दोनोंउपहितचैतन्योंकाभी तादात्म्यहीहोवैहै ॥ तहां समष्टिस्थूलशरीरके अंतर्गत जेपंचीकृतपंचभूतहैं ॥ तिनोंका कार्यपणा इसव्यष्टिस्थूलशरीरविषेहै ॥ और उपादानकारणका तथाउपादेयकार्यका परस्परतादात्म्य लोकविषे प्रसिद्धहीहै ॥ यातें तिनदोनोंस्थूलशरीरोंका तादात्म्य संभवैहै ॥ और



तत्त्वा०

॥ ५४ ॥

परि०

१

यहविश्वनामाजीव जवी मैंवैश्वानरहूं याप्रकारकीअभेदउपासनाकरेहै ॥ तबी तावैश्वानरकेसाक्षात्कारकरिकै इसजीवकूं तावैश्वानरकेआनंदकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं ताविश्ववैश्वानरकेतादात्म्यकावर्णन निष्फलनहींहै ॥ किंतु ताउक्तफलकेप्राप्तिकाहेतुहोणेतैं सफलहै ॥ अथवा यहअधिकारीपुरुष प्रथम श्रुतिउक्तप्रकारतैं विश्व वैश्वानर तैजस सूत्रात्मा प्राज्ञ ईश्वर इनसर्वोंकेस्वरूपकूंजानैं ॥ तिसतैंअनंतर प्रथम मैंहीवैश्वानरहूं इसप्रकार विश्वकूं वैश्वानररूपकरिकैचिंतनकरै ॥ तिसतैंअनंतर मैंहीसूत्रात्माहूं इसप्रकारतैं तैजसकूं सूत्रात्मारूपकरिकैचिंतनकरै ॥ तिसतैंअनंतर मैंहीईश्वरहूं इसप्रकारतैं प्राज्ञकूं ईश्वररूपकरिकैचिंतनकरै ॥ तिसतैंअनंतर समष्टिव्यष्टिरूपस्थूलसूक्ष्मकारणउपाधिवाला तथाॐकारकावाच्यरूप ऐसाजोपरब्रह्महै सोमैंहूं इसप्रकार आत्माकूं सर्वात्मरूपकरिकै चिंतनकरै ॥ तिसतैंअनंतर मनकीएकाग्रताकेद्वारे यहअधिकारीपुरुष सर्वजगत्कूं स्थूलसूक्ष्मादिक्रमकरिकै अखंडएकरसआनंदरूपनिर्विशेषपरब्रह्मविषे लयकरै ॥ अर्थात् स्थूलकूं सूक्ष्मविषेलयकरै ॥ और सूक्ष्मकूं कारणविषेलयकरै ॥ और ताकारणकूं परब्रह्मविषेलयकरै ॥ तिसतैंअनंतर ताएकाग्रमनकरिकै मैं अखंडएकरसब्रह्मानंदरूपहूं इसप्रकारतैं आपणेआत्माकूंसाक्षात्कारकरै ॥ इसप्रकारकेअभिप्रायकरिकैहीं पूर्व समष्टिव्यष्टिउपाधियोंका तादात्म्यवर्णनकरिकै तत्तुपहितचैतन्योंका तादात्म्य वर्णनकन्याहै ॥ यातैं सोतादात्म्यकावर्णन निष्फलनहींहै ॥ किंतु उक्तरीतितैं आत्मसाक्षात्काररूपफलकाहेतुहोणेतैं सफलहै ॥ यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( समाधिकालात्प्रागेवं विचिंत्यातिप्रयत्नतः स्थूलसूक्ष्मक्रमात्सर्वं चिदात्मनिविलापयेत् ) अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष समाधितैंपूर्वकालविषे पूर्वउक्तरीतिसैं विश्ववैश्वानरादिकोंकेअभेदकाचिंतनकरिकै अतिप्रयत्नतैं सर्वजगत्कूं तास्थूलसूक्ष्मादिक्रमतैं चेतनआत्माविषेलयकरै

॥ ५४ ॥

इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ कल्पतरुकारआचार्यनैंभीकहाहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( निर्विशेषंपरंब्रह्म साक्षा



इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ कल्पतरुकारआचार्यनैभीकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( निर्विशेषंपरंब्रह्म साक्षा  
 त्कर्तुमनीश्वराः येमंदास्तेऽनुकंप्यन्ते सविशेषनिरूपणैः ॥ १ ॥ वशीकृतेमनस्येषां सगुणब्रह्मशीलनात् तदे  
 वाविर्भवेत्साक्षादपेतोपाधिकल्पनं ॥ २ ॥ ) अर्थयह ॥ जेमंदपुरुष निर्विशेषब्रह्मकेसाक्षात्कारकरणेविषे  
 समर्थनहींहैं ॥ तेमंदपुरुष सविशेषब्रह्मकेनिरूपणकरिकैहीं गुरुशास्त्रनैं अनुगृहीत करीतेहैं ॥ तासगुण  
 ब्रह्मकीउपासनातैं तिनपुरुषोंकेएकाग्रहूएमनविषे सोईहींसर्वउपाधियोंतैंरहितनिर्विशेषब्रह्म साक्षात्कार  
 होवैहै इति ॥ किंवा इसउक्तअर्थविषे श्रुतिभीप्रमाणहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( एषसर्वेषुभुतेषुगूढोत्मानप्रकाशते  
 दृश्यतेत्वग्रयाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिः ) अर्थयह ॥ यहआत्मा सर्वभूतोंविषेस्थितहूआभी गूढहोणेतैं  
 अर्थात् अज्ञानकरिकै आवृत्तहोणेतैं सर्वप्राणीयोंकूं प्रतीतहोतानहीं ॥ किंतु विचारकरिकैअतिसूक्ष्महूई  
 बुद्धिकरिकैहीं सूक्ष्मदर्शीपुरुषोंनैं सोआत्मा साक्षात्कारकरीताहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वआपनैं स्थूल  
 सूक्ष्म कारण इनतीनव्यष्टिशरीरोंके यथाक्रमतैंअभिमानी विश्व तैजस प्राज्ञ यहतीनजीव कथनकन्ये ॥  
 तेतीनोंजीव स्वतंत्रहैं ॥ अथवा तेतीनों एकहींचैतन्यकी अवस्थाविशेषहैं ॥ तहां प्रथम स्वतंत्रपक्ष जो  
 अंगीकारकरौ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् तेतीनोंजीव स्वतंत्रहोवेंगे ॥ तौं तिनोंका पर  
 स्परभेदभी अवश्यहोवेंगा ॥ यातैं सुष्ठुअवस्थाविषे प्राज्ञनामाजीवनैं अनुभवकन्येजेसुखादिकपदार्थ  
 हैं ॥ तथा स्वप्नअवस्थाविषे तैजसनामाजीवनैं अनुभवकन्येजे गजरथादिकपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंका  
 जाग्रतअवस्थाविषे विश्वनामाजीवकूं स्मरणनहींहोवेंगा ॥ जिसकारणतैं अन्यकरिकैअनुभवकन्येहूएप  
 दार्थोंका अन्यकूं स्मरणहोतानहीं ॥ जोकदाचित् अन्यकरिकैअनुभूतपदार्थोंका अन्यकूं स्मरणहो  
 ताहोवै ॥ तौं चैत्रनामापुरुषकरिकैअनुभवकन्येहूएपदार्थोंका मैत्रनामापुरुषकूंभी स्मरणहोणाचाहि



तत्त्वा०

॥ ५५ ॥

परि०  
१

ये ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ विश्व तैजस प्राज्ञ यहतीनोंजीव स्वतंत्रनहीं हैं ॥ किंतु एकही प्रत्यक्ष आत्मा की तेतीनों अवस्था विशेष हैं ॥ यातें सोस्मरणकी अनुपपत्तिरूपदोष प्राप्त होवै नहीं ॥ तहां जिस प्रकार तैं तेविश्वादि कतीनों एकही जीवात्मा की अवस्था विशेष हैं सो प्रकार दिखावै हैं ॥ एकही सो जीवात्मा जाग्रत अवस्थाविषे व्यष्टिस्थूलशरीर सूक्ष्मशरीर कारणअविद्या इनतीनों का अभिमानी हूआ विश्व इस नामकरिकै कहा जावै है ॥ और सोई ही जीवात्मा स्वप्न अवस्थाविषे सूक्ष्मशरीर कारणअविद्या इनदोनों का अभिमानी हूआ तैजस इस नामकरिकै कहा जावै है ॥ और सोई ही जीवात्मा सुषुप्ति अवस्थाविषे एक कारणअविद्या का अभिमानी हूआ प्राज्ञ इस नामकरिकै कहा जावै है ॥ और सोई ही जीवात्मा समाधि अवस्थाविषे स्थूल सूक्ष्म कारण इनतीन शरीरों के अभिमान तैरहित हूआ शुद्ध परमात्मारूप होवै है ॥ यद्यपि यह जीवात्मा एक स्थूलशरीर मात्र के अभिमान तैहीं विश्वसंज्ञा कूं प्राप्त होवै है ॥ तथा एक सूक्ष्मशरीर मात्र के अभिमान तैहीं तैजससंज्ञा कूं प्राप्त होवै है ॥ तथापि ईहां स्थूल सूक्ष्म कारण इनतीन शरीरों के अभिमान तैं जो जीवात्मा की विश्वसंज्ञा कही है ॥ तथा सूक्ष्म कारण इनदोनों शरीरों के अभिमान तैं जो तैजससंज्ञा कही है ॥ सो त्वंपदार्थ के शोधनविषे उपयोगी जो अन्वयव्यतिरेक है तिसके जनावणे वास तै कही है ॥ सो अन्वयव्यतिरेक यह है ॥ जाग्रत अवस्थाविषे तों स्थूल सूक्ष्म कारण इनतीन शरीरों का साक्षीरूप करिकै आत्मा का भान होवै है ॥ और स्वप्न अवस्थाविषे सूक्ष्म कारण इनदो शरीरों का साक्षीरूप करिकै आत्मा का भान होवै है ॥ और सुषुप्ति अवस्थाविषे तों एक अविद्यारूप कारणशरीर का साक्षीरूप करिकै आत्मा का भान होवै है ॥ और समाधि अवस्थाविषे तों शुद्ध स्वप्नका शचैतन्यरूप करिकै ता आत्मा का भान होवै है ॥ यह ही ता आत्मा का जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति समाधि इनचारि अवस्थाओंविषे अन्वय है ॥ और स्वप्न

॥ ५५ ॥



अवस्थाविषे जाग्रत्केस्थूलशरीरकाभानहोतानहीं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरकाभी  
 भानहोतानहीं ॥ और समाधिअवस्थाविषे सुषुप्तिकेकारणशरीरकाभी भानहोतानहीं ॥ यहहीं स्थूल  
 सूक्ष्म कारण इनतीनशरीरोंका व्यतिरेकहै ॥ तहां सर्वअनात्माकारवृत्तियोंतैरहितहोइकै जा चित्तकी  
 केवलआत्माकारअवस्थाहै ताकानाम समाधिहै ॥ तिससमाधिअवस्थाविषे इसपुरुषका देहादिकसर्वप  
 दार्थोंविषे अभिमान निवृत्तहोइजावैहै ॥ यातैं तासमाधिअवस्थाविषे तिनस्थूलादिकतीनोंशरीरोंका  
 व्यतिरेकहींहोवैहै ॥ और तासमाधिअवस्थाविषे यहजीव सर्वअभिमानतैरहितहोणेतैं शुद्धपरमात्मरू  
 पहींहोवैहै ॥ तहां जोजोपदार्थ व्यावृत्तहोवैहै ॥ सोसर्व अनात्माहींहोवैहै ॥ और जो सर्वत्रअन्वित  
 होवैहै ॥ सो आत्माहींहोवैहै ॥ याप्रकारकेनिश्चयकानाम त्वंपदार्थशोधनहै ॥ सोत्वंपदार्थकाशोधन  
 तापूर्वउक्तअन्वयव्यतिरेककरिकैहींसिद्धहोवैहै इति ॥ अब ताउक्तजीवात्माकी जाग्रत् १ स्वप्न २ सु  
 षुप्ति ३ मूर्छा ४ मरण ५ यहपंचअवस्था निरूपणकरेहैं ॥ तहां पूर्वकथनकन्येजे श्रोत्रादिकइंद्रियोंके  
 दिकादिकअधिष्ठातादेवताहैं ॥ तिनदेवतावोंकरिकैअनुगृहीत श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकविषयों  
 काअनुभव इसपुरुषकूं जिसअवस्थाविषेहोवैहै ॥ साअवस्था जाग्रत्अवस्था कहीजावैहै ॥ और जाग्र  
 त्अवस्थाविषे सुखदुःखरूपभोगकेदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तिनकर्मोंकेउपरामहूए तथाश्रोत्रादि  
 कइंद्रियोंकेउपरामहूए जाग्रत्केअनुभवजन्यसंस्कारोंतैं इसपुरुषकूं जिसअवस्थाविषे शब्दादिकविषय  
 तथातिनोंकेज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ साअवस्था स्वप्नअवस्था कहीजावैहै ॥ और जिसअवस्थाविषे जाग्र  
 त्स्वप्नदोनोंकेभोगदेणेहारेकर्मोंकीउपरामताकरिकै स्थूलसूक्ष्मशरीरकेअभिमानकीनिवृत्तिद्वारा सर्ववि  
 शेषज्ञानोंकीउपरामतारूप बुद्धिकीकारणअज्ञानरूपकरिकैस्थितिहोवैहै ॥ साअवस्था सुषुप्तिअवस्था क



तत्त्वा०

॥ ५६ ॥

होजावैहै ॥ और मुद्गरप्रहारादिकनिमित्तकरिकैजन्य जोडुःखरूपविषादहै ॥ ताविषादकरिकै जिसअव  
 स्थाविषे इसपुरुषकेसर्वविशेषज्ञानोंकीउपरामताहोवैहै ॥ साअवस्था मूर्छाअवस्था कहीजावैहै ॥ यहमू  
 र्छाअवस्था जाग्रतादिकअवस्थावोंतैंभिन्नहींअवस्थाहै ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवान्ने ( मुग्धेऽर्द्धसंप  
 त्तिःपरिशेषात् ) इससूत्रविषेकथनकरीहै ॥ इससूत्रका यहअर्थहै ॥ मुद्गरप्रहारादिकनिमित्तकरिकै इस  
 पुरुषकूं जामूर्छाहोवैहै ॥ सामूर्छा जाग्रतादिकचारिअवस्थावोंविषे कोईअवस्थाकेअंतर्भूतहै ॥ अथवा  
 तिनचारोंअवस्थावोंतैंकोईभिन्नअवस्थाहै ॥ इसप्रकारकेसंशयहूएतैंअनंतर याप्रकारका वादीकापूर्वपक्ष  
 प्राप्तभया ॥ श्रुतिस्मृतिआदिकोंविषे इसजीवात्माकी जाग्रतादिकचारिअवस्थाहींकथनकरीहैं ॥ तिनों  
 तैंभिन्न मूर्छाअवस्था कथनकरीनहीं ॥ यातैं सामूर्छा तिनजाग्रतादिकअवस्थावोंविषेहीं अंतर्भूतहै ॥  
 ताकेविषेभी विशेषज्ञानोंकीउपरामता सुषुप्तिविषे तथामूर्छाविषे समानहोवैहै ॥ यातैं सामूर्छा सुषुप्तिवि  
 षेहीं अंतर्भूतहै ॥ तासुषुप्ति तैं भिन्नअवस्था मूर्छानहींहै ॥ ऐसेपूर्वपक्षकेप्राप्तहूए ताउक्तसूत्रकरिकै श्री  
 व्यासभगवान्ने यहसिद्धांतकन्याहै ॥ सामूर्छाअवस्था तिनजाग्रतादिकचारिअवस्थावोंतैं भिन्नअवस्था  
 है ॥ तहां जाग्रतस्वप्नअवस्थाविषे विशेषज्ञानोंकाअभावहोतानहीं ॥ और तामूर्छाअवस्थाविषेतों सर्व  
 विशेषज्ञानोंकाअभावहोवैहै ॥ याकारणतैं सामूर्छाअवस्था ताजाग्रतस्वप्नअवस्थाविषेभी अंतर्भूतनहीं  
 है ॥ और मरणअवस्थातैंअनंतर इसपुरुषका पुनःउत्थानहोतानहीं ॥ और मूर्छाअवस्थातैंअनंतरतों इ  
 सपुरुषका पुनःउत्थानहोवैहै ॥ याकारणतैं सामूर्छाअवस्था तामरणअवस्थाविषेभी अंतर्भूतनहींहै ॥  
 और सुषुप्तपुरुषका मुख प्रसन्नरहेहै ॥ तथा शरीर निःकंपहोवैहै ॥ और मूर्छितपुरुषका मुख विकराल  
 होवैहै ॥ तथा शरीरभी कंपसहितहोवैहै ॥ याकारणतैं तामूर्छाका सुषुप्तिअवस्थाविषेभी अंतर्भावनहीं

परि०  
१

॥ ५६ ॥



है ॥ किंतु परिशेषतें सामूर्छा तिनजाग्रतादिकचारिअवस्थावोंतें भिन्नहींअवस्था सिद्धहोवैहै ॥ और उ  
 करीतिसैं तासुषुप्तिकी तथामूर्छाकी परस्परविलक्षणताकेदूएभी सर्वविशेषज्ञानोंकाअभाव दोनोंविषे तु  
 ल्यहींहोवैहै ॥ याकारणतें सामूर्छा अर्द्धसुषुप्ति कहीजावैहै इति ॥ और इसशरीरकेभोगदेणेहारेकर्मों  
 कीनिवृत्तिकरिकै सामान्यविशेषरूपदोप्रकारकेदेहाभिमानकेनिवृत्तदूए भावोदेवादिकशरीरकीप्राप्तिपर्यंत  
 जा उक्तसप्तदशतत्त्वोंकीपिंडीभावअवस्थाहै ॥ साअवस्था मरणअवस्था कहीजावैहै ॥ ईहांयहतात्पर्य  
 है ॥ सोदेहाभिमान सामान्य विशेष इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां सुषुप्तिविषे विशेषदेहाभि  
 मानकेनिवृत्तदूएभी इसपुरुषकूं सामान्यदेहाभिमान रहेहै ॥ तादेहाभिमानकरिकैहीं यहपुरुष तासुषुप्ति  
 तेंउत्थानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जोकदाचित् इसपुरुषकूं तासुषुप्तिविषे सोसामान्यदेहाभिमानभीनहींहोता ॥  
 तों इसपुरुषका तासुषुप्तितेंउत्थानहींनहींहोता ॥ जैसे मरणअवस्थावालेपुरुषका पुनःउत्थाननहींहोवै  
 है ॥ यातें ताउत्थानरूपहेतुतें इसपुरुषका तासुषुप्तिविषे सोसामान्यदेहाभिमान अनुमानकन्याजावैहै ॥  
 और जाग्रतअवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे इसपुरुषकूं मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इसप्रकारका विशेषदेहा  
 भिमानरहेहै ॥ और मरणअवस्थाविषे इसपुरुषका सोदोनोंप्रकारकादेहाभिमान निवृत्तहोइजावैहै इति ॥  
 ईहां केईकग्रंथकारतों तामरणअवस्थाकूं तामूर्छाअवस्थातेंभिन्नअवस्था मानतेनहीं ॥ किंतु तामरणअव  
 स्थाका तामूर्छाअवस्थाविषेहीं अंतर्भावमानेहैं ॥ तहां मूर्छाकूंप्राप्तदूएपुरुषके जोकदाचित् इसदेहविषे  
 भोगदेणेहारेकर्म बाकीरहेहैं ॥ तों तिसमूर्छातें इसपुरुषका पुनःउत्थानहोवैहै ॥ और जोकदाचित् ते  
 कर्म नहींरहेहैं ॥ तों इसपुरुषका मरणहींहोवैहै ॥ यातें तामरणअवस्था तामूर्छाअवस्थाकेअंतर्भूतहीं  
 है इति ॥ किंवा जैसे विश्व तैजस प्राज्ञ यहतीनों एकहींजीवात्माकी अवस्थाविशेषहैं ॥ तैसे वैश्वा



तत्त्वा०

॥ ५७ ॥

नर हिरण्यगर्भ ईश्वर यहतीनोंभी एकहींपरमात्माकी अवस्थाविशेषहैं ॥ तहां एकहींपरमात्मादेव समष्टिस्थूलशरीर तथासमष्टिसूक्ष्मशरीर तथातिनदोनोंकाकारणमाया इनतीनोंकरिकैउपहितहूआ वैश्वानर इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और सोईहींपरमात्मादेव समष्टिसूक्ष्मशरीर तथाताकाकारणमाया इनदोनोंकरिकैउपहितहूआ हिरण्यगर्भ इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ और सोईहींपरमात्मा केवल एक मायाकरिकैउपहितहूआ ईश्वर इसनामकरिकैकह्याजावैहै इति ॥ अब वैश्वानर हिरण्यगर्भ ईश्वर इनतीनोंकेउपासनाकाफलकहेहैं ॥ तहां यहजीव जबी मैंहींवैश्वानरहूं इसप्रकारतैं तावैश्वानरकीअभेदउपासनाकरेहै ॥ तबी इसजीवकूं तावैश्वानरभावकीप्राप्तिरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ और यहजीव जबी मैंहींहिरण्यगर्भहूं इसप्रकारतैं ताहिरण्यगर्भकीअभेदउपासनाकरेहै ॥ तबी इसजीवकूं ताहिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ और यहजीव जबी मैंहींईश्वरहूं याप्रकारतैं ताईश्वरकीअभेदउपासनाकरेहै ॥ तबी इसजीवकूं ताईश्वरभावकीप्राप्तिरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ इसीअभेदउपासनाकूं शास्त्रविषे अहंग्रहउपासना कहेहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ वैश्वानर हिरण्यगर्भ ईश्वर यहतीनों एकहींपरमात्माकी अवस्थाविशेषहैं ॥ इसतुमारेकहणेकरिकै तीनोंविषे ईश्वरपणाहींसिद्धहोवैहै ॥ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं ( योऽशनायापिपासेशोकमोहंजरांमृत्युमत्येति ) इसश्रुतिनैं अशना पिपासा शोक मोह जरा मरण इत्यादिकसर्वधर्मोंतैंरहित ईश्वरकूंकह्याहै ॥ और वैश्वानर हिरण्यगर्भ इनदोनोंविषेतों श्रुतिनैं ध्रुधा भय जन्म मरण बंध मोक्ष इत्यादिकधर्म कथनकन्येहैं ॥ तेसर्वधर्म जीवकेहींप्रसिद्धहैं ॥ तहां हिरण्यगर्भ विराट् पुत्रकूंउत्पन्नकरिकै ध्रुधातुरहूआ ताविराट्पुत्रकेभक्षणकरणेवासतैं प्रवृत्तहोताभया ॥ तिसकूंदेखिकै भयभीतहूआ सोविराट् भाण ऐसेशब्दकूंकरताभया ॥ इसप्रकारके तेध्रुधाभयादिकजीवकेधर्म आत्मपुरा

परि०

१

॥ ५७ ॥



णकेचतुर्थअध्यायविषे स्पष्टकरिकैकहेहैं ॥ यातैं तावैश्वानरहिरण्यगर्भविषे ईश्वररूपता संभवतीनहीं ॥  
 किंतु जीवरूपताहीसंभवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ बहुतश्रुतिस्मृतिआदिकोंविषे तावैश्वानरहिरण्यग  
 र्भकूं ईश्वररूपताहीकहीहै ॥ और कोईकश्रुतिस्मृतिविषे जो तावैश्वानरहिरण्यगर्भके जन्मादिकधर्म प्र  
 तिपादनकन्येहैं ॥ सो इसअधिकारीपुरुषकूं अनित्यादिकदोषदृष्टिकरिकै तिसहिरण्यगर्भादिकपदतैं वै  
 राग्यकीप्राप्तिवासतैं कथनकन्येहैं ॥ कोई वैश्वानरहिरण्यगर्भकेजीवपणेविषे तिनवचनोंकातात्पर्यनहीं  
 है ॥ जोकदाचित् श्रुतिप्रतिपादित क्षुधाभयादिकजीवधर्मोंकेसंबंधतैं तावैश्वानरहिरण्यगर्भकूं जीवरूप  
 मानिये ॥ तौ जीवविषेप्रसिद्ध जेइच्छादिकधर्महैं ॥ तिनोकूं ईश्वरविषेप्रतिपादनकरणेहारीजा ( सो  
 ऽकामयत तदैक्षत तन्मनोऽकुरुत ) इत्यादिकश्रुतिहै ॥ ताश्रुतितैं ताईश्वरकूंभी जीवरूपताहोणीचाहि  
 ये ॥ यातैं सोवैश्वानर तथाहिरण्यगर्भ ईश्वररूपहीहैं जीवरूपनहीं यहसिद्धभया ॥ तहां जोपुरुष तिस  
 ईश्वरकीअभेदउपासनाकरेहै ॥ सोपुरुष तिसईश्वरभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै यहउक्तउपासनाकाफल श्रुति  
 स्मृतिविषेभी कथनकन्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( तंयथायथोपासतेतथैवभवति ) अर्थयह ॥ यहअधिकारी  
 पुरुष तिसपरमात्माकूं जिसजिसवैश्वानरादिरूपकरिकै उपासनाकरेहै ॥ तिसतिसरूपविशिष्टपरमेश्वर  
 भावकूंहीं सोअधिकारीपुरुष प्राप्तहोवैहै इति ॥ और यहहीउपासनाकाफल श्रीसदाशिवनैं रघुनाथके  
 प्रति कहाहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( येनाकारेणयेमर्त्या मामेवैकमुपासते तेनाकारेणतेभ्योऽहं प्रसन्नोवांछि  
 तंददे ) अर्थयह ॥ यहजीव मैंएकहीपरमेश्वरकूं जिसजिसआकारकरिकैउपासनाकरेहै ॥ तिसीतिसी  
 आकारकरिकै मैंपरमेश्वर प्रसन्नहूआ तिनउपासकोंकेताई वांछितअर्थ प्राप्तकरूंहुं इति ॥ यहउक्तअर्थ  
 हीं श्रीकृष्णभगवान्ने गीताविषे ( यंयंवापिस्मरन्भावं त्यजत्यंतकेलेवरं तंतमेवैतिकौंतेय सदातद्भावभा



तच्चा०

॥ ५८ ॥

परि०

१

वितः) इसश्लोककरिकै कथनकन्याहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं भावनाकेउत्कर्षकरि  
 कै तिसईश्वरकेसाक्षात्कारवालेपुरुषकूं तिसईश्वरभावकीप्राप्तिरूपफल प्राप्तहोवो ॥ परंतु ताभावनाकीमं  
 दताहूए तिसउपासकपुरुषकूं किसफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताभावनाकेमंदताहूए  
 इसपुरुषकूं सोपूर्वउक्तफल प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तामंदभावनाकीतारतम्यताकरिकै ताउपासकपुरुषकूं  
 सार्ष्टि १ सारूप्य २ सामीप्य ३ सालोक्य ४ यहचारिप्रकारकाफल प्राप्तहोवैहै ॥ तहां आपणेमनुष्यभाव  
 कीविस्मृतिपूर्वक जो तिसउपास्यदेवभावकीप्राप्तिहै ॥ यहहीं ताभावनाविषे उत्कर्षपणाहै ॥ और आप  
 णेमनुष्यभावके किंचित्स्मरणपूर्वक जो ताउपास्यदेवभावकीप्राप्तिहै ॥ यहहीं ताभावनाविषे मंदताहै ॥  
 तहां जगत्कीउत्पत्तिआदिकव्यापारकूंछोडिकै इसउपासकपुरुषकूं जो परमेश्वरकेसमान ऐश्वर्य तथा  
 भोगोंकीप्राप्तिहै याकानाम सार्ष्टिहै ॥ और इसउपासकपुरुषकूं ताईश्वरकेसमानरूपकीजाप्राप्तिहै ता  
 कानाम सारूप्यहै ॥ और ताईश्वरकेसमीपवर्त्तिपणेकानाम सामीप्यहै ॥ और ताईश्वरकेलोकविषेरहणे  
 कानाम सालोक्यहै ॥ इसप्रकारकेचारिफलोंकूं सोउपासकपुरुष तामंदभावनाकीतारतम्यतातैं प्राप्तहो  
 वैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( साम्नःसायुज्यंसलोकतांजयति ) अर्थयह ॥ यहउपासकपुरुष ताभावनाकीतारत  
 म्यताकरिकै हिरण्यगर्भके सायुज्यसालोक्यादिकोंकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ तहां पूर्व तत्पदार्थकेवाच्यार्थनि  
 रूपणप्रसंगकरिकै सगुणब्रह्मकेउपासकपुरुषोंकूं तिसतिसउपासनाकरिकै तिसतिससगुणब्रह्मकीप्राप्तिरू  
 पफल निरूपणकन्या ॥ अब निर्गुणब्रह्मकेउपासकपुरुषोंकूं तिसनिर्गुणब्रह्मकीप्राप्तिरूपफल वर्णनकरेहैं ॥  
 तहां जेपुरुष विवेकादिकचारिसाधनोंकरिकैसंपन्नहैं ॥ तथा मंदबुद्धिवालेहोणेतैं वेदांतशास्त्रकेविचारक  
 र्णोविषे असमर्थहैं ॥ तथा निर्गुणब्रह्मकेजानणेकीजिनोंकूंइच्छाहै ॥ तेपुरुष श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेमुखतैं

॥ ५८ ॥



तानिर्गुणब्रह्मकास्वरूपनिश्चयकरिकै सर्वस्थूलसूक्ष्मकारणउपाधितैरहित तथासत्चित्तानंदस्वरूप ऐसा निर्गुणब्रह्म मैंहूं याप्रकारकी निर्गुणब्रह्मकीउपासनाकरैं ॥ तानिर्गुणब्रह्मकीउपासनाकरिकै इसअधिका रीपुरुषकूं इसीशरीरविषे जीवत्अवस्थाविषे अथवा मरणअवस्थाविषे अथवा ब्रह्मलोकविषे तानिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोइकै तानिर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपफल होवैहै ॥ जैसे मणिकीप्रभाविषे मणिबुद्धिक रिकैप्रवृत्तहूएपुरुषकूं तामणिकीप्राप्तिरूपफलहोवैहै ॥ तैसे निदिध्यासनरूप तानिर्गुणब्रह्मकीउपासनाक रिकै इसअधिकारीपुरुषकूं तानिर्गुणब्रह्मकीप्राप्तिरूपफलहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( ज्ञानप्रसादेनविशुद्धस त्वस्ततस्तुतंपश्यतिनिष्कलंध्यायमानः ) अर्थयह ॥ तानिर्गुणब्रह्मकीउपासनाकरिकै अतिशुद्धहूआहैचि त्तजिसका ऐसासोध्यानकरताहूआपुरुष तानिर्गुणब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरैहै इति ॥ तहां विचारविषेअस मर्थपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं निर्गुणब्रह्मकेस्वरूपकूं परोक्षनिश्चयकरिकै मैंहींनिर्गुणब्रह्महूं याप्रकारकी तानिर्गुणब्रह्मकीउपासनाकरै ॥ ताउपासनातैं तिसपुरुषकूं निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ यहउक्त अर्थ श्रीभगवान्नेंभी गीताविषे अर्जुनकेप्रतिकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( अन्येत्वेवमजानंतःश्रुत्वान्येभ्य उपासते तेपिचातितरंत्येवमृत्युंश्रुतिपरायणाः ) अर्थयह ॥ जेपुरुष मंदबुद्धिवालेहोणेतैं आप वेदांतशा स्त्रकेविचारकरणेविषेसमर्थनहींहैं ॥ तेपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं तानिर्गुणब्रह्मकेस्वरूपकूंश्रवणकरिकै जबी अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकाध्यानकरैहैं ॥ तबी तेउपासकपुरुषभी तानिर्गुणब्रह्मकेसाक्षात्कारकरिकै अज्ञा नरूपमृत्युकूं अवश्यनाशकरैहैं ॥ तहां । तेपिचातितरंत्येव । इसवचनविषेस्थितअपिशब्दकरिकै श्रीभ गवान्नें यहकैमुतिकन्याय सूचनकन्या ॥ जबी विचारविषे असमर्थमंदबुद्धिपुरुषभी तानिर्गुणब्रह्मकी उपासनाकरिकै ताअज्ञानकूंनाशकरैहैं ॥ तबी विचारविषेसमर्थपुरुष ताअज्ञानकूंनाशकरैहैं याकेविषे



तत्त्वा०

॥ ५९ ॥

क्या कहना है ॥ यातें यह अर्थ सिद्ध भया ॥ जितनी की ज्ञान कांड विषे कथन करी हुई सगुण उपासना हैं वा  
 निर्गुण उपासना हैं ॥ तिन सर्व उपासनाओं का चित्त की एकाग्रता द्वारा ब्रह्म साक्षात्कार ही मुख्य फल है ॥  
 और ब्रह्मलोकादिक तों तिन उपासनाओं का अवांतर फल है ॥ मुख्य फल नहीं है ॥ या कारण तै ही ब्रह्म सूत्र  
 कर्ता श्री व्यास भगवान् ने तिन उपासनाओं का ज्ञान कांड विषे ही विचार कन्या है इति ॥ तहां पूर्व माया  
 उपहित तत्पदार्थ ब्रह्म का जगत् के जन्मादिकों का कारण त्वरूप तटस्थ लक्षण कन्या था ॥ सोई ही तटस्थ ल  
 क्षण ता ब्रह्म तें माया द्वारा सूक्ष्म स्थूल प्रपंच की उत्पत्तिके निरूपण करिके अवपर्यंत सिद्ध कन्या ॥ इसी का  
 नाम अध्यारोप है ॥ तहां तत्भाव तें रहित वस्तु विषे जात तबुद्धि है ताका नाम अध्यारोप है ॥ जैसे प्रसंग  
 विषे वास्तव तें जगत्भाव तें रहित ब्रह्म विषे जो जगत्बुद्धि है याका नाम अध्यारोप है ॥ और अध्यारोप अप  
 वाद इन दोनों करिके ही इस अधिकारी पुरुष के प्रति गुरु शास्त्र ता निर्गुण ब्रह्म का उपदेश करे हैं ॥ यातें अब  
 ता ब्रह्म विषे अध्यारोपित प्रपंच का अपवाद निरूपण करे हैं ॥ तहां जिस अधिष्ठान विषे जो वस्तु तीन काल में  
 अविद्यमान हू आभी भ्रांतिकरिके प्रतीत होवै है ॥ तिसी अधिष्ठान विषे जो ता वस्तु के अभाव का निश्चय है या  
 का नाम अपवाद है ॥ जैसे शुक्ति आदिकों विषे भ्रांतिकरिके प्रतीत भये जे रजतादिक हैं ॥ तिन रजतादिकों  
 का तिन शुक्ति आदिकों विषे यह रजत नहीं है किंतु शुक्ति ही है इस प्रकार का जो अभाव निश्चय है याका ना  
 म अपवाद है ॥ तैसे अधिष्ठान ब्रह्म विषे भ्रांतिकरिके प्रतीत भया जो पूर्व उक्त मायादिक प्रपंच है ॥ ता प्रपंच  
 का जो तिस अधिष्ठान ब्रह्म विषे यह प्रपंच तीन काल में नहीं है या प्रकार तें अभाव निश्चय है ॥ यह ही ता प्र  
 पंच का अपवाद है ॥ इसी अपवाद कूं शास्त्र विषे बाध कहे हैं तथा विलापन कहे हैं ॥ तहां जिस अधिष्ठा  
 न विषे जो वस्तु प्रतीत होवै है ॥ तिसी अधिष्ठान विषे जो तिस वस्तु का तीन काल विषे अत्यंत अभाव का नि

परि०

१

॥ ५९ ॥



श्रयहै ताकूं शास्त्रविषे बाधकहेहैं ॥ सोयहबाध शास्त्रीय १ यौक्तिक २ प्रात्यक्षिक ३ इसभेदकरिकै  
तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां ( अथातआदेशोनेतिनेति । नेहनानास्तिकिंचन ) इत्यादिकशास्त्रतैं जो  
ताअधिष्ठानब्रह्मविषे सर्वप्रपंचकेअभावकानिश्रयहोवैहै ॥ सो शास्त्रीयबाध कहाजावैहै ॥ और जैसे  
मृत्तिकारूपउपादानकारणतैंभिन्नताकरिकै घटरूपकार्यका अभावहींनिश्रयहोवैहै ॥ तैसे सर्वप्रपंच  
का अभिन्ननिमित्तउपादानकारण जोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मतैंभिन्न सर्वप्रपंचकाअभावनिश्रयकरिकै तादृ  
श्यप्रपंचकेमिथ्यात्वनिश्रयकरिकै जो ब्रह्मात्ममात्रताकानिश्रयहै ॥ सो यौक्तिकबाध कहाजावैहै ॥  
और अहंब्रह्मास्मि तत्त्वमसि इत्यादिकमहावाक्यजन्यसाक्षात्कारकरिकै जोकार्यप्रपंचसहितअज्ञानकी  
निवृत्तिहै ॥ सो प्रात्यक्षिकबाध कहाजावैहै ॥ तहां पूर्वउक्तयौक्तिकबाधका यहक्रमहै ॥ स्थूलशरीर  
तैंलैकेब्रह्मांडपर्यंत जितनाकीस्थूलप्रपंचहै ॥ सो पंचीकृतस्थूलभूतोंकाकार्यहै ॥ यातैं तास्थूलप्रपंचकूं  
तिनस्थूलभूतोंविषेलयकरै ॥ अर्थात् तिनस्थूलभूतोंतैं सोस्थूलप्रपंच भिन्ननहींहै ॥ याप्रकारकानिश्रय  
यहअधिकारीपुरुष करै ॥ तिसतैंअनंतर तिनस्थूलभूतोंकूं तथासमष्टिव्यष्टिरूपसर्वसूक्ष्मशरीरोंकूं आप  
णेकारणरूप अपंचीकृतपंचसूक्ष्मभूतोंविषे लयकरै ॥ अर्थात् तेस्थूलभूत तथासमष्टिव्यष्टिसूक्ष्मशरीर ति  
नसूक्ष्मभूतोंकाकार्यहोणेतैं तिनोंतैंभिन्ननहींहैं याप्रकारकानिश्रयकरै ॥ तहां पूर्व जिसजिससूक्ष्मभूतके  
जिसजिससात्विकादिकअंशतैं जिसजिसइंद्रियादिककार्यकीउत्पत्तिकथनकरीथी ॥ तिसतिसकार्यका  
तिसतिसभूतकेसात्विकादिकअंशविषेहीं लयकरणा ॥ तात्पर्ययह ॥ स्थूलभूतोंकातों तिनसूक्ष्मभूतोंके  
तामसअंशविषे लयकरणा ॥ और ज्ञानइंद्रियअंतःकरणका तिनसूक्ष्मभूतोंकेसात्विकअंशविषे लयकर  
णा ॥ और कर्मइंद्रियप्राणका तिनसूक्ष्मभूतोंकेराजसअंशविषे लयकरणा ॥ और तिनसूक्ष्मभूतोंकाभी



तत्त्वा०

॥ ६० ॥

आपणेआपणेकारणविषे लयकरणा ॥ तहां पृथिवीकातों जलविषेलयकरै ॥ और ताजलका तेजविषे लयकरै ॥ और तातेजका वायुविषेलयकरै ॥ और तावायुका आकाशविषेलयकरै ॥ और ताआकाशका अज्ञानविषेलयकरै ॥ और ताअज्ञानका चैतन्यमात्रविषेलयकरै ॥ ईहां यहतात्पर्यहै ॥ जोजोकार्यहोवैहै ॥ तिसकी आपणेउपादानकारणतैंभिन्नसत्ताहोतीनहीं ॥ यातैं उपादानकारणतैंभिन्न कार्यनहीं है इसप्रकारकानिश्चयकरिकै ताकार्यकीविस्मृतिपूर्वक जो ताएककारणविषयकस्मरणहै ॥ यहहीं ताकार्यका ताकारणविषेविलापनहै ॥ और सर्वप्रपंचका परमकारणब्रह्महैं ॥ यातैं तासर्वप्रपंचकाविस्मरणकरिकै जो ताएकब्रह्मविषयकस्मरणहै ॥ यहहीं ताब्रह्मविषे सर्वप्रपंचकाविलापनहै ॥ इसीकुं वेदांतशास्त्रविषे यौक्तिकबाध कहेहैं ॥ यहहींयौक्तिकबाध विष्णुपुराणविषेभी कथनकन्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (जगत्प्रतिष्ठादेवर्षेपृथिव्यप्सुविलीयते ज्योतिष्यापःप्रलीयन्तेज्योतिर्वायौप्रलीयते ॥ १ ॥ वायुश्चलीयते व्योम्नितच्चाव्यक्तेप्रलीयते अव्यक्तंपुरुषेब्रह्मन्निष्कलेसंप्रलीयते ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ हेनारद जगत्काआधारभूतपृथिवी जलविषेलयहोवैहै ॥ और तेजल तेजविषेलयहोवैहै ॥ और सोतेज वायुविषेलयहोवैहै ॥ और सोवायु आकाशविषेलयहोवैहै ॥ और सोआकाश अव्यक्तविषेलयहोवैहै ॥ और सोमायारूप अव्यक्त परमात्माविषेलयहोवैहै इति ॥ और यहउक्तयौक्तिकबाधहीं वार्तिककारनैं (अकारंपुरुषंविश्वमुकारेप्रविलापयेत् उकारंतैजसंस्वक्ष्मंमकारेप्रविलापयेत् मकारंकारणंप्राज्ञंचिदात्मनिविलापयेत्) इत्यादिकवचनोंकरिकै कथनकन्याहै इति ॥ किंवा इसपूर्वउक्त अध्यारोप अपवाद दोनोंकरिकै तत्त्वंपदार्थका शोधनभी सिद्धहोवैहै ॥ सोशोधनकाप्रकार दिखावैहैं ॥ तहां समष्टिस्थूलशरीर समष्टिस्वक्ष्मशरीर माया १ तथायथाक्रमतैं इनतीनोंकरिकैउपहित वैश्वानर सूत्रात्मा ईश्वर २ तथा तिनसर्वोंकाअधिष्ठानरूप

परि०

१

॥ ६० ॥



निरुपाधिकअखंडचैतन्य ३ यहतीनों तमलोहपिंडकीन्याई एकरूपकरिकैप्रतीतहूए तत्पदकावाच्यअर्थ होवैहैं ॥ और समष्टि स्थूलशरीर तथासूक्ष्मशरीर तथामाया इनसर्वोंतैं अन्वयव्यतिरेककरिकै पृथक्नि श्रयकन्याजोअखंडचैतन्यहै ॥ सोअखंडचैतन्य तत्पदकालक्ष्यअर्थहोवैहै ॥ तहां तत्पदार्थकेशोधनका उपायभूत अन्वयव्यतिरेक याप्रकारकाहोवैहै ॥ पंचीकृतस्थूलप्रपंचकीस्थितिअवस्थाविषेतों तास्थूल प्रपंचकासाक्षीरूपकरिकै सोपरमात्मा विद्यमानहै ॥ और तापंचीकरणतैंपूर्वतों सूक्ष्मभूतोंका तथाति नोंकेकार्यका साक्षीरूपकरिकै सोपरमात्मा विद्यमानहै ॥ और तिनआकाशादिकसूक्ष्मभूतोंकीउत्पत्ति तैंपूर्व प्रलयअवस्थाविषेतों मायाकासाक्षीरूपकरिकै सोपरमात्मा विद्यमानहोवैहै ॥ और तत्त्वज्ञानक रिकै तामायारूपअज्ञानकेनिवृत्तहूए तथाभोगकरिकैप्रारब्धकर्मकेनाशहूए इसजीवकेवर्त्तमानशरीरकेपा तैंअनंतर विदेहमुक्तिअवस्थाविषे सोपरमात्मा अखंडस्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकै विद्यमानहोवैहै ॥ य हहीं तातत्पदार्थरूपपरमात्माका अन्वयहै ॥ और समष्टिस्थूलशरीरका पंचीकरणतैंपूर्व भानहोतानहीं ॥ और समष्टिसूक्ष्मशरीरका आकाशादिकभूतोंकीउत्पत्तितैंपूर्व भानहोतानहीं ॥ और मायाका मुक्ति अवस्थाविषेभानहोतानहीं ॥ यहहीं तासमष्टिस्थूलशरीरका तथासमष्टिसूक्ष्मशरीरका तथामायाका व्य तिरेकहै ॥ इसप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै शोधनकन्याजोतत्पदार्थहै ॥ सो कार्यसहितमायाकेसंब धतैरहित अखंड सत्चित्आनंदस्वरूप परमात्मा तत्पदकालक्ष्यअर्थहोवैहै इति ॥ अब त्वंपदार्थका शोधन कहेहैं ॥ तहां व्यष्टिस्थूलशरीर व्यष्टिसूक्ष्मशरीर तिनदोनोंकाकारणरूपअविद्या १ तथायथाक मतैं उक्ततीनशरीरोंकरिकैउपहित विश्व तैजस प्राज्ञ २ तथातिनसर्वोंकाआधाररूप अनुपहितप्रत्यक्चै तन्य ३ यहतीनों तमलोहपिंडकीन्याई एकरूपकरिकैप्रतीतहूए त्वंपदकावाच्यअर्थ होवैहैं ॥ और अ



तत्त्वा०

॥ ६१ ॥

न्यव्यतिरेकरिकै स्थूल सूक्ष्म कारण इनतीनशरीरोंतें पृथक्कन्याजो सत्चित् आनंदस्वरूप प्रत्यक् चैतन्यहै ॥ सो त्वंपदकालक्ष्यार्थ होवैहै ॥ तहां त्वंपदार्थकेशोधनविषेउपयोगीजोअन्वयव्यतिरेकहै ॥ सोपूर्व कथनकरिआयेहैं ॥ सोईहांभीजानिलेणा इति ॥ अब तिनशोधिततत्त्वंपदार्थोंका अभेदरूप महा वाक्यार्थ वर्णनकरेहैं ॥ तहां पूर्वकथनकन्याजो तत्पदकालक्ष्यार्थशुद्धचैतन्यहै तथात्वंपदकालक्ष्यार्थ शुद्धचैतन्यहै ॥ तिनदोनोंलक्ष्यार्थोंकूंग्रहणकरिकै तीनसंबंधोंकरिकैसहितहूआ तत्त्वमस्यादिकमहावाक्य लक्षणावृत्तिकरिकै अखंडार्थकाबोधकहोवैहै ॥ तहां सामानाधिकरण्य १ विशेषणविशेष्यभाव २ लक्ष्यलक्षणभाव ३ यहतीनसंबंध तामहावाक्यकेसहकारीहोवैहैं ॥ तहां तत्त्वमसि इसवाक्यविषेजो तत्त्वं यहदोपदहैं ॥ तिनोंकातों परस्पर सामानाधिकरण्यसंबंधहै ॥ और तिनदोनोंपदोंकेअर्थोंका परस्पर विशेषणविशेष्यभावसंबंधहै ॥ और तिनदोनोंपदोंका अथवा तिनदोनोंअर्थोंका अखंडचैतन्यकेसाथिलक्ष्यलक्षणभावसंबंधहै ॥ अब यहतीनोंसंबंध दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरेहैं ॥ तहां ( भिन्नप्रवृत्तिनिमित्तानांश वदानामेकस्मिन्नर्थेवृत्तिः सामानाधिकरण्यं ) अर्थयह ॥ भिन्नभिन्नहैप्रवृत्तिकानिमित्तजिनोंका ऐसेशब्दों की जाएकअर्थविषेवृत्तिहै ॥ यहहीं तिनपदोंका परस्पर सामानाधिकरण्यसंबंधहै ॥ जैसे ( सोऽयं देवदत्तः ) अर्थयह जोपूर्व देवदत्तनामापुरुष तुमनें देख्याथा सोईयहदेवदत्तहै ॥ इसवाक्यविषे सशब्दतों तत्देशकालविशिष्टदेवदत्तकावाचकहै ॥ और अयंशब्द एतत्देशकालविशिष्टदेवदत्तकावाचकहै ॥ तहां ताएकहींदेवदत्तविषे सशब्दकेप्रवृत्तिकातों तत्देशकालविशिष्टत्व निमित्तहै ॥ और अयंशब्दके प्रवृत्तिका एतत्देशकालविशिष्टत्व निमित्तहै ॥ और सोऽयं यहदोनोंशब्द भागत्यागलक्षणाकरिकै ति स तत्देशकालविशिष्टत्वअंशका तथाएतत्देशकालविशिष्टत्वअंशका परित्यागकरिकै ताएकहींदेवदत्त

परि०

१

॥ ६१ ॥



पिंडकाबोधनकरेहैं ॥ यहहीं सोऽयं इनदोनोंशब्दोंका परस्पर सामानाधिकरण्यसंबंधहै ॥ और । सो  
ऽयंदेवदत्तः । इसउक्तवाक्यविषेहीं सशब्दकाअर्थ जोतत्तद्देशकालविशिष्टहै ॥ और अयंशब्दकाअर्थ जो  
एतत्तद्देशकालविशिष्टहै ॥ तिनदोनोंअर्थोंका परस्पर भेदकीनिवृत्तिकरणेहारा विशेषणविशेष्यभावसंब  
धहै ॥ तहां । सोऽयं । इसप्रकारकेवाक्यप्रयोगविषेतों सशब्दकाअर्थ विशेष्यहै और अयंशब्दकाअर्थ  
विशेषणहै ॥ और । अयंसः । इसप्रकारकेवाक्यप्रयोगविषेतों अयंशब्दकाअर्थ विशेष्यहै और सशब्द  
काअर्थ विशेषणहै ॥ और । सोऽयंदेवदत्तः । इसवाक्यविषेस्थित सःअयं इनदोशब्दोंकीभागत्यागलक्ष  
णाकरिकै तत्तद्देशकालविशिष्टत्व एतत्तद्देशकालविशिष्टत्व इनदोनोंविरोधीअंशोंकापरित्यागकरिकै अवि  
रुद्धदेवदत्तपिंडमात्रका तावाक्यतैबोधहोवैहै ॥ यातें सोदेवदत्तपिंडमात्रहीं सोऽयं इसवाक्यकालक्ष्यअर्थ  
है ॥ ऐसेवाक्यार्थरूपलक्ष्यदेवदत्तकेसाथि सोऽयं इनदोनोंपदोंका तथाइनदोनोंपदोंकेउक्तअर्थोंका लक्ष्य  
लक्षणभावसंबंधहै ॥ तहां जनावणेहारेकानाम लक्षणहै ॥ और जानणेयोग्यअर्थकानाम लक्ष्यहै ॥  
तहां । सोऽयं । इनदोनोंपदोंकरिकै वा इनदोनोंपदोंकेअर्थकरिकै सोदेवदत्तपिंड जान्याजावैहै ॥ यातें  
तेपद तथाअर्थतों लक्षणहैं ॥ और सोदेवदत्तपिंड लक्ष्यहै इति ॥ अब तत्त्वमसिआदिकमहावाक्योंविषे  
तेतीनोंसंबंधघटावैहैं ॥ तहां । तत्त्वमसि । इसमहावाक्यविषेस्थित तत्पदतों परोक्षत्वसर्वज्ञत्वादिधर्म  
विशिष्टईश्वरचैतन्यका वाचकहै ॥ और त्वंपद अपरोक्षत्वअल्पज्ञत्वादिधर्मविशिष्टजीवचैतन्यका वाच  
कहै ॥ तहां परोक्षत्वादिधर्मविशिष्टपणातों तत्पदकेप्रवृत्तिका निमित्तहै ॥ और अपरोक्षत्वादिधर्मवि  
शिष्टपणा त्वंपदकेप्रवृत्तिका निमित्तहै ॥ यातें तत्त्वमइन्दोनोंपदोंकेप्रवृत्तिकानिमित्त भिन्नभिन्नहै ॥  
और तत्त्वं यहदोनोंपद भागत्यागलक्षणाकरिकै एकअखंडचैतन्यकेबोधकहोवैहैं ॥ यहहीं तिन तत्



तत्त्वा०

॥ ६२ ॥

त्वंपदोंका परस्पर सामानाधिकरण्यसंबंधहै ॥ और तातत्पदार्थरूपईश्वरचैतन्यका तथात्वंपदार्थरूपजीवचैतन्यका परस्पर भेदभ्रमकीनिवृत्तिकरणेहारा विशेषणविशेष्यभावसंबंधहै ॥ तहां । तत्त्वमसि । इस प्रकारकेवाक्यप्रयोगविषेतों सोतत्पदार्थ विशेष्यहोवैहै ॥ और त्वंपदार्थ विशेषणहोवैहै ॥ और । त्वंतदसि । इसप्रकारकेवाक्यप्रयोगविषेतों त्वंपदार्थ विशेष्यहोवैहै ॥ और तत्पदार्थ विशेषणहोवैहै ॥ इस प्रकार तत्त्वंपदार्थदोनोंका परस्पर अभेदरूपतैंविशेषणविशेष्यभावकरणेतैं तिनदोनोंकेभेदभ्रमकीनिवृत्ति होइजावैहै ॥ और तत् त्वं इनदोनोंपदोंका तथातिनदोनोंपदोंकेअर्थरूप ईश्वरजीवका वाक्यार्थभूतअखंडचैतन्यकेसाथि लक्ष्यलक्षणभावसंबंधहै ॥ तहां तेतत्त्वंपद तथातिनपदोंकेअर्थ तापरोक्षत्वअपरोक्षत्वादिकविरुद्धअंशकापरित्यागकरिकै ताअविरुद्धअखंडचैतन्यमात्रकूंहीं लखावैहैं ॥ यातैं तिनपदोंविषे तथातिनअर्थोंविषेतों लक्षणरूपताहै ॥ और ताअखंडचैतन्यविषे लक्ष्यरूपताहै ॥ यहउक्ततीनसंबंधहीं अन्यग्रंथविषे ( सामानाधिकरण्यंच विशेषणविशेष्यता लक्ष्यलक्षणभावश्च पदार्थप्रत्यगात्मनां ) इसश्लोककरिकै कथनकरेहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अन्यवेदांतग्रंथोंविषे तत्त्वमसिआदिकवाक्योंकूं भागत्यागलक्षणाकरिकै अखंडचैतन्यकाबोधकपणा कथनकन्याहै ॥ और ईहां आपनैं लक्ष्यलक्षणभावसंबंधकरिकै अखंडचैतन्यकाबोधकपणा कथनकन्या ॥ यातैं तिनग्रंथोंकेसाथि इसग्रंथकाविरोधहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ लक्ष्यलक्षणभाव तथाभागत्यागलक्षणा इनदोनोंका नाममात्रतैंभेदहै ॥ अर्थतैंभेदनहींहै ॥ यातैं सोविरोधहोवैनहीं ॥ इसीअभिप्रायकरिकै वाक्यवृत्तिग्रंथविषे आचार्योंनैं तत्त्वमसिआदिकवाक्योंकूं भागत्यागलक्षणाकरिकै अखंडअर्थकाबोधकपणा कहाहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( तत्त्वमस्यादिवाक्यंचतादात्म्यप्रतिपादने लक्ष्यौतत्त्वंपदार्थौद्वाबुपादायप्रवर्त्तते ) अर्थयह ॥ तत्त्वमसिआदिकमहावाक्य

परि०

१

॥ ६२ ॥



तत्त्वंपदोंकेलक्ष्यअर्थोंकूलैकेहीं अखंडस्वरूपकेप्रतिपादनविषेप्रवृत्तहोवैहैं इति ॥ किंवा जैसे लोकविषे । घटमानय नीलोत्पलं । इत्यादिकवाक्य पदार्थोंकेसंसर्गका वा विशिष्टअर्थका बोधकहोवैहैं ॥ तैसे तत्त्वमसिआदिकवाक्य संबंहरूपसंसर्गका वा विशिष्टअर्थका बोधकहोतेनहीं ॥ किंतु एकअखंडब्रह्मस्वरूपकेहींबोधकहोवैहैं ॥ यहवार्त्ताभी तावाक्यवृत्तिग्रंथविषे आचार्योंनैं कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( संसर्गोवाविशिष्टोवा वाक्यार्थोनात्रसंमतः अखंडैकरसत्वेन वाक्यार्थोविदुषांमतः ) अर्थयह ॥ वेदांतशास्त्रविषे तत्त्वमसिआदिकवाक्योंका संसर्गवाक्यार्थ वा विशिष्टवाक्यार्थ संमतनहींहै ॥ किंतु अखंडएकरसब्रह्महीं वाक्यार्थरूपकरिकै विद्वान्पुरुषोंकूं संमतहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ मैईश्वरनहींहूं यहलोकोंकाप्रत्यक्ष जीवईश्वरकेभेदकूंहीं विषयकरैहै ॥ तथा ( द्वास्तुपर्णासयुजासखाया ) इत्यादिकश्रुतिभी ता जीवईश्वरकेभेदकूंहीं प्रतिपादनकरैहै ॥ यातैं ताप्रत्यक्षश्रुतितैंविरुद्ध अखंडअर्थकूं तेमहावाक्य कैसेप्रतिपादनकरैगे ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ( तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि अयमात्माब्रह्म प्रज्ञानंब्रह्म ) इत्यादिकबहुतश्रुतियोंविषे जीवईश्वरकाअभेदहीं कथनकन्याहै ॥ तिनश्रुतियोंतैंविरुद्धहोणेतैं सोउक्तप्रत्यक्ष भ्रमरूपहींहै ॥ जैसे चंद्रमाकेस्वल्पपरिमाणकूंविषयकरणेहारालोकोंकाप्रत्यक्ष ताचंद्रमाकेमहत्परिमाणकूं कथनकरणेहारेज्योतिषशास्त्रतैंविरुद्धहोणेतैं भ्रमरूपहोवैहै ॥ तैसे सोभेदविषयकप्रत्यक्षभी ताअभेदबोधकश्रुतितैंविरुद्धहोणेतैं भ्रमरूपहींहै ॥ किंवा तावादीनैं जोजीवात्माविषे ईश्वरकाभेद मान्याहै ॥ सोभेद धर्मअधर्मकीन्यांई प्रत्यक्षकेयोग्यहींनहींहै ॥ काहेतैं चक्षुआदिकबाह्यइंद्रियोंकरिकैतों बाह्यरूपादिकोंकाहींप्रत्यक्षहोवैहै ॥ आत्माका वा आत्मवृत्तिधर्मका तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै प्रत्यक्षहोतानहीं ॥ यातैं ताभेदका चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकैतों प्रत्यक्षसंभवतानहीं ॥ और मनविषेतों इंद्रियरूपताहीं सं



तत्त्वा०

॥ ६३ ॥

परि०

१

भवतीनहीं ॥ यातें मनकरिकैभी ताभेदकाप्रत्यक्ष संभवतानहीं ॥ और ताभेदकूं जोसाक्षीभास्य मा  
 निये ॥ तौं स्वप्नपदार्थोंकीन्यांई सोभेद प्रातीतिकहींहोवैगा ॥ ऐसेप्रातीतिकभेदविषयकप्रत्यक्षकरिकै  
 ताअभेदबोधकश्रुतिकाबाध संभवतानहीं ॥ किंतु उलटा ताश्रुतिकरिकैहीं ताप्रत्यक्षकाबाध संभवैहै ॥  
 यातें ताप्रत्यक्षतें जीवईश्वरकेभेदकोसिद्धिहोवैनहीं ॥ और । द्वासुपर्णा । इत्यादिकउक्तश्रुतिका ता  
 जीवईश्वरकेभेदविषे तात्पर्यनहींहै ॥ किंतु तालोकसिद्धभेदकाअनुवादकरिकै ताश्रुतिका अखंडब्रह्मवि  
 षेहीं तात्पर्यहै ॥ काहेतें जिसअर्थकाज्ञान इष्टफलकीप्राप्तिकरेहै ॥ तथा जोअर्थ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंक  
 रिकैअज्ञातहोवैहै ॥ तिसअर्थविषेहीं श्रुतिका तात्पर्यहोवैहै ॥ और सोजीवब्रह्मकाभेद अज्ञातनहींहै ॥  
 किंतु शास्त्रसंस्कारोंतैरहितपुरुषोंकूंभी मैईश्वरनहींहूं इसप्रकारतें ज्ञातहीहै ॥ और ताभेदकेज्ञानतें कोई  
 इष्टफलकीप्राप्तिभीहोतीनहीं ॥ उलटा ( मृत्योःसमृत्युमाप्नोति यइहनानेवपश्यति ) इसश्रुतिनै ताभेदद  
 र्शीपुरुषकूं पुनःपुनः जन्ममरणकीप्राप्तिहीं कथनकरीहै ॥ तथा ( अथयोऽन्यां देवतामुपास्तेऽन्योऽसाव  
 न्योऽहमस्मीति न स वेद यथा पशुः ) इसश्रुतिनै ताभेददर्शीपुरुषकूं पशुकेतुल्य कहाहै ॥ यातें ताश्रुतिका  
 जीवब्रह्मकेभेदविषे तात्पर्यनहींहै ॥ किंतु अखंडब्रह्मविषेहीं तात्पर्यहै ॥ तहां सोअखंडब्रह्म प्रत्यक्षादिक  
 प्रमाणोंकाअविषयहोणेतें अज्ञातभीहै ॥ और ( तरति शोकमात्मवित् । ब्रह्मविदाप्नोति परं । ब्रह्मवेद ब्रह्मै  
 व भवति ) इत्यादिकश्रुतियोंनै ताअखंडब्रह्मकेज्ञानका अनर्थकीनिवृत्ति तथापरमानंदकीप्राप्तिरूपफल  
 कथनकन्याहै ॥ यातें ताअखंडब्रह्मविषेहीं ताश्रुतिकातात्पर्यसिद्धहोवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अखंड  
 ब्रह्महीं महावाक्योंकाअर्थहै यहपूर्व आपनै कहा ॥ तहां ब्रह्मविषे सोअखंडपणा क्याहै ॥ ऐसीशंका  
 केप्रासहू ॥ अब मतभेदसैं ताअखंडपणेकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां ( विजातीयसजातीयस्वगतभेदश्चन्य

॥ ६३ ॥



त्वं अखंडत्वं ) अर्थयह ॥ विजातीयभेद १ सजातीयभेद २ स्वगतभेद ३ इनतीनभेदोंतैं जोरहितप  
णाहै ॥ यहहीं ताब्रह्मविषे अखंडपणाहै ॥ अब ब्रह्मविषे तिनतीनभेदोंकेअभावदिखावणेवासतै प्रथम  
अनात्मवस्तुवोंविषे तेतीनोंभेद दिखावैहैं ॥ तहां विलक्षणजातिवालेपदार्थोंका जोपरस्परभेदहै ॥ सो  
भेद विजातीयभेद कह्याजावैहै ॥ जैसे वृक्षोंविषे जोघटपटादिकपदार्थोंकाभेदहै ॥ तथा तिनघटपटादिक  
पदार्थोंविषे जोतिनवृक्षोंकाभेदहै ॥ सोभेद विजातीयभेद कह्याजावैहै ॥ और समानजातिवालेपदार्थोंका  
जोपरस्परभेदहै ॥ सोभेद सजातीयभेद कह्याजावैहै ॥ जैसे पिप्पलकेवृक्षका जोनिंबकेवृक्षविषेभेदहै ॥  
तथा तानिंबकेवृक्षका जोतापिप्पलकेवृक्षविषेभेदहै ॥ सोभेद सजातीयभेद कह्याजावैहै ॥ और वृक्षवि  
षेस्थित जेपत्रपुष्पशाखादिकहैं ॥ तिनपत्रादिकोंका जोतावृक्षविषेभेदहै ॥ सोभेद स्वगतभेद कह्याजा  
वैहै ॥ इसप्रकार सर्वअनात्मपदार्थ उक्ततीनभेदवालेहींहैं ॥ और ब्रह्मविषे उक्ततीनभेदोंमें कोईप्रकार  
काभीभेद संभवतानहीं ॥ सोदिखावैहैं ॥ तहां ब्रह्मविषे विजातीयभेद तबीसिद्धहोवै ॥ जबी ब्रह्मतैभि  
न्नकोईवस्तु सत्यहोवै ॥ सोब्रह्मतैभिन्नकोईवस्तु सत्यहैनहीं ॥ किंतु अविद्यासहितसर्वकार्यप्रपंच ताअ  
धिष्ठानब्रह्मविषेकल्पितहोणेतैं मिथ्याहींहै ॥ यातैं ताब्रह्मविषे सोविजातीयभेद संभवतानहीं ॥ और  
ताब्रह्मविषे सोसजातीयभेद तबीसिद्धहोवै ॥ जबी ताब्रह्मकेसजातीय कोईदूसरापदार्थहोवै ॥ सोब्रह्म  
केसजातीय कोईदूसरापदार्थ हैनहीं ॥ जोकहो जीव ब्रह्मकेसजातीयहै ॥ सोकहणाभीसंभवतानहीं ॥  
काहेतैं ( तच्चमसि अहंब्रह्मास्मि अयमात्माब्रह्म क्षेत्रज्ञंचापिमांविद्धि ) इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंनैं जीवब्र  
ह्मदोनोंकी अत्यंतएकताकथनकरीहै ॥ और सजातीयपणातों भिन्नवस्तुविषेहोवैहै ॥ अभिन्नवस्तुविषे  
सजातीयपणाहोतानहीं ॥ यातैं ताब्रह्मविषे सोसजातीयभेदभी संभवतानहीं ॥ और ताब्रह्मविषे सो



तत्त्वा०

॥ ६४ ॥

परि०

१

स्वगतभेद तबीसिद्धहोवै ॥ जबी ताब्रह्मविषे अवयव गुण क्रिया जाति संबंध इनपांचोंविषे कोईभी विद्यमानहोवै ॥ परंतु तिनपांचोंविषे कोईभीधर्म ताब्रह्मविषेहैनहीं ॥ जिसकारणतैं ( निष्कलंनिष्क्रियं शांतंनिरवद्यंनिरंजनं । साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च । असंगोह्ययंपुरुषः । नित्यःसर्वगतःस्थाणुरचलोऽयं स नातनः ) इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंनैं ताब्रह्मविषे तिनअवयवादिकपांचोंका निषेधकन्याहै ॥ यातैं ताब्रह्मविषे सोस्वगतभेदभी संभवतानहीं ॥ ऐसेउक्ततीनभेदोंतैंजोरहितपणाहै ॥ यहहीं ताब्रह्मविषे अखंड पणाहै ॥ तहां एकस्वगतभेदतैंरहितपणेकूं जोअखंडपणा कहते ॥ तौं सांख्यियोंकेआत्माविषे ताअखंड पणेकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ जिसकारणतैं तेसांख्यमतवालेभी ताआत्माकूं अवयव गुण क्रिया जाति संबंध इनपांचोंतैंरहितहींमानेहैं ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतैं तालक्षणविषे सजाती यभेदतैंरहितपणा कथनकन्याहै ॥ तहां तेसांख्यमतवाले नानाआत्मामानेहैं ॥ यातैं तिनोंकेमतविषे सोआत्मा सजातीयभेदतैंरहितनहींहै ॥ किंतु सजातीयभेदवालाहींहै ॥ यातैं ताआत्माविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा सजातीय स्वगत इनदोभेदोंतैंरहितपणेकूं जोअखंडपणाकहते ॥ तौं आकाश विषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ काहेतैं सोआकाश एकहै ॥ यातैं सजातीयभेदतैंभीरहितहै ॥ और निरवयवनिष्क्रियहै ॥ यातैं स्वगतभेदतैंभीरहितहै ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतैं तालक्षणविषे विजातीयभेदतैंरहितपणा कथनकन्याहै ॥ तहां सोआकाश विजातीयभेदतैंरहितनहींहै ॥ किंतु पृथिवीआदिकविजातीयपदार्थोंकेभेदवालाहींहै ॥ यातैं ताआकाशविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा एकविजातीयभेदतैंरहितपणेकूं जोअखंडपणाकहते ॥ तौं ताब्रह्मविषे सजातीय स्वगत इनदो भेदोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ ताकरिकै ( एकमेवाद्वितीयंब्रह्म ) इसश्रुतिकाविरोधहोवैगा ॥ ताश्रुतिविरोधके

॥ ६४ ॥



निवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे सजातीयभेदतैरहितपणा कहाहै ॥ और ताब्रह्मविषे एकरसत्वकेसिद्ध  
करणेवासतै स्वगतभेदतैरहितपणा कहाहै इति ॥ अथवा ताअखंडपणेका यहलक्षणकरणा ॥ ( त्रिविध  
परिच्छेदशून्यत्वं अखंडत्वं ) अर्थयह ॥ देशपरिच्छेद १ कालपरिच्छेद २ वस्तुपरिच्छेद ३ इनतीनपरि  
च्छेदोंतैजोरहितपणाहै ॥ यहहीं ताब्रह्मविषे अखंडपणाहै ॥ अब ब्रह्मविषे तीनपरिच्छेदोंतैरहितपणादि  
खावणेवासतै प्रथम अनात्मवस्तुवोंविषे तेतीनोंपरिच्छेद दिखावैहैं ॥ तहां अत्यंताभावकाजोप्रतियोगी  
पणाहै ताकानाम देशपरिच्छेदहै ॥ जैसे घटत्वादिकधर्मोंका पटादिकोंविषे अत्यंताभावरहेहै ॥ ताअ  
त्यंताभावकाप्रतियोगीपणा तिनघटत्वादिकधर्मोंविषेरहेहै ॥ यहहीं तिनघटत्वादिकधर्मोंविषे देशपरि  
च्छेदहै ॥ और प्रागभावका तथाप्रध्वंसाभावका जोप्रतियोगीपणाहै ताकानाम कालपरिच्छेदहै ॥ जै  
से घटका आपणीउत्पत्तितैपूर्व आपणेउपादानकारणरूपकपालोंविषे प्रागभावरहेहै ॥ तथा आपणेना  
शतैअनंतर तिनकपालोंविषे प्रध्वंसाभावरहेहै ॥ ताप्रागभावका तथाप्रध्वंसाभावका प्रतियोगीपणा  
ताघटविषेरहेहै ॥ यहहीं ताघटविषे कालपरिच्छेदहै ॥ और अन्योन्याभावकेप्रतियोगीपणेकानाम व  
स्तुपरिच्छेदहै ॥ जैसे घटका पटविषेभेदरहेहै ॥ और पटका ताघटविषेभेदरहेहै ॥ ताभेदरूपअन्योन्या  
भावकाप्रतियोगीपणा ताघटपटकूंहै ॥ यहहीं तिनघटपटादिकोंविषे वस्तुपरिच्छेदहै ॥ इसप्रकार सर्व  
अनात्मपदार्थ उक्ततीनपरिच्छेदवालेहींहैं ॥ और ब्रह्मविषे उक्ततीनपरिच्छेदोंमें कोईप्रकारकाभीपरिच्छे  
द रहतानहीं ॥ सोदिखावैहैं ॥ तहां ( आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः । महतोमहीयान् ) इत्यादिकश्रुति  
योंनै ब्रह्मकूं विभुकहाहै ॥ और विभुद्रव्यका कोईभीस्थानविषे अत्यंताभावहोतानहीं ॥ यातै ताब्रह्म  
विषे सोदेशपरिच्छेद संभवतानहीं ॥ और ( सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म । नजायतेम्रियतेवाकदाचित् ) इत्यादि



तत्त्वा०

॥ ६५ ॥

कश्रुतियोंनै ताब्रह्मकूं उत्पत्तिविनाशतैरहित नित्यकह्याहै ॥ और नित्यवस्तुका प्रागभाव तथाप्रध्वंसाभाव होतानहीं ॥ यातै ताब्रह्मविषे सोकालपरिच्छेदभी संभवतानहीं ॥ और स्वप्नपदार्थोंकीन्याई सर्वजगत् ब्रह्मविषे आरोपितहोणेतै मिथ्याहै ॥ और आरोपितमिथ्यावस्तु अधिष्ठानतैभिन्नसत्तावाला होता नहीं ॥ यातै सो अधिष्ठानब्रह्महीं तासर्वजगत्का आत्मारूपहै ॥ या कारणतै ताब्रह्मविषे सोवस्तुपरिच्छेदभी संभवतानहीं ॥ तहां श्रुति ॥ ( वेदाहमेतमजरं पुराणं सर्वात्मानं सर्वगतं विभुत्वात् ) अर्थ यह ॥ जो ब्रह्म अजरहै तथा पुराणहै तथा सर्वका आत्मारूपहै तथा विभुहोणेतै सर्वगतहै ॥ ऐसे ब्रह्मकूं मैं अपरोक्ष जानता हूं इति ॥ और कल्पतरु ग्रंथके कर्त्ता आचार्यनैतौ ता अखंडपणेका यह लक्षण कन्याहै ॥ ( अपर्यायानेकशब्दप्रकाश्यत्वे सति अविशिष्टत्वं अखंडत्वं ) अर्थ यह ॥ अपर्याय तथा अनेक ऐसे जेशब्दहैं ॥ तिन शब्दोंकरिकै जो वस्तु प्रकाशितहोवै तथा विशिष्टभावतैरहितहोवै ॥ सो वस्तु अखंडकह्या जावैहै ॥ तहां तत्त्वमसि अहं ब्रह्मास्मि इत्यादिक महावाक्योंविषे स्थित जेतत्त्वं आदिक शब्दहैं ॥ तेशब्द वाच्य अर्थके भेदतै अपर्यायभीहैं ॥ तथा अनेकभीहैं ॥ ऐसे शब्दोंकरिकै सो ब्रह्म प्रकाशितहै ॥ तथा विशिष्टभावतैरहितभीहै ॥ यहहीं ताब्रह्मविषे अखंडपणाहै ॥ तहां । घटः कलशः । इन अनेक शब्दोंकरिकै यद्यपि घट प्रकाशितहै ॥ तथापि तेशब्द अपर्यायनहींहैं ॥ किंतु पर्यायहींहैं ॥ और । नीलमुत्पलं । इन अपर्याय अनेक शब्दोंकरिकै यद्यपि उत्पल प्रकाशितहै ॥ तथापि सो उत्पल विशिष्टभावतैरहितनहींहै ॥ किंतु नीलगुणविशिष्टहींहै ॥ यातै तिन घटनीलउत्पलादिकोंविषे ता अखंडपणेके लक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ यद्यपि ( यतो वाचो नि वर्त्तते अप्राप्य मनसा सह ) इत्यादिक श्रुतियोंनै ब्रह्मकूं मनवाणीका अविषयकह्याहै ॥ यातै ताब्रह्मविषे साक्षात् शब्दप्रकाश्यत्व संभवतानहीं ॥ तथापि वाच्यार्थभूतमाया अंतःकरणद्वारा लक्षणावृत्तिकरिकै ताब्र

परि०

१

॥ ६५ ॥



ब्रह्मविषे शब्दप्रकाश्यत्वसंभवैहै ॥ जोकदाचित् लक्षणावृत्तिकारिकैभी ताब्रह्मविषे शब्दप्रकाश्यत्व नहींमा  
निये ॥ तौ ( तंतवौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि ) अर्थयह उपनिषदरूपशब्दप्रमाणकारिकैजानणेयोग्य तिसप  
रमात्माकेस्वरूपकूं में तुमारेसैंपूछताहूं ॥ इसश्रुतिकाविरोध प्राप्तहोवेंगा ॥ यातैं तत्त्वमसिआदिकमहा  
वाक्य तत्त्वंपदकेलक्ष्यअर्थकूंग्रहणकारिकै ताअखंडस्वरूपकेप्रतिपादनविषे प्रवर्तहोवैहैं यहउक्तअर्थ सर्व  
दोषतैंरहितहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ उक्तीतिसैं तत्त्वमसिआदिकवाक्य ताअखंडअर्थकेबोधकहो  
वो ॥ परंतु ताअखंडअर्थकेबोधकारिकै इसअधिकारीपुरुषकूं कौनफलहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥  
श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरु जबी इसअधिकारीपुरुषकेप्रति तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यका उपदेशकरैहै ॥ त  
बी इसअधिकारीपुरुषकूं भागत्यागलक्षणाकारिकै मायाअंतःकरणादिकवाच्यभागकेपरित्यागपूर्वक अ  
खंडब्रह्मकाज्ञानहोवैहै ॥ अर्थात् ( अहंब्रह्मास्मि ब्रह्मैवाहमस्मि ) याप्रकारका परस्परअभेदविषयक अ  
परोक्षज्ञानहोवैहै ॥ तहां । अहंब्रह्मास्मि । यहवृत्तितौ अहंपदार्थप्रत्यक्आत्माविषे ब्रह्मकेअभेदकूंविषय  
करैहै ॥ और । ब्रह्मैवाहमस्मि । यहवृत्तितौ ब्रह्मविषे ताप्रत्यक्आत्माकेअभेदकूंविषयकरैहै ॥ तहां अ  
हंपदार्थप्रत्यक्चेतनविषे सर्वौकूं अपरोक्षपणा तथाआत्मपणा सिद्धहै ॥ और ब्रह्मकूं परोक्ष तथाअना  
त्मा मानैहैं ॥ जबी प्रत्यक्आत्माविषे ब्रह्मकेअभेदकूंविषयकरणेहारा अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका अपरो  
क्षज्ञानहोवैहै ॥ तबी ताज्ञानतैं ब्रह्मके परोक्षपणेकी तथाअनात्मपणेकी निवृत्तिहोइजावैहै ॥ और इस  
जीवात्माकूं लोक परिच्छिन्नमानैहैं तथाअब्रह्मरूप मानैहैं ॥ जबी ताब्रह्मविषे इसजीवात्माकेअभेदकूं  
विषयकरणेहारा ब्रह्मैवाहमस्मि याप्रकारकाअपरोक्षज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ तबी ताज्ञानतैं इसजीवात्माके  
परिच्छिन्नपणेकी तथाअब्रह्मपणेकी निवृत्तिहोइजावैहै ॥ यातैं इसअधिकारीपुरुषनैं ब्रह्मविषे परोक्षत्व



तत्त्वा०

॥ ६६ ॥

अनात्मत्वशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासतै तथा आपणे आत्माविषे परिच्छिन्नत्वअब्रह्मत्वशंकाकीनिवृत्तिकर  
 नेवासतै अहंब्रह्मास्मि ब्रह्मैवाहमस्मि याप्रकारतै आत्माब्रह्मका परस्परअभेद निश्चयकरणा ॥ इसप्रका  
 र तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यतैजन्य जाअखंडब्रह्माकार अपरोक्षवृत्तिहै ॥ ताअपरोक्षवृत्तिरूपज्ञानकरि  
 कै कार्यप्रपंचसहितअज्ञानरूपअनर्थकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तथा यहप्रत्यक्आत्मा अखंडएकरसब्रह्मानंदरू  
 पकरिकै स्थितहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( तरतिशोकमात्मवित् । ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ) अर्थयह ॥ आत्मा  
 केसाक्षात्कारवालापुरुष सर्वअनर्थरूपशोककूंनाशकरैहै ॥ और अहंब्रह्मास्मि याप्रकार ब्रह्मकूं आपणा  
 आत्मारूपकरिकैजानणेहारा विद्वान्पुरुष ब्रह्मरूपहींहोवैहै ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतियां ताब्रह्मवेत्तापुरुष  
 कूं ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानकीनिवृत्ति तथाब्रह्मानंदकीप्राप्ति रूपफल कथनकरैहैं इति ॥ इतिश्रीम  
 त्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपाद शिष्येण स्वामिचिद्धनानंदगिरिणा विर  
 चिते प्राकृततत्त्वानुसंधाने प्रथमपरिच्छेदः समाप्तः ॥ १ ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ ॥ श्रीशंकराचार्ये  
 भ्योनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

परि०

१

इतिश्रीस्वामिचिद्धनानंदगिरिकृतप्राकृततत्त्वानुसंधाने

प्रथमपरिच्छेदः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ ६६ ॥



अथ श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतप्राकृत  
तत्त्वानुसंधानेद्वितीयपरिच्छेदप्रारंभः॥ २ ॥



तत्त्वा०

॥ १ ॥

परि०

२

॥ ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥  
 अथ द्वितीयपरिच्छेदप्रारंभः ॥ तहां तत्त्वमसिआदिकवाक्यकरिकैजन्य जाअखंडब्रह्मविषयक अपरोक्ष  
 वृत्तिहै ॥ तावृत्तिकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं अज्ञानकीनिवृत्ति तथापरमानंदकीप्राप्ति होवैहै ॥ यहवा  
 र्त्ता पूर्व प्रथमपरिच्छेदकेअंतविषे कहीथी ॥ ताकेविषे यहजिज्ञासाहोवैहै ॥ तावृत्तिका क्यास्वरूपहै ॥  
 और तावृत्तिविषे कौनप्रमाणहै ॥ और तावृत्तिकी किसप्रकारतैंउत्पत्तिहोवैहै ॥ और तिसवृत्तिकरिकै  
 कौनप्रयोजनसिद्धहोवैहै ॥ ऐसीजिज्ञासाकेप्राप्तहूए ॥ प्रमा अप्रमा इसभेदतैं दोप्रकारकीवृत्तिकेनिरूप  
 णकरणेवासतै प्रथम तावृत्तिका सामान्यलक्षणकहेहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ प्रमाणकरिकैहीं प्रमेयकी  
 सिद्धिहोवैहै ॥ यातैं ग्रंथविषे प्रथम प्रमाणकाहीं निरूपणकन्याचाहिये ॥ तिसतैंअनंतर प्रमेयकानि  
 रूपणकन्याचाहिये ॥ याकारणतैंहीं न्यायशास्त्रविषे प्रथम प्रमाणकानिरूपणकरिकै पश्चात् प्रमेयका  
 निरूपणकन्याहै ॥ और आपतों प्रथमपरिच्छेदविषे ब्रह्मात्मरूपप्रमेयकानिरूपणकरिकै इसद्वितीयप  
 रिच्छेदविषे प्रमाणकानिरूपणकरोहो ॥ यातैं यहआपकानिरूपण सर्वशास्त्रतैंविरुद्धहै ॥ ॥ समा  
 धान ॥ ॥ अन्यन्यायादिकशास्त्रोंविषे प्रमेयकूं जडपणाहोणेतैं ताप्रमेयकी प्रमाणकेअधीनहीं सिद्धि  
 होवैहै ॥ यातैं तिनअन्यशास्त्रोंविषेतों प्रथम प्रमाणकानिरूपणकरिकैहीं पश्चात् प्रमेयकानिरूपणकरणा  
 उचितहै ॥ और इसवेदांतशास्त्रविषेतों सर्वप्रमाणादिकव्यवहारोंकासाधक अद्वितीयआत्मारूपसाक्षी  
 चैतन्यहीं प्रमेयहै ॥ यातैं इसवेदांतशास्त्रविषेतों प्रथम ताचैतन्यरूपप्रमेयकानिरूपणकरिकैहीं पश्चात्  
 तिनप्रमाणादिकोंकानिरूपणकरणा उचितहै ॥ यहवार्त्ता संक्षेपशारीरकग्रंथविषे श्रीसर्वज्ञमहामुनिनैभी  
 कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( मानेनमेयावगतिश्चयुक्ता धर्मस्यजाड्याद्विधिनिष्ठकांडे ॥ मेयेनमानावगति

॥ ६७ ॥



स्तुयुक्ता वेदांतवाक्येष्वजडं हि मेयं ) ॥ अर्थ यह ॥ पूर्वमीमांसाविषे धर्मादिरूपप्रमेय जड है ॥ यातें ता प्रमेयकीसिद्धि प्रमाणकरिकैयुक्त है ॥ और वेदांतशास्त्रविषे ब्रह्मात्मरूपप्रमेय चेतन है ॥ यातें ता प्रमेय कीसिद्धि प्रमाणकरिकैयुक्त नहीं है ॥ किंतु ताचेतनप्रमेयकरिकैहीं जडप्रमाणकीसिद्धि युक्त है इति ॥ अब तावृत्तिका सामान्यलक्षण कहे हैं ॥ ( विषयचैतन्याभिव्यंजकोंऽतः करणाज्ञानयोः परिणामविशेषः वृत्तिः ) अर्थ यह ॥ घटपटादिरूपविषयकरिकै अवच्छिन्नजो चैतन्य है ताकानाम विषयचैतन्य है ॥ ताविषयचैतन्यका अभिव्यंजक ऐसा जो अंतःकरणका वा अज्ञानका परिणामविशेष है ॥ सो वृत्तिज्ञान कहा जावै है ॥ यद्यपि क्रोध इच्छा सुख दुःख इत्यादिकभी अंतःकरणकेहीं परिणाम हैं ॥ तथा आकाशादिक अज्ञानके परिणाम हैं ॥ तथापि तिनक्रोधादिकोंविषे ताविषयचैतन्यका अभिव्यंजक पणा है नहीं ॥ यातें । विषयचैतन्याभिव्यंजकः । इसपदके कहनेतें तिनक्रोधादिकोंविषे तावृत्तिकेलक्षणकी अतिव्याप्ति होवै नहीं ॥ और यद्यपि चक्षुआदिक इंद्रियभी स्वजन्यवृत्तिद्वारा ताविषयचैतन्यके अभिव्यंजक हैं ॥ तथापि तेचक्षुआदिक इंद्रिय अंतःकरणका वा अज्ञानका परिणाम नहीं हैं ॥ किंतु तेजादिक भूतोंकाहीं परिणाम हैं ॥ यातें अंतःकरणका वा अज्ञानका परिणाम कहनेतें तिनचक्षुआदिक इंद्रियोंविषे तावृत्तिकेलक्षणकी अतिव्याप्ति होवै नहीं ॥ तहां अतिव्याप्ति अव्याप्ति असंभव इनतीन दोषोंका स्वरूप प्रथमपरिच्छेदविषे कथन करि आये हैं ॥ सो सर्वत्र जानिलेना ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व वृत्तिविषे विषयचैतन्यका अभिव्यंजक पणा कहा ॥ सो अभिव्यंजक पणा क्या है ॥ ऐसी शंकाके प्राप्त हुए ॥ अब ता अभिव्यंजक पणेका लक्षण कहे हैं ॥ ( अपरोक्षव्यवहारजनकत्वं अभिव्यंजकत्वं ) अर्थ यह ॥ अयं घटः अयं पटः इस प्रकारका जो अपरोक्षव्यवहार है ॥ ता अपरोक्षव्यवहारका जनक पणाहीं तिनवृत्तियोंविषे विषयचैतन्यका



तत्त्वा०

॥ २ ॥

अभिव्यंजकपणाहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ चक्षुआदिकइंद्रियजन्य अपरोक्षवृत्तियोंविषेतों सोअपरोक्षव्यवहारकाजनकपणा संभवैहै ॥ परंतु अनुमानादिकप्रमाणजन्य अनुमितिआदिकपरोक्षवृत्तियोंविषे सो अपरोक्षव्यवहारकाजनकपणा हैनहीं ॥ जिसकारणतैं पर्वतोवन्दिमान् इसअनुमितितैंअनंतर अयंवन्दि याप्रकारका अपरोक्षव्यवहार कोईकूंभी होतानहीं ॥ यातैं अनुमितिआदिकपरोक्षवृत्तियोंविषे ता अभिव्यंजकपणेकेअभावतैं ताउक्तवृत्तिकेलक्षणकी अव्याप्तिहींहोवैहै ॥ ऐसीअरुचिकेदूए ॥ अब ताअभिव्यंजकपणेका अन्यप्रकारतैं निर्वचनकरैहैं ॥ ( आवरणनिवर्त्तकत्वं अभिव्यंजकत्वं ) अर्थयह ॥ तिनवृत्तियोंविषे जोआवरणकानिवर्त्तकपणाहै ॥ यहहीं ताविषयचैतन्यका अभिव्यंजकपणाहै ॥ सोअभिव्यंजकपणा अनुमितिआदिकपरोक्षवृत्तियोंविषेभीहै ॥ यातैं तिनपरोक्षवृत्तियोंविषे ताउक्तलक्षणकी अव्याप्तिहोवैनहीं ॥ इहां यहअभिप्रायहै ॥ सोअज्ञानकृतआवरण दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतों असत्त्वापादकआवरणहोवैहै ॥ और दूसरा अभानापादकआवरणहोवैहै ॥ तहां घटादिकविषयोंके नास्ति इसव्यवहारकाहेतुरूपआवरणतों असत्त्वापादकआवरण कहाजावैहै ॥ और नभाति इसव्यवहारका हेतुरूपआवरण अभानापादकआवरण कहाजावैहै ॥ तहां अभानापादकआवरणकीतों अपरोक्षज्ञान करिकैहीं निवृत्तिहोवैहै ॥ परोक्षज्ञानकरिकै निवृत्तिहोतीनहीं ॥ और असत्त्वापादकआवरणकीतों अनुमितिआदिकपरोक्षज्ञानकरिकैभी निवृत्तिहोवैहै ॥ जिसकारणतैं धूमरूपहेतुकेज्ञानतैं पर्वतोवन्दिमान् याप्रकारकीअनुमितिकेदूए तथाशास्त्रप्रमाणतैं स्वर्गादिकोंकेपरोक्षज्ञानदूए पर्वतविषेवन्दिनहींहै तथा स्वर्गादिकनहींहैं याप्रकारका नास्तिव्यवहार होतानहीं ॥ किंतु वन्दिःअस्ति स्वर्गोंऽस्ति याप्रकारका अस्तिव्यवहारहींहोवैहै ॥ यातैं अनुमितिआदिकपरोक्षवृत्तियोंविषेभी ताअसत्त्वापादकआवरणकानि

परि०

२

॥ ६८ ॥



वर्त्तकपणा विद्यमानहीहै ॥ अथवा सोअज्ञानकृतआवरण दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतों विषयचैतन्यनिष्ठआवरणहोवैहै ॥ और दूसरा प्रमाताचैतन्यनिष्ठआवरणहोवैहै ॥ तहां विषयचैतन्यनिष्ठआवरणकीतों अपरोक्षज्ञानकरिकैहीं निवृत्तिहोवैहै ॥ और प्रमाताचैतन्यनिष्ठआवरणकीतों परोक्षज्ञानतैंभी निवृत्ति होवैहै ॥ यातैं तिनअनुमितिआदिकपरोक्षवृत्तियोंविषे ताआवरणनिवर्त्तकत्वरूपअभिव्यंजकपणेकेसिद्ध हूए ताउक्तवृत्तिकेलक्षणकी अव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सुखदुःखादिकोंकूंविषयकरणेहारेवृत्तिज्ञानविषे तथाईश्वरकेमायावृत्तिरूपज्ञानविषे तथाअविद्याकीवृत्तिरूपभ्रमज्ञानविषे सोआवरण कानिवर्त्तकपणा हैनहीं ॥ यातैं तिनवृत्तियोंविषे ताउक्तलक्षणकीभी अव्याप्तिहीहोवैहै ॥ ऐसीअरुचि केहूए ॥ अब अन्यप्रकारतैं ताअभिव्यंजकपणेकानिर्वचनकरैहैं ॥ ( अस्तिव्यवहारजनकत्वं अभिव्यंजकत्वं ) अर्थयह ॥ घटोअस्ति पटोअस्ति इसप्रकारका जोअस्तिव्यवहारहै ॥ ताअस्तिव्यवहारकाजनकपणाहीं तिनवृत्तियोंविषे विषयचैतन्यका अभिव्यंजकपणाहै ॥ यहअभिव्यंजकपणा तिन अपरोक्षवृत्तियोंविषे तथापरोक्षवृत्तियोंविषे तथासुखादिविषयकवृत्तियोंविषे तथामायाकीवृत्तियोंविषे तथाभ्रमवृत्तियोंविषे सर्वत्रविद्यमान ॥ यातैं इसलक्षणकीकोईभीवृत्तिविषे अव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व आपनैं वृत्तिकेलक्षणविषे अंतःकरणके वा अज्ञानके परिणामकूं वृत्तिकह्या ॥ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं ( पूर्वरूपपरित्यागेनरूपांतरापत्तिः परिणामः ) अर्थयह ॥ वस्तुकूं आपणेपूर्वरूपकापरित्यागकरिकै जो अन्यरूपकीप्राप्तिहै ताकानाम परिणामहै ॥ यहहीं तापरिणामकालक्षण करणाहोवैगा ॥ सोसंभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं लोकविषे कोईभीवस्तुकूं पूर्वरूपकेविद्यमानहूए वा पूर्वरूपकेनष्टहूए अन्यरूपकी प्राप्ति देखणेविषेआवतीनहीं ॥ किंवा वेदांतशास्त्रविषे विवर्त्तवादहीं अंगीकारहै ॥ परिणामवाद अंगी



तत्त्वा०

॥ ३ ॥

कारहैनहीं ॥ जोकदाचित् तापरिणामवादकूं अंगीकारकरोंगे ॥ तौ सिद्धांतकाविरोध प्राप्तहोवेंगा ॥  
 ऐसीशंकाकेप्राप्तहूए ॥ अब तापरिणामका तथाविवर्तका लक्षणकहेहैं ॥ (उपादानसमसत्ताकान्यथा  
 भावः परिणामः ॥ उपादानविषमसत्ताकान्यथाभावः विवर्तः) अर्थयह ॥ उपादानकारणकेसमानसत्ता  
 वाला ऐसाजो ताउपादानका अन्यथाभावहै ॥ सो परिणाम कह्याजावैहै ॥ जैसे दुग्धका दधिपरि  
 णामहै ॥ तहां तादुग्धकी व्यावहारिकसत्ताहै ॥ और तादधिकीभी व्यावहारिकसत्ताहै ॥ यातैं सोद  
 धि तादुग्धरूपउपादानकारणके समानसत्तावालाहै ॥ और तादधिविषे दुग्धव्यवहारहोतानहीं ॥ यातैं  
 सोदधि तादुग्धका अन्यथाभावभीहै ॥ यातैं तादधिविषे तादुग्धकापरिणामपणा संभवैहै ॥ और उपा  
 दानकारणतैंविषमसत्तावाला ऐसाजो ताउपादानका अन्यथाभावहै ॥ सो विवर्त कह्याजावैहै ॥ जैसे  
 रज्जुविषेप्रतीतभयाजोसर्पहै ॥ सोसर्प तारज्जुअवच्छिन्नचैतन्यका विवर्तहै ॥ तहां ताचैतन्यकीतौ पा  
 र्मार्थिकसत्ताहै ॥ और ताकल्पितसर्पकी प्रातिभासिकसत्ताहै ॥ यातैं सोसर्प ताचैतन्यरूपउपादान  
 कारणतैं विषमसत्तावालाहै ॥ और अयंसर्पः याप्रकारकेव्यवहारकाविषयहोणेतैं सोसर्प ताचैतन्यका  
 अन्यथाभावभीहै ॥ यातैं ताकल्पितसर्पविषे ताचैतन्यकाविवर्तपणा संभवैहै ॥ तहां । अन्यथाभावः प  
 रिणामः । इतनामात्रहीं जोतापरिणामकालक्षणकरते ॥ तौ अन्यथाभावरूपविवर्तविषे तापरिणामकेल  
 क्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतैं तापरिणामकेलक्षणविषे । उपादानस  
 मसत्ताक । यहपद कथनकन्याहै ॥ तहां सोविवर्त उपादानकेसमसत्तावाला होतानहीं ॥ यातैं तावि  
 वर्तविषे तापरिणामकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ इसप्रकार विवर्तकेलक्षणविषेभी अन्यथाभावरूप  
 परिणामविषे अतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतैं । उपादानविषमसत्ताक । यहपद कथनकन्याहै ॥ इस

परि०

२

॥ ६९ ॥



प्रकार परिणामका तथाविवर्तका परस्परभेदहै ॥ तैसे प्रसंगविषे साउक्तवृत्तिभि ताअंतःकरणअज्ञान  
 रूपउपादानकारणकीअपेक्षाकरिकैतौं परिणामहै ॥ और अधिष्ठानचैतन्यकीअपेक्षाकरिकै विवर्तहै ॥  
 यातैं परिणामकीअप्रसिद्धि तथासिद्धांतकाविरोध होवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अंतःकरण नि  
 रवयवद्रव्यहै ॥ यातैं ताअंतःकरणका सोवृत्तिरूपपरिणाम संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं लोकविषे सा  
 वयवदुग्धादिकोंकाहीं दधिआदिकपरिणाम देखनेविषेआवेहै ॥ निरवयवद्रव्यका कहांभी परिणामदेख  
 नेविषेआवतानहीं ॥ जोकदाचित् निरवयवद्रव्यकाभी परिणाममानोंगे ॥ तौं तानिरवयवद्रव्यकेस्वरू  
 पकाहींनाशहोवेंगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ( तन्मनोऽकुरुत ) अर्थयह ॥ सोपरमात्मा मनकूं उत्पन्न  
 करताभया ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे तामनरूपअंतःकरणकी उत्पत्तिकथनकरीहै ॥ और जोजोद्रव्य उत्प  
 त्तिवालाहोवैहै ॥ सोसोद्रव्य दुग्धादिकोंकीन्याई सावयवहींहोवैहै ॥ यातैं ताअंतःकरणकूं सावयवता  
 होणेतैं परिणामीपणा संभवैहै ॥ किंवा जैसे अंतःकरणका सावयवपणा श्रुतिप्रमाणकरिकैसिद्धहै ॥  
 तैसे तावृत्तिज्ञानकूं अंतःकरणकाधर्मपणाभी श्रुतिप्रमाणकरिकैहीं सिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( कामःसंक  
 ल्पोविचिकित्साश्रद्धाऽश्रद्धाघृतिरघृतिर्हीर्षीर्भीरित्येतत्सर्वमनएव ) अर्थयह ॥ इच्छा संकल्प संशय श्रद्धा  
 अश्रद्धा धैर्य अधैर्य लज्जा वृत्तिज्ञान भय यहसर्व मनकेहींधर्महैं इति ॥ यहश्रुति इच्छादिकोंकूं अंतः  
 करणकाहींधर्म कहेहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अहंजानामि अहंइच्छामि याप्रकारकाअनुभव सर्वलोकों  
 कूंहोवैहै ॥ ताअनुभवतैं तेज्ञानइच्छादिक आत्माकेहींधर्म सिद्धहोवैहैं ॥ यातैं तिनज्ञानइच्छादिकोंवि  
 षे अंतःकरणकाधर्मपणा संभवतानहीं ॥ जोकदाचित् तिनज्ञानइच्छादिकोंकूं अंतःकरणकाधर्म मानों  
 गे ॥ तौं ताउक्तअनुभवका विरोधहोवेंगा ॥ और इसअनुभवका कोईबाधकहैनहीं ॥ यातैं इसअनुभ



तत्त्वा०

॥ ४ ॥

वविषे भ्रमरूपताभी संभवतीनहीं ॥ और तेज्ञानइच्छादिक मनरूपनिमित्तकारणकरिकैजन्यहोवैहैं ॥  
 यातैं । एतत्सर्वमनएव । इसउक्तश्रुतिकातों तेइच्छादिकसर्व मनकरिकैहींजन्यहैं याप्रकारकाभीअर्थ सं  
 भवैहै ॥ यातैं ताश्रुतिवचनतैंभी तिनइच्छाज्ञानादिकोंकूं अंतःकरणकीधर्मरूपता सिद्धहोवैनहीं ॥ ॥  
 समाधान ॥ ॥ जैसे वास्तवतैं दाहकपणेतैंरहित लोहपिंडविषे अभिकेतादात्म्यसंबंधकरिकै यहलो  
 हपिंड दाहककरैहै याप्रकारका दाहकर्तृत्वव्यवहार होवैहै ॥ तैसे अंतःकरण आत्मा दोनोंके तादात्म्य  
 अध्यासकरिकैहीं अहंजानामि अहंइच्छामि इत्यादिकअनुभव होवैहै ॥ जोकहो ताअध्यासविषे कोई  
 प्रमाणनहींहै ॥ सोऐसानहींकहणा ॥ जिसकारणतैं ताअध्यासविषे इसपुरुषका आपणाअनुभवहीं प्रमा  
 णहै ॥ सोप्रकार दिखावैहैं ॥ अहंजानामि याप्रकारकाअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ ताअनुभवतैं इस  
 पुरुषविषे ज्ञातापणा प्रतीतहोवैहै ॥ सोज्ञातापणा केवल अंतःकरणविषेतों संभवतानहीं ॥ जिसकार  
 णतैं सोअंतःकरण भूतोंकाकार्यहोणेतैं जडहै ॥ जडविषेभी जोज्ञातापणा होताहोवै ॥ तों घटादिकों  
 विषेभी सोज्ञातापणा होणाचाहिये ॥ तैसे सोज्ञातापणा केवल आत्माविषेभीसंभवतानहीं ॥ जिसका  
 रणतैं ( असंगोह्ययंपुरुषः । केवलोनिर्गुणश्च । अव्यक्तोऽयमचिंत्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ) इत्यादिक  
 श्रुतिस्मृतियोंकरिकै ताआत्माका असंगपणाहीं जान्याजावैहै ॥ ऐसेअसंगआत्माविषे सोज्ञातापणा  
 संभवतानहीं ॥ यातैं अहं इसप्रतीतितैं आत्माविषे अंतःकरणका अध्यारोपकरिकै ॥ तथा अहंचेतनः  
 इसप्रतीतितैं ताअंतःकरणविषे आत्माकेतादात्म्यका अध्यारोपकरिकै ॥ तथा आत्माविषे अंतःकरणके  
 इच्छादिकधर्मोंका और अंतःकरणविषे आत्माकेसत्यादिकधर्मोंका अध्यारोपकरिकै ॥ यहजीव अहं  
 जानामि याप्रकारतैं आपणेविषे ज्ञातापणेकूं अनुभवकरैहै ॥ यातैं ताअध्यासविषे इसजीवकाअनुभव

परि०

२

॥ ७० ॥



हीं प्रमाणहैं ॥ इसप्रकारकेअनुभवसिद्धअध्यासकेवशतैंहीं तेअंतःकरणकेज्ञानइच्छादिकधर्म आत्माविषेप्रतीतहोवैहैं ॥ वास्तवतैं आत्माके तेधर्मनहींहैं इति ॥ ईहां नैयायिकतों यहकहेहैं ॥ आत्माकेसाथि मनकेसंयोगद्वए ज्ञान १ इच्छा २ प्रयत्न ३ सुख ४ दुःख ५ द्वेष ६ धर्म ७ अधर्म ८ संस्कार ९ यह नवगुण आत्माविषे उत्पन्नहोवैहैं ॥ यातैं तेज्ञानइच्छादिक आत्माकेहीं धर्महैं ॥ यहनैयायिकोंकामत न्यायप्रकाशकेतृतीयपरिच्छेदविषे विस्तारतैंकथनकन्याहै ॥ सोयहनैयायिकोंकामत समीचीननहींहै ॥ काहेतैं नैयायिकोंने आत्माकीन्याई मनकूंभी निरवयवद्रव्य मान्याहै ॥ ऐसेनिरवयवमनका निरवयव आत्माकेसाथि संयोगहींसंभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं नैयायिकोंने तासंयोगकूं अव्याप्यवृत्ति मान्या है ॥ तहां जिनदोद्रव्योंका संयोगहोवैहै ॥ तिनदोद्रव्योंके किंचित्देशविषेतों सोसंयोगरहेहै ॥ और किंचित्देशविषे तासंयोगकाअभावरहेहै ॥ यहहीं तासंयोगविषे अव्याप्यवृत्तिपणाहै ॥ जैसे वृक्षकीशाखा विषेतों वानरकासंयोग रहेहै ॥ और तिसीवृक्षकेमूलदेशविषे तासंयोगका अभावरहेहै ॥ इसप्रकार सर्वसंयोग अव्याप्यवृत्तिहोवैहै ॥ ऐसाअव्याप्यवृत्तिसंयोग वृक्षवानरादिकसावयवद्रव्योंकाहीं संभवैहै ॥ आत्मामनआदिकनिरवयवद्रव्योंका सोसंयोग संभवतानहीं ॥ यातैं आत्ममनकेसंयोगतैं आत्माविषेज्ञानादिकगुण उत्पन्नहोवैहैं यहनैयायिकोंकाकहणा मिथ्याहींहैं ॥ किंवा ज्ञानइच्छादिकोंकूं आत्माकाधर्म मानणेहारा जोनैयायिकहै ॥ तिसनें आत्माकूंहींतिनज्ञानइच्छादिकधर्मोंकाउपादानकारण कहणाहोवैगा ॥ ताकेविषे यहकह्याचाहिये ॥ ताआत्माकूं आरंभकतारूपकरिकै तिनज्ञानादिकोंका उपादानपणा है ॥ अथवा परिणामितारूपकरिकै उपादानपणाहै ॥ तहां सोनैयायिक जोप्रथमपक्ष अंगीकारकरै ॥ सो तों संभवतानहीं ॥ काहेतैंअनेकद्रव्योंविषेहीं आरंभकपणा होवैहै ॥ जैसे अनेकपरमाणुवोंकूं जगत्का



तत्त्वा०

॥ ५ ॥

आरंभकपणा है ॥ और आत्मातों एक है ॥ यातें ता एक आत्माकूं तिन ज्ञान इच्छादिकों का आरंभकपणा संभवतानहीं ॥ तैसे दूसरा परिणामीपक्ष भी संभवतानहीं ॥ काहेतें सावयवदुग्धादिकहीं दधिआदिक आकारपरिणामकूं प्राप्त होवैं ॥ निरवयवद्रव्य का कहां भी परिणाम देख्यानहीं ॥ और आत्मा भी निरवयवद्रव्य है ॥ यातें ता आत्माकूं तिन ज्ञान इच्छादिकों का परिणामी उपादानपणा भी संभवतानहीं ॥ और आत्माकूं जो सावयवद्रव्य मानोंगे ॥ तों घटादिकों की न्यांई ता आत्माकूं अनित्यपणाहीं प्राप्त होवेंगा ॥ यातें ते ज्ञान इच्छादिक आत्माके धर्म हैं यह नैयायिकों का मत असंगत है ॥ किंवा ( साक्षीचेताके वलो निर्गुणश्च ) यह श्रुति आत्माकूं सर्वगुणों तें रहित कहे है ॥ ता श्रुति तें विरुद्ध होने तें भी सो नैयायिकों का मत असंगत है ॥ यातें ते ज्ञान इच्छादिक सर्वधर्म अंतःकरणके ही हैं यह सिद्ध भया इति ॥ इतने पर्यंत वृत्तिका स्वरूप निरूपण कन्या ॥ अब ता वृत्तिका विभाग निरूपण करे हैं ॥ सा उक्त वृत्ति प्रमा १ अप्रमा २ इस भेद करिके दो प्रकार की होवैं ॥ तिन दोनों वृत्तियों विषे प्रथम प्रमा वृत्तिका निरूपण करे हैं ॥ तहां ( बोधेद्वा वृत्तिः वृत्ती द्व्यबोधो वा प्रमा ) अर्थ यह ॥ चैतन्य का नाम बोध है ॥ ता चैतन्य रूप बोध करिके इद्व कहिए प्रकाशित जा वृत्ति है ता का नाम प्रमा है ॥ अथवा ता वृत्ति विषे इद्व कहिए प्रतिबिंबित जो चैतन्य रूप बोध है ता का नाम प्रमा है इति ॥ और सा उक्त प्रमा भी ईश्वराश्रया १ जीवाश्रया २ इस भेद करिके दो प्रकार की होवैं ॥ तहां ( ईक्षणा परपर्याय स्रष्टव्य विषयाकारमाया वृत्ति प्रतिबिंबिता चित् ईश्वराश्रया प्रमा ) अर्थ यह ॥ सृष्टिके आदिकाल विषे आगे उत्पन्न होने हारे जगत्कूं विषय करणे हारी जामाया की वृत्ति है ॥ जिस वृत्तिकूं श्रुति विषे ईक्षण इस नाम करिके कथन कन्या है ॥ तिस माया वृत्ति विषे प्रतिबिंबित जो चैतन्य है सो ईश्वराश्रया प्रमा कही जावै है ॥ तहां श्रुति ॥ ( तदैक्षत बहुस्यां प्रजायेय ) अर्थ यह ॥ सो माया उपहित परमेश्वर सृष्टिके आदिकाल विषे मैं बहुत रूप होइ कै

परि०  
२

॥ ७१ ॥



उत्पन्नहोवों याप्रकारकाईक्षण करताभया इति ॥ अब जीवाश्रयाप्रमाकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां ( अन  
 धिगताबाधितविषयाकारांतःकरणवृत्तिप्रतिबिंबिताचित् जीवाश्रयाप्रमा ) अर्थयह ॥ अनधिगत कहि  
 ए अज्ञात अर्थात् बोधनैनहींविषयकन्याहूआ तथा अबाधित कहिए बाधतैरहित ऐसाजो विषयहै ॥  
 ताविषयकेआकार जाअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ तावृत्तिविषे प्रतिबिंबित जोचैतन्यहै सो जीवाश्रयाप्रमा क  
 हीजावैहै ॥ तहां । विषयाकारांतःकरणवृत्तिप्रतिबिंबिताचित् जीवाश्रयाप्रमा । इतनामात्रहीं जोताजीवा  
 श्रितप्रमाकालक्षणकरते ॥ तौं भ्रांतिज्ञानविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृ  
 त्तकरणेवासतैं तालक्षणविषे । अबाधित । यह विषयकाविशेषण कथनकन्याहै ॥ तहां भ्रमज्ञानकावि  
 षय अबाधित होतानहीं ॥ किंतु शुक्तिरज्जुआदिकअधिष्ठानकेज्ञानकरिकैं ताभ्रमकेविषयभूत रजतस  
 र्पादिकोंका बाधहोइजावैहै ॥ यातैं **ताभ्रमज्ञानविषे** ताप्रमाकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ यद्यपि  
 विवरणकारादिकसांप्रदायिकोंकेमतविषे सोभ्रमज्ञान अविद्याकीवृत्तिरूपहै ॥ यातैं । अंतःकरणवृत्ति ।  
 इसपदकेकहणेकरिकैंहीं ताभ्रमज्ञानविषे ताउक्तलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ सोअबाधितपद व्यर्थ  
 है ॥ तथापि जिसउपाध्यायकेमतविषे सोभ्रमज्ञान अंतःकरणकीवृत्तिरूपहै ॥ तिसमतविषे ताअबाधि  
 तपदकेकहणेकरिकैंहीं ताभ्रमज्ञानविषे अतिव्याप्तिकानिवारण होवैहै ॥ यातैं सोअबाधितपद सार्थक  
 है ॥ किंवा ताउक्तलक्षणविषे । अनधिगत । यहपद जोनहींकथनकरते ॥ तौं तालक्षणकी स्मृतिज्ञान  
 विषे अतिव्याप्तिहोती ॥ जिसकारणतैं यथार्थस्मृतिकाविषय अबाधितहींहोवैहै ॥ ताअतिव्याप्तिदोषके  
 निवृत्तकरणेवासतैं तालक्षणविषे । अनधिगत । यहपद कथनकन्याहै ॥ तहां पूर्वअनुभवकन्येहूएअर्थ  
 कीहीं स्मृतिहोवैहै ॥ यातैं तास्मृतिकाविषय पूर्व अज्ञातनहींहै ॥ किंतु ज्ञातहींहै ॥ यातैं अनधिगत



तत्त्वा०

॥ ६ ॥

पदके कहनेतैं तास्मृतिविषे ताजीवाश्रितप्रमाके लक्षणकी अतिव्याप्ति होवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ य  
ह उक्त जीवाश्रितप्रमाके लक्षण कोईभी प्रमाविषे घटतानहीं ॥ यातैं यह लक्षण असंभवदोषवाला है ॥ ॥  
समाधान ॥ ॥ अहं ब्रह्मास्मि इत्यादिक महावाक्यतैं उत्पन्न भई जा ब्रह्म आत्माकी एकता कूं विषयकरणे  
हारी अंतःकरणकी वृत्ति है ॥ तावृत्तिविषे प्रतिबिंबित चैतन्यरूप प्रमाविषे सो उक्त लक्षण संभवै है ॥ जिस  
कारणतैं सो ब्रह्म आत्माका एकत्व अनधिगत भी है तथा अबाधित भी है ॥ यातैं सो उक्त लक्षण असंभवदोष  
वाला नही है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ इस उक्त लक्षणकी । अयं घटः अयं पटः । इत्यादिक प्रमाविषे अव्याप्ति  
ही होवै है ॥ काहेतैं ता घटपटादिक सर्वप्रपंचका ब्रह्मज्ञान करिके बाध होइ जावै है ॥ यातैं तिन घटपटादि  
कों विषे सो अबाधित पणा है नही ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ता प्रपंचका यद्यपि ब्रह्मज्ञान करिके बाध होवै  
है ॥ तथापि ता ब्रह्मज्ञानतैं पूर्व संसारदशाविषे ता प्रपंचका बाध होतानहीं ॥ यातैं सो प्रपंचभी ता संसा  
रदशाविषे अबाधित ही है ॥ यातैं ता घटपटादि प्रपंचविषयक प्रमाविषे ता उक्त लक्षणकी अव्याप्ति होवैनहीं  
॥ ॥ शंका ॥ ॥ इस प्रकारका जो अबाधित पदका अर्थ मानोंगे ॥ तौ भ्रांतिज्ञानविषे भी ता प्रमाके  
लक्षणकी अतिव्याप्ति होवैगी ॥ जिस कारणतैं ता भ्रांतिज्ञानके विषयभूत शुक्तिरजतादिक भी ता भ्रांति  
कालविषे अबाधित ही होवै हैं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तेशुक्तिरजतादिक ता भ्रांतिकालविषे अबाधित  
हूए भी अनधिगत नही हैं ॥ अर्थात् अज्ञातसत्तावाले नही हैं ॥ किंतु ज्ञातसत्तावाले ही हैं ॥ यातैं ता भ्रां  
तिज्ञानविषे ता उक्त प्रमाके लक्षणकी अतिव्याप्ति होवैनहीं ॥ तहां ज्ञानतैं पूर्वकालविषे जा विषयकी सत्ता  
है ताकानाम अज्ञातसत्ता है ॥ और ज्ञानके समकाल जा विषयकी सत्ता है ताकानाम ज्ञातसत्ता है  
इति ॥ अब प्रसंगतैं प्रमाणकालक्षण कहै हैं ॥ ( प्रमाकरणं प्रमाणं ) अर्थ यह ॥ पूर्वकथन करी जा जीवा

परि०  
२

॥ ७२ ॥



श्रितप्रमाहै ॥ ताप्रमाका जोकरणहोवैहै सो प्रमाण कहाजावैहै ॥ जैसे अयंघटः इसप्रत्यक्षप्रमाका च  
 क्षुद्रिन्द्रियकरणहै ॥ यातैं सोचक्षुद्रिन्द्रिय प्रमाण कहाजावैहै ॥ इसप्रकार अनुमानादिकप्रमाणोंविषेभी ल  
 क्षणजानिलेणा ॥ तहां । करणप्रमाणं । इतनामात्रहीं जो ताप्रमाणकालक्षणकरते ॥ तौं छेदनरूपक्रि  
 याकेप्रति करणरूपजोकुठारहै ताकेविषे ताप्रमाणकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषके  
 निवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे । प्रमा । यहपद कथनकन्याहै ॥ तहां ताकुठारविषे प्रमाज्ञानकीकरण  
 ताहैनहीं ॥ यातैं ताकुठारविषे ताउक्तलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा । प्रमा प्रमाणं । इतना  
 मात्रहीं जो ताप्रमाणकालक्षणकरते ॥ तालक्षणविषे । करण । यहपद नहींकथनकरते ॥ तौं चक्षुआदि  
 कोंविषे ताप्रमाणकेलक्षणकीअव्याप्तिहोती ॥ जिसकारणतैं तिनचक्षुआदिकोंकूं द्रव्यरूपताहोणेतैं प्रमा  
 ज्ञानरूपताहैनहीं ॥ ताअव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे । करण । यहपद कथनकन्याहै ॥  
 तहां जिसकारणकेप्रवृत्तहूए कार्यकीउत्पत्तिविषे विलंबनहींहोवैहै ॥ सोकारण करण कहाजावैहै इति ॥  
 अब ताजीवाश्रितप्रमाकाविभाग वर्णनकरैहैं ॥ तहां साजीवाश्रितप्रमा पारमार्थिकी १ व्यावहारिकी  
 २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां अधिकारीपुरुषकूं तत्त्वमसिआदिकवाक्यजन्य जा अहंब्र  
 ह्मास्मि याप्रकारकीप्रमाहै ॥ सा पारमार्थिकीप्रमा कहीजावैहै ॥ सापारमार्थिकीप्रमा पूर्वनिरूपणकरी  
 है ॥ तथा आगे शाब्दीप्रमाकेनिरूपणविषे निरूपणकरेंगे ॥ और घटपटादिरूपप्रपंचकूंविषयकरणेहारी  
 जा अयंघटः अयंपटः इत्यादिकप्रमाहै ॥ सा व्यावहारिकीप्रमा कहीजावैहै ॥ और साव्यावहारिकीप्र  
 माभी प्रत्यक्ष १ अनुमिति २ उपमिति ३ शाब्द ४ अर्थापत्ति ५ अभावप्रमा ६ इसभेदकरिकै षट्प्र  
 कारकीहोवैहै ॥ और ताप्रमाकेषट्प्रकारकेभेदकरिकै ताप्रमाकाकरणरूपप्रमाणभी प्रत्यक्ष १ अनुमान २



तत्त्वा०

॥ ७ ॥

उपमान ३ शब्द ४ अर्थापत्ति ५ अनुपलब्धि ६ इसभेदकरिकै षट्प्रकारकाहीहोवैहै ॥ अब तिनषट्प्र  
 मावोंविषे प्रथम प्रत्यक्षप्रमाकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां ( विषयचैतन्याभिन्नप्रमाणचैतन्यं प्रत्यक्षप्रमा ) अर्थय  
 ह ॥ विषयचैतन्यसैंअभिन्न जोप्रमाणचैतन्यहै सो प्रत्यक्षप्रमा कहाजावैहै ॥ अब इसउक्तअर्थकेस्पष्ट  
 करणेवासतै प्रथम ताचैतन्यका उपाधिकृतभेद निरूपणकरेहैं ॥ तहां वास्तवतैं एकअद्वितीयरूपहूआ  
 भी सोचैतन्य उपाधिकेभेदतैं प्रमाताचैतन्य १ प्रमाणचैतन्य २ विषयचैतन्य ३ फलचैतन्य ४ इसभे  
 दकरिकै चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां अंतःकरणविशिष्टचैतन्यकानाम प्रमाताचैतन्यहै ॥ और अंतःक  
 रणकीवृत्तिकरिकैअवच्छिन्न जोचैतन्यहै ताकानाम प्रमाणचैतन्यहै ॥ और घटादिकविषयोंकरिकैअव  
 च्छिन्नजोचैतन्यहै ताकानाम विषयचैतन्यहै ॥ और घटादिकविषयोंके समानाकारताकूं प्राप्तभईजावृत्ति  
 है ॥ तावृत्तिकरिकैअभिव्यक्तजोचैतन्यहै ताकानाम फलचैतन्यहै ॥ इसप्रकार अंतःकरणादिकउपाधिकेभे  
 दकरिकै सोएकहीचैतन्य चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां तिनउपाधियोंका यहस्वभावहै ॥ जबपर्यंत तेउ  
 पाधियां भिन्नभिन्नदेशविषेस्थितहोवैहैं ॥ तबपर्यंतहीं तेउपाधियां स्वउपहितोंका भेदकरेहैं ॥ और ज  
 बी तेउपाधियां एकदेशविषेस्थितहोवैहैं ॥ तबी स्वउपहितोंका भेदकरेनहीं ॥ किंतु तिसकालविषे ति  
 नउपहितोंका अभेदहीहोवैहै ॥ जैसे मठतैंबाह्य घटकेविद्यमानहूए तामठउपहितआकाशका तथाघटउप  
 हितआकाशका भेदहीहोवैहै ॥ और तामठकेभीतर घटकेविद्यमानहूए तामठाकाश घटाकाश दोनों  
 का अभेदहीहोवैहै ॥ तैसे अंतःकरण वृत्ति घटादिकविषय यहतीनोंउपाधि जबपर्यंत भिन्नभिन्नदेशवि  
 षे रहेहैं ॥ तबपर्यंतहीं प्रमाताचैतन्य प्रमाणचैतन्य विषयचैतन्य इनतीनोंचैतन्योंका भेदहोवैहै ॥ औ  
 र जबी नेत्रादिकइंद्रियद्वारा सोअंतःकरण वृत्तिरूपसैं बाह्यनिकसिकै घटादिकविषयदेशविषेजावैहै ॥

परि०

२

॥ ७३ ॥



तबी तिन अंतःकरणादिक तीनों उपाधियों की एकदेशविषे स्थिति होणे तें तिन प्रमातादिक तीनों चैतन्यों का अभेद ही होवै है ॥ इस प्रकार विषयावच्छिन्न चैतन्य से जो प्रमाण चैतन्य का अभेद है ताका नाम प्रत्यक्ष प्रमाण है ॥ अब ता अपरोक्ष वृत्तिके उत्पत्तिके प्रकार कूं दृष्टांत करिके निरूपण करे हैं ॥ जैसे तलाव का जल किसी छिद्र तें बाह्यनिकासिके कुल्याद्वारा केदारों कूं प्राप्त होइके जिस प्रकार का त्रिकोण वा चतुःकोण केदारों का आकार होवै है तिसी आकार परिणाम कूं प्राप्त होवै है ॥ तहां ता कुल्याद्वारा तलाव के जल का तथा केदार के जल का अभेद ही होवै है ॥ तैसे घटादिक अर्थों के साथ चक्षु आदिक इंद्रिय के संबंध हूए तें अनंतर अंतःकरण भी चक्षु आदिक इंद्रियद्वारा बाह्य विषय देशविषे जाइके तिन घटादिक विषयों के समानाकार परिणाम कूं प्राप्त होवै है ॥ इसी विषयाकार अंतःकरण के परिणाम कूं वृत्तिके हैं ॥ तिस घटाकार वृत्ति विषे सो घटादिक विषयावच्छिन्न चैतन्य प्रतिफलित होवै है अर्थात् प्रतिबिंबित होवै है ॥ और जिस काल विषे ता घटाकार वृत्ति विषे सो घटावच्छिन्न चैतन्य प्रतिफलित होवै है ॥ तिसी काल विषे ता वृत्ति विषय रूप दोनो उपाधियों की एकदेशविषे स्थिति होणे तें सो प्रमाण चैतन्य ता विषय चैतन्य से अभिन्न होवै है ॥ इस प्रकार तें विषय चैतन्य से अभिन्न जो प्रमाण चैतन्य है ताका नाम प्रत्यक्ष प्रमाण है ॥ तहां । प्रमाण चैतन्यं प्रत्यक्ष प्रमाण । इतना मात्र ही जो ता प्रत्यक्ष प्रमाण कालक्षण करते ॥ तौ अनुमिति आदिक परोक्ष प्रमाण विषे तालक्षण की अतिव्याप्ति होती ॥ ता अतिव्याप्ति दोष के निवृत्त करने वास तें तालक्षण विषे । विषय चैतन्याभिन्न । यह ता प्रमाण चैतन्य का विशेषण कथन कन्या है ॥ तहां अनुमिति आदिक परोक्ष वृत्तियां बाह्य विषय देशविषे जातीयां नहीं ॥ किंतु शरीर के भीतर हृदय देशविषे ही उत्पन्न होवै हैं ॥ या तें ता परोक्ष स्थल विषे ता विषय चैतन्य से ता प्रमाण चैतन्य का अभेद होतानहीं ॥ या तें तिन अनुमिति आदिक परोक्ष ज्ञानों विषे ता प्रत्यक्ष प्रमाण के लक्षण की अतिव्याप्ति



तत्त्वा०

॥ ८ ॥

होवैनहीं ॥ किंवा । विषयचैतन्याभिन्नवृत्त्यवच्छिन्नचैतन्यं प्रत्यक्षप्रमा । इतनामात्रहीं जो ताप्रत्यक्षप्रमा का लक्षणकरते ॥ तौं भ्रमप्रत्यक्षविषे तालक्षणकी अतिव्याप्तिहोती ॥ जिसकारणतैं ताभ्रमस्थलविषेभी विषयावच्छिन्नचैतन्यसैं तावृत्तिअवच्छिन्नचैतन्यका अभेदहींहोवैहै ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणे वासतैं तालक्षणविषे । प्रमाणचैतन्यं । यहपद कथनकन्याहै ॥ तहां भ्रमवृत्तिअवच्छिन्नचैतन्यविषे प्रमाणचैतन्यरूपता हैनहीं ॥ यातैं ताभ्रमप्रत्यक्षविषे ताप्रत्यक्षप्रमाकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ भ्रमज्ञानकेविषयभूतरजतादिकोंकाप्रकाशक जो इदमाकारअंतःकरणकीवृत्तिअवच्छिन्न साक्षीचैतन्यहै ॥ सोसाक्षीचैतन्यहीं ताविषयचैतन्यसैंअभिन्न प्रमाणचैतन्यरूपहै ॥ यातैं ताउक्तलक्षण कीभी ताभ्रमप्रत्यक्षविषे अतिव्याप्तिहींहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतैं तालक्षणविषे विषयका । अबाधित । यहविशेषणभी हमारेकूं विवक्षितहै ॥ तहां भ्रमप्रत्यक्षके विषय जेरजतादिकहैं ॥ ते अबाधितनहींहैं ॥ किंतु शुक्तिआदिकअधिष्ठानकेज्ञानकरिकैं तिनरजतादिकोंका बाधहोइजावैहै ॥ यातैं ताभ्रमप्रत्यक्षविषे ताप्रत्यक्षप्रमाकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ घटादिकप्रपंचकूं ब्रह्मज्ञानकरिकैंबाधितहोणेतैं अबाधितपणा संभवतानहीं ॥ यातैं अयं घटः अयंपटः इत्यादिकप्रत्यक्षप्रमाविषे तालक्षणकी अव्याप्तिहींहोवैंगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताअबाधितपदकरिकैं संसारदशाविषेअबाधितपणा विवक्षितहै ॥ तहां सोघटपटादिकप्रपंच ब्रह्मज्ञानतैंपूर्व संसारदशाविषे अबाधितहींहै ॥ यातैं ताघटादिप्रपंचविषयकप्रत्यक्षप्रमाविषे तालक्षणकी अव्याप्तिहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जहां इसपुरुषकूं सुखदुःखरूपहेतुकेज्ञानतैं आपणेधर्मअधर्मका अनुमितिज्ञानहोवैहै ॥ अथवा तूं धर्मवानहैं तूं अधर्मवानहैं याप्रकारके कोईकेवचनतैं इसपुरुषकूं आपणेधर्मअधर्म

परि०  
२

॥ ७४ ॥



का शाब्दज्ञान होवैहै ॥ तहां ताधर्मअधर्मरूपविषयकी तथाताअनुमितिशाब्दरूपवृत्तिकी एकअंतःक  
रणरूपदेशविषेस्थितिहोणेतैं तदुपहितचैतन्योंकाभी अभेदहीहोवैहै ॥ और सोधर्मअधर्म संसारदशा  
विषे अबाधितभीहै ॥ यातैं ताप्रत्यक्षप्रमाकेलक्षणकी ताधर्माधर्मविषयकअनुमितिशाब्दरूपपरोक्षज्ञानवि  
षे अतिव्याप्तिहोवैंगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताउक्तलक्षणविषे ताविषयका । योग्य । यहविशेषणभी  
हमारेकूं विवक्षितहै ॥ तहां सोधर्मअधर्म प्रत्यक्षकेयोग्य नहींहै ॥ किंतु अयोग्यहै ॥ यातैं ताधर्माधर्मविष  
यक अनुमितिशाब्दज्ञानविषे ताप्रत्यक्षप्रमाकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ इसप्रकार यथार्थस्मृतिज्ञान  
विषे ताप्रत्यक्षप्रमाकेलक्षणकीअतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतैं तालक्षणविषे ताविषयका । वर्तमान । यह  
विशेषणभी कथनकरणा ॥ तास्मृतिज्ञानकाविषय वर्तमानहोतानहीं ॥ यातैं तास्मृतिविषे ताउक्तलक्ष  
णकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकैं ताप्रत्यक्षप्रमाका यहलक्षणसिद्धभया ॥ ( अबाधितवर्त्त  
मानयोग्यविषयचैतन्याभिन्नप्रमाणचैतन्यं प्रत्यक्षप्रमा ) अर्थयह ॥ संसारदशाविषेअबाधित तथावर्त्तमा  
न तथाप्रत्यक्षकेयोग्य ऐसाजोविषयहै ॥ ताविषयावच्छिन्नचैतन्यसैंअभिन्न जोप्रमाणचैतन्यहै ताकाना  
म प्रत्यक्षप्रमाहै ॥ अथवा ताप्रत्यक्षप्रमाका यहदूसरालक्षण करणा ॥ ( अबाधितापरोक्षार्थविषयज्ञानं प्र  
त्यक्षप्रमा ) अर्थयह ॥ अबाधित तथाअपरोक्ष ऐसाजोअर्थहै ॥ ताअर्थकूंविषयकरणेहाराज्ञान प्रत्यक्षप्र  
मा कहाजावैहै ॥ तहां इसलक्षणविषेभी भ्रमज्ञानविषेअतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतैं । अबाधित । यह  
अर्थकाविशेषण कथनकन्याहै ॥ और अनुमितिआदिकपरोक्षज्ञानोंविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवास  
तैं । अपरोक्ष । यह अर्थकाविशेषण कथनकन्याहै ॥ तहां साक्षीचैतन्यकेसाथि घटादिकअर्थका जोता  
दात्म्यहै ॥ यहहीं ताघटादिकअर्थविषे अपरोक्षपणाहै ॥ यद्यपि घटका स्वावच्छिन्नब्रह्मचैतन्यविषेहीं ता



तत्त्वा०

॥ ९ ॥

परि०  
२

दात्म्य है ॥ अंतःकरण उपहित साक्षी चैतन्य विषे तादात्म्य नहीं है ॥ तथापि पूर्व उक्तरीति से अंतःकरण की वृत्तिके बहिर निर्गमन काल विषे ताघटावच्छिन्न चैतन्य का तासाक्षी चैतन्य से अभेद ही होवै है ॥ यातें तिन घटादिकों का तासाक्षी चैतन्य विषे तादात्म्य संभवै है इति ॥ अब इस उक्त प्रत्यक्ष प्रमा का फल वर्णन करे हैं ॥ तहां ता उक्त प्रत्यक्ष प्रमा विषे दो अंश हैं ॥ एक तो अंतःकरण की वृत्ति रूप अंश है ॥ और दूसरा चैतन्य रूप अंश है ॥ तहां वृत्ति अंश करिके तो घटादिक विषयों के आवरण की निवृत्ति होवै है ॥ और चैतन्य अंश करिके अज्ञान की निवृत्ति होवै है ॥ यह स्वामी नृसिंहाश्रम का मत है ॥ और आचार्य तो ऐसा माने हैं ॥ ता उक्त प्रत्यक्ष प्रमा करिके ही ता आवरण शक्ति सहित अज्ञान की निवृत्ति होवै है ॥ तिस तें अनंतर अंतःकरण उपहित चैतन्य रूप साक्षी करिके घटादिक विषयों का स्फुरण होवै है ॥ अब प्रसंग तें तासाक्षी का स्वरूप वर्णन करे हैं ॥ ( उदासीन त्वे सति बोद्धा साक्षी ) अर्थ यह ॥ जो चैतन्य निर्विकार उदासीन हूआ बुद्धि आदिकों कूं प्रकाश करे है ॥ अर्थात् प्रमाता प्रमाण प्रमेय इत्यादिक सर्वों कूं प्रकाश करे है ॥ सो चैतन्य साक्षी कहा जावै है ॥ तहां लोक विषे भी जो पुरुष परस्पर विवाद करते हूए दो पुरुषों तें भिन्न होवै है ॥ तथा तिन दोनों के विवाद कूं अपरोक्ष रूप करिके जाने है ॥ तथा उदासीन होवै है अर्थात् पक्षपात तें रहित होवै है ॥ तिस पुरुष कूं साक्षी कहें हैं ॥ तैसे जो चैतन्य उदासीन हूआ बुद्धि आदिक सर्वों कूं प्रकाश करे है ॥ सो चैतन्य साक्षी कहा जावै है ॥ तहां बोद्धा साक्षी । इतना मात्र ही जो तासाक्षी कालक्षण करते ॥ तालक्षण विषे । उदासीन त्वे सति । यह पद नहीं कथन करते ॥ तो परस्पर विवाद करने हारे पुरुषों विषे भी सो साक्षी पणा होना चाहिये ॥ जिस कारण तें स्वपरव्यवहार का बोद्धा पणा तिन पुरुषों विषे भी है ॥ परंतु तिन पुरुषों कूं कोई साक्षी कहतानहीं ॥ यातें तासाक्षी का उदासीन यह विशेषण कथन कन्या है ॥ तिन विवाद कर्त्ता पुरुषों विषे सो उदासीन पणा है नही ॥ यातें

॥ ७५ ॥



तिनोंविषे तासाक्षीकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा । उदासीनः साक्षी । इतनामात्रहीं जो ता  
साक्षीकालक्षण करते ॥ तालक्षणविषे । बोद्धा । यहपद नहींकथनकरते ॥ तौं ताविवादस्थलविषे स्तं  
भादिकोंकूंभीउदासीनपणाहै ॥ यातें तेस्तंभादिकभी साक्षीहोणेचाहिये ॥ और तिनस्तंभादिकोंकूं को  
ईसाक्षीकहतानहीं ॥ यातें तालक्षणविषे । बोद्धा । यहपद कथनकन्याहै ॥ तिनजडस्तंभादिकोंविषे सो  
बोद्धापणाहैनहीं ॥ यातें तिनोंविषे तासाक्षीकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे ईहांप्रसंगविषे के  
वलबोद्धापणातौं भोक्ताजीवविषेभीहै ॥ परंतु ताजीवविषे उदासीनपणा नहींहै ॥ और केवलउदासी  
नपणातौं देहइंद्रियादिकजडपदार्थोंविषेभीहै ॥ परंतु तिनोंविषे बोद्धापणा नहींहै ॥ यातें ताभोक्ताजी  
वविषे तथादेहइंद्रियादिकोंविषे तासाक्षीकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ यहहींसाक्षीकालक्षण ( सा  
क्षीचेताकेवलनिर्गुणश्च ) इसश्रुतिनैं कथनकन्याहै ॥ तहां इसश्रुतिविषे । चेता । इसपदकरिकै बोद्धा  
कह्याहै ॥ और । केवल । इसपदकरिकै उदासीन कह्याहै ॥ यातें । चेताकेवलः साक्षी । यहसाक्षीकाल  
क्षण ताश्रुतितैंसिद्धहोवैहै ॥ और नैयायिक आत्माकूं ज्ञानादिकगुणोंवाला मानेहैं ॥ तिनोंकेमतकेखं  
डनकरणेवासतैं ताश्रुतिनैं आत्माकूं निर्गुण कह्याहै ॥ और ताश्रुतिविषेस्थित चकारकरिकै आत्माकूं  
निष्क्रिय कह्याहै ॥ ताकरिकै आत्माकूं मध्यमपरिमाणवाला तथासक्रिय मानणेहारे दिगंबरोंकामतभी  
खंडनहूआजानणा ॥ किंवा यहउक्तसाक्षीकास्वरूपहीं पंचदशीकेनाटकदीपविषे श्रीविद्यारण्यस्वामीनैं  
नृत्यशालाविषेस्थितदीपकेदृष्टांतकरिकै निरूपणकन्याहै ॥ यातें तासाक्षीकरिकै घटादिकविषयोंका  
स्फुरण संभवैहै इति ॥ तहां पूर्व प्रत्यक्षप्रमाका फलसहित निरूपणकन्या ॥ अब ताप्रत्यक्षप्रमाकावि  
भाग वर्णनकरेहैं ॥ तहां साउक्तप्रत्यक्षप्रमा बाह्यप्रत्यक्षप्रमा १ अंतरप्रत्यक्षप्रमा २ इसभेदकरिकै दोप्र



तत्त्वा०

॥ १० ॥

कारकीहोवैहै ॥ तहां बाह्यअर्थकूंविषयकरणेहारी प्रत्यक्षप्रमाकूं बाह्यप्रत्यक्षप्रमा कहेहैं ॥ और अंतरअर्थकूंविषयकरणेहारी प्रत्यक्षप्रमाकूं अंतरप्रत्यक्षप्रमा कहेहैं ॥ तिनदोनोंप्रमाविषे प्रथम बाह्यप्रत्यक्षप्रमा शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गंध ५ इनपंचविषयोंकेभेदतैं पंचप्रकारकीहोवैहै ॥ अर्थात् शब्दप्रमा १ स्पर्शप्रमा २ रूपप्रमा ३ रसप्रमा ४ गंधप्रमा ५ यहपंचप्रकारकी बाह्यप्रत्यक्षप्रमाहोवैहै ॥ और तापंचप्रकारकी बाह्यप्रत्यक्षप्रमाके यथाक्रमतैं करणरूप श्रोत्र १ त्वक् २ चक्षु ३ रसन ४ घ्राण ५ यहपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ यातैं तेपंचज्ञानइंद्रिय बाह्यप्रत्यक्षप्रमाण कह्येजावैहैं ॥ और दूसरी अंतरप्रत्यक्षप्रमाभी आत्मगोचरा १ सुखादिगोचरा २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां आत्माकूंविषयकरणेहारी जाप्रमाहै ताकानाम आत्मगोचराहै ॥ और सुखदुःखादिकोंकूंविषयकरणेहारी जाप्रमाहै ताकानाम सुखादिगोचराहै ॥ और साआत्मगोचरप्रमाभी विशिष्टात्मविषया १ शुद्धात्मविषया २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां अहंजीवः यहप्रमातों विशिष्टात्माविषयक होवैहै ॥ और अहंब्रह्मास्मि यहप्रमा शुद्धात्माविषयक होवैहै ॥ और अहंसुखी अहंदुःखी इत्यादिकप्रमा सुखदुःखादिविषयक होवैहै ॥ अब ताअंतरप्रत्यक्षप्रमाके करणकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां वाचस्पतिमिश्रकातों यहमतहै ॥ अंतरइंद्रियरूपजोमनहै ॥ सोमनहीं ताउक्तअंतरप्रत्यक्षप्रमाका करणहै ॥ काहेतैं जैसे बाह्य रूपादिकोंकेसाक्षात्कारकाकरणरूपकरिकै चक्षुआदिकइंद्रियोंकीसिद्धिहोवैहै ॥ तैसे अंतर सुखदुःखादिकोंकेसाक्षात्कारकाकरणरूपकरिकै मनरूपअंतरइंद्रियकीभी सिद्धिसंभवैहै ॥ और सुखदुःखादिकोंकूंव्यावहारिकपणाहोनेतैं तिनसुखदुःखादिकोंकेज्ञानकूंभी व्यावहारिकपणाहीं संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तामनकूं विशिष्टात्माकेसाक्षात्कारकीकरणताकेदूएभी शुद्धात्माकेसाक्षात्कारकीकरणता संभवतीनहीं ॥ जोकदाचित्

परि०

२

॥ ७६ ॥



तामनकूं शुद्ध आत्माके साक्षात्कारका करणमानोंगे ॥ तों आत्मसाक्षात्कारविषे मनकीकरणताकूं निषेध करणेहारी ( यतोवाचो निवर्तते अप्राप्य मनसा सह । यन्मनसानमनुते ) इत्यादिक श्रुतियोंका विरोध प्राप्त होवेंगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ( मनसैवानुद्द्रष्टव्यं । दृश्यते त्वय्यया बुद्ध्या ) इत्यादिक श्रुतियोंनै तामनकूंहीं शुद्ध आत्माके साक्षात्कारविषे करणपणा कथन कन्याहै ॥ यातें आत्मसाक्षात्कारविषे मनकीकरणताकूं निषेध करणेहारी सा उक्त श्रुति अशुद्ध मनविषय कहै ॥ अर्थात् अशुद्ध मन करिकै आत्माका साक्षात्कार होतानहीं ॥ यातें मनसैवानुद्द्रष्टव्यं इस उक्त श्रुति करिकै शुद्ध मनकूंहीं आत्मसाक्षात्कारकीकरणता सिद्ध होवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ( तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि ) इस श्रुतिविषे औपनिषद इस वचन करिकै आत्माकूं उपनिषद रूपशब्द प्रमाणजन्य ज्ञानका विषय कहाहै ॥ और ता आत्माकूं जो मानस प्रत्यक्षका विषय मानोंगे ॥ तों इस उक्त श्रुतिका विरोध प्राप्त होवेंगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ शास्त्र आचार्य करिकै संस्कृत शुद्ध मनकूंहीं हम ब्रह्मात्मसाक्षात्कारविषे करण मानेहैं ॥ यातें तामनकूं उपनिषद रूपशास्त्रकी अपेक्षा होणे तें ता औपनिषद श्रुतिका विरोध होवैनहीं ॥ परंतु ता उपनिषद रूपशब्दकूं आत्मसाक्षात्कारविषे करणतानहींहै ॥ किंतु ता शुद्ध मनकूंहीं करणताहै ॥ किंवा विशिष्ट आत्माके साक्षात्कारविषे तामनकूं करणपणा सिद्धहीहै ॥ यातें शुद्ध आत्माके साक्षात्कारविषे भी तामनकूंहीं करणमान्या चाहिये ॥ तामन तें भिन्न कोई करणमानणेविषे एक तों कल्पना गौरव दोष प्राप्त होवैहै ॥ और दूसरा ता अर्थका साधक कोई प्रमाण भी नहीहै ॥ यातें अंतरप्रत्यक्ष प्रमाका सो मनहीं करणहै इति ॥ अब इस उक्त मतके खंडन पूर्वक आचार्योंका मत वर्णन करेहैं ॥ तहां मनकूं जो इंद्रिय रूपता सिद्ध होवै ॥ तों तामनकूं अंतरप्रत्यक्ष प्रमाके प्रति करणपणा सिद्ध होवै ॥ परंतु तामनविषे इंद्रिय रूपताहीं संभवती नहीं ॥ जिस कारण तें ( इंद्रियेभ्यः पराह्यर्था अर्थेभ्य



तत्त्वा०

॥ ११ ॥

परि०

२

श्रपरंमनः। इंद्रियेभ्यः परंमनः ) इत्यादिक श्रुतिस्मृतियों विषे तामनकूं इंद्रियों तै पृथक् करिकै कथन क-या है ॥  
 जो कदाचित् सोमन भी इंद्रिय होता ॥ तौ यह उक्त श्रुतिस्मृति तामनकूं इंद्रियों तै पृथक् नहीं कहती ॥ या तै  
 सोमन इंद्रिय नहीं है यह निश्चय होवै है ॥ किंवा सुख दुःखादिकों के साक्षात्कार विषे जोमनकूं करणपणा सिद्ध  
 होवै ॥ तौ तामनकूं इंद्रिय रूपता संभवै ॥ परंतु तामनकूं करण रूपता ही संभवती नहीं ॥ काहे तै सर्ववृत्तियों के  
 प्रति तामनकूं ही उपादान कारणता है यह वार्त्ता पूर्व कथन करि आये हैं ॥ और जो पदार्थ जिस कार्य का उ  
 पादान कारण होवै है ॥ सो पदार्थ तिस कार्य का करण होता नहीं ॥ जैसे घटरूप कार्य के उपादान कारण रूप  
 मृत्तिका कूं ता घट के प्रति करण रूपता नहीं है ॥ किंतु दंडादिकों कूं ही करण रूपता है ॥ तैसे सर्ववृत्तियों के उ  
 पादान कारण रूपमनकूं भी तिन वृत्तियों के प्रति करण रूपता संभवती नहीं ॥ ता कारणता के असंभव हूए ता  
 मनकूं इंद्रिय मानना व्यर्थ है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ मनकूं जो इंद्रिय रूप नहीं मानोंगे ॥ तौ अंतर सुख दुःखा  
 दिकों के साक्षात्कार विषे अप्रमात्व ही प्राप्त होवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सुख दुःखादिकों का साक्षात्का  
 र कोई प्रमाण करिकै जन्य है नहीं ॥ या तै ता साक्षात्कार विषे अप्रमापणा हमारे कूं अंगीकार ही है ॥ ॥  
 शंका ॥ ॥ सुखादिकों के साक्षात्कार कूं जो अप्रमारूप मानोंगे ॥ तौ ता अप्रमाज्ञान के विषय हूए ते सुख  
 दुःखादिक शुक्तिरजतादिकों की न्यां ई प्रातीतिक ही होवैगे ॥ अर्थात् ता स्वविषयक प्रातीतिके समकाल वृ  
 त्ति ही होवैगे ॥ ता करिकै तिन सुख दुःखादिकों विषे व्यावहारिक पणा नहीं सिद्ध होवैगा ॥ ॥ समाधान  
 ॥ ॥ सुख दुःखादिकों का साक्षात्कार अप्रमारूप ही होवै है ॥ या कारण तै अंतःकरण तथा ता के धर्म सुख  
 दुःखादिक शुक्तिरजत की न्यां ई प्रातीतिक ही होवै हैं ॥ व्यावहारिक होवै नहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सुख दुःखा  
 दिकों कूं जो प्रातीतिक मानोंगे ॥ तौ तिनों कूं हर्ष शोकादिरूप अर्थ क्रिया का जनक पणा नहीं होवैगा ॥ व्या

॥ ७७ ॥



वहारिकपदार्थहीं ता अर्थक्रियाका जनकहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ व्यावहारिकपदार्थकीन्यांई कहां  
प्रातीतिकपदार्थभी ता अर्थक्रियाका जनकहोवैहै ॥ जैसे प्रातीतिक शुक्तिरजत इसपुरुषके प्रवृत्तिरूप अ  
र्थक्रियाका जनकहोवैहै ॥ तथा प्रातीतिकरज्जुसर्प इसपुरुषके भयपलायनादिरूप अर्थक्रियाका जन  
कहोवैहै ॥ तैसे तिनप्रातीतिकसुखदुःखादिकोंकूंभी हर्षशोकादिरूप अर्थक्रियाका जनकपणा संभवैहै ॥  
॥ ॥ शंका ॥ ॥ जैसे अंतर सुखदुःखादिकोंकासाक्षात्कार प्रमाणकरिकैअजन्यहोणेतें अप्रमारूप  
है ॥ तैसे अंतर आत्माकेसाक्षात्कारकूंभी प्रमाणकरिकैअजन्यहोणेतें अपमारूपताहीं प्राप्तहोवैगी ॥ जो  
कदाचित् ताआत्मसाक्षात्कारविषेभी तुम अप्रमापणाहीं अंगीकारकरोगे ॥ तौ ताअप्रमाज्ञानकाविष  
यहोणेतें सोआत्माभी सुखदुःखादिकोंकीन्यांई प्रातीतिकहींहोवैंगा ॥ और आत्माकाप्रातीतिकपणा  
कोईभीआस्तिकवादीकूं इष्टनहींहै ॥ यातें ताआत्मसाक्षात्कारविषे मनकूं अवश्यकरण मान्याचाहिये  
॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सुखदुःखादिकोंकेसाक्षात्कारकीन्यांई आत्मसाक्षात्कारविषे जोअप्रमापणा क  
हतेहो ॥ सोक्या विशिष्टआत्माकेसाक्षात्कारकूं अप्रमापणाकहतेहो ॥ अथवा शुद्धआत्माकेसाक्षात्कारकूं  
अप्रमापणा कहतेहो ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरो ॥ सोतौ हमारेकूंभी इष्टहै ॥ अर्थात् विशिष्ट  
आत्माकेसाक्षात्कारकूं हमभी अपमारूपहींमानेहैं ॥ और जोद्वितीयपक्षअंगीकारकरो ॥ सो संभवता  
नहीं ॥ काहेतें अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका शुद्धआत्माकासाक्षात्कार तत्त्वमसिआदिकवेदांतवाक्यकरि  
कैजन्यहोणेतें प्रत्यक्षप्रमारूपहींहै ॥ यातें ताशुद्धआत्माकेसाक्षात्कारविषे अप्रमापणा संभवतानहीं  
॥ ॥ शंका ॥ ॥ वाक्यकूं नियमतें परोक्षज्ञानकाहींजनकपणाहोवैहै ॥ अपरोक्षज्ञानकाजनकप  
णाहोतानहीं ॥ यातें तावेदांतवाक्यतें आत्माकाअपरोक्षज्ञान संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥



तत्त्वा०

॥ १२ ॥

कहां शब्दतैभी अपरोक्षहीज्ञानहोवैहै ॥ जैसे दशमस्त्वमसि इसवाक्यतै तादशमपुरुषकूं आपणाअपरोक्षज्ञानहीहोवैहै ॥ तैसे तत्त्वमसिआदिकवाक्यतैभी इसअधिकारीपुरुषकूं आत्माकाअपरोक्षज्ञानहीहोवैहै ॥ यहवार्त्ता आगे शाब्दप्रमाकेनिरूपणविषे कहेंगे ॥ ॥ इतिप्रत्यक्षप्रमानिरूपणं ॥ १ ॥ अब दूसरी अनुमितिप्रमाकानिरूपणकरें ॥ तहां (लिंगज्ञानजन्यज्ञानं अनुमितिः) अर्थयह ॥ लिंगकेज्ञान करिकैजन्य जोज्ञानहै सो अनुमिति कहाजावैहै ॥ जैसे (अयंपर्वतः वन्हिमान् धूमवत्त्वात् योयोधू मवान्सवन्हिमान् यथामहानसः) अर्थयह ॥ यहपर्वत वन्हिवालाहै धूमवालाहोणेतै ॥ जोजो धूमवालाहोवैहै ॥ सोसो वन्हिवालाहीहोवैहै ॥ जैसे महानसहै ॥ अन्नपकावणेकेस्थानकानाम महानसहै इति ॥ तहां इसप्रसिद्धअनुमानविषे पर्वततौ पक्षहै ॥ और वन्हि साध्यहै ॥ और धूम लिंगहै ॥ और महानस दृष्टांतहै ॥ तहां यहपर्वत धूमवालाहै इसप्रकारकेलिंगज्ञानतै इसपुरुषकूं यहपर्वत वन्हिवालाहै याप्रकारकाअनुमितिज्ञान होवैहै ॥ यातै सोउक्तअनुमितिकालक्षण संभवैहै ॥ अब सिद्धांतविषे ताअनुमितिकेलक्षणकूंघटावैहै ॥ (जीवः ब्रह्माभिन्नः सच्चिदानंदलक्षणत्वात् ब्रह्मवत्) अर्थयह ॥ यहजीवात्मा ब्रह्मसेअभिन्नहै सत्चित्आनंदरूपहोणेतै ॥ जोजो सच्चिदानंदरूपहोवैहै ॥ सो ब्रह्मतैअभिन्नहीहोवैहै ॥ जैसे ब्रह्म सच्चिदानंदरूपहोणेतै ब्रह्मतैअभिन्नहीहै ॥ तैसे यहजीवभी सच्चिदानंदरूपहोणेतै ब्रह्मसेअभिन्नहीहोवैगा इति ॥ तहां इसअनुमानविषेभी जीवतौ पक्षहै ॥ और ब्रह्मकाअभेद साध्यहै ॥ और सच्चिदानंदरूपत्व लिंगहै ॥ और ब्रह्म दृष्टांतहै ॥ तहां यहजीव सच्चिदानंदरूपहै याप्रकारकेलिंगज्ञानतैअनंतर इसअधिकारीपुरुषकूं यहजीव ब्रह्मसेअभिन्नहै याप्रकारकाअनुमितिज्ञान होवैहै ॥ यातै सोउक्तअनुमितिकालक्षण ईहांभी संभवैहै इति ॥ अब प्रसंगतै पक्षादिकोंकेस्वरूपका वर्णनकरें ॥ तहां अ

परि०  
२

॥ ७८ ॥



नुमितिज्ञानतें पूर्व इस पुरुषकूं जिस पदार्थविषे साध्यका संशय होवैहै ॥ सो पदार्थ पक्ष कहा जावैहै ॥ जैसे प्रसिद्ध अनुमानविषे पर्वतो वन्दिमान् इस अनुमितितें पूर्व इस पुरुषकूं ता पर्वतविषे वन्दिता संशय रहेहै ॥ या तें सो पर्वत ता उक्त अनुमानविषे पक्ष कहा जावैहै ॥ और इस पुरुषकूं ता पक्षविषे लिंगज्ञान करिके जिस पदार्थका ज्ञान होवैहै ॥ सो पदार्थ साध्य कहा जावैहै ॥ जैसे ता प्रसिद्ध अनुमानविषे इस पुरुषकूं पर्वतरूप पक्षविषे धूमरूपलिंगके ज्ञानतें वन्दिता ज्ञान होवैहै ॥ या तें सो वन्दिता अनुमानविषे साध्य कहा जावैहै ॥ और इस पुरुषकूं साध्य लिंग दोनोंका जिस पदार्थविषे निश्चय होवैहै ॥ सो पदार्थ दृष्टांत कहा जावैहै ॥ जैसे ता प्रसिद्ध अनुमानविषे इस पुरुषकूं महानसविषे वन्दिता रूपसाध्यका तथा धूमरूपलिंगका निश्चय हीहै ॥ या तें सो महानस ता उक्त अनुमानविषे दृष्टांत कहा जावैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिस लिंगके ज्ञान करिके सा अनुमिति जन्य होवैहै ॥ ता लिंगका क्या स्वरूपहै ॥ ऐसी शंकाके प्राप्त हूए ॥ अब ता लिंगकालक्षण कहैहैं ॥ ( व्याख्याश्रयः लिंगं ) अर्थ यह ॥ साध्यके व्याप्तिका जो आश्रय होवैहै ॥ सो लिंग कहा जावैहै ॥ जैसे ता प्रसिद्ध अनुमानविषे वन्दिता रूपसाध्यके व्याप्तिका आश्रय धूमहै ॥ या तें सो धूम लिंग कहा जावैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिस व्याप्तिका आश्रय हूए धूमादिक लिंग कह्ये जावैहैं ॥ तिस व्याप्तिका क्या स्वरूपहै ॥ ऐसी शंकाके प्राप्त हूए ॥ अब ता व्याप्तिका स्वरूप वर्णन करेहैं ॥ तहां ( साधनसाध्ययोर्नियतसामानाधिकरण्यं व्याप्तिः ) अर्थ यह ॥ साधन साध्य दोनोंका जो अव्यभिचरित सामानाधिकरण्यहै ताका नाम व्याप्तिहै ॥ जैसे प्रसिद्ध अनुमानविषे धूमरूपसाधनका तथा वन्दिता रूपसाध्यका अव्यभिचरित सामानाधिकरण्यहै ॥ अर्थात् ता वन्दिता रूपसाध्यकूं छोड़िके सो धूमरूपसाधन कदाचित् भी स्वतंत्र रहतानहीं ॥ यह ही ता धूमविषे ता वन्दिता की व्याप्तिहै ॥ और वन्दिता तों ता धूमकूं छोड़िके त



तत्त्वा०

॥ १३ ॥

परि०  
२

मलोहपिंडविषे रहे है ॥ यातें तावन्हिविषे ताधूमकी साउक्तव्याप्तिके नही ॥ तहां इसउक्तव्याप्तिका आश्रय होणेतें धूमादिकसाधनतों व्याप्य कहोजावै है ॥ और ताव्याप्तिके निरूपक होणेतें वन्हिआदिकसाध्य व्यापक कहोजावै है ॥ लिंग साधन हेतु यहतीनों शब्द एकही अर्थके वाचक होवै है इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ॥ इसउक्तव्याप्तिका इसपुरुषकूं किसउपायतें ज्ञान होवै है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जहां जहां धूमरहे है तहां तहां वन्हि अवश्य रहे है ॥ या प्रकारका जो महानसादिकों विषे वारंवार धूमवन्हिके सहचारका दर्शन है ॥ तासहचारदर्शनतें ही इसपुरुषकूं धूम वन्हिका व्याप्य है या प्रकारका व्याप्तिज्ञान होवै है ॥ परंतु जिससाधनविषे यहसाधन साध्यके अभाववाले में वृत्ति है या प्रकारका व्यभिचारज्ञान होवै है ॥ तिससाधनविषे तासहचारदर्शनके दूए भी तासाध्यके व्याप्तिका ज्ञान होतानहीं ॥ जैसे जहां जहां पार्थिवत्व होवै है तहां तहां लोहलेख्यत्व होवै है ॥ या प्रकारके सहचारदर्शनके दूए भी हीरकादिकों विषे तालोहलेख्यत्वके अभावदूए भी सो पार्थिवत्व देखनेमें आवै है ॥ यातें तासहचारदर्शनतें ता पार्थिवत्वविषे तालोहलेख्यत्वके व्याप्तिका ज्ञान होतानहीं ॥ यातें सो व्यभिचारज्ञान ताव्याप्तिज्ञानका प्रतिबंधक होवै है ॥ ताप्रतिबंधकके अभावसहित सो सहचारज्ञानहीं ताव्याप्तिज्ञानका कारण होवै है ॥ तहां काष्ठादिक पार्थिवपदार्थों विषे जो लोहकेशस्त्रतें अक्षरादिकों का लिखना है ताकानाम लोहलेख्यत्व है इति ॥ इतने कहनेकरिके ता अनुमानकी यहरीति सिद्ध होवै है ॥ महानसादिकों विषे धूमवन्हिके सहचारदर्शनतें इसपुरुषकूं धूम वन्हिके व्याप्तिवाला है या प्रकारका व्याप्तिज्ञान होवै है ॥ तिसतें अनंतर कोईकालविषे पर्वतके समीप गए दूए ता पुरुषकूं ता पर्वतविषे यह पर्वत धूमवाला है या प्रकारका ताधूमरूपलिंगका ज्ञान होवै है ॥ तिसतें अनंतर ता पर्वतअनुभवकरी हुई व्याप्तिके संस्कार उद्बुद्ध होवै है ॥ तिसतें अनंतर ता पुरुषकूं यह पर्वत वन्हिवाला है या प्रकार

॥ ७९ ॥



रकाअनुमितिज्ञान होवैहै ॥ तहां सोव्याप्तिज्ञानतों ताअनुमितिप्रमाकाकरणहोणेतैं अनुमानप्रमाणहै ॥  
और ताव्याप्तिकेउद्बुद्धसंस्कार ताकरणका अवांतरव्यापारहै ॥ और साअनुमितिप्रमा फलहै ॥ और  
सोलिंगज्ञान संस्कारोंकाउद्बोधकहोणेतैं सहकारीकारणहै इति ॥ अब ताउक्तअनुमितिप्रमाका विभा  
गवर्णनकरेहैं ॥ तहां साउक्तअनुमितिप्रमा स्वार्थानुमिति १ परार्थानुमिति २ इसभेदकरिकै दोप्रकार  
कीहोवैहै ॥ तहां इसपुरुषकूं दूसरेकेउपदेशतैंविनाहीं व्याप्तिलिंगज्ञानादिकोंकरिकै जाअनुमितिहोवैहै ॥  
सा स्वार्थानुमिति कहीजावैहै ॥ सास्वार्थानुमितिकीरीति पूर्वनिरूपणकरीहै ॥ अब दूसरी परार्थानुमि  
तिकाप्रकार वर्णनकरेहैं ॥ तहां पूर्वउक्तरीतिसैं आप पर्वतविषेबन्हिकानिश्रयकरिकै दूसरेपुरुषकेप्रति  
जोताबन्हिकानिश्रयकरावणाहै ताकानाम परार्थानुमितिहै ॥ सापरार्थानुमिति न्यायकरिकैसिद्धहोवै  
है ॥ तहां अवयवोंकेसमुदायकानाम न्यायहै ॥ और ताअनुमानवाक्यविषेस्थित जेप्रतिज्ञादिकवाक्य  
हैं तिनोंकानाम अवयवहै ॥ तहां नैयायिकतों प्रतिज्ञा १ हेतु २ उदाहरण ३ उपनय ४ निगमन ५  
इनपंचअवयवोंकेसमुदायकूं न्यायकहेहैं ॥ जैसे प्रसिद्धअनुमानविषे । पर्वतोबन्हिमान् । यह प्रतिज्ञा  
वाक्यहै ॥ १ ॥ और । धूमवत्त्वात् । यह हेतुवाक्यहै ॥ २ ॥ और । योयोधूमवान्सबन्हिमान् यथाम  
हानसः । यह उदाहरणवाक्यहै ॥ ३ ॥ और । तथाचायं । अर्थयह यहपर्वत तामहानसकीन्यांई धूम  
वालाहै यह उपनयवाक्यहै ॥ ४ ॥ और । तस्मात्तथा । अर्थयह धूमवालाहोणेतैं यहपर्वत तामहान  
सकीन्यांई बन्हिवालाहीहै ॥ यह निगमनवाक्यहै ॥ ५ ॥ इनप्रतिज्ञादिकपंचअवयवोंकेलक्षण न्यायप्र  
काशकेषष्ठेपरिच्छेदविषे अनुमाननिरूपणविषे कथनकन्येहैं ॥ तेतहांसैंजानिलेणे ॥ इसप्रकारकेप्रतिज्ञा  
दिकपंचअवयवोंकेसमुदायरूपन्यायतैं ताअन्यपुरुषकूंभी व्याप्तिलिंगादिकोंकाज्ञानहोइकै ताबन्हिकीअ



तत्त्वा०  
॥ १४ ॥

परि०  
२

नुमितिहोवैहै ॥ इसीकानाम परार्थानुमितिहै इति ॥ और वेदांतसिद्धांतविषेतों प्रतिज्ञा १ हेतु २ उदाहरण ३ इनतीनअवयवोंकेसमुदायकानाम न्यायहै ॥ अथवा उदाहरण १ उपनय २ निगमन ३ इनतीनअवयवोंकेसमुदायकानाम न्यायहै ॥ इसीन्यायतैं ताअन्यपुरुषकूं अनुमितिज्ञानविषेउपयोगीव्याप्तिआदिकोंकाज्ञानहोवैहै ॥ यातैं पंचअवयवमानणेनिष्फलहींहैं इति ॥ तहांपूर्व पर्वतोवन्दिमान् इसलौकिकअनुमानवाक्यविषे तेप्रतिज्ञादिकअवयव दिखाए ॥ अब जीवब्रह्मकेअभेदसाधक वैदिकअनुमानवाक्यविषेभी तेप्रतिज्ञादिकअवयव निरूपणकरेहैं ॥ तहां ( जीवः परस्मान्नभिद्यते १ सच्चिदानंदलक्षणत्वात् २ यःसच्चिदानंदलक्षणःसपरस्मान्नभिद्यतेयथापरमात्मा ३ तथाचायं ४ तस्मात्तथा ५ ) अर्थयह ॥ यहजीव परमात्मातैंभिन्ननहींहै ॥ यहतों प्रतिज्ञावाक्यहै ॥ १ ॥ और सत्त्वित्त्वांनंदरूपहोणेतैं ॥ यह हेतुवाक्यहै ॥ २ ॥ और जोजो सच्चिदानंदरूपहोवैहै सोपरमात्मातैंभिन्नहोतानहीं जैसेपरमात्माहै ॥ यह उदाहरणवाक्यहै ॥ ३ ॥ और यहजीव तापरमात्माकीन्यांई सच्चिदानंदरूपहै ॥ यह उपनयवाक्यहै ॥ ४ ॥ और सच्चिदानंदरूपहोणेतैं यहजीव तापरमात्मातैंअभिन्नहींहै ॥ यह निगमनवाक्यहै ॥ ५ ॥ इस प्रकारके प्रतिज्ञादिकतीनअवयवोंके वा उदाहरणादिकतीनअवयवोंके समुदायरूपन्यायतैं इसअधिकारीपुरुषकूं व्याप्तिर्लिंगादिकोंकाज्ञानहोइकै जीवब्रह्मकेअभेदविषयकअनुमितिप्रमा होवैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताजीवात्माविषे जबी किसीप्रमाणकरिकै सच्चिदानंदरूपता सिद्धहोवै ॥ तबी तासच्चिदानंदरूपत्वहेतुतैं ताजीवविषे ब्रह्मकाअभेद सिद्धहोवै ॥ परंतु ताजीवकीसच्चिदानंदरूपताविषे कोईभीप्रमाणनहींहै ॥ यातैं सोसच्चिदानंदरूपत्वहेतु ताजीवरूपपक्षविषेअवृत्तिहोणेतैं स्वरूपासिद्धनामाहेत्वाभासहै ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहूए ॥ अब श्रुति स्मृति युक्ति अनुभव इनचारोंकरिकै ताजीवात्माविषे सत्त्वित्त्वांनं

॥ ८० ॥



दरूपतासिद्धकरेहैं ॥ तहां ( अविनाशीवाअरेऽयमात्मा । सन्मात्रोनित्यः शुद्धोबुद्धः ) अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी  
यहआत्मा विनाशतैरहितहै ॥ और यहआत्मा सत्तामात्रहै तथानित्यहै तथाशुद्धहै तथाज्ञानस्वरूपहै ॥  
इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै इसजीवात्माकी सत्यरूपता सिद्धहोवैहै ॥ और ( नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोयं  
सनातनः ) अर्थयह ॥ यहआत्मा नित्यहै तथासर्वत्रव्यापकहै तथाकूटस्थहै तथाअचलहै तथासनातन  
है ॥ इत्यादिक गीतास्मृतिकेवचनोंकरिकैभी ताजीवात्माकी सत्यरूपता सिद्धहोवैहै ॥ और यहजी  
वात्मा जोसत्यनहींहोवै ॥ तौं कृतनाश तथाअकृताभ्यागम इनदोनोंदोषोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तहां क  
येहूएपुण्यपापकर्मका जोफलभोगतैंविना विनाशहै ताकानाम कृतनाशहै ॥ और पूर्वनहींकन्येहूए  
कर्मका जोफलभोगहै ताकानाम अकृताभ्यागमहै ॥ इत्यादिकयुक्तिकरिकैभी ताजीवात्माकी सत्यरू  
पता सिद्धहोवैहै ॥ और ( अहंअस्मि ) याप्रकारकेअनुभवतैंभी ताआत्माकी सत्यरूपता सिद्धहोवैहै ॥  
यातैं सोजीवात्मा सत्यरूपहीहै ॥ और ( अत्रायंपुरुषः स्वयंज्योतिर्भवति । आत्मैवास्यज्योतिर्भवति ।  
योऽयंविज्ञानमयः । त्रिषुधामसुयद्भोग्यंभोक्ताभोगश्चयद्भवेत् तेभ्योविलक्षणः साक्षीचिन्मात्रोऽहंसदाशिवः )  
अर्थयह ॥ इसस्वप्नअवस्थाविषे यहआत्माहीं स्वयंज्योतिहै ॥ अर्थात् तास्वप्नअवस्थाविषे सूर्यचंद्रादिक  
बाह्यज्योतियोंकेअभावहूएभी ताआत्मारूपज्योतिकरिकैहीं सर्वव्यवहारहोवैहै ॥ और इससंघातका आ  
त्माहींज्योतिहोवैहै ॥ और यहआत्मा विज्ञानरूपहै ॥ और जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति इनतीनअवस्थावोंवि  
षे यथाक्रमतैंविद्यमान जे विश्व तैजस प्राज्ञ यहतीनभोक्तोंहैं ॥ तथा तिनोंके जेस्थूलसूक्ष्मादिकभोग्य  
पदार्थहैं ॥ तथा अंतःकरणकी वा अज्ञानकी वृत्तिरूपजोभोगहै ॥ तिनसर्वोंतैंविलक्षण जोचैतन्यमात्रसा  
क्षीहै सोमैंहूं ॥ इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै ताजीवात्माकी चैतन्यरूपता सिद्धहोवैहै ॥ और ( यथाप्रका



तत्त्वा०

॥ १५ ॥

शयत्येकः कृत्स्नलोकमिमं रविः क्षेत्रक्षेत्रीतथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ) अर्थ यह ॥ हे अर्जुन ॥ जैसे एकहीं  
 सूर्य भगवान् संपूर्ण लोकों को प्रकाश करे है ॥ तैसे यह आत्मा संपूर्ण संघात को प्रकाश करे है ॥ इत्यादिक स्मृ  
 तियों को रिकै भी ताजीवात्मा की चैतन्य रूपता सिद्ध होवै है ॥ और जो कदाचित् यह आत्मा चैतन्य रूप  
 नहीं होवै ॥ तों प्रकाशक के अभाव तें इस जगत् विषे अंधता प्राप्त होवैगी ॥ इत्यादिक युक्तियों को रिकै भी  
 ताजीवात्मा की चैतन्य रूपता सिद्ध होवै है ॥ और ( अहं अनुभवामि ) या प्रकार के अनुभव तें भी ता आ  
 त्मा की चैतन्य रूपता सिद्ध होवै है ॥ या तें सो जीवात्मा चैतन्य रूप ही है ॥ और ( यो वैभूमा तत्सुखं । को ह्ये  
 वान्यात्कः प्राण्यात् यदेष आकाश आनंदो न स्यात् । एष ह्येवानंदयाति ) अर्थ यह ॥ देश काल वस्तु परिच्छेद तें र  
 हित जो आत्मा है सोई सुख रूप है ॥ और जो कदाचित् यह आत्मा आनंद रूप नहीं होवै ॥ तों अपान के व्या  
 पार को तथा प्राण के व्यापार को तथा देह इंद्रियादिकों के व्यापार को कौन करेगा ॥ किंतु कोई भी नहीं करेगा ॥  
 जिस कारण तें लोकों का जीवन आनंद पूर्वक ही होवै है ॥ अति दुःख के प्राप्त हुए प्राणों का वियोग ही देखने में  
 आवे है ॥ इत्यादिक श्रुतियों को रिकै ताजीवात्मा की आनंद रूपता सिद्ध होवै है ॥ और ( योऽतः सुखोऽत  
 रारामस्तथाऽतज्योतिरेव यः ) इत्यादिक गीता स्मृति वचन रिकै भी ताजीवात्मा की आनंद रूपता सिद्ध हो  
 वै है ॥ और जो कदाचित् यह आत्मा आनंद रूप नहीं होवै ॥ तों सर्व लोकों की आपने आत्मा विषे परम प्री  
 ति नहीं होनी चाहिये ॥ और सर्व लोकों की आपने आत्मा विषे तों परम प्रीति ही देखने में आवे है ॥ और  
 सुष्ठितें उठे हुए पुरुष को मैं सुखी सोता भया या प्रकार का स्मरण होवै है ॥ सो स्मरण अनुभव तें विना होतान  
 ही ॥ या तें सुष्ठि विषे सुख के अनुभव की कल्पना करावै है ॥ तहां सुष्ठि विषे कोई विषय जन्य आनंद तो है  
 नहीं ॥ किंतु आपने स्वरूप का ही आनंद है ॥ इत्यादिक युक्तियों तें भी ताजीवात्मा की आनंद रूपता सि

परि०

२

॥ ८१ ॥



द्वहोवै है ॥ और मैं कदाचित् भी अप्रिय नहीं होवों या प्रकारके अनुभव तै भी ताजीवात्माकी आनंदरूपता सिद्ध होवै है ॥ या तै यह जीवात्मा आनंदरूप ही है ॥ इस प्रकार श्रुति स्मृति युक्ति अनुभव इन चारों के रिकै इस जीवात्माकी सत्चित् आनंदरूपता सिद्ध होणे तै सो सच्चिदानंदरूपत्व हेतु ताजीवात्मारूप पक्ष विषे वृत्ति होणे तै स्वरूपा सिद्ध नामा हेत्वा भास नहीं है इति ॥ किंवा ता उक्त अनुमान विषे पक्षरूप जीवात्माकी सच्चिदानंदरूपता जैसे श्रुति आदिक प्रमाणों के रिकै सिद्ध है ॥ तैसे ता दृष्टांतरूप परमात्माकी सच्चिदानंदरूपता भी श्रुति प्रमाण तै ही सिद्ध है ॥ तहां श्रुति ॥ ( सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म आनंदो ब्रह्म ) अर्थ यह ॥ ब्रह्म सत्य रूप है तथा ज्ञान रूप है तथा अनंतरूप है तथा आनंदरूप है इति ॥ या तै सो सच्चिदानंदरूपत्व हेतु ता परमात्मारूप दृष्टांत विषे भी विद्यमान ही है ॥ यद्यपि ता उक्त अनुमान विषे जीवात्मा तै अभिन्न ब्रह्म कूं दृष्टांतरूपता संभवती नहीं ॥ जिस कारण तै सर्वत्र पक्ष तै भिन्न ही दृष्टांत होवै है ॥ तथापि जीव ब्रह्म का कल्पित भेद मानि कै ता ब्रह्म कूं दृष्टांतरूपता संभवै है ॥ और वास्तव तै तो ता जीव ब्रह्म का अभेद ही है ॥ सो जीव ब्रह्म का अभेद प्रथम परिच्छेद विषे भेदवाद के खंडन पूर्वक विस्तार तै कथन करि आये हैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ मैं ब्रह्म रूप हूं या प्रकारकी उक्त अनुमिति सर्व पुरुषों कूं उत्पन्न होवै है ॥ अथवा कोई क पुरुष कूं होवै है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जिस पुरुष नै ब्रह्म वेत्ता गुरु के मुख तै श्रद्धा भक्ति पूर्वक वेदांत शास्त्र का श्रवण कन्या है ॥ तथा प्रथम परिच्छेद विषे कथन करी रीति सै तत्त्व पदार्थ का शोधन कन्या है ॥ तिस पुरुष कूं ही आपणे आत्मा विषे सच्चिदानंदरूपत्व हेतु के ज्ञान तै अहं ब्रह्मास्मि या प्रकारकी जीव ब्रह्म के अभेद विषयक अनुमिति उत्पन्न होवै है ॥ वेदांत श्रवणादिकों तै रहित पुरुष कूं सा अभेद विषयक अनुमिति उत्पन्न होती नहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ( तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि ) इस श्रुति नै ता ब्रह्म कूं केवल उपनिषद रूप शब्द प्रमाण का विषय कहा है ॥ जो क



तत्त्वा०

॥ १६ ॥

दाचित् ताब्रह्मविषे अनुमानप्रमाणकीविषयतामानोंगे ॥ तौ ताउक्तश्रुतिकाविरोधहोवेंगा ॥ यातैं ता  
 ब्रह्मविषे उक्तअनुमानकीविषयता संभवतीनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताब्रह्मविषे अनुमानकूं स्वतं  
 त्रप्रमाणतानहींहै ॥ अथवा वेदांतकासहकारीत्वरूपकरिकैभी प्रमाणतानहींहै ॥ तहां जोप्रथमपक्ष अं  
 गीकारकरो ॥ सोतौ हमारेकूंभीइष्टहै ॥ अर्थात् पुरुषकीकल्पनारूपअनुमानप्रमाणकूं अतिइंद्रियब्रह्मवि  
 षे स्वतःप्रमाणरूप हमभी मानतेनहीं ॥ और जोद्वितीयपक्ष अंगीकारकरो ॥ सो संभवतानहीं ॥ का  
 हेतैं ( आत्मावाऽरेद्रष्टव्यःश्रोतव्योमंतव्यः ) इसश्रुतिनैं तथा ( श्रोतव्यःश्रुतिवाक्येभ्योमंतव्यउपपत्ति  
 भिः ) इसस्मृतिनैं आत्माकेसाक्षात्कारवासतै मननकाविधानकन्याहै ॥ और अनुमानादिरूपयुक्तियों  
 करिकै जोआत्माकाविचारहै ताकानाम मननहै ॥ इसप्रकार मननविषेउपयोगीपणेकरिकै ताअनुमा  
 नकूं वेदांतशास्त्रकीसहकारिताकरिकै प्रमाणरूपता हमारेकूं अंगीकारहींहै ॥ जोकदाचित् सर्वप्रकारतैं  
 ताअनुमानकूं अप्रमाणरूपहीं मानिये ॥ तौ श्रुतिस्मृतियोंविषे जोमननकाविधानकन्याहै सो व्यर्थहीं  
 होवेंगा ॥ यातैं वेदांतशास्त्रकीसहकारितारूपकरिकै ताअनुमानकीप्रमाणता अवश्यमानीचाहिये ॥  
 याकारणतैंहीं ( अहंब्रह्मास्मि अयमात्माब्रह्म ) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकैसिद्ध जीवब्रह्मकेअभेदकूं ताउ  
 क्तअनुमानकरिकैसिद्धकन्याहै ॥ तहां जिसअर्थकूं वेदांतशास्त्र प्रतिपादनकरेहै ॥ तिसीअर्थकूं जोअनु  
 मान सिद्धकरेहै ॥ सोअनुमान तावेदांतशास्त्रका सहकारी कहाजावैहै इति ॥ किंवा ( नेहनानास्ति  
 किंचन । वाचारंभणंविकारोनामधेयं । मायामात्रमिदंद्वैतं ) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै जैसे प्रपंचकामि  
 थ्यापणा सिद्धहै ॥ तैसे अनुमानकरिकैभी सोमिथ्यापणा सिद्धहोवैहै ॥ सोदिखावैहै ॥ ( व्यावहारिकप्र  
 पंचः मिथ्या दृश्यत्वात् शुक्तिरूप्यवत् ) अर्थयह ॥ यहआकाशादिक व्यावहारिकप्रपंच मिथ्याहोणेकूंयो

परि०

२

॥ ८२ ॥



ग्यहै ॥ दृश्यरूपहोनेतैं ॥ जोजोपदार्थ दृश्यरूपहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ मिथ्याहींहोवैहै ॥ जैसे शुक्तिरजत दृश्यरूपहोनेतैं मिथ्याहींहै इति ॥ इसअनुमानकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं ब्रह्मतैंभिन्नसर्वप्रपंचविषे मिथ्यात्वअनुमिति उत्पन्नहोवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ इसप्रपंचविषे मिथ्यापणाक्याहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सत्असत्तैंविलक्षणतारूप जोअनिर्वचनीयपणाहै यहहीं ताप्रपंचविषेमिथ्यापणाहै ॥ तहां प्रपंच कूं जोसत्यमानिये ॥ तों ब्रह्मकीन्याई ताप्रपंचका बाधनहींहोवैगा ॥ और ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै ताप्रपंचकाबाधहोवैहै ॥ यातैं सोप्रपंच सत्यतैंभीविलक्षणहै ॥ और ताप्रपंचकूं जोअसत्यमानिये ॥ तों नरशृंग वंध्यापुत्रकीन्याई ताप्रपंचका प्रत्यक्षनहींहोवैगा ॥ और ताप्रपंचकाप्रत्यक्ष सर्वकूंहोवैहै ॥ यातैं सोप्रपंच असत्यतैंभीविलक्षणहै ॥ और सत् असत् दोनोंका परस्परविरोधहोनेतैं सत्असत्उभयरूपताभी ताप्रपंचविषे संभवतीनहीं ॥ इसप्रकारका अनिर्वचनीयपणाहीं ताप्रपंचविषे तथाशुक्तिरजतविषे मिथ्यापणा है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसदृश्यत्वरूपहेतुतैं प्रपंचविषे मिथ्यापणा सिद्धकरतेहो ॥ सोदृश्यत्वहेतु व्यभिचारीहोनेतैं असत्हेतुहींहै ॥ काहेतैं दर्शनकेविषयत्वकानाम दृश्यत्वहै ॥ और वृत्तिज्ञानकानाम दर्शनहै ॥ तावृत्तिज्ञानकाविषयत्वरूपदृश्यत्व ब्रह्मविषेभीरहेहै ॥ और ताब्रह्मविषे सोउक्तमिथ्यात्वरूपसाध्य हैनहीं ॥ यातैं तामिथ्यात्वरूपसाध्यकेअभाववालेब्रह्मविषेवृत्तिहोनेतैं सोदृश्यत्वहेतु व्यभिचारीहींहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताउक्तअनुमानविषे दृश्यत्वशब्दकरिकै वृत्तिज्ञानकाविषयत्वरूपदृश्यत्व विवक्षितनहींहै ॥ किंतु तावृत्तिविषेआरूढजोफलचैतन्यहै ताकाविषयत्वरूपदृश्यत्वहीं विवक्षितहै ॥ तहां ताब्रह्मविषे आवरणकीनिवृत्तिवासतैं वृत्तिकीविषयताहूएभी स्वप्रकाशरूपहोनेतैं ताफलचैतन्यकीविषयताहैनहीं ॥ यातैं ताब्रह्मविषेप्रवृत्तिहोनेतैं सोदृश्यत्वहेतु व्यभिचारीनहींहै ॥ किंतु सत्हेतुहै ॥ ईहां



तत्त्वा०

॥ १७ ॥

यहतात्पर्यहै ॥ एक सतहेतुहोवैहै ॥ दूसरा असतहेतुहोवैहै ॥ तहां सतहेतुतैंतों तिसतिससाध्यकीसिद्धि होवैहै ॥ और असतहेतुतैं तासाध्यकीसिद्धिहोतीनहीं ॥ तिसीअसतहेतुकूं दृष्टहेतु कहेहैं तथाहेत्वाभास कहेहैं ॥ सोहेत्वाभासभी सव्यभिचार १ विरुद्ध २ असिद्ध ३ सत्प्रतिपक्ष ४ बाधित ५ इसभेदकरिकै पंचप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रथम सव्यभिचारभी साधारण १ असाधारण २ अनुपसंहारी ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ और तीसरा असिद्धभी आश्रयासिद्ध १ स्वरूपासिद्ध २ व्याप्यत्वासिद्ध ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ इनपंचहेत्वाभासोंकेलक्षण तथाउदाहरण न्यायप्रकाशकेषष्ठेपरिच्छेदविषे अनुमाननिरूपणविषे हमनैं विस्तारतैंनिरूपणकन्येहैं ॥ ग्रंथविस्तारकेभयतैं ईहां निरूपणकन्येनहीं ॥ जिसकूं जिज्ञासाहोवै ॥ तिसनैं तहांसेजानिलेणे इति ॥ ईहां नैयायिक ताअनुमानकूं केवलान्वयि १ केवलव्यतिरेकि २ अन्वयव्यतिरेकि ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकामानेहैं ॥ तहां जिसअनुमानकेसाध्यका कहांभी अत्यंताभाव नहींहोवै ॥ सोअनुमान केवलान्वयि कह्याजावैहै ॥ जैसे ( घटोऽभिधेयः प्रमेयत्वात् ) इत्यादिकअनुमानहैं ॥ ईहां अभिधेयत्वरूपसाध्यका कहांभी अत्यंताभावनहींहै ॥ किंतु पदकावाच्यत्वरूपअभिधेयत्व सर्वपदार्थोंविषेरहेहै ॥ तथा प्रमाज्ञानकाविषयत्वरूपप्रमेयत्वभी सर्वपदार्थोंविषेरहेहै ॥ यातैं यहउक्तअनुमान केवलान्वयि कह्याजावैहै ॥ और जिसअनुमानके साध्यका तथाहेतुका कहांभी सहचारदर्शन नहींहोवै ॥ किंतु तासाध्यहेतुकेअभावोंकाहीं सहचारदर्शनहोवै ॥ सोअनुमान केवलव्यतिरेकि कह्याजावैहै ॥ जैसे ( पृथिवी इतरेभ्योभिद्यते गंधवत्त्वात् यन्नैवंतन्नैवं यथाजलादिः ) इत्यादिक अनुमानहैं ॥ ईहां पृथिवीतैंइतरजलादिकपदार्थोंकेभेदरूपसाध्यका तथागंधरूपहेतुका तापृथिवीरूपपक्षकूंछोडिकै अन्यत्रकहांभी सहचारहैनहीं ॥ किंतु तासाध्यहेतु

परि०

२

॥ ८३ ॥



के अभावों का ही जलादिकों विषे सहचार है ॥ यातें यह उक्त अनुमान केवलव्यतिरेकि कहा जावै है ॥ और जिस अनुमान के साध्य हेतु दोनों का तथा तिन दोनों के अभावों का अन्यत्र सहचार दर्शन होवै है ॥ सो अनुमान अन्वयव्यतिरेकि कहा जावै है ॥ जैसे ( पर्वतो वह्निमान् धूमवत्त्वात् ) यह प्रसिद्ध अनुमान है ॥ ईहां वह्निरूप साध्य का तथा धूमरूप हेतु का महान सविषे सहचार देखने में आवै है ॥ और तिन दोनों के अभावों का जलहृदविषे सहचार देखने में आवै है ॥ यातें यह उक्त अनुमान अन्वयव्यतिरेकि कहा जावै है ॥ इन तीन प्रकार के अनुमानों का विस्तार तै निरूपण न्यायप्रकाश के षष्ठे परिच्छेद विषे कन्या है ॥ सो तहां से जानिलेना इति ॥ सो यह नैयायिकों का मत असंगत है ॥ काहेतें ( नेहनानास्ति किंचन ) इत्यादि कश्रुतियां ब्रह्मविषे सर्वप्रपंच का अत्यन्ताभाव कथन करे हैं ॥ यातें ब्रह्मतै भिन्न किसी भी पदार्थ विषे अत्यन्ताभाव का अप्रतियोगीपण नहीं है ॥ किंतु सर्व अनात्म पदार्थ ता अत्यन्ताभाव के प्रतियोगी ही हैं ॥ यातें ता अनुमान विषे केवल अन्वयिरूपता संभवती नहीं ॥ इस प्रकार सो केवलव्यतिरेकि अनुमान भी संभवता नहीं ॥ काहेतें जिन पदार्थों का परस्पर व्याप्यव्यापकभाव होवै है ॥ तिन पदार्थों का ही परस्पर साधन साध्यभाव होवै है यह नियम है ॥ इस नियम का ता केवलव्यतिरेकि अनुमान विषे भंग होवै है ॥ जिस कारण तै ता उक्त केवलव्यतिरेकि अनुमान विषे गंध इतरभेद इन दोनों का तों साधन साध्यभाव मान्या है ॥ और इतरभेदाभाव तथा गंधाभाव इन दोनों का व्याप्यव्यापकभाव मान्या है ॥ जो कदाचित् अन्य पदार्थों के व्याप्तिज्ञान तै अन्य पदार्थ की अनुमिति होती होवै ॥ तों पर्वतविषे वह्निव्याप्य धूम के ज्ञान तै जल की भी अनुमिति होनी चाहिये ॥ यातें ता अनुमान विषे केवलव्यतिरेकि रूपता भी संभवती नहीं ॥ ता केवल अन्वयि के तथा केवलव्यतिरेकि के असंभव हूए ता अनुमान विषे अन्वयव्यतिरेकि रूपता भी संभवती नहीं ॥ यातें



तत्त्वा०

॥ १८ ॥

सो अनुमान वेदांतसिद्धांतविषे एक अन्वयिरूप हीं होवै है ॥ तहां पूर्व उक्त अन्वय व्याप्तिवाले अनुमान का नाम अन्वयि है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिस पुरुष कूं पूर्व उक्त साधन साध्य दोनों का सामानाधिकरण्य रूप अन्वय व्याप्तिका ज्ञान नहीं भया है ॥ किंतु साध्याभाव साधनाभाव इन दोनों का सामानाधिकरण्य रूप व्यतिरेक व्याप्तिका हीं ज्ञान भया है ॥ तिस पुरुष कूं भी ता व्यतिरेक व्याप्तिके ज्ञान तैं ता साध्य की अनुमिति होवै है सान हीं होणी चाहिये ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ता अन्वय व्याप्तिके ज्ञान तैं रहित पुरुष कूं ता व्यतिरेक व्याप्तिके ज्ञान तैं ता साध्य की अनुमिति नहीं होती ॥ किंतु तहां अर्थापत्ति प्रमाण तैं हीं ता साध्य की प्रमा होवै है ॥ जैसे पृथिवी मात्र विषे स्थित गंध गुण ता पृथिवी विषे जलादिक इतर पदार्थों के भेद तैं विना अनुपपन्न हू आ ता पृथिवी विषे ता इतर भेद की कल्पना करावै है इति ॥ ॥ इति अनुमिति प्रमाण निरूपण ॥ २ ॥ ॥ अब तीसरी उपमिति प्रमा का निरूपण करे हैं ॥ तहां ( सादृश्य प्रमितिः उपमितिः ) अर्थ यह ॥ सादृश्य कूं विषय करणे हारी जा प्रमा है सा उपमिति प्रमा कही जावै है ॥ जैसे नगर विषे देख्या है गोपिंड जिस पुरुष नैं ॥ तथा गवय पशु के जानणे की है इच्छा जिस पुरुष कूं ॥ सो पुरुष किसी वन वासी पुरुष तैं पूछता भया ॥ जो गवय पशु कैसा होवै है ॥ आगे तैं सो वन वासी पुरुष तान नगर वासी पुरुष के प्रति गौ के सदृश गवय होवै है या प्रकार का वचन कहता भया ॥ ता वचन कूं श्रवण करिकै सो नगर वासी पुरुष कोई काल विषे वन कूं जाता भया ॥ ता वन विषे ता गवय पिंड कूं देखिकै यह गवय गौ के सदृश है या प्रकार का ज्ञान ता पुरुष कूं होवै है ॥ तिस तैं अनंतर इस गवय के सदृश हमारी गौ है या प्रकार का ज्ञान तिस पुरुष कूं होवै है ॥ इसी ज्ञान का नाम उपमिति प्रमा है ॥ तहां ता गवय पशु निष्ठ जो गौ के सादृश्य का ज्ञान है ॥ सो तो ता उपमिति प्रमा का करण होणे तैं उपमान प्रमाण है ॥ और आपणी गौ निष्ठ जो ता गवय के सादृश्य का ज्ञान है ॥ सो ज्ञान ता उपमान प्रमाण का

परि०  
२

॥ ८४ ॥



फलरूप उपमितिप्रमाण है इति ॥ यहलौकिक उदाहरण ताउपमितिका कह्या ॥ अब ताउपमितिका वैदिक उदाहरण कहे हैं ॥ आकाशका असंगपणा तथा व्यापकपणा निश्चयकन्या है जिसपुरुषनें ॥ और ब्रह्मके असंगपणेकूं तथा व्यापकपणेकूं जिसपुरुषनें जान्यानहीं ॥ ऐसा अधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्ता गुरुसे पूछे है ॥ हे भगवन् ब्रह्मका क्या स्वरूप है ॥ तिसते अनंतर सो गुरु ताशिष्यके प्रति आकाशकीन्यांई सो ब्रह्म असंग है तथा व्यापक है इसप्रकारका उत्तर कहे है ॥ तिसते अनंतर सो शिष्य एकांतदेशमें विचारकरिकै आपणे ब्रह्मरूप आत्माविषे असंग व्यापकतारूप करिकै आकाशके सादृश्यकूं अनुभव करे है ॥ अर्थात् आकाशकीन्यांई असंग तथा व्यापक ब्रह्म में हूं या प्रकारका अनुभव ता अधिकारीपुरुष कूं होवै है इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ आत्माविषे असंगतारूप तथा व्यापकतारूप आकाशका सादृश्य है ॥ इस अर्थविषे कौन प्रमाण है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ श्रुति स्मृति आचार्यवाक्य इनतीनों करिकै सो अर्थ सिद्ध है ॥ तहां श्रुति ॥ (आकाशवत्सर्वगतश्च नित्यः) अर्थ यह ॥ आत्मा आकाशकीन्यांई सर्वत्र व्यापक है तथानित्य है ॥ इस श्रुतिनें आत्माकूं आकाशकीन्यांई व्यापक कहा है ॥ और (यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मानोपलिप्यते) अर्थ यह ॥ जैसे सर्वत्र स्थित हू आभी आकाश आपणे असंग स्वभाव तें कोई पदार्थ करिकै लिपायमान होतानहीं ॥ तैसे सर्वदेहोंविषे स्थित हू आभी यह आत्मा आपणे असंग स्वभाव तें कोई पदार्थ करिकै लिपायमान होतानहीं इति ॥ इस गीता स्मृतिनें आत्माकूं आकाशकीन्यांई असंग कहा है ॥ और (दृशि स्वरूपं गगनोपमं परं) इस वचन करिकै आचार्योंनें भी आत्माकूं आकाशकीन्यांई व्यापक कहा है ॥ यातें आत्माविषे आकाशकी सदृशता कूं लैके सो उक्त उपमितिका उदाहरण संभवै है इति ॥ अथवा शुक्तिरजत स्वप्न पदार्थ आदिकोंविषे मिथ्यापणे कूं निश्चय करिकै आकाशादिक प्रपंचके स्वरूप जान



तत्त्वा०

॥ १९ ॥

परि०  
२

णेकी इच्छाकरताहूआ यह अधिकारी पुरुष यह प्रपंच शुक्तिरजतादिकों की न्याई मिथ्या है या प्रकार के गुरु  
 के वचन कूं श्रवण करिके एकांत देश में विचार करिके इस प्रपंच विषे शुक्तिरजतादिकों के मिथ्यात्वरूप सादृश्य कूं  
 अनुभव करे है ॥ अर्थात् यह आकाशादिक प्रपंच शुक्तिरजतादिकों की न्याई मिथ्या ही है ॥ या प्रकार का अनु  
 भव ता अधिकारी पुरुष कूं होवै है ॥ यह उपमिति का उदाहरण भी वेदांत सिद्धांत विषे अनुकूल है इति ॥ ईहां नै  
 यायिक तौ ता गवय निष्ठ गो सादृश्य ज्ञान तैं अनंतर गवय गवय पद का वाच्य है या प्रकार के ज्ञान कूं ही उपमि  
 ति प्रमा माने हैं ॥ तथा ता उपमान कूं सादृश्य विशिष्ट पिंड ज्ञान १ वैधर्म्य विशिष्ट पिंड ज्ञान २ असाधारण  
 धर्म विशिष्ट पिंड ज्ञान ३ इस भेद करिके तीन प्रकार का माने हैं ॥ सो नै यायिकों का मत न्याय प्रकाश के षष्ठे  
 परिच्छेद विषे उपमान निरूपण विषे विस्तार तैं प्रतिपादन क न्या है ॥ जिस कूं जिज्ञासा होवै तिस नैं तहां सैं  
 जानिलेणा इति ॥ ॥ इति उपमिति प्रमानिरूपणं ॥ ३ ॥ ॥ अब चतुर्थी शाब्दी प्रमा का निरूपण करे हैं ॥  
 तहां ( वाक्य करणिका प्रमा शाब्दी प्रमा ) अर्थ यह ॥ वाक्य रूप करण करिके जन्य जा प्रमा है सा शाब्दी  
 प्रमा कही जावै है ॥ जैसे तत्त्वमसि इस वैदिक वाक्य कूं श्रवण करिके इस अधिकारी पुरुष कूं जा अहं ब्रह्मा  
 स्मि या प्रकार की प्रमा होवै है ॥ तथा घट मानय गामानय इत्यादिक लौकिक वाक्यों कूं श्रवण करिके इस पु  
 रुष कूं घट गौ आदिकों के आनयन की जा प्रमा होवै है ॥ ता प्रमा का नाम शाब्दी प्रमा है इति ॥ तहां जिस  
 वाक्य करिके सा शाब्दी प्रमा जन्य होवै है ता वाक्य का लक्षण कहें हैं ॥ ( आकांक्षा योग्यता सन्निधि मत्पद स  
 मुदायः वाक्यं ) अर्थ यह ॥ आकांक्षा योग्यता सन्निधि इन तीनों वाले जे पद हैं तिन पदों के समुदाय का ना  
 म वाक्य है ॥ जैसे तत्त्वमसि इत्यादिक वैदिक वाक्य तत् त्वं आदिक पदों का समुदाय रूप हैं ॥ तथा घट  
 मानय इत्यादिक लौकिक वाक्य घट आनय इत्यादिक पदों का समुदाय रूप हैं इति ॥ अब जिन पदों के स

॥ ८५ ॥



मुदायकानाम वाक्यहै तिनपदोंकालक्षणकहेहैं ॥ तहां (वर्णसमूहः पदं) अर्थयह ॥ ककारादिकवर्णों काजोसमूहहै ताकानाम पदहै ॥ जैसे कलश इत्यादिकपद ककारादिकवर्णोंका समूहरूपहैं ॥ तहां तापदकेघटक ककारादिकवर्णोंविषे जोएकज्ञानकीविषयताहै यहहीं समूहपणाहै ॥ यद्यपि नैयायिकों केमतविषे तेककारादिकवर्ण शब्दरूपहोणेतैं क्षणिकहैं अर्थात् तृतीयक्षणविषे नाशवान्हैं ॥ तथा तिनवर्णोंकासमुदायरूपपदभी क्षणिकहैं ॥ तथा तिनपदोंकासमुदायरूपवाक्यभी क्षणिकहैं ॥ तथा तिनवाक्योंकासमुदायरूपवेदभी क्षणिकहैं ॥ तथापि वेदांतसिद्धांतविषे तेवर्ण क्षणिकनहींहैं ॥ किंतु आकाशादिकोंकीन्याई सृष्टिकेआदिकालविषे मायाउपहितईश्वरतैं तिनवर्णोंकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ और प्रलयकालविषे तिनवर्णोंकाविनाशहोवैहै ॥ मध्यकालविषे तिनवर्णोंका उत्पत्ति विनाश होतानहीं ॥ याकारणतैंहीं । सोऽयंगकारः । इत्यादिकप्रत्यभिज्ञाकूंभी प्रमाणरूपताहोवैहै ॥ और । उत्पन्नोगकारः विनष्टोगकारः । इत्यादिकप्रतीतितों तिनगकारादिकवर्णोंकेउच्चारणकेउत्पत्तिविनाशकूंहीं विषयकरेहै ॥ गकारादिकवर्णोंकेउत्पत्तिविनाशकूंविषयकरतीनहीं ॥ यातैं वर्ण पद वाक्य वेद यहसर्व शब्दरूपहोणेतैं क्षणिकहैं यहनैयायिकोंकामत असंगतहै ॥ और मीमांसकतों तिनवर्णोंकूं तथावर्णसमुदायरूपवेदकूं उत्पत्तिविनाशतैंरहित नित्यमानेहैं ॥ सोमीमांसकोंकामतभी असंगतहै ॥ जिसकारणतैं (छंदांसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्मादजायत अस्यमहतोभूतस्यनिःश्वसितमेवैतद्यद्वेदोयजुर्वेदः) इत्यादिकश्रुतिनैं सृष्टिकेआदिकालविषे मायाउपहितईश्वरतैं वेदोंकीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ और (अतएवचनित्यत्वं) इससूत्रविषे श्रीव्यासभगवान्हैं वेदोंका प्रलयपर्यंतस्थायित्वरूपनित्यपणा कथनकन्याहै ॥ यातैं सोमीमांसकोंकामतभी असंगतहै इति ॥ तहां पूर्वआकांक्षा योग्यता सन्निधि इनतीनोंवालेपदोंकेसमूहकूं वाक्य



तत्त्वा०

॥ २० ॥

कहाथा ॥ ताकेविषे प्रथम आकांक्षाकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ तहां (अन्वयानुपपत्तिः आकांक्षा) अर्थ यह ॥ जिसपदका जिसपदतैंविना अन्वय नहींसंभवैहै ॥ तिसपदका जोतिसपदकेसाथि समभिव्याहारहै ताकानाम आकांक्षाहै ॥ जैसे । घटमानय । इसवाक्यतैं श्रोतापुरुषकूं घटकेलेआवणेकाबोधहोवैहै ॥ सोबोध केवल घटं इसकारकपदतैंभी होतानहीं ॥ तथा केवल आनय इसक्रियापदतैंभी होता नहीं ॥ किंतु तिनदोनोंपदोंकेविद्यमानहूएहीं सोबोधहोवैहै ॥ यातैं ताघटपदकूं जोआनयपदकासमभिव्याहारहै ॥ तथा ताआनयपदकूं जोघटपदकासमभिव्याहारहै ॥ यहहीं तिनदोनोंपदोंकूं परस्पर आकांक्षाहै ॥ समभिव्याहारनाम समीपताकाहै ॥ यद्यपि आकांक्षानाम इच्छाकाहै ॥ साइच्छा चेतनकाहींधर्महोवैहै ॥ जडपदोंकाधर्म होतीनहीं ॥ तथापि तेपद श्रोतापुरुषकी स्वविषयकआकांक्षाकेजनकहोवैहैं ॥ यातैं तिनपदोंकूंभी आकांक्षावाला कहाहै इति ॥ अब योग्यताकावर्णनकरेहैं ॥ तहां (वाक्यार्थाबाधः योग्यता) अर्थयह ॥ वाक्यकेअर्थका जोप्रमाणांतरकरिकैअबाधहै ताकानाम योग्यताहै ॥ जैसे । घटमानय । इसवाक्यकाअर्थ जोघटकाआनयनहै ताका कोईभीप्रत्यक्षादिकप्रमाणकरिकैबाधहोतानहीं ॥ यहहीं तिनघटादिकपदोंविषे योग्यताहै इति ॥ अब सन्निधिकावर्णनकरेहैं ॥ तहां (पदानामविलंबोच्चारणं सन्निधिः) अर्थयह ॥ पदोंका जोविलंबतैंरहितउच्चारणहै ताकानाम सन्निधिहै ॥ जैसे । घटमानय । इसवाक्यविषे घटं इसपदतैंउत्तर विलंबतैंरहित जो आनय इसपदकाउच्चारणहै ताकानाम सन्निधिहै इति ॥ इसप्रकारके आकांक्षा योग्यता सन्निधि इनतीनोंवालेपदोंकाजोसमुदायहै ताकानाम वाक्यहै ॥ तहां । पदसमुदायः वाक्यं । इतनामात्रहीं जो तावाक्यकालक्षणकरते ॥ तौं प्रहरादिककालकाविलंबकरिकै उच्चारणकन्येहूँ घटादिकपदोंकेसमुदायविषे तावाक्यकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहो

परि०

२

॥ ८६ ॥



ती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे सन्निधिवालेपदोंकूं वाक्यकह्याहै ॥ तहां प्र  
हरप्रहरतैपीछैउच्चारणकचोहूए तिनघटादिकपदोंविषे साअविलंबतैउच्चारणरूपसन्निधि हैनहीं ॥ यातैं ता  
पदसमुदायविषे तावाक्यकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा । सन्निधिमत्पदसमुदायः वाक्यं । इ  
तनामात्रहीं जो तावाक्यकालक्षणकरते ॥ तौं ( अग्निनासिंचेत् ) अर्थयह ॥ अग्निकरिके वृक्षोंकासिंच  
नकरे ॥ इसप्रमाणभूतवाक्यविषेभी तावाक्यकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ जिसकारणतैं साउक्तसन्नि  
धि इनपदोंविषेभीहै ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे तिनपदोंका योग्यताविशे  
षण कथनकन्याहै ॥ तहां अग्निविषे सिंचनकीकारणता प्रत्यक्षप्रमाणकरिकेबाधितहै ॥ यातैं तेपद ता  
उक्तयोग्यतावालेनहींहैं ॥ यातैं अग्निनासिंचेत् इसपदसमुदायविषे तावाक्यकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवै  
नहीं ॥ किंवा । योग्यतासन्निधिमत्पदसमुदायः वाक्यं । इतनामात्रहीं जो तावाक्यकालक्षणकरते ॥  
तौं । गौरश्वःपुरुषोहस्ती । इसपदसमुदायविषे तावाक्यकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ जिसकारणतैं सा  
उक्त सन्निधि तथायोग्यता इनपदोंविषेभीहै ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तिनपदोंका आ  
कांक्षाविशेषण कथनकन्याहै ॥ तहां तेगौअश्वादिकपद परस्परआकांक्षावालेहैनहीं ॥ यातैं तापदसमू  
हविषे तावाक्यकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ इसप्रकारकेउक्तवाक्यकूं जो  
शाब्दीप्रमाकीकरणताहोवै ॥ तौं अव्युत्पन्नपुरुषकूंभी तावाक्यतैं शाब्दीप्रमाहोणीचाहिये ॥ तहां इस  
पदका यहअर्थहै याप्रकारकेज्ञानतैरहितपुरुषकानाम अव्युत्पन्नहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे सोवा  
क्य ताशाब्दीप्रमाका कारणहोवैहै ॥ तैसे तावाक्यनिष्ठपदोंकेसंगतिकाज्ञानभी ताशाब्दीप्रमाकाकार  
णहोवैहै ॥ ताअव्युत्पन्नपुरुषकूं सोसंगतिकाज्ञानहैनहीं ॥ यातैं तावाक्यकेश्रवणहूएभी ताअव्युत्पन्नपु



तत्त्वा०

॥ २१ ॥

परि०  
२

रूपकं सावाक्यार्थप्रमा होतीनहीं ॥ तहां शाब्दीप्रमा वाक्यार्थप्रमा शाब्दबोध यहतीनोंशब्द एकहीं  
अर्थकेवाचकहोवैहैं ॥ अब तासंगतिकास्वरूप वर्णनकरैहैं ॥ तहां ( पदपदार्थयोःस्मार्यस्मारकभावसंबं  
धः संगतिः ) अर्थयह ॥ पद पदार्थ इनदोनोंका जो स्मार्यस्मारकभावसंबंधहै ताकानाम संगतिहै ॥  
जैसे घटपदकूंश्रवणकरिकै इसपुरुषकूं घटरूपअर्थकीस्मृतिहोवैहैं ॥ तहां घटपदतों तास्मृतिकाजनकहो  
णेतैं स्मारक कहाजावैहैं ॥ और सोघटरूपअर्थ तास्मृतिकाविषयहोणेतैं स्मार्य कहाजावैहैं ॥ इसप्र  
कारकेस्मार्यस्मारकभावसंबंधकानाम संगतिहै ॥ इसीसंगतिकूं शास्त्रकार वृत्तिभीकहेहैं इति ॥ और  
सावृत्तिरूपसंगति शक्ति १ लक्षणा २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहैं ॥ यद्यपि अन्यशास्त्रोंविषे श  
क्ति १ गौणी २ लक्षणा ३ इसभेदकरिकै सावृत्ति तीनप्रकारकी कथनकरीहैं ॥ तथापि ईहां तागौणी  
वृत्तिका लक्षणाविषेअंतर्भावमानिकै सावृत्ति दोप्रकारकीकथनकरीहैं ॥ अब तादोप्रकारकीवृत्तिविषे प्र  
थम शक्तिवृत्तिकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां ( पदपदार्थयोर्वाच्यवाचकभावसंबंधः शक्तिः ) अर्थयह ॥ पद प  
दार्थ इनदोनोंका जोवाच्यवाचकभावसंबंधहै ताकानाम शक्तिहै ॥ जैसे घटपद तथाघटरूपअर्थ दोनों  
का वाच्यवाचकभावसंबंधहै ॥ तहां घटपदतों वाचकहै ॥ और घटरूपअर्थ वाच्यहै ॥ तहां पदजन्यज्ञा  
नकाजोविषयहोवैहैं सो वाच्य कहाजावैहैं ॥ और पदार्थकेस्मृतिकाजोजनकहोवैहैं सो वाचक कहा  
जावैहैं ॥ इसीशक्तिकूं शास्त्रविषे मुख्यावृत्ति इसनामकरिकैभी कथनकरैहैं इति ॥ और सामुख्यावृत्ति  
रूपशक्तिभी योग १ रूढि २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहैं ॥ तहां ( अवयवशक्तिः योगः ) अर्थय  
ह ॥ पदके प्रकृतिप्रत्ययरूपअवयवोंविषे जाअर्थकाबोधकशक्तिहै ताकानाम योगशक्तिहै ॥ जैसे पाचका  
दिकपदोंकी पाककर्तादिरूपअर्थविषे योगशक्तिहै ॥ तहां पचधातुतैंअनंतर अकप्रत्यय आइकै पाचक

॥ ८७ ॥



यहशब्द सिद्धहोवैहै ॥ तहां पचधातुकीतों पाकमेंशक्तिहै ॥ और अकप्रत्ययकी कर्त्तामेंशक्तिहै ॥ तिन  
 दोनोंअवयवोंकीशक्तितैं पाककर्त्तापुरुषकाबोधहोवैहै ॥ इसीयोगशक्तिवालेपाचकादिकपदोंकूं शास्त्रवि  
 षे यौगिकपद कहेहैं इति ॥ और ( समुदायशक्तिः रूढिः ) अर्थयह ॥ पदके प्रकृतिप्रत्ययरूपअवयव  
 समुदायविषे जाअर्थकाबोधक एकशक्तिहै ताकानाम रूढिशक्तिहै ॥ जैसे घटादिकपदोंकी घटादिरूप  
 अर्थविषे रूढिशक्तिहै ॥ इसीरूढिशक्तिवालेपदोंकूं शास्त्रविषे रूढपद कहेहैं इति ॥ इहां नैयायिक साश  
 क्ति योग १ रूढि २ योगरूढि ३ यौगिकरूढि ४ इसभेदकरिकै चारिप्रकारकीमानेहैं ॥ और ताशक्ति  
 कीचारिप्रकारताकरिकै तापदकूंभी योग १ रूढ २ योगरूढ ३ यौगिकरूढ ४ इसभेदकरिकै चारिप्रका  
 रका मानेहैं ॥ तहां पंकज आदिकपदोंकूं योगरूढ मानेहैं ॥ और उद्भिद आदिकपदोंकूं यौगिकरूढ मा  
 नेहैं ॥ यहनैयायिकोंकामत न्यायप्रकाशकेषष्ठेपरिच्छेदविषे शब्दप्रमाणकेनिरूपणविषे विस्तारतैंकथनक  
 न्याहै ॥ सोतहांसैंजानिलेणा इति ॥ अब ताउक्तशक्तिकेज्ञानकाप्रकार वर्णनकरेहैं ॥ ताशक्तिका इस  
 पुरुषकूं व्यवहारतैंज्ञानहोवैहै ॥ जैसे गुरुपितादिरूपउत्तमवृद्धपुरुषके घटमानय इसवचनकूंश्रवणकरिकै  
 शिष्यपुत्रादिरूप मध्यमवृद्धपुरुष ताघटकेलेआवणेवासतै प्रवृत्तहोवैहै ॥ और ताउत्तमवृद्धपुरुषकेसमीप  
 स्थित जोबालकहै ॥ सोबालक तामध्यमवृद्धपुरुषके गमनआगमनरूपप्रवृत्तिकूंदेखिकै तामध्यमवृद्धपुरु  
 षकेज्ञानका अनुमानकरेहै ॥ सोअनुमान यहहै ॥ ( इयंप्रवृत्तिः ज्ञानसाध्या प्रवृत्तित्वात् मदीयप्रवृत्तिव  
 त् ) अर्थयह ॥ इसमध्यमवृद्धपुरुषकी जायहप्रवृत्तिहै सा ज्ञानकरिकैजन्यहै ॥ प्रवृत्तिरूपहोणेतैं ॥ जा  
 जाप्रवृत्तिहोवैहै सा ज्ञानकरिकैजन्यहींहोवैहै ॥ जैसे हमारीप्रवृत्ति इष्टसाधनताज्ञानकरिकैजन्यहोवैहै इ  
 ति ॥ इसप्रकार सोबालक तामध्यमपुरुषकीप्रवृत्तिकेहेतुभूतज्ञानकाअनुमानकरिकै तिसतैंअनंतर तिस



तत्त्वा०

॥ २२ ॥

ज्ञानविषे ताउत्तमवृद्धपुरुषकेवाक्यजन्यताका अनुमानकरेहै ॥ सोअनुमान यहहै ॥ (इदंज्ञानं एतद्वाक्य  
जन्यं एतद्वाक्यान्वयव्यतिरेकानुविधायित्वात् दंडजन्यघटादिवत् ) अर्थयह ॥ इसमध्यमपुरुषकेप्रवृत्ति  
काहेतुभूतजोज्ञानहै ॥ सोज्ञान इसउत्तमवृद्धपुरुषके घटमानय इसवाक्यकरिकैजन्यहै ॥ इसवाक्यकेअ  
न्वयव्यतिरेककेअनुसारीहोणेतैं ॥ जोजोपदार्थ जिसपदार्थके अन्वयव्यतिरेककेअनुसारीहोवैहै ॥ सो  
सोपदार्थ तिसपदार्थकरिकैजन्यहीहोवैहै ॥ जैसे दंडकेविद्यमानहूए घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ औ  
र तादंडकेअभावहूए ताघटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ याप्रकारका जोदंडका अन्वयव्यतिरेकहै  
तिसकेअनुसारीही घटहोवैहै ॥ यातैं सोघट तादंडकरिकैजन्यहीहोवैहै ॥ तैसे इसउत्तमवृद्धपुरुषके घट  
मानय इसवाक्यके अन्वयव्यतिरेककेअनुसारीहोणेतैं सोमध्यमपुरुषकाज्ञान इसवाक्यकरिकैहीजन्यहै  
इति ॥ इसप्रकार सोबालक तामध्यमपुरुषकेज्ञानविषे घटमानय इसवाक्यजन्यताकाअनुमानकरिकै प  
श्चात् तामध्यमपुरुषकृतघटकेआनयनकूंदेखिकै ताघटपदकी तिसघटव्यक्तिविपेशक्तिकूं निश्चयकरेहै ॥  
अर्थात् घटमानय इसवाक्यविषेस्थित घटपदकी इसघटव्यक्तिविषेहीशक्तिहै याप्रकारका ताबालककूं श  
क्तिज्ञानहोवैहै ॥ इसप्रकार ताबालककूं प्रथम वृद्धव्यवहारतैंही घटादिकपदोंकेशक्तिकाज्ञानहोवैहै ॥ ति  
सतैंअनंतर व्याकरण १ उपमान २ कोश ३ आप्तवाक्य ४ वाक्यशेष ५ विवरण ६ सिद्धपदकीसमी  
पता ७ इनोतैंभी पदोंकेशक्तिकाज्ञानहोवैहै ॥ तिनव्याकरणादिकोंतैं जिसप्रकार पदोंकेशक्तिकाज्ञान  
होवैहै ॥ सोप्रकार न्यायप्रकाशकेषष्ठेपरिच्छेदविषे शब्दप्रमाणकेनिरूपणविषे हमनैं विस्तारतैंनिरूपणक  
न्याहै ॥ ग्रंथकेविस्तारभयतैं ईहां निरूपणकन्यानहीं ॥ जिसकूं जानणेकीइच्छाहोवै तिसनैं तहांसेजा  
निलेणा इति ॥ अब ताशक्तिकेविषयभूतअर्थका मतभेदसैं निरूपणकरेहैं ॥ तहां नैयायिकतों यहकहे

परि०  
२

॥ ८८ ॥



हैं ॥ इसपदतैं श्रोतापुरुषकूं इसअर्थकाबोधहोवो याप्रकारकी जाईश्वरकीइच्छाहै ताकानाम शक्तिहै ॥ और नवीननैयायिकतों उक्तप्रकारकी जीवकीइच्छाकूंभी शक्तिमानेहैं ॥ साघटादिकपदोंकीशक्ति घटादिरूपपदार्थविषेहींहोवैहै ॥ घटादिकपदार्थोंके संबंहरूपसंसर्गविषे साशक्तिहोतीनहीं ॥ जिसकारण तैं घटपदकेश्रवणतैं श्रोतापुरुषकूं ताघटरूपअर्थकाहीं स्मरणहोवैहै ॥ तासंसर्गकास्मरण होतानहीं ॥ और घटमानय इत्यादिकवाक्यविषेस्थितघटादिकपदोंकेअर्थोंकापरस्परसंसर्गरूपजो वाक्यार्थहै ॥ तावाक्यार्थकातों तिनघटादिकपदोंकेसमभिव्याहारतैंहीं बोधहोवैहै ॥ यातैं तासंसर्गविषे घटादिकपदोंकी शक्तिमानणी निष्फलहै इति ॥ और मीमांसकतों यहकहेहैं ॥ घटादिकपदोंकी केवल घटादिरूपअर्थ विषेहीं शक्तिनहींहोवैहै ॥ किंतु कार्यान्वितघटादिकोंविषेहीं घटादिकपदोंकीशक्तिहोवैहै ॥ ईहां पुरुषकेप्रयत्नरूपकृतिकरिकैसाध्यजाक्रियाहै ताकानाम कार्यहै ॥ ताकार्यकेसंबंधवालेकानाम कार्यान्वित है ॥ जैसे घटमानय इसवाक्यविषे घटकाआनयनरूपक्रिया तापुरुषकेप्रयत्नकरिकैसाध्यहोणेतैं कार्य है ॥ ताआनयनरूपकार्यकेसंबंधवाला घटहै ॥ यातैं सोघट कार्यान्वित कहाजावैहै ॥ तिसकार्यान्वितघटविषेहीं घटपदकीशक्तिहै ॥ इसप्रकार पटादिकपदोंकीभी ताकार्यान्वितपटादिकोंविषेहीं शक्तिजानणी ॥ जोकदाचित् घटादिकपदोंकी कार्यान्वितघटादिकोंविषेशक्तिनहींमानिये ॥ तों घटादिकपदार्थोंकेसंसर्गरूपवाक्यार्थकाबोध नहींहोवैगा ॥ तथा पूर्वउक्तरीतिसैं बालककूं प्रथम कार्यान्वितघटादिकोंविषेहीं घटादिकपदोंकेशक्तिकाज्ञानहोवैहै सोभीनहींहोवैगा ॥ जिसकारणतैं कृतिसाध्यत्वरूपकार्य ताकाज्ञानहीं पुरुषकेप्रवृत्तिकाहेतुहोवैहै ॥ केवल इष्टसाधनताज्ञान पुरुषकेप्रवृत्तिकाहेतु होतानहीं ॥ चंद्रमंडलादिकोंविषे इष्टसाधनताज्ञानकेद्वएभी इसपुरुषकीप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ यद्यपि विषभक्षण रूपपतन



तत्त्वा०

॥ २३ ॥

आदिकोंविषे ताकार्यताज्ञानकेहूएभी इसपुरुषकीप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ तथापि इष्टसाधनताज्ञानकेसमान कालीन जोकार्यताज्ञानहै सोईहीं इसपुरुषकेप्रवृत्तिहाहेतुहोवैहै ॥ तिनविषभक्षणादिकोंविषे इसपुरुषकूं इष्टसाधनताज्ञानहैनहीं ॥ यातें प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातें ताकृतिसाध्यत्वरूपकार्यताकेवाचक जे लिङ् लोट् तव्य इत्यादिकपदहैं ॥ तिनपदोंकरिकैघटितवाक्यहीं प्रमाणवाक्यहोवैहै ॥ जैसे घटमानय इत्यादिक लौकिकवाक्यहैं ॥ तथा स्वर्गकामोयजेत इत्यादिक वैदिकवाक्यहैं ॥ तिनलिङ्गादिकपदोंतैरहित वाक्य प्रमाणहोतेनहीं ॥ जैसे भूतलेघटः इत्यादिक लौकिकवाक्यहैं ॥ तथा तच्चमसि इत्यादिक वैदिकवाक्यहैं इति ॥ और वेदांतसिद्धांतकातों यहमतहै ॥ घटादिकपदोंकी केवल घटादिरूपअर्थविषे वा कार्यान्वितघटादिकोंविषे शक्तिनहींहै ॥ किंतु इतरान्वितघटादिकोंविषेहीं तिनघटादिकपदोंकीशक्ति है ॥ यद्यपि बालककूं प्रथम कार्यान्वितघटादिकोंविषेहीं घटादिकपदोंकेशक्तिकाज्ञानहोवैहै ॥ तथापि पश्चात् गौरवदोषतें ताकार्यअंशकापरित्यागकरिकै इतरान्वितघटादिकोंविषेहीं तिनघटादिकपदोंकेशक्ति काज्ञानहोवैहै ॥ सोइतरपदार्थ कार्यहोवै अथवा ताकार्यतेंभिन्नहोवै ॥ और जैसे घटमानय इसकार्यपर वाक्यतें शक्तिकेग्रहणकाप्रकार पूर्वदिखायाथा ॥ तैसे पुत्रस्तेजातः इत्यादिकसिद्धार्थपरवाक्यतेंभी सोशक्तिकाग्रहणहोवैहै ॥ जैसे कोईधनीपुरुषकूं पुत्रजन्याथा ॥ तिसपुत्रकेपदकरिकैअंकितवस्त्रकूंलेकेवार्त्ता हारपुरुष ताधनीपुरुषकेसमीपजाइकै तावस्त्रकूंताकेआगेराखिकै पुत्रस्तेजातः याप्रकारकावचन कहता भया ॥ ताकूंश्रवणकरिकै तिसधनीपुरुषकूं पुत्रकेजन्मकेज्ञानतें हर्षहोताभया ॥ ताहर्षतें ताकामुख विकासमानहोताभया ॥ तिसकूंदेखिकै पुत्रपदकीशक्तिज्ञानतेंरहित दूसराकोईपुरुष तामुखविकासनरूपहेतु करिकै ताधनीपुरुषकेहर्षकाअनुमानकरताभया ॥ तिसतेंअनंतर ताहर्षविषे ज्ञानजन्यत्वकाअनुमानकर

परि०  
२

॥ ८९ ॥



ताभया ॥ तिसतैं अनंतर ताज्ञानविषे अन्वयव्यतिरेककरिके पुत्रस्तेजातः इसवाक्यजन्यत्वका अनुमान  
करताभया ॥ तिसतैं अनंतर ताउत्पत्तिवालेबालकपिंडविषे तापुत्रपदकीशक्तिकानिश्चयकरताभया इति ॥  
यातैं जैसे घटमानय स्वर्गकामोयजेत इत्यादिककार्यपरवाक्य प्रमाणरूपहै ॥ तैसे भूतलेघटः तत्त्वमसि  
इत्यादिक सिद्धार्थपरवाक्यभी प्रमाणरूपहींहैं इति ॥ और सापूर्वउक्त घटादिकपदोंकीशक्ति घटत्वादि  
कजातिविषेहींहै ॥ घटादिकव्यक्तियोंविषे नहींहै ॥ जोकदाचित् साशक्ति घटादिकव्यक्तियोंविषे मा  
निये ॥ तौ तेघटादिकव्यक्तियां अनंतहैं ॥ यातैं तेशक्तियांभी अनंतमानणीयां होवैंग्यां ॥ तथा जिस  
घटव्यक्तिविषे घटपदकेशक्तिकाज्ञानभयाहै ॥ तिसव्यक्तितैंभिन्नघटकाभी ताघटपदतैं बोधहोवैहै सोभी  
नहींहोनाचाहिये ॥ जिसकारणतैं ताघटव्यक्तिविषे ताघटपदकेशक्तिकाज्ञानभयानहीं ॥ और साघट  
त्वजाति सर्वघटव्यक्तियोंविषे एकहै ॥ यातैं ताजातिविषेशक्तिमानणेमें सोशक्तिका अनंतपणा तथाव्य  
भिचारदोष प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं घटादिकपदोंकी घटत्वादिकजातिविषेहीं शक्तिमानणी उचितहै ॥  
॥ ॥ शंका ॥ ॥ घटादिकपदोंकी जोघटत्वादिकजातिविषेहींशक्ति मानोंगे ॥ तौ घटमानय इस  
वाक्यकूंश्रवणकरिके श्रोतापुरुषकूं ताघटपदतैं घटत्वजातिकाहीं बोधहोवैंगा ॥ घटव्यक्तिकाबोध होवै  
गानहीं ॥ और ताघटव्यक्तिकेबोधतैंविना ताघटव्यक्तिका आनयनभी संभवैंगानहीं ॥ ॥ समाधा  
न ॥ ॥ ताश्रोतापुरुषकूं ताघटपदतैं घटत्वजातिकाहींबोधहोवैहै ॥ परंतु ताघटव्यक्तितैंविना ताघट  
त्वजातिका स्वतंत्र आनयनसंभवतानहीं ॥ यातैं ताश्रोतापुरुषकूं आक्षेपतैं ताघटव्यक्तिकाबोधहोवै  
है ॥ अथवा ताघटपदकीलक्षणातैं ताघटव्यक्तिकाबोधहोवैहै ॥ तहां केईकग्रंथकार समानवित्तिवेद्यत्व  
कूंहीं आक्षेपकहेहैं ॥ और केईक अनुमानकूं आक्षेपकहेहैं ॥ और केईक अर्थापत्तिकूं आक्षेपकहेहैं ॥



तत्त्वा०

॥ २४ ॥

यहतीनोंपक्ष न्यायप्रकाशकेषष्ठेपरिच्छेदविषे स्पष्टकरिकैनिरूपणकन्येहैं ॥ ते तहांसे जानिलेणे इति ॥  
 अथवा घटत्वादिकजातिविशिष्टघटादिकव्यक्तिविषेहीं घटादिकपदोंकीशक्तिहै ॥ केवलजातिविषे वा  
 केवलव्यक्तिविषे साशक्तिनहींहै ॥ परंतु जातिविषेशक्तितों ज्ञातहूई शाब्दबोधका उपयोगीहोवैहै ॥  
 और व्यक्तिविषेशक्तितों स्वरूपतैहीं उपयोगीहोवैहै ॥ ज्ञातहूई उपयोगीहोतीनहीं ॥ इसप्रकारकीश  
 क्तिहूँहीं शास्त्रविषे कुबजशक्तिकहेहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व घटादिकपदोंकी इतरान्वितघटा  
 दिकोंविषे शक्तिकहीथी ॥ और अबी तिनघटादिकपदोंकी घटत्वजातिविषे वा घटत्वजातिविशिष्टघट  
 व्यक्तिविषे शक्तिसिद्धकरी ॥ यातें पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधप्राप्तहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ साशक्ति  
 आनुभाविका १ स्मारिका २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां पूर्व इतरान्वितघटादिकोंविषे  
 घटादिकपदोंकी आनुभाविकाशक्ति कहीथी ॥ और अबी घटत्वजातिविषे वा घटत्वजातिविशिष्टघट  
 व्यक्तिविषे घटपदकी स्मारिकाशक्ति कथनकरीहै ॥ यातें तापूर्वउत्तरग्रंथका विरोधहोवैनहीं ॥ इसप्रकार  
 मीमांसकोंकेमतविषेभी कार्यान्वितघटादिकोंविषे घटादिकपदोंकी आनुभाविका शक्तिहै ॥ और घट  
 त्वादिकजातिविषे स्मारिकाशक्तिहै इति ॥ तहां इतनैपर्यंत प्रथम शक्तिवृत्तिकानिरूपणकन्या ॥ अब  
 दूसरी लक्षणावृत्तिकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां ( शक्यसंबंधः लक्षणा ) अर्थयह ॥ पूर्वउक्तशक्तिवृत्तिका जो  
 विषयहोवैहै ताकानाम शक्यहै ॥ इसीशक्यकूं वाच्यभीकहेहैं ॥ ताशक्यपदार्थका जोलक्ष्यमाणपदार्थ  
 केसाथि संबंधहै ताकानाम लक्षणाहै ॥ जैसे किसीआप्तवक्तापुरुषनै मंडपस्थपुरुषकेभोजनकरावणेकेअ  
 भिप्रायकरिकै । मंडपंभोजय । याप्रकारकावचन किसीपुरुषकेप्रति कहा ॥ तावचनकूंश्रवणकरिकै सो  
 श्रोतापुरुष जडमंडपविषे भोजनकर्तृत्वकीअयोग्यताकूंजानिकै तामंडपपदकी मंडपस्थपुरुषविषे लक्षणा

परि०  
२

॥ १० ॥

तोहै ॥ तहां मंडपस्थपुरुषकाशक्यार्थ जोमंडपविषेहै ताका तापुरुषकेसाथि संयोगसंबंधहै ॥ इसीकाना



करेहै ॥ तहां मंडपपदकाशक्यअर्थ जोगृहविशेषहै ताका तापुरुषकेसाथि संयोगसंबंधहै ॥ इसीकाना  
म लक्षणाहै इति ॥ अब तालक्षणावृत्तिकाविभाग वर्णनकरेहैं ॥ तहां सालक्षणावृत्ति केवललक्षणा १  
लक्षितलक्षणा २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां ( शक्यसाक्षात्संबंधः केवललक्षणा ) अर्थय  
ह ॥ पदकेशक्यअर्थका जोलक्ष्यमाणअर्थकेसाथि साक्षात्संबंधहै ताकानाम केवललक्षणाहै ॥ साकेव  
ललक्षणा जहत्लक्षणा १ अजहत्लक्षणा २ जहत्अजहत्लक्षणा ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकीहोवै  
है ॥ तहां ( शक्यार्थपरित्यागेनतत्संबन्धार्थातरेवृत्तिः जहलक्षणा ) अर्थयह ॥ पदकेशक्यअर्थकापरित्या  
गकरिकै ताशक्यअर्थकेसंबंधवालेअन्यपदार्थविषे जा तापदकी लक्षणावृत्तिहै ताकानाम जहत्लक्षणा  
है ॥ जैसे इसश्रोतापुरुषकूं गंगाकेतीरविषे घोषकाबोधहोवै इसप्रकारकेअभिप्रायकरिकै आप्तवक्तापुरु  
षनै उच्चारणकन्याजो । गंगायांघोषःप्रतिवसति । याप्रकारकावाक्यहै ॥ तावाक्यकूंश्रवणकरिकै सोश्रो  
तापुरुष तागंगापदकेशक्यअर्थरूपजलप्रवाहविषे ताघोषकीआधारताकेअनुपपत्तिकूंदेखताहूआ तागं  
गापदकी तीरविषेलक्षणा करेहै ॥ तहां गंगापदकाशक्यअर्थ जोजलकाप्रवाहहै ॥ ताकापरित्यागक  
रिकै ताशक्यअर्थकेसंयोगसंबंधवाला जोतीररूपअर्थहै ॥ तातीरविषे जागंगापदकीलक्षणावृत्तिहै इसी  
कूं जहत्लक्षणा कहेहैं इति ॥ अब अजहत्लक्षणाका वर्णनकरेहैं ॥ तहां ( शक्यार्थापरित्यागेनतत्संब  
न्धार्थातरेवृत्तिः अजहलक्षणा ) अर्थयह ॥ पदकेशक्यअर्थका नपरित्यागकरिकै ताशक्यअर्थकेसंबंधवा  
ले अन्यपदार्थविषे जा तापदकी लक्षणावृत्तिहै ताकानाम अजहत्लक्षणाहै ॥ जैसे मंचस्थपुरुषकेबोधन  
केअभिप्रायकरिकै आप्तवक्तापुरुषनै उच्चारणकन्याजो । मंचाःक्रोशंति । अर्थयह मंच शब्दकरेहैं याप्रका  
रकावचनहै ॥ तावचनकूंश्रवणकरिकै सोश्रोतापुरुष जडमंचोंविषे शब्दकर्तृत्वकेअनुपपत्तिकूंदेखताहूआ



तत्त्वा०

॥ २५ ॥

तामंचपदकी मंचस्थपुरुषोंविषे लक्षणाकरेहै ॥ तहां मंचपदकेशक्यअर्थरूपमंचका नपरित्यागकरिकै जा  
तामंचपदकी मंचस्थपुरुषविषे लक्षणावृत्तिहै इसीकूं अजहत्लक्षणा कहेहैं इति ॥ अब जहत्अजहत्ल  
क्षणाका वर्णनकरेहैं ॥ तहां ( शक्यैकदेशपरित्यागेनैकदेशेवृत्तिः जहदजहलक्षणा ) अर्थयह ॥ पदकेश  
क्यअर्थके एकदेशकापरित्यागकरिकै एकदेशविषे जापदकीलक्षणावृत्तिहै ताकानाम जहत्अजहत्लक्ष  
णाहै ॥ इसीलक्षणाकूं भागत्यागलक्षणाभी कहेहैं ॥ जैसे देवदत्तपुरुषकेअभेदबोधनकेतात्पर्यकरिकै आ  
सवक्तापुरुषनैं उच्चारणकन्याजो । सोऽयंदेवदत्तः । यहवाक्यहै ॥ तावाक्यकूंश्रवणकरिकै सोश्रोतापुरुष  
सः अयं इनदोनोंपदोंकी देवदत्तपिंडमात्रविषे लक्षणाकरेहै ॥ तहां तत्तद्देशकालविशिष्टदेवदत्तपिंड सः इस  
पदका शक्यअर्थहै ॥ और एतत्तद्देशकालविशिष्टदेवदत्तपिंड अयं इसपदका शक्यअर्थहै ॥ तहां तिन  
दोनोंशक्यअर्थोंका अभेदसंभवतानहीं ॥ यातैं ता सःपदकेशक्यअर्थविषे जो तत्तद्देशकालविशिष्टत्वरूप  
एकदेशहै ताकापरित्यागकरिकै तादेवदत्तपिंडरूपएकदेशविषे जा सःपदकी लक्षणावृत्तिहै ॥ तथा अयं  
पदकेशक्यअर्थविषे जो एतत्तद्देशकालविशिष्टत्वरूपएकदेशहै ताकापरित्यागकरिकै तादेवदत्तपिंडरूपए  
कदेशविषे जा अयंपदकी लक्षणावृत्तिहै ॥ इसीकूं जहत्अजहत्लक्षणाकहेहैं ॥ अथवा जैसे जीवब्रह्म  
केअभेदबोधनकेतात्पर्यकरिकै ब्रह्मवेत्तागुरुनैं उच्चारणकन्याजो । तत्त्वमसि । यहमहावाक्यहै ॥ तिस  
कूंश्रवणकरिकै अधिकारीश्रोतापुरुष तत् त्वं इनदोनोंपदोंकी असंख्यचैतन्यविषे लक्षणाकरेहै ॥ तहां मा  
याउपहितचैतन्य तत्पदका शक्यअर्थहै ॥ और स्थूलसूक्ष्मादिशरीरउपहितचैतन्य त्वंपदका शक्यअ  
र्थहै ॥ तहां तिनदोनोंशक्यअर्थोंका अभेदसंभवतानहीं ॥ और तावाक्यविषे तत्त्वंपदोंकेसामानाधि  
करण्यकरिकै तत्त्वंपदोंकीपदार्थोंका अभेदहीं प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं तत्पदकेशक्यअर्थविषे तामायारूप

परि०  
२

॥ ११ ॥



एकदेशकापरित्यागकरिके ताचैतन्यरूपएकदेशविषे जा तत्त्वपदकी लक्षणावृत्तिहै ॥ तथा त्वंपदकेशक्य  
अर्थविषे स्थूलसूक्ष्मादिशरीररूपएकदेशकापरित्यागकरिके ताचैतन्यरूपएकदेशविषे जा त्वंपदकी लक्ष  
णावृत्तिहै ॥ इसीकूं सिद्धांतविषे जहत्अजहत्लक्षणा कहेहैं तथाभागत्यागलक्षणा कहेहैं ॥ तालक्ष्यअ  
र्थरूपअखंडचैतन्योंकाअभेद संभवैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तत् त्वं इनदोनोंपदोंकी जो एकअखं  
डचैतन्यविषेही लक्षणाहोवै ॥ तौं एकहीपदकरिके ताअखंडचैतन्यरूपब्रह्मकासाक्षात्कार संभवहोइसके  
है ॥ यातें दूसरापद व्यर्थहीहोवैगा ॥ तथा एकअर्थकेबोधकदोपदोंकेकहणेतें पुनरुक्तिदोषभी प्राप्तहो  
वैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ पदतौं आपणेअर्थका केवल स्मरणमात्रहीकरावैहै ॥ दूसरेपदतेंविना  
सोएकपद शाब्दबोधकाहेतुहोतानहीं ॥ यातें प्रथमतौं तत् त्वं इनदोनोंपदोंतें भागत्यागलक्षणाकरिके  
तानिर्विकल्पकअखंडचैतन्यका स्मरणमात्रहोवैहै ॥ तिसतेंअनंतर तापदसमुदायरूप तत्त्वमसिवाक्यतें  
ब्रह्मात्मैक्यविषयक अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका शाब्दअपरोक्षअनुभव होवैहै ॥ सोअपरोक्षअनुभव एक  
पदतेंसंभवतानहीं ॥ यातें सोदूसरापद व्यर्थनहींहै ॥ किंतु तेदोनोंपद सार्थकहैं ॥ और पूर्वउक्तप्र  
कारतें तत् त्वं इनदोनोंपदोंकेवाच्यअर्थका भेदहीहै ॥ यातें पुनरुक्तिदोषकीभीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥  
तहां जहत्लक्षणाविषे सर्ववाच्यार्थका परित्यागहोवैहै ॥ और तत्त्वंपदके सर्ववाच्यार्थका परित्यागहो  
तानहीं ॥ किंतु एकदेशका परित्यागहोवैहै ॥ यातें तातत्त्वंपदविषे जहत्लक्षणाभी संभवतीनहीं ॥  
और अजहत्लक्षणाविषे वाच्यार्थतेंअधिकअर्थकाभी ग्रहणहोवैहै ॥ और तत्त्वंपदकेवाच्यार्थतें अधिक  
किसीअर्थकाग्रहण होतानहीं ॥ यातें तातत्त्वंपदविषे अजहत्लक्षणाभी संभवतीनहीं ॥ किंतु पूर्वउक्त  
रीतिसें जहत्अजहत्लक्षणाही संभवैहै ॥ इसीकारणतें आचार्योंनैं ( तत्त्वमस्यादिवाक्येषुलक्षणाभाग



तत्त्वा०

॥ २६ ॥

लक्षणा ) इसवचनकरिकै तत्त्वमसिआदिकवाक्योंविषे भागत्यागलक्षणाहीं कथनकरीहै इति ॥ ईहा केईकग्रंथकार तत्त्वमसिआदिकवाक्योंविषे भागत्यागलक्षणातैंविनाहीं अखंडचैतन्यकाबोधमानैहैं ॥ तिनोंका यहअभिप्रायहै ॥ जैसे । अनित्योघटः । इसवाक्यविषे घटत्वविशिष्टघटव्यक्ति घटपदकावाच्य अर्थहै ॥ तावाच्यअर्थका एकदेशरूप जाघटत्वजातिहै ॥ ताघटत्वजातिका अनित्यत्वकेसाथिअन्वय संभवतानहीं ॥ किंतु ताघटव्यक्तिकाहीं ताअनित्यत्वकेसाथिअन्वय संभवैहै ॥ तहां घटपदकी घटव्यक्ति विषे भागत्यागलक्षणातैंविनाहीं योग्यताकेबलतैं ताघटपदकीशक्तिवृत्तिकरिकैउपस्थितघटव्यक्तिकाहीं ताअनित्यत्वकेसाथि अन्वयहोवैहै ॥ तैसे तत्त्वंपदकेवाच्यअर्थका एकदेशरूप जे परोक्षत्वअपरोक्षत्व सर्वज्ञत्वअल्पज्ञत्व असंसारित्वसंसारित्व इत्यादिकधर्महैं ॥ तिनोंका परस्परअभेद संभवतानहीं ॥ किंतु चैतन्यरूपविशेष्यअंशकाहीं अभेदसंभवैहै ॥ यातैं तातत्त्वंपदविषे भागत्यागलक्षणातैंविनाहीं योग्यताकेबल तैं तातत्त्वंपदकीशक्तिवृत्तिकरिकैउपस्थितअखंडचैतन्यकाहीं अभेदान्वयबोधहोवैहै ॥ यातैं तत्त्वमसि आदिकवाक्योंविषे भागत्यागलक्षणामानणी व्यर्थहै इति ॥ सोयहमत सर्वआचार्योंकीउक्तितैंविरुद्धहो गेतैं असंगतहै इति ॥ तहां इतनैपर्यंत केवललक्षणाकानिरूपणकन्या ॥ अब दूसरीलक्षितलक्षणाका निरूपणकरैहैं ॥ तहां ( शक्यपरंपरासंबंधः लक्षितलक्षणा ) अर्थयह ॥ पदकेशक्यअर्थका जोलक्ष्यमाणअर्थकेसाथि परंपरासंबंधहै ताकानाम लक्षितलक्षणाहै ॥ जैसे मधुकर शब्दकरैहै इसअर्थकेबोधनकरेवास्तैं आप्तवक्तापुरुषनै उच्चारणकन्याजो । द्विरेफोरौति । यहवाक्यहै ॥ तिसवाक्यकूंश्रवणकरिकै श्रोतापुरुष ताद्विरेफपदकेशक्यअर्थरूपदोरकारोंविषे शब्दकर्तृत्वकेअनुपपत्तिकूंदेखताहूआ ताद्विरेफपद की मधुकरव्यक्तिविषे लक्षणाकरैहै ॥ सालक्षणा लक्षितलक्षणा कहीजावैहै ॥ तहां द्विरेफपदकाशक्य

परि०  
२

॥ ९२ ॥



अर्थ दोरकारहैं ॥ तिनदोरकारोंका तामधुकरव्यक्तिकेसाथि कोई साक्षात्संबंधतों संभवतानहीं ॥ किंतु तिनदोरकारोंकातों भ्रमरपदकेसाथि संबंधहै ॥ और ताभ्रमरपदका तामधुकरव्यक्तिकेसाथि संबंधहै ॥ इसप्रकार तिनदोरकारोंका स्वघटितपदवाच्यत्वरूप परंपरासंबंध तामधुकरव्यक्तिकेसाथिहै ॥ ईहां स्व शब्दकरिकै ताद्विरपदकेशक्यअर्थरूप दोरकारोंका ग्रहणकरणा ॥ तिनदोरकारोंकरिकैघटित भ्रमरपदहै ॥ ताभ्रमरपदकावाच्यत्व तामधुकरव्यक्तिविषेहै ॥ इसीशक्यअर्थकेपरंपरासंबंधकूं लक्षितलक्षणा कहैं इति ॥ ईहां केईकशास्त्रकार ताशक्तिलक्षणातैंभिन्न तीसरीगौणीवृत्तिभी मानेहैं ॥ जैसे । सिंहोदेवदत्तः । अर्थयह यहदेवदत्तनामापुरुष सिंहहै ॥ इसवाक्यविषे सिंहपदकी देवदत्तनामापुरुषविषे गौणीवृत्तिहै इति ॥ परंतु यहगौणीवृत्ति लक्षणावृत्तितैंभिन्न सिद्धहोतीनहीं ॥ किंतु उक्तलक्षितलक्षणाकेहीं अंतर्भूतहै ॥ तहां सिंहपदका सिंहपशु शक्यअर्थहै ॥ ताशक्यअर्थका क्रूरताशूरताकेसाथिसंबंधहै ॥ और ताक्रूरताशूरताका तादेवदत्तनामापुरुषकेसाथि संबंधहै ॥ इसप्रकार तासिंहपदकेशक्यअर्थका तादेवदत्तपुरुषकेसाथि स्ववृत्तिक्रूरतादिमत्त्वरूप परंपरासंबंधहै ॥ यातैं सागौणीवृत्ति लक्षितलक्षणाकेअंतर्भूतहीं है इति ॥ इसप्रकार जिसपुरुषकूं पदोंके शक्तिवृत्तिका तथालक्षणावृत्तिका ज्ञानहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं हीं ताउक्तवाक्यतैं शाब्दीप्रमा होवैहै ॥ तावृत्तिज्ञानतैंरहित अव्युत्पन्नपुरुषकूं तावाक्यतैंशाब्दीप्रमा होतीनहीं ॥ किंवा जैसे शक्तिलक्षणारूपवृत्तिकाज्ञान ताशाब्दीप्रमाकीउत्पत्तिविषे कारणहोवैहै ॥ तैसे आकांक्षा १ योग्यता २ आसत्ति ३ तात्पर्य ४ इनचारोंकाज्ञानभी ताशाब्दीप्रमाकीउत्पत्तिविषे कारणहोवैहै ॥ तहां आकांक्षा योग्यता इनदोनोंकास्वरूपतों पूर्वनिरूपणकरिआयेहैं ॥ अब आसत्तिकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां ( शक्तिलक्षणाऽन्यतरसंबंधेनाव्यवधानेनपदजन्यपदार्थोपस्थितिः आसत्तिः ) अर्थय



तत्त्वा०

॥ २७ ॥

परि०

२

ह ॥ पदका आपणेअर्थविषे जोशक्तिरूपसंबंधहै वा लक्षणारूपसंबंधहै ॥ तासंबंधकरिकै जोव्यवधान तैरहित पदजन्यपदार्थकीस्मृतिहै ताकानाम आसत्तिहै ॥ जैसे । घटमानय । इसवाक्यकूंश्रवणकरिकै श्रोतापुरुषकूं घटपदतैं शक्तिरूपसंबंधकरिकै घटरूपअर्थकी स्मृतिहोवैहै ॥ और आनय इसपदतैं शक्ति रूपसंबंधकरिकै आनयनरूपक्रियाकी स्मृतिहोवैहै ॥ तथा । गंगायांघोषः । इसवाक्यकूंश्रवणकरिकै श्रो तापुरुषकूं गंगापदतैं लक्षणारूपसंबंधकरिकै तीररूपअर्थकी स्मृतिहोवैहै ॥ और घोषपदतैं शक्तिरूपसं बंधकरिकै घोषरूपअर्थकी स्मृतिहोवैहै ॥ इसीकानाम आसत्तिहै इति ॥ अब तात्पर्यकानिरूपणकरे हैं ॥ तहां सोतात्पर्य वक्तृतात्पर्य १ शब्दतात्पर्य २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां ( पुरुषा भिप्रायः वक्तृतात्पर्य ) अर्थयह ॥ इसहमारेवचनतैं श्रोतापुरुषकूं इसअर्थकाबोधहोवो याप्रकारकी जा तावक्तापुरुषकी इच्छाविशेषहै ताकानाम वक्तृतात्पर्यहै ॥ तावक्तृतात्पर्यकाज्ञान शाब्दबोधकेप्रति का रणहोतानहीं ॥ काहेतैं जिसपदार्थकेविद्यमानहूए जोकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ और जिसपदार्थकेनहींवि द्यमानहूए जोकार्य नहींउत्पन्नहोवैहै ॥ सोपदार्थहीं तिसकार्यकेप्रति कारणहोवैहै ॥ जैसे कुलाल दंड चक्र आदिक घटकेप्रति कारणहोवैहैं ॥ और जिसपदार्थकेनहींविद्यमानहूएभी जोकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ सोपदार्थ तिसकार्यकेप्रति कारणहोतानहीं ॥ किंतु सोपदार्थ तिसकार्यकेप्रति अन्यथासिद्धहींहोवैहै ॥ जैसे रासभादिक ताघटकेप्रति अन्यथासिद्धहैं ॥ तैसे तावक्तृतात्पर्यज्ञानकेअभावहूएभी सोशाब्दबोध देखणेविषेआवैहै ॥ जैसे इसहमारेवाक्यतैं श्रोतापुरुषकूं इसअर्थकाबोधहोवो इसप्रकारकीइच्छारूप ता त्पर्य शुकपक्षीआदिकअव्युत्पन्नपुरुषोंका हैनहीं ॥ तौंभी व्युत्पन्नश्रोतापुरुषकूं ताशुकपक्षीआदिकोंके वाक्यतैं सोशाब्दबोध देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं तावक्तृतात्पर्यज्ञानकूं शाब्दबोधकेप्रति कारणतासंभवे

॥ ९३ ॥



नहीं इति ॥ और ( तदर्थप्रतीतिजननयोग्यत्वं शब्दतात्पर्य ) अर्थयह ॥ तिसतिसशब्दविषे जो तिस तिसवाक्यार्थबोधकेउत्पन्नकरणकीयोग्यताहै ताकानाम शब्दतात्पर्यहै ॥ इसशब्दतात्पर्यकाज्ञान शाब्द बोधकेप्रति नियमतैंकारणहोवैहै ॥ तहां लौकिकशब्दोंकातात्पर्यतों प्रकरणादिकोंकरिकै निश्चयहोवै है ॥ जैसे । सैंधवमानय । इसवाक्यविषेस्थित जोसैंधवपदहै ॥ सो लवण अश्व दोनोंकावाचकहोवैहै ॥ तहां भोजनकालविषे तावाक्यकूंश्रवणकरिकै श्रोतापुरुषकूं ताभोजनप्रकरणकेवशतैं तासैंधवपदका ल वणविषेहीं तात्पर्य निश्चयहोवैहै ॥ और गमनकालविषे तावाक्यकूंश्रवणकरिकै ताश्रोतापुरुषकूं ताग मनप्रकरणकेवशतैं तासैंधवपदका अश्वविषेहीं तात्पर्य निश्चयहोवैहै ॥ जोकदाचित् तिसतात्पर्यज्ञानकूं शाब्दबोधकाकारण नहींमानिये ॥ तों एक्हींसैंधवपदतैं कबीलवणकाबोध कबीअश्वकाबोध नहींहो वेंगा ॥ यातैं तिसतात्पर्यकेज्ञानकूं शाब्दबोधकेप्रति अवश्यकारणता मानीचाहिये इति ॥ और वैदि कशब्दोंकातात्पर्यतों षट्प्रकारकेलिंगोंकरिकैनिश्चयहोवैहै ॥ तेषट्लिंग शास्त्रविषे यहकहेहैं ॥ तहांश्लो क ॥ ( उपक्रमोपसंहारावभ्यासोऽपूर्वताफलं अर्थवादोपपत्तीचलिंगंतात्पर्यनिर्णये ) अर्थयह ॥ उपक्रम उपसंहार १ अभ्यास २ अपूर्वता ३ फल ४ अर्थवाद ५ उपपत्ति ६ यहषट्लिंग वैदिकशब्दोंकेतात्पर्यकानिर्णय करावैहैं इति ॥ अब यथाक्रमतैं इनषट्लिंगोंके लक्षण तथाउदाहरण कहेहैं ॥ तहां ( प्रकर णप्रतिपाद्यस्याद्वितीयवस्तुनआद्यंतयोःप्रतिपादनं उपक्रमोपसंहारौ ) अर्थयह ॥ प्रकरणकरिकैप्रतिपा दित जोब्रह्मरूपअद्वितीयवस्तुहै ॥ ताअद्वितीयवस्तुका जो ताप्रकरणके आदिविषे तथाअंतविषे प्र तिपादनहै ताकानाम उपक्रमउपसंहारहै ॥ तहां आदिविषेप्रतिपादनकानाम उपक्रमहै ॥ और अंत विषेप्रतिपादनकानाम उपसंहारहै ॥ जैसे सामवेदकीछांदोग्यउपनिषदके षष्ठेअध्यायकेआदिविषे उदा



तत्त्वा०

॥ २८ ॥

परि०

२

लकमुनिनें श्वेतकेतुपुत्रकेप्रति यहवचनकह्याहै ॥ ( सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयं ) अर्थयह ॥ हेप्रियदर्शन श्वेतकेतु यहदृश्यमानसर्वजगत् आपणीउत्पत्तितैत्पूर्व सत्ब्रह्मरूपहीं होताभया ॥ सोसत्त्वस्तु एकअद्वितीयरूपहींहै ॥ अर्थात् सजातीयविजातीयस्वगतभेदतैरहितहै ॥ इसप्रकार ताषष्ठेअध्यायकेआदिविषे जोअद्वितीयवस्तुका प्रतिपादनहै ताकानाम उपक्रमहै ॥ और तिसीषष्ठेअध्यायकेअंतविषे यहकह्याहै ॥ ( एतदात्म्यमिदंसर्व ) अर्थयह ॥ यहदृश्यमानसर्वजगत् अद्वितीयब्रह्मरूपहींहै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मतैभिन्ननहींहै ॥ इसप्रकार ताषष्ठेअध्यायकेअंतविषे जो ताअद्वितीयसत्ब्रह्मका प्रतिपादनहै ताकानाम उपसंहारहै ॥ यहउपक्रमउपसंहारदोनोंमिलिकै एकलिंग कह्याजावैहै इति ॥ १ ॥ और ( प्रकरणप्रतिपाद्यस्यपुनःपुनःप्रतिपादनं अभ्यासः ) अर्थयह ॥ प्रकरणकेआदिअंतविषेप्रतिपादनकन्याजोवस्तुहै ॥ तावस्तुका ताप्रकरणकेमध्यविषे जो पुनःपुनःप्रतिपादनहै ताकानाम अभ्यासहै ॥ जैसे तिसषष्ठेअध्यायविषेहीं ( तत्त्वमसि श्वेतकेतो ) इसवाक्यकूं नववार पठनकरिकै ताअद्वितीयसत्त्वस्तुका हीं पुनःपुनःप्रतिपादनकन्याहै इति ॥ २ ॥ और ( प्रकरणप्रतिपाद्यस्यमानांतराविषयता अपूर्वता ) अर्थयह ॥ प्रकरणकरिकैप्रतिपादितजोवस्तुहै ॥ तावस्तुकूं जोश्रुतिप्रमाणतैभिन्नप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाअविषयपणाहै ताकानाम अपूर्वताहै ॥ साअद्वितीयवस्तुकीअपूर्वता ताषष्ठेअध्यायविषे ( यंवैसोम्यैतमणिमानंननिभालयसे ) इत्यादिकवचनोंकरिकै प्रतिपादनकरीहै इति ॥ ३ ॥ और ( प्रकरणप्रतिपाद्यस्यश्रूयमाणंतज्ज्ञानात्तत्प्राप्तिप्रयोजनं फलं ) अर्थयह ॥ प्रकरणकरिकैप्रतिपादितजोवस्तुहै ॥ तावस्तुके ज्ञानतै श्रुतिनैकथनकन्याजो तिसवस्तुकीप्राप्तिरूपप्रयोजनहै ताकानाम फलहै ॥ जैसे तिसीषष्ठेअध्यायविषे यहकह्याहै ॥ ( आचार्यवान्पुरुषोवेद तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमोक्ष्येऽथसंपत्स्ये ) अर्थयह ॥ जि

॥ २४ ॥



सअधिकारीपुरुषनै ब्रह्मवेत्तापुरुषकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणकन्याहै ॥ सोअधिकारीपुरुषहीं तत्त्वमसि  
आदिकवाक्योंकरिकै प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकूं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारतैं साक्षात्कारकरेहै ॥ और तिसब्रह्म  
वेत्तापुरुषका तितनैकालपर्यंतहीं अवस्थान होवैहै ॥ जितनैकालपर्यंत प्रारब्धकर्मकेफलभोगकरिकै दे  
हादिकबंधनतैं नहींमुक्तहोवैहै ॥ और भोगकरिकै ताप्रारब्धकर्मकेनिवृत्तहूए सोब्रह्मवेत्तापुरुष ब्रह्मरू  
पहींहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिनै अद्वितीयब्रह्मकेज्ञानतैं अद्वितीयब्रह्मकीप्राप्तिरूपप्रयोजन कथनकन्याहै ॥  
इसीकानाम फलहै इति ॥ ४ ॥ और ( प्रकरणप्रतिपाद्यस्यप्रशंसनं अर्थवादः ) अर्थयह ॥ प्रकरणकरि  
कैप्रतिपादितजोवस्तुहै ॥ तावस्तुका जोस्तुतिरूपप्रशंसनहै ताकानाम अर्थवादहै ॥ जैसे तिसीषष्ठेअ  
ध्यायविषे यहकह्याहै ॥ ( येनाश्रुतंश्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातंविज्ञातं ) अर्थयह ॥ हेश्चेतकेतु जिसएक  
वस्तुकेश्रवणकरिकै अश्रुतवस्तुभी श्रुतहोवैहै ॥ और जिसएकवस्तुकेमननकरिकै अमतवस्तुभी मननका  
विषयहोवैहै ॥ और जिसएकवस्तुकेविज्ञानकरिकै अविज्ञातवस्तुभी विज्ञातहोवैहै ॥ सोएकवस्तु तुमनै  
आपणेगुरुवोंसैं पूछाहै वानहीं इति ॥ इसवचनकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मवस्तुका स्तुतिरूपप्रशंसनकन्याहै ॥  
इसीकानाम अर्थवादहै इति ॥ ५ ॥ और ( प्रकरणप्रतिपाद्यस्यदृष्टांतैःप्रतिपादनं उपपत्तिः ) अर्थयह ॥  
प्रकरणकरिकैप्रतिपादितजोवस्तुहै ॥ तावस्तुका अनेकदृष्टांतोंकरिकै जोप्रतिपादनहै ताकानाम उप  
पत्तिहै ॥ जैसे तिसीषष्ठेअध्यायविषे मृत्तिकासुवर्णादिकदृष्टांतोंकरिकै कारणतैंभिन्नकार्यकीसत्ताकानि  
षेधकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मवस्तुका प्रतिपादनकन्याहै ॥ इसीकानाम उपपत्तिहै इति ॥ ६ ॥ यहउदा  
लकश्चेतकेतुकासंवाद आत्मपुराणकेद्वादशेअध्यायविषे हमनै विस्तारतैंनिरूपणकन्याहै ॥ सो तहांसैंजा  
निलेणा ॥ और जैसे छांदोग्यउपनिषदकेषष्ठेअध्यायका उक्तषट्‌लिंगोंकरिकै अद्वितीयब्रह्मविषे तात्पर्य



तत्त्वा०

॥ २९ ॥

निश्चयहोवैहै ॥ तैसे सर्वउपनिषदोंका ताअद्वितीयब्रह्मविषेहीं तात्पर्यहै ॥ इसप्रकार उक्तषट्लिङ्गोंकरि कै सर्ववेदांतवाक्योंका जोअद्वितीयब्रह्मविषे तात्पर्यनिश्चयकरणाहै ताकानाम श्रवणहै ॥ अब प्रसंगतैं म ननका तथानिदिध्यासनका स्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ तहां ( श्रुतस्यार्थस्योपपत्तिभिश्चितनं मननं ) अर्थयह ॥ ताश्रवणकन्येहूँअद्वितीयब्रह्मरूपअर्थका जो श्रुतिअनुकूल अनुमानादिरूपयुक्तियोंकरिकै चिंतनहै ता कानाम मननहै इति ॥ और ( विजातीयप्रत्ययतिरस्कारेणसजातीयप्रत्ययप्रवाहीकरणं निदिध्यासनं ) अर्थयह ॥ विजातीयवृत्तियोंका तिरस्कारकरिकै जो सजातीयवृत्तियोंका प्रवाहकरणाहै ताकानाम नि दिध्यासनहै ॥ तहां देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे जाआत्मबुद्धिहै तथाद्वैतप्रपंचकाजोदर्शनहै ताकाना म विजातीयवृत्तिहै ॥ और अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेवृत्तिकानाम सजातीयवृत्तिहै इति ॥ तहां श्रवण करिकैतों प्रमाणगतअसंभावना निवृत्तहोवैहै ॥ और मननकरिकै प्रमेयगतअसंभावना निवृत्तहोवैहै ॥ और निदिध्यासनकरिकै विपरीतभावना निवृत्तहोवैहै ॥ तहां देहादिकोंविषे जाआत्मबुद्धिहै ताका नाम विपरीतभावनाहै ॥ और प्रमाणगतअसंभावना तथाप्रमेयगतअसंभावना इनदोनोंका आगेतृती यपरिच्छेदविषे निरूपणकरेंगे ॥ इसप्रकार श्रवणमनननिदिध्यासनकरिकै असंभावनाविपरीतभावनाके निवृत्तहूँतैंअनंतर शोधनकन्याहैतत्त्वंपदार्थजिसनैं ऐसेअधिकारीपुरुषकूं तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यतैं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकाअपरोक्षज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ ताब्रह्मसाक्षात्कारतैं इसअधिकारीपुरुषकूं अज्ञा नकीनिवृत्तिपूर्वक परमानंदकीप्राप्तिरूपमोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार श्रवणादिकोंका ब्रह्मसाक्षात्का रद्वारा मोक्षविषेउपयोग होवैहै इति ॥ अब उक्तश्रवणादिकोंकेअधिकारीका वर्णनकरेहैं ॥ विवेकादि कचतुष्टयसाधनकरिकैसंपन्न जोसंन्यासीहै ॥ तिसकूंहीं यहश्रवणादिकतीनों ब्रह्मसाक्षात्कारके अंतरं

परि०  
२

॥ ९५ ॥



गसाधनहैं ॥ तहांश्रुति ॥ ( आत्मावाऽरेद्रष्टव्यः श्रोतव्यो मंतव्यो निदिध्यासितव्यः ) अर्थयह ॥ हेमै  
त्रेयी मुमुक्षुजननैं यहआत्मा साक्षात्कारकरणयोग्यहै ॥ अर्थात् मोक्षरूपइष्टकेप्राप्तिका यहआत्मसाक्षा  
त्कारहीं साधनहै ॥ और ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं श्रवणकरणा तथामन  
नकरणा तथानिदिध्यासनकरणा इति ॥ इसश्रुतिनैं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै श्रवण मनन निदि  
ध्यासन इनतीनसाधनोंका विधानकन्याहै ॥ ओर लौकिकवैदिककर्मीकरिकैविक्षिप्तचित्तविषे तेश्रवणा  
दिकसंभवतेनहीं ॥ तथा ( संन्यस्यश्रवणंकुर्यात् ) इत्यादिकवचनोंनैंभी संन्यासपूर्वकहीं श्रवणादिकोंकी  
कर्त्तव्यता कथनकरीहै ॥ यातैं विवेकादिकचतुष्टयसाधनसंपन्नसंन्यासीकुंहीं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति  
वासतै तेश्रवणादिक कर्त्तव्यहै इति ॥ अब तेविवेकादिकचतुष्टयसाधन वर्णनकरैहैं ॥ विवेक १ वैराग्य २  
शमादिषट्संपत् ३ मुमुक्षुता ४ यहचतुष्टयसाधन कहेजावैहैं ॥ तहां आत्मातों नित्यहै ॥ और आत्मातैं  
भिन्न ब्रह्मलोकपर्यंत सर्वअनात्मवस्तु अनित्यहैं ॥ याप्रकारकाजो श्रुतिस्मृतियुक्तियोंकरिकै विचारहै ता  
कानाम विवेकहै ॥ तहां ( आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः । अजोनित्यःशाश्वतोऽयंपुराणः । अविनाशितुत  
द्विद्वियेनसर्वमिदंततं विनाशमव्ययस्यास्यनकश्चित्कर्तुमर्हति ) इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंकरिकैतों आत्मा  
कानित्यपणा सिद्धहै ॥ और ( तद्यथेहकर्मचितोलोकःक्षीयतेएवमेवामुत्रपुण्यचितोलोकःक्षीयते । अंतवं  
तइमेदेहानित्यस्योक्ताःशरीरिणः ) इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंकरिकै तथा जोजोकार्यहोवैहै सोसोअनित्यहीं  
होवैहै जैसे घटादिकहैं इत्यादिकअनुमानरूपयुक्तियोंकरिकै अनात्मवस्तुवोंका अनित्यपणा सिद्धहै इति ॥  
इसप्रकारकेविवेककरिकै इसअधिकारीपुरुषकुं सर्वअनात्मवस्तुवोंविषे वैराग्य उत्पन्नहोवैहै ॥ तहां इसलो  
कविषे जितनेकी विषयसुखकेसाधन सकृच्चंदनवनितादिकहैं ॥ तथा स्वर्गादिकपरलोकविषे जितनेकी



तत्त्वा०

॥ ३० ॥

परि०  
२

विषयसुखकेसाधन अमृतपानअप्सरादिकहैं ॥ तिनसर्वसाधनोंसहित सर्वविषयसुखोंविषे अनित्यत्वादिक  
दोषबुद्धिकरिकैं जो श्वानवांतपायसकीन्याई त्यागकीइच्छाहै ताकानाम वैराग्यहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( परी  
क्ष्यलोकान्कर्मचितान्ब्राह्मणोनिर्वेदमायान्नास्त्यकृतःकृतेन ) अर्थयह ॥ कर्मउपासनाकरिकैंप्राप्तहोणेयोग्य  
जे ब्रह्मलोकादिकलोकहैं ॥ तिनोंका अनित्यपणानिश्रयकरिकैं तथाकर्मोंकरिकैं मोक्षकीप्राप्तिनहींहोती  
याप्रकारकानिश्रयकरिकैं ब्रह्मजिज्ञासुपुरुष तिनकर्मोंतैं तथाकर्मसाध्यलोकोंतैं वैराग्यकूंप्राप्तहोवै इति ॥  
इसप्रकारकेवैराग्यकीउत्पत्तितैंअनंतर इसअधिकारीपुरुषकूं शम १ दम २ उपरति ३ तितिक्षा ४ श्र  
द्धा ५ समाधान ६ यहषट्संपत् प्राप्तहोवैहै ॥ इसषट्संपत्कास्वरूप आगेतृतीयपरिच्छेदविषे वर्णनकरें  
गे ॥ तहांश्रुति ॥ ( शांतोदांतउपरतस्तिक्षुःसमाहितोभूत्वात्मन्येवात्मानंपश्यति ) अर्थयह ॥ ताशमा  
दिकषट्संपत्युक्तहोइकैं यहअधिकारीपुरुष आपणेमनविषे अहंब्रह्मास्मि याप्रकार आत्माकूंसाक्षात्का  
रकरै इति ॥ तिसतैंअनंतर इसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीउत्कटइच्छारूपमुमुक्षुता प्राप्तहोवैहै ॥  
ईहां विवेक वैराग्य षट्संपत् मुमुक्षुता यहचतुष्टयसाधन समुचितहूए अधिकारीकाविशेषणहोवैहैं ॥ इ  
सप्रकार आचार्य मानैहैं ॥ और अन्यकेईकग्रंथकारतों केवल मुमुक्षुताकूंहीं अधिकारीकाविशेषण मा  
नेहैं ॥ और विवेकादिकोंकूं तामुमुक्षुताकासाधनमानैहैं इति ॥ इसप्रकारकेविवेकादिकचतुष्टयसाधनों  
करिकैंसंपन्नपुरुषकूंहीं संन्यासकाअधिकारहोवैहै ॥ ऐसाचतुष्टयसाधनसंपन्नसंन्यासीहीं ब्रह्मसाक्षात्का  
रकीप्राप्तिवासतै ब्रह्मवेत्तागुरुकेशरणकूंप्राप्तहोइकैं वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकूंकरै ॥ तहांश्रुति ॥ ( त  
द्विज्ञानार्थसगुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिःश्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठं ) अर्थयह ॥ सोचतुष्टयसाधनसंपन्नअधिकारी  
पुरुष सर्वकर्मोंकासंन्यासकरिकैं मोक्षकेप्राप्तिकासाधनरूपब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै हस्तविषेकिंचि

॥ ९६ ॥



तभेटालेकै श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजावै ॥ तहां शिष्यकेसंशयकीनिवृत्तिकरणेविषेउपयोगी जोशा  
स्त्रकाज्ञानहै ॥ ताज्ञानवालेगुरुकूं श्रोत्रिय कहैहैं ॥ और करामलकवत् संशयविपरीतभावनातैरहित जो  
अखंडएकरसआनंदब्रह्मकासाक्षात्कारहै ॥ तासाक्षात्कारवालेगुरुकूं ब्रह्मनिष्ठ कहैहैं ॥ इनदोनोंविशेष  
णोंवालेगुरुकेउपदेशतैहीं शिष्यकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै इति ॥ अब तासंन्यासकास्वरूप निरूप  
णकरैहैं ॥ तहां ( विहितानांकर्मणांविधिनापरित्यागः संन्यासः ) अर्थयह ॥ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनै इस  
अधिकारीपुरुषकेप्रति कर्त्तव्यतारूपकरिकैविधानकन्ये जेअग्निहोत्रसंध्योपासनादिककर्महैं ॥ तिनसर्वक  
मोंका जोविधिपूर्वक परित्यागहै ताकानाम संन्यासहै ॥ सोकर्मसंन्यासकाविधि आत्मपुराणकेएकादशे  
अध्यायविषे अतिविस्तारतैनिरूपणकन्याहै ॥ तहां । कर्मणांत्यागः संन्यासः । इतनामात्रहीं जो तासं  
न्यासकालक्षणकरते ॥ तौं अविहितकर्मोंके वा निषिद्धकर्मोंके त्यागकरणेहारेपुरुषविषेभी संन्यासीपणा  
प्राप्तहोता ॥ ताकेनिवृत्तकरणेवासतै तिनकर्मोंका विहित यहविशेषण कथनकन्याहै ॥ और तालक्षणवि  
षे । विधिना । यहपद जोनहींकथनकरते ॥ तौं आलस्यादिकदोषतै विहितकर्मोंकेपरित्यागकरणेहारेपु  
रुषविषेभी सोसंन्यासीपणा प्राप्तहोता ॥ ताकेनिवृत्तकरणेवासतै विधिपूर्वककर्मोंकेत्यागकूं संन्यासक  
ह्याहै इति ॥ इसउक्तसंन्यासका वैराग्यहीं कारणहोवैहै ॥ अर्थात् वैराग्यवान्पुरुषकूंहीं सोसंन्यास क  
रणेयोग्यहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( यदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रव्रजेत् ) अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष जिसदिनवि  
षे वैराग्यकूंप्राप्तहोवै ॥ तिसीदिनविषे सर्वकर्मोंकेसंन्यासकूंकरै इति ॥ तहांस्मृति ॥ ( वैराग्यं परमेतस्य  
मोक्षस्यपरमोऽवधिः ) अर्थयह ॥ इससंन्यासका परवैराग्यहीं परमअवधिहै इति ॥ इसश्रुतिस्मृतिकरिकै  
सोवैराग्यहीं तासंन्यासकाहेतु सिद्धहोवैहै ॥ और सोसंन्यासभी तावैराग्यकीतारतम्यताकरिकै कुटीच



तत्त्वा०

॥ ३१ ॥

परि०

२

क १ बहूदक २ हंस ३ परमहंस ४ इसभेदकरिकै चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ अब तावैराग्यकोन्यूनअधिक ताकेनिरूपणकरणेवासतै तावैराग्यकाविभाग वर्णनकरेहैं ॥ तहां सोवैराग्य अपरवैराग्य १ परवैराग्य २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तिनदोनोंवैराग्योंविषे प्रथम अपरवैराग्यभी यतमान १ व्यतिरेक २ एकेंद्रिय ३ वशीकार ४ इसभेदकरिकै चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां इससंसारविषे यहवस्तु सारहै और यहवस्तु असारहै याप्रकारका जोसारअसारकाविवेकहै ताकानाम यतमानवैराग्यहै ॥ १ ॥ और चित्तविषेस्थित जेरागद्वेषादिकदोषहैं ॥ तिनदोषोंकेमध्यविषे इतनैदोषतों हमारे निवृत्तहूएहैं और इतनैदोष बाकीरहेहैं ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै तिनविद्यमानदोषोंकेनिवृत्तकरणेवासतै जोप्रयत्नहै ताकानाम व्यतिरेकवैराग्यहै ॥ २ ॥ और मनविषे विषयोंकीइच्छाकेविद्यमानहूएभी जोइंद्रियोंकेनिरोधकाप्रयत्नहै ताकानाम एकेंद्रियवैराग्यहै ॥ ३ ॥ और इसलोकके तथापरलोकके जेविषयहैं ॥ तिनोंकूं नाशवान्जानिकै जोतिनोंकेत्यागकीइच्छाहै ताकानाम वशीकारवैराग्यहै ॥ यहहीं वशीकारवैराग्यका स्वरूप पतंजलिभगवान्ने ( दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्यवशीकारसंज्ञावैराग्यं ) इससूत्रकरिकै कथन कन्याहै इति ॥ ४ ॥ और सोवशीकारवैराग्यभी मंद १ तीव्र २ तीव्रतर ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां पुत्र स्त्री धन इत्यादिकप्रियपदार्थोंकेवियोगहूए इससंसारकूंधिकारहै याप्रकारकीबुद्धिकरिकै जो तिनविषयोंकेत्यागकीइच्छाहै ताकानाम मंदवैराग्यहै ॥ १ ॥ और इसजन्मविषे हमारेकूं पुत्रस्त्रीधनादिकपदार्थ मतप्राप्तहोवैं याप्रकारकीस्थिरबुद्धिकरिकै जो तिनविषयोंकेत्यागकीइच्छाहै ताकानाम तीव्रवैराग्यहै ॥ २ ॥ और पुनरावृत्तिकरिकैयुक्त जेब्रह्मलोकपर्यंत लोकहैं ॥ तेसर्वलोक हमारेकूं मतप्राप्तहोवैं याप्रकारकीस्थिरबुद्धिकरिकै जो तिनसर्वविषयोंकेपरित्यागकीइच्छाहै ताकानाम

॥ १७ ॥



तीव्रतरवैराग्यहै ॥ ३ ॥ तहां मंदवैराग्यकेप्राप्तहूए इसपुरुषकूं कोईप्रकारकेसंन्यासका अधिकारहोतान  
हीं ॥ तहांस्मृति ॥ (यदामनसिवैराग्यंजायतेसर्ववस्तुषु तदैवसंन्यसेद्विद्वानन्यथापतितोभवेत्) अर्थय  
ह ॥ जिसकालविषे इसपुरुषकेमनविषे सर्ववस्तुविषयकवैराग्य उत्पन्नहोवै ॥ तिसकालविषेहीं यहविषे  
कीपुरुष सर्वकर्मोंकेसंन्यासकूंकरै ॥ तावैराग्यतैंविना संन्यासकूंकरताहूआ यहपुरुष पतितहोवैहै इति ॥  
और तीव्रवैराग्यकेप्राप्तहूए इसपुरुषकूं कुटीचक बहूदक इनदोसंन्यासोंविषे अधिकारहोवैहै ॥ तहां जि  
सतीव्रवैराग्यवान्पुरुषकाशरीर तीर्थयात्राकरणेविषेअशक्तहोवै ॥ तिसकूंतां कुटीचकसंन्यासविषेअधि  
कारहै ॥ और जिसकाशरीर तीर्थयात्राकरणेविषेशक्तहोवै ॥ तिसकूं बहूदकसंन्यासविषे अधिकारहै ॥  
और तीव्रतरवैराग्यकेप्राप्तहूए इसपुरुषकूं हंससंन्यासविषेअधिकारहोवैहै ॥ तहां कुटीचक बहूदक हंस  
इनतीनसंन्यासोंकास्वरूप तथातिनोंकेआचार मनुपाराशरस्मृतिआदिकधर्मशास्त्रोंविषेप्रसिद्धहैं ॥ तथा  
आत्मपुराणविषेभी कथनकरेहैं इति ॥ और पूर्वउक्तसर्ववैराग्योंतैंउत्कृष्टजोवैराग्यहै ताकानाम परवैरा  
ग्यहै ॥ इसपरवैराग्यकास्वरूप आगेवर्णनकरेंगे ॥ ऐसेपरवैराग्यकेप्राप्तहूए इसअधिकारीपुरुषकूं परम  
हंससंन्यासविषेअधिकार होवैहै ॥ सोपरमहंससंन्यासभी विविदिषासंन्यास १ विद्वत्संन्यास २ इसभे  
दकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां विवेकादिकचतुष्टयसाधनसंपन्नपुरुषनैं तत्त्वज्ञानकीप्राप्तिवासतै क  
न्याजोसंन्यासहै ताकानाम विविदिषासंन्यासहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एतमेवप्रब्राजिनोलोकमिच्छंतःप्रव्रजं  
ति) अर्थयह ॥ विरक्तपुरुषोंकूंप्राप्तहोणेयोग्य जोयहआत्मारूपलोकहै ॥ तिसकेप्राप्तिकीइच्छाकरतेहूए  
अधिकारीपुरुष संन्यासकूंकरेहैं ॥ ईहां यहतात्पर्यहै ॥ आत्मलोक १ अनात्मलोक २ इसभेदकरिकै  
लोक दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां (अथत्रयोवावलोकामनुष्यलोकः पितृलोकोदेवलोकः) इत्यादिकश्रु



तत्त्वा०

॥ ३२ ॥

परि०

२

तिनैं सो अनात्मलोक मनुष्यलोक १ पितृलोक २ देवलोक ३ इस भेद करिकैं तीन प्रकारका कथनक  
 न्याहै ॥ और ( अथ यो हवाऽस्मा लोकात्स्वलोकमदृष्ट्वा प्रैति स एतमविदितो न भुनक्ति । आत्मानमेवलोक  
 मुपासीत । किं प्रजया करिष्यामो येषां नोऽयमात्माऽयं लोकः ) इत्यादिक श्रुतियोंनैं आत्मलोक कथनक  
 न्याहै ॥ यातैं ता उक्त श्रुति विषे लोक शब्द करिकैं ता आत्मारूप लोक का ग्रहण करणा उचित है इति ॥ और  
 सो उक्त विविदिषा संन्यास भी दो प्रकारका होवै है ॥ एक तो जन्म की प्राप्ति करणे हारे कर्मों का त्याग रूप होवै  
 है ॥ और दूसरा प्रैष मंत्र के उच्चारण पूर्वक दंडधारणादिक आश्रम रूप होवै है ॥ तहां काम्य कर्म तथा फल  
 की इच्छा पूर्वक कन्ये हूए नित्य कर्म इस पुरुष कूं जन्म की प्राप्ति करे हैं ॥ तिन कर्मों का जो त्याग है सो प्रथम वि  
 विदिषा संन्यास कहा जावै है ॥ ताके विषे भी काम्य कर्म का तो स्वरूप तैं ही परित्याग विवक्षित है ॥ और नि  
 त्य कर्मों का स्वरूप तैं परित्याग विवक्षित नहीं है ॥ किंतु तिन नित्य कर्मों के फल की इच्छा मात्र का परित्याग वि  
 वक्षित है ॥ तहां ता प्रथम विविदिषा संन्यास विषे यह श्रुति प्रमाण है ॥ ( न कर्मणान प्रजयान धनेन त्यागेनै  
 केऽमृतत्वमानशुः ) अर्थ यह ॥ पूर्व अधिकारी पुरुष काम्य कर्मों करिकैं तथा फल की इच्छा पूर्वक कन्ये हूए नि  
 त्य कर्मों करिकैं मोक्ष के साधन रूप ब्रह्म साक्षात्कार कूं नहीं प्राप्त होते भये हैं ॥ तथा पुत्र पौत्रादिक प्रजा करिकैं  
 तथा गौ सुवर्णादिक धन करिकैं ता ब्रह्म साक्षात्कार कूं नहीं प्राप्त होते भये हैं ॥ किंतु ते पूर्व विरक्त पुरुष जन्मों की  
 प्राप्ति करणे हारे कर्मों के त्याग रूप संन्यास करिकैं ही ता ब्रह्म साक्षात्कार कूं प्राप्त होते भये हैं ॥ यातैं इदानीं काल  
 के अधिकारी पुरुषोंनैं भी ता कर्म के त्याग रूप संन्यास करिकैं ही ता ब्रह्म साक्षात्कार कूं संपादन करणा इति ॥ य  
 ह श्रुति ता प्रथम विविदिषा संन्यास कूं ही कथन करे है ॥ तहां जिन विरक्त गृहस्थादिकों कूं किसी प्रबल निमि  
 त्त के वश तैं दंडधारणादिरूप आश्रम संन्यास के करणे का प्रतिबंध होवै ॥ तिन गृहस्थादिकों कूं इस प्रथम विवि

॥ १८ ॥



दिपासंन्यासविषेहीं अधिकारहै ॥ इसविविदिपासंन्यासविषे स्त्रीयोंकाभी अधिकारहै ॥ काहेतैं श्रुति स्मृति इतिहास पुराण आदिकोंविषे जनक याज्ञवल्क्य अजातशत्रु कहोल मैत्रेयी गार्गी इत्यादिकों कूं ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तिनसर्वोंकूं ताउक्तविविदिपासंन्यासकरिकैहीं ॥ ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति भईहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ यज्ञोपवीतकाधारणरूप उपनयनसंस्कारवालेकूंहीं वेदकेअध्ययनकरणेविषे अधिकारहोवैहै ॥ और स्त्रीयोंकूं ताउपनयनसंस्कारका अभावहै ॥ यातैं तिनस्त्रीयों कूं वेदकेअध्ययनकरणेका अधिकारहींनहींहै ॥ और ( स्त्रीशूद्रौनाधीयातां ) यहश्रुतिभी स्त्रीशूद्रोंकूं वेदकेअध्ययनका निषेधकरेहै ॥ और तत्त्वमसिआदिकवैदिकवाक्यतैंहीं ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है ॥ तामहावाक्यकेश्रवणकाअनधिकारीहोणेतैं तिनस्त्रीयोंकूं तथाशूद्रोंकूं ताब्रह्मज्ञानविषे अधिकारहीं नहींहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ( स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियांतिपरांगतिं ) इसवचनकरिकै श्रीभगवाननैं स्त्रीशूद्रोंकूंभी मोक्षकीप्राप्ति कथनकरीहै और ॥ ( यद्ब्रह्मविद्ययासर्वंभविष्यंतोमनुष्यामन्यन्ते ) इस श्रुतिनैं मनुष्यमात्रकूंहीं ब्रह्मविद्याकरिकै सर्वात्मभावकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और सोब्रह्मज्ञान वेदांतशास्त्रकेश्रवणतैंविना संभवतानहीं ॥ यातैंयहव्यवस्थसिद्धहोवैहै ॥ वेदअध्ययनकेअधिकारी जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यहतीनवर्णवालेपुरुषहैं ॥ तिनोंकूंतां उपनिषदरूपवेदांतकेश्रवणादिकोंतैंहीं ब्रह्मज्ञानकीउत्पत्ति होवैहै ॥ और पूर्वअनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मकरिकै शुद्धहूआहैअंतःकरण जिनोंका ऐसेजे वेदअध्ययनकेअनधिकारी स्त्रीशूद्रादिकहैं ॥ तिनोंकूंतां वेदांतअर्थकेप्रतिपादकपुराणादिकोंकेश्रवणतैंहीं ताब्रह्मज्ञानकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ इसीकारणतैं इतिहासपुराणोंविषे विदुरादिकशूद्रोंकूंभी ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति कथन करीहै ॥ जवी शूद्रोंकूंभी ताब्रह्मज्ञानविषे अधिकारसिद्धभया ॥ तवी मैत्रेयीगार्गीआदिकब्राह्मणीस्त्री



तत्त्वा०

॥ ३३ ॥

योंकूं ताब्रह्मज्ञानविषे अधिकार है याके विषे क्या कहना है इति ॥ और केईक ग्रंथकारतों यह व्यवस्था करे हैं ॥ बृहदारण्यक उपनिषद विषे याज्ञवल्क्य मुनिनै आपणी मैत्रेयी स्त्रीके प्रति साक्षात् श्रुति वचनों करिके हीं ब्रह्मविद्याका उपदेश कन्या है ॥ और तिसी बृहदारण्यक उपनिषद विषे गार्गीके साथि याज्ञवल्क्य मुनिका संवाद प्रसिद्ध है ॥ यातैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीन वर्णोंकी स्त्रियोंकूं आत्मज्ञानविषे उपयोगी वेदांत श्रुतियों केश्रवणविषे अधिकार सिद्ध होवै है ॥ और उपनयन संस्कारके अभावतैं तिन स्त्रियोंकूं वेदके अध्ययनविषे अधिकार नहीं है ॥ प्रथम गुरुनै उच्चारण कन्ये हूए वेदवाक्योंका जो पश्चात् शिष्य करिके उच्चारण है ताका नाम अध्ययन है ॥ जो कदाचित् स्त्रियोंकूं वेदांतके श्रवणका अधिकार नहीं होता ॥ तों याज्ञवल्क्य मुनि मैत्रेयी स्त्रीके प्रति तथा गार्गीके प्रति साक्षात् वेदकी श्रुतियों करिके ब्रह्मविद्याका उपदेश न करता ॥ यह याज्ञवल्क्य मैत्रेयीका संवाद आत्मपुराणके सप्तम अध्यायविषे स्पष्ट करिके निरूपण कन्या है इति ॥ अब दूसरे आश्रम रूपविषे विदिषासंन्यासविषे श्रुति स्मृति प्रमाण कहै हैं ॥ तहां श्रुति (दंडमाच्छादनं कौपीनं परिगृहेच्छेषं विसृजेत्) अर्थ यह ॥ दंडकूं तथा शीतनिवृत्ति अर्थ कंथाकूं तथा कौपीनकूं तथा कमंडलु आदिकोंकूं यह संन्यासी ग्रहण करै ॥ तिसतैं भिन्न सर्ववस्तुका परित्याग करै इति ॥ तहां स्मृति ॥ (संसारमेव निःसारं दृष्ट्वा सारं दिदृक्षया प्रव्रजंत्य कृतो द्वाहाः परं वैराग्यमाश्रिताः) अर्थ यह ॥ ब्रह्मलोकपर्यंत सर्व संसारकूं निःसार देखिके परमात्मवस्तु रूपसारके देखनेकी इच्छा करिके परवैराग्यकूं प्राप्त हूए विरक्त पुरुष गृहस्थ आश्रमतैं पूर्वहीं आश्रम रूपविषे विदिषासंन्यासकूं धारण करै हैं ॥ इत्यादिक श्रुति स्मृति वचन ता आश्रम रूपविषे विदिषासंन्यासकूं कथन करै हैं इति ॥ तहां इतनै पर्यंत दो प्रकारके विविदिषासंन्यासका निरूपण कन्या ॥ अब विद्वत्संन्यासका निरूपण करै हैं ॥ तहां ब्रह्मचर्य आश्रमविषे वा गृहस्थ आश्रमविषे वा वानप्रस्थ आश्रमविषे वेदांत श्रुति

परि०  
२

॥ ९९ ॥



वणादिकोंकरिकैं जिसपुरुषकूं ब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नहूआहै ॥ ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषनैं चित्तकेविक्षेपकी निवृत्तिरूपजीवन्मुक्तिवासतै कन्याजोसंन्यासहै ताकानाम विद्वत्संन्यासहै ॥ यहविद्वत्संन्यासभी श्रुतिस्मृतिप्रमाणकरिकैंसिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( एतमेवविदित्वामुनिर्भवति । एतंवैतमात्मानंविदित्वा ब्राह्मणाः पुत्रैषणायाश्चित्तैषणायाश्चलोकैषणायाश्चव्युत्थायाथभिक्षाचर्यचरंति । नदंडंनशिखांनयज्ञोपवीतं नाच्छादनंचरतिपरमहंसः ) अर्थयह ॥ इसपरमात्माकूं अहंब्रह्मास्मि याप्रकार साक्षात्कारकरिकैं विद्वान्पुरुष परमहंससंन्यासी होवैहै ॥ और इसआत्माकूंसाक्षात्कारकरिकैं तत्त्ववेत्तापुरुष पुत्रएषणा वित्तएषणा लोकएषणा इनतीनएषणावोंकापरित्यागकरिकैं भिक्षावृत्तिकूं धारणकरेहै ॥ अर्थात् विद्वत्संन्यासकूंकरेहै ॥ और सोतत्त्ववेत्तापरमहंससंन्यासी दंडकूं तथाशिखाकूं तथायज्ञोपवीतकूं तथाआच्छादनकूं नहींधारणकरेहै इति ॥ तहांस्मृति ॥ ( यदातुविदितं तत्त्वं परंब्रह्मसनातनं तदैकदंडंसंगृह्य सोपवीतां शिखां त्यजेत् ॥ १ ॥ कंथाकौपीनवासास्तु दंडधृग्व्यानतत्परः एकाकीरमते नित्यं तं देवा ब्राह्मणं विदुः ॥ २ ॥ कपालंवृक्षमूलानिकुचैलमसहायता समता चैव सर्वस्मिन्नेतन्मुक्तस्य लक्षणं ॥ ३ ॥ ) अर्थयह ॥ जिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष परब्रह्मरूपसनातनतत्त्वकूं साक्षात्कारकरै ॥ तिसीकालविषे एकदंडकूंग्रहणकरिकैं यज्ञोपवीतसहितशिखाकूंपरित्यागकरै ॥ १ ॥ और जोविद्वान्पुरुष शीतकीनिवृत्तिवासतै केवल कंथाकौपीनवस्त्रोंकूं धारणकरेहै ॥ तथा दंडकूंधारणकरेहै ॥ तथा सर्वदा अंतरआत्माकेध्यानविषे तत्पर रहेहै ॥ तथा एकाकीविचरेहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूं देवता ब्रह्मवेत्तापरमहंससंन्यासीकहेहैं ॥ २ ॥ और जिसविद्वान्पुरुषनैं भिक्षावासतै मृत्तिकामयकपाल हस्तविषे धारणकन्याहै ॥ और वृक्षोंकेमूलविषे जिसकानिवासहै ॥ और कुत्सितवस्त्रोंकूं जिसनैं धारणकन्याहै ॥ और जिसकूं कोईकासहायतानहीं



तत्त्वा०

॥ ३४ ॥

परि०

२

है ॥ तथा सर्वभूतोंविषे जिसकीसमबुद्धिहै ॥ यहसर्व मुक्तपरमहंसकेलक्षणहै ॥ अर्थात् इनउक्तलक्षणों करिकै सोमुक्तपरमहंस जान्याजावैहै इति ॥ ३ ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचन ताविद्वत्संन्यासकूं कथन करेहैं ॥ इसविद्वत्संन्यासका जीवन्मुक्तिहीं फलहै ॥ इनविद्वत्परमहंससंन्यासीयोंका चिन्ह तथाआचार अव्यक्तहोवैहै ॥ याकारणतैहीं श्रुतिस्मृतिवचनोंविषे कहांतों तिनोंकूं दंडवस्त्रादिकोंकाअभाव कहा है ॥ और कहां तिनोंकूं दंडवस्त्रादिकोंकाधारण कहाहै ॥ सोतिनविद्वत्संन्यासियोंका अव्यक्तचिन्ह तथाअव्यक्तआचार आत्मपुराणके एकादशेअध्यायकेआदिविषे स्पष्टकरिकैकथनकन्याहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व विविदिषासंन्यासकूं ब्रह्मज्ञानकाहेतुकहा ॥ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं जनकअजात शत्रुआदिकोंकूं ताविविदिषासंन्यासकेअभावहूएभी सोब्रह्मज्ञान श्रुतिस्मृतिआदिकोंतैं जान्याजावैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सोविविदिषासंन्यास केवल इसजन्मकाहीं ताब्रह्मज्ञानकाकारणनहींहोवैहै ॥ किंतु जन्मांतरविषेकन्याहूआभी सोविविदिषासंन्यास ताब्रह्मज्ञानकाकारणहोवैहै ॥ यातैं तिनजनकादि कोंकूं इसजन्मविषे ताविविदिषासंन्यासकेअभावहूएभी जन्मांतरकेविविदिषासंन्यासतैंहीं सोब्रह्मज्ञान प्राप्तहूआहै ॥ इसप्रकार ताब्रह्मज्ञानरूपकार्यतैं ताजन्मांतरकेसंन्यासरूपकारणका अनुमानहोवैहै ॥ किं वा (यदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रव्रजेत्) इसश्रुतिनैं वैराग्यवान्पुरुषकेप्रति सर्वअंगोंसहितविविदिषासंन्या सकाविधानकरिकै पुनःतिसीप्रकरणविषे (यद्यातुरःस्यान्मनसावाचावासंन्यसेत्) अर्थयह ॥ जबी यहपुरुष व्याधिआदिकोंकरिकै अतिआतुरहोवै ॥ तबी दूसरेअंगोंतैंविनाहीं केवल मनकरिकै वा वा णीकरिकै तासंन्यासकूंकरै ॥ इसश्रुतिनैं आतुरसंन्यासकाविधानकन्याहै ॥ तहां मरणकेसमीपप्राप्त हूए ताआतुरसंन्यासीकूं तिसकालविषे श्रवणादिकोंकरिकै आत्मज्ञानकीप्राप्ति संभवतीनहीं ॥ यातैं

॥ १०० ॥



सोआतुरसंन्यास तिसपुरुषकूं दूसरेजन्मविषे ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिकरेहै ॥ यहअवश्य अंगीकारकरणा  
होवैगा ॥ अन्यथा सोआतुरसंन्यासहीं व्यर्थहोवैगा ॥ याकारणतैंभी ताजन्मांतरकेविविदिषासंन्यास  
कूं आत्मज्ञानकीकारणता संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ यहआतुरसंन्यास पूर्वउक्तविविदिषासंन्यासतैं  
भिन्नहींसंन्यासहै ॥ और (संन्यासाद्ब्रह्मणःस्थानं) इसस्मृतिनैं ताआतुरसंन्यासका ब्रह्मलोककीप्रा  
प्तिरूपफल कथनकन्याहै ॥ यातैं सोआतुरसंन्यास व्यर्थनहींहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इसआतुरसं  
न्यासविषेभी विरक्तपुरुषकाहीं अधिकारहोवैहै ॥ और विविदिषासंन्यासकेप्रकरणविषेहीं इसआतुरसं  
न्यासका विधानकन्याहै ॥ यातैं यहआतुरसंन्यास पूर्वउक्तविविदिषासंन्यासतैंभिन्नसंन्यासनहींहै ॥  
किंतु ताविविदिषासंन्यासकेअंतर्भूतहींहै ॥ और (संन्यासाद्ब्रह्मणःस्थानं) यहस्मृतितां ताआतुरसंन्या  
सके ब्रह्मलोककीप्राप्तिरूपअवांतरफलकूं कथनकरेहै ॥ ताकरिकै आत्मज्ञानरूपमुख्यफलकानिषेध होइ  
सकैनहीं ॥ अथवा सास्मृति कुटीचकादिरूपस्मार्तसंन्यासके ब्रह्मलोककीप्राप्तिरूपफलकूं कथनकरेहै ॥  
यातैं ताआतुरसंन्यासकाभी आत्मज्ञानकीप्राप्तिहीं मुख्यफलहै ॥ जन्मांतरकेसंन्यासतैंभी आत्मज्ञान  
कीप्राप्तिहोवैहै यहवार्ता श्रीसर्वज्ञमहामुनिनैं संक्षेपशारीरकग्रंथविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (ज  
न्मांतरेषुयदिसाधनजातमासीत् संन्यासपूर्वकमिदंश्रवणादिरूपं विद्यामवाप्स्यतिजनःसकलोपियत्र तत्रा  
श्रमादिषुवसन्ननिवारयामः) अर्थयह ॥ जोकदाचित् इनअधिकारीपुरुषोंके पूर्वजन्मोंविषे संन्यासपूर्वक  
श्रवणादिकसाधन सिद्धहूएहोवैं ॥ तों तेअधिकारीजन जिसतिसगृहस्थादिकआश्रमविषेवसतेहूए तिन  
पूर्वसाधनोंकेबलतैं तहांहीं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसअर्थकूं हम निवारणकरतेनहीं इति ॥ यातैं ति  
नजनकादिकोंकूं पूर्वजन्मकेविविदिषासंन्यासकरिकै आत्मज्ञानकीप्राप्ति संभवैहै यहसिद्धभया इति ॥



तत्त्वा०

॥ ३५ ॥

परि०

२

तहां पूर्व ( आत्मावाऽरेद्रष्टव्यः श्रोतव्यो मंतव्यो निदिध्यासितव्यः ) इस श्रुतिवचनकरिकै अधिकारी पुरुषके प्रति आत्मज्ञानकी प्राप्तिवासतै श्रवणादिकोंकी कर्तव्यता कथन करी थी ॥ ताके विषे केईक ग्रंथकार तों श्रवणादिकोंविषे विधि अंगीकार करते नहीं ॥ और केईक विधि अंगीकार करे हैं ॥ तहां प्रथम पक्ष तों वाचस्पति मिश्र का है ॥ और द्वितीय पक्ष विवर्णाचार्य का है ॥ तहां वाचस्पति मिश्र का यह अभिप्राय है ॥ विवेकादिक साधन चतुष्टय संपन्न जिज्ञासु जन नैं कन्ये जे श्रवणादिक हैं ॥ तिन श्रवणादिकों कूं आत्मज्ञानकी कारणता अन्वयव्यतिरेक करिकै हीं निश्चय होवै है ॥ यातें श्रवणादिकोंविषे विधिसंभवतानहीं ॥ अप्राप्त अर्थविषे हीं विधि होवै है ॥ जैसे यागविषे स्वर्गकी कारणता प्रत्यक्षादिक प्रमाणों करिकै अप्राप्त है ॥ यातें ता कारणता का बोधक ( स्वर्ग कामोयजेत ) यह वचन विधिरूप है ॥ यद्यपि श्रवणादिकोंविषे ब्रह्मसाक्षात्कारकी कारणता ता उक्त श्रुतिप्रमाण तें भिन्न किसी प्रमाण करिकै प्राप्त नहीं है ॥ तथापि अतिसूक्ष्मता करिकै दुर्विज्ञेय जेषड्जादिक स्वर हैं ॥ तिन स्वरोंके साक्षात्कार प्रति गांधर्वशास्त्रके अभ्यास कूं अन्वयव्यतिरेक करिकै कारणता प्राप्त है ॥ और तिन स्वरोंकी न्याई ब्रह्मभी अतिसूक्ष्म होने तें दुर्विज्ञेय है ॥ यातें ता ब्रह्मसाक्षात्कारके प्रति भी वेदांतशास्त्रके श्रवण कूं कारणता ता अन्वयव्यतिरेक करिकै प्राप्त नहीं है ॥ ऐसे प्राप्त अर्थविषे विधिसंभवतानहीं ॥ और श्रोतव्य इस वचनविषे जो तव्य यह प्रत्यय प्रतीत होवै है ॥ ता प्रत्यय का विधि अर्थ नहीं है ॥ किंतु योग्यता अर्थ है ॥ अर्थात् आत्मा श्रवण करने योग्य है ॥ इस प्रकार । मंतव्यः निदिध्यासितव्यः । इन दोनों वचनोंविषे भी विधिका अभाव जानिलेना इति ॥ और आचार्यों का तों यह अभिप्राय है ॥ ( आत्मावाऽरेद्रष्टव्यः श्रोतव्यो मंतव्यो निदिध्यासितव्यः ) इस श्रुतिविषे विवेकादिक चतुष्टय साधन संपन्न संन्यासीके प्रति आत्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिवासतै मनन निदिध्यासन रूप फलोपकारी अं

॥ १०१ ॥



गोंसहित श्रवणनामा अंगी विधानकन्या है ॥ तहां जोपदार्थ साक्षात् फलकासाधनरूपकरिके श्रवणक  
न्याजावै है ॥ सोपदार्थ अंगी कहाजावै है ॥ तथा शेषी कहाजावै है ॥ तथा प्रधान कहाजावै है ॥ और  
ताअंगीकेसमीपहीं जोपदार्थ फलतैंविना कर्तव्यतारूपकरिके श्रवणकन्याजावै है ॥ सोपदार्थ अंग कहा  
जावै है ॥ तथा शेष कहाजावै है ॥ तथा सहकारी कहाजावै है ॥ तेअंगभी स्वरूपोपकारी ३ फलोप  
कारी २ इसभेदकरिके दोप्रकारकेहोवै हैं ॥ तहां जेअंग अंगीकेस्वरूपकीउत्पत्तिविषे उपकार करेहैं ॥  
तेअंग स्वरूपोपकारी कहेजावै हैं ॥ इनस्वरूपोपकारीअंगोंकूंहीं मीमांसक सन्निपत्योपकारीअंग कहे  
हैं ॥ और जेअंग ताअंगीजन्यफलकीउत्पत्तिविषे उपकार करेहैं ॥ तेअंग फलोपकारीअंग कहेजावै  
हैं ॥ इनफलोपकारीअंगोंकूंहीं मीमांसक आरादुपकारीअंग कहेहैं ॥ जैसे ईहांप्रसंगविषे वेदांतशास्त्र  
काश्रवण प्रमाणकाविचाररूपहोणेतैं साक्षात् ब्रह्मज्ञानरूपफलका साधनरूपकरिके विधानकन्या है ॥  
यातैं सोश्रवणतों अंगी कहाजावै है ॥ और ताश्रवणरूपअंगीकेसमीप विधानकन्ये जेविवेकादिकचा  
रिसाधनहैं ॥ तिनोंका ज्ञानतैंभिन्नदूसराकोईफल तहां कथनकन्यानहीं ॥ यातैं तेविवेकादिकसाधन  
ताश्रवणरूपअंगीकेस्वरूपकीउत्पत्तिविषेउपकारीहोणेतैं स्वरूपोपकारीअंग कहेजावै हैं ॥ और ताश्रव  
णरूपअंगीकेसमीपहीं फलतैंविना मनननिदिध्यासनकाविधानकन्या है ॥ यातैं तेमनननिदिध्यासनदो  
नों ताश्रवणरूपअंगीके ब्रह्मसाक्षात्काररूपफलकीउत्पत्तिविषे उपकारीहोणेतैं फलोपकारीअंग कहेजा  
वै हैं ॥ यातैं ( श्रोतव्योमंतव्योनिदिध्यासितव्यः ) इसवचननैं मनननिदिध्यासनरूपफलोपकारीअंगों  
सहित श्रवणनामाअंगी विधानकरीता है ॥ अर्थात् साधनचतुष्टयसंपन्नसंन्यासीनैं ब्रह्मसाक्षात्कारकी  
प्राप्तिवासुतै मनननिदिध्यासनरूपअंगोंसहित श्रवणरूपअंगी अवश्यसंपादनकरणा इति ॥ तहां श्रवण



तत्त्वा०

॥ ३६ ॥

परि०

२

कूं ब्रह्मसाक्षात्कारकी कारणता पूर्वउक्तअन्वयव्यतिरेककरिकैहीं सिद्धहै ॥ यातैं ताश्रवणकाविधानकरणेहारा श्रोतव्यः यहविधि अपूर्वविधिरूपनहींहै ॥ किंतु नियमविधिरूपहै अथवा परिसंख्याविधिरूपहै ॥ अब यथाक्रमतैं तिनअपूर्वादिकतीनविधियोंकेलक्षण कहेहैं ॥ तहां ( अप्राप्तार्थबोधकोविधिः अपूर्वविधिः ) अर्थयह ॥ प्रमाणांतरकरिकैअप्राप्तार्थका कर्तव्यतारूपकरिकैबोधनकरणेहाराजोविधि है ताकानाम अपूर्वविधिहै ॥ जैसे ( ब्रीहीन्प्रोक्षति ) यहवचन अपूर्वविधिहै ॥ तहां इसवचनतैंविना अन्यकिसीप्रमाणकरिकै सोब्रीहियोंकाप्रोक्षण प्राप्तहैनहीं ॥ यातैं अप्राप्तार्थकाबोधकहोणेतैं सोविधि अपूर्वविधि कह्याजावैहै इति ॥ और ( पक्षप्राप्तस्याप्राप्तांशपूरकोविधिः नियमविधिः ) अर्थयह ॥ पक्षविषेप्राप्तार्थकेअप्राप्तअंशका पूरणकरणेहारा जोविधिहै ताकानाम नियमविधिहै ॥ जैसे ( ब्रीहीनवह्न्यात् ) यहविधिहै ॥ तहां यज्ञविषेउपयोगीजेब्रीहिहैं ॥ तिनोंकेतुषोंकीनिवृत्ति दोउपायोंतैंहोवैहै ॥ एकतों अवघातरूप उपायहै ॥ और दूसरा नखविदलनरूप उपायहै ॥ तहां मुशलसंब्रीहियोंकेकूटणे कानाम अवघातहै ॥ और नखोंसैं तुषोंकीनिवृत्तिकरणेकानाम नखविदलनहै ॥ तहां जिसपक्षविषे ता नखविदलनकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसपक्षविषे ताअवघातकीप्राप्ति हैनहीं ॥ तापक्षप्राप्तअवघातकेअप्राप्तअंशका ( ब्रीहीनवह्न्यात् ) यहवाक्य पूरणकरेहै ॥ अर्थात् अवघातकरिकैहीं तिनब्रीहियोंकेतुषोंकीनिवृत्तिकरणी ॥ इसकहणेतैं तानखविदलनरूपउपायकीनिवृत्ति अर्थतैंसिद्धहोवैहै इति ॥ और ( उभयप्राप्तावितरव्यावृत्तिबोधकोविधिः परिसंख्याविधिः ) अर्थयह ॥ एकहींकालविषे दोपदार्थोंकेप्राप्तहूए एकपदार्थकीव्यावृत्तिकाबोधकजोविधिहै ताकानाम परिसंख्याविधिहै ॥ जैसे ( इमामगृभ्णन्नशनामृतस्य ) इसमंत्रकरिकै यज्ञविषे अथ गर्दभ दोनोंकेरशनाग्रहणकीप्राप्तिहूए ( अथाभिधानीमादत्ते ) इसवचनतैं

॥ १०२ ॥



तागर्दभरशनाकेग्रहणकीव्यावृत्ति विधानकरीतीहै ॥ कोईअश्वरशनाकेग्रहणकाविधान करीतानहीं ॥ सोअश्वरशनाकाग्रहण उक्तमंत्रकरिकेहींप्राप्तहै ॥ यातैं ( अथाभिधानीमादत्ते ) यहवचन परिसंख्याविधि कहाजावैहै ॥ यद्यपि नियमविधिविषे तथापरिसंख्याविधिविषे इतरकीनिवृत्ति समानहै ॥ तथापि नियमविधिविषे इतरकीनिवृत्ति आर्थिकी होवैहै ॥ और परिसंख्याविधिविषे साइतरकीनिवृत्ति विधेय होवैहै ॥ इतनी दोनोंविषेविशेषताहै इति ॥ तैसे प्रसंगविषेभी श्रोतव्यः यहनियमविधिहै ॥ अर्थात् सो साधनसंपन्नजिज्ञासु वेदांतशास्त्रकूंहीं श्रवणकरै ॥ अथवा सोजिज्ञासु वेदांतशास्त्रतैंअन्यशास्त्रकूं नहींश्रवणकरै याप्रकारका परिसंख्याविधिहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसस्थलविषे दोसाधनप्राप्तहोवैहैं ॥ तहांहीं अप्राप्तअंशकापूरणकरणेहारा नियमविधि अंगीकारकन्याजावैहै ॥ यहपूर्व नियमविधिकालक्षण कथनकन्याथा ॥ सोलक्षण ईहांश्रवणविधिविषे संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं सोब्रह्म वेदांतशास्त्रतैंभिन्नकि सीप्रमाणकाविषयहैनहीं ॥ किंतु एकवेदांतशास्त्रकाहींविषयहै ॥ जोकदाचित् ताब्रह्मसाक्षात्कारविषे वेदांतश्रवणतैंभिन्नभीकोईसाधनहोता ॥ तौ ताश्रवणविषे नियमविधि संभवता ॥ जोकहो ताब्रह्मसाक्षात्कारकेप्रति एकपक्षविषे पुराणादिकोंकाश्रवणभी साधनरूपकरिकैप्राप्तहै ॥ ताकेनिवृत्तकरणेवासतै वेदांतश्रवणविषे सोनियमविधि संभवैहै ॥ सोयहकहनाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं अध्यात्मपुराणकूं वेदांतमूलकताहोणेतैं तापुराणकेश्रवणकूं वेदांतश्रवणतैंभिन्नसाधनरूपता नहींहै ॥ किंतु सोअध्यात्मपुराणकाश्रवणभी वेदांतकाहींश्रवणहै ॥ और जोकहो एकपक्षविषे रागीपुरुषोंकेगीतादिकोंकेश्रवणकी प्राप्तिहोणेतैं ताकेनिवृत्तकरणेवासतै वेदांतश्रवणविषे सोनियमविधि संभवैहै ॥ सोयहकहनाभी संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं ताश्रवणविधितैंअन्यवचनोंकरिकैहीं मुमुक्षुजनकेप्रति तिनरागीगीतोंकेश्रवण



तत्त्वा०

॥ ३७ ॥

का निषेधकन्या है ॥ और जो कहो एकपक्षविषे द्वैतशास्त्रकेश्रवणकी प्राप्ति होणेतैं ताके निवृत्तकरणे वास  
 तैं तावेदांतश्रवणविषे नियमविधिसंभवै है ॥ सोयह कहणा भी संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं ताद्वैतशा  
 स्त्रकूं अद्वैतका विरोधी पणा होणेतैं ता अद्वितीय ब्रह्मज्ञानके प्रति साधनरूपता ही संभवती नही ॥ और ( न  
 चक्षुषापश्यति नापि वाचा । यतो वाचो निवर्तते । यन्मनसानमनुते ) इत्यादिक श्रुतियोंनैं ब्रह्मविषे वेदांत  
 तैं भिन्न चक्षु वाक् मन आदिकोंकी अविषयता कथन करी है ॥ यातैं ता ब्रह्मज्ञानविषे प्रत्यक्षादिकोंकूं भी  
 साधनरूपता प्राप्त है नही ॥ यातैं तिन प्रत्यक्षादिकोंके निवृत्तकरणे वासतैं भी तावेदांतश्रवणविषे नियमवि  
 धिसंभवतानहीं ॥ यातैं तावेदांतश्रवणविषे नियमविधिकहणा असंगत है ॥ और उक्तरीतिसें ता अन्य  
 साधनका अभाव होणेतैं ताके निवृत्तकरणे वासतैं तावेदांतश्रवणविषे परिसंख्याविधि भी संभवतानहीं ॥  
 ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि वेदांतशास्त्रतैं भिन्न पुराणादिकोंकूं स्वतंत्र ब्रह्मसाक्षात्कारकी साधनता  
 नहीं है ॥ तथापि वेदांतशास्त्रकेश्रवणकीन्याई पुराणादिकोंका श्रवण भी स्वतंत्र ब्रह्मसाक्षात्कारका साध  
 न है या प्रकारकी भ्रांतिकरि कै ता पुराणादिकोंकेश्रवणकूं भी ता ब्रह्मज्ञानके प्रति स्वतंत्र साधनताके प्राप्त हूए  
 ताके निवृत्तकरणे वासतैं तावेदांतश्रवणविषे नियमविधिका अंगीकार तथा परिसंख्याविधिका अंगीकार सं  
 भवै है ॥ अथवा ब्रह्मवेत्ता गुरुतैं विना स्वतंत्र आपणी बुद्धिसें वेदांतविचारके निवृत्तकरणे वासतैं ता श्रवण  
 विषे नियमविधिका वा परिसंख्याविधिका अंगीकार है ॥ अर्थात् इस अधिकारी पुरुषनैं श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ  
 गुरुके मुखतैं ही वेदांतशास्त्रका श्रवण करणा ॥ ता गुरुतैं विना स्वतंत्र केवल आपणी बुद्धिसें तावेदांतशास्त्र  
 का विचार नहीं करणा ॥ यह वार्त्ता पूर्ववृद्ध पुरुषोंनैं भी कही है ॥ तहां श्लोक ॥ ( नियमः परिसंख्यावा वि  
 व्यर्थो हि भवेद्यतः अनात्मादर्शनेनैव परात्मानमुपास्महे ) अर्थ यह ॥ जिसकारणतैं श्रोतव्यः इसविधिवा

परि०  
२

॥ १०३ ॥



क्यका नियम वा परिसंख्याहीं अर्थहै ॥ तिसकारणतैं हम अनात्मवस्तुवोंकेचिंतनकापरित्यागकरिकै केवल परमात्माकाहींचिंतनकरेहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ श्रोतव्यः इसविधिवाक्यनैं वेदांतश्रवणका विधानकरीताहै यहवार्त्ता पूर्वआपनैं कथनकरी ॥ और श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रविषे काम्य १ नित्य २ नैमित्तिक ३ प्रायश्चित्त ४ इनचारिप्रकारकेकर्मकाहीं विधानकन्याहै ॥ तिनचारोंविषे सोश्रवण का म्यकर्मरूपहै ॥ अथवा नित्यकर्मरूपहै ॥ अथवा नैमित्तिककर्मरूपहै ॥ अथवा प्रायश्चित्तरूपहै ॥ तहां प्रथम काम्यपक्ष जोअंगीकारकरो सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं (स्वर्गकामोयजेत) इसवचनविषे जैसे स्वर्गरूपफलकाउद्देशकरिकै यागकाविधानकन्याहै ॥ तैसे कोईफलकाउद्देशकरिकै ताश्रवणकाविधान कन्यानहीं ॥ और जोकहो जैसे रात्रिसत्रनामायागकेविधायकवाक्यविषे फलकेअश्रवणहूएभी ताया गविषे पुरुषकीप्रवृत्तिकरावणेवासतै तायागकाफल कल्पनाकन्याजावैहै ॥ तैसे ताश्रवणकाभी ब्रह्मज्ञा नरूपफल हम कल्पनाकरेंगे ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं गृहस्थादिकोंविषे ताब्रह्मज्ञान रूपफलकेकामनाकाहीं असंभवहै ॥ उलटा तिनगृहस्थादिकोंविषे ताब्रह्मज्ञानतैं उद्वेगहीं देखणेविषेआ वैहै ॥ याकारणतैंहीं तिनरागीपुरुषोंकेअभिप्रायकाबोधक श्लोक कह्याहै ॥ (अपिवृंदावनेशून्येशृगाल त्वंसइच्छति नतुनिर्विषयमोक्षंकदाचिदपिगौतम) अर्थयह ॥ हेगौतम सोरागवान्पुरुष शून्यवृंदावनवि षे शृगालहोणेकीतौइच्छाकरेहै ॥ परंतु निर्विषयमोक्षकी सोरागवान्पुरुष कदाचित्भी इच्छाकरतान हीं इति ॥ किंवा (वेदानिमंलोकममुंचपरित्यज्यात्मानमन्विच्छेत्) इत्यादिकश्रुतितैं साधनचतुष्टयसंप न्न जिज्ञासुसंन्यासीकूंहीं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै श्रवणादिकोंकीकर्त्तव्यता निश्चयहोवैहै ॥ यातैं गृह स्थादिकोंकूं तिनश्रवणादिकोंविषे अधिकारहींनहींहै ॥ जोकहो तिनसंन्यासीयोंकूंहीं सोश्रवण काम्य



तत्त्वा०

॥ ३८ ॥

परि०  
२

कर्मरूपहोवो ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् संन्यासीकेप्रति सोश्रवण काम्य कर्मरूपहोवै ॥ तौं काम्यकर्मकेनकरणेतैं प्रत्यवायकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ यातैं ताश्रवणके नकरणेतैं तासं न्यासीकूं प्रत्यवायकीप्राप्ति नहींहोणीचाहिये ॥ और वेदांतश्रवणकेपरित्यागतैं तासंन्यासीकूं प्रत्यवाय कीप्राप्ति श्रुतिस्मृतिविषेकथनकरीहै ॥ यातैं तासंन्यासीकेप्रति ताश्रवणकूं काम्यकर्मरूपता संभवती नहीं ॥ और सोश्रवण नित्यकर्मरूपहै यहद्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरो सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं ( यावज्जीवमग्निहोत्रं जुहुयात् ) इसवचननैं जैसे गृहस्थकेप्रति जीवनकालपर्यंत अग्निहोत्ररूपनित्यकर्म का विधानकन्याहै ॥ तैसे इसअधिकारीपुरुषकेप्रति जीवनकालपर्यंत ताश्रवणका कोईवचननैं विधान कन्यानहीं ॥ यातैं ताश्रवणविषे नित्यकर्मरूपताभी संभवतीनहीं ॥ और सोश्रवण नैमित्तिककर्मरूपहै यहतृतीयपक्ष जोअंगीकारकरो सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं जैसे अग्निहोत्रीपुरुषकेगृहकेदाहहूए ता निमित्तकूंलैके वेदनैं इष्टिकाविधानकन्याहै ॥ तैसे ईहां कोईनिमित्त कथनकन्यानहीं ॥ जिसनिमित्त कूंलैके सोश्रवण नैमित्तिककर्मरूपहोवै ॥ और सोश्रवण प्रायश्चित्तकर्मरूपहै यहचतुर्थपक्ष जोअंगीका रकरो सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं ( तरतिब्रह्महत्यां योऽश्वमेधेनयजते ) इसवचननैं जैसे ब्रह्महत्यारूप पापकेनिवृत्तकरणेवासतै अश्वमेधयज्ञरूपप्रायश्चित्तकाविधानकन्याहै ॥ तैसे कोईश्रुतिवचननैं किसी पापकीनिवृत्तिवासतै ताश्रवणकाविधानकन्यानहीं ॥ यातैं ताश्रवणकूं प्रायश्चित्तरूपताभी संभवतीन हीं ॥ यातैं कोईप्रकारकरिकैभी तावेदांतश्रवणविषे विधिसंभवतानहीं ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहूए ॥ अब विविदिषासंन्यासीकेप्रतितौं ताश्रवणकूं नित्यकर्मरूपता और गृहस्थादिकोंकेप्रति ताश्रवणकूं काम्यक म्मरूपता वर्णनकरैहैं ॥ तहां जैसे गृहस्थपुरुषकूं अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकनित्यकर्मोंकेनकरणेतैं श्रुति

॥ १०४ ॥



स्मृतिनैं प्रत्यवायकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तथा ( यावज्जीवमग्निहोत्रं छुह्यात् ) इत्यादिकश्रुतियोंनैं जीवत्कालपर्यंत तिनअग्निहोत्रादिकनित्यकर्मोंकाविधानकन्याहै ॥ तैसे विविदिषासंन्यासीकेप्रतिभी वेदांतश्रवणादिकोंकेनकरणेतें प्रत्यवायकीप्राप्ति तथाजीवत्कालपर्यंत तिनश्रवणादिकोंकीकर्त्तव्यता श्रुति स्मृतिनैं कथनकरीहै ॥ यातैं जैसे गृहस्थकेप्रति तेअग्निहोत्रसंध्योपासनादिक नित्यकर्मरूपहैं ॥ तैसे विविदिषासंन्यासीकेप्रतिभी तेवेदांतश्रवणादिक नित्यकर्मरूपहैं ॥ तहांश्रुति ॥ ( अरुन्मुखान्यतीन्शालावृकेभ्यः प्रायच्छं ) अर्थयह ॥ वेदांतविचारतैंरहितसंन्यासीयोंकूं हननकरिकै मैंइंद्र श्वानोंकेताई देताभयाहूं इति ॥ इसश्रुतिकाअर्थ आत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे इंद्रप्रतर्दनकेसंवादविषे विस्तारतैंकथनकन्या है ॥ तहांस्मृति ॥ ( नित्यं कर्मपरित्यज्य वेदांतश्रवणं विना वर्त्तमानस्तु संन्यासी पतत्येव न संशयः ) अर्थयह ॥ अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकनित्यकर्मोंकापरित्यागकरिकै जोविविदिषासंन्यासी वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकूं नकर्त्ताहूआ वर्त्तमानहोवैहै ॥ सोसंन्यासी पतितहींहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंनैं ताविविदिषासंन्यासीकूं वेदांतश्रवणकेनकरणेतें प्रत्यवायकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और ( आसुप्तेरामृतेः कालं नयेद्वेदांतंचितया दद्यान्नावसरं किंचित्कामादीनां मनागपि ) अर्थयह ॥ यहविविदिषासंन्यासी जाग्रततैंलैके सुषुप्तिपर्यंत तथाब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपगमनतैंलैके मरणपर्यंत कालकूं वेदांतशास्त्रकेचिंतनकरिकै व्यतीतकरै ॥ आपणेचित्तविषे कामक्रोधादिकविकारोंकेप्राप्तिकाअवसर किंचित्मात्रभीनहींदेवै इति ॥ इसस्मृतिनैं तथाइसस्मृतिकामूलभूतश्रुतिनैं ताविविदिषासंन्यासीकेप्रति जीवत्कालपर्यंत वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकीकर्त्तव्यता विधानकरीहै ॥ यातैं तासंन्यासीकेप्रति श्रवणादिकोंकूं नित्यकर्मरूपता ही सिद्धहोवैहै ॥ किंवा ताउक्तश्रुतिस्मृतिकेबलतैं ताश्रवणकूं संन्यासीकेप्रति नित्यकर्मरूपता केवल



तत्त्वा०

॥ ३९ ॥

परि०  
२

हमोंनेही नहीं अंगीकार करीती ॥ किंतु पूर्व आचार्यों ने भी अंगीकार करी है ॥ तहां श्लोक ॥ ( त्वंपदार्थ विवेकाय संन्यासः सर्वकर्मणां श्रुत्याभिधीयते यस्मात्तत्त्यागी पतितो भवेत् ) अर्थ यह ॥ तत्त्वमसि इस महा वाक्य विषे स्थित जो त्वंपद है ॥ तात्त्वंपद का वाच्य अर्थ जो अंतःकरण विशिष्ट चैतन्य है ॥ ताके विषे अंतःकरण का परित्याग करिके लक्ष्य अर्थ रूप जो प्रत्यक् चैतन्य है ॥ ता प्रत्यक् चैतन्य का जो ब्रह्म रूप करिके ज्ञान है या कानाम त्वंपदार्थ विवेक है ॥ तात्त्वंपदार्थ के विवेक वास तैहीं श्रुति ने अग्नि होत्र संध्योपासनादिक सर्व कर्मों का संन्यास विधान कन्या है ॥ और जो पुरुष ता संन्यास कंधारण करिके तिस त्वंपदार्थ के विवेक कूं नहीं करे है ॥ सो संन्यासी पतित होवै है इति ॥ इस वचन करिके श्रीवार्त्तिक कार सुरेश्वराचार्य ने श्रवणादिकों तैर हित संन्यासी कूं पतित पणा कथन कन्या है ॥ इसी प्रकार सर्वज्ञ महामुनि ने भी संक्षेप शारीरक ग्रंथ विषे कहा है ॥ तहां श्लोक ॥ ( कारकस्य करणेन तत्क्षणाद्भिक्षुरेष पतितो भवेद्यथा व्यंजकस्य परिवर्जनात्तथा सद्य एव पतितो भवेदसौ ) अर्थ यह ॥ जैसे यह संन्यासी यज्ञादिक कर्मों के करणे करिके शीघ्र ही पतित होवै है ॥ तै से वेदांत शास्त्र के श्रवणादिकों के नहीं करणें तै भी शीघ्र ही पतित होवै है इति ॥ या तै यह अर्थ सिद्ध भया ॥ विविदिषा संन्यासी के प्रति ता वेदांत श्रवण कूं नित्य कर्म रूप ता होणें तै ता श्रवण विषे श्रोतव्यः यह उक्त नित्य विधि संभवै है इति ॥ और गृहस्थादिकों के प्रति ते वेदांत शास्त्र के श्रवणादिक काम्य कर्म रूप हैं ॥ तहां जिस कर्म के करणे करिके तौ फल की प्राप्ति होवै ॥ और न करणे करिके प्रत्यवाय की प्राप्ति होवै नहीं ॥ ता कर्म कूं काम्य कर्म कहै हैं ॥ जैसे जिस पुरुष कूं स्वर्ग के प्राप्ति की इच्छा होवै है ॥ सो पुरुष तौ ज्योतिष्टोम याग कूं करे है ॥ ता करिके तिस पुरुष कूं स्वर्ग रूप फल की प्राप्ति होवै है ॥ और जिस पुरुष कूं ता स्वर्ग के प्राप्ति की इच्छा नहीं होवै है ॥ सो पुरुष ता ज्योतिष्टोम याग कूं करता नहीं ॥ परंतु ता ज्योतिष्टोम याग के न करणे करिके तिस पु

॥ १०५ ॥



रुपकूं कोई प्रत्यवायकी प्राप्ति होती नहीं ॥ या कारणतें सो ज्योतिष्टोमयाग काम्यकर्म कहा जावै है ॥ तैसे जिस गृहस्थकूं ब्रह्मज्ञानकी इच्छा होवै ॥ सो गृहस्थतों वेदांतशास्त्रके श्रवणादिकों कूं करै ॥ तिन श्रवणादिकों करिके ता गृहस्थकूं ब्रह्मज्ञानकी प्राप्ति होवै है ॥ और जिस गृहस्थकूं ता ब्रह्मज्ञानकी इच्छा नहीं होवै ॥ सो गृहस्थ तिन श्रवणादिकों कूं नहीं करै ॥ परंतु तिन श्रवणादिकों के नहीं करणतें ता गृहस्थकूं कोई प्रत्यवायकी प्राप्ति होती नहीं ॥ यातें तिन गृहस्थादिकों के प्रति तिन श्रवणादिकों कूं काम्यकर्मरूपता ही सिद्ध होवै है ॥

॥ शंका ॥ ॥ विवेकादिक चतुष्टयसाधन संपन्न पुरुष कूं ही ब्रह्मजिज्ञासा होवै है ॥ ब्रह्मके जाननेकी इच्छा कानाम ब्रह्मजिज्ञासा है ॥ और गृहस्थादिकों विषे ते चतुष्टयसाधन संभवते नहीं ॥ यातें ता ब्रह्मजिज्ञासा के अभावतें तिन गृहस्थादिकों के प्रति ता श्रवणकूं काम्यकर्मरूपता भी संभवती नहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ अत्यंत बहिर्मुख गृहस्थादिकों कूं ता साधन संपत्तिके अभावतें ता ब्रह्मजिज्ञासा के अभाव हूए भी ॥ जेके ई गृहस्थ पुरुष परमेश्वर करिके अनुगृहीत हैं ॥ तथा फलकी इच्छा तैरहित होइके नित्य नैमित्तिक कर्मों कूं करे हैं ॥ या कारणतें ही शुद्ध अंतःकरणवाले हैं ॥ तथा गुरुईश्वर विषे श्रद्धा भक्तिवाले हैं ॥ ऐसे उत्तम गृहस्थों कूं ता विवेकादिक साधन संपत्तिके करिके सा ब्रह्मजिज्ञासा संभवै है ॥ और कोई क प्रतिबंध के वशतें तिन गृहस्थों कूं संन्यास आश्रमकी अप्राप्ति हूए भी वेदांतशास्त्रके श्रवणादिकों विषे तिनोंकी प्रवृत्ति संभवै है ॥ ऐसे साधन संपन्न गृहस्थादिकों के प्रति ही सो श्रवणविधि काम्यरूप है ॥ जो कंदाचित् तिन गृहस्थादिकोंकी ब्रह्मजिज्ञासा पूर्वक श्रवणादिकों विषे प्रवृत्ति नहीं मानिये ॥ तों गृहस्थाश्रमादिकों विषे उत्पन्न भया है ब्रह्मसाक्षात्कार जि नों कूं ऐसे तत्त्ववेत्ता पुरुषों के प्रति जीवन्मुक्ति वासतै श्रुति स्मृतिनै जो विद्वत्संन्यासका विधान कन्या है सो व्यर्थ होवैगा ॥ और जो कहो विविदिषा संन्यासतें भिन्न कोई विद्वत्संन्यास है नहीं ॥ सो यह कहणा संभवता



तत्त्वा०

॥ ४० ॥

परि०

२

नहीं ॥ जिसकारणतैं पूर्व श्रुतिस्मृतिप्रमाणकेवलतैं ताविविदिषासंन्यासतैंभिन्न विद्वत्संन्यासका निरूपणकरिआयेहैं ॥ किंवा अधिकारी फल साधन इनतीनोंकेभेदतैंभी सोविद्वत्संन्यास ताविविदिषासंन्यासतैं भिन्नहींसिद्धहोवैहै ॥ तहां विविदिषासंन्यासविषेतों जिज्ञासु अधिकारीहोवैहै ॥ और विद्वत्संन्यासविषे तत्त्ववेत्ता अधिकारीहोवैहै ॥ और विविदिषासंन्यासकातों तत्त्वज्ञान फलहोवैहै ॥ और विद्वत्संन्यासका जीवन्मुक्ति फलहोवैहै ॥ और विविदिषासंन्यासीनैतों तिसतत्त्वज्ञानरूपफलवासतै श्रवणादिकसाधन अनुष्ठानकरीतेहैं ॥ और विद्वत्संन्यासीनै ताजीवन्मुक्तिरूपफलवासतै मनोनाशवासना क्षयादिकसाधन अनुष्ठानकरीतेहैं ॥ इसप्रकार अधिकारी फल साधन इनतीनोंकाभेदहोणेतैं सोविद्वत्संन्यास ताविविदिषासंन्यासतैं भिन्नहींमान्याचाहिये ॥ सोविद्वत्संन्यास तबीसार्थकहोवै ॥ जबी तिन गृहस्थादिकोंकूं वेदांतश्रवणविषेअधिकार तथाश्रवणादिकोंकरिकै ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति अंगीकारकरिये ॥ यातैं तिनगृहस्थादिकोंकूं तेश्रवणादिक काम्यकर्मरूपहैं यहउक्तअर्थ संभवैहै ॥ किंवा तिनगृहस्थादिकोंकूं वेदांतशास्त्रकेश्रवणतैं महानपुण्यकीउत्पत्तिभी शास्त्रनै कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( दिनेदिनेतु वेदांतश्रवणाद्वक्तिसंयुतात् गुरुशुश्रूषयालब्धात्कृच्छ्राशीतिफलंलभेत् ) अर्थयह ॥ ब्रह्मवेत्तागुरुकीसेवाकरिकैप्राप्तभया तथागुरुईश्वरकीभक्तिकरिकैयुक्त ऐसाजो दिनदिनविषे वेदांतशास्त्रकाश्रवणहै ॥ तिसवेदांतश्रवणतैं यहअधिकारीपुरुष असीकृच्छ्रकेफलकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ ईहां यहतात्पर्यहै ॥ यद्यपि वेदांतश्रवणादिकोंकेनकरणेतैं गृहस्थादिकोंकूं प्रत्यवायकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ तथापि आत्मज्ञानतैरहितपुरुषकूं महानहानिकीप्राप्ति श्रुतिस्मृतिनै कथनकरीहै ॥ यातैं तिनगृहस्थादिकोंनैभी वेदांतश्रवणादिकोंकरिकै ताआत्मज्ञानकूं अवश्यकरिकै संपादनकरणा ॥ तहांश्रुति ॥ ( नचेदिहावेदीन्महतीविनष्टिः ) अर्थयह ॥

॥ १०६ ॥



अधिकारीमनुष्यशरीरकृपाइके जबी यहपुरुष आत्माकूनहींजानेहै ॥ तबी इसपुरुषकी महानहानिहो  
 वैहै इति ॥ अन्यश्रुति ॥ ( योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वाऽस्माल्लोकात्प्रैतिसकृपणः अथयएतदक्षरंगा  
 र्गिविदित्वाऽस्माल्लोकात्प्रैतिसब्राह्मणः ) अर्थयह ॥ हेगार्गी जोपुरुष इसअक्षरपरमात्माकूनजानिकै इ  
 सलोकतैल्लोकांतरविषेगमनकरैहै ॥ सोअज्ञानीपुरुष कृपणजानणा ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे प्रा  
 सहूएधनकेउपभोगतैरहितपुरुषकूं कृपणकहेहैं ॥ तैसे नित्यप्राप्तआत्मरूपधनके साक्षात्काररूपउपभोग  
 तैरहित अज्ञानीपुरुषभी कृपणहीहै ॥ और हेगार्गी जोपुरुष इसअक्षरपरमात्माकूंसाक्षात्कारकरिकै इ  
 सशरीरतै मरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोतत्त्ववेत्तापुरुष ब्राह्मणजानणा इति ॥ अन्यश्रुति ॥ ( योहवाअस्मा  
 ल्लोकात्स्वलोकमदृष्ट्वाप्रैतिसएतमविदितोनभुनक्ति ) अर्थयह ॥ जोपुरुष इसआत्मरूपलोककूं अहंब्रह्मा  
 स्मि याप्रकारनजानिकै इसस्थूलशरीररूपलोकतैमरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसअज्ञानीपुरुषकूं सोआत्मरूप  
 लोक अज्ञातहूआ शोकमोहादिकदोषोंकीनिवृत्तिकरिकै पालनकरतानहीं इति ॥ तद्वांस्मृति ॥ ( अन्य  
 थासंतमात्मानंयोऽन्यथाप्रतिपद्यते किंतेननकृतंपापंचौरेणात्मापहारिणा ) अर्थयह ॥ जोपुरुष अकर्त्ता  
 अभोक्ताआत्माकूं कर्त्ताभोक्ता जानेहै ॥ तिसआत्मापहारीचौरपुरुषनै कौनपापकर्म नहींकन्या ॥ किं  
 तु सर्वपापकर्मकन्ये इति ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतिस्मृतियोंनै आत्मज्ञानतैरहितपुरुषोंकी निंदाकरीहै ॥  
 यातै तिनगृहस्थादिकोंनैभी श्रवणादिकोंकरिकै ताआत्मज्ञानकं अवश्यसंपादनकरणा इति ॥ ईहां केई  
 कआचार्यतों ऐसेकहेहैं ॥ विवेकादिकसाधनचतुष्टयसंपन्नसंन्यासीयोंकूंहीं वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकों  
 विषे अधिकारहै ॥ गृहस्थादिकोंकूं तिनश्रवणादिकोंविषे अधिकारहीं नहींहै ॥ और श्रुतियोंविषे याज्ञ  
 वल्क्यजनकादिकोंके तत्त्वज्ञानकाप्रतिपादक जेउपाख्यानहैं ॥ तिनउपाख्यानोका ब्रह्मात्माकेबोधन



तत्त्वा०

॥ ४१ ॥

परि०  
२

विषेहीं तात्पर्यहै ॥ आपणेअर्थविषे तात्पर्यनहींहै ॥ इसमतवालेआचार्योंका यहअभिप्रायहै ॥ श्रुतियों  
 नें तथाआचार्योंनैं संन्यासआश्रमकूहीं ताश्रवणकाअंगरूप कहाहै ॥ और अंगतैंविना अंगीकीसिद्धि  
 होतीनहीं ॥ यातैं साधनसंपन्नसंन्यासीयोंकूहीं श्रवणविषे अधिकारहै ॥ गृहस्थादिकोंकूनों ॥ तहां  
 ( ब्रह्मसंस्थोऽमृतत्वमेति ) अर्थयह ॥ लौकिकवैदिकसर्वव्यापारोंतैंरहितहोइकै केवल ब्रह्मकेचितनपराय  
 ण जोपुरुषहै ताकानाम ब्रह्मसंस्थहै ॥ ऐसाब्रह्मसंस्थसंन्यासीहीं मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिकेव्या  
 ख्यानविषे श्रीभाष्यकारोंनैं संन्यासीयोंकूहीं ब्रह्मनिष्ठाविषेअधिकार सिद्धकन्याहै ॥ और ( त्यक्ताशेष  
 क्रियस्यैवसंसारंप्रजिहासतः जिज्ञासोरेवचैकात्म्यंत्रय्यंतैष्वधिकारिता ) अर्थयह ॥ त्यागकरीहै लौकिकवै  
 दिकसर्वक्रियाजिसनैं ॥ तथा सर्वसंसारकू दुःखरूपजानिकै ताकेपरित्यागकीहैइच्छाजिसकू ॥ ऐसाजो  
 जिज्ञासुहै ॥ तिसजिज्ञासुकूहीं वेदांतशास्त्रकेश्रवणविषे अधिकारीपणाहै ॥ तथा तिनश्रवणादिकोंकरि  
 कै आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै इति ॥ इसवचनकरिकै श्रीवार्तिककार सुरेश्वराचार्यनैंभी तिनसंन्यासीयों  
 कूहीं श्रवणविषेअधिकार सिद्धकन्याहै ॥ और ( अतःसंन्यस्यकर्माणिसर्वाण्यात्मावबोधतः हित्वाऽविद्यां  
 धियैवेयात्तद्विष्णोःपरमंपदं ॥ वेदानिमंलोकममुंचपरित्यज्यात्मानमन्विच्छ ) अर्थयह ॥ सर्वकर्मोंकासंन्या  
 सकरिकै आत्मज्ञानतैं अविद्याकापरित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानकरिकैहीं मोक्षरूप  
 विष्णुकेपरमपदकू प्राप्तहोवैहै ॥ और वेदप्रतिपादित अग्निहोत्रादिककर्मोंकू तथाइसलोककू तथापरलो  
 ककू परित्यागकरिकै तूं आत्माकेप्राप्तिकीइच्छाकर ॥ अर्थात् आत्मज्ञानवासतैं श्रवणादिकोंकूकर इति ॥  
 इत्यादिकश्रुतियोंतैंभी तिनसंन्यासीयोंकूहीं श्रवणादिकोंविषेअधिकार सिद्धहोवैहै ॥ यातैं संन्यासीयों  
 केप्रतितों सोश्रवण नित्यकर्मरूपहै ॥ और गृहस्थादिकोंकेप्रति सोश्रवण काम्यकर्मरूपहै ॥ यहपूर्वउक्त

॥ १०७ ॥



व्यवस्था संभवतीनहीं ॥ किंतु जैसे गृहस्थकेप्रति अग्निहोत्रादिक नित्यकर्मरूप तथाकाम्यकर्मरूप हो  
 वैहैं ॥ तैसे संन्यासीयोंकेप्रतिहीं तेश्रवणादिक नित्यकर्मरूप तथाकाम्यकर्मरूप होवो ॥ ऐसेमाननेविषे  
 पूर्वउक्त आचार्योंकेवचनोंका तथाश्रुतिवचनोंका विरोधहोतानहीं इति ॥ तहां पूर्व अपर पर इसभेद  
 करिकै दोप्रकारकावैराग्य कहाथा ॥ तहां तावैराग्यकीतारतम्यताकरिकै संन्यासकेभेदनिरूपणप्रसंगतैं  
 श्रवणादिकविधिका विस्तारतैंनिरूपणकन्या ॥ अब ताक्रमप्राप्तपरवैराग्यका निरूपणकरेहैं ॥ ( गुणेषु  
 वैतृण्यं परवैराग्यं ) अर्थयह ॥ सत्व रज तम इनतीनगुणोंकापरिणामरूप जे इसलोकके तथापरलोकके  
 विषयहैं ॥ तिनसर्वविषयोंकीतृष्णातैंरहितपणेकानाम परवैराग्यहै ॥ यहपरवैराग्यकास्वरूप पतंजलिभ  
 गवान्नेभी योगशास्त्रविषे कहाहै ॥ तहांसूत्र ॥ ( ततःपरंपुरुषख्यातेर्गुणवैतृण्यं ) अर्थयह ॥ प्रत्यक  
 आत्माकेज्ञानतैं इसपुरुषकूं जो गुणोंकेपरिणामरूपसर्वविषयोंविषे तृष्णातैंरहितपणाहोवैहै ॥ सो परवै  
 राग्य कहाजावैहै इति ॥ सोयहपरवैराग्य निर्विकल्पकनामाअसंप्रज्ञातसमाधिका अंतरंगसाधन हो  
 वैहै ॥ यहवार्त्ताभी तापतंजलिभगवान्ने कहीहै ॥ तहांसूत्र ॥ ( तीव्रसंवेगानामासन्नःसमाधिलाभः )  
 अर्थयह ॥ तापरवैराग्यवालेपुरुषोंकूं शीघ्रहीं ताअसंप्रज्ञातसमाधिकीप्राप्तिहोवैहै इति ॥ तहां पूर्व ता  
 त्पर्यकेनिरूपणप्रसंगतैं श्रवणादिकोंकानिरूपणकन्या ॥ अब तिसीप्रकृतअर्थकूं निरूपणकरेहैं ॥ जैसे  
 पूर्वउक्तउपक्रमउपसंहारादिकषट्‌लिंगोंकरिकै वेदांतवाक्योंकेतात्पर्यका निर्णयहोवैहै ॥ तैसे कर्मकांडके  
 वाक्योंकाभी तिनषट्‌लिंगोंकरिकैहीं तात्पर्यकानिर्णयहोवैहै ॥ इसप्रकारकेउक्ततात्पर्यकीजाअनुपपत्ति  
 है ॥ साईहीं पूर्वउक्तलक्षणाकाबीज होवैहै ॥ सातात्पर्यकीअनुपपत्ति तिसतिसलक्षणाकेनिरूपणविषे  
 पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ एकपदार्थका दूसरेपदार्थविषे जोसंबंधरूपअन्वयहै ॥ ताअ



तत्त्वा०

॥ ४२ ॥

न्वयकीअनुपपत्तिहीं तालक्षणाकाबीजहै ॥ जैसे । गंगायांघोषः । इसउक्तउदाहरणविषे गंगापदकेश  
 क्यअर्थरूप जलप्रवाहविषे घोषका आधारतासंबंधरूपअन्वय बनतानहीं ॥ यातैं ताअन्वयकीअनुपप  
 त्तितैंहीं तागंगापदकी तीरविषेलक्षणा करीजावैहै ॥ तैसे सर्वत्र ताअन्वयानुपपत्तितैंहीं लक्षणासंभवै  
 है ॥ यातैं अन्वयानुपपत्तिहीं तालक्षणाकाबीजहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जोकदाचित् सर्वत्र साअ  
 न्वयानुपपत्तिहीं लक्षणाकाबीज मानिये ॥ तौं यष्टिधरपुरुषोंकेभोजनकरावणेवासतै किसीआप्तवक्तापु  
 रुषनैं उच्चारणकन्याजो ( यष्टीःप्रवेशय ) यहवचनहै ॥ तिसवचनकूंश्रवणकरिकै श्रोतापुरुष तायष्टिपद  
 की यष्टिधरपुरुषोंविषे लक्षणाकरेहै ॥ सालक्षणा नहींहोणीचाहिये ॥ काहेतैं जैसे पुरुषोंका ताप्रवेशरूप  
 क्रियाविषे संबंधरूपअन्वय संभवैहै ॥ तैसे तिनकाष्ठविशेषरूपयष्टियोंकाभी ताप्रवेशक्रियाविषे सोअन्व  
 य संभवैहै ॥ यातैं सोअन्वयानुपपत्तिरूपलक्षणाकाबीज तहांसंभवतानहीं ॥ किंतु तात्पर्यकीअनुपपत्ति  
 रूपहीं लक्षणाकाबीज तहांसंभवैहै ॥ और । गंगायांघोषः । इत्यादिक जितनैंकीलक्षणाकेउदाहरण पूर्व  
 कथनकन्येहैं ॥ तहांसर्वत्र सोतात्पर्यकीअनुपपत्तिरूपबीज विद्यमानहै ॥ यातैं सर्वत्रअनुगतहोणेतैं सा  
 तात्पर्यकीअनुपपत्तिहीं लक्षणाकाबीजहै ॥ व्यभिचारीहोणेतैं साअन्वयानुपपत्ति लक्षणाकाबीज नहीं  
 है इति ॥ तहां नैयायिक शक्तिवृत्तिकीन्याई लक्षणावृत्तिभी केवल पदविषेहींमानेहैं ॥ वाक्यविषे लक्ष  
 णावृत्ति मानतेनहीं ॥ तिनोकेमतकेखंडनकरणेवासतै वाक्यविषेभी लक्षणासिद्धकरेहैं ॥ तहां साउक्तल  
 क्षणा केवल पदविषेहीं नहींहोवैहै ॥ किंतु वाक्यविषेभी सालक्षणाहोवैहै ॥ जैसे ( गंभीरायांनद्यांघो  
 षः ) इसपदसमूहरूपवाक्यकी तीरविषेलक्षणा अंगीकारकरीहै ॥ याकारणतैंहीं वेदविषे अर्थवादवाक्यों  
 की स्तुतिविषेलक्षणा अंगीकारकरीहै ॥ तहां विधिवाक्यकरिकैप्राप्तअर्थकी स्तुतिकाबोधक जोवाक्य

परि०  
२

॥ १०८ ॥



हैं ताकानाम अर्थवाद है ॥ और गुणीविषे जो गुणका कथन है ताकानाम स्तुति है ॥ जो कदाचित् वाक्यविषे लक्षणा नहीं अंगीकार करिये ॥ किंतु पदमात्रविषे ही लक्षणा अंगीकार करीये ॥ तौ ता अर्थवाद वाक्यविषे स्थित एकपदकी लक्षणा करिके ही ता स्तुतिरूप अर्थका बोध होइ सके है ॥ दूसरे पद व्यर्थ होवेंगे ॥ यातैं ता पदसमूह रूप वाक्यकी ही ता स्तुतिविषे लक्षणा मानी चाहिये ॥ या कारण तैं ही शास्त्रकारों नैं तिन अर्थवाद वाक्योंकी विधिवाक्यके साथि पदैक वाक्यता अंगीकार करी है ॥ तहां आकांक्षाके वश तैं पदका जो विधिवाक्यके साथि अन्वय है ताकानाम पदैक वाक्यता है ॥ यद्यपि ते अर्थवाद वचन पद रूप नही हैं ॥ किंतु पदोंका समूह रूप होने तैं वाक्य रूप ही हैं ॥ तथापि ते अर्थवाद वाक्य लक्षणावृत्ति करिके एक स्तुति रूप पदार्थके बोधक होने तैं पदस्थानीय कहे जावैं हैं ॥ ऐसे पद रूप अर्थवाद वाक्योंकी जा विधिवाक्यके साथि एक वाक्यता है ॥ सा पदैक वाक्यता कही जावैं है ॥ जैसे ( वायवीयं श्वेतं पशुमालभेत ) अर्थ यह ॥ वायु है देवता जिसका ऐसे श्वेत पशु कूं यह पुरुष हनन करै ॥ इस विधिवाक्य नैं वायु देवता संबंधी यागका विधान कन्या है ॥ और तिसी प्रकरणविषे ( वायुर्वैश्वेपिष्ठा देवता ) अर्थ यह ॥ सो वायु देवता शीघ्र गतिवाला है ॥ इस अर्थवाद वाक्य नैं ता वायु देवताकी स्तुति करी है ॥ यातैं शीघ्र फलकी प्राप्ति करणे हारे वायु देवता संबंधी याग कूं यह पुरुष करै इस प्रकार तैं ता पद रूप अर्थवाद वाक्यकी ता विधिवाक्यके साथि जा एक वाक्यता है ताकानाम पदैक वाक्यता है इति ॥ और आपणे आपणे अर्थविषे तात्पर्यवाले जे वाक्य हैं ॥ तिन वाक्योंकी परस्पर अंग अंगीभाव आकांक्षाके वश तैं जा एक वाक्यता होवैं है ताकानाम वाक्यैक वाक्यता है ॥ जैसे ( दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत ) अर्थ यह ॥ स्वर्गकी कामनावाला पुरुष दर्शपूर्णमासना मायागों कूं करै ॥ इस विधिवाक्य नैं दर्शपूर्णमासनामा अंगी यागका विधान कन्या है ॥ और तिसी प्रकरण



तत्त्वा०

॥ ४३ ॥

णविषे ( समिधोयजति ) इसवचननै समिधनामा अंगयागका विधानकन्याहै ॥ और अंगीयागकूं अंग  
 गरूपयागकी अपेक्षा अवश्यहोवैहै ॥ यातैं स्वर्गकामपुरुष समिधादिक अंगयागविशिष्टदर्शपूर्णमासरूप  
 अंगीयागकूंकरै याप्रकारतैं ता अंगबोधकवाक्यकी जा अंगीबोधकवाक्यके साथि एकवाक्यताहोवैहै ता  
 कानाम वाक्यैकवाक्यताहै इति ॥ किंवा जैसे पूर्वउक्ततात्पर्यज्ञान वाक्यार्थज्ञानविषे कारणहोवैहै ॥ तैसे  
 अवांतरवाक्योंके अर्थकाज्ञानभी महावाक्यके अर्थज्ञानविषे कारणहोवैहै ॥ ता अवांतरवाक्यार्थज्ञानतैं बिना  
 सोमहावाक्यार्थज्ञान होतानहीं ॥ तहां महावाक्यके अंतरप्रविष्टजेवाक्यहैं तिनों कानाम अवांतरवाक्यहै ॥  
 यातैं यहसिद्धभया ॥ शक्तिलक्षणरूपवृत्तिकाज्ञान तथा आकांक्षाकाज्ञान तथा योग्यताकाज्ञान तथा आस  
 त्ति तथा तात्पर्यकाज्ञान तथा अवांतरवाक्यार्थकाज्ञान यह पूर्वउक्तसर्व ता वाक्यके सहकारीहोवैहैं ॥ तिनस  
 र्वसहकारीयोंकरिकै संपन्नहूआ सो वाक्य परोक्षप्रमाका तथा अपरोक्षप्रमाका जनकहोवैहै ॥ तहां जो वा  
 क्य परोक्षअर्थका प्रतिपादकहोवैहै ॥ सो वाक्यतों परोक्षप्रमाका जनकहोवैहै ॥ जैसे ( स्वर्गकामोयजेत ।  
 सदेवसौम्येदमग्र आसीत् । दशमोऽस्ति ) इत्यादिक वैदिकलौकिकवाक्य परोक्षस्वर्गादिकोंके प्रतिपादक  
 होणेतैं परोक्षप्रमाके जनकहोवैहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ परोक्षअर्थका प्रतिपादकवाक्य परोक्षप्रमाका जन  
 कहोवैहै यह पूर्व आपनैकह्या ॥ तहां ता अर्थविषे परोक्षपणा क्याहै ॥ ऐसी जिज्ञासाके हूए ॥ अब ता  
 अर्थनिष्ठपरोक्षताका लक्षणकहेहैं ॥ ( योग्यविषयस्यानावृतसंवित्तादात्म्याभावः परोक्षत्वं ) अर्थ यह ॥  
 अज्ञानकृत आवरणतैरहित जो साक्षीचैतन्यहै ता कानाम अनावृतसंवितहै ॥ ऐसे अनावृतसंवितके साथि  
 प्रत्यक्षयोग्यविषयके तादात्म्यका जो अभावहै ॥ यहहीं ता विषयविषे परोक्षपणाहै ॥ जैसे स्वर्गादिक योग्य  
 विषयोंका अनावृतसाक्षीचैतन्यके साथि तादात्म्यहैनहीं ॥ यातैं ते स्वर्गादिक परोक्ष कहेजावैहैं ॥ और

परि०  
२

॥ १०९ ॥



जिसकालविषे घटपटादिविषयाकार अंतःकरणकीवृत्ति नहीं उत्पन्न भई ॥ तिसकालविषे तिनघटपटादि  
 कयोग्यविषयोंका ताअनावृतसाक्षीचैतन्यकेसाथि तादात्म्यहैनहीं ॥ यातैं तिसकालविषे तेघटपटादि  
 कभी परोक्ष कहेजावैहैं ॥ तहां इसलक्षणविषे विषयका योग्य यहविशेषण जोनहीं कहते ॥ तौ धर्मअ  
 धर्मविषे तालक्षणकीअव्याप्तिहोती ॥ जिसकारणतैं ताधर्मअधर्मका ताअनावृतसाक्षीचैतन्यकेसाथि ता  
 दात्म्यहींहै ॥ परंतु सोधर्माधर्म प्रत्यक्षकेयोग्यनहींहै ॥ किंतु अयोग्यहै ॥ यातैं योग्यपदकेकहणेतैं ता  
 धर्माधर्मविषेभी सोपरोक्षपणा संभवैहै इति ॥ ऐसेपरोक्षअर्थकूविषयकरणेहाराजोप्रमाज्ञानहै ॥ सोज्ञान  
 भी परोक्ष कहाजावैहै ॥ अर्थात् ऐसेपरोक्षअर्थकाविषयकपणाहीं ताप्रमाज्ञानविषे परोक्षपणाहै ॥ जैसे  
 ( स्वर्गोऽस्ति अयंधर्माधर्मवान् दशमोऽस्ति ) इत्यादिकवाक्यजन्यप्रमाविषे जो स्वर्ग धर्माधर्म दशम  
 इत्यादिकपरोक्षअर्थका विषयकपणाहै यहहीं परोक्षपणाहै ॥ अथवा प्रमाणचैतन्यविषे जोविषयचैतन्य  
 तैंभिन्नपणाहै यहहीं ताप्रमाज्ञानविषे परोक्षपणाहै ॥ जैसे स्वर्गोऽस्ति इत्यादिवाक्यजन्यवृत्तिअवच्छिन्न  
 प्रमाणचैतन्यविषे स्वर्गादिविषयावच्छिन्नचैतन्यतैंजोभिन्नपणाहै यहहीं तास्वर्गादिविषयकज्ञानविषे परो  
 क्षपणाहै ॥ इसप्रकार अनुमितिआदिकज्ञानोंविषेभी सोपरोक्षपणा जानिलेणा ॥ तहां परोक्षस्थलविषे  
 अंतःकरणकीवृत्ति विषयदेशविषेजातीनहीं ॥ किंतु शरीरकेभीतरहीं सावृत्ति उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं ता  
 विषयवृत्तिरूपउपाधियोंकी भिन्नभिन्नदेशविषेस्थितिहोणेतैं तावृत्तिअवच्छिन्नचैतन्यकेसाथि ताविषया  
 वच्छिन्नचैतन्यकी एकताहोतीनहीं ॥ यहवार्त्ता पूर्वप्रत्यक्षनिरूपणविषे कहिआयेहैं ॥ यातैं तावृत्तिअ  
 वच्छिन्नप्रमाणचैतन्यविषे विषयावच्छिन्नचैतन्यतैंभिन्नतारूप ज्ञाननिष्ठपरोक्षपणा संभवैहै इति ॥ और  
 जोवाक्य अपरोक्षअर्थका प्रतिपादकहोवैहै ॥ सोवाक्य अपरोक्षप्रमाकाजनकहोवैहै ॥ जैसे ( तत्त्वम



तत्त्वा०

॥ ४४ ॥

परि०  
२

सि ) यह वैदिकवाक्य ब्रह्मात्मरूप अपरोक्ष अर्थका प्रतिपादक होने तैं अहं ब्रह्मास्मि या प्रकारकी अपरोक्ष प्रमाका जनक होवै है ॥ और ( दशमस्त्वमसि ) यह लौकिकवाक्य दशमपुरुषरूप अपरोक्ष अर्थका प्रतिपादक होने तैं अहं दशमः या प्रकारकी अपरोक्ष प्रमाका जनक होवै है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिस अपरोक्ष अर्थका प्रतिपादक हू आवाक्य अपरोक्ष प्रमाका जनक होवै है ॥ तिस अर्थविषे सो अपरोक्षपणा क्या है ॥ ऐसी जिज्ञासा के हू ॥ अब ता अर्थ निष्ठ अपरोक्षता का लक्षण कहै हैं ॥ ( योग्यविषयस्यानावृतसंवितादात्म्यं अपरोक्षत्वं ) अर्थ यह ॥ प्रत्यक्ष योग्यविषयका जो अनावृत साक्षी चैतन्य के साथि तादात्म्य है ॥ यह ही ता विषयविषे अपरोक्षपणा है ॥ जैसे घटपटादि आकारवृत्तिकालविषे तिन घटपटादिकों का अनावृत साक्षी चैतन्य के साथि तादात्म्य होवै है ॥ यह ही तिन घटपटादिकों विषे अपरोक्षपणा है ॥ और धर्माधर्मका यद्यपि ता अनावृत साक्षी चैतन्य के साथि तादात्म्य है ॥ तथापि सो धर्माधर्म प्रत्यक्ष के योग्य नहीं है ॥ या तैं इस लक्षणविषे विषयका योग्य इस विशेषण के कहने तैं ता धर्माधर्मविषे ता अपरोक्षपणे के लक्षणकी अतिव्याप्ति होवै नहीं ॥ यद्यपि सिद्धांतविषे नित्य अपरोक्षरूप एक ही चैतन्य है ॥ ता एक चैतन्यविषे साक्षी चैतन्य तों अनावृत है और विषय चैतन्य आवृत है या प्रकारका भेद कहना संभवता नहीं ॥ तथापि विषय अंतःकरणादिक उपाधियों के भेद तैं ता चैतन्यका भेद पूर्व कथन करि आये हैं ॥ और घटादिक पदार्थों विषे लोकों का संशय अनवभास विपर्यय देखने विषे आवै है ॥ और अंतःकरण उपहित साक्षी चैतन्यविषे किसी कूं भी ते संशय आदिक होते नहीं ॥ या तैं ता कार्य केवल तैं सो घटादि अवच्छिन्न चैतन्य तों आवृत कहा जावै है ॥ और सो साक्षी चैतन्य अनावृत कहा जावै है ॥ जो कदाचित् ता साक्षी चैतन्य कूं भी आवृत मानिये ॥ तों प्रकाशक के अभाव तैं जगत्विषे अंधता प्राप्त होवैगी ॥ अर्थात् कोई भी वस्तु का भान नहीं होवैगा ॥ या तैं ता साक्षी कूं

॥ ११० ॥



सर्वदा अनावृतही मान्या चाहिये ॥ और घटादिविषयावच्छिन्नचैतन्यतों घटादिआकारवृत्तिकी उत्पत्तितैं  
 पूर्व आवृतहोवैहै ॥ और तावृत्तिकालविषे आवरणतैरहितहूआ तासाक्षीचैतन्यसे अभिन्नहोवैहै ॥ ति  
 सकालविषे तिनघटादिकविषयोंका जो ताअनावृतसाक्षीचैतन्यकेसाथि तादात्म्यहै ॥ यहही तिनघटा  
 दिकविषयोंविषे अपरोक्षपणाहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व विषयप्रत्यक्षकेलक्षणविषे घटादिकविष  
 योंका साक्षीचैतन्यकेसाथि तादात्म्य कहाथा ॥ सोतादात्म्य क्याहै ॥ अर्थात् एकताकानाम तादा  
 त्म्यहै ॥ अथवा भेदसहितअभेदकानाम तादात्म्यहै ॥ तहां प्रथमपक्षतों संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं  
 तमप्रकाशकीन्याई जडचैतन्यका विरोधहोणेतैं एकतासंभवतीनहीं ॥ तैसे द्वितीयपक्षभी संभवतान  
 हीं ॥ जिसकारणतैं समानसत्तावालेभेदअभेदका परस्परविरोधहोणेतैं एकअधिकरणविषे स्थितिहींसं  
 भवतीनहीं ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहूए ॥ अब तिसतादात्म्यकालक्षण कहेहैं ( तद्विन्नत्वेसतितदभिन्नसत्ता  
 कत्वं तादात्म्यं ) अर्थयह ॥ जिसपदार्थतैं जोवस्तु भिन्नप्रतीतहोवैहै ॥ और जिसपदार्थकीसत्तातैं जि  
 सवस्तुकीसत्ता भिन्नहोतीनहीं ॥ तिसपदार्थविषे जो तिसवस्तुकासंबंधहै ताकानाम तादात्म्यहै ॥ जै  
 से घटपटादिककार्योंका मृत्तिकातंतुआदिकउपादानकारणविषे तादात्म्यहै ॥ तहां । अयंघटः अयंपटः ।  
 याप्रकारकीप्रतीतितैं तेघटपटादिक आपणेमृत्तिकातंतुआदिकउपादानकारणतैं भिन्नहूएभासेहैं ॥ और  
 ताउपादानकारणकीसत्तातैं तिनघटपटादिककार्योंकी भिन्नसत्ताहैनहीं ॥ यातैं तिनघटपटादिककार्यों  
 का आपणेमृत्तिकातंतुआदिकउपादानकारणविषे तादात्म्य संभवैहै ॥ इसप्रकार कल्पितरजतसर्पादि  
 कोंकाभी आपणेअधिष्ठानविषे तादात्म्यहींहोवैहै ॥ तैसे जिसकालविषे अंतःकरणकीवृत्ति चक्षुआदि  
 कइंद्रियद्वारा बाहरिनिकसिकै घटादिआकारनहींभईथी ॥ तिसकालविषे तेघटादिकविषय स्वावच्छिन्न



तत्त्वा०

॥ ४५ ॥

परि०

२

चैतन्यविषे अध्यस्तथे ॥ और जबी सावृत्ति बाह्यनिकसिकै घटादिआकारहोवैहै ॥ तबी तावृत्तिविषयरूपउपाधियोंकी एकदेशविषेस्थितिकरिकै तत्तुपहितचैतन्योंकीभी एकताहीहोवैहै ॥ अर्थात् घटादिअवच्छिन्नचैतन्य तथावृत्तिअवच्छिन्नचैतन्य तथाअंतःकरणविशिष्टप्रमाताचैतन्य तथाअंतःकरणउपहितसाक्षीचैतन्य इनसर्वोंकी ताकालविषे एकताहोवैहै ॥ तिसकालविषे तेघटादिक साक्षीचैतन्यविषे अध्यस्तहोवैहै ॥ और अध्यस्तवस्तुकी अधिष्ठानतैंभिन्नसत्ता होतीनहीं ॥ जैसे कल्पितरजतसर्पादिकोंकी शुक्तिरज्जुआदिकअधिष्ठानतैं भिन्नसत्तानहींहै ॥ इसप्रकार तिनघटादिकोंविषे जोसाक्षीचैतन्यकीसत्तातैंभिन्नसत्तातैंरहितपणाहै ॥ यहहीं तिनघटादिकोंका तासाक्षीचैतन्यकेसाथि तादात्म्यहै ॥ और यहसाक्षीकेसाथितादात्म्यहीं तिनघटादिकोंविषे अपरोक्षपणाहै इति ॥ ऐसेअपरोक्षअर्थकाप्रतिपादकवाक्य अपरोक्षप्रमाकाहीं जनकहोवैहै ॥ जैसे । दशमस्त्वमसि । इसवाक्यविषे दशमपुरुष त्वंपदार्थतैंअभिन्नहोनेतैं अपरोक्षहींहै ॥ यातैं ताअपरोक्षअर्थकीप्रतिपादकताकरिकै तावाक्यतैं श्रोतापुरुषकूं अहंदशमः याप्रकारकी अपरोक्षप्रमाहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ तावाक्यतैं परोक्षप्रमा उत्पन्नहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ गामानय स्वर्गोऽस्ति । इत्यादिकसर्ववाक्योंका परोक्षप्रमाकेउत्पन्नकरणेकाहीं स्वभावहोवैहै ॥ और वस्तुकेस्वभावका अन्यथापणा होतानहीं ॥ यातैं दशमस्त्वमसि इसवाक्यतैंभी तादशमपुरुषकूं प्रथम आपणा परोक्षज्ञानहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर मनरूपइंद्रियकरिकै आपणेदशमपणेका साक्षात्कारहोवैहै ॥ काहेतैं जोजोप्रत्यक्षज्ञानहोवैहै ॥ सोसो इंद्रियकरिकैहींजन्यहोवैहै ॥ यातैं आत्माकेप्रत्यक्षविषे तथाआत्मवृत्तिसुखदुःखादिकोंकेप्रत्यक्षविषेभी सोइंद्रियरूपकरणकरिकैजन्यत्व अवश्यमान होवैगा ॥ तहां बाह्यचक्षुआदिकइंद्रियोंकूंताैं ताअंतरप्रत्यक्षकेउत्पन्नकरणेका सामर्थ्यहैनहीं ॥ परिशे

॥ १११ ॥



पतें तामनकूंहीं अन्वयव्यतिरेककरिकै ताप्रत्यक्षज्ञानकीकरणता मानणीहोवेंगी ॥ जोकदाचित् ताप्र  
 त्यक्षविषे मनकूंकरणनहींमानोंगे ॥ तौं अहंसुखी अहंदुःखी इसप्रकारके सुखदुःखादिकोंकेप्रत्यक्षज्ञान  
 विषे अप्रमापणाहीं प्राप्तहोवेंगा ॥ यातें तादशमपुरुषकूं मनकरिकैहीं आपणेदशमपणेका साक्षात्कारहो  
 वैहै ॥ तावाक्यकरिकैहोतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सुखदुःखादिकोंकेसाक्षात्कारका करणरूपक  
 रिकै जो मनविषेइंद्रियपणा सिद्धहोवै ॥ तौं तादशमपुरुषकेसाक्षात्कारविषे तामनकूं करणतासंभवै ॥  
 परंतु तामनविषे सोइंद्रियपणाहीं संभवतानहीं ॥ यहवार्त्ता पूर्वप्रत्यक्षप्रमाकेनिरूपणविषे कथनकरिआ  
 येहैं ॥ और सुखदुःखादिकोंकाज्ञानतौं नित्यसाक्षीरूपहोणेतें किसीभीकरणकरिकैजन्यनहींहै ॥ यातें  
 तासुखादिज्ञानकाकरणरूपकरिकै तामनकूं इंद्रियरूपता संभवतीनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सुखदुःखा  
 दिकोंकेज्ञानकूं जोनित्यसाक्षीरूप मानोंगे ॥ तौं तानित्यसाक्षीरूपज्ञानका उत्पत्ति तथाविनाश संभवता  
 नहीं ॥ यातें मेरेकूं अबीसुखकाज्ञान उत्पन्नभयाहै और दुःखकाज्ञान नष्टभयाहै इसलोकोंकेअनुभवका  
 विरोधहोवेंगा ॥ तथा इसपुरुषकूं कालांतरविषे तिनसुखदुःखादिकोंकीस्मृतिभी नहींहोवेंगी ॥ जिसका  
 रणतें अनुभवकेध्वंसजन्यसंस्कारोंतेंहीं सास्मृतिहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तासाक्षीचैतन्यके उत्प  
 त्तिविनाशकेअभावहूएभी तासाक्षीचैतन्यकेविषय जेसुखदुःखादिकहैं ॥ तिनोंका उत्पत्तिविनाश होवै  
 है ॥ ताकरिकै तासाक्षीरूपअनुभवविषेभी सोउत्पत्तिविनाशव्यवहार संभवैहै ॥ तथा संस्कारोंकीउत्प  
 त्तिकरिकै कालांतरविषे तिनसुखदुःखादिकोंकीस्मृतिभी संभवैहै ॥ यातें सुखदुःखादिकोंकेज्ञानविषे ताम  
 नकूं करणरूपतासंभवतीनहीं ॥ इसप्रकार आत्माकेसाक्षात्कारविषेभी तामनकूं करणतासंभवतीनहीं ॥  
 काहेतें श्रुतिनै शुद्धआत्माकूंतौं मनवाणीका अविषयकह्याहै ॥ यातें ताशुद्धआत्माकेसाक्षात्कारविषे



तत्त्वा०

॥ ४६ ॥

तौ तामनकं करणतासंभवतीनहीं ॥ तैसे सोपाधिकआत्माकेसाक्षात्कारविषेभी तामनकं करणतासंभवतीनहीं ॥ जिसकारणतैं ( कामःसंकल्पोविचिकित्सा ) इत्यादिकश्रुतिनैं तामनकं वृत्तिज्ञानका उपादानकारणकह्याहै ॥ और उपादानकारणकूं तिसकार्यकेप्रति करणरूपता होतीनहीं ॥ किंतु निमित्तकारणकूंहीं करणरूपताहोवैहै ॥ जैसे घटकेप्रति उपादानकारणरूपमृत्तिकाकूं करणरूपतानहींहै ॥ किंतु निमित्तकारणरूपदंडादिकोंकूंहीं करणरूपताहै ॥ तैसे वृत्तिज्ञानकेप्रति उपादानकारणरूपमनकूं ता वृत्तिज्ञानकेप्रति करणरूपतासंभवतीनहीं ॥ किंवा जैसे चाक्षुषज्ञानकीउत्पत्तिविषे सूर्यादिकोंकाआलोक चक्षुइंद्रियका सहकारीहोवैहै ॥ तैसे सोमनभी शब्दादिकप्रमाणोंका सहकारीहोवैहै ॥ यातैं जैसे ताआलोककूं पृथक्प्रमाणतानहींहै ॥ तैसे तामनकूंभी पृथक्प्रमाणता संभवतीनहीं ॥ किंवा जैसे चक्षुआदिकइंद्रियोंके रूपादिक असाधारणविषय होवैहैं ॥ तैसे तामनका कोईअसाधारणविषय हैनहीं ॥ और अंतःकरण तथाताकेसुखदुःखादिकधर्मतौ पूर्वउक्तरीतिसैं केवल साक्षीभास्यहींहै ॥ यातैं असाधारणविषयकेअभावतैंभी तामनविषे साक्षात्कारकीकरणता संभवतीनहीं ॥ यहवार्त्ता आचार्योंनैंभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( प्रमाणसहकारित्वाद्विषयस्याप्यभावतः नप्रमाणंमनोऽस्माकंप्रमादेराश्रयत्वतः ) अर्थयह ॥ प्रमाणकासहकारिहोणेतैं तथाअसाधारणविषयकेअभावतैं तथाप्रमाज्ञानादिकोंकाआश्रयहोणेतैं तामनकूं प्रमाणरूपता सिद्धांतविषेअंगीकारनहींहै इति ॥ और प्रमाणजन्यअपरोक्षज्ञानकूंहीं अपरोक्षभ्रमका निवर्त्तकपणाहोवैहै ॥ यातैं अहंदशमः इससाक्षात्कारविषे तामनकूं करणरूपता संभवतीनहीं ॥ किंतु दशमस्त्वमसि इसवाक्यकूंहीं करणरूपतासंभवैहै यहसिद्धभया ॥ इसप्रकार तत्त्वमसि इसवाक्यविषेभी तत्पदकालक्ष्यअर्थजोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मका त्वंपदकेलक्ष्यअर्थसाक्षीकेसाथि सर्वदाअभेदहै ॥

परि०  
२

॥ ११२ ॥



यातैं ताअनावृतसाक्षीकेसाथि तादात्म्यवालाहोणेतैं सोब्रह्म नित्यअपरोक्षहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( यत्साक्षा  
दपरोक्षाद्ब्रह्म ) अर्थयह ॥ जोब्रह्म सर्वकाआत्मारूपहोणेतैं साक्षात्अपरोक्षरूपहै ॥ ऐसेअपरोक्षब्रह्मके  
प्रतिपादक जेतत्त्वमसि इत्यादिकमहावाक्यहैं ॥ तिनवाक्योंतैं इसपुरुषकूं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकीअ  
परोक्षप्रमाहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ ईहां अपरोक्ष प्रत्यक्ष साक्षात्कार यहतीनोशब्द एकहींअर्थकेवाचकहोवै  
हैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तत्त्वमसि इसवाक्यतैं जो अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकीअपरोक्षप्रमा उत्पन्नहोती  
होवै ॥ तौं सर्वलोकोंकूं तावाक्यकेश्रवणतैं साअपरोक्षप्रमा उत्पन्नहोणीचाहिये ॥ ॥ समाधान ॥ ॥  
जोपुरुष विवेकादिकचतुष्टयसाधनोंकरिकैसंपन्नहै ॥ तथा शोधनकन्याहैतत्त्वंपदार्थ जिसनैं ॥ तथा श्र  
वणमनननिदिध्यासनकरिकै निवृत्तहोइगईहै असंभावना विपरीतभावना जिसकी ॥ ऐसेसाधनसंपन्नअ  
धिकारीपुरुषकूंहीं तत्त्वमसिवाक्यतैं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकीअपरोक्षप्रमा उत्पन्नहोवैहै ॥ साधनरहित  
पुरुषकूं उत्पन्नहोवैनहीं ॥ ऐसीअपरोक्षप्रमाकीउत्पत्तिविषे सोतत्त्वमसिवाक्यहीं करणहै ॥ मन करण  
नहींहै ॥ किंतु श्रवणादिसंस्कृतशुद्धमन सहकारीकारणहै ॥ किंवा ब्रह्मात्मसाक्षात्कारविषे तावेदवाक्य  
कूंहीं करणताहै ॥ यहअर्थ केवल पूर्वउक्तयुक्तियोंकरिकैहींसिद्धनहींहै ॥ किंतु श्रुतिप्रमाणकरिकैभी  
सिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( सर्वेवेदायत्पदमामनन्ति । तंतवौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि । नावेदविन्मनुतेतंबृहंतं )  
अर्थयह ॥ सर्ववेद जिसपरमात्मपदकूं साक्षात् वा परंपरातैं कथनकरेहैं ॥ अर्थात् जिसपरमात्मविषय  
कसाक्षात्कारकूं उत्पन्नकरेहैं ॥ और केवलउपनिषदरूपशब्दप्रमाणकरिकैजानणेयोग्य जोपरमात्मापुरु  
षहै ॥ तिसकास्वरूप मैं तुमारेसंप्रच्छताहूं ॥ और वेदांतवाक्योंकेज्ञानतैरहितपुरुष ताब्रह्मकूं नहींजानि  
सकता इति ॥ इत्यादिकश्रुतियां ताब्रह्मसाक्षात्कारविषे वेदांतवाक्यकूंहीं प्रमाणरूपता कथनकरेहैं ॥



तत्त्वा०

॥ ४७ ॥

परि०

२

और ( मनसैवानुदृष्टव्यं । दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्या ) इत्यादिकश्रुतियांतों ताब्रह्मसाक्षात्कारविषे ताशुद्धमनकूं सहकारीपणा कथनकरेहैं ॥ यातैं तिनश्रुतियोंकाभी विरोधहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् ताउक्तश्रुतितैं मनकूं आत्मसाक्षात्कारविषे करणहींमानिये ॥ तों आत्मसाक्षात्कारविषे मनकीकरणताकूंनिषेध करणेहारी जे ( यन्मनसानमनुते । अप्राप्यमनसासह ) इत्यादिकश्रुतियांहैं ॥ तिनोंका विरोधहोवैगा ॥ ताविरोधकेनिवृत्तकरणेवासतैं ताउक्तश्रुतितैं मनकूं सहकारीकारणहीं मानणायोग्यहै ॥ यद्यपि ( यद्वा चाऽनभ्युदितं । यतोवाचोनिवर्त्तते ) इत्यादिकश्रुतियोंनैं ताआत्मसाक्षात्कारविषे तावाक्यप्रमाणका भी निषेधकन्याहै ॥ तथापि तिनश्रुतियोंनैं ताशब्दका शक्तिवृत्तितैं निषेधकन्याहै ॥ अर्थात् सोशब्द शक्तिवृत्तिकरिकैं ताब्रह्मकाबोध नहींकरेहै ॥ और भागत्यागलक्षणाकरिकैंतों तेतत्त्वमसिआदिकवाक्य ताब्रह्मकेबोधकहींहोवैहैं ॥ यातैं ताब्रह्मसाक्षात्कारविषे तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यकूंहीं करणरूप तासंभवैहै इति ॥ ॥ इतिशाब्दीप्रमासमाप्ता ॥ ४ ॥ ॥ अब पंचमीअर्थापत्तिप्रमाका निरूपणकरेहैं ॥ तहां ( अनुपपद्यमानार्थदर्शनात्तदुपपादकभूतार्थांतरकल्पनं अर्थापत्तिप्रमा ) अर्थयह ॥ अनुपपद्यमानअर्थकेज्ञानतैं ताअर्थकेउपपादकरूपअर्थांतरकी जाकल्पनाहै ताकानाम अर्थापत्तिप्रमाहै ॥ जैसे दिनविषेनहींभोजनकरणेहारे देवदत्तनामापुरुषकेशरीरकीस्थूलतारूपजोपीनत्वहै ॥ सोपीनत्व रात्रिभोजनतैंविना बनतानहीं ॥ यातैं तापीनत्वकेज्ञानतैं तिसदेवदत्तपुरुषके रात्रिभोजनकीकल्पना करी जावैहै ॥ ताकल्पनाकानाम अर्थापत्तिप्रमाहै ॥ तहां यहदिवाअभोजीपुरुषकापीनत्व रात्रिभोजनतैं विना बनतानहीं याप्रकारकाज्ञानतों ताअर्थापत्तिप्रमाकाकरणहोणेतैं अर्थापत्तिप्रमाण कहाजावैहै ॥ और यहपुरुष रात्रिविषेभोजनकरेहै याप्रकारकाज्ञान अर्थापत्तिप्रमा कहाजावैहै इति ॥ ईहां नैयायि

॥ ११३ ॥



कतों अर्थापत्ति प्रमाण कूं अंगीकार करते नहीं ॥ किंतु व्यतिरेकी अनुमान करिकेहीं तारात्रिभोजन का ज्ञान मानेहैं ॥ ता अनुमान का यह आकार है ॥ (अयं देवदत्तः रात्रौ भुंक्ते दिवाऽभुंजान त्वे सति पीनत्वात् यन्नैवं तन्नैवं यथा दिवारात्रावभुंजानः) अर्थ यह ॥ यह देवदत्त नामा पुरुष रात्रिविषे भोजन करेहै ॥ दिन विषे नहीं भोजन करता हुआ पीन हो गेते ॥ जो पुरुष रात्रिविषे भोजन नहीं करेहै ॥ सो पुरुष दिन विषे नहीं भोजन करता हुआ पीन भी नहीं होवैहै ॥ जैसे दिन रात्रिविषे नहीं भोजन करने हारा पुरुष पीन नहीं होवैहै ॥ यातें सो अर्थापत्ति प्रमाण पृथक् नहीं है इति ॥ सो यह नैयायिकों का मत असंगत है ॥ काहेतें पूर्व अनुमिति प्रमा के निरूपण विषे ता व्यतिरेकी अनुमान का विस्तार तें खंडन करि आयेहैं ॥ यातें ता व्यतिरेकी अनुमान करिके तारात्रिभोजन का ज्ञान संभवतानहीं ॥ किंतु ता उक्त अर्थापत्ति प्रमाण तेंहीं सो रात्रिभोजन का ज्ञान संभवैहै ॥ यातें सो अर्थापत्ति प्रमाण पृथक् प्रमाणहीं मान्या चाहिये ॥ और ते नैयायिक जिस पदार्थ का व्यतिरेकी अनुमान करिके ज्ञान मानेहैं ॥ तिस पदार्थ का ता अर्थापत्ति प्रमाण करिकेहीं ज्ञान संभवैहै ॥ यातें सो व्यतिरेकी अनुमान मानना व्यर्थ ही है इति ॥ और सा उक्त अर्थापत्ति प्रमा दृष्टार्थापत्ति १ श्रुतार्थापत्ति २ इस भेद करिके दो प्रकार की होवैहै ॥ तहां देख्ये हुए अर्थ कानाम दृष्ट अर्थ है ॥ ता दृष्ट अर्थ की अनुपपत्ति तें ता के उपपादक रूप अर्थांतर की जा कल्पना है ता कानाम दृष्टार्थापत्ति है ॥ और श्रवण कन्ये हुए अर्थ कानाम श्रुत अर्थ है ॥ ता श्रुत अर्थ की अनुपपत्ति तें ता के उपपादक रूप अर्थांतर की जा कल्पना है ता कानाम श्रुतार्थापत्ति है ॥ तिन दोनों अर्थापत्तियों विषे प्रथम दृष्टार्थापत्ति का उदाहरण कहेहैं ॥ जैसे दोष वा न पुरुष कूं पुरोवर्त्ति श्रुति विषे रजत कूं विषय करने हारा । इंदरजतं । या प्रकार का भ्रम रूप विशिष्ट अनुभव होवैहै ॥ ता अनुभव का विषय रूप जो रजत है ॥ ता रजत का ता श्रुति रूप अधिष्ठान के ज्ञान तें अनंतर । नेंदरज



तत्त्वा०

॥ ४८ ॥

परि०  
२

तं । याप्रकारकाबाध प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोरजतकाबाध्यत्व दृष्टार्थहै ॥ सोबाध्यत्वरूपदृष्टार्थ तार  
जतकेसत्यमानणेविषे संभवतानहीं ॥ किंतु तारजतकेमिथ्यामानणेविषेहीं संभवैहै ॥ यातैं सोरजतका  
बाध्यत्वरूपदृष्टार्थ तारजतकेमिथ्यापणेतैंविना नहींबनताहूआ तारजतकेमिथ्यापणेकीकल्पनाकरावै  
है ॥ ताकल्पनाकानाम दृष्टार्थापत्तिप्रमाहै इति ॥ अब प्रसंगतैं भ्रमस्थलविषे वेदांतसिद्धांतसंमत अनि  
र्वचनीयख्यातिकीसिद्धिकरणेवासतैं प्रथम अन्यशास्त्रउक्तख्यातियोंकानिरूपणकरिकैं खंडनकरैहैं ॥ त  
हां मीमांसकतों ताभ्रमस्थलविषे अख्याति मानैहैं ॥ तिनमीमांसकोंका यहअभिप्रायहै ॥ सर्वज्ञान य  
थार्थहींहोवैहैं ॥ कोईभीज्ञान अयथार्थहोतानहीं ॥ यातैं भ्रमस्थलविषे । इंदरजतं । इसविशिष्टभ्रमज्ञान  
विषे कोईभीप्रमाणनहींहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जोकदाचित् इंदरजतं इसज्ञानकूं विशिष्टभ्रमज्ञान नहीं  
मानोंगे ॥ तों तिसज्ञानतैंअनंतर रजतार्थीपुरुषकी तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषे प्रवृत्तिनहींहोणीचाहिये ॥  
और तारजतार्थीपुरुषकी तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषेप्रवृत्तितां प्रत्यक्षदेखणेविषेआवैहै ॥ यातैं ताप्रवृत्तिकीअ  
नुपपत्तितैं इंदरजतं इसज्ञानकूं विशिष्टभ्रमज्ञानरूपताहींसिद्धहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इंदरजतं  
इसज्ञानकूं जोविशिष्टभ्रमरूप नहींमानिये ॥ तोंभी इसरजतार्थीपुरुषकी तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषे प्रवृत्तिब  
निसकेहै ॥ सोदिखावैहैं ॥ इंदरजतं यह एकविशिष्टभ्रमज्ञान नहींहै ॥ किंतु दोज्ञानहोवैहैं ॥ तहां इदं  
यहतों पुरोवर्त्तिविषयक प्रत्यक्षज्ञानहोवैहै ॥ और रजतं यह रजतविषयक स्मृतिज्ञानहोवैहै ॥ तेदोनों  
ज्ञान यथार्थहींहैं ॥ तहां तिनदोनोंज्ञानोंका परस्परभेदहै ॥ तथा तिनदोनोंज्ञानोंकेविषयभूत पुरोवर्त्ति  
रजत इनदोनोंकाभी परस्परभेदहै ॥ परंतु दोषकेवशतैं इसपुरुषकूं तिनदोनोंज्ञानोंकाभेद तथातिनदो  
नोंविषयोंकाभेद ग्रहणहोतानहीं ॥ ताभेदाग्रहतैंहीं इसरजतार्थीपुरुषकी तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषेप्रवृत्ति ब

॥ ११४ ॥

निसकेहै ॥ यातैं ताप्रवृत्तिवासतैं ताविशिष्टभ्रमज्ञानकीकल्पनाकरणी व्यर्थहै ॥ किंवा जोकदाचित्



निसकेहै ॥ यातें ताप्रवृत्तिवासतें ताविशिष्टभ्रमज्ञानकीकल्पनाकरणी व्यर्थहै ॥ किंवा जोकदाचित् किसीभीज्ञानकूं अयथार्थ मानिये ॥ तों इसपुरुषकूं कोईभीज्ञानविषे यथार्थपणेकानिश्रय नहींहोवैगा ॥ किंतु सर्वज्ञानोंविषे तायथार्थपणेका संशयहीरहेगा ॥ यातें तायथार्थज्ञानसाध्य प्रवृत्तिनिवृत्तिआदिक सर्वव्यवहारोंकालोप होवैगा ॥ याकारणतेंहीं ( ज्ञानस्यव्यभिचारित्वेविश्वासः किंनिबंधनः ) यहवचन शास्त्रकारोंनैं कहाहै ॥ इसप्रकारतें तारजतत्वविशिष्टभ्रमरूपअनुभवकाअभावहोणेतें अनुभूयमानरज तका दृष्टबाध्यत्व तारजतकेमिथ्यापणेकूंकल्पनाकरावैहै यहवेदांतीयोंकाकहणा असंगतहै इति ॥ सो यह अख्यातिवादीमीमांसककामतभी समीचीननहींहै ॥ तहां ताअख्यातिवादीनैं विशिष्टभ्रमज्ञानवि षे जोप्रमाणकाअभाव कहाथा ॥ सोअसंगतहै ॥ जिसकारणतें सोविशिष्टभ्रमज्ञान अनुमानप्रमाणक रिकैहींसिद्धहै ॥ सोअनुमान यहहै ॥ ( पुरोवर्त्तिनिरजतार्थिप्रवृत्तिः विशिष्टज्ञानसाध्या प्रवृत्तित्वात् सं वादिप्रवृत्तिवत् ) अर्थयह ॥ पुरोवर्त्तिशुक्तिविषे जारजतार्थीपुरुषकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ साप्रवृत्ति इंदरजतं इसविशिष्टज्ञानकरिकैसाध्यहै ॥ प्रवृत्तिरूपहोणेतें ॥ लोकविषे जाजाप्रवृत्तिहोवैहै ॥ सासा विशिष्टज्ञा नकरिकैहींसाध्यहोवैहै ॥ जैसे सत्यरजतविषयकप्रवृत्ति इंदरजतं इस पुरोवर्त्तिरजतविशेष्यक रजतत्वप्र कारक विशिष्टज्ञानकरिकै साध्यहोवैहै इति ॥ यहअनुमानहीं ताविशिष्टभ्रमज्ञानविषे प्रमाणहै ॥ किंवा ताअख्यातिवादीनैं जोज्ञानमात्रकूं यथार्थपणा कहाथा ॥ सोभी असंगतहै ॥ काहेतें यद्यपि ज्ञानमात्रकूं स्वरूपतेंतों यथार्थपणाहींहै ॥ तथापि विषयके बाधकरिकै तथाअबाधकरिकै ताज्ञानविषे यथार्थपणा तथाअयथार्थपणा दोनोंसंभवैहैं ॥ अर्थात् जिसज्ञानकाविषय अबाधितहोवैहै ॥ सोज्ञानतों यथार्थक ह्याजावैहै ॥ जैसे अयंघटः अयंपटः इत्यादिकज्ञानहैं ॥ और जिसज्ञानकाविषय बाधितहोवैहै ॥ सो



तत्त्वा०

॥ ४९ ॥

ज्ञान अयथार्थकह्याजावैहै ॥ जैसे शुक्तिविषे इंदरजतं तथारज्जुविषे अयंसर्पः इत्यादिकज्ञानहैं ॥ जो कदाचित् इंदरजतं इसज्ञानकूं रजतरूपविषयकेबाधतैं भ्रमरूपनहींमानिये ॥ तौं । नेंदरजतं । इसउत्तर ज्ञानकरिकै पुरोवर्त्तिशुक्तिविषे जोरजतकाबाध प्रतीतहोवैहै सोनहींहोनाचाहिये ॥ जिसकारणतैं प्राप्तार्थकाहीं प्रतिषेधहोवैहै ॥ अप्राप्तार्थका प्रतिषेधहोतानहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ नेंदरजतं इसज्ञान करिकै इंदरजतं इसज्ञानका वा ताज्ञानकेविषयभूतरजतका बाधहोतानहीं ॥ किंतु तारजतविषयक प्रवृत्तिआदिकव्यवहारकाहीं बाधहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ नेंदरजतं इसज्ञानविषे पुरोवर्त्तिमेंरज तकानिषेधहीं अनुभवहोवैहै ॥ ताव्यवहारकानिषेध अनुभवहोतानहीं ॥ जोकदाचित् ताज्ञाननैं रज तकाव्यवहार निषेधकरीताहोवै ॥ तौं नेंदरजतव्यवहारः याप्रकारकाहीं ताज्ञानकाआकार होनाचाहि ये ॥ सोऐसाज्ञानकाआकार हैनहीं ॥ यातैं नेंदरजतं इसनिषेधकेबलतैंभी इंदरजतं यहविशिष्टभ्रमज्ञा नहीं सिद्धहोवैहै ॥ सोविशिष्टभ्रमज्ञानहीं तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषे रजतार्थीपुरुषकेप्रवृत्तिकाकारणहै ॥ सो अख्यातिवादीउक्त भेदाग्रह ताप्रवृत्तिकाकारण नहींहै ॥ जोकदाचित् ताभेदज्ञानकेअभावरूपभेदाग्र हकूंहीं ताप्रवृत्तिकाकारण मानिये ॥ तौं ताभेदाग्रहकूं सर्वदाविद्यमानहोणेतैं इसपुरुषकी साप्रवृत्ति स र्वदाहोणीचाहिये ॥ और सोअख्यातिवादी जो तारजतकेस्मृतिज्ञानतैं साप्रवृत्तिमानैं ॥ सोभी संभव तानहीं ॥ काहेतैं सोस्मृतिज्ञानकाविषयभूतरजत देशांतरविषेहीं विद्यमानहै ॥ तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषे विद्यमानहैनहीं ॥ यातैं तास्मृतिज्ञानतैं इसरजतार्थीपुरुषकी तादेशांतरविषेहींप्रवृत्तिहोवैंगी ॥ तापुरोव र्त्तिशुक्तिविषे प्रवृत्तिनहींहोवैंगी ॥ यातैं ताअख्यातिवादीनैंभी तास्मर्यमाणरजतका पुरोवर्त्तिशुक्तिवि षे आरोपणकरिकै तारजतप्रकारक पुरोवर्त्तिविशेष्यक इंदरजतं यहविशिष्टज्ञानहीं ताप्रवृत्तिकाकारण

परि०  
२.

॥ १११५ ॥

मान्याचाहिये ॥ सोविशिष्टभ्रमज्ञान निर्विषयहोवैगानहीं ॥ किंतु सविषयहींकहणाहोवैगा ॥ और ने



मान्याचाहिये ॥ सोविशिष्टभ्रमज्ञान निर्विषयहोवेंगानहीं ॥ किंतु सविषयहींकहणाहोवेंगा ॥ और ने  
दंरजतं इसज्ञानकरिकै तारजतरूपविषयका तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषेहीं बाधप्रतीतहोवेंहै ॥ यातें तारजत  
केबाध्यत्वकीअनुपपत्तिकरिकै तारजतविषे सोमिथ्यापणा संभवैहै इति ॥ और शून्यवादीमाध्यमिक  
तथाकेईकतांत्रिक ताभ्रमस्थलविषे असत्ख्याति मानेहैं ॥ तहां शून्यवादीकेमतविषेतों ज्ञाता ज्ञान ज्ञे  
य इत्यादिकसर्वपदार्थ असत्हैं ॥ यातें असत्शुक्तिविषे असत्तरजतहीं इदंरजतं इसज्ञानकाविषयहै ॥  
और तांत्रिकोंकेमतविषेतों शुक्तिआदिकव्यावहारिकपदार्थ असत्नहींहै ॥ किंतु ताशुक्तिविषे जोरज  
तप्रतीतहोवैहै ॥ सोरजतहीं असत्है ॥ यातें इदंरजतं यहज्ञान असत्तरजतकूंहींविषयकरेहै ॥ और शु  
क्तिकेज्ञानतेंअनंतर इसपुरुषकूं हमारेकूं इसशुक्तिविषे असत्तरजतहीं प्रतीतहोताभया याप्रकारकाअनु  
भवहोवैहै ॥ ताअनुभवतें तारजतका असत्पणाहींसिद्धहोवैहै ॥ यातें ताभ्रमज्ञानकेविषय रजतादिक  
असत्हींमान्येचाहिये इति ॥ सोयह असत्ख्यातिवादीकामतभी समीचीननहींहै ॥ काहेतें तारजतकूं  
जोअसत्मानिये ॥ तों असत्वस्तुका प्रत्यक्षज्ञानहोतानहीं ॥ यातें तारजतकूंविषयकरणेहारे इदंरजतं  
इसज्ञानकूं प्रत्यक्षरूपता नहींहोणीचाहिये ॥ जोकदाचित् असत्वस्तुकाभी प्रत्यक्षज्ञानहोताहोवै ॥ तों  
शशशृंगवंध्यापुत्रादिकअसत्पदार्थोंकाभी लोकोंकूं प्रत्यक्षज्ञान होणाचाहिये ॥ यातें तारजतकूं असत्  
रूपता संभवतीनहीं ॥ किंवा असत्कोईवस्तुहै अथवानहींहै ॥ तहां जोकहो असत्कोईवस्तुहै ॥ तों  
ताका असत्पणाकहणा संभवतानहीं ॥ और जोकहो असत्कोईवस्तुनहींहै ॥ तों ताअसत्का ज्ञान  
हींकैसेसंभवेंगा ॥ विषयतेंविना कोईज्ञानहोतानहीं ॥ यातें भ्रमज्ञानकेविषयभूतरजतादिकोंका असत्  
पणासंभवतानहीं इति ॥ और केईकशास्त्रकार ताभ्रमस्थलविषे सत्ख्याति अंगीकारकरेहैं ॥ तिनोंका



तत्त्वा०

॥५०॥

परि०

२

यह अभिप्राय है ॥ शुक्तिके आरंभक अवयवों के साथ रजतके आरंभक अवयव सर्वदा मिले रहें ॥ और जैसे ते शुक्तिके अवयव सत्य हैं ॥ तैसे ते रजतके अवयव भी सत्य ही हैं ॥ और जबी दोष सहित चक्षु इंद्रिय का तिन अवयवों के साथ संयोग संबंध होवै है ॥ तबी ते अवयव सत्य रजत की उत्पत्ति करे हैं ॥ या कारण तै ही तारजतके सत्य रूपता कूं विषय करने हारा सत् इंदरजतं या प्रकार का प्रत्यक्ष लोकों कूं होवै है ॥ और शुक्तिके ज्ञान तै ता सत्य रजत का आपणे अवयवों विषे ध्वंस होवै है इति ॥ सो यह सत्ख्यातिवादी कामत भी समीचीन नहीं है ॥ काहे तै ता शुक्ति विषे जो कदाचित् सत्य रजत उत्पन्न होता होवै ॥ तौ नेंदरजतं इस अनुभव करिकै ता शुक्ति विषे रजत का बाध नहीं होना चाहिये ॥ जिस कारण तै सत्य वस्तु का बाध होतानहीं ॥ जो कदाचित् सत्य वस्तु का भी बाध होता होवै ॥ तौ ता सत्य शुक्तिका भी बाध होना चाहिये ॥ और सो रजत का बाध तौ सर्व कूं प्रत्यक्ष सिद्ध है ॥ या तै तारजत विषे सत्य रूपता संभवती नहीं ॥ और सत् इंदरजतं यह उक्त प्रत्यक्ष तौ तारजतके सत्ता कूं विषय करतानहीं ॥ किंतु तारजतके अधिष्ठान की सत्ता कूं ही विषय करे है ॥ या तै ता प्रत्यक्ष के बल तै भी तारजत की सत्य रूपता सिद्ध होवै नहीं ॥ किंवा शुक्तिके अवयवों साथ रजतके अवयव सर्वदा मिले रहें ॥ यह कहना भी असंगत है ॥ काहे तै तारजत की उत्पत्ति तै पूर्व जैसे ते शुक्तिके अवयव प्रत्यक्ष प्रतीत होवै हैं ॥ तैसे ते रजतके अवयव भी प्रत्यक्ष प्रतीत होने चाहिये ॥ और रजत तै जसद्रव्य होवै है ॥ ता तै जसद्रव्य का अग्निके संयोग तै नाश होतानहीं ॥ या तै अत्यंत अग्निके संयोग करिकै ता शुक्तिके भस्म रूप लोकों कूं ते रजतके अवयव प्राप्त होने चाहिये ॥ और जहां गुंजा पुंज विषे अग्नि का भ्रम होवै है ॥ तहां ता सत्य अग्निके तिस गुंजा पुंज का नाश होना चाहिये ॥ इस तै आदिलै के अनेक प्रकारके दूषण ता सत्ख्यातिवाद विषे प्राप्त होवै हैं ॥ या तै सो सत्ख्यातिवाद अत्यंत असंगत है इति ॥ और

॥११६॥



क्षणिकविज्ञानवादी योगाचारतों ताभ्रमस्थलविषे आत्मख्याति मानेहै ॥ ताकायहअभिप्रायहै ॥ शरी  
रकेअंतरस्थित जोक्षणिकविज्ञानहै ॥ सोईहीं आत्माहै ॥ ताविज्ञानआत्मातैंभिन्न कोईभी अंतरबाह्यप  
दार्थहैनहीं ॥ किंतु सर्वपदार्थ ताविज्ञानकेहीं आकारविशेषहैं ॥ यातैं शुक्तिविषे जोरजतप्रतीतहोवै  
है ॥ सोरजतभी ताअंतरविज्ञानकाहीं धर्महै ॥ सोअंतररजतहीं दोषकेबलतैं बाह्यकीन्यांई प्रतीतहोवै  
है ॥ और नेदंरजतं इसज्ञानतैं तारजतका स्वरूपतैंबाधहोतानहीं ॥ किंतु ताअंतररजतविषे इदंतारूप  
बाह्यपणेकाहीं बाधहोवैहै इति ॥ सोयह आत्मख्यातिवादीकामतभी समीचीननहींहै ॥ काहेतैं तिन  
रजतादिकोंकेअंतरपणेविषे कोईभीप्रमाण तथायुक्ति नहींहै ॥ सर्वलोकोंकुं चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै  
तेरजतादिकपदार्थ बाह्यदेशविषेहीं प्रतीतहोवैहैं ॥ केवल सुखदुःखादिकहीं अंतरप्रतीतहोवैहैं ॥ जोक  
दाचित् सुखदुःखादिकोंकीन्यांई तेरजतादिकभी अंतरहींहोवैं ॥ तों चक्षुआदिकइंद्रियोंतैंविनाभी तिन  
रजतादिकोंका प्रत्यक्षहोणाचाहिये ॥ सोहोतानहीं ॥ यातैं तेरजतादिक बाह्यहींमान्येचाहिये ॥ किंवा  
इदंतानाम सन्निहितपणेकाहै ॥ ताइदंताका जो नेदंरजतं इसज्ञानकरिकै निषेधमानिये ॥ तों तारजतवि  
षे दूरतारूपअसन्निहितपणाहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ अत्यंतसन्निहितविज्ञानरूपता प्राप्तहोवैंगीनहीं ॥ यातैं ने  
दंरजतं यहज्ञान तारजतकेइदंतामात्रकुंनिषेधकरेहै यहविज्ञानवादीकाकहणा मिथ्याहींहै ॥ इसविज्ञान  
वादीकेमतका विस्तारतैंखंडनतों न्यायप्रकाशकेद्वितीयपरिच्छेदविषेकन्याहै ॥ सो तहांसंजानिलेणा इ  
ति ॥ और नैयायिकतों ताभ्रमस्थलविषे अन्यथाख्याति मानेहैं ॥ तिनोंका यहअभिप्रायहै ॥ इदंरजतं  
इसभ्रमज्ञानकाविषय जोरजतहै ॥ सोरजत तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषेनहींहै ॥ किंतु सोरजत कांताकरहटा  
दिरूपदेशांतरविषेहींस्थितहै ॥ तासत्परजतकेअनुभवजन्यसंस्कारवालेपुरुषके दोषयुक्तचक्षुइंद्रियका जबी



तत्त्वा०

॥ ५१ ॥

परि०

२

तारजतके सदृश पुरोवर्त्तिशुक्तिके साथि संयोगसंबंध होवै है ॥ तबी तासा दृश्य दर्शन करिकै उद्बुद्ध हूए संस्कार  
 रतैं ता पुरुषकूं ता देशांतरवर्त्तिरजतकी स्मृति होवै है ॥ तिसतैं अनंतर दोषके वशतैं सा पुरोवर्त्तिशुक्तिहीं ता  
 देशांतरीयरजतरूप करिकै प्रत्यक्ष होवै है ॥ अर्थात् ता स्मृतिज्ञानके विषय भूतरजतका रजतत्वधर्म ता पुरो  
 वर्त्तिशुक्तिविषे इंदरजतं या प्रकार प्रत्यक्ष प्रतीत होवै है ॥ इसी कानाम अन्यथा ख्याति है ॥ तहां अन्यव  
 स्तुकी जा अन्यरूपतैं प्रतीति है ता कानाम अन्यथा ख्याति है ॥ जैसे पुरोवर्त्तिशुक्तिकी रजतत्वरूपतैं प्रती  
 ति है ॥ तथा पुरोवर्त्तिरज्जुकी सर्पत्वरूपतैं प्रतीति है ॥ इस प्रकार भ्रांतिज्ञान करिकै पुरोवर्त्तिशुक्ति आदिकों  
 विषे प्राप्त भये रजतादिक हैं ॥ तिनोंका नेंदरजतं इस ज्ञान करिकै निषेध भी संभव हो इसके है ॥ ॥ शंका  
 ॥ ॥ देशांतरवर्त्तिरजतका जो पुरोवर्त्तिशुक्तिविषे भान अंगीकार करोंगे ॥ तों इंदरजतं इस भ्रमज्ञानकूं  
 तारजतअंशविषे प्रत्यक्षरूपता नहीं संभवेगी ॥ काहेतैं विशिष्टप्रत्यक्षविषे विशेषण विशेष्य दोनोंके साथि  
 इंद्रियका सन्निकर्षहीं कारण होवै है ॥ जैसे दंडी पुरुषः इस विशिष्टप्रत्यक्षविषे दंडरूपविशेषणके साथि तथा पु  
 रुषरूपविशेष्यके साथि चक्षु इंद्रियका संयोगसंबंध कारण है ॥ तैसे पुरोवर्त्तिशुक्तिरूपविशेष्यके साथितों च  
 क्षु इंद्रियका संयोगसंबंध है ॥ परंतु ता देशांतरवर्त्तिरजतरूपविशेषणके साथि ता चक्षु इंद्रियका कोई भी संब  
 ध नहीं है ॥ यातैं इंदरजतं इस भ्रमज्ञानकूं तारजतअंशविषे प्रत्यक्षरूपता नहीं होवेगी ॥ और तुम नैयायि  
 कोंनैं इंदरजतं इस भ्रमज्ञानकूं तारजतअंशविषे भी प्रत्यक्षहीं मान्या है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ विशिष्टप्र  
 त्यक्षविषे विशेषण इंद्रियके सन्निकर्षकूं हम कारण मानते नहीं ॥ किंतु विशेष्यके साथि जो इंद्रियका संबंध  
 है ॥ तथा विशेषणका जो ज्ञान है ॥ तथा विशेषणविशेष्यदोनोंके असंबंधका जो अग्रहण है ॥ इत्यादिक  
 सामग्रीकूंहीं हम विशिष्टप्रत्यक्षविषे कारण माने हैं ॥ साकारण सामग्री ता भ्रमस्थलविषे विद्यमानहीं है ॥

॥ ११७ ॥



तहां पुरोवर्त्तिशुक्तिरूपविशेष्यकेसाथि चक्षुइंद्रियका संयोगसंबंधभीहै ॥ तथा तारजतरूपविशेषणका स्मृतिरूपज्ञानभीहै ॥ तथा दोषकेवशतें ताविशेषणविशेष्यदोनोंकेअसंबंधकाअग्रहणभीहै ॥ ताकारण सामग्रीकेविद्यमानहूए इदंरजतं इसरजतविषयकभ्रमज्ञानविषे प्रत्यक्षरूपता संभवैहै ॥ यातें तारजतरूप विशेषणकेसाथि चक्षुइंद्रियकेसन्निकर्षका कलुप्रयोजननहींहै ॥ जोकदाचित् ताविशेषणइंद्रियकेसन्निकर्षकूं विशिष्टप्रत्यक्षविषे नियमतेंकारणताहोवै ॥ तों सोऽयंदेवदत्तः इसप्रत्यभिज्ञाज्ञानकूं प्रत्यक्षरूपता नहीं होवेंगी ॥ काहेतें तत्देशकालविशिष्टस्वरूपतत्ताविशेषणकूं अतीतहोणेतें ताविशेषणकेसाथि चक्षुइंद्रियका सन्निकर्षहींसंभवतानहीं ॥ और उक्तरीतिसें ताविशेषणकेज्ञानकूं जो ताविशिष्टप्रत्यक्षविषे कारणमानि ये ॥ तों तिसतत्तारूपविशेषणका स्मरणज्ञान तहांविद्यमानहींहै ॥ तथा तादेवदत्तपुरुषकेसाथि चक्षु इंद्रियका संयोगसंबंधभी विद्यमानहींहै ॥ यातें ताप्रत्यभिज्ञाज्ञानविषे प्रत्यक्षरूपता संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सोऽयंदेवदत्तः इसज्ञानकूं देवदत्तनामापुरुषअंशविषेहीं प्रत्यक्षरूपताहै ॥ तिसतत्ताअंश विषे प्रत्यक्षरूपता नहींहै ॥ किंतु स्मृतिरूपताहै ॥ और स्मृतिज्ञानविषे इंद्रियअर्थकेसन्निकर्षकीअपेक्षाहोतीनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सोऽयंदेवदत्तः इसज्ञानकूं जो तत्ताअंशविषे स्मृतिरूपमानोंगे ॥ तों ताएकहींज्ञानविषे प्रत्यक्षत्व स्मृतित्व इनदोनोंधर्मोंका सांकर्ष्यहोवेंगा ॥ सोसांकर्ष्यदोष जातिका बाधकहोवैहै ॥ यातें प्रत्यक्षत्व स्मृतित्व इनदोनोंधर्मोंविषे जातिरूपताहीं नहींसंभवेंगी ॥ यातें सोऽयंदेवदत्तः इसज्ञानकूं तातत्ताअंशविषेभी प्रत्यक्षरूपहीं मान्याचाहिये ॥ इसप्रकार इंद्रियसन्निकर्षतेंविना हीं जैसे तत्ताअंशका प्रत्यक्षहोवैहै ॥ तैसे इंद्रियसन्निकर्षतेंविनाहीं तादेशांतरवर्त्तिरजतका पुरोवर्त्तिशुक्तिविषे इदंरजतं यहविशिष्टभ्रमप्रत्यक्ष संभवैहै ॥ अथवा तादेशांतरवर्त्तिरजतकेसाथि चक्षुइंद्रियका सो



तत्त्वा०

॥ ५२ ॥

रजतविषयकस्मृतिज्ञानरूप अलौकिकसंबंध है ॥ और पुरोवर्तिशुक्तिके साथि ताचक्षुइंद्रियका संयोग रूपलौकिकसंबंध है ॥ यातें इदंरजतं इसभ्रमज्ञानकूं तारजतअंशविषेप्रत्यक्षरूपता संभवै है ॥ तहां संयोग १ संयुक्तसमवाय २ संयुक्तसमवेतसमवाय ३ समवाय ४ समवेतसमवाय ५ विशेषणता ६ इनषट्सन्निकर्षोंकूं नैयायिक लौकिकसन्निकर्ष कहें हैं ॥ और सामान्यलक्षण १ ज्ञानलक्षण २ योगजधर्मलक्षण ३ इनतीनसन्निकर्षोंकूं अलौकिकसन्निकर्ष कहें हैं ॥ तिनदोनों प्रकारके सन्निकर्षोंकानिरूपण न्यायप्रकाशकषष्ठेपरिच्छेदविषे प्रत्यक्षनिरूपणविषे विस्तारतैंकन्या है ॥ सोतहांसैंजानिलेना ॥ इसप्रकार इदंरजतं यहभ्रमज्ञान अन्यथाख्यातिरूपही है ॥ यातें ताभ्रमज्ञानकेविषयभूतरजतका मिथ्यापणासंभवतानहीं इति ॥ सोयह अन्यथाख्यातिवादीनैयायिककामतभी समीचीननहीं है ॥ काहेतैं इदंरजतं इसभ्रमज्ञानकेविषयभूतरजतकी जोदेशांतरविषेस्थिति मानिये ॥ तौ तारजतके साथि चक्षुइंद्रियका संयोगरूपसन्निकर्ष संभवतानहीं ॥ और इंद्रियअसंबद्धवस्तुका प्रत्यक्षहोतानहीं ॥ यातें तारजतकेज्ञानकूं प्रत्यक्षरूपताहीं नहींहोवैंगी ॥ और इदंरजतं इसभ्रमज्ञानतैंअनंतर । रजतंसाक्षात्करोमि । याप्रकारका अनुभव लोकोंकूं होवै है ॥ ताअनुभवतैं तारजतज्ञानकी प्रत्यक्षरूपताहीं सिद्धहोवै है ॥ किंवा तानैयायिकनैं जो विशेषणकेज्ञानकूं तथाविशेष्यइंद्रियकेसन्निकर्षकूं विशिष्टप्रत्यक्षकासामग्रीपणा कहाथा ॥ सोभीसंभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं तासामग्रीकूं दंडीपुरुषः इत्यादिकसर्वविशिष्टप्रत्यक्षोंविषे कारणता देखणेविषेआवतीनहीं ॥ किंतु विशेषणविशेष्यदोनोंके साथि इंद्रियकेसन्निकर्षकूंहीं कारणतादेखणेविषे आवै है ॥ और सोऽयं देवदत्तः यहप्रत्यभिज्ञाज्ञानभी केवल देवदत्तअंशविषेहीं प्रत्यक्षरूप है ॥ तत्ताअंशविषे प्रत्यक्षरूपनहीं है ॥ किंतु तातत्ताअंशविषे स्मृतिरूपही है ॥ और सोऽयं देवदत्तः इसप्रत्यभिज्ञाज्ञान

परि०  
२

॥ ११९ ॥



विषे प्रत्यक्षरूपनहींहै ॥ किंतु तात्तत्तात्त्विकविषे स्पष्टतिरुक्तनहींहै ॥ और सोऽयंदेवदत्तः इसप्रत्यभिज्ञाज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



तत्त्वा०

॥ ५३ ॥

दिकसामग्रीतैंहोवैहै ॥ साअवयवादिकसामग्री ताशुक्तिदेशविषेहैनहीं ॥ यातैं ताशुक्तिविषे रजतकीउत्पत्ति संभवतीनहीं ॥ जोकहो पुण्यपापरूपअदृष्टहीं तारजतकाउत्पादकसामग्रीहै ॥ सोभीसंभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं ताअवयवादिकदृष्टसामग्रीतैंविना सोअदृष्ट कोईकार्यकूंउत्पन्नकरिसकतानहीं ॥ जोकदाचित् तादृष्टसामग्रीतैंविनाहीं सोअदृष्ट किसीकार्यकूं उत्पन्नकरताहोवै ॥ तों मृत्तिकाकुलालादिकदृष्टसामग्रीतैंविनाहीं ताअदृष्टतैं घटादिकोंकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ प्रसिद्धरजतकाउत्पादक जाअवयवादिरूपलौकिकसामग्रीहै ॥ सालौकिकसामग्री ताभ्रमकेविषयभूतरजतका उत्पादक नहींहोवैहै ॥ किंतु तालौकिकसामग्रीतैंविलक्षणसामग्रीहीं तारजतकाउत्पादकहोवैहै ॥ सोदिखावैहैं ॥ सत्यरजतकेअनुभवजन्यसंस्कारवालेपुरुषकेचक्षुइंद्रियका जबी पुरोवर्त्तिशुक्तिकेसाथि संयोगसंबंधहोवै है ॥ तबी ताचक्षुद्वारा बाह्यनिकस्येहूएअंतःकरणकी ताशुक्तिके इदमाकार तथाचाकचिक्याकार वृत्ति उत्पन्नहोवैहै ॥ ताचाकचिक्यरूपसादृश्यकेदर्शनतैं तापूर्वदृष्टरजतकेसंस्कार उद्बुद्धहोवैहैं ॥ सोउद्बुद्धसंस्काररूपदोषहैसहकारीजिसका ऐसीजा ताइदमंशावच्छिन्नचैतन्यविषेरहणेहारी तथाताशुक्तिके शुक्तित्व नीलपृष्ठ त्रिकोणादिकविशेषअंशकूं आच्छादनकरणेहारी अविद्याहै ॥ साअविद्या क्षोभकूंप्राप्तहोइकैं रजताकारपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा तारजतविषयकज्ञानाकारपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसीकानाम अनिर्वचनीयख्यातिहै ॥ इसप्रकारकीरीति रज्जुसर्पादिकसर्वभ्रमस्थलविषेजानिलेणी ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताभ्रमस्थलविषे साअविद्या उक्तीरीतिसैं रजतादिरूपअर्थाकारपरिणामकूंतों प्राप्तहोवो ॥ परंतु ताअविद्याका ज्ञानाकारपरिणाममानणा असंगतहै ॥ काहेतैं ताअविद्याका ज्ञानाकारपरिणाममानणेका कोईप्रयोजननहींहै ॥ और प्रयोजनतैंविना किसीअर्थकाअंगीकारकरणा व्यर्थहींहोवैहै ॥ और जोऐसाक

परि०  
२

॥ १११ ॥



योजननहीं है ॥ और प्रयोजननहीं है ॥ किन्तु अंगीकारकर व्याख्या व्यर्थही होवै है ॥ और जो ऐसा क

हो इदं रजतं इस प्रकार के व्यवहार वासतै सा अविद्या की रजताकार वृत्ति अवश्य मानी चाहिये ॥ सोयह कहना भी संभवतानहीं ॥ काहेतैं सुख दुःखादिकों की न्यांई सो प्रातिभासिक रजत साक्षी चैतन्य विषेहीं अध्यस्त है ॥ यातैं तारजताकार वृत्ति तैं विनाहीं ता साक्षी चैतन्य करिकै सो रजत विषयक व्यवहार सिद्ध होइ इसके है ॥ ता व्यवहार वासतै रजताकार अविद्या की वृत्ति मानणी निष्फल है ॥ और जो ऐसा कहो तारजत के अपरोक्ष पणे की सिद्धि वासतैहीं ता अविद्या वृत्ति का अंगीकार है ॥ सोयह कहना भी संभवतानहीं ॥ जिस कारण तैं ता अविद्या वृत्ति तैं विनाभी अनावृत साक्षी चैतन्य के तादात्म्य तैं सुख दुःखादिकों की न्यांई तारजत का अपरोक्ष पणा संभव होइ इसके है ॥ यातैं तारजत के अपरोक्ष पणे वासतैभी ता वृत्ति का अंगीकार करणा निष्फल है ॥ और जो ऐसा कहो तारजताकार अविद्या की वृत्ति जो नहीं अंगीकार करीये ॥ तौ तारजत का कालांतर विषे स्मरण हीं नहीं होवैगा ॥ काहेतैं अनुभव के नाश जन्य संस्कारों तैंहीं स्मरण ज्ञान होवै है ॥ और नित्य होणे तैं साक्षी चैतन्य रूप अनुभव का नाश संभवतानहीं ॥ यातैं सारजताकार अविद्या की वृत्ति अंगीकार करिकै ता वृत्ति के नाश करिकै ता वृत्ति उपहित त्व रूप तैं साक्षी का भी नाश होणे तैं तारजत विषयक संस्कार की उत्पत्ति तथा ता संस्कार करिकै स्मृति ज्ञान की उत्पत्ति संभवै है ॥ यातैं तारजत की स्मृति के जनक संस्कार की उत्पत्ति वासतै सारजताकार अविद्या की वृत्ति अवश्य अंगीकार करी चाहिये ॥ सोयह कहना भी संभवतानहीं ॥ काहेतैं तारजत भ्रमतैं पूर्व उत्पन्न भई जाइ दमाकार वृत्ति है ॥ ता इदमाकार वृत्ति के नाश करिकै हीं ता वृत्ति उपहित त्व रूप तैं साक्षी का नाश होणे तैं तारजत विषयक संस्कार की उत्पत्ति तथा ता संस्कार तैं स्मृति की उत्पत्ति संभव होइ इसके है ॥ अथवा जैसे सुख दुःख आदिरूप विषय के नाश करिकै ता सुख दुःख आदि उपहित त्व रूप तैं साक्षी का भी नाश होणे तैं ता सुख दुःख आदि विषयक संस्कारों की उत्पत्ति तथा स्मृति ज्ञान की उत्पत्ति



तत्त्वा०

॥ ५४ ॥

होवैहै ॥ तैसे तारजतरूपविषयकेनाशकरिकैहीं तारजतउपहितत्वरूपतैं साक्षीकाभीनाशहोणेतैं तारजत विषयक संस्कारकीउत्पत्ति तथास्मृतिज्ञानकीउत्पत्ति संभवहोइसकेहै ॥ यातैं तारजतविषयकस्मृतिके जनकसंस्कारकीउत्पत्तिवासतैभी तारजताकारअविद्यावृत्तिकाअंगीकार निष्फलहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तारजतकीस्मृतिकाजनक जोसंस्कारहै ॥ तिससंस्कारकीउत्पत्तिवासतैहीं तारजताकारअविद्यावृत्तिकाअंगीकारहै ॥ काहेतैं तारजतकाअनुभवरूपसाक्षीचैतन्य उत्पत्तिविनाशतैरहितहोणेतैं नित्यहै ॥ यातैं तासाक्षीचैतन्यका स्वरूपतैंतों नाशसंभवतानहीं ॥ और तारजताकारअविद्यावृत्तिकेअंगीकारकीयेहूए तावृत्तिकेनाशकरिकै तावृत्तिउपहितत्वरूपतैं तासाक्षीकाभीनाश संभवैहै ॥ तिसतैं रजतविषयक संस्कारकीउत्पत्ति तथातासंस्कारतैंस्मृतिज्ञानकीउत्पत्ति बनिसकेहै ॥ यातैं तारजतस्मृतिकेजनकसंस्कारकीउत्पत्तिवासतै सारजताकारअविद्याकीवृत्ति अवश्यमानीचाहिये ॥ और तावादीनैं जोइदमाकारवृत्तिकेनाशतैं रजतस्मृतिजनकसंस्कारकीउत्पत्ति कहीथी ॥ सोकहणाभी असंगतहै ॥ काहेतैं अनुभव संस्कार स्मृति इनतीनोंका समानवस्तुविषयकत्वरूपतैंहीं परस्पर कार्यकारणभावहोवैहै ॥ अन्यवस्तुविषयकअनुभवतैं अन्यवस्तुविषयक संस्कार वास्मृति होवैनहीं ॥ जोकदाचित् ऐसाहोताहोवै ॥ तों घटविषयकअनुभवतैं पटविषयकसंस्कार तथास्मृतिभी होणीचाहिये ॥ यातैं ताइदमाकारवृत्तितैं रजतविषयक संस्कारकीउत्पत्ति तथास्मृतिकीउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ और तावादीनैं जोपूर्व रजतरूपविषयकेनाशतैं तारजतसंस्कारकीउत्पत्ति कहीथी ॥ सोकहणाभी असंगतहै ॥ काहेतैं लोकविषे घटादिकविषयोंकेनाशतैं तिनघटादिकोंकेसंस्कारकीउत्पत्ति देखणेविषेआवतीनहीं ॥ किंतु तिनघटादिकोंकेविद्यमानहूएहीं तिनघटादिकोंकेज्ञानकेनाशतैं संस्कारोंकीउत्पत्ति देखणेविषेआवेहै ॥ यातैं स

परि०  
२

॥ १२० ॥



दिकोंकेविषयकेनाशतैंहीं तिनघटादिकोंकेसंस्कारकीउत्पत्ति देखनेविषेआवेहै ॥ यातैं स

वत्र ताज्ञानकेनाशतैंहीं संस्कारोंकीउत्पत्ति मानीचाहिये ॥ और जोकहो सुखदुःखादिकोंविषे तासु  
खादिरूपविषयकेनाशतैंहीं संस्कारोंकीउत्पत्ति देखनेविषेआवेहै ॥ सोकहणाभी संभवतानहीं ॥ जिस  
कारणतैं तहांभी संस्कारोंकीउत्पत्तिवासतैं सुखदुःखादिआकारवृत्ति अंगीकारकरीजावैहै ॥ अथवा अं  
तःकरणकूं तथाताकेसुखदुःखादिकधर्मोंकूं वृत्तितैंविनाहीं साक्षीभास्यपणा रहो ॥ तथा तिनसुखादिकों  
केनाशकरिकैं तवउपहितसाक्षीकेनाशतैं संस्कारोंकीउत्पत्तिभी रहो ॥ तथापि अविद्याकेकार्य जेबाह्य  
घटादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकेसंस्कारकीउत्पत्तितों ताघटादिआकारवृत्तिकेनाशतैंहीं देखनेविषेआवेहै ॥  
तैसे सोप्रातिभासिकरजतभी अविद्याकाकार्यहै ॥ यातैं तारजताकारवृत्तिकेनाशतैंहीं तारजतकेसंस्का  
रकीउत्पत्ति मानीचाहिये ॥ जोकदाचित् ऐसानहींमानिये ॥ तों आचार्योंकेग्रंथोंविषे जो स्वप्नपदार्था  
कारवृत्तिका अंगीकारकन्याहै ॥ तथा जाग्रत्स्वप्नविषे जो अहमाकारवृत्तिका अंगीकारकन्याहै ॥ सो  
सर्व असंगतहोवैगा ॥ जिसकारणतैं वृत्तितैंविनाभी केवलसाक्षीकरिकैं तिनपदार्थोंकाप्रकाश संभवहो  
इसकेहै ॥ यातैं तारजतकीस्मृतिकेहेतुभूतसंस्कारकीउत्पत्तिवासतैं साअनिर्वचनीयरजताकारअविद्यावृ  
त्ति अवश्यमानीचाहीये इति ॥ ईहां केईकग्रंथकारतों ऐसाकहेहैं ॥ जैसे घटाकारवृत्तिउपहितसाक्षीचैतन्य  
विषे जो ताघटकातादात्म्यहै ॥ यहहीं ताघटनिष्ठअपरोक्षपणाहै ॥ तैसे ताप्रातिभासिकरजतनिष्ठअपरोक्षप  
णेकीसिद्धिवासतैं तारजताकारअविद्याकीवृत्ति अवश्यमानीचाहिये ॥ तावृत्तितैंविना तारजतविषे सोअ  
परोक्षपणाहीं नहींसंभवेगा इति ॥ और केईकग्रंथकारतों ऐसाकहेहैं ॥ जोजोव्यवहार कादाचित्कहोवै  
है ॥ सोसोव्यवहार कादाचित्कज्ञानकरिकैंहींसाध्यहोवैहै ॥ जैसे अयंघटः यहकादाचित्कव्यवहार कादा  
चित्कघटज्ञानकरिकैं साध्यहै ॥ तैसे इदंरजतं यहव्यवहारभी कादाचित्कहै ॥ यातैं तारजतविषयककादा



तत्त्वा०

॥ ५५ ॥

चित्कज्ञानकरिकैहीं साध्यहोवैंगा ॥ तहां साक्षीरूपज्ञानविषेतों कादाचित्कपणा संभवतानहीं ॥ किंतु ताअविद्यावृत्तिरूपज्ञानविषेहीं सोकादाचित्कपणा संभवैहै ॥ यातैं तारजतव्यवहारकेकादाचित्कपणेकी सिद्धिवासतैं तारजतगोचरअविद्याकीवृत्ति अवश्यअंगीकारकरोबाहिये ॥ जोकदाचित् साक्षीरूपनि त्यज्ञानकरिकैभी सोकादाचित्कव्यवहार होताहोवै ॥ तों घटादिकपदार्थोंका सोकादाचित्कव्यवहार भी तासाक्षीचैतन्यकरिकैहींसिद्धहोइसकैंगा ॥ यातैं घटादिआकारअंतःकरणकीवृत्तिभी नहींसिद्धहो वैंगी इति ॥ और कोईकग्रंथकारोंनैं जोप्रातिभासिकरजतादिआकारअविद्यावृत्तिका खंडनकन्याहै ॥ सो प्रौढीवादतैंजानणा ॥ आपणेबुद्धिकीउत्कर्षताकाजोजनावणाहै ताकानाम प्रौढीवादहै ॥ यातैं पूर्वउक्तरीतिसैं भ्रमस्थलविषे साअविद्या रजतादिविषयाकार तथाताकेज्ञानाकार परिणामकूं प्राप्तहोवैहै यहअर्थ निर्दोषसिद्धभया इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताभ्रमस्थलविषे शुक्तिविषे अविद्यातैंरजतकीउत्पत्तिहोवो ॥ तथापि तारजतविषे मिथ्यापणा कैसेहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ लोकविषेभी ऐंद्रजालिक पुरुषकीमायाकरिकैरचितपदार्थ मिथ्याहींदेखनेविषेआवैहैं ॥ तैसे अविद्याकाकार्यहोणेतैं तेरजतादिक भी मिथ्याहींहैं ॥ ऐसेरजतादिकोंकेमिथ्यापणेविषे सापूर्वउक्तदृष्टार्थापत्तिहीं प्रमाणहै इति ॥ अब दूसरी श्रुतार्थापत्तिकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां ( तरतिशोकमात्मवित् ) अर्थयह ॥ आत्मज्ञानवालापुरुष शोक कूं नाशकरैहै ॥ ईहां शोकशब्दकरिकै प्रमातृत्व कर्तृत्व आदिकसर्वबंधका ग्रहणकरणा ॥ इसश्रुतिवचनतैं श्रवणकन्याजो बंधविषे आत्मज्ञानकरिकैनिवर्त्यपणा ॥ सोज्ञाननिवर्त्यपणा ताबंधकूं सत्यमाननेविषे संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं सत्यवस्तुकी ज्ञानकरिकैनिवृत्ति होतीनहीं ॥ किंतु क्रियाकरिकै हीं निवृत्तिहोवैहै ॥ जैसे घटादिकोंकी मुद्गरप्रहारदिरूपक्रियाकरिकै निवृत्तिहोवैहै ॥ और मिथ्यावस्तु

परि०  
२

॥ १२१ ॥



कीतों ज्ञानकरिकैही निवृत्तिहोवैहै ॥ जैसे रज्जुसर्पकी रज्जुकेज्ञानतेंनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातें सोआत्मज्ञानकरिकैनिवर्त्यपणा ताबंधकेमिथ्यापणेतेंविना अनुपपन्नहूआ ताबंधकेमिथ्यापणेकीकल्पनाकरावैहै ॥ इसकानाम श्रुतार्थापत्तिहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सत्यवस्तुकी ज्ञानतेंनिवृत्ति नहींहोती यहआपका कहणा अयुक्तहै ॥ काहेतें श्रीरामकृतसेतुकेदर्शनतें सत्यपापकीनिवृत्ति शास्त्रप्रमाणतेंजानीजावैहै ॥ और गरुडकेध्यानतें सत्यविषकीनिवृत्ति देखणेविषेआवैहै ॥ तैसे सत्यबंधकीभी आत्मज्ञानतेंनिवृत्ति क्युंनहींहोवै ॥ यातें ताबंधकेमिथ्यापणेतेंविनाभी सोज्ञाननिवर्त्यपणा बनिसकेहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सत्यबंधकी ज्ञानतेंनिवृत्तिविषे जोतुमनें सेतुकादर्शनरूप तथागरुडकाध्यानरूप दृष्टांतकह्याहै ॥ सोदृष्टांत दार्ष्टांतिकतेंविषमतावालाहोणेतें ताउक्तअर्थकीसिद्धिकरिसकैनहीं ॥ साविषमतादिखावैहैं ॥ तहां सेतुके केवलदर्शनमात्रतें ब्रह्महत्यादिकपापोंकीनिवृत्तिहोतीनहीं ॥ किंतु धर्मशास्त्रविषेकथनक ज्येजे ब्रह्मचर्य शौच सत्यभाषण आदिकनियमहैं ॥ तिननियमोंकरिकैसहकृत तासेतुदर्शनतेंहीं तापापकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ जोकदाचित् तिननियमोंतेंविना केवल तासेतुकेदर्शनमात्रतेंहीं पापकीनिवृत्तिहोतीहोवै ॥ तों तहांरहणेहारे म्लेच्छादिकोंकेभी तासेतुकेदर्शनतें पापकीनिवृत्तिहोणीचाहिये ॥ जोकहो तासेतुकेदर्शनमात्रतें तिनम्लेच्छादिकोंकेभी पापकर्मकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तों पापकीनिवृत्तिवासतै तासेतुकेदर्शनकर्त्तापुरुषकेप्रति तिननियमोंकाविधानकरणेहाराधर्मशास्त्रहीं अप्रमाणहोवैंगा ॥ यातें क्रियारूपनियमोंकरिकैमिश्रितहोणेतें सोसेतुदर्शनभी क्रियारूपहीहै ॥ ज्ञानरूपनहींहै ॥ ताक्रियारूपसेतुकेदर्शनतें तासत्यपापकीनिवृत्ति बनिसकेहै ॥ तैसे गरुडकाध्यानभी मानसक्रियारूपहै ॥ यातें ताक्रियारूपध्यानतें तासत्यविषकीनिवृत्तिभी बनिसकेहै ॥ और ईहांप्रसंगविषे अन्यसाधनकीअपेक्षातैरहित केव



तत्त्वा०

॥ ५६ ॥

ल आत्मज्ञानकरिकैहीं बंधकानिवर्त्यपणा श्रुतिनैकथनकन्याहै ॥ सोज्ञाननिवर्त्यपणा ताबंधकेसत्यप  
 णेविषे संभवतानहीं ॥ यातैं सोज्ञाननिवर्त्यपणा ताबंधकेमिथ्यापणेकूं कल्पनाकरावैहै इति ॥ ॥  
 शंका ॥ ॥ पूर्व ज्ञाननिवर्त्यपणेतैं प्रमातृत्वादिकबंधका मिथ्यापणा सिद्धकन्या ॥ तहां प्रमाता कि  
 सकानामहै ॥ अर्थात् आत्माकानाम प्रमाताहै ॥ अथवा अंतःकरणकानाम प्रमाताहै ॥ तहां ( असं  
 गोह्ययंपुरुषः ) इत्यादिकश्रुतियोंनै आत्माकूं असंगकह्याहै ॥ और प्रमाज्ञानकेआश्रयकूं प्रमाताकहे  
 हैं ॥ यातैं ताअसंगआत्माविषे सोप्रमातापणा संभवतानहीं ॥ तैसे अंतःकरणविषेभी सोप्रमातापणा  
 संभवतानहीं ॥ काहेतैं सोअंतःकरण भूतोंकाकार्यहोणेतैं घटादिकोंकीन्यांई जडहै ॥ और प्रमातृत्वा  
 दिकधर्म चेतनकेहैं ॥ यातैं जडअंतःकरणविषे सोप्रमातापणा संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ के  
 वलआत्माकूं तथाकेवलअंतःकरणकूं प्रमातापणा हम मानतेनहीं ॥ किंतु अंतःकरणविशिष्टचैतन्यकूंहीं  
 हम प्रमाता मानेहैं ॥ सोप्रमाताहीं कर्त्ताहोवैहै तथाभोक्ताहोवैहै ॥ तहां प्रमाज्ञानकाआश्रयहोणेतैं सो  
 अंतःकरणविशिष्टचैतन्य प्रमाता कहाजावैहै ॥ और प्रयत्नरूपकृतिकाआश्रयहोणेतैं कर्त्ता कहाजावैहै ॥  
 और धर्मअधर्मकरिकैजन्य जो सुखदुःखकाअनुभवरूपभोगहै ताभोगकाआश्रयहोणेतैं भोक्ता कहाजा  
 वैहै ॥ ते प्रमातृत्व कर्तृत्व भोक्तृत्व तीनों ताअंतःकरणविशिष्टचैतन्यरूपप्रमाताकेहीं धर्महैं ॥ केवलआत्मा  
 के तथाकेवलअंतःकरणके तेप्रमातृत्वादिकधर्मनहींहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सोअंतःकरणविशिष्टचैतन्यरूप  
 प्रमाता ताअंतःकरणतैं तथाचैतन्यतैं पृथक्नहींहै ॥ और सोप्रमातृत्वधर्म केवलचैतन्यविषे तथाकेवल  
 अंतःकरणविषे रहतानहीं ॥ यातैं ताअंतःकरणविशिष्टचैतन्यविषेभी सोप्रमातृत्वधर्म कैसेरहेंगा ॥ किंतु  
 नहींरहेंगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे केवलआत्माविषे तथाकेवलअंतःकरणविषे सोप्रमातापणा

परि०  
२

॥ १२२ ॥



वास्तवतः नहीं है ॥ तैसे ता अंतःकरणविशिष्ट चैतन्यविषे भी सो प्रमातापणा वास्तवतः नहीं है ॥ किंतु जैसे शुक्तिविषे रजतका आरोप कन्या जावै है ॥ तैसे ता अंतःकरणविशिष्ट चैतन्यविषे ता प्रमातापणे का आरोप कन्या जावै है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जैसे शुक्तिविषे रजतके आरोप तै पूर्व इस पुरुषकूं देशांतरविषे स्थित रजतका यथार्थ अनुभव हुआ है ॥ ता अनुभवजन्य संस्कार तै हीं ता शुक्तिविषे रजतका आरोप होवै है ॥ तैसे ता विशिष्ट चैतन्यविषे ता प्रमातापणे का आरोप तबी संभवै ॥ जबी ता आरोप तै पूर्व किसी वस्तुविषे ता प्रमातापणे का यथार्थ अनुभव हुआ होवै ॥ ता यथार्थ अनुभव तै विना सो आरोप संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जिस वस्तु का आरोप होवै है ॥ तिस वस्तु का अनुभव मात्र पूर्व चाहिये ॥ सो अनुभव यथार्थ होवै अथवा भ्रमरूप होवै ॥ तहां अनादिसंसारविषे इस जीवकूं ता अंतःकरणविशिष्ट चैतन्यविषे प्रमातापणे का भ्रम होता आया है ॥ ता पूर्व पूर्व भ्रमरूप अनुभवजन्य संस्कारों तै उत्तर उत्तर ता प्रमातापणे का आरोप संभवै है ॥ इस प्रकार कर्तृत्व भोक्तृत्व का आरोप भी जानिलेना ॥ ईहां नैयायिकों केवल आत्मा के हीं ते प्रमातृत्वादिक धर्म माने हैं ॥ सो तिनों का कहना श्रुति स्मृति प्रमाण तै विरुद्ध होने तै असंगत है ॥ तहां ( साक्षीचेता केवल निर्गुणश्च । असंगो ह्ययं पुरुषः । शरीरस्थोऽपि कौंतेय न करोति न लिप्यते ) इत्यादिक श्रुति स्मृति वचनों तै निरुपाधिक आत्माकूं निर्गुण असंग निर्लेप कहा है ॥ ऐसे असंग आत्माविषे ते प्रमातृत्वादिक धर्म संभवते नहीं ॥ या तै ता अंतःकरणविशिष्ट चैतन्य के हीं ते प्रमातृत्वादिक धर्म मान्ये चाहिये ॥ जो कदाचित् ते प्रमातृत्वादिक धर्म केवल आत्मा के मानिये ॥ तौ तिन धर्मों वाले आत्माविषे असंग निर्गुण निर्लेप रूपता संभवती नहीं ॥ या तै आत्मा की असंग निर्गुण निर्लेप रूपता कूं कथन करणे हारे ते उक्त श्रुति स्मृति वचन अप्रमाण रूप होवेंगे ॥ किंवा ता प्रमातृत्वादिक बंधकूं जो आरोपित नहीं मानिये ॥ किंतु सत्य मानिये ॥



तत्त्वा०

॥ ५७ ॥

तौ सत्यवस्तुकी ज्ञानतैनिवृत्ति होतीनहीं ॥ यातै नैयायिकोंकेमतविषे ताबंधकीनिवृत्तिरूपमोक्षहीं नहीं  
 संभवेगा ॥ यातैभी ताबंधकूं कल्पितहीं मान्याचाहिये इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अंतःकरणविशिष्टचैत  
 न्यके प्रमातृत्वादिकधर्म पूर्वकहे ॥ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं आत्मा असंगहै तथानिरवयवहै ॥ और अं  
 तःकरण सावयवहै तथाक्रियावालाहै ॥ ऐसेआत्माका ताअंतःकरणकेसाथि कोईप्रकारकाभीसंबंध संभ  
 वतानहीं ॥ और संबंधतैंविना सोविशिष्टपणा संभवतानहीं ॥ जोकदाचित् संबंधतैंविनाभी विशिष्टपणा  
 होताहोवै ॥ तौ हिमाचलविशिष्टविंध्याचलहै याप्रकारकाव्यवहारभी होणाचाहिये ॥ किंवा सोअंतःक  
 रण सत्यहै वामिथ्याहै ॥ तहां प्रथमसत्यपक्ष जोअंगीकारकरो ॥ तौ तासत्यअंतःकरणकेसंबंधकूंभी  
 सत्यरूपताहींहोवैगी ॥ तासत्यसंबंधकीज्ञानतैनिवृत्ति होवैगीनहीं ॥ यातै किसीभीजीवात्माका मोक्ष  
 नहींहोवैगा ॥ तामोक्षकेअभावहूए तामोक्षकाप्रतिपादनकरणेहाराशास्त्रहीं अप्रमाणरूपहोवैगा ॥ और  
 सोअंतःकरण मिथ्याहै यहद्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरो ॥ सोभी संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं ताअं  
 तःकरणकेमिथ्यापणेविषे कोईभीप्रमाणनहींहै ॥ जोकदाचित् प्रमाणतैंविनाभी अंतःकरणकूंमिथ्यामा  
 नोंगे ॥ तौ आत्माविषेभी सोमिथ्यापणा क्युनहींहोवै ॥ यातैं अंतःकरणविशिष्टचैतन्यके तेप्रमातृत्वा  
 दिकधर्महैं यहकहणा असंगतहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे शुक्तिकेअज्ञानतैं ताशुक्तिविषे रजत क  
 ल्पितहोवैहै ॥ तैसे आत्माकेअज्ञानतैं ताप्रत्यक्आत्माविषे यहअंतःकरणादिक स्वरूपतैं अध्यस्तहोवै  
 हैं ॥ अर्थात् कल्पितहोवैहैं ॥ तहां अध्यस्त कल्पित आरोपित यहतीनोंशब्द एकहींअर्थकेवाचकहो  
 वैहैं ॥ इतनैकहणेकरिकै ताअंतःकरणकेकल्पितपणेविषे यहअनुमान बोधनकन्या ॥ ( अंतःकरणं अ  
 ध्यस्तं जडत्वात् दृश्यत्वात् आविद्यकत्वाच्च शुक्तिरजतवत् ) अर्थयह ॥ अंतःकरण प्रत्यक्आत्माविषे

परि०  
२

॥ १२३ ॥



अध्यस्तहै जडहोनेतैं तथा दृश्यहोनेतैं तथा आविद्यकहोनेतैं ॥ जो जो पदार्थ जड तथा दृश्य तथा आविद्यक होवैहै ॥ सो सो पदार्थ अध्यस्तहीं होवैहै ॥ जैसे शुक्तिरजत जड दृश्य आविद्यकहोनेतैं अध्यस्तहै इति ॥ इस अनुमान प्रमाण करिकै ता अंतःकरणविषे कल्पित पणाहीं सिद्ध होवैहै ॥ तथा (अतोऽन्यदा र्त) अर्थ यह ॥ चैतन्य आत्मातैं अन्य सर्व पदार्थ मिथ्याहैं ॥ इस श्रुति प्रमाणतैं भी ता अंतःकरणविषे कल्पित पणाहीं सिद्ध होवैहै ॥ यातैं सो अंतःकरण कल्पितहींहै ॥ किंवा (जडोऽहं चेतनोऽहं) इस प्रकारके अनुभवतैं जड अंतःकरणादिकों का तों आत्माविषे अध्यास प्रतीत होवैहै ॥ और चेतन आत्माका अंतःकरणविषे अध्यास प्रतीत होवैहै ॥ यातैं सिद्धांतविषे आत्माका तथा अंतःकरणादिक अनात्माका परस्पर अध्यास विवक्षितहै ॥ परंतु ताके विषे इतना भेदहै ॥ जैसे अंतःकरणादिक स्वरूपतैं आत्माविषे अध्यस्त हैं ॥ तैसे आत्मा अंतःकरणादिकों विषे स्वरूपतैं अध्यस्त नहींहै ॥ किंतु ता अंतःकरणविषे सो आत्मा संसर्गरूपतैं अध्यस्तहै ॥ जो कदाचित् अंतःकरणादिकों की न्यांई आत्मा कूं भी स्वरूपतैं अध्यस्त मानिये ॥ तों अधिष्ठानके ज्ञान करिकै जैसे तिन अंतःकरणादिकों का बाध होवैहै ॥ तैसे ता आत्माका भी बाध होना चाहिये ॥ और सर्व का साक्षी रूप होनेतैं बाधके अयोग्य आत्मा परमार्थ सत्यहै ॥ ऐसे आत्माका बाध संभवतानहीं ॥ यातैं ता अंतःकरणविषे आत्माका स्वरूपतैं अध्यास संभवतानहीं ॥ किंतु संसर्गरूपतैं ही अध्यास संभवैहै ॥ इसी प्रकारके आत्म अनात्मके अध्यास कूं श्री भगवान् भाष्यकार शारीरक मीमांसाके आदि विषे वर्णन करते भयेहैं ॥ इस प्रकार असंग आत्माविषे अंतःकरणादिकोंके वास्तव संबंधके अभाव हूण भी आध्यासिक संबंध संभवैहै ॥ ता आध्यासिक संबंध करिकै ही आत्मा कूं अंतःकरण विशिष्टताहै ॥ यातैं ता अंतःकरण विशिष्ट चैतन्यविषे ते प्रमातृत्वादिक धर्म संभवैहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अंतःकरणादिक



तत्त्वा०

॥५८॥

आत्माविषेअध्यस्तहैं यहआपकाकहणा तबीसंभवै ॥ जबी अध्यासकास्वरूप निर्णयहोवै ॥ ताअध्यासकेस्वरूपनिर्णयतैंविना अंतःकरणादिकोंकूं अध्यस्तकहणा संभवतानहीं ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहूए ॥ अब ताअध्यासकालक्षणकहेहैं ॥ ( परत्रपरावभासः अध्यासः ) अर्थयह ॥ अन्यविषे जोअन्यका अवभासहै ताकानाम अध्यासहै ॥ सोअध्यास ज्ञानाध्यास १ अर्थाध्यास २ इसभेदकरिकै दोप्रकारका होवैहै ॥ तहां ज्ञानाध्यासपक्षविषेतों ताअवभासपदकरिकै भ्रांतिज्ञानकाग्रहणकरणा ॥ और अर्थाध्यासपक्षविषे ताअवभासपदकरिकै ताभ्रमज्ञानकेविषयभूतरजतादिकअर्थका ग्रहणकरणा ॥ यातैं सोउक्त अध्यासकालक्षण तिनदोनोंअध्यासोंविषेघटेहै इति ॥ अब यथाक्रमतैं ताज्ञानाध्यासका तथाअर्थाध्यासका लक्षणकहेहैं ॥ तहां ( अतस्मिंस्तद्वुद्धिः ज्ञानाध्यासः ) अर्थयह ॥ तिसवस्तुकीअधिकरणताकेअयोग्यअधिकरणविषे जातिसवस्तुकीबुद्धिहै ताकानाम ज्ञानाध्यासहै ॥ जैसे वास्तवतैं रजतकीअधिकरणताकेअयोग्यशुक्तिविषे जा इंदरजतं याप्रकारकीबुद्धिहै ॥ तथा वास्तवतैं अंतःकरणादिरूपअनात्माकी अधिकरणताकेअयोग्यआत्माविषे जाअनात्मबुद्धिहै ॥ ताकानाम ज्ञानाध्यासहै इति ॥ और ( प्रमाणजन्यज्ञानविषयत्वेसति पूर्वदृष्टत्वानधिकरणं अर्थाध्यासः ) अर्थयह ॥ जोपदार्थ प्रमाणकरिकैअजन्यज्ञानका विषयहोवैहै तथापूर्वदृष्टत्वधर्मका अधिकरणनहींहोवैहै ॥ सोपदार्थ अर्थाध्यास कहाजावैहै ॥ जैसे शुक्तिविषेरजत तथाआत्माविषेअंतःकरणादिक अर्थाध्यासरूपहैं ॥ तहां ताशुक्तिरजतकूंविषयकरनेहारा जोइंदरजतं यहज्ञानहै ॥ सोज्ञान अप्रमारूपहोणेतैं किसीभीप्रमाणकरिकैजन्यनहींहै ॥ यातैं सोरजत ताप्रमाणअजन्यज्ञानकाविषयभीहै ॥ और सोरजत आपणीप्रतीतितैंपूर्वथानहीं ॥ यातैं सोरजत पूर्वदृष्टत्वधर्मका अनधिकरणभीहै ॥ यातैं तारजतविषे अर्थाध्यासरूपता संभवैहै ॥ इसप्रकारका

परि०  
२

॥१२४॥



अर्थाध्यासकालक्षण रज्जुसर्पादिकोंविषेभीजानिलेना ॥ तहां । पूर्वदृष्टत्वानधिकरणं । इतनामात्रहीं जो ताअर्थाध्यासकालक्षणकरते ॥ तौं अवीनवीनउत्पन्नदूषघटविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ जिसकारणतें सोघटभी तापूर्वदृष्टत्वधर्मका अनधिकरणहीं है ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे प्रमाणजन्यज्ञानकाविषयत्व कहा है ॥ सो ताघटविषेहैनहीं ॥ किंतु ताघटविषे प्रमाणजन्यज्ञानकाविषयत्वहीं है ॥ यातें ताघटविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ और । प्रमाणाजन्यज्ञानविषयत्वं । इतनामात्रहीं जो ताअर्थाध्यासकालक्षणकरते ॥ तौं स्मरणकन्येजे शिवविष्णुगंगादिकपदार्थहैं तिनोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ जिसकारणतें प्रमाणअजन्यस्मृतिज्ञानकाविषयत्व तिनोंविषेभी है ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे । पूर्वदृष्टत्वानधिकरणं । यहपदकथनकन्या है ॥ तहां पूर्वदृष्टपदार्थकीहींस्मृतिहोवै है ॥ यातें तिनस्मर्यमाणपदार्थोंविषे तापूर्वदृष्टत्वधर्मका अनधिकरणपणानहीं हैं ॥ किंतु अधिकरणपणाहीं है ॥ यातें तिनस्मर्यमाणपदार्थोंविषे ताअर्थाध्यासकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ तहां इसउक्तअर्थाध्यासकेलक्षणविषे प्रमाणशब्दकरिकै प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकाबोधक जोतत्त्वमसिआदिकमहावाक्यहै ताकाग्रहणकरणा ॥ तिसमहावाक्यरूपप्रमाणकरिकैअजन्य जोवृत्तिअभिव्यक्तचैतन्यरूपज्ञानहै ॥ ताज्ञानकाविषयपणा घटादिकव्यावहारिकपदार्थोंविषे तथाशुक्तिरजतादिकप्रातिभासिकपदार्थोंविषे विद्यमानहीं है ॥ और चैतन्यआत्मातेंभिन्न सर्वअनात्मपदार्थ क्षणक्षणविषे परिणामकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ यातें तिनघटादिकपदार्थोंविषे तापूर्वदृष्टत्वधर्मका अनधिकरणपणाभी है ॥ यातें सोउक्तअर्थाध्यासकालक्षण व्यावहारिकप्रातिभासिकसर्वपदार्थोंका साधारणहै ॥ तात्पर्ययह ॥ वेदांतसिद्धांतविषे ब्रह्मचैतन्यतेंभिन्न जितनैकी घटादिकव्यावहारिकपदार्थहैं तथा



तत्त्वा०

॥ ५९ ॥

शुक्तिरजतादिकप्रातिभासिकपदार्थहैं ॥ तेसर्व ताब्रह्मचैतन्यविषेअध्यस्तहोणेतैं अर्थाध्यासरूपहीहैं ॥ यातैं ताउक्तअर्थाध्यासकेलक्षणकूं व्यावहारिकप्रातिभासिकसर्वपदार्थोंका साधारणलक्षणपणा युक्तहै इति ॥ और केईकग्रंथकारतों यहकहेहैं ॥ सोउक्तअर्थाध्यासकालक्षण केवल प्रातिभासिकरजतादिकों काहीहै ॥ घटादिकव्यावहारिकपदार्थोंका सोलक्षणनहींहै ॥ यातैं तालक्षणविषेस्थित प्रमाणशब्दकरि कै तत्त्वमसिआदिकप्रमाणका ग्रहणनहींकरणा ॥ किंतु ताप्रमाणशब्दकरिकै अज्ञातअर्थकेबोधकप्रत्यक्षादिकप्रमाणकाही ग्रहणकरणा ॥ ताप्रत्यक्षादिकप्रमाणअजन्यज्ञानकाविषयपणा केवलशुक्तिरजतादिकप्रातिभासिकपदार्थोंविषेहीहै ॥ घटादिकव्यावहारिकपदार्थोंविषेहैनहीं ॥ यातैं प्रातिभासिकशुक्तिरजतादिरूपअर्थाध्यासकाही सोउक्तलक्षणहै इति ॥ अब ताउक्तअर्थाध्यासकाविभाग वर्णनकरेहैं ॥ तहां सोउक्तअर्थाध्यास प्रातीतिक १ व्यावहारिक २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां ( आगंतुकदोषजन्यः प्रातीतिकः ) अर्थयह ॥ जोपदार्थ आगंतुकदोषकरिकैजन्यहोवैहै ॥ सोपदार्थ प्रातीतिक कहाजावैहै ॥ इसीप्रातीतिककूं प्रातिभासिकभीकहेहैं ॥ जैसे शुक्तिविषेरजत तथारज्जुविषेसर्प तथा मरुभूमिविषेजल इत्यादिकपदार्थ आगंतुकदोषकरिकैजन्यहोणेतैं प्रातीतिक कहेजावैहैं ॥ तहां सोप्रातीतिकपदार्थकाजनकदोष प्रमादोष १ विषयदोष २ करणदोष ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां रागभयादिक प्रमातागतदोषहै ॥ और सादृश्यादिक विषयगतदोषहै ॥ और काचकामलादिक चक्षुआदिककरणगतदोषहै ॥ इसप्रकारकेतीनदोषोंकरिकैजन्यहोणेतैं तेशुक्तिरजतादिक प्रातीतिकअर्थाध्यासरूपहैं इति ॥ और ( प्रातीतिकभिन्नः व्यावहारिकः ) अर्थयह ॥ आगंतुकदोषजन्यप्रातीतिकपदार्थतैंभिन्नजोपदार्थहै सो व्यावहारिक कहाजावैहै ॥ जैसे आकाशतैंआदिलैकेघटपर्यंतपदार्थ व्याव

परि०

२

॥ १२५ ॥



हारिक अर्थाध्यासरूपहैं ॥ तहां आत्मज्ञानतै पूर्व जिन पदार्थों का बाध नहीं होवैहै ॥ ते पदार्थ व्यावहारिक  
 कहे जावैहैं ॥ और आत्मज्ञानतै पूर्वहीं जिन पदार्थों का बाध होवैहै ॥ ते पदार्थ प्रातीतिक तथा प्रातिभासि  
 क कहे जावैहैं इति ॥ और केई ग्रंथकार तों ता प्रातीतिक व्यावहारिक अर्थाध्यास का या प्रकार का साधार  
 ण लक्षण कहेहैं ॥ ( दोष संप्रयोग संस्कार जन्यत्वं अध्यस्तत्वं ) अर्थ यह ॥ पूर्व उक्त दोष तथा शुक्ति आदिक  
 अधिष्ठान के साथ चक्षु आदिक इंद्रिय का संबंध रूप संप्रयोग तथा देशांतरीयरजतादिकों के अनुभव जन्य सं  
 स्कार इन तीनों करिके जो जन्य पणाहै ॥ यहहीं तिन रजतादिकों विषे अध्यस्त पणाहै ॥ यद्यपि सिद्धांत  
 विषे अविद्या अनादि होणेतै तिन दोषादिकों तै जन्य नहींहै ॥ यातै ता अविद्या अध्यास विषे इस उक्त लक्षण  
 की अव्याप्तिहीं होवैहै ॥ तथापि यह उक्त लक्षण अंतःकरणादिरूप कार्य अध्यास काहींहै ॥ अनादि अविद्या  
 का सो लक्षण नहीं ॥ यातै ता लक्षण का अलक्ष्य रूप अविद्या विषे ता लक्षण की अव्याप्ति होवैनहीं ॥ तात्प  
 र्य यह ॥ सो कार्य अध्यासहीं जाग्रत्स्वप्न विषे इस जीव के अनर्थ का हेतु होवैहै ॥ और सो अविद्या अध्यास  
 सुषुप्ति विषे विद्यमान हू आभी अनर्थ का हेतु होतानहीं ॥ यातै सो उक्त लक्षण ता कार्य अध्यास काहींहै ॥ ॥  
 शंका ॥ ॥ ता उक्त लक्षण विषे दोष संप्रयोग संस्कार इन तीन पदों के कहणे का क्या प्रयोजन है ॥ ॥  
 समाधान ॥ ॥ ता लक्षण विषे तिन तीन पदों के कहणे करिके ता अध्यास के यह दो लक्षण सिद्ध होवैहैं ॥  
 ( दोष जन्यत्वे सति संस्कार जन्यत्वं अध्यस्तत्वं ॥ १ ॥ अथवा संप्रयोग जन्यत्वे सति संस्कार जन्यत्वं अध्य  
 स्तत्वं ॥ २ ॥ ) अर्थ यह ॥ जो पदार्थ दोष करिके जन्य हू आ संस्कार करिके जन्य होवैहै ॥ सो पदार्थ अध्यस्त क  
 ह्या जावैहै ॥ १ ॥ अथवा जो पदार्थ संप्रयोग करिके जन्य हू आ संस्कार करिके जन्य होवैहै ॥ सो पदार्थ अ  
 ध्यस्त कहा जावैहै ॥ २ ॥ तहां प्रथम लक्षण विषे संस्कार जन्य स्मृति विषे अतिव्याप्तिके निवृत्त करणे वासतै



तत्त्वा०

॥ ६० ॥

परि०

२

दोषजन्य यहपद कथनकन्याहै ॥ और दोषरूपविषयकरिकैजन्य जादोषकीप्रत्यक्षप्रमाहै ताकेविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे संस्कारजन्य यहपद कथनकन्याहै ॥ तैसे द्वितीयलक्षणविषे भी संस्कारजन्यस्मृतिज्ञानविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै संप्रयोगजन्य यहपद कथनकन्याहै ॥ और तासंप्रयोगजन्यप्रत्यक्षप्रमाविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै संस्कारजन्य यहपद कथनकन्याहै ॥ यद्यपि इसद्वितीयलक्षणकी सोऽयं देवदत्तः इसप्रत्यभिज्ञाप्रत्यक्षविषे अतिव्याप्तिहोवैहै ॥ जिसकारणतैं साप्रत्यभिज्ञा संप्रयोग संस्कार दोनोंकरिकैजन्यहीहै ॥ तथापि तालक्षणविषे । प्रत्यभिज्ञाभिन्नत्वे सति । इसविशेषणकेकहणेतैं ताप्रत्यभिज्ञाविषेअतिव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ आत्मा विषे जोअंतःकरणादिकोंकाअध्यासहै ॥ ताकेविषे संप्रयोगजन्यत्व संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं ता अधिष्ठानआत्माकेसाथि चक्षुआदिकइंद्रियोंका संबंधहैनहीं ॥ यातैं ताअंतःकरणादिकोंकेअध्यासविषे ताउक्तलक्षणकीअव्याप्तिहीहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तहां संप्रयोगशब्दकरिकै अधिष्ठानआत्मा केसत्तादिकसामान्यअंशकाज्ञानहीं विवक्षितहै ॥ सोसामान्यज्ञान ताअंतःकरणादिकोंकेअध्यासतैंपूर्व विद्यमानहींहै ॥ सोअधिष्ठानआत्माकासामान्यज्ञान कोईइंद्रियकरिकैजन्यहैनहीं ॥ किंतु आपणेस्वयं ज्योतिस्वभावतैंहीहै ॥ यातैं ताअंतःकरणादिकोंकेअध्यासविषे ताउक्तलक्षणकीअव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व दोषकूं तथासंस्कारकूं रजतादिरूपअर्थकाजनकपणा कहा ॥ सोसंभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं तादोषसंस्कारकूं रजतादिकोंकेज्ञानकाहीजनकपणा देख्याहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताउक्तदोषसंस्कारकेहूएहीं तारजतादिरूपअर्थकी तथाताकेज्ञानकी उत्पत्ति होवैहै ॥ तादोषसंस्कारकेअभावहूए तारजतादिरूपअर्थकी तथाताकेज्ञानकी उत्पत्तिहोतीनहीं ॥ इसप्रकारकेअन्वयव्य

॥ १२६ ॥



स्कारके अभावहू तारजतादिरूपजन्यता का ज्ञान नहीं ॥ इस प्रकार के अन्वयव्य

तिरेक करिके ता दोष संस्कारकूं अर्थाध्यास ज्ञानाध्यास दोनों के प्रति कारणता सिद्ध होवै है ॥ यातें ता ज्ञानाध्यास की न्याई ता अर्थाध्यास कूं भी दोष संस्कार करिके जन्यता संभवै है इति ॥ इस उक्त अभिप्राय करिके ही श्री भगवान् भाष्यकारने (स्मृतिरूपः परत्र पूर्वदृष्टावभासः) यह अध्यास कालक्षण कन्या है ॥ यह अध्यास कालक्षण ज्ञानाध्यास का तथा अर्थाध्यास का साधारण है ॥ तहां ज्ञानाध्यास पक्ष विषेतों ता भाष्य उक्त लक्षण का यह अर्थ करणा ॥ स्मृतिरूप कहिये संस्कार जन्य होने तें स्मृतिके सदृश ऐसा जो परत्र पूर्वदृष्टावभास कहिये पूर्वदृष्ट अर्थ के सजातीय अर्थ का ज्ञान है ताका नाम ज्ञानाध्यास है ॥ जैसे शुक्ति विषे इंदरज तं यह ज्ञान है ॥ और अर्थाध्यास पक्ष विषे ता भाष्य उक्त लक्षण का यह अर्थ करणा ॥ स्मृतिरूप कहिये प्रमाण जन्य ज्ञान का विषय ऐसा जो पूर्वदृष्ट अर्थ के सजातीय अर्थ है ताका नाम अर्थाध्यास है ॥ जैसे शुक्ति आदिकों विषे रजतादिक हैं इति ॥ इस प्रकार अध्यास के सिद्ध हूए प्रमातृत्व कर्तृत्व भोक्तृत्व आदिक बंधकूं अध्यस्त होने तें मिथ्यापणा बनिसके है ॥ यातें (तरति शोकमात्मवित्) इस उक्त श्रुति वचन तें श्रवण कन्या जो बंध विषे ज्ञान निवर्त्यत्व सो ता बंध के मिथ्यापणे तें विना अनुपपन्न हूआ ता बंध के मिथ्यापणे कूं कल्पना करावै है ॥ यह पूर्व उक्त श्रुतार्थापत्ति सिद्ध भई ॥ ॥ इति अर्थापत्ति प्रमानिरूपणं ॥ ५ ॥ ॥ अब षष्ठी अभाव प्रमाका निरूपण करे हैं ॥ तहां (योग्यानुपलब्धिकरणिका प्रमा अभाव प्रमा) अर्थ यह ॥ योग्य ऐसी जा अनुपलब्धि है सा अनुपलब्धि है करण जिस प्रमाका सा प्रमा अभाव प्रमा कही जावै है ॥ तहां जिस अधिकरण विषे जिस अभाव का ज्ञान होवै है ॥ तिस अधिकरण विषे जो तिस अभाव के प्रतियोगी का ज्ञान है ताका नाम उपलब्धि है ॥ तिस उपलब्धिकूं उपलंभ भी कहे हैं ॥ ता उपलब्धिके अभाव का नाम अनुपलब्धि है तथा अनुपलंभ है ॥ सा अनुपलब्धि ही अभाव प्रमाका करण होवै है ॥ जैसे जिस भूतल विषे घटोऽस्ति



तत्त्वा०

॥ ६१ ॥

याप्रकारका घटकाज्ञान होवैहै ॥ तिसभूतलविषे घटोनास्ति याप्रकारका घटाभावकाज्ञान होतान  
 हीं ॥ किंतु घटोऽस्ति इसज्ञानका जहां अभावहोवैहै ॥ तहांहीं घटोनास्ति याप्रकारका घटाभावका  
 ज्ञान होवैहै ॥ यातैं ताघटज्ञानकेअभावरूपअनुपलब्धिविषे ताघटाभावविषयकप्रमाकीकरणता अन्वय  
 व्यतिरेकरिकैसिद्धहै ॥ परंतु ताअनुपलब्धिविषे योग्यताभी अपेक्षितहै ॥ जोकदाचित् केवल ताअ  
 नुपलब्धिमात्रतैंहीं साअभावप्रमा उत्पन्नहोतीहोवै ॥ तौं अंधकारविषे विद्यमानहूएघटकीभी उपलब्धि  
 होतीनहीं ॥ यातैं घटकेउपलब्धिकाअभावरूपअनुपलब्धि तहां विद्यमानहींहै ॥ तथा आत्माविषे वि  
 द्यमानहूएधर्मअधर्मकीभी उपलब्धिहोतीनहीं ॥ यातैं ताधर्माधर्मकेउपलब्धिकाअभावरूपअनुपलब्धि  
 तहां विद्यमानहींहै ॥ यातैं ताअनुपलब्धिकरिक्के ताअंधकारविषेभी घटाभावकीप्रमा उत्पन्नहोणीचा  
 हिये ॥ तथा आत्माविषे धर्माधर्मकेअभावकीप्रमा उत्पन्नहोणीचाहिये ॥ और उक्तस्थलविषे साअभा  
 वविषयकप्रमा उत्पन्नहोतीनहीं ॥ यातैं अभावप्रमाकीउत्पत्तिकरणेविषे ताअनुपलब्धिकूं योग्यताकी  
 अपेक्षा अवश्यहोवैहै ॥ तहां ताअनुपलब्धिकरिक्के जिसअभावकाज्ञानहोवैहै ॥ ताअभावकेप्रतियोगी  
 काआरोपकरिक्के जहां ताप्रतियोगीकेउपलब्धिका आपादनकन्याजावैहै ॥ ताउपलब्धिकाअभावरूप  
 जाअनुपलब्धिहै सा योग्यानुपलब्धि कहीजावैहै ॥ जैसे प्रकाशवालेभूतलविषे ( यदिअत्रघटःस्यात् त  
 र्हिउपलभ्येत ) अर्थयह ॥ इसभूतलविषे जोकदाचित् घटहोवै ॥ तौं इसभूतलकीन्यांई सोघटभी प्रती  
 तहोवै ॥ परंतु प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं इसभूतलविषे घट नहींहै ॥ इसप्रकार घटरूपप्रतियोगीकेसत्त्व  
 काआरोपणकरिक्के ताघटकेउपलब्धिका आपादन कन्याजावैहै ॥ यातैं ताघटकेउपलब्धिकाअभावरू  
 प साघटकीअनुपलब्धि योग्यकहीजावैहै ॥ तायोग्यानुपलब्धितैं ताप्रकाशवालेभूतलविषे घटोनास्ति

परि०  
२

॥ १२७ ॥



या प्रकारकी अभाव प्रमा उत्पन्न होवै है ॥ और अंधकार विषे विद्यमान हूआ भी घट प्रतीत होतानहीं ॥ और आत्मा विषे विद्यमान हूआ भी धर्माधर्म प्रतीत होतानहीं ॥ यातें इस अंधकार विषे जो घट होवै तों प्रतीत होवै तथा आत्मा विषे जो धर्माधर्म होवै तों प्रतीत होवै या प्रकारतें घटादिरूप प्रतियोगी के सत्त्व का आरोपण करिकै ताके उपलब्धिका आपादन कन्या जातानहीं ॥ यातें ता अंधकार विषे घटकी अनुपलब्धि तथा आत्मा विषे धर्माधर्मकी अनुपलब्धि योग्य नहीं है ॥ या कारणतें अंधकार विषे घटके अभाव का तथा आत्मा विषे धर्माधर्मके अभाव का अनुपलब्धितें ज्ञान होतानहीं ॥ किंतु अनुमानादिकोंतें ता अभाव का ज्ञान होवै है ॥ तहां सा उक्त योग्यानुपलब्धितों करण है ॥ और अभाव प्रमा फल है इति ॥ ईहां नैयायिकों यह कहै हैं ॥ पूर्व उक्त योग्यानुपलब्धिकरिकै सहकृत इंद्रिय रूप प्रत्यक्ष प्रमाण करिकै हीं भूतलादिकों विषे घटादिकोंके अभाव का ज्ञान होइ सके है ॥ ता अभावके ज्ञान वासतै ता योग्यानुपलब्धिकूं पृथक् प्रमाण तामानने विषे गौरव दोष की हीं प्राप्ति होवै है ॥ और जो कोई ऐसा कहै ॥ ता घटाभाव का अधिकरण जो भूतल है ॥ तिसके साथितों चक्षु इंद्रिय का संयोग संबंध है ॥ परंतु ता घटाभावके साथि ता चक्षु इंद्रिय का कोई संबंध है नही ॥ यातें ता अभावके ज्ञान विषे इंद्रियकूं करण ता संभवती नही ॥ सो यह कहना भी असंगत है ॥ काहेतें ता अभावके साथि इंद्रिय का संयोगादिरूप संबंधके अभाव हूए भी विशेषण विशेष्य भावरूप संबंध विद्यमान है ॥ ता संबंध करिकै ता अभाव का इंद्रिय करिकै प्रत्यक्ष ज्ञान संभवै है इति ॥ सो यह नैयायिकों का मत समीचीन नहीं है ॥ काहेतें चक्षु आदिक इंद्रिय का भूतलादिक अधिकरणके साथि हीं संयोगादिरूप संबंध है ॥ ता अभावके साथि कोई भी संबंध है नही ॥ यातें ते चक्षु आदिक इंद्रिय ता भूतलादिरूप अधिकरणके ज्ञान विषे हीं चरितार्थ हैं ॥ अभाव ज्ञान विषे ता इंद्रियकूं करण तानहीं है ॥ और नैयायिकों नें जो इंद्रि



तत्त्वा०

॥ ६२ ॥

यका अभावके साथि विशेषणविशेष्यभावसंबंध मान्या है ॥ सोभी असंगत है ॥ काहेतैं दोपदार्थोंका परस्परसंबंध होवै है ॥ सोसंबंध तिनदोसंबंधियोंतैं भिन्न होवै है ॥ तथा तिनदोनोंसंबंधीयोंके आश्रित होवै है ॥ तथा एक होवै है ॥ जैसे चक्षुभूतलका संयोगसंबंध ताचक्षुभूतलरूपदोनोंसंबंधीयोंतैं भिन्न भी है ॥ तथा तिनदोनोंसंबंधीयोंके आश्रित भी है ॥ तथा एक भी है ॥ इस प्रकारका संबंधकालक्षण ताविशेषणविशेष्यभावविषे घटतानहीं ॥ काहेतैं । घटाभाववत् भूतलं । इसप्रतीतिविषे घटाभाव विशेषण है और भूतल विशेष्य है ॥ और । भूतले घटाभावः । इसप्रतीतिविषे भूतल विशेषण है और घटाभाव विशेष्य है ॥ तहां ताअभावविषे ही जाविशेषणता है ताकानाम विशेषणभाव है ॥ और ताअभावविषे ही जाविशेष्यता है ताकानाम विशेष्यभाव है ॥ तहां सोविशेषणभावतों ताविशेषणरूपहीं है ॥ और सोविशेष्यभावभी ताविशेष्यरूपहीं है ॥ ताविशेषणविशेष्यतैं सोविशेषणविशेष्यभाव भिन्न नहीं है ॥ और अभेदविषे आधाराधेयभाव होतानहीं ॥ यातैं सोविशेषणविशेष्यभाव ताअभावरूपसंबंधीतैं भिन्न नहीं है ॥ तथा तासंबंधीके आश्रित भी नहीं है ॥ तथा विशेषणताविशेष्यतारूपतैं दो प्रकारका होणेतैं एक भी नहीं है ॥ यातैं ताविशेषणविशेष्यभावकूं इंद्रियसंबंधरूपता संभवती नहीं ॥ किंवा अभावके प्रत्यक्षविषे जोविशेषणता सन्निकर्षकूं कारण मानिये ॥ तों व्यवहित भूतलविषे स्थित अभावका भी चक्षु इंद्रियकरिकै प्रत्यक्ष होना चाहिये ॥ जिस कारणतैं ताभूतलविषे सोअभाव विशेषणरूपतैं विद्यमानहीं है ॥ तथा चक्षु इंद्रियका भी ताभूतलके साथि संयुक्त संयोगादिरूप परंपरासंबंध विद्यमानहीं है ॥ किंवा विशेषणताकूं भी जो इंद्रियका सन्निकर्षमानिये ॥ तों भूतलविषे स्थित घटका तथा ताघटविषे स्थित रूपादिकोंका भी ताविशेषणता सन्निकर्षकरिकै ही प्रत्यक्ष संभवै है ॥ यातैं नैयायिकोंनैं अंगीकार कये जे समवायादिक सन्निकर्षहैं ॥ तिनसर्वोंका

परि०  
२

॥ १२८ ॥



लोपहोवेंगा ॥ यातें ताविशेषणविशेष्यभावविषे सन्निकर्षरूपता संभवतीनहीं ॥ और चक्षुआदिकइंद्रिय स्वअसंबद्धअर्थकेप्रत्यक्षकूं उत्पन्नकरतेनहीं ॥ यातें ताअभावकेज्ञानविषे इंद्रिय करणनहींहैं ॥ किंतु सा उक्तयोग्यानुपलब्धिहीं करणहै इति ॥ अब प्रसंगतें करणकालक्षणकहेहैं ॥ ( असाधारणकारणं करणं ) अर्थयह ॥ जिसकार्यका जो असाधारणकारणहोवैहै ॥ सोअसाधारणकारण तिसकार्यका करण कहाजावैहै ॥ जैसे प्रत्यक्षप्रमाके चक्षुआदिकइंद्रिय असाधारणकारणहोणेतें करणहैं ॥ तथा उक्तअभावप्रमाका योग्यानुपलब्धि असाधारणकारणहोणेतें करणहै ॥ इसप्रकार अनुमानादिकोंविषेभी करणकालक्षण जानिलेणा ॥ तहां कार्यमात्रकेप्रति साधारणकारणरूप जे अदृष्ट देश काल आदिकहैं ति नोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे । असाधारण । यहपद कथनकन्याहै इति ॥ तहां यहउक्तकरणकालक्षण कारणकरिकैघटितहै ॥ यातें ताकरणकेलक्षणकीसिद्धिवासतै कारण कालक्षण कहेहैं ॥ ( नियतपूर्ववृत्ति कारणं ) अर्थयह ॥ जोपदार्थ जिसकार्यकीउत्पत्तितेंपूर्व नियमकरिकै वर्त्तेहै ॥ सोपदार्थ तिसकार्यकेप्रति कारण कहाजावैहै ॥ जैसे घटरूपकार्यकीउत्पत्तितेंपूर्वकालविषे मृत्तिका कुलाल दंड चक्र आदिक नियमकरिकैरहेहैं ॥ यातें तेमृत्तिकादिक ताघटरूपकार्यकेप्रति कारण कहेजावैहैं इति ॥ अब ताउक्तकारणका विभाग वर्णनकरेहैं ॥ सोउक्तकारण उपादानकारण १ निमित्तकारण २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां ( कार्यान्वितं कारणं उपादानकारणं ) अर्थयह ॥ कार्यविषे अन्वित कहिये तादात्म्यभावकूंप्राप्तभया जोकारणहै सो उपादानकारण कहाजावैहै ॥ जैसे घटरूपकार्यविषेअन्वित मृत्तिका ताघटका उपादानकारणहै ॥ और पटरूपकार्यविषेअन्वित तंतु तापट का उपादानकारणहै ॥ तहां घटादिककार्यके निमित्तकारणरूप जेकुलालादिकहैं ॥ तिनोंविषे इसउपादा



तत्त्वा०

॥ ६३ ॥

नकारणकेलक्षणकी अतिव्याप्तिके निवृत्तकरणे वासतै तालक्षणविषे । कार्यान्वितं । यहपद कथनकन्याहै ॥  
 तेकुलालादिकनिमित्तकारण घटादिरूपकार्यविषे अन्वितहोतेनहीं ॥ यातैं तिनोंविषे अतिव्याप्तिहोवै  
 नहीं ॥ और घटादिककार्यविषेअन्वित जेरूपादिकहैं तिनोंविषे इसलक्षणकी अतिव्याप्तिके निवृत्तकरणे  
 वासतै । कारणं । यहपद कथनकन्याहै ॥ तेरूपादिक ताघटकेकारणहैंनहीं ॥ यातैं तिनोंविषे तालक्ष  
 णकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ और ( कार्यानुकूलव्यापारवत्कारणं निमित्तकारणं ) अर्थयह ॥ का  
 र्यकीउत्पत्तिकेअनुकूल जोव्यापारहै ताव्यापारवालाकारण निमित्तकारण कहाजावैहै ॥ जैसे घटादि  
 ककार्यकीउत्पत्तिकेअनुकूलव्यापारवालेकुलालादिक ताघटादिरूपकार्यके निमित्तकारणहैं ॥ और ब्र  
 ह्मतों इसजगतरूपकार्यका उपादानकारण तथानिमित्तकारण दोनोंहै ॥ यातैं ताब्रह्मविषे इसनिमित्त  
 कारणकेलक्षणकी तथाउक्तउपादानकारणकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ब्रह्म  
 कूं प्रपंचका उपादानकारणपणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं लोकविषे समानस्वभाववाले मृत्तिकाघटादि  
 कोंकाहीं परस्पर उपादानउपादेयभाव देखाहै ॥ विलक्षणस्वभाववालेपदार्थोंका सोउपादानउपादेय  
 भाव कहांभीदेखीतानहीं ॥ और ब्रह्मतों चेतनरूपहै ॥ और कार्यप्रपंच जडरूपहै ॥ यातैं ब्रह्मप्रपंच  
 दोनों परस्परविलक्षणहै ॥ यातैं ताविलक्षणब्रह्मकूं ताविलक्षणप्रपंचका उपादानकारणपणा संभवतान  
 हीं ॥ और जोऐसाकहो ॥ जैसे इंद्रियोंकेअगोचर धर्मअधर्मविषे श्रुतिहीं प्रमाणहै ॥ तैसे इंद्रियोंके  
 अगोचरब्रह्मविषेभी श्रुतिहीं प्रमाणहै ॥ और ( यतोवाइमानिभूतानिजायंते ) इत्यादिकश्रुति ब्रह्मतैं  
 जगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकंकथनकरतीहूई ताब्रह्मकूंहीं जगत्का उपादानकारण कहेहै ॥ यातैं ताश्रु  
 तिकेवलतैंहीं ब्रह्मकूं जगत्कीउपादानकारणता सिद्धहै ॥ और श्रुतिसिद्धअर्थविषे युक्तिकीअपेक्षा हो

परि०

२

॥ १२९ ॥



तीनहीं ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं युक्तिकेविरोधहूए ताश्रुतिअर्थका निर्णय होइसक  
तानहीं ॥ जोकदाचित् युक्तिकेविरोधहूएभी श्रुतिअर्थकानिर्णय होताहोवै ॥ तौं ताविरोधकेनिवृत्त  
करणेवासतै जोउत्तरमीमांसाकाआरंभक-याहै सोआरंभहीं व्यर्थहोवैगा ॥ यातैं उक्तयुक्तितैविरुद्धहो  
णेतैं चेतनब्रह्मकूं जडजगत्कीउपादानकारणता संभवतीनहीं ॥ किंवा ताब्रह्मकूं जगत्कीनिमित्तका  
रणताभी संभवतीनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे घटादिककार्योंकेनिमित्तकारणरूप जेकुलालादिकहैं ॥ ते  
कुलालादिक संगवान् तथाकर्त्ताहीं देखणेमेंआवैहैं ॥ और ब्रह्मकूंतौं श्रुति असंग तथाअकर्त्ता कहेहैं ॥  
यातैं ताअसंगअकर्त्ताब्रह्मकूं जगत्कीनिमित्तकारणताभी संभवतीनहीं ॥ यातैं ताजडप्रपंचका जड  
प्रधानहीं उपादानकारण मान्याचाहिये ॥ और कपिलस्मृतिभी ताजडप्रधानकूंहीं जगत्काउपादान  
कारण कहेहै ॥ और पूर्वउक्तयुक्तिके तथाकपिलस्मृतिके विरोधहूए साउक्तश्रुतिभी ताप्रधानकूंहीं ज  
गत्काउपादानकारण कहेहै ॥ यातैं सोजडप्रधानहीं जडप्रपंचका उपादानकारणहै इति ॥ ॥ समाधा  
न ॥ ॥ मायाउपहितब्रह्महीं इसप्रपंचका उपादानकारणहै तथानिमित्तकारणहै ॥ और विलक्षणपदा  
र्थोंका कार्यकारणभाव नहींहोता ॥ यहजोपूर्वसांख्यीनैं कह्याथा ॥ सोभीअसंगतहै ॥ काहेतैं लोक  
विषे चेतनपुरुषतैं अचेतनकेशनखादिकोंकीउत्पत्ति देखणेविषेआवैहै ॥ तथा अचेतनगोमयतैं चेतनवृश्चि  
कादिकोंकीउत्पत्ति देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं विलक्षणपदार्थोंकाभी कार्यकारणभाव लोकविषेप्रसिद्ध  
है ॥ यातैं चेतनब्रह्मतैं अचेतनप्रपंचकीउत्पत्ति संभवैहै ॥ और ( सोऽकामयतबहुस्यां ) इत्यादिकश्रु  
तिनैं ब्रह्मकूंहीं जगत्काउपादानकारण कह्याहै ॥ ताश्रुतिकेविरोधहूए केवलयुक्तिकूंअप्रमाणरूपताहो  
णेतैं सोउत्तरमीमांसाकाआरंभभी संभवैहै ॥ जिसकारणतैं श्रुतिअनुकूलयुक्तिहीं प्रमाणरूपहोवैहै ॥ श्रु



तत्त्वा०  
॥ ६४ ॥

तितैविरुद्ध केवल्युक्ति प्रमाणरूपहोतीनहीं ॥ यातै उक्तश्रुतितै सोब्रह्महीं जगत्काउपादानकारण सिद्धहोवैहै ॥ और सांख्यीयोंनै कल्पनाकन्याजोप्रधानहै सो जगत्काउपादानकारण होइसकतानहीं ॥ जिसकारणतै सोप्रधान अचेतनहै ॥ और अचेतनवस्तुकी स्वतःप्रवृत्ति संभवतीनहीं ॥ किंतु अचेतन रथादिकोंकी चेतनपुरुषकेअधीनहीं प्रवृत्तिदेखनेविषेआवैहै ॥ और दृष्टार्थकेअनुसारहीं अदृष्टार्थकी कल्पनाहोवैहै ॥ यातै ताप्रधानकूं जगत्कीउपादानकारणता संभवतीनहीं ॥ और जैसे मनुआदिक स्मृति श्रुतिमूलकहैं ॥ तैसे साकपिलस्मृति श्रुतिमूलकनहींहै ॥ याकारणतै अप्रमाणरूपहै ॥ श्रुतिमूलकस्मृतिहीं प्रमाणरूपहोवैहै ॥ यातै ताकपिलस्मृतितैभी ताप्रधानकूं जगत्कीकारणता सिद्धहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तुमारेमतविषेभी असंगब्रह्मकूं जगत्कीकारणता कैसेसंभवैंगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ हमारेमतविषे असंगनिर्विकारशुद्धब्रह्म जगत्काकारण नहींहै ॥ किंतु अनिर्वचनीयमायाउपहितब्रह्महीं जगत्का उपादानकारण तथानिमित्तकारणहै ॥ तहां आवरणशक्तिविशिष्टमायारूप उपाधिकीप्रधानताकरिकैतों सोब्रह्म जगत्का उपादानकारणहै ॥ और ज्ञानशक्तिविशिष्टमायाउपहित आपणेस्वरूपकीप्रधानताकरिकै सोब्रह्म जगत्का निमित्तकारणहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( तदैक्षतबहुस्यांप्रजायेय ) अर्थयह ॥ सोमायाउपहितब्रह्म सृष्टितैपूर्व भावीप्रपंचविषयक ज्ञानरूपईक्षणकूं करताभया ॥ जो मैपरमेश्वर बहुरूपहोइकैउत्पन्नहोवों इति ॥ तहां इसश्रुतिविषे तदैक्षत इसवचनकरिकै ब्रह्मकूं जगत्कीउत्पत्तितैपूर्व ईक्षणकर्तृत्व कथनकन्या ॥ ताकरिकै ब्रह्मकूं जगत्कानिमित्तकारणपणा सिद्धहोवैहै ॥ जैसे घटकीउत्पत्तितैपूर्व ताघटकीउत्पत्तिकेअनुकूलज्ञानवाले कुलालादिकोंकूं ताघटकेप्रति निमित्तकारणताहींहोवैहै ॥ और । बहुस्यांप्रजायेय । इसवचनकरिकै ब्रह्मका बहुरूपहोणा कथनकन्या ॥ ताक

परि०  
२

॥१३०॥



रिकै ब्रह्मकूं जगत्काउपादानकारणपणा सिद्धहोवैहै ॥ जैसे घटशरावादिकबहुतरुपहोणेहारीमृत्तिका  
कूं तिनघटशरावादिककार्योंका उपादानकारणपणा प्रसिद्धहीहै इति ॥ किंवा श्रीव्यासभगवान्नेंभी  
ब्रह्मसूत्रोंविषे तामायाउपहितब्रह्मकूंहीं जगत्काउपादानकारण तथानिमित्तकारण कहाहै ॥ तहांसूत्र ॥  
( प्रकृतिश्चप्रतिज्ञादृष्टान्तानुपरोधात् ) अर्थयह ॥ सोमायाउपहितब्रह्महीं जगत्का उपादानकारण तथा  
निमित्तकारण है ॥ ऐसामानणेविषेहीं श्रुतिउक्त प्रतिज्ञा तथादृष्टान्त संभवैहै ॥ तहां श्रुतिविषे एकब्र  
ह्मकेज्ञानतैं जो सर्वजगत्काज्ञान कथनकन्याहै ताकानाम प्रतिज्ञाहै ॥ और एकमृत्तिकाकेज्ञानतैं जो  
तामृत्तिकाकेघटशरावादिकसर्वकार्योंकाज्ञान कथनकन्याहै ताकानाम दृष्टान्तहै ॥ साप्रतिज्ञा तथादृ  
ष्टान्त तबीसंभवै ॥ जबी ताब्रह्मकूं सर्वजगत्का उपादानकारण मानिये ॥ उपादानकारणकेज्ञानतैंहीं  
कार्यकाज्ञानहोवैहै ॥ यातैं तासूत्रतैंभी ब्रह्मकूं जगत्का अभिन्ननिमित्तउपादानकारणपणाहीं सिद्धहो  
वैहै ॥ इसअर्थकूं प्रथमपरिच्छेदविषे ऊर्णनाभिकेदृष्टान्ततैं विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं इति ॥ अब ताका  
रणका अन्यप्रकारतैं विभाग वर्णनकरैहैं ॥ सोउक्तकारण साधारण १ असाधारण २ इसभेदकरिकै पु  
नःदोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां कार्यमात्रकाउत्पादकजोकारणहै सो साधारणकारण कहाजावैहै ॥ जैसे  
कार्यमात्रकेजनक अदृष्ट देश काल आदिकहैं ॥ और कार्यविशेषकाउत्पादकजोकारणहै सो असाधार  
णकारण कहाजावैहै ॥ जैसे चाक्षुषादिकप्रमाविषे चक्षुआदिक असाधारणकारणहैं ॥ इसप्रकार घटा  
भावविषयकप्रमाविषे उक्तघटानुपलब्धिकूं असाधारणकारणताहोणेतैं करणरूपता संभवैहै इति ॥ अब  
ताअभावप्रमाकेविषयभूतअभावकास्वरूप वर्णनकरैहैं ॥ तहां ( नञर्थोल्लिखितधीविषयः अभावः ) अ  
र्थयह ॥ नञ्शब्दकेअर्थकूंविषयकरणेहारी जा नास्ति याप्रकारकीप्रतीतिहै ॥ ताप्रतीतिकाविषय अ



तत्त्वा०

॥ ६५ ॥

भाव कहा जावे है ॥ जैसे भूतले घटो नास्ति या प्रकार की प्रतीति का विषय भूतल विषे घट का अभाव है इति ॥ और सो उक्त अभाव एक अत्यन्ताभाव ही है ॥ प्रागभावादिक भेद करिके ता अभाव की चारि प्रकार ता विषे कोई भी प्रमाण नहीं है ॥ इहां नैयायिक तौ ऐसा कहें हैं ॥ सो अभाव प्रागभाव १ प्रध्वंसाभाव २ अत्यन्ताभाव ३ अन्योन्याभाव ४ इस भेद करिके चारि प्रकार का होवे है ॥ तहां घट की उत्पत्ति तै पूर्व ता घट के अवयवरूप कपालों विषे । घटो भविष्यति । या प्रकार की प्रतीति होवे है ॥ ता प्रतीति तै तिन कपालों विषे ता घट का प्रागभाव सिद्ध होवे है ॥ और मुद्गर प्रहारादिकों करिके ता घट के भग्न हुए तै अनंतर तिन कपालों विषे । घटो ध्वस्तः । या प्रकार की प्रतीति होवे है ॥ ता प्रतीति तै तिन कपालों विषे ता घट का प्रध्वंसाभाव सिद्ध होवे है ॥ और घट के अविद्यमान काल विषे । भूतले घटो नास्ति । या प्रकार की प्रतीति होवे है ॥ ता प्रतीति तै ता भूतल विषे ता घट का अत्यन्ताभाव सिद्ध होवे है ॥ और भूतल विषे घट के विद्यमान हुए भी । भूतलं न घटः । या प्रकार की प्रतीति होवे है ॥ ता प्रतीति तै ता भूतल विषे ता घट का भेद रूप अन्योन्याभाव सिद्ध होवे है ॥ इस प्रकार की विलक्षण प्रतीतियों के बल तै ता एक ही घट का चारि प्रकार का अभाव सिद्ध होवे है ॥ तहां प्रागभाव तौ अनादि होवे है तथा नाशवान् होवे है ॥ और प्रध्वंसाभाव तौ उत्पत्ति वाला होवे है तथा नाश तै रहित होवे है ॥ और अत्यन्ताभाव तथा अन्योन्याभाव यह दोनों अभाव उत्पत्ति विनाश तै रहित होणे तै नित्य होवे हैं ॥ इन चारि अभावों का विस्तार तै निरूपण न्याय प्रकाश के चतुर्थ परिच्छेद विषे कन्या है ॥ सो तहां से जानिलेना इति ॥ सो यह नैयायिकों का मत समीचीन नहीं है ॥ काहे तै । घटो भविष्यति । यह उक्त प्रतीति अभाव वाचक नशब्द तै रहित होणे तै ता प्रागभाव कं विषय करती नहीं ॥ किंतु आगे भविष्यत् काल विषे होणे हारा जो घट का सत्ता के साथ संबंध है ॥ ता सत्ता संबंध कं ही सा प्रतीति विषय करे है ॥ या तै ता प्रतीति तै घट का प्रा

परि०  
२

॥ १३१ ॥



घटका सत्ताके साथ संबंध है ॥ ताप्रगभाव अंगीकार करीये ॥ किंतु आगभाव व्यक्तकालविषय ही है ॥ यातें ताप्रतीति तें घटका प्रा

गभाव सिद्ध होइसकै नहीं ॥ किंवा ताघटका जो उत्पत्ति तें पूर्व प्रागभाव मानिये ॥ तों उत्पत्ति तें पूर्व असत् होणेतें ताघटकी उत्पत्ति ही नहीं होवैगी ॥ जो कदाचित् असत् की भी उत्पत्ति होती होवै ॥ तों असत् शशविषाणवंध्यापुत्रादिकों की भी उत्पत्ति होनी चाहिये ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जैसे असत् की उत्पत्ति नहीं संभवती ॥ तैसे सत् की भी उत्पत्ति नहीं संभवती ॥ काहेतें जिस घटकी उत्पत्ति वासतै कुलालदंडचक्रादिकारकों का व्यापार होवै है ॥ सो घट तों तुमारे मतविषे आपणी उत्पत्ति तें पूर्व ही सिद्ध है ॥ यातें सो कारक व्यापार व्यर्थ ही होवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि सो घट आपणी उत्पत्ति तें पूर्व मृत्तिकादिकारणरूप करिकै विद्यमान ही है ॥ तथापि ताकारक व्यापार तें पूर्व ताघटकी अभिव्यक्ति होती नहीं ॥ और ताकारक व्यापार तें अनंतर ताघटकी अभिव्यक्ति होवै है ॥ यातें ताघटरूप कार्य की अभिव्यंजकता मात्र करिकै ताकारक व्यापार कूं भी अर्थवत्ता बनिसके है ॥ किंवा उत्पत्ति तें पूर्व कार्य की कारणरूप करिकै सत्ता केवल उक्त युक्ति करिकै ही सिद्ध नहीं है ॥ किंतु श्रुतिसूत्र करिकै भी सिद्ध है ॥ तहां श्रुति ॥ ( सदेव सोम्येदमग्र आसीत् ) अर्थ यह ॥ हे प्रिय दर्शन श्वेतकेतु यह दृश्यमान कार्य जगत् आपणी उत्पत्ति तें पूर्व सत् होता भया ॥ अर्थात् परमकारण परमात्मरूप करिकै सत् होता भया इति ॥ तहां सूत्र ॥ ( सत्त्वाच्चापरस्य ) अर्थ यह ॥ इस प्रपंचरूप कार्य का आपणी उत्पत्ति तें पूर्व कारणरूप करिकै सत्त्व होणेतें इस वर्तमान कालविषे भी तापरम कारण तें अनन्यत्व ही है ॥ अर्थात् तापरम कारणरूप परमात्मा तें भिन्नरूप करिकै अभाव ही है इति ॥ जो कदाचित् ताप्रागभाव कूं अंगीकार करीये ॥ तों इस उक्त श्रुतिसूत्र का विरोध प्राप्त होवैगा ॥ यातें श्रुतिसूत्र तें विरुद्ध होणेतें सो प्रागभाव अंगीकार करने योग्य नहीं है इति ॥ किंवा ताप्रागभाव की न्यांई ताप्रध्वंसाभावविषे भी कोई प्रमाण नहीं है ॥ काहेतें ब्रह्मसाक्षात्कार तें पूर्व इस कार्य प्रपंच का अत्यंत नाश होता नहीं ॥



तत्त्वा०

॥ ६६ ॥

किंतु बीजांकुरकीन्यांई सृष्टिप्रलयकूं प्रवाहरूपकरिकै अनादिपणाहींहोवैहै ॥ अर्थात् जैसे बीजतैंअंकुर होवैहै ताअंकुरतैंपुनःबीजहोवैहै ताबीजतैंपुनःअंकुरहोवैहै ॥ तैसे सृष्टितैंअनंतरप्रलयहोवैहै ताप्रलयतैं अनंतर पुनःसृष्टिहोवैहै तासृष्टितैंअनंतर पुनःप्रलयहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं तेसृष्टिप्रलय प्रवाहरूपकरिकै अनादिहोवैहैं ॥ और प्रलयकालविषेभी सोकार्यप्रपंच अत्यंतनाश होतानहीं ॥ किंतु आपणेकारण विषे तिरोभूतहूआ रहेहै ॥ इसप्रकार इदानींकालविषेभी भग्नहूएघटादिककार्य आपणेकपालादिरूपका रणोंविषे तिरोभूतहूए रहेहैं ॥ तिसीतिरोभावअवस्थाकूं । घटोध्वस्तः । यहउक्तप्रतीति विषयकरेहै ॥ यातैं ताउक्तप्रतीतितैं ताघटकेप्रध्वंसाभावकीसिद्धि होइसकैनहीं ॥ किंवा प्रलयादिकोंविषे जोकदाचि त् कार्यकाअत्यंतनाश मानिये ॥ तों ( सदेवसोम्येदमग्रआसीत् । आत्मावाइदमेकएवाग्रआसीत् । ना सतोविद्यतेभावोनाभावोविद्यतेसतः ) इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंनैं जो सृष्टितैंपूर्व लीनहूएकार्यका का रणरूपकरिकैसत्त्व कथनकन्याहै सोअसंगतहोवेंगा ॥ यातैं ताश्रुतिस्मृतितैंविरुद्धहोणेतैं सोप्रध्वंसाभा वभी अंगीकारकरणेयोग्यनहींहै इति ॥ किंवा नैयायिकोंनैं अत्यंताभावकूं तथाअन्योन्याभावकूं जो उत्पत्तिविनाशतैंरहित नित्यमान्याहै ॥ सोतिनोंकाकहणाभी असंगतहै ॥ काहेतैं ( एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म ) यहश्रुतिताँ ब्रह्मकूं सर्वद्वैतप्रपंचतैंरहितकरेहै ॥ और ( नेहनानास्तिकिंचन ) यहश्रुति ताब्रह्म विषे सर्वद्वैतप्रपंचका निषेधकरेहै ॥ और ( अतोऽन्यदार्त्तं ) यहश्रुति ताब्रह्मतैंभिन्नसर्वप्रपंचकूं मिथ्या करेहै ॥ जोकदाचित् ताअत्यंताभावकूं तथाअन्योन्याभावकूं नित्यमानिये ॥ तों इनसर्वश्रुतियोंका विरोधहोवेंगा ॥ यातैं तिनदोनोंअभावोंकूंभी अनित्यहींमान्याचाहिये ॥ किंवा ताअभावकेसाथि च शुआदिकइंद्रियका कोईप्रकारकाभीसंबंध बनिसकतानहीं ॥ यहवार्त्ता पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ।

परि०  
२

॥ १३२ ॥



भूतलेघटोनास्ति । इसउक्तप्रत्यक्षप्रतीतिकरिक्कै तानित्यअत्यंताभावकीसिद्धि संभवतीनहीं ॥ और । घटःपटोन । इत्यादिकप्रतीति ताअन्योन्याभावकूं विषयकरतीनहीं ॥ किंतु घट पट दोनोंकेअभेदकाजो अत्यंताभावहै तिसकूंहीं साप्रतीति विषयकरेहै ॥ यातैं ताउक्तप्रतीतितैं अन्योन्याभावकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ और इसभेदरूपअन्योन्याभावका प्रथमपरिच्छेदविषेभी विस्तारतैंखंडनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकार प्रागभाव प्रध्वंसाभाव अन्योन्याभाव इनतीनअभावोंकेअनिरूपणहूए एकअत्यंताभावहीं मान्याचाहिये ॥ और सोअत्यंताभावभी पारमार्थिक १ व्यावहारिक २ इसभेदकरिक्कै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां ( नेहना नास्तिकिंचन ) इसश्रुतिनैं प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मविषे बोधनकन्याजो जीवईश्वरजगतरूपद्वैतप्रपंचकाअत्यंताभावहै ॥ सोअत्यंताभाव पारमार्थिक कहाजावैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताउक्तअत्यंताभावविषेपारमार्थिकपणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं प्रतियोगीकीसत्ताकेअधीनहीं अभावकीसत्ताहोवैहै ॥ और प्रपंचरूपप्रतियोगी कल्पितहै ॥ यातैं ताप्रपंचकाअत्यंताभावभी कल्पितहींहोवैगा ॥ किंवा ताप्रपंचकेअत्यंताभावकूं जोपारमार्थिक मानोंगे ॥ तों ब्रह्मकूंअद्वितीयरूपकहणेहारी ( एकमेवाद्वितीयंब्रह्म ) इसश्रुतिकाभी विरोधहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ कल्पितवस्तुकाअभाव अधिष्ठानरूपहींहोवैहै ॥ अधिष्ठानतैंभिन्नहोतानहीं ॥ यातैं कल्पितप्रपंचकाअत्यंताभावभी अधिष्ठानब्रह्मरूपहींहै ॥ ताअधिष्ठानतैंभिन्ननहींहै ॥ और ताअधिष्ठानब्रह्मका पारमार्थिकपणा श्रुतिस्मृतियोंकरिक्कैसिद्धहींहै ॥ यातैं ताअधिष्ठानरूपताकरिक्कै ताअत्यंताभावविषेभी सोपारमार्थिकपणा संभवैहै ॥ और सोअत्यंताभाव ताअधिष्ठानब्रह्मतैंभिन्ननहींहै ॥ यातैं ताअद्वैतबोधकश्रुतिकाभी विरोधहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताअत्यंताभावकूं जोअधिष्ठानरूप मानोंगे ॥ तों ताअधिष्ठानका अनुपलब्धिप्रमाणकरिक्कैज्ञान संभवतानहीं ॥



तत्त्वा०  
॥ ६७ ॥

परि०  
२

यातें तुमारेमतविषे ताअनुपलब्धिप्रमाणकाअंगीकारहीं व्यर्थहोवेंगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ भूतला  
दिकोंविषे जोघटादिकोंकाअत्यंताभावहै ॥ ताअत्यंताभावकूं हम अधिष्ठानरूपमानतेनहीं ॥ किंतु  
व्यावहारिकघटादिकोंका सोव्यावहारिकअत्यंताभाव अधिष्ठानतेंभिन्नहींहोवैहै ॥ तिसव्यावहारिकअ  
त्यंताभावकेज्ञानवासतैहीं पूर्व अनुपलब्धिप्रमाण हमनें अंगीकारकन्याहै ॥ यातें ताअनुपलब्धिप्रमा  
णकाअंगीकार व्यर्थनहींहै इति ॥ ईहां केईकग्रंथकारतों यहकहेहैं ॥ ( नेहनानास्ति किंचन ) इसश्रु  
तिनें कथनकन्याजो ब्रह्मविषे प्रपंचका पारमार्थिकअत्यंताभावहै ॥ सोअत्यंताभाव ताअधिष्ठानब्रह्मतें  
भिन्नहींहै ॥ अधिष्ठानस्वरूप नहींहै ॥ जिसकारणतें भावअभावकीएकता संभवतीनहीं ॥ और ( एकमेवा  
द्वितीयं ब्रह्म ) इसश्रुतिकातों भावाद्वैतविषे तात्पर्यहै ॥ अर्थात् ब्रह्मतेंभिन्न दूसराकोईभावपदार्थ नहींहै ॥  
यातें ब्रह्मतेंभिन्न ताअत्यंताभावकेविद्यमानहूएभी ताअद्वैतश्रुतिका विरोधहोवैनहीं इति ॥ सोयहमत स  
मीचीननहींहै ॥ काहेतें ( एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म ) यहश्रुति ब्रह्मकूं भावअभावरूपसर्वद्वैतप्रपंचतेंरहितकहेहै ॥  
ताश्रुतिकासंकोचकरिकै केवलभावाद्वैतपरता मानणेविषे कोईभीप्रमाणनहींहै ॥ और प्रपंचकेअत्यंता  
भावकूं जोअधिष्ठानब्रह्मतेंभिन्नमानिये ॥ तों ताअत्यंताभावविषे पारमार्थिकपणाभी नहींसंभवेंगा ॥ जि  
सकारणतें अधिष्ठानतेंभिन्नअभाव प्रतियोगीकीसत्ताकेसमानसत्तावालाहीं नियमतेंहोवैहै ॥ और प्रपंच  
रूपप्रतियोगी कल्पितहै ॥ यातें ताकल्पितप्रपंचकाअत्यंताभावभी कल्पितहींहोवेंगा ॥ यातें सोउक्तपक्ष  
समीचीननहींहै इति ॥ अब दूसरेव्यावहारिकअत्यंताभावका निरूपणकरेहैं ॥ तहां भूतलादिकोंविषे जो  
घटादिकोंकाअत्यंताभावहै ॥ जिसकूं भूतलेघटोनास्ति । इत्यादिकप्रतीति विषयकरेहै ॥ सोअत्यंता  
भाव व्यावहारिकअत्यंताभाव कहाजावैहै ॥ यहव्यावहारिकअत्यंताभावहीं पूर्वउक्तयोग्यानुपलब्धिक

॥ १३३ ॥



रिकै ग्रहण होवै है ॥ और ता भूतल विषे जो घट के अभेद का अत्यन्ताभाव है ॥ ता अत्यन्ताभाव कूं हीं नैयायिकों  
 नैं । भूतलं घटो न । इस प्रतीतिका विषय भेद कहीता है तथा अन्योन्याभाव कहीता है ॥ या तैं सो भेद रूप अन्यो  
 न्याभाव ता अत्यन्ताभाव तैं भिन्न नहीं है ॥ किंवा श्रुतिके यथार्थ तात्पर्य ज्ञान तैं रहित नैयायिकों नैं जो जीव ईश्वरा  
 दिकों का भेद अंगीकार करीता है ॥ तथा भूतलादिकों विषे घटादिकों का अत्यन्ताभाव अंगीकार करीता है ॥  
 ते सर्व अभाव अनित्य हीं होवै हैं ॥ कोई भी अभाव नित्य होतानहीं ॥ काहे तैं ब्रह्म तैं भिन्न जितना की भाव अ  
 भावरूप जगत् है ॥ सो सर्व जगत् अविद्या का कार्य है ॥ और तत्त्वमसि आदिक महावाक्य जन्य ब्रह्मात्मसाक्षा  
 त्कार करिकै ता अविद्या का नाश होइ जावै है ॥ ता अविद्या के नाश हूए ता अविद्या के कार्य रूप प्रपंच का भी ना  
 श होइ जावै है ॥ इस प्रकार सर्व अनात्म प्रपंच कूं आत्म ज्ञान करिकै निवृत्त होणें तैं ता अभाव का अनित्य पणाहीं  
 सिद्ध होवै है इति ॥ ईहां केईक ग्रंथकार तों न्यायशास्त्रकारों के बुद्धि कूं अनुसरण करते हूए ता उक्त अभाव कूं प्रा  
 गभाव १ प्रध्वंसाभाव २ अत्यन्ताभाव ३ अन्योन्याभाव ४ इस भेद करिकै चारि प्रकार का माने हैं ॥ अब ति  
 न चारों अभावों के लक्षण कहे हैं ॥ तहां आपणी उत्पत्ति तैं पूर्व कार्य का जो आपणे उपादान कारण विषे अभाव है  
 ता का नाम प्रागभाव है ॥ जैसे घटादिक कार्यों का आपणी उत्पत्ति तैं पूर्व मृत्तिकादिक कारणों विषे प्रागभाव  
 है ॥ अर्थात् जो अभाव अनादि होवै है तथा आपणे प्रतियोगी का जनक होवै है ॥ सो अभाव प्रागभाव कहा  
 जावै है ॥ अथवा जो अभाव अनादि होवै है तथा नाशवान् होवै है ॥ सो अभाव प्रागभाव कहा जावै है इति ॥  
 और उत्पन्न हूए कार्य का जो आपणे उपादान कारण विषे अभाव है ॥ सो अभाव प्रध्वंसाभाव कहा जावै है ॥  
 जैसे मुद्रादिकों के प्रहार तैं अनंतर कपालादिक कारण विषे घटादिक कार्य का प्रध्वंसाभाव है इति ॥ और आ  
 पणे प्रतियोगी के असमानाधिकरण जो अभाव है ॥ सो अभाव अत्यन्ताभाव कहा जावै है ॥ जैसे भूतलादि



तत्त्वा०

॥ ६८ ॥

कोंविषे घटादिकोंका अत्यन्ताभाव है ॥ सो अत्यन्ताभाव आपणेप्रतियोगीके अधिकरणतैं भिन्न अधिकरणविषे हीरहे है इति ॥ और जो अभाव आपणेप्रतियोगीके समानाधिकरण होवै है ॥ अथवा जिस अभावका तादात्म्य हीं प्रतियोगी होवै है ॥ सो अभाव अन्योन्याभाव कहा जावै है ॥ इसी अन्योन्याभावकूं भेद भी कहे हैं ॥ जैसे भूतलादिकोंविषे घटका अन्योन्याभावरूप भेद है ॥ सो अन्योन्याभाव ता भूतलविषे घटके विद्यमान कालविषे भीरहे है ॥ यातैं सो अन्योन्याभाव प्रतियोगी समानाधिकरण कहा जावै है इति ॥ ते प्रागभावादिक सर्व अभाव मायाका कार्य होणेतैं अनित्य हीं है ॥ यातैं अत्यन्ताभाव अन्योन्याभाव यह दोनों अभावतों नित्य हैं ॥ और प्रागभाव प्रध्वंसाभाव यह दोनों अभाव अनित्य हैं ॥ यह नैयायिकोंका कहना सर्वप्रपञ्चकानिषेध करणेहारी श्रुति तैं विरुद्ध होणेतैं असंगत है ॥ ॥ इति अभावप्रमानिरूपणं ॥ ६ ॥ ॥ इस प्रकार पूर्वनिरूपण करी जा प्रत्यक्ष १ अनुमिति २ उपमिति ३ शाब्द ४ अर्थापत्ति ५ अभावप्रमा ६ यह षट्प्रकारकी प्रमा है ॥ ता सर्व प्रमाकरिकै आवरणशक्तिसहित अज्ञानकी हीं निवृत्ति होवै है ॥ ताके विषे भी अनुमिति आदिक परोक्ष प्रमाकरिकै तों असत्वापादक आवरणशक्तिविशिष्ट अज्ञानकी निवृत्ति होवै है ॥ और अपरोक्ष प्रमाकरिकै तों अभानापादक आवरणशक्तिविशिष्ट अज्ञानकी निवृत्ति होवै है ॥ ता आवरणशक्तिविशिष्ट अज्ञानकी निवृत्ति तैं अनंतर घटादिक विषयोंका भान होवै है ॥ इस प्रकार तत्त्वमसि आदिक महावाक्यजन्य अहं ब्रह्मास्मि या प्रकारकी अपरोक्ष प्रमाकरिकै ब्रह्मके आवरणमूलाज्ञानकी निवृत्ति हूए इस अधिकारी पुरुषकूं ता ब्रह्मका साक्षात्कार संभवै है ॥ यातैं इस परिच्छेदविषे प्रमाकानिरूपण सार्थक है इति ॥ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री स्वामि उद्धवानंदगिरि पूज्यपाद शिष्येण स्वामि चिद्धनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृततत्त्वानुसंधाने द्वितीयः परिच्छेदः समाप्तः ॥ २ ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥

परि०  
२

॥ १३४ ॥



अथ श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतप्राकृत  
तत्त्वानुसंधानेतृतीयपरिच्छेदप्रारंभः ॥ ३ ॥



तत्त्वा०

॥ १ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥  
 अथ तृतीयपरिच्छेदप्रारंभः ॥ तहां पूर्व द्वितीयपरिच्छेदकेआदिविषे प्रमा १ अप्रमा २ इसभेदकरिकै  
 दोप्रकारकीवृत्ति कथनकरीथी ॥ ताकेविषे प्रथम प्रमावृत्तिकातों प्रमाणसहित तथाफलसहित ताद्विती  
 यपरिच्छेदविषे विस्तारतैनिरूपणकन्या ॥ अब इसतृतीयपरिच्छेदविषे दूसरीअप्रमावृत्तिका विस्तारतैनि  
 रूपणकरेहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अहंब्रह्मास्मि यहप्रमावृत्तितों अज्ञानकीनिवृत्तिकरिकै इसअधिकारी  
 पुरुषकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरेहै ॥ यातें ताप्रमावृत्तिकातों ग्रंथविषेनिरूपणकरणा उचितहै ॥ और अप्रमा  
 वृत्तितें इसअधिकारीपुरुषका कोईप्रयोजनसिद्धहोतानहीं ॥ यातें ग्रंथविषे ताअप्रमावृत्तिकानिरूपणक  
 रणा निष्फलहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ प्रतिबंधतैरहितहूईप्रमाकूंहीं अज्ञानकानिवर्त्तकपणा होवैहै ॥  
 यातें सोप्रतिबंध तथाताप्रतिबंधकेनिवृत्तिकाउपाय दोनों इसअधिकारीपुरुषनैं अवश्यजान्येचाहिये ॥  
 तहां असंभावना विपरीतभावना यहदोनों प्रतिबंध कहेजावैहैं ॥ और श्रवण मनन निदिध्यासन यह  
 तीनों ताप्रतिबंधकेनिवृत्तिकेउपायहैं ॥ तहां असंभावनाविपरीतभावनाकूं आत्मज्ञानकीप्रतिबंधकता प  
 राशरमुनिनैभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( भावनाविपरीताया याचासंभावनाशुक कुरुतेप्रतिबंधंसा तत्त्व  
 ज्ञानस्यनापरं ) अर्थयह ॥ हेशुक विपरीतभावना तथाअसंभावना यहदोनोंहीं आत्मज्ञानकाप्रतिबंध  
 करेहैं ॥ दूसराकोई प्रतिबंधकरतानहीं ॥ यातें अधिकारीपुरुषनैं श्रवणादिकोंकरिकै ताप्रतिबंधकीनिवृ  
 त्ति अवश्यकरीचाहिये इति ॥ किंवा श्रवणादिकोंकूं जोआत्मज्ञानकीसाधनताहै ॥ सोभी ताप्रतिबंध  
 कीनिवृत्तिद्वाराहींहै साक्षात्तनहीं ॥ और साप्रतिबंधरूप असंभावना तथाविपरीतभावना वक्ष्यमाणरी  
 तिसैं अप्रमाज्ञानकेअंतर्भूतहींहै ॥ यातें साअप्रमावृत्ति अवश्यनिरूपणकरणेयोग्यहै ॥ इसअभिप्रायक

परि०

३

॥ १ ३ ५ ॥



रि कै इस तृतीय परिच्छेद विषे ता अप्रमावृत्तिका विस्तार तै निरूपण करे हैं ॥ तहां ( प्रमाभिन्नज्ञानं अप्र  
 मा ) अर्थ यह ॥ पूर्व द्वितीय परिच्छेद विषे कथन करी जा प्रमा है ॥ ता प्रमा तै भिन्न जो ज्ञान है सो अप्रमा क  
 ह्या जावै है ॥ जैसे शुक्ति विषे इंदर जतं इत्यादिक ज्ञान ता प्रमा ज्ञान तै भिन्न होने तै अप्रमा क ह्या जावै है ॥  
 तहां । ज्ञानं अप्रमा । इतना मात्र ही जो ता अप्रमा कालक्षण करते ॥ तालक्षण विषे । प्रमाभिन्नं । यह पद  
 नहीं कथन करते ॥ तौ प्रमा ज्ञान विषे तालक्षण की अतिव्याप्ति होती ॥ ता अतिव्याप्ति दोष के निवृत्त करणे  
 वास तै तालक्षण विषे । प्रमाभिन्नं । यह पद कथन कन्या है ॥ ता प्रमा ज्ञान विषे प्रमा तै भिन्न पणा है नहीं ॥  
 या तै ता प्रमा ज्ञान विषे ता उक्त लक्षण की अतिव्याप्ति होवै नहीं ॥ किंवा । प्रमाभिन्नं अप्रमा । इतना मात्र ही  
 जो ता अप्रमा कालक्षण करते ॥ तालक्षण विषे । ज्ञानं । यह पद नहीं कथन करते ॥ तौ प्रमा ज्ञान तै भिन्न जे  
 घटादिक हैं तिनों विषे तालक्षण की अतिव्याप्ति होती ॥ ता अतिव्याप्ति दोष के निवृत्त करणे वास तै तालक्षण  
 विषे । ज्ञानं । यह पद कथन कन्या है ॥ तिन घटादिकों विषे ज्ञान रूपता है नहीं ॥ या तै तिन घटादिकों विषे  
 ता अप्रमा के लक्षण की अतिव्याप्ति होवै नहीं इति ॥ अब ता अप्रमावृत्तिका विभाग वर्णन करे हैं ॥ सा उक्त  
 अप्रमावृत्ति स्मृति १ अनुभूति २ इस भेद करि कै दो प्रकार की होवै है ॥ तहां ( संस्कारमात्रजन्यज्ञानं स्मृ  
 तिः ) अर्थ यह ॥ संस्कारमात्र करि कै जन्य जो ज्ञान है सो स्मृति क ह्या जावै है ॥ जैसे । सामे माता सो मे  
 पिता । इत्यादिक ज्ञान संस्कारमात्र जन्य होने तै स्मृति क ह्या जावै है ॥ तहां इस लक्षण विषे । मात्र । यह पद  
 जो नहीं कथन करते ॥ तौ । सोऽयं देवदत्तः । इस प्रत्यभिज्ञा प्रत्यक्ष विषे ता स्मृतिके लक्षण की अतिव्याप्ति होती ॥  
 जिस कारण तै सो प्रत्यभिज्ञा प्रत्यक्ष भी संस्कार करि कै जन्य ही होवै है ॥ ता अतिव्याप्ति दोष के निवृत्त करणे वा  
 स तै तालक्षण विषे । मात्र । यह पद कथन कन्या है ॥ तहां सो प्रत्यभिज्ञा प्रत्यक्ष केवल संस्कार करि कै ज



तत्त्वा०

॥ २ ॥

न्यहोतानहीं ॥ किंतु तासंस्कारसहकृतइंद्रियकरिकैजन्यहोवैहै ॥ यातैं तामात्रपदकेकहणेतैं ताप्रत्यभि  
ज्ञाप्रत्यक्षविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा तालक्षणविषे । ज्ञानं । यहपद जोनहींकथनक  
रते ॥ तौ तासंस्काररूपप्रतियोगीकरिकैजन्य जो तासंस्कारकाध्वंसहै ताकेविषे तालक्षणकीअतिव्या  
प्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतैं तालक्षणविषे । ज्ञानं । यहपद कथनकन्याहै ॥ तहां  
ताध्वंसविषे ज्ञानरूपताहैनहीं ॥ यातैं ताध्वंसविषे तास्मृतिकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ ईहांयह  
अभिप्रायहै ॥ सोसंस्कार वेग १ भावना २ स्थितिस्थापक ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां  
जोसंस्कार क्रियाकरिकैजन्यहोवैहै तथाअन्यक्रियाकाजनकहोवैहै ॥ सोसंस्कार वेग कहाजावैहै ॥  
सोवेगनामासंस्कार बाणादिकोंविषेरहेहै ॥ और जोसंस्कार अनुभवज्ञानकरिकैजन्यहोवैहै और स्मृति  
ज्ञानकाजनकहोवैहै ॥ सोसंस्कार भावना कहाजावैहै ॥ सोभावनाख्यसंस्कार वेदांतसिद्धांतविषेतौं अं  
तःकरणमेंहीरहेहै ॥ और नैयायिकोंकेमतविषे आत्मामेंरहेहै ॥ जिसकारणतैं वेदांतीयोंकूंअभिमतजोअ  
हंकारहै तिसकूंहीं तेनैयायिक आत्मामानेहैं ॥ और अन्यथाकन्येहूएवस्तुकी पूर्वकीन्याई स्थितिकराव  
णेहारा जोसंस्कारहै सो स्थितिस्थापक कहाजावैहै ॥ सोस्थितिस्थापकनामासंस्कार धनुषशाखादिकों  
विषेरहेहै ॥ इनतीनप्रकारकेसंस्कारोंका न्यायप्रकाशकेतृतीयपरिच्छेदविषे विस्तारतैंनिरूपण कन्याहै ॥  
सो तहांसेजानिलेणा ॥ तहां वेग स्थितिस्थापक इनदोनोंसंस्कारोंकूं यद्यपि क्रियाकाहींजनकपणाहो  
वैहै ॥ तथापि ताभावनाख्यसंस्कारकूं ज्ञानकाजनकपणाहोवैहै ॥ यातैं तास्मृतिकेलक्षणविषे संस्कार  
शब्दकरिकै सोभावनाख्यसंस्कारहीं विवक्षितहै ॥ यातैं सोउक्तस्मृतिकालक्षण संभवैहै इति ॥ अब ता  
स्मृतिकेविभागका निरूपणकरैहै ॥ साउक्तस्मृति यथार्थ १ अयथार्थ २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहो

परि०

३

॥ १३६ ॥



वैहै ॥ तहां यथार्थअनुभवजन्यसंस्कारतैं उत्पन्नभईजास्मृतिहै सा यथार्थस्मृति कहीजावैहै ॥ और अ  
यथार्थअनुभवजन्यसंस्कारतैं उत्पन्नभईजास्मृतिहैं सा अयथार्थस्मृति कहीजावैहै ॥ तहां सायथार्थस्मृ  
तिभी अनात्मस्मृति १ आत्मस्मृति २ इसभेदकरिके दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां ( व्यावहारिकःप्रपंचः  
मिथ्या दृश्यत्वात् शुक्तिरूप्यवत् ) इसअनुमानकरिकेजन्य जोप्रपंचकेमिथ्यात्वकाअनुभवहै ॥ ताअनु  
भवजन्यसंस्कारतैं इसअधिकारीपुरुषकूं उत्पन्नभईजा प्रपंचकेमिथ्यात्वकीस्मृतिहै ॥ सास्मृति यथार्थअ  
नात्मस्मृति कहीजावैहै ॥ और तत्त्वमसि इत्यादिकमहावाक्यतैंजन्य जो अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकाअ  
नुभवहै ॥ ताअनुभवजन्यसंस्कारतैं इसअधिकारीपुरुषकूं उत्पन्नभईजा प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकीस्मृतिहै ॥  
सास्मृति यथार्थआत्मस्मृति कहीजावैहै इति ॥ इसप्रकार दूसरी अयथार्थस्मृतिभी अनात्मस्मृति १ आ  
त्मस्मृति २ इसभेदकरिके दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां ( वाचारंभणंविकारोनामधेयं । अतोऽन्यदार्त्तं । मा  
यामात्रमिदंद्वैतं ) इत्यादिकश्रुतियोंकरिके तथापूर्वउक्तअनुमानकरिके इसप्रपंचका मिथ्यापणाहींसिद्ध  
है ॥ ऐसेमिथ्याप्रपंचविषे जोसत्यपणेकाअनुभवहै सो भ्रमरूपहीहै ॥ ताअयथार्थअनुभवजन्यसंस्कारतैं  
उत्पन्नभईजा ताप्रपंचकेसत्यपणेकीस्मृतिहै ॥ सास्मृति अयथार्थअनात्मस्मृति कहीजावैहै ॥ और अहं  
कारतैंआदिलैके स्थूलदेहपर्यंत सर्वअनात्मपदार्थ आत्मभावतैंरहितहैं ॥ यातैं तिनअहंकारादिकोंविषे जा  
आत्मत्वबुद्धिहै सोअयथार्थअनुभवहीहै ॥ ताअयथार्थअनुभवजन्यसंस्कारतैं उत्पन्नभईजा तिनअहंका  
रादिकोंविषे आत्मभावकीस्मृतिहै ॥ सास्मृति अयथार्थआत्मस्मृति कहीजावैहै ॥ अथवा वास्तवतैंक  
र्त्तापणेतैंरहितआत्माविषे कर्तृत्वबुद्धिरूपअयथार्थअनुभवजन्यसंस्कारतैं उत्पन्नभईजा कर्त्तापणेकीस्मृति  
है ॥ सास्मृति अयथार्थआत्मस्मृति कहीजावैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ स्वप्नविषे जोपदार्थोंकाज्ञा



तत्त्वा०

॥ ३ ॥

परि०

३

नहोवैहै ॥ सोभी अयथार्थस्मृतिरूपहीहै ॥ यातैं तास्वप्नकेज्ञानका ईहां ग्रहण क्युंनहींकन्या ॥ ॥ स  
 माधान ॥ ॥ सोस्वप्नकाज्ञान स्मृतिरूपनहींहै ॥ किंतु अनुभवरूपहीहै ॥ काहेतैं सोस्वप्नकाज्ञान जो  
 कदाचित् स्मृतिरूपहोता ॥ तौं तास्वप्नविषे लोकोंकूं सरथः याप्रकारकाहीं रथादिकपदार्थोंकाज्ञानहो  
 ता ॥ परंतु ऐसाज्ञानहोतानहीं ॥ किंतु मैं रथकूं देखताहूं याप्रकारका अनुभवहीं तास्वप्नविषेहोवैहै ॥ या  
 तैं सोस्वप्नकाज्ञान अनुभवरूपहीहै स्मृतिरूपनहीं ॥ इसअर्थकूं आगेभीनिरूपणकरेंगे इति ॥ तहां इत  
 नेंपर्यंत स्मृतिकानिरूपणकन्या ॥ अब अनुभूतिकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां ( स्मृतिभिन्नज्ञानं अनुभूतिः )  
 अर्थयह ॥ पूर्वउक्तस्मृतिज्ञानतैंभिन्नजोज्ञानहै सो अनुभूति कहाजावैहै ॥ इसीअनुभूतिकूं अनुभवभी  
 कहेहैं ॥ जैसे अयंघटः इदंरजतं इत्यादिकज्ञान तास्मृतिज्ञानतैंभिन्नहोनेतैं अनुभवरूपहैं ॥ तहां । ज्ञानं  
 अनुभूतिः । इतनामात्रहीं जो ताअनुभवकालक्षणकरते ॥ तौं स्मृतिज्ञानविषे ताअनुभवकेलक्षणकीअ  
 तिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे । स्मृतिभिन्नं । यहपद कथनक  
 न्याहै ॥ और । स्मृतिभिन्नंअनुभूतिः । इतनामात्रहीं जो ताअनुभवकालक्षणकरते ॥ तौं तास्मृतिज्ञान  
 तैंभिन्न जेघटादिकहैं तिनोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै  
 तालक्षणविषे । ज्ञानं । यहपद कथनकन्याहै इति ॥ अब ताअनुभूतिकाविभाग वर्णनकरेहैं ॥ साउक्त  
 अनुभूतिभी यथार्थ १ अयथार्थ २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां अबाधितअर्थकूंविषयकर  
 णेहारीजाप्रमाहै ताकानाम यथार्थअनुभूतिहै ॥ साप्रमारूपयथार्थअनुभूति द्वितीयपरिच्छेदविषे विस्ता  
 रतैंनिरूपणकरिआयेहैं ॥ यातैं ईहां पुनःनिरूपणकरतेनहीं ॥ अब अयथार्थअनुभूतिकानिरूपणकरेहैं ॥  
 तहां ( बाधितार्थविषयानुभूतिः अयथार्थानुभूतिः ) अर्थयह ॥ विषयकेअभावकीजाप्रमाहै ताकानाम

॥ १३७ ॥



बाधहै ॥ ताबाधका जोविषयहोवै ताकानाम बाधितहै ॥ सोबाधितअर्थहैविषयजिसका ऐसीजाअनुभूतिहै ॥ साअनुभूति अयथार्थअनुभूति कहीजावैहै ॥ जैसे नेदंरजतं इसबाधज्ञानकेविषयहोणेतें बाधितजेशुक्तिरजतादिकहैं ॥ तिनोंकूं विषयकरणेहारी इदंरजतं इत्यादिकअनुभूति अयथार्थअनुभूति कहीजावैहै ॥ तहां प्रमाज्ञानविषे इसअयथार्थानुभूतिकेलक्षणकी अतिव्याप्तिके निवृत्तकरणेवासतै इसलक्षणविषे । बाधितार्थविषय । यहपद कथनकन्याहै ॥ और बाधितअर्थकूंविषयकरणेहारी अयथार्थस्मृतिविषे इसलक्षणकी अतिव्याप्तिके निवृत्तकरणेवासतै इसलक्षणविषे । अनुभूतिः । यहपद कथनकन्याहै इति ॥ और साअयथार्थअनुभूतिभी संशय १ निश्चय २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां ( एकस्मिन्धर्मिणिभासमानविरुद्धनानाकोटिकज्ञानं संशयः ) अर्थयह ॥ एकहीधर्मीविषे भासमान जे परस्परविरुद्ध नानाकोटिहैं ॥ तिनोंकूंविषयकरणेहाराज्ञान संशय कह्याजावैहै ॥ जैसे । स्थाणुर्वापुरुषो वा । यहज्ञान एकही स्थाणुरूपधर्मीविषे वा पुरुषरूपधर्मीविषे स्थाणुत्वपुरुषत्वरूपविरुद्धनानाकोटियोंकूं विषयकरेहै ॥ यातैं सोज्ञान संशय कह्याजावैहै इति ॥ और सोउक्तसंशयभी प्रमाणसंशय १ प्रमेयसंशय २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रमाणविषे जा असंभावनाहै ताकानाम प्रमाणसंशय है ॥ और प्रमेयविषे जा असंभावनाहै ताकानाम प्रमेयसंशयहै ॥ तहां सोप्रमाणसंशयभी प्रमासंशय १ करणसंशय २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रमाणकरिकैजन्यप्रमाज्ञानविषे जोसंशय है ताकानाम प्रमासंशयहै ॥ और ताप्रमाणकेस्वरूपविषे जोसंशयहै ताकानाम करणसंशयहै ॥ तहां पूर्वअदृष्टस्थलविषेस्थितजलकेसाथि चक्षुइंद्रियकेसंबंधहूणेतैंअनंतर इसपुरुषकूं इदंजलं याप्रकारका प्रमाज्ञानहोवैहै ॥ परंतु इसपुरुषनैं तास्थलविषे पूर्वकबी जलदेख्यानहीं ॥ यातैं तापुरुषकूं तिसजलज्ञा



तत्त्वा०

॥ ४ ॥

परि०

३

नविषे यहज्ञान प्रमाहै वानहीं याप्रकारका ताजलज्ञानके प्रमात्वकूं तथाताप्रमात्वकेअभावकूं विषयकरणेहारा संशय उत्पन्नहोवैहै ॥ सोसंशय प्रमासंशय कह्याजावैहै ॥ सोप्रमासंशय ताप्रमाज्ञानके प्रमात्वकेनिश्चयतैहीं निवृत्तहोवैहै ॥ तहां ( तद्वतितत्प्रकारकत्वं प्रमात्वं ) अर्थयह ॥ ज्ञाननिष्ठ जो ति सधर्मवालेवस्तुविषे तत्धर्मविषयकत्वहै यहहीं प्रमात्वहै ॥ जैसे । अयंघटः । इसज्ञानविषे जो घटत्व धर्मवालेघटविषे ताघटत्वधर्मविषयकत्वहै यहहीं प्रमात्वहै ॥ इसीप्रमात्वकूं प्रामाण्यभी कहेहैं ॥ तहां सोप्रमाज्ञाननिष्ठप्रमात्व नैयायिकोंकेमतविषेतों परतःग्राह्य होवैहै ॥ और मीमांसकोंकेमतविषे तथा वेदांतसिद्धांतविषे सोप्रमात्व स्वतःग्राह्य होवैहै ॥ और ताप्रमात्वकीस्वतःग्राह्यताविषेभी मीमांसकोंके नानामतहैं ॥ तेमीमांसकोंकेमत तथासोनैयायिकोंकामत ईहां ग्रंथकेविस्तारभयतैं लिख्येनहीं ॥ और न्यायप्रकाशकेषष्ठेपरिच्छेदविषे तेसर्वमत स्पष्टकरिकैलिख्येहैं ॥ जिसकूं जिज्ञासाहोवै तिसनैं तहांसैंजानि लेणे ॥ अब वेदांतसिद्धांतसंमत प्रमात्वकेस्वतःग्राह्यताका निरूपणकरेहैं ॥ तहां ( यावत्स्वाश्रयग्राहकग्राह्यत्वं स्वतोग्राह्यत्वं ) अर्थयह ॥ ताप्रमात्वधर्मकाआश्रयभूत जोप्रमाज्ञानहै ॥ ताप्रमाज्ञानके जिनेंकीग्राहकहैं तिनोंकरिकै जो ताप्रमात्वविषेग्राह्यपणाहै यहहीं ताप्रमात्वविषे स्वतःग्राह्यताहै ॥ जैसे ताप्रमात्वधर्मकाआश्रयरूप अयंघटः यहवृत्तिज्ञानहै ॥ तावृत्तिज्ञानकूंग्रहणकरणेहारा साक्षीचैतन्यहै ॥ तासाक्षीचैतन्यनैं तावृत्तिज्ञानकीन्याई ताकाप्रमात्वभी ग्रहणकरीताहै ॥ यहहीं ताप्रमात्वविषे स्वतःग्राह्यताहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जैसे प्रमाज्ञानकाप्रमात्व स्वतःग्राह्य होवैहै ॥ तैसे इदंरजतं इत्यादिकअप्रमाज्ञानकाअप्रमात्वभी स्वतःग्राह्यहींहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सोअप्रमात्वधर्मतों परतःग्राह्यहींहोवैहै ॥ स्वतःग्राह्यहोतानहीं ॥ तहां ( तदभाववतितत्प्रकारकत्वं अप्रमात्वं ) अर्थयह ॥ ज्ञा

॥ १३ ॥



ग्राह्यही होवै है ॥ स्वतः ग्राह्य होतानहीं ॥ तहां ( तत्त्वज्ञानविषयकत्वं अप्रमात्वं ) अर्थ यह ॥ ज्ञा

नविषे जो तिसधर्मके अभाववाले वस्तुमें तत्त्वधर्मविषयकत्वहै यहहीं अप्रमात्त्वहै ॥ जैसे इंदरजतं इसज्ञा  
नविषे वास्तवतैरजतके अभाववाली शुक्तिमें जोरजतविषयकत्वहै यहहीं अप्रमात्त्वहै ॥ तहां ताअप्रमा  
त्वका घटक जो शुक्तिविषेरजतका अभावहै ॥ ताअभावकूं सोवृत्तिज्ञान विषयकरतानहीं ॥ यातैं तार  
जताभावघटितअप्रमात्त्वकूं सोसाक्षीचैतन्यभी ग्रहणकरिसकतानहीं ॥ किंतु सोसाक्षीचैतन्य केवल ता  
अप्रमात्त्वधर्मके आश्रयभूतज्ञानमात्रकूंहीं ग्रहणकरै ॥ जो कदाचित् वृत्तिज्ञानके अविषयभूतार्थकूंभी  
सोसाक्षी प्रकाशकरताहोवै ॥ तौं घटादिआकारवृत्तिकालविषे पटादिकोंकाभी तासाक्षीचैतन्यकरिकै  
प्रकाशहोना चाहिये ॥ यातैं प्रमात्त्वकीन्यांई सोअप्रमात्त्व स्वतः ग्राह्य नहींहै ॥ किंतु परतः ग्राह्यहै ॥ त  
हां ( स्वाश्रयग्राहकातिरिक्तसामग्रीग्राह्यत्वं परतो ग्राह्यत्वं ) अर्थ यह ॥ ताअप्रमात्त्वधर्मका आश्रयभूत जो  
अप्रमाज्ञानहै ॥ तिसका ग्राहक जासामग्रीहै ॥ तासामग्रीतैंभिन्नसामग्रीकरिकै जो ग्राह्यत्वहै ॥ यहहीं  
ताअप्रमात्त्वविषे परतः ग्राह्यताहै ॥ जैसे उक्तअप्रमात्त्वधर्मका आश्रयभूत इंदरजतं यहअप्रमाज्ञानहै ॥  
ताअप्रमाज्ञानका ग्राहक तौं साक्षीचैतन्यहै ॥ सोसाक्षीचैतन्य ताअप्रमात्त्वधर्मकूं ग्रहणकरतानहीं ॥ किं  
तु तासाक्षीचैतन्यतैंभिन्न जाअनुमानरूपसामग्रीहै ॥ ताकरिकैहीं सोअप्रमात्त्वधर्म ग्रहणहोवैहै ॥ यह  
हीं ताअप्रमात्त्वविषे परतः ग्राह्यत्वहै ॥ अब ताअनुमानका प्रकार दिखावैहैं ॥ तहां इसपुरुषकी इष्टसा  
धनताज्ञानतैंअनंतरहीं प्रवृत्तिहोवैहै ॥ साप्रवृत्तिभी संवादिप्रवृत्ति १ विसंवादिप्रवृत्ति २ इसभेदकरिकै  
दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां सफलप्रवृत्तिकानाम संवादिप्रवृत्तिहै ॥ और निष्फलप्रवृत्तिकानाम विसंवा  
दिप्रवृत्तिहै ॥ ताविसंवादीप्रवृत्तिकरिकैहीं ताअप्रमात्त्वका अनुमानहोवैहै ॥ सोअनुमान यहहै ॥ ( शु  
क्तीरजतज्ञानं अप्रमा विसंवादीप्रवृत्तिजनकत्वात् यन्नैवंतन्नैवं यथाप्रमा ) अर्थ यह ॥ शुक्तिविषे जो



तत्त्वा०

॥ ५ ॥

परि०

३

इदं रजतं यह ज्ञान है ॥ सो ज्ञान अप्रमारूप है ॥ निष्फलप्रवृत्तिका जनक होणेतें ॥ जो जो ज्ञान अप्रमारूप न  
 हीं होवै है ॥ सो सो ज्ञान निष्फलप्रवृत्तिका जनक भी नहीं होवै है ॥ जैसे प्रमा ज्ञान है इति ॥ इस प्रकार के अ  
 नुमान करिकैं यह पुरुष तारजतज्ञानविषे अप्रमात्व कूं निश्चय करे है ॥ यह हीं ता अप्रमात्वविषे परतः ग्राह्य  
 ता है ॥ किंवा जैसे ता प्रमात्व के ज्ञानविषे स्वतः पणा है ॥ तैसे ता प्रमात्व की उत्पत्तिविषे भी स्वतः पणा हीं  
 है ॥ तहां ज्ञान के उत्पत्तिकी जा सामान्य सामग्री है ॥ ता सामग्री मात्र करिकैं जो जन्यता है यह हीं ता प्र  
 मात्व की उत्पत्तिविषे स्वतः पणा है ॥ इस प्रकार ता अप्रमात्व के ज्ञानविषे जैसे परतः पणा है ॥ तैसे ता अप्र  
 मात्व की उत्पत्तिविषे भी परतः पणा हीं है ॥ तहां ज्ञान के उत्पत्तिकी सामान्य सामग्री तें भिन्न जो दोष है ता दोष  
 करिकैं जो जन्य पणा है ॥ यह हीं ता अप्रमात्व की उत्पत्तिविषे परतः पणा है इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व  
 उक्तरीति से ता प्रमात्व की उत्पत्तिविषे तथा ज्ञानविषे जो स्वतः पणा मानोंगे ॥ तों पूर्व अदृष्ट स्थलविषे इदं  
 जलं इस प्रकार के ज्ञान तें अनंतर इस पुरुष कूं यह जल का ज्ञान प्रमा है वान हीं या प्रकार का जो संशय होवै है  
 सो नहीं होना चाहिये ॥ काहे तें तुमारे मतविषे ता ज्ञान का प्रमात्व साक्षी चैतन्य करिकैं निश्चित हीं है ॥ और  
 निश्चित अर्थविषे संशय होतान हीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तिस स्थलविषे ता संशय का उत्पादक जो दोष  
 है ॥ ता दोष घटित संशय की सामग्री ता प्रमात्व ग्राहक सामग्री तें प्रबल है ॥ या तें ता जल ज्ञानविषे ता प्रमात्व  
 का अनिश्चय होणेतें सो प्रमात्व का संशय संभवै है ॥ इस प्रकार ता स्वतः ग्राह्य प्रमात्व के निश्चय करिकैं ता उ  
 क्त प्रमा संशय की निवृत्ति बनिसके है इति ॥ अब करण संशय का तथा ता के निवृत्तिके उपाय का वर्णन करे  
 हैं ॥ तहां तत्त्वमसि आदिक वेदांत वाक्य अद्वितीय ब्रह्मविषे प्रमाण है वान हीं या प्रकार की जा वेदांत वा  
 क्य रूप प्रमाणविषे असंभावना है ता का नाम करण संशय है ॥ सो करणगत संशय ब्रह्मवेत्ता गुरु के मुख तें वे

॥ १३९ ॥



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



तत्त्वा०

॥ ६ ॥

दियहीं आत्माहैं ॥ इसप्रकार केईकदूसरे मानेहैं ॥ और मनहीं आत्माहै इसप्रकार केईकदूसरे माने हैं ॥ और क्षणिकविज्ञानहीं आत्माहै इसप्रकार केईकदूसरे मानेहैं ॥ और शून्यहीं आत्माहै इसप्रकार केईकदूसरे मानेहैं ॥ और देहइंद्रियादिकोंतैंभिन्न संसारी कर्त्ता भोक्ता आत्माहै इसप्रकार केईकदूसरे मानेहैं ॥ और आत्मा केवल भोक्ताहींहै कर्त्तानहींहै इसप्रकार केईकदूसरे मानेहैं ॥ और कर्त्ता भोक्तातैंभिन्न सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् ईश्वरहीं आत्माहै इसप्रकार केईकदूसरे मानेहैं ॥ और आत्मा उपाधिकेसंबंधतैंकर्त्ताभोक्ताहूआभी वास्तवतैंशुद्धहींहै इसप्रकार केईकदूसरे मानेहैं ॥ और तेषूर्वउक्त वादी तिसतिसदेहादिरूपआत्माकीसिद्धिवासतै यथायोग्य युक्तिप्रमाणादिकभी कथनकरेहैं ॥ इसप्रकार परस्परविरुद्धअर्थकेप्रतिपादक वादीयोंकेवचनरूपविप्रतिपत्तितैं इसपुरुषकूं सोआत्माकासंशय अनेकप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां सोआत्मा यद्यपि वास्तवतैं एकअद्वितीयरूपहै ॥ तथापि उपाधिकेभेदकरिकै सोआत्मा परमात्मा १ जीवात्मा २ यहदोप्रकारका कह्याजावैहै ॥ तहां तत्त्वमसि इसमहावाक्यविषे स्थित तत्पदकाअर्थरूप जो मायाउपहितब्रह्महै ताकानाम परमात्माहै ॥ और त्वंपदकाअर्थरूप जो तीनशरीरउपहितचैतन्यहै ताकानाम जीवात्माहै ॥ तिनदोनोंविषे प्रथम तत्पदार्थपरमात्माविषे तेअनेकप्रकारकेसंशय दिखावैहैं ॥ तहां सोब्रह्म अद्वितीयहै अथवा सद्वितीयहै ॥ और अद्वितीयरूपहूआभी सोब्रह्म आनंदगुणवालाहै अथवा आनंदस्वरूपहै ॥ और सोब्रह्म ज्ञानगुणवालाहै अथवा ज्ञानस्वरूपहै ॥ और सोब्रह्म सत्ताजातिवालाहै अथवा सत्तास्वरूपहै ॥ और सोब्रह्म सगुणहै अथवा निर्गुणहै ॥ इत्यादिकअनेकप्रकारकेसंशय इसपुरुषकूं तिसतत्पदार्थब्रह्मविषेहोवैहैं ॥ अब त्वंपदार्थजीवात्मा विषेभी तेअनेकप्रकारकेसंशय दिखावैहैं ॥ तहां यहआत्मा देहइंद्रियादिकोंतैं भिन्नहै अथवानहीं ॥

परि०

३

॥१४०॥



ह ॥ इत्यादिक अनेक प्रकारके संशय इस पुरुषकृत सत्तत्त्वपदार्थजीवात्माविषे भी ते अनेक प्रकारके संशय दिखावै हैं ॥ तहां पुरुष आत्मा और देह इंद्रियादिकों तें भिन्न है अथवा नहीं ॥

और देह इंद्रियादिकों तें भिन्न हू आभी सो आत्मा कर्त्ता है अथवा अकर्त्ता है ॥ और अकर्त्ता हू आभी सो आत्मा चिद्रूप है अथवा अचिद्रूप है ॥ और चिद्रूप हू आभी सो आत्मा आनंदरूप है अथवा नहीं ॥ और आनंदरूप हू आभी सो आत्मा परिणामी है अथवा कूटस्थ है ॥ और कूटस्थ हू आभी सो आत्मा सत्ता जातिवाला है अथवा सत्तारूप है ॥ इत्यादिक अनेक प्रकारके संशय इस पुरुषकृत तात्त्वपदार्थजीवात्माविषे होवै हैं ॥ अब तत्त्वपदार्थकी एकता रूपवाक्यार्थविषे संशय दिखावै हैं ॥ इस जीवात्माकृत सत्तचित् आनंद रूपता हू एभी परमात्माके साथि इस जीवात्माकी एकता संभवती है अथवा नहीं ॥ अब मोक्षके साधनविषे संशय दिखावै हैं ॥ जीवब्रह्मकी एकताके हू एभी ता एकताका ज्ञान मोक्षका साधन है अथवा नहीं ॥ और ता ज्ञानकृत मोक्षकी साधनता हू एभी सो ज्ञान कर्मसहित हू आ मोक्षका साधन है अथवा केवल ज्ञान मोक्षका साधन है ॥ इत्यादिक सर्व संशय आत्मगत संशय कह्ये जावै हैं ॥ ते सर्व आत्मगत संशय तर्करूपमनन करि कै निवृत्त होवै हैं ॥ तहां ( अनिष्टप्रसंजकः तर्कः ) अर्थ यह ॥ जायुक्ति प्रतिवादीके अनिष्टकी सिद्धि करे है ॥ सायुक्ति तर्क कही जावै है ॥ अर्थात् व्याप्यका आरोपण करि कै जो व्यापकका आपादन है ताका नाम तर्क है ॥ तहां व्याप्तिके आश्रयकानाम व्याप्य है ॥ और व्याप्तिके निरूपककानाम व्यापक है ॥ व्याप्तिका स्वरूप पूर्वद्वितीयपरिच्छेदविषे निरूपण करि आये हैं ॥ जैसे पर्वतविषे धूमकृत देखता हू आभी जो प्रतिवादी ता पर्वतविषे अग्नि नहीं माने है ॥ ता प्रतिवादीके प्रति या प्रकारका तर्क कह्या जावै है ॥ धूमवन्हिका कार्यकारणभाव सर्वलोकविषे प्रसिद्ध है ॥ और कारण तें विना कार्य होतानहीं यह वार्त्ता भी सर्वलोकविषे प्रसिद्ध है ॥ या तें इस पर्वतविषे जो वन्हिनहीं होवै ॥ तों ता वन्हिका कार्य धूम भी नहीं होणा चाहिये इति ॥ तहां ता पर्वतविषे धूमका अभाव ता प्रतिवादीकृत अनिष्ट है ॥ ता प्रतिवादीके अनिष्टकी सिद्धि



तत्त्वा०

॥ ७ ॥

इस उक्त तर्क तै होवै है ॥ और इस उक्त तर्क विषे वन्हि अभाव रूप व्याप्य का आरोपण करिकै धूमाभाव रूप व्यापक का आपादन कन्या जावै है ॥ यातें सो उक्त तर्क कालक्षण इस प्रसिद्ध तर्क विषे संभवै है ॥ इस प्रकार आगे वक्ष्यमाण तर्कों विषे भी ता उक्त लक्षण का समन्वय जानिलेना इति ॥ अब ते आत्म संशय के निवर्तक तर्क निरूपण करेहैं ॥ तिन तर्कों विषे भी प्रथम तत्पदार्थ रूप परमात्मा के अद्वितीय पणे का साधक तर्क कहेहैं ॥ जो कदाचित् यह आकाशादिक प्रपंच सत्य होवै ॥ तौं ब्रह्म कूं अद्वितीय रूप कहने हारी ( एकमेवा द्वितीयं ब्रह्म ) इस श्रुतिका विरोध होवैगा ॥ अर्थात् सद्वितीय ब्रह्म कूं अद्वितीय रूप कहने हारी सा श्रुति मिथ्या वा दिहोने तें अप्रमाण रूप होवैगी ॥ और ता श्रुतिकी अप्रमाणता आस्तिकवादी कूं अनिष्ट ही है ॥ यातें ता प्रपंच कूं मिथ्या ही मान्या चाहिये ॥ ता प्रपंच के मिथ्या हूए ता अद्वैत श्रुतिका विरोध होवै नहीं ॥ ॥ शंका ॥ ब्रह्म कूं जो अद्वितीय मानिये ॥ तौं भेद कूं प्रतिपादन करने हारी श्रुतियों का विरोध होवै है ॥ तिन श्रुतियों के विरोध तें सा अद्वैत श्रुति ता अद्वैत का प्रतिपादक नहीं है ॥ किंतु किसी अन्य ही अर्थ का प्रतिपादक है ॥ यातें ता प्रपंच की सत्यता मानने विषे भी ता अद्वैत श्रुतिका विरोध होवै नहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इस अधिकारी पुरुष कूं जो अर्थ इष्ट फल का हेतु होवै है ॥ तथा प्रत्यक्षादिक प्रमाणों करिकै अज्ञात होवै है ॥ तिस अर्थ विषे ही श्रुतिका तात्पर्य होवै है ॥ तहां सो अद्वैत तौं प्रत्यक्षादिक प्रमाणों करिकै अज्ञात है ॥ तथा ता अद्वैत ब्रह्म के ज्ञान तें इस अधिकारी पुरुष कूं ( ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति । तरति शोकमात्मवित् ) इत्यादिक श्रुतियों नें मोक्ष रूप निरतिशय पुरुषार्थ की प्राप्ति कथन करी है ॥ यातें ता श्रुतिका ता अद्वैत विषे ही तात्पर्य संभवै है ॥ अन्य किसी अर्थ विषे तात्पर्य संभवतानहीं ॥ और द्वैतरूप भेद तौं प्रत्यक्षादिक प्रमाण करिकै ज्ञात है ॥ तथा ता भेद के ज्ञान तें किसी इष्ट फल की भी प्राप्ति होती नहीं ॥ उलटा ( उदर मंतरं कुरुतेऽथ तस्य भयं भवति ।

परि०

३

॥ १४९ ॥



तथा ताभेदकेज्ञानतैं किसीइष्टकृतीभीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ उल्लास ( उदरमंतरंकुरुतेऽथतस्यभयंभवति ।

मृत्योःसमृत्युमाप्नोति यइह नानेवपश्यति ) इत्यादिकश्रुतियोंनैं ताभेददर्शीपुरुषकूं अनर्थकीहींप्राप्ति कथ  
नकरीहै ॥ और ( अथयोऽन्यादेवतामुपास्तेऽन्योसावन्योहमस्मीतिनसवेदयथापशुः ) इसश्रुतिनैं ताभे  
ददर्शीपुरुषकूं पशुकीतुल्यताकहिके ताभेदकीनिंदाहींकरीहै ॥ यातैं ताभेदविषे श्रुतिकातात्पर्य संभव  
तानहीं ॥ जोकदाचित् साश्रुति भेदकूंहींकथनकरैंगी ॥ तौ प्रत्यक्षसिद्धभेदकीअनुवादकताकरिकै ता  
श्रुतिकूं अप्रमाणताहीं प्राप्तहोवैंगी ॥ यातैंयहसिद्धभया ॥ फलवान्अज्ञातअर्थकाबोधकहोणेतैं साअद्वै  
तश्रुतितौ प्रबलहै ॥ और फलशून्यज्ञातअर्थकाबोधकहोणेतैं साभेदश्रुति दुर्बलहै ॥ और लोकविषेभी  
प्रबलकरिकैहीं दुर्बलकाबाधहोवैहै ॥ कोईदुर्बलकरिकै प्रबलकाबाधहोतानहीं ॥ यातैं ताभेदश्रुतिकेवि  
रोधकरिकै ताअद्वैतश्रुतिकूं अन्यपरता संभवतीनहीं ॥ किंतु ताअद्वैतश्रुतिकेविरोधकरिकै ताभेदश्रुति  
कूंहीं अन्यपरता संभवैहै ॥ यातैं ताअद्वैतश्रुतिकेविरोधतैं ताप्रपंचविषे सत्यपणा संभवतानहीं ॥ इस  
प्रकार ब्रह्मकेअद्वितीयपणेकासाधकतर्ककरिकै सोब्रह्म अद्वितीयहै वा सद्वितीयहै याप्रकारकेसंशयकी  
निवृत्तिहोवैहै इति ॥ अब तापरमात्माके आनंदरूपताकासाधकतर्क कहैहैं ॥ सोपरमात्मा जोकदाचि  
त् आनंदरूपनहींहोवै ॥ तौ तापरमात्माकेप्राप्तिकूं पुरुषार्थरूपतानहींहोवैंगी ॥ जिसकारणतैं आनंदकी  
प्राप्तिहीं पुरुषार्थरूपहोवैहै ॥ और तापरमात्माकेप्राप्तिकूं जो अपुरुषार्थरूपमानोंगे ॥ तौ तापरमात्मा  
केप्राप्तिकूं पुरुषार्थरूपकहणेहारे ( आत्मलाभान्नपरंविद्यते । पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः ) इ  
त्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंका विरोधहोवैगा ॥ सोश्रुतिकाविरोध सर्वकूं अनिष्टहींहै ॥ यातैं तापरमा  
त्माकूं आनंदरूपहीं मान्याचाहिये ॥ इसप्रकारकेतर्कतैं सोपरमात्मा आनंदरूपहै वानहीं याप्रकारके  
संशयकीनिवृत्तिहोवैहै इति ॥ अब तापरमात्माके चैतन्यरूपताकासाधकतर्क कहैहैं ॥ सोपरमात्मा



तत्त्वा०

॥ ८ ॥

जोकदाचित् चैतन्यरूपनहींहोवै ॥ तौ घटादिकोंकीन्याई सूर्यचंद्रादिकजगत्का प्रकाशक नहींहोवै गा ॥ और तापरमात्माकूं जो जगत्काप्रकाशक नहींमानोंगे ॥ तौ तापरमात्माकूं सूर्यचंद्रादिकसर्व जगत्काप्रकाशक कहणेहारे जे ( तस्यभासासर्वमिदंविभाति । तच्छुभ्रंज्योतिषांज्योतिः । ज्योतिषाम पितज्ज्योतिस्तमसःपरमुच्यते ) इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनहैं ॥ तिनोंकाविरोध प्राप्तहोवैगा ॥ सोश्रुति स्मृतिवचनोंकाविरोध सर्वकूं अनिष्टहीहै ॥ यातैं तापरमात्माकूं चैतन्यरूपहीं मान्याचाहिये ॥ इसप्र कारकेतर्ककरिकैं सोपरमात्मा चैतन्यरूपहै वानहीं याप्रकारकेसंशयकीनिवृत्तिहोवैहै इति ॥ अब ताप रमात्माके निर्गुणभावकासाधकतर्क कहेहैं ॥ सोपरमात्मा जोकदाचित् सगुणहोवै ॥ तौ तापरमात्माके निर्विशेषस्वरूपकूं कथनकरणेहारे जे ( अस्थूलमनष्वह्रस्वमदीर्घ ) इत्यादिक श्रुतिस्मृतिवचनहैं ॥ तिन सर्ववचनोंका विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ सोश्रुतिस्मृतिकाविरोध सर्वकूं अनिष्टहीहै ॥ यातैं तापरमात्माकूं निर्गुणहीं मान्याचाहिये ॥ इसप्रकारकेतर्कतैं सोपरमात्मा सगुणहै वा निर्गुणहै याप्रकारकेसंशयकीनि वृत्तिहोवैहै इति ॥ अब त्वंपदार्थरूपआत्माके आनंदरूपताकासाधकतर्क कहेहैं ॥ यहआत्मा जोकदा चित् आनंदरूप नहींहोवै ॥ तौ कोईभीजीव आपणेस्वार्थवासतै प्रवृत्तनहींहोवैगा ॥ और सर्वप्राणी योंकी आपणेस्वार्थवासतैहीं प्रवृत्तिदेखनेमेंआवैहै ॥ तालोकप्रसिद्धिका विरोध प्राप्तहोवैगा ॥ तथा या ज्ञवल्क्यमुनिनैं मैत्रेयीस्त्रीकेप्रति ( नवाअरेपत्युःकामायपतिःप्रियोभवति आत्मनस्तुकामायपतिःप्रियो भवति ) इत्यादिकश्रुतिवचनोंकरिकैं पतिजायादिकसर्वपदार्थोंकूं आपणेआत्मावासतैहीं प्रियकह्याहै ॥ तिनश्रुतिवचनोंकाभी विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ यातैं ताआत्माकूं आनंदरूपहीं मान्याचाहिये ॥ इसप्रका रकेतर्कतैं आत्मा आनंदरूपहै वानहीं याप्रकारकेसंशयकीनिवृत्तिहोवैहै इति ॥ अब ताआत्माके चैत

परि०

३

॥ १४२ ॥



तिनश्रुतिस्मृतिकोना विरोधप्राप्तहोवेंगा ॥ तौ घटादिकोंकीन्यांई  
रकेतर्कतें आत्मा आनंदरूपहै वानहीं याप्रकारकेसंशयकीनिवृत्तिहोवैहै इति ॥ अब ताआत्माके चैत

न्यरूपताकासाधकतर्क कहेहैं ॥ यहआत्मा जोकदाचित् चैतन्यरूप नहींहोवै ॥ तौ घटादिकोंकीन्यांई  
जडताकरिकै सावयवहोणेतें अनात्माहींहोवेंगा ॥ ताकरिकै प्रकाशकचैतन्यकेअभावतें जगत्विषे अं  
धताहीं प्राप्तहोवेंगी ॥ तथा आत्माकूंचैतन्यरूपकहणेहारे जे ( योऽयंविज्ञानमयःप्राणेषुहृद्यंतज्योतिःपुरु  
षः । अत्रायंपुरुषःस्वयंज्योतिर्भवति । क्षेत्रक्षेत्रीतथाकृत्स्नंप्रकाशयतिभारत ) इत्यादिक श्रुतिस्मृतिवचनहैं ॥  
तिनसर्ववचनोंका विरोधप्राप्तहोवेंगा ॥ सोश्रुतिस्मृतिकाविरोध सर्वकूं अनिष्टहींहै ॥ यातें ताआत्मा  
कूं चैतन्यरूपहीं मान्याचाहिये ॥ इसप्रकारकेतर्कतें आत्मा चैतन्यरूपहै वानहीं याप्रकारकेसंशयकी  
निवृत्तिहोवैहै इति ॥ अब आत्माके अकर्त्तापणेकासाधकतर्क कहेहैं ॥ यहआत्मा जोकदाचित् कर्त्ता  
होवेंगा ॥ तौ विकारीपणेकरिकै परिणामीहोणेतें अनित्यहींहोवेंगा ॥ जो आत्माकूं अनित्यमानों  
गे ॥ तौ आत्माकूंनित्यकहणेहारे जे ( अविनाशीवाअरेऽयमात्मा । नित्यःसर्वगतःस्थाणुः ) इत्यादिक  
श्रुतिस्मृतिवचनहैं ॥ तिनसर्ववचनोंका विरोधप्राप्तहोवेंगा ॥ सोश्रुतिस्मृतिकाविरोध सर्वकूं अनिष्टहीं  
है ॥ यातें ताआत्माकूं अकर्त्ताहीं मान्याचाहिये ॥ इसप्रकारकेतर्कतें यहआत्मा कर्त्ताहै वा अकर्त्ता  
है याप्रकारकेसंशयकीनिवृत्तिहोवैहै इति ॥ अब तत्त्वंपदार्थके अभेदकासाधकतर्क कहेहैं ॥ सोतत्प  
दार्थरूपपरमात्मा जोकदाचित् इसत्त्वंपदार्थरूपजीवात्मातें भिन्नहोवै ॥ तौ घटादिकोंकीन्यांई अनात्म  
भावकरिकै अनित्यहींहोवेंगा ॥ और तापरमात्माकूं जोअनित्यमानिये ॥ तौ तापरमात्माकूं नित्यरूप  
कहणेहारे जे श्रुति स्मृति इतिहास पुराण आदिकोंकेवचनहैं ॥ तिनसर्वोंका विरोध प्राप्तहोवेंगा ॥  
किंवा ताजीवब्रह्मका जोभेदमानिये ॥ तौ ताजीवब्रह्मकेअभेदकूंकथनकरणेहारे जे ( तत्त्वमसि अहंब्र  
ह्मास्मि अयमात्माब्रह्म । क्षेत्रज्ञंचापिमांविद्धिसर्वक्षेत्रेषुभारत ) इत्यादिक श्रुतिस्मृतिवचनहैं ॥ तिनसर्वव



तत्त्वा०  
॥ ९ ॥

परि०  
३

चनोंका विरोध प्राप्त होवेंगा ॥ सो श्रुति स्मृति आदिकोंका विरोध सर्वकूँ अनिष्ट ही है ॥ यातें ता परमात्मा कूँ इस जीवात्मा तें अभिन्न ही मान्या चाहिये ॥ इस प्रकारके तर्क तें सो परमात्मा इस जीवात्मा तें भिन्न है वा अभिन्न है या प्रकारके संशय की निवृत्ति होवै है इति ॥ अब केवलज्ञान विषे मोक्ष की साधनता का साधक तर्क कहे हैं ॥ जो कदाचित् कर्म मिश्रित ज्ञान मोक्ष का साधन होवै ॥ तौ स्वर्गादिकों की न्यां ई कर्मजन्य होने तें तामोक्ष कूँ भी अनित्य पणा ही प्राप्त होवेंगा ॥ और तामोक्ष कूँ जो अनित्य मानिये ॥ तौ मुक्त पुरुषों कूँ भी पुनः संसार की प्राप्ति होवेंगी ॥ ता करिकै मुक्त पुरुष कूँ पुनः संसार की प्राप्ति का निषेध करने हारे ( न स पुनरावर्तते । यद्गत्वान निवर्तते तद्द्वाम परमं मम ) इत्यादिक श्रुति स्मृति वचनोंका विरोध प्राप्त होवेंगा ॥ तथा केवलज्ञान तें मोक्ष की प्राप्ति कूँ कथन करने हारे जे ( ज्ञानादेव तु कैवल्यं । नान्यः पन्था विद्यते ऽयनाय । ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः ) इत्यादिक श्रुति स्मृति वचन हैं ॥ तिन सर्व वचनोंका विरोध प्राप्त होवेंगा ॥ सो श्रुति स्मृति वचनोंका विरोध सर्व आस्तिकों कूँ अनिष्ट है ॥ यातें सो कर्म मिश्रित ज्ञान मोक्ष का साधन नहीं है ॥ किंतु अहं ब्रह्मास्मि या प्रकारका अभेद ज्ञान ही तामोक्ष का साधन मान्या चाहिये ॥ इस प्रकारके तर्क तें कर्म मिश्रित ज्ञान मोक्ष का साधन है अथवा केवलज्ञान मोक्ष का साधन है या प्रकारके संशय की निवृत्ति होवै है इति ॥ इस प्रकारके श्रुति उक्त तर्क रूप मनन करिकै ही सो पूर्व उक्त आत्मगत संशय निवृत्त होवै है ॥ इस तर्क रूप मनन कालक्षण पूर्व द्वितीय परिच्छेद विषे निरूपण करि आये हैं ॥ सो ईहां भी जानिलेना ॥ यह उक्त मनन शारीरक मीमांसाके द्वितीय अध्यायके पठन करिकै सिद्ध होवै है इति ॥ तहां पूर्व संशय निश्चय इस भेद करिकै दो प्रकारका अयर्थ अनुभव कहा था ॥ ताके विषे प्रथम संशयका अवपर्यंत निरूपण किया ॥ अब दूसरे निश्चयका निरूपण करे हैं ॥ तहां ( संशय विरोधि ज्ञानं निश्चयः ) अर्थ यह ॥ पूर्व उक्त

॥ १४३ ॥



य इसभेदकारक दो प्रकारका अयथाय अनुभव कहाया ॥ ताका विषय प्रथम सरायका अवयवत निरूपणक  
न्या ॥ अब दूसरे निश्चयका निरूपणकरेहैं ॥ तहां (संशयविरोधीज्ञानं निश्चयः) अर्थयह ॥ पूर्वउक्त

संशयका विरोधीजोज्ञानहै सो निश्चयकह्याजावैहै ॥ तहां इसपुरुषकूं जिसपदार्थका निश्चयहोवैहै ॥  
तिसपदार्थविषे संशयहोतानहीं ॥ यातैं तानिश्चयविषे संशयकाविरोधीपणा स्पष्टहीहै इति ॥ और सो  
उक्तनिश्चयभी यथार्थ १ अयथार्थ २ इसभेदकरिकै दो प्रकारकाहोवैहै ॥ तहां (अविसंवादिज्ञानं यथा  
र्थनिश्चयः) अर्थयह ॥ फलविषेपर्यवसानवाला जोज्ञानहै ताकानाम यथार्थनिश्चयहै ॥ अर्थात् जि  
सवस्तुकेनिश्चयतैंअनंतर प्रवृत्तहूएपुरुषकूं तावस्तुकीप्राप्तिहोवैहै ॥ सोनिश्चय यथार्थनिश्चय कह्याजावै  
है ॥ सोयथार्थनिश्चय पूर्वद्वितीयपरिच्छेदविषे प्रमारूपकरिकै कथनकन्याहै ॥ और इसतृतीयपरिच्छेद  
विषे पूर्व यथार्थस्मृतिरूपकरिकै कथनकन्याहै ॥ अर्थात् यथार्थअनुभवका तथायथार्थस्मृतिका नाम य  
थार्थनिश्चयहै इति ॥ और (विसंवादिज्ञानं अयथार्थनिश्चयः) अर्थयह ॥ फलतैंरहितजोज्ञानहै ताका  
नाम अयथार्थनिश्चयहै ॥ अर्थात् जिसवस्तुकेनिश्चयतैंअनंतर प्रवृत्तहूएपुरुषकूं तावस्तुकीप्राप्ति नहींहो  
वैहै ॥ सोनिश्चय अयथार्थनिश्चय कह्याजावैहै इति ॥ सोअयथार्थनिश्चयभी तर्क १ विपर्यय २ इस  
भेदकरिकै दो प्रकारका होवैहै ॥ तहां तर्कका लक्षण तथाउदाहरण इसीपरिच्छेदविषे पूर्व निरूपणक  
रिआयेहैं ॥ यातैं पुनःइहांनिरूपणकरतेनहीं ॥ तहां बन्दिवाले तथाधूमवाले पर्वतविषे बन्दिकेअभाव  
कूं तथाधूमकेअभावकूं विषयकरणेहारा जो इसपर्वतविषे बन्दिनहींहोवै तों धूमभीनहींहोवैगा याप्र  
कारका तर्कहै ॥ तातर्कविषे अयथार्थनिश्चयपणा स्पष्टहीहै इति ॥ अब विपर्ययका निरूपणकरेहैं ॥  
तहां (मिथ्याज्ञानं विपर्ययः) अर्थयह ॥ जोज्ञान मिथ्याहोवैहै ॥ सोज्ञान विपर्यय कह्याजावैहै ॥ जे  
से शुक्तिविषे इंदरजतं यहज्ञान तथारज्जुविषे अयंसर्पः यहज्ञान मिथ्याज्ञानहोणेतैं विपर्यय कह्याजावै  
है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताज्ञानविषे मिथ्यापणा क्याहै ॥ अर्थात् बाध्यत्वकानाम मिथ्यापणाहै ॥ अ



तत्त्वा०

॥ १० ॥

थवा निर्विषयत्वकानाम मिथ्यापणाहै ॥ तहां कोईभीज्ञानका आपणेस्वरूपकरिकैबाधहोतानहीं ॥ यातें बाध्यत्वकानाम मिथ्यापणाहै यहप्रथमपक्षतों संभवतानहीं ॥ और कोईभीज्ञान निर्विषयहोतानहीं ॥ यातें सोद्वितीयपक्षभी संभवतानहीं ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहूए ॥ अब तामिथ्याज्ञानकालक्षणकहेहैं ॥ ( अ तस्मिंस्तद्बुद्धिः मिथ्याज्ञानं ) अर्थयह ॥ तिसअर्थतैरहितवस्तुविषे जो तिसअर्थकीबुद्धिहै ताकानाम मिथ्याज्ञानहै ॥ जैसे रजततैरहितशुक्तिविषे जो इंदरजतं यहरजतबुद्धिहै ताकानाम मिथ्याज्ञानहै ॥ तहां यद्यपि ज्ञानका स्वरूपतैंबाधहोतानहीं ॥ तथापि विषयकेबाधतें ताज्ञानकाबाध कह्याजावैहै ॥ सोबाध्यत्वहीं ताज्ञानविषे मिथ्यापणाहै इति ॥ और सोउक्तविपर्ययरूपभ्रमभी निरुपाधिकभ्रम १ सोपाधिकभ्रम २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां जोभ्रम अधिष्ठानकेज्ञानतें निवृत्तहोइजावैहै ॥ सोभ्रमतों निरुपाधिकभ्रम कह्याजावैहै ॥ और जोभ्रम अधिष्ठानकेज्ञानहूएभी निवृत्तनहींहोवैहै ॥ सोभ्रम सोपाधिकभ्रम कह्याजावैहै ॥ तहां सो निरुपाधिकभ्रमभी बाह्य १ अंतर २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां शुक्तिरज्जुआदिकोंविषे जो इंदरजतं अयंसर्पः इत्यादिकभ्रमज्ञानहोवैहै ॥ सोभ्रमज्ञानतों बाह्यनिरुपाधिकभ्रम कह्याजावैहै ॥ और मैं अज्ञानीहूं ब्रह्मकूंनहींजानताहूं याप्रकारकाजोभ्रम है ॥ सोभ्रम अंतरनिरुपाधिकभ्रम कह्याजावैहै ॥ तहां शुक्तिरज्जुआदिकअधिष्ठानकेज्ञानतें इंदरजतं अयंसर्पः इत्यादिकभ्रमकीनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ तथा आत्मारूपअधिष्ठानकेज्ञानतें अहंअज्ञः याप्रकारकेभ्रमकीनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ यातें ताउक्तभ्रमविषे निरुपाधिकभ्रमरूपता संभवैहै इति ॥ इसप्रकार दूसरा सोपाधिकभ्रमभी बाह्य १ अंतर २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां रक्तयुगलतैरहित शुक्लस्फटिकविषे रक्तवर्णवालेजपाकुसुमादिकद्रव्यकीसमीपताहूए जो । लोहितःस्फटिकः । याप्रकारकाभ्रम

परि०

३

॥ १४४ ॥



सोपाधिकभ्रमना बाह्य ज अंतर इस प्रकार कहेंगे ॥ तहां यह स्फटिक शुद्ध है रक्त नहीं है या प्रकारके ता  
स्फटिकविषे रक्तवर्णवाले जपाकुसुमादिक उपाधिकी तहां तै निवृत्ति नहीं होवै है ॥ लोहितः स्फटिकः । या प्रकारका भ्रम

होवै है ॥ सो भ्रम बाह्य सोपाधिक भ्रम कहा जावै है ॥ तहां यह स्फटिक शुद्ध है रक्त नहीं है या प्रकारके ता  
स्फटिक रूप अधिष्ठान के ज्ञान दू ए भी जब पर्यंत ता जपाकुसुमादिक उपाधिकी तहां तै निवृत्ति नहीं होवै है ॥  
तब पर्यंत लोहितः स्फटिकः इस भ्रम की निवृत्ति होती नहीं ॥ या तै लोहितः स्फटिकः इस भ्रम विषे सोपाधि  
क भ्रम रूपता संभवै है ॥ इस प्रकार तत्त्ववेत्ता पुरुष कूं जो आकाशादिक प्रपंच का अनुभव होवै है ॥ सो भी  
बाह्य सोपाधिक भ्रम कहा जावै है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ लोहितः स्फटिकः इस भ्रम विषे तौ जपाकुसुमादिक  
उपाधि विद्यमान है ॥ या तै ता भ्रम कूं तौ सोपाधिक पणा संभवै है ॥ परंतु ता प्रपंच भ्रम विषे कोई उपाधि  
देखने विषे आवतानहीं ॥ या तै ता प्रपंच भ्रम कूं सोपाधिक पणा संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ता  
प्रपंच भ्रम विषे भी प्रारब्ध कर्म सहित विक्षेप शक्ति वाला अज्ञानहीं उपाधिरूप है ॥ काहे तै अहं ब्रह्मास्मि इस  
प्रकारके अधिष्ठान ब्रह्म के ज्ञान करिके आवरण शक्ति वाले अज्ञान के निवृत्ति दू ए भी विक्षेप शक्ति वाले अज्ञान के  
वश तै प्रारब्ध कर्म के नाश पर्यंत तत्त्ववेत्ता पुरुष कूं भी सो आकाशादिक प्रपंच का अनुभव होवै है ॥ या तै लो  
हितः स्फटिकः इस भ्रम की न्यां ई ता प्रपंच भ्रम कूं भी सोपाधिक पणा संभवै है इति ॥ और मैं कर्त्ता हूं मैं भो  
क्ता हूं या प्रकारकी जा आत्मा विषे कर्तृत्व भोक्तृत्व बुद्धि है ॥ सा बुद्धि अंतर सोपाधिक भ्रम कहा जावै है ॥  
ता भ्रम विषे सो अंतःकरणहीं उपाधिरूप जानना ॥ काहे तै यह आत्मा वास्तव तै तौ असंग निर्विकार है ॥  
ऐसे आत्मा विषे स्वरूप तै तौ सो कर्तृत्व भोक्तृत्व संभवतानहीं ॥ किंतु ता अंतःकरण विषे रहे दू ए ते कर्तृत्व भो  
क्तृत्वादिक धर्म अविवेक तै ता आत्मा विषे आरोपण कन्ये जावै हैं ॥ या तै अहं कर्त्ता अहं भोक्ता इत्यादिक बु  
द्धि विषे सोपाधिक भ्रम रूपता संभवै है ॥ इस प्रकार स्वप्न विषे जो रथादिक पदार्थों का ज्ञान होवै है ॥ सो ज्ञा  
न भी अंतर सोपाधिक भ्रम ही है ॥ स्मृति रूप नहीं है ॥ काहे तै सो स्वप्न का ज्ञान जो कदाचित् स्मृति रूप हो



तत्त्वा०

॥ ११ ॥

परि०

३

॥ १४५ ॥

ता ॥ तौ सरथः याप्रकारकाहीं ताज्ञानकाआकारहोता ॥ परंतु तास्वप्नविषे सरथः इसप्रकारकाज्ञान होतानहीं ॥ किंतु अयंरथः रथंपश्यामि याप्रकारकाहींज्ञान होवैहै ॥ यातैं सोस्वप्नकाज्ञान सोपाधिक भ्रमरूप अयथार्थअनुभवहींहै ॥ स्मृतिरूपनहीं ॥ यातैं तास्वप्नकूं अयथार्थस्मृतिरूपमानणेहारे तार्किकों कामत असंगतहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तास्वप्नज्ञानकूं जो स्मृतिरूपनहींमानोंगे ॥ किंतु अनुभवरूपमा नोंगे ॥ तौ ताअनुभवकेविषयभूत रथादिकपदार्थोंकीभी तहां उत्पत्तिमानणीहोवैंगी ॥ और स्वप्नविषे तिनरथादिकोंकीउत्पत्ति संभवतीनहीं ॥ काहेतैं जाग्रतअवस्थाविषे जितनेदेशविषे तथाजितनेकालवि षे तिनरथादिकोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तितनादेशकाल तास्वप्नविषेहैनहीं ॥ और प्रसिद्धरथादिकोंकेउत्प त्तिकी जा काष्ठतक्षादिक सामग्रीहै ॥ सासामग्रीभी तास्वप्नविषे हैनहीं ॥ और कारणसामग्रीतैंविना कार्यकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं स्वप्नविषे तिनरथादिकोंकीउत्पत्ति संभवतीनहीं ॥ यातैं स्वप्नविषे सोर थादिकोंकाज्ञान स्मृतिरूपहीं मान्याचाहिये ॥ और सोस्वप्नकाज्ञान निद्रादोषकरिकैजन्यहै ॥ यातैं स रथः इसज्ञानकेस्थानविषे अयंरथः याप्रकारकाभ्रम होवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे हृदादिकोंवि षेस्थित व्यावहारिकरजतकीउत्पादकसामग्रीतैं प्रातिभासिकरजतकेउत्पत्तिकीसामग्री विलक्षणहींहोवै है ॥ तैसे जाग्रतअवस्थाकेरथादिकोंकीउत्पादकसामग्रीतैं सास्वप्नरथादिकोंकीउत्पादकसामग्रीभी विल क्षणहींहोवैहै ॥ साविलक्षणसामग्री दिखावैहै ॥ जाग्रतअवस्थाविषे सुखदुःखादिरूपभोगकेदेणेहारे जेपु ण्यपापकर्महैं तिनकर्मोंकेउपरामहूए ॥ तथा स्वप्नकेभोगदेणेहारे जेकर्महैं तिनोंकेउद्भवहूए ॥ तथा च क्षुआदिकइंद्रियोंकेलयहूए ॥ जाग्रतके रथादिकसर्वविषयोंकी जे संस्काररूपवासनाहै तथाइंद्रियादि कोंकी जे संस्काररूपवासनाहैं तिनसर्ववासनावोंका आश्रयभूत तथानिद्रादोषकरिकैयुक्त ऐसाजोअं

तःकरणहै ॥ सोअंतःकरणहीं तास्वप्नअवस्थाविषे तिनरथादिविषयाकारपरिणामकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा



तःकरणहै ॥ सोअंतःकरणहीं तास्वप्नअवस्थाविषे तिनरथादिविषयाकारपरिणामकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा तिनरथादिकोंकेग्राहकचक्षुआदिकइंद्रियाकारपरिणामकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा तिनरथादिविषयाकारवृत्ति रूपपरिणामकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार जाग्रत्केरथादिकोंकीसामग्रीतैं स्वप्नकेप्रातिभासिकरथादिकोंकी सामग्री विलक्षणहींहोवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे प्रमाता प्रमाण प्रमेय व्यवहारहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नविषेभी सो प्रमाता प्रमाण प्रमेय व्यवहारहोवैहै ॥ यातैं स्वप्नकेपदार्थोंकूं प्रातिभासिककहणा संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जाग्रत्केपदार्थ भूतोंकेकार्यहोणेतैं चिरकालपर्यंतस्थायीहैं ॥ और स्वप्नकेरथादिकपदार्थ वासनाविशिष्टअंतःकरणकेपरिणामहोणेतैं वासनामयहैं ॥ या कारणतैंहीं तेस्वप्नकेपदार्थ अल्पकालपर्यंतस्थायीहैं ॥ इसप्रकार स्वप्नकेपदार्थोंविषे जाग्रत्केपदार्थोंतैंविलक्षणताहोणेतैं सोप्रातिभासिकपणा संभवैहै ॥ और जैसे शुक्तिविषेरजतकाज्ञान दोषकरिकैजन्यहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नकेपदार्थोंकाज्ञानभी निद्रारूपदोषकरिकैजन्यहोवैहै ॥ यातैं ताज्ञानविषे भ्रमरूपताभी संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे सूर्यादिकज्योतियोंकेप्रकाशकरिकैसहकृत चक्षुआदिकइंद्रिय विद्यमानहैं ॥ यातैं तिनइंद्रियोंकरिकै रूपादिकपदार्थोंकाज्ञान संभवैहै ॥ और स्वप्नअवस्थाविषेतों तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंका अभावहोवैहै ॥ यातैं तास्वप्नविषे तिनरूपादिकपदार्थोंकाअनुभव कैसे संभवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तास्वप्नविषे जो वासनाविशिष्टअंतःकरण विषयइंद्रियादिरूपपरिणामकूंप्राप्तभयाहै ॥ ताअंतःकरणउपहित साक्षीचैतन्यहीं तास्वप्नकेरथादिकपदार्थोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ स्वप्नविषे सोसाक्षी आप किसीदूसरेसाक्षीकरिकैप्रकाशितहूआ तिनरथादिकोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ अथवा अप्रकाशितहूआ प्रकाशकरेहै ॥ तहां जोप्रथमपक्ष अंगीकारकरोंगे ॥ तों अनवस्थादो



तत्त्वा०

॥ १२ ॥

परि०  
३

षकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ काहेतैं ताप्रथमसाक्षीकीन्यांई सोदूसरासाक्षीभी किसीतीसरेसाक्षीकरिकैप्रकाशित  
हूआहीं प्रकाशकरैंगा ॥ तैसे सोतीसरासाक्षीभी किसीचतुर्थसाक्षीकरिकैप्रकाशितहूआहीं प्रकाशकरै  
गा ॥ इसप्रकार पूर्वपूर्वसाक्षीकेप्रकाशवासतै उत्तरउत्तरसाक्षीकेअंगीकारकरणेतैं अनवस्थादोषकीप्राप्ति  
होवैंगी ॥ और जोदूसरापक्ष अंगीकारकरोंगे ॥ तों अज्ञायमानहोणेतैं जडहूआ सोसाक्षी तिनस्वप्न  
पदार्थोंकूं कैसेप्रकाशकरैंगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सोसाक्षीचैतन्य स्वयंप्रकाशमानहै ॥ अर्थात् आ  
पहीं आपणेकरिकैप्रकाशमानहै ॥ यातैं तासाक्षीविषे सापूर्वउक्तअनवस्था तथाजडता प्राप्तहोवैनहीं ॥  
ऐसास्वप्रकाशसाक्षीहीं तिनस्वप्नपदार्थोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ याकारणतैंहीं तास्वप्नअवस्थाविषे तासाक्षीचै  
तन्यकास्वप्रकाशपणा जानणेकूंसुगमहोवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ( येनसूर्यस्तपतितेजसेद्भः । तमेवभां  
तमनुभातिसर्व । तस्यभासासर्वमिदंविभाति । नतत्रसूर्योभातिनचंद्रतारकं ) इत्यादिकश्रुतियोंनैं तासा  
क्षीचैतन्यकूं सूर्यचंद्रादिकसर्वजगत्का प्रकाशकपणा कहाहै ॥ तथा तिनसूर्यचंद्रादिकज्योतियोंकरि  
कै अप्रकाशितपणा कहाहै ॥ यहहीं तासाक्षीचैतन्यविषे स्वप्रकाशपणाहै ॥ यातैं सोसाक्षीचैतन्यका  
स्वप्रकाशपणा जाग्रतअवस्थाविषेभी निर्णीतहींहै ॥ ताजाग्रतअवस्थाकूंछोडिकै स्वप्नअवस्थाविषे तासा  
क्षीचैतन्यकेस्वप्रकाशपणेकूं सुविज्ञेयकहणा अनुचितहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि विवेकीपुरुषों  
कूं जाग्रतअवस्थाविषेभी सोसाक्षीकास्वप्रकाशपणा सुविज्ञेयहै ॥ तथापि अविवेकीपुरुषोंकूं ताजाग्रत  
अवस्थाविषे सोसाक्षीकास्वप्रकाशपणा दुर्विज्ञेयहींहै ॥ काहेतैं ताजाग्रतअवस्थाविषे इसपुरुषके गमन  
आगमनादिकव्यवहार सूर्यरूपज्योतिकरिकैहोवैहैं ॥ और तासूर्यरूपज्योतिकेअभावहूए चंद्ररूपज्यो  
तिकरिकै तेव्यवहार होवैहैं ॥ और ताचंद्ररूपज्योतिकेभीअभावहूए अग्निरूपज्योतिकरिकै तेव्यवहार

॥ १४६ ॥



होवैहैं ॥ और ताअग्निरूपज्योतिकेभीअभावहूए गाढअंधकारविषे शब्दरूपज्योतिकरिकै तेव्यवहार हो  
 वैहैं ॥ इसप्रकार जाग्रत्अवस्थाविषे व्यवहारकेसाधक सूर्यादिकअनेकज्योतियोंकरिकै मिल्याहूआ सो  
 साक्षीचैतन्यरूपज्योतिहै ॥ यातैं ताजाग्रत्अवस्थाविषे अविवेकीपुरुषोंकूं तासाक्षीचैतन्यकेस्वप्रकाशप  
 णेका निर्णयहोइसकैनहीं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषेतों तेजाग्रत्अवस्थाकेसूर्यचंद्रादिकसर्वज्योति लयहो  
 इजावैहैं ॥ और तास्वप्नअवस्थाविषेभी जाग्रत्अवस्थाकीन्यांई तेसर्वव्यवहार होवैहैं ॥ और जोजो व्य  
 वहारहोवैहै सोसो किसीज्योतिकरिकैहीं साध्यहोवैहै ॥ यातैं तिनस्वप्नव्यवहारोंकासाधकभी कोईज्यो  
 ति अवश्यमान्याचाहिये ॥ यद्यपि तास्वप्नविषे अंतःकरण तथाअज्ञान विद्यमानहै ॥ तथापि सोअंतः  
 करण तहां विषयादिआकारपरिणामकूं प्राप्तभयाहै ॥ यातैं ताअंतःकरणकूंभी ज्योतिपणा संभवतान  
 हीं ॥ और अज्ञानतों तमकीन्यांई प्रकाशकाविरोधीहीहै ॥ यातैं ताअज्ञानकूंभी ज्योतिपणा संभवता  
 नहीं ॥ परिशेषतैं सोसाक्षीचैतन्यरूपज्योतिहीं तिनस्वप्नव्यवहारोंकासाधकरूपकरिकै सिद्धहोवैहै ॥ इस  
 प्रकारतैं अविवेकीपुरुषोंकूंभी तास्वप्नअवस्थाविषे तासाक्षीचैतन्यकास्वप्रकाशपणा निर्णयहोइसकैहै ॥  
 यातैं स्वप्नअवस्थाविषे साक्षीचैतन्यकास्वप्रकाशपणा सुविज्ञेयहै यहकहणा संभवैहै ॥ इसीअभिप्रायक  
 रिकै ( अत्रायंपुरुषःस्वयंज्योतिर्भवति ) इसबृहदारण्यकश्रुतिनैं स्वप्नअवस्थाविषेहीं तासाक्षीआत्माकूं  
 स्वयंज्योति कहाहै ॥ ईहां स्वयंज्योति स्वप्रकाश स्वयंप्रकाशमान इनतीनोंशब्दोंका एकहीअर्थजान  
 णा ॥ तहां साक्षीकालक्षणतों पूर्वद्वितीयपरिच्छेदविषे कथनकरिआयेहैं ॥ अब प्रसंगतैं तासाक्षीचैतन्य  
 केस्वप्रकाशताकालक्षणकहेहैं ॥ तहां ( चैतन्याविषयत्वं स्वप्रकाशत्वं ) अर्थयह ॥ इंद्रियजन्यवृत्तिविषे  
 प्रतिबिंबितजोचैतन्यहै ताकानाम फलचैतन्यहै ॥ ताफलचैतन्यका जोअविषयपणाहै ॥ यहहीं ता



तत्त्वा०

॥ १३ ॥

साक्षीचैतन्यविषे स्वप्रकाशपणाहै ॥ अथवा ( अवेद्यत्वेसति अपरोक्षव्यवहारयोग्यत्वं स्वप्रकाशत्वं ) अर्थयह ॥ उक्तफलचैतन्यका अविषयहूआ जो अपरोक्षव्यवहारका योग्यपणाहै यही तासाक्षीचैतन्यविषे स्वप्रकाशपणाहै ॥ ईहां अपरोक्षव्यवहारकरिके प्रमाणजन्यवृत्तिकाग्रहणकरणा ॥ तहां अपरोक्षव्यवहारके योग्यघटादिकोंविषे इसलक्षणकी अतिव्याप्तिके निवृत्तकरणे वासतै । अवेद्यत्वेसति । यहपद कथनकन्याहै ॥ तिनघटादिकोंविषे सो फलचैतन्यका अविषयत्वरूप अवेद्यपणा है नही ॥ और अवेद्यधर्माधर्मविषे इसलक्षणकी अतिव्याप्तिके निवृत्तकरणे वासतै । अपरोक्षव्यवहारयोग्यत्वं । यहपद कथनकन्याहै ॥ सो अपरोक्षव्यवहारयोग्यत्व ताधर्माधर्मविषे है नही ॥ यातें तहां अतिव्याप्तिहोवैनही इति ॥ ॥ शंका ॥ तास्वप्रकाशसाक्षीकरिके तिनस्वप्रकेपदार्थोंका प्रकाश होवो ॥ तथापि तेरथादिकपदार्थ तास्वप्रविषे नवीनहीं उत्पन्नहोवैहैं ॥ इसविषे कौनप्रमाणहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ साक्षात् वेदकी श्रुतिहीं ताअर्थविषे प्रमाणहै ॥ तहां श्रुति ॥ ( नतत्ररथानरथयोगानपंथानो भवंति अथरथानरथयोगानपथः सृजति ) अर्थयह ॥ जाग्रत अवस्थाविषे जे व्यावहारिक रथहैं ॥ तथा तिनरथोंविषे छुडणेहारे जे अश्वहैं ॥ तथा तिनअश्वोंके चलने योग्य जे मार्गहैं ॥ तिनसर्वोंका स्वप्रविषे अभावहै ॥ तौंभी तास्वप्रविषे रथोंकूं तथा अश्वोंकूं तथा मार्गोंकूं उत्पन्नकरैहै इति ॥ यहश्रुति तास्वप्रविषे जाग्रतके रथादिकोंके अभावकूं तथा प्रातिभासिक रथादिकोंकी उत्पत्तिकूं कथनकरैहै ॥ यातें तिनरथादिकोंकूं विषयकरणेहारा सो स्वप्रकाशज्ञान अनुभवरूपहीहै स्मृतिरूपनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ इसप्रकार तास्वप्रकेज्ञानकूं जो अनुभवरूप मानोंगे ॥ तौं तिनस्वप्रके रथादिकपदार्थोंकी जाग्रतविषेभी अनुवृत्ति होनी चाहिये ॥ काहेतें जे पदार्थ जिस अधिष्ठानविषे कल्पितहोवैहैं ॥ तिस अधिष्ठानके ज्ञानतैंहीं तिनपदार्थोंकानाश होवैहै ॥ और तेस्वप्रकेपदार्थ

परि०  
३

॥ १४ ॥

ब्रह्मचैतन्यविषेहीं कल्पितहैं ॥ यातें ताब्रह्मचैतन्यके साक्षात्कारकरिकेहीं तिनस्वप्रपदार्थोंकानाश हो



ब्रह्मचैतन्यविषेहीं कल्पितहैं ॥ यातैं ताब्रह्मचैतन्यकेसाक्षात्कारकरिकैहीं तिनस्वप्नपदार्थोंकानाश हो  
 वेंगा ॥ सोअधिष्ठानब्रह्मकासाक्षात्कार इसपुरुषकूं हैनहीं ॥ और ताअधिष्ठानसाक्षात्कारतैंभिन्न दूसरा  
 कोई तिनस्वप्नपदार्थोंकानिवर्त्तक हैनहीं ॥ यातैं जाग्रत्अवस्थाविषे तिनस्वप्नपदार्थोंकीअनुवृत्ति अवश्य  
 होणीचाहिये ॥ जोकदाचित् इसअर्थविषे इष्टापत्तिकरोंगे ॥ तों सर्वलोकोंकेअनुभवकाविरोध होवेंगा ॥  
 अर्थात् सर्वलोक स्वप्नकेपदार्थोंका जाग्रत्विषेअभावहीं मानेहैं ॥ यातैं तास्वप्नकेज्ञानविषे अनुभवरूपता  
 संभवतीनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ कार्यकानाश दोप्रकारकाहोवैहैं ॥ एकतों बाध होवैहैं ॥ दूसरा  
 लय होवैहैं ॥ तहां अधिष्ठानकेवास्तवस्वरूपकेसाक्षात्कारकरिकै जो कार्यका आपणेउपादानकारणरूप  
 अज्ञानसहित नाशहै ताकानाम बाधहै ॥ जैसे शुक्तिरूपअधिष्ठानकेसाक्षात्कारकरिकै रजतरूपकार्यका  
 आपणेउपादानकारणअज्ञानसहित नाशहोवैहैं ॥ इसीकानाम बाधहै ॥ और ताउपादानकारणकेविद्य  
 मानहूएभी ताकार्यका जो तिरोभावमात्रहै ताकानाम लयहै ॥ तहां स्वप्नकेरथादिकपदार्थ अंतःकरण  
 मायाद्वारा शुद्धचैतन्यविषे अध्यस्तहैं ॥ और ताशुद्धचैतन्यरूपअधिष्ठानकासाक्षात्कार इसपुरुषकूं जा  
 ग्रत्कालविषे हैनहीं ॥ यातैं शुक्तिरजतकीन्याई तिनस्वप्नपदार्थोंका बाधरूपनाशतों होतानहीं ॥ परंतु  
 सोस्वप्न पूर्वउत्तरीतिसें सोपाधिकभ्रमहै ॥ यातैं जैसे जपाकुसुमादिरूपउपाधिकीनिवृत्तितैं स्फटिकवि  
 षे लोहितकीनिवृत्ति होवैहैं ॥ तैसे उपाधिकीनिवृत्तितैं तिनस्वप्नपदार्थोंकीभी निवृत्तिसंभवैहैं ॥ यातैं  
 जाग्रत्अवस्थाविषे तिनस्वप्नपदार्थोंकीअनुवृत्ति संभवतीनहीं ॥ तहां जाग्रत्केसंस्कार तथास्वप्नविषेभो  
 गदेणेहाराकर्म तथानिद्रादोष इनतीनोंकरिकैविशिष्ट जोअंतःकरणहै ॥ सोअंतःकरणहीं तास्वप्नभ्रमविषे  
 उपाधिहै ॥ ताअंतःकरणरूपउपाधिकीनिवृत्तितैं जाग्रत्अवस्थाविषे तिनस्वप्नपदार्थोंकीनिवृत्ति होवैहैं ॥



तत्त्वा०

॥ १४ ॥

परि०

३

यद्यपि जाग्रत् अवस्थाविषे सोअंतःकरण स्वरूपतें विद्यमानहींहै ॥ तथापि ताजाग्रत् अवस्थाविषे सोअंतःकरण स्वप्नभोगप्रदकर्मनिद्रादोषविशिष्टनहींहै ॥ तहां जोपदार्थ आपणेविषेस्थितधर्मोंकूं आपणेसंबंधी विषे आरोपणकरेहै ॥ सोपदार्थ उपाधि कहाजावैहै ॥ जैसे जपाकुसुम आपणेविषेस्थितरक्तवर्णकूं आपणेसंबंधी स्फटिकविषे आरोपणकरेहै ॥ यातें सोजपाकुसुम उपाधि कहाजावैहै ॥ तैसे सोअंतःकरण भी आपणेकर्तृत्वभोक्तृत्वादिकधर्मोंकूं आपणेसंबंधीआत्माविषे आरोपणकरेहै ॥ यातें सोअंतःकरण भी उपाधि कहाजावैहै ॥ इसप्रकार स्वप्नज्ञानकूं सोपाधिकभ्रमरूपहोणेतें अनुभवरूपताहीं संभवैहै इति ॥ ईहां केईकग्रंथकारतों यहकहेहैं ॥ सोस्वप्नअध्यास सोपाधिकभ्रम नहींहै ॥ किंतु शुक्तिरजतभ्रमकी न्याई निरुपाधिकभ्रमहींहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तास्वप्नअध्यासकूं जोनिरुपाधिकभ्रम मानोंगे ॥ तों तिनस्वप्नपदार्थोंकी जाग्रत्विषेभी अनुवृत्ति होणीचाहिये ॥ काहेतें तानिरुपाधिकभ्रमकी अधिष्ठानकेज्ञान तेंहीं निवृत्तिहोवैहै ॥ और तास्वप्नभ्रमकाअधिष्ठान ब्रह्मचैतन्यहै ॥ ताब्रह्मचैतन्यका इसपुरुषकूं जाग्रत् अवस्थाविषे साक्षात्कारहैनहीं ॥ यातें तिनस्वप्नपदार्थोंका जाग्रत् अवस्थाविषे बाधहोवैंगानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे रजतभ्रमकाअधिष्ठान जाशुक्तिहै ॥ ताशुक्तिके नहींसाक्षात्कारहूएभी तथातारजतभ्रमकेउपादानकारणरूपअज्ञानकेविद्यमानहूएभी तारजतभ्रमकी विरोधीदंडादिकपदार्थकेज्ञानकरिकें निवृत्तिहोइजावैहै ॥ तैसे स्वप्नभ्रमकेअधिष्ठानरूपब्रह्मचैतन्यके नहींसाक्षात्कारहूएभी विरोधीजाग्रत्ज्ञानकरिकें तिनस्वप्नपदार्थोंकीनिवृत्ति बनिसकेहै ॥ यातें तिनस्वप्नपदार्थोंकी जाग्रत्विषे अनुवृत्ति होवैनहीं ॥ यातें तारजतभ्रमकीन्याई सोस्वप्नभ्रमभी निरुपाधिकभ्रमहींहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तास्वप्नभ्रमकूं जो निरुपाधिकभ्रम मानोंगे ॥ तों ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुषोंकूं सोस्वप्नभ्रम नहींहोनाचाहिये ॥ काहेतें ति

॥ १४ ॥



जो निरुपाधिक्रम मानोंगे ॥ ज्यों कदाचित्वातानि प्रकटोंकं प्रोत्सवभ्रम नहीं होना चाहिये ॥ कहतैं ति

नस्वप्नपदार्थोंका अधिष्ठान जो ब्रह्मचैतन्य है ॥ ताब्रह्मके साक्षात्कार करिके तिनब्रह्मवेत्ता पुरुषोंका सोस्वप्न  
भ्रमका उपादान कारणरूप अज्ञान निवृत्त होइ गया है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताब्रह्मसाक्षात्कार करिके  
अज्ञानके निवृत्त हुए भी ताअज्ञानके कार्यभूत अंतःकरणादिकोंकी प्रारब्धकर्मके नाशपर्यंत निवृत्ति होती न  
हीं ॥ और पूर्वउक्तरीतिसे तिनस्वप्नपदार्थोंका अंतःकरणहीं साक्षात् उपादान कारण है ॥ यातें प्रारब्धके  
नाशपर्यंत तिनब्रह्मवेत्ता पुरुषोंकूं भी सोस्वप्नभ्रम संभवै है ॥ जो कदाचित् ब्रह्मसाक्षात्कार करिके अज्ञान  
की निवृत्ति तें अनंतर तत्त्ववेत्ता पुरुषकूं स्वप्नभ्रम नहीं मानोंगे ॥ तों तिस तत्त्ववेत्ता पुरुषकूं जाग्रत् अवस्था  
विषे भी शब्दादिक विषयोंका अनुभव नहीं होना चाहिये ॥ और जाग्रत् अवस्थाविषे सो तत्त्ववेत्ता पुरुषका  
व्यवहार प्रत्यक्ष प्रतीत होवै है ॥ यातें तिस तत्त्ववेत्ता पुरुषकूं सोस्वप्नभ्रम भी मान्या चाहिये ॥ परंतु सो त  
त्त्ववेत्ता पुरुष अज्ञानी पुरुषकी न्यांई आपणे स्वरूपविषे कोई व्यवहार मानतानहीं इति ॥ तहां पूर्व निरु  
पाधिक सोपाधिक इसभेद करिके दो प्रकारका विपर्यय कहाथा ॥ ताका अबपर्यंत निरूपण कन्या ॥  
अब ताउक्त विपर्ययकाहीं अन्यप्रकार तें विभाग कहै हैं ॥ सो पूर्वउक्त भ्रमरूप विपर्यय पुनः दो प्रकारका हो  
वै है ॥ एक तों अंतःकरणकी वृत्तिरूप होवै है ॥ दूसरा अविद्याकी वृत्तिरूप होवै है ॥ तहां स्वप्नके पदार्थों  
का ज्ञान तथा मनोराज्य तथा नष्ट हुए पुत्रादिकोंका प्रत्यक्ष इत्यादिक भ्रमतों अंतःकरणकी वृत्तिरूप होवै है ॥  
और शुक्तिविषे रजतका ज्ञान तथा रज्जुविषे सर्पका ज्ञान इत्यादिक भ्रम अविद्याकी वृत्तिरूप होवै है ॥ इस  
प्रकार पूर्वउक्त संशय भी अविद्याकी वृत्तिरूपहीं होवै है इति ॥ तहां इतने पर्यंत विपर्ययका निरूपण क  
न्या ॥ अब ताविपर्ययके निवृत्तिक उपाय वर्णन करै हैं ॥ तहां पूर्वउक्त अहं अज्ञः इत्यादिक निरुपाधि  
क विपर्यय तों निदिध्यासन करिके निवृत्त होवै है ॥ और सोपाधिक विपर्यय तों तिस तिस उपाधिकी निवृत्ति



तत्त्वा०

॥ १५ ॥

तें निवृत्तहोवैहै ॥ तहां पूर्वउक्त विपरीतभावनारूपविपर्ययकानिवर्त्तक जो निदिध्यासनहै ॥ ताकास्व  
 रूप पूर्वद्वितीयपरिच्छेदविषे निरूपणकरिआयेहैं ॥ सो ईहांभी जानिलेणा ॥ सोनिदिध्यासन शारीर  
 कमीमांसाके तृतीयअध्यायकेपठनकरिकै सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकार श्रवणकरिकै प्रमाणगतअसंभावना  
 केनिवृत्तहूए ॥ तथा मननकरिकै प्रमेयगतअसंभावनाकेनिवृत्तहूए ॥ तथा निदिध्यासनकरिकै विपरी  
 तभावनाकेनिवृत्तहूए ॥ इसअधिकारीपुरुषकूं तत्त्वमसिआदिकवाक्यतें अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकाअप  
 रोक्षज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ ताअपरोक्षज्ञानतें अज्ञानकीनिवृत्तिपूर्वक परमानंदकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ॥  
 शंका ॥ ॥ श्रवणमनननिदिध्यासनकूंकरतेहूएभी कितनैकीपुरुषोंकूं सोब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नहोतान  
 हीं ॥ याकेविषे क्याकारणहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताआत्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे जैसे सापूर्वउक्त  
 असंभावना तथाविपरीतभावना प्रतिबंध होवैहै ॥ तैसे भूत १ भावी २ वर्त्तमान ३ यहतीनप्रकारका  
 दूसराभी प्रतिबंध होवैहै ॥ सोप्रतिबंध जिनपुरुषोंविषे विद्यमानहोवैहै ॥ तिनपुरुषोंकूं श्रवणादिकोंके  
 करतेहूएभी सोआत्मज्ञान उत्पन्नहोतानहीं ॥ और जिनपुरुषोंकूं सोप्रतिबंध नहींहोवैहै ॥ तिनपुरुषों  
 कूं विचारकन्येहूएतत्त्वमसिवाक्यतें सोब्रह्मसाक्षात्कार अवश्यहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवान्नेभी  
 ब्रह्मसूत्रोंविषेकहीहै ॥ तहांसूत्र ॥ ( ऐहिकमप्यप्रस्तुतप्रतिबंधेतदर्शनात् ) अर्थयह ॥ फलदेणेवासतै स  
 न्मुखभयाजोकर्मविशेषहै ताकानाम प्रस्तुतप्रतिबंधहै ॥ अथवा ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिकाविरोधी जा  
 वासनाविशेषहै ताकानाम प्रस्तुतप्रतिबंधहै ॥ ऐसेप्रस्तुतप्रतिबंधकेअभावहूए इसपुरुषकूं श्रवणमनना  
 दिकोंतें इसीजन्मविषे ब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै ॥ और ताप्रस्तुतप्रतिबंधकेविद्यमानहूए इसपुरुषकूं जन्मां  
 तरविषेभी सोब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै ॥ जैसे वामदेवादिकोंकूंहूआहै इति ॥ तहां प्रतिबंधयुक्तपुरुषकूं आ

परि०  
३

॥ १४९ ॥



त्माकीडुर्विज्ञेयता श्रुतिस्मृतिनेंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( श्रवणायापिवहुभिर्योनिलभ्यःशृण्वंतो  
पिवहवोयंनविद्युः ) अर्थयह ॥ यहआत्मा बहुतपुरुषोंकूंतां श्रवणवासतैभी प्राप्तहोतानहीं ॥ और बहु  
तपुरुषतों इसआत्माकूं श्रवणकरतेहूएभी किसीप्रतिबंधकेवशतैं साक्षात्कारकरिसकतेनहीं इति ॥ इसी  
अर्थकूं ( आश्चर्यवच्चैनमन्यःशृणोति श्रुत्वाप्येनंवेदनचैवकश्चित् ) इत्यादिकस्मृतिवचनभी कथनकरैहैं  
इति ॥ अब भूत १ भावी २ वर्तमान ३ इनतीनप्रतिबंधोंकास्वरूप तथाताकेनिवृत्तिकाउपाय वर्णन  
करैहैं ॥ तहां पूर्वअनुभवकन्या जोकोईप्रियविषयहै तिसकेदृढसंस्कारकेवशतैं ब्रह्मचिंतनकालविषे जो  
ताविषयका पुनःपुनःस्मरणहै ताकानाम भूतप्रतिबंधहै ॥ सोभूतप्रतिबंध ताविषयउपहितब्रह्मकेचिंतन  
करिकै निवृत्तहोवैहै ॥ जैसे किसीसंन्यासीकूं पूर्वगृहस्थआश्रमविषे अनुभवकन्येहूए महिषीआदिकप  
दार्थकेपुनःपुनःस्मरणकरिकै जबी श्रवणकरतेहूएभी तत्त्वज्ञान नहींउत्पन्नभया ॥ तबी गुरुनैं ताभूतप्र  
तिबंधकीनिवृत्तिकरणेवासतै तासंन्यासीकेप्रति तामहिषीउपहितब्रह्मकेचिंतनका उपदेशकन्या ॥ ता  
चिंतनकरिकै तासंन्यासीका सोभूतप्रतिबंध निवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर तासंन्यासीकूं श्रवणा  
दिकोंतैं आत्मज्ञान होताभया ॥ याप्रकारकीगाथा लोकपरंपरातैंसिद्धहै इति ॥ और दूसरा भावीप्र  
तिबंधतों प्रारब्धकर्मकाशेष १ तथाब्रह्मलोककीइच्छा २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ ताभावीप्र  
तिबंधकेविद्यमानहूए इसपुरुषकूं श्रवणादिकोंकेकरतेहूएभी सोआत्मज्ञान उत्पन्नहोतानहीं ॥ ॥ शं  
का ॥ ॥ प्रारब्धकर्मकूं जोज्ञानकाप्रतिबंधक मानोंगे ॥ तों किसीभीपुरुषकूं सोब्रह्मसाक्षात्कार नहीं  
होवैगा ॥ जिसकारणतैं शरीरकीस्थितिपर्यंत सोप्रारब्धकर्म नाशहोतानहीं ॥ और ताप्रारब्धकर्मरूप  
प्रतिबंधकेवशतैं जबी किसीकूंभी सोब्रह्मसाक्षात्कार नहींभया ॥ तबी ताब्रह्मसाक्षात्कारके श्रवणादि



तत्त्वा०

॥ १६ ॥

परि०  
३

कसाधनोंकूँविधानकरणेहारे ( आत्मावाअरेश्रोतव्योमंतव्योनिदिध्यासितव्यः ) इत्यादिकश्रुतिवचन  
अप्रमाणहोवैंगे ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सोप्रारब्धकर्म दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ फलाभिसंधिकृत  
प्रारब्ध होवैहै ॥ दूसरा केवलप्रारब्ध होवैहै ॥ तहां इसकर्मकरिकै हमारेकूं स्वर्गरूपफलकीप्राप्तिहोवै  
याप्रकारकी जाफलकीइच्छाहै ताकानाम फलाभिसंधिहै ॥ ताफलाभिसंधिकरिकैकन्याजोकर्महै ताका  
नाम फलाभिसंधिकृतहै ॥ और ताफलाभिसंधितैविना कन्याजोकर्महै ताकानाम केवलप्रारब्धहै ॥  
तहां फलाभिसंधिकृतप्रारब्धकर्मकातौ ताफलकेभोगकरिकैहीं नाशहोवैहै ॥ अन्यकिसीउपायकरिकै  
नाशहोतानहीं ॥ तिसफलाभिसंधिकृतकर्मकेविद्यमानहूए इसपुरुषकूं श्रवणादिकोंकेकरतेहूएभी सोब्रह्म  
साक्षात्कार उत्पन्नहोतानहीं ॥ काहेतैं इच्छाघटितसामग्री सर्वत्र प्रबलहींहोवैहै ॥ जैसे लोकविषे दोव  
स्तुकेज्ञानकीसामग्रीकेविद्यमानहूएभी इसपुरुषकूं जिसवस्तुकेज्ञानकीइच्छाहोवैहै ॥ तिसीवस्तुका प्रथम  
ज्ञानहोवैहै ॥ अन्यवस्तुकाज्ञान होतानहीं ॥ यातैं ताफलइच्छासहितप्रारब्धकर्मकूं प्रबलहोणेतैं ताके  
विद्यमानहूए इसपुरुषकूं श्रवणादिकोंकेकरतेहूएभी सोब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु ताफला  
भिसंधिकृतप्रारब्धकर्मकेफलभोगतैंअनंतरहीं इसपुरुषकूं सोब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै ॥ अब ताफला  
भिसंधिकृतकर्मकीप्रबलताविषे श्रुतिप्रमाणभीकहेहैं ॥ ( सयथाकामोभवति तत्कतुर्भवति यत्कतुर्भव  
ति तत्कर्मकुरुते यत्कर्मकुरुते तदभिसंपद्यते ) अर्थयह ॥ यहपुरुष जिसजिसफलकीकामनावालाहो  
वैहै ॥ तिसतिसफलकेअनुकूलकर्मकेसंकल्पवालाहोवैहै ॥ और जिसजिसकर्मकेसंकल्पवालाहोवैहै ॥  
तिसतिसकर्मकूंकरैहै ॥ और जिसजिसकर्मकूंकरैहै ॥ तिसतिसकर्मकेअनुसार तिसतिसस्वर्गादिरूपफ  
लकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इसप्रकारका फलाभिसंधिकृतप्रारब्धकर्महीं भावीप्रतिबंध कहाजावैहै ॥ और दू

॥ १५० ॥

सराजो फलकीइच्छातैरहित केवलप्रारब्धकर्महै ॥ सोभी पुण्य १ पाप २ इसभेदकरिकै दोप्रकारका



सराजो फलकीइच्छातैरहित केवलप्रारब्धकर्महै ॥ सोभी पुण्य १ पाप २ इसभेदकरिकै दोप्रकारका होवैहै ॥ तिनदोनोंविषे केवलपुण्यप्रारब्धतों पापकीनिवृत्तिद्वारा इसपुरुषके तत्त्वज्ञानकाहींहेतुहोवैहै ॥ तहांश्रुतिस्मृति ॥ ( धर्मेणपापमपनुदति । ज्ञानमुत्पद्यतेपुंसांक्षयात्पापस्यकर्मणः । कषायेकर्मभिःपक्वेत तोज्ञानंप्रवर्तते ) अर्थयह ॥ यहपुरुष धर्मकरिकै पापकूंनिवृत्तकरै ॥ और इनअधिकारीपुरुषोंकूं पाप कर्मकेनाशतैहीं आत्मज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ और पुण्यकर्मोंकरिकै पापादिकोंकेनिवृत्तहूएतैंअनंतर इस पुरुषकूं ताशुद्धअंतःकरणविषे आत्मज्ञान उत्पन्नहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंकरिकै ताकेवलपुण्यप्रारब्धकूं पापकीनिवृत्तिद्वारा आत्मज्ञानकीकारणता सिद्धहोवैहै ॥ और दूसरा जोपापप्रारब्ध है ॥ सोतों फलामिसंधिकृतहोवै अथवा ताफलामिसंधितैरहित केवलहोवै दोनोंप्रकारका सोपापप्रारब्ध आत्मज्ञानका प्रतिबंधकहींहोवैहै ॥ तहां सोपापप्रारब्ध किसीप्रबलपुण्यकर्मकरिकै तिरोभावकूंप्राप्त हूआ निवृत्तहोवैहै ॥ अन्यथा ज्ञानकेउत्पत्तिका प्रतिबंध करैहै ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ सोप्रारब्धशेष रूपभावीप्रतिबंध जबपर्यंत फलभोगकरिकैनिवृत्तनहींहोता ॥ तबपर्यंत श्रवणादिकोंकेकरतेहूएभी इस पुरुषकूं आत्मज्ञान उत्पन्नहोतानहीं ॥ और जबीफलकेभोगकरिकै सोभावीप्रतिबंध निवृत्तहोवैहै ॥ त बी इसपुरुषकूं तिनश्रवणादिकसाधनोंकरिकै सोआत्मज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं ताआत्मसाक्षात्कारवा सतैं तिनश्रवणादिकसाधनोंकाविधानकरणेहारीश्रुतिकूंभी अप्रमाणता होवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ यहउक्तभावीप्रतिबंध कितनेकालपीछे निवृत्तहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इसभावीप्रतिबंध कीनिवृत्तिविषे कालकानियम नहींहै ॥ किंतु किसीकातों एकजन्मकरिकैभी सोप्रतिबंध निवृत्तहोवै है ॥ और किसीका दोतीनजन्मोंकरिकैभी निवृत्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लो



तत्त्वा०

॥ १७ ॥

परि०

३

क ॥ ( आगामिप्रतिबंधोहि वामदेवेसमीरितः एकेनजन्मनाक्षीणो भरतस्यत्रिजन्मभिः ) अर्थयह ॥  
 सोपूर्वउक्त प्रारब्धशेषरूपभावीप्रतिबंध वामदेवविषे तथाभरतविषे होताभयाहै ॥ तहां वामदेवकातों सो  
 प्रतिबंध एकजन्मकरिकै निवृत्तहोताभयाहै ॥ और भरतका तीनजन्मोंकरिकै निवृत्तहोताभयाहै ॥ यातें  
 ताभावीप्रतिबंधकीनिवृत्तिविषे कोईकालकानियम नहींहै ॥ सोवामदेवकावृत्तांत आत्मपुराणकेप्रथमअ  
 ध्यायविषे विस्तारतैकथनकन्याहै इति ॥ तहां पूर्व प्रारब्धशेष ब्रह्मलोककीइच्छा यहदोप्रकारका भावी  
 प्रतिबंध कहाथा ॥ ताकेविषे प्रारब्धशेषरूपप्रथमप्रतिबंधका अवपर्यंत निरूपणकन्या ॥ अब ब्रह्मलोक  
 कीइच्छारूप दूसरेभावीप्रतिबंधका निरूपणकरेहैं ॥ जिसपुरुषकूं मनविषे ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छाहै ॥  
 सोपुरुष श्रवणादिकोंकूंकरताहूआभी आत्मज्ञानकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ यातें साब्रह्मलोककीइच्छाभी ता  
 आत्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे भावीप्रतिबंधहै ॥ यहवार्त्ता श्रीविद्यारण्यस्वामीनैंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥  
 ( ब्रह्मलोकाभिवांछायां सम्यक्सत्यानिरुध्यतां विचारयेद्यआत्मानं नतुसाक्षात्करोत्ययं ) अर्थयह ॥  
 जिसपुरुषकूं ब्रह्मलोककेप्राप्तिकी अत्यंतउत्कटइच्छाहै ॥ सोपुरुष ताइच्छाकूंरोकिकै श्रवणादिकोंकूंकर  
 ताहूआभी आत्माकूंसाक्षात्कार करतानहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ब्रह्मलोककेप्राप्तिकासाधनरूप जे  
 उपासनाहैं ॥ तेउपासनाभी तिसपुरुषनैं करीनहीं ॥ जिसकरिकै ब्रह्मलोककूंजावै ॥ और जेश्रवणादि  
 क तिसपुरुषनैं कन्येहैं ॥ तिनश्रवणादिकोंतैं तिसपुरुषकूं ताइच्छारूपप्रतिबंधकेवशतैं आत्मज्ञानकीभी  
 प्राप्तिहूईनहीं ॥ यातें सोपुरुष दोनोंफलोंतैंभ्रष्टहूआ अधःपतनहीं होवेंगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥  
 सोपुरुष मरणतैंअनंतर तिनश्रवणादिकोंकेप्रभावतैं ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहां निर्गुणब्रह्मकूं अहंब्रह्मास्मि  
 याप्रकार साक्षात्कार करेहै ॥ तासाक्षात्कारतैं तहां विदेहकैवल्यरूपमोक्षकूं प्राप्तहोवेंहै ॥ यहवार्त्ता शु

॥ १७५१ ॥

तिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( वेदांतविज्ञानमुनिश्रितायाः संन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः तेव



तिविषेभी कथनकरीहैं ॥ तहांश्रुति ॥ ( वेदांतविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः ते ब्रह्मलोकेषु परांतकाले परामृतात्परिमुच्यंतिसर्वे ) अर्थयह ॥ वेदांतकेश्रवणजन्यज्ञानकरिकै भलीप्रकारतैं निश्चयकन्याहै अद्वितीयब्रह्मरूपार्थ जिनोनें ॥ तथा श्रुतिस्मृतिविहितसर्वकर्म्मोक्त्यागपूर्वक ज्ञानाभ्यासरूपयोगतैं शुद्धहूआहै अंतःकरण जिनोका ॥ ऐसेजेसंन्यासीहैं ॥ तेसंन्यासी किसीप्रतिबंधकेवश तैं ईहां ब्रह्मसाक्षात्कारकेनहींउत्पन्नहूएभी तिनश्रवणादिकोंकेप्रभावतैं ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहां निर्गुण ब्रह्मकूं साक्षात्कारकरेहैं ॥ और ताब्रह्मलोककेअधिपतिहिरण्यगर्भकेअंतकालविषे तेसंन्यासी ताउत्पन्नहूएब्रह्मसाक्षात्कारतैं विदेहकैवल्यरूपमोक्षकूं प्राप्तहोवैहैं इति ॥ यहउक्तअर्थहीं ( ब्रह्मणासहतेसर्वे संप्राप्ते प्रतिसंचरे परस्यांतैकृतात्मानः प्रविशंतिपरंपदं ) इसस्मृतिविषेभी कथनकन्याहै ॥ तथा यहउक्तअर्थहीं ( नहिकल्याणकृत्कश्चिदुर्गतिं तातगच्छति ) इत्यादिकवचनोंकरिकै श्रीभगवान्नें गीताविषेभी कथनकन्याहै ॥ यातैं तिसपुरुषके तेश्रवणादिक निष्फलनहींहैं ॥ किंतु ब्रह्मलोककीप्राप्तिद्वारा आत्मज्ञानकी उत्पत्तिकरिकै मोक्षकेहींसाधनहोवैहैं इति ॥ अब तीसरे वर्त्तमानप्रतिबंधकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां सोवर्त्तमानप्रतिबंध विषयासक्ति १ बुद्धिमंदता २ कुतर्क ३ विपर्ययदुराग्रह ४ इसभेदकरिकै चारिप्रकारकाहोवैहैं ॥ तहां शब्दस्पर्शादिकविषयोंविषेजोरागहै ताकानाम विषयासक्तिहै ॥ और श्रवणकन्येहूएअर्थके ग्रहणकरणेविषे तथाधारणकरणेविषे जोबुद्धिकीअकुशलताहै ताकानाम बुद्धिमंदताहै ॥ और श्रुतितैं विरोधी जेतर्कहैं तिनोकाकानाम कुतर्कहैं ॥ और वास्तवतैंअकर्त्ताअभोक्ताआत्माके कर्त्ताभोक्तापणेविषे जोदुराग्रहहै अर्थात् आत्मा कर्त्ताभोक्ताहींहै याप्रकारका जोअभिमानहै ताकानाम विपर्ययदुराग्रहहै ॥ इनचारोंप्रतिबंधोंविषे कोईभीप्रतिबंधकेविद्यमानहूए इसपुरुषकूं श्रवणादिकोंकेकरतेहूएभी सोआत्मसा



तत्त्वा०

॥ १८ ॥

क्षात्कार उत्पन्न होतानहीं ॥ यातें ते चारों ता आत्मज्ञानके वर्तमान प्रतिबंध कहे जावै हैं ॥ इन प्रतिबंधोंकी जबी निवृत्ति होवै है ॥ तबीहीं इस पुरुषकूं तिन श्रवणादिकों करिकै सो आत्मज्ञान उत्पन्न होवै है ॥ यातें अब तिन चारि प्रतिबंधोंके निवृत्तिका उपाय कथन करै हैं ॥ तहां शमदमादिकों करिकै तों विषयासक्तिरूप प्रतिबंधकी निवृत्ति होवै है ॥ और वेदांतके श्रवण करिकै बुद्धिमंदतारूप प्रतिबंधकी निवृत्ति होवै है ॥ और मनन करिकै कुतर्करूप प्रतिबंधकी निवृत्ति होवै है ॥ और निदिध्यासन करिकै विपर्ययदुराग्रहरूप प्रतिबंधकी निवृत्ति होवै है ॥ यह उक्त सर्वार्थ श्रीविद्यारण्यस्वामीनें ( प्रतिबंधो वर्तमानो विषयासक्तिलक्षणः प्रज्ञामाद्यं कुतर्कश्च विपर्ययदुराग्रहः ॥ शमाद्यैः श्रवणाद्यैर्वा तत्र तत्रोचितैः क्षयं नीतेऽस्मिन् प्रतिबंधेतु स्वस्य ब्रह्मत्वमश्नुते ) इन दो श्लोकों करिकै कथन कन्या है ॥ तहां श्रवण मनन निदिध्यासन इन तीनों का स्वरूप पूर्व द्वितीय परिच्छेद विषे निरूपण करि आये हैं ॥ सो ईहां भी जानिलेना ॥ अब शमदमादिकों का स्वरूप वर्णन करै हैं ॥ तहां शम १ दम २ उपरति ३ तितिक्षा ४ श्रद्धा ५ समाधान ६ यह शमादिषट्संपत्ति कही जावै है ॥ तहां जैसे श्रवण मनन निदिध्यासन यह तीनों ता उक्त प्रतिबंधकी निवृत्ति द्वारा आत्मज्ञानकी उत्पत्ति विषे अंतरंग साधन हैं ॥ तैसे यह शमादिषट्संपत्ति भी ता उक्त प्रतिबंधकी निवृत्ति द्वारा अंतरंग साधन ही है ॥ तहां अंतरमनका जो विषय चिंतन तें निग्रह है ताका नाम शम है ॥ और श्रोत्रादिक बाह्य इंद्रियोंका जो शब्दादिक विषयों तें निग्रह है ताका नाम दम है ॥ और विधि पूर्वक सर्व कर्मोंका जो संन्यास है ताका नाम उपरति है ॥ और शीत उष्ण सुख दुःख मान अपमान निंदा स्तुति इत्यादिक द्वंद्वधर्मोंका जो सहन है ताका नाम तितिक्षा है ॥ और गुरु वेदांत वचनों विषे जो विश्वास है ताका नाम श्रद्धा है ॥ और श्रवणादिकोंके करणे विषे जो चित्तकी एकाग्रता है ताका नाम समाधान है ॥ तहां विजातीय वृत्तियोंका ति

परि०

३

॥ १५२ ॥



रस्कारकरिकै जोलक्ष्यवस्तुगोचर सजातीयवृत्तियोंका प्रवाह है यही ताचित्तकी एकाग्रता जानणी ॥  
 किंवा इसशमादिषट्संपत्तिविषे आत्मज्ञानकी अंतरंगसाधनता श्रुतिनै भी कथन करी है ॥ तहां श्रुति ॥  
 ( शांतोदांत उपरतस्ति तिष्ठुः समाहितो भूत्वाऽऽत्मन्येवात्मानं पश्यति ) अर्थ यह ॥ शम दम उपरति तिति  
 क्षा श्रद्धा समाधान इसषट्संपत्तिवाला पुरुष आपणे अंतःकरणविषे आत्माकूं साक्षात्कार करे है इति ॥  
 इसी उक्त अर्थकूं श्रीव्यास भगवान् नै भी ( शमदमाद्युपेतः स्यात् ) इत्यादिक सूत्र करिकै कथन कन्या है ॥  
 यातें श्रवणादिकोंकी न्याई ताशमादिषट्संपत्तिविषे आत्मज्ञानकी अंतरंगसाधनता संभवै है इति ॥ अब  
 ता आत्मज्ञानके बहिरंगसाधनोंका निरूपण करे हैं ॥ तहां स्वर्गादिक फलकी इच्छा तै रहित होइ कै कन्ये जेय  
 ज्ञदानादिक कर्म हैं ॥ तेय ज्ञदानादिक कर्म ता आत्मज्ञानके बहिरंगसाधन हैं ॥ काहेतें निष्काम यज्ञदाना  
 दिक कर्मों करिकै इस पुरुषके अंतःकरणकी शुद्धि होवै है ॥ ता शुद्ध अंतःकरणविषे आत्माके जानणेकी इच्छा  
 रूप विविदिषा उत्पन्न होवै है ॥ ता विविदिषा तें अनंतर श्रवणादिकों करिकै इस पुरुषकूं आत्मसाक्षात्कार हो  
 वै है ॥ इस प्रकारकी परंपरा करिकै तिन यज्ञदानादिक कर्मोंकूं भी ता आत्मज्ञानकी साधनता है ॥ यातें तिन य  
 ज्ञदानादिकोंविषे आत्मज्ञानकी बहिरंगसाधनता संभवै है ॥ तहां श्रुति ॥ ( तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विवि  
 दिषंतिय ज्ञेन दानेन तपसानाशकेन ) अर्थ यह ॥ अधिकारी ब्राह्मण इस आत्माकूं वेदानुवचन करिकै तथा यज्ञ  
 करिकै तथा दान करिकै तथा तप करिकै जानणेकी इच्छा करे हैं ॥ तहां इस श्रुतिविषे वेदानुवचन इस शब्द  
 करिकै वेदके अध्ययनका ग्रहण करणा ॥ और यज्ञशब्द करिकै अग्निहोत्रादिक यज्ञोंका ग्रहण करणा ॥  
 और दानशब्द करिकै तायज्ञ तै बाह्य दानका ग्रहण करणा ॥ और हितकारी तथा परिमित तथा पवित्र ऐसे  
 अन्नका जो भोजन है ताका नाम तप है ॥ इसी कारणतें श्रुतिविषे तिस उक्त तपका अनाशक यह विशेषण



तत्त्वा०

॥ १९ ॥

परि०

३

कथनकन्याहै ॥ तहां जोतप शरीरकेनाशकाहेतु नहींहोवै सोतप अनाशक कहाजावैहै ॥ ईहां केई कग्रंथकारतों । तपसानाशकेन । इसउक्तश्रुतिवचनविषे । अनाशकेन । इसप्रकारका पदच्छेद नहींकर ते ॥ किंतु । नाशकेन । इसप्रकारका पदच्छेदकरिकै तावचनका यहअर्थ करेहैं ॥ शरीरकेनाशकाहेतु जो अनशनव्रतहै ॥ तथा श्रीगंगायमुनाकेसंगमरूपप्रयागविषे जो बुद्धिपूर्वक शरीरकात्यागहै ॥ तथा शरीरकूंक्षीणकरणेहारे जे कृच्छ्रचांद्रायणादिकव्रतहैं ॥ तिनोंकानाम तपहै ॥ याकारणतैंहीं ( तपोनान शनात्परं ) यहश्रुति अनशनव्रतकूं सर्वतपोतैंउत्कृष्टतप कहेहै ॥ और प्रयागविषे बुद्धिपूर्वक शरीरकेत्या गकरणेहारेपुरुषकूं विविदिषाद्वारा ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति श्रुतिस्मृतिइतिहासपुराणोंविषे कथनकरी है ॥ यातैं ताश्रुतिविषेस्थित तपशब्दकरिकै ताअनशनादिरूपतपकाहीं ग्रहणकरणा इति ॥ ईहां केई कग्रंथकारतों ऐसाकहेहैं ॥ प्रयागादिकोंविषे बुद्धिपूर्वकमरण जो शास्त्रोंमें कहाहै सोयथार्थहै ॥ परंतु इसकलियुगतैंभिन्न त्रेतादिकयुगोंविषे सोमरण कथनकन्याहै ॥ इसकलियुगविषेतों सोबुद्धिपूर्वकमरण सर्वप्रकारतैं निषिद्धहींहै ॥ और तिसमरणविधायकवचनोंकी जोयुगभेदतैंव्यवस्था नहींकरीये ॥ तों भी तेवचन ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंतैंभिन्न शूद्रादिकोंकेमरणका विधानकरेहैं ॥ त्रैवर्णिकपुरु षोंकेमरणका विधानकरतेनहीं ॥ याकारणतैंहीं धर्मशास्त्रविषे ब्राह्मणादिकोंकूं मरणांतिकप्रायश्चित्तका निषेधकन्याहै इति ॥ तहां पूर्वउक्तश्रुतिविषे कथनकन्येजे वेदाध्ययन यज्ञ दान तपरूपकर्महैं ॥ तेसर्व समुचितहूए ताविविदिषाकेसाधनहोवैहैं ॥ इसप्रकार केईकग्रंथकार मानेहैं ॥ और केईकग्रंथकारतों ति नयज्ञादिककर्मोंकूं विकल्पकरिकै ताविविदिषाकाहेतु मानेहैं ॥ अर्थात् वेदाध्ययनरूपकर्मकरिकैभी सा विविदिषाहोवैहै ॥ तथा यज्ञदानादिरूपकर्मकरिकैभी साविविदिषाहोवैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व

॥ १९ ५३ ॥



उक्तयज्ञदानादिकर्मोंकूं साक्षात्हीं मुक्तिकासाधनपणा संभवैहै ॥ यातैं तिनकर्मोंकूं विविदिषाकाहे  
तुपणाकहणा असंगतहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ अविद्याकीजानिवृत्तिहै अथवा ब्रह्मभावकीजाप्राप्ति  
है ताकानाम मुक्तिहै ॥ सामुक्ति केवल आत्मज्ञानकरिकैहीं संभवैहै ॥ कर्मकरिकै सामुक्ति संभव  
तीनहीं ॥ काहेतैं रजतभ्रमकाकारणरूप जोशुक्तिकाअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकीनिवृत्ति ताशुक्तिरूपअ  
धिष्ठानकेसाक्षात्कारतैंहीं होवैहै ॥ अन्यकिसीउपायतैं होवैनहीं ॥ और ब्रह्मात्मभावरूपमोक्षतों अना  
दिहै ॥ यातैं तामोक्षकूंभी कर्मकरिकैसाध्यपणा संभवतानहीं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कहीहै ॥  
तहांश्लोक ॥ ( भ्रांत्याप्रतीतःसंसारो विवेकान्नतु कर्मभिः नरज्ज्वारोपितःसर्पो घंटाघोषान्निवर्त्तते ) अर्थ  
यह ॥ जैसे भ्रांतिकरिकै रज्जुविषे आरोपणकन्याजोसर्पहै ॥ सोसर्प तारज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानतैंहीं  
निवृत्तहोवैहै ॥ घंटाघोषमंत्रादिकोंतैं निवृत्तहोतानहीं ॥ तैसे आत्माविषे भ्रांतिकरिकैआरोपित जोसं  
सारहै ॥ सोसंसार ताअधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्काररूपविवेकतैंहीं निवृत्तहोवैहै ॥ कर्मोंकरिकै सोसंसा  
र निवृत्तहोतानहीं इति ॥ किंवा ( नकर्मणानप्रजयानधनेनत्यागेनैकेऽमृतत्वमानशुः । नास्त्यकृतःकृते  
न ) इत्यादिकश्रुतियोंनैं कर्मोंकूं साक्षात्मोक्षकीसाधनताका निषेधकन्याहै ॥ और ( ज्ञानादेवतुकैव  
ल्यं । नान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय ) इत्यादिकश्रुतियोंनैं आत्मज्ञानकूंहीं साक्षात् मोक्षकासाधन कहाहै ॥  
याकारणतैंभी तिनकर्मोंकूं साक्षात्मोक्षकीसाधनता संभवतीनहीं ॥ किंतु पूर्वउक्तरीतिसैं तिनकर्मोंकूं  
अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा विविदिषाकाहींहेतुपणा संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वउक्तश्रुतिविषेकथन  
कन्येहूए यज्ञादिककर्मोंकूं ताविविदिषाकाहेतुपणारहो ॥ तथापि तेयज्ञादिककर्म नित्य नैमित्तिक का  
म्य प्रायश्चित्त इसभेदकरिकै चारिप्रकारकेहोवैहैं ॥ तेचारोप्रकारकेयज्ञादिककर्म ताविविदिषाकेहेतुहो



तत्त्वा०

॥ २० ॥

परि०

३

वैहैं ॥ अथवा केवल नित्यकर्महीं ताविविदिषाकेहेतुहोवैहैं ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहूए ॥ तहां केईकग्रंथका रतों ऐसाकहेहैं ॥ ताउक्तश्रुतिविषे विविदिषाकाहेतुरूपकरिकै केवल यज्ञदानादिककर्ममात्र कथनकरे हैं ॥ तिनकर्मोंविषे नित्यरूपता वा नैमित्तिकादिरूपता ताश्रुतिनैं कहीनहीं ॥ यातैं फलकीइच्छातैंर हितहोइकैक-येहूए नित्य नैमित्तिक काम्य प्रायश्चित्तरूप सर्वयज्ञादिककर्म अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ता विविदिषाकेहेतुहोवैहैं ॥ और सगुणब्रह्मकीउपासनातों चित्तकीएकाग्रताका हेतुहोवैहै इति ॥ और आचार्यतों ऐसाकहेहैं ॥ ( काम्यानांकर्मणान्यासंसंन्यासंकवयोविदुः ) इत्यादिकस्मृतिनैं काम्यकर्मोंके अनुष्ठानकानिषेधकरिकै फलकीइच्छातैंरहित अग्निहोत्रादिकनित्यकर्मोंकेअनुष्ठानका विधानक-याहै ॥ यातैं ताउक्तश्रुतिनैंभी निष्कामअग्निहोत्रादिकनित्यकर्महीं ताविविदिषाकाहेतुरूपकरिकै विधानक-ये हैं ॥ नैमित्तिककाम्यप्रायश्चित्तरूपकर्म विधानक-येनहीं इति ॥ तहां तिनयज्ञादिककर्मोंविषे आत्मज्ञा नकी बहिरंगसाधनता श्रीव्यासभगवान्नेभी ब्रह्मसूत्रोंविषे कहीहै ॥ तहांसूत्र ॥ ( सर्वापेक्षाचयज्ञादि श्रुतेरश्ववत् ) अर्थयह ॥ ब्रह्मविद्याकूं आपणीउत्पत्तिविषे यज्ञदानादिकसर्वकर्मोंकी अपेक्षाहोवैहै ॥ जि सकारणतैं सापूर्वउक्तश्रुति ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिविषे तिनयज्ञादिककर्मोंकूं साधनता कथनकरेहै ॥ परंतु साब्रह्मविद्या मोक्षरूपफलकीउत्पत्तिविषे तिनयज्ञादिककर्मोंकीअपेक्षा करतीनहीं ॥ जिसकारणतैं ता मोक्षरूपफलविषे तिनकर्मोंकी योग्यताहींनहींहै ॥ और जिसपदार्थकी जहां योग्यताहोवैहै ॥ तिसप दार्थकीहीं तहां अपेक्षाहोवैहै ॥ जैसे अश्वकी हलकेआकर्षणकरणेविषे योग्यताहोतीनहीं ॥ किंतु रथ केआकर्षणकरणेविषेहीं योग्यताहोवैहै ॥ यातैं सोअश्व रथविषेहीं जोडयाजावैहै ॥ ताहलविषे जोडया जातानहीं ॥ तैसे तिनयज्ञादिककर्मोंकूं तामोक्षकेउत्पत्तिकरणेकी योग्यतानहींहै ॥ किंतु चित्तकीशुद्धि

॥ १५४ ॥

द्वारा विविदिषाकूंउत्पन्नकरिकै ताब्रह्मविद्याकेउत्पत्तिकरणेकीही योग्यताहै ॥ यातैं तिनयज्ञदानादिक



जातानहीं ॥ तैसे तिनयज्ञादिककर्मोंके तात्पर्यके कालिकप्रोक्त योग्यतानहीं है ॥ किंतु चित्तकी शुद्धि

द्वारा विविदिषाकृत उत्पन्न करिकै ताब्रह्मविद्याके उत्पत्तिकरणेकी ही योग्यता है ॥ यातें तिनयज्ञदानादिक कर्मोंकें आत्मज्ञानकी बहिरंग साधनता संभवै है इति ॥ इस प्रकार अंतरंग बहिरंग साधनों करिकै सर्वप्रतिबंधोंतें रहित हुए पुरुषका मनन निदिध्यासन करिकै संस्कृत जो चित्तरूप दर्पण है ॥ ता शुद्ध चित्त सहकृत जो विचार कन्या हूआ तत्त्वमसि आदिक महावाक्य है ॥ तामहावाक्य तें उत्पन्न हूआ जो अहं ब्रह्मास्मि या प्रकाशका अप्रतिबद्ध साक्षात्कार है ॥ ता आत्मसाक्षात्कार करिकै इस अधिकारी पुरुषका अज्ञान नाश होइ जावै है ॥ और पूर्व अनेक जन्मों विषे संपादन कन्येजे पुण्य पाप रूप कर्म हैं ॥ ते संचित कर्म भी ता आत्मज्ञान करिकै नाश होइ जावै हैं ॥ और ता आत्मज्ञान तें अनंतर कन्येजे आगामिकर्म हैं ॥ तिन आगामिकर्मों का तों इस विद्वान् पुरुषकें ता आत्मज्ञान के प्रभाव तें स्पर्श ही नहीं होता ॥ और प्रारब्ध कर्म नें प्राप्त कन्येजे अन्न पा नादिक विषय हैं ॥ तिन विषयोंकें अनुभव करता हूआ यह विद्वान् पुरुष अखंड एकरस सच्चिदानंद ब्रह्मात्मरूप करिकै स्थित होवै है ॥ यही आत्मज्ञानका मोक्षरूप फल है इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ आत्मज्ञान करिकै अज्ञान के निवृत्त हुए तें अनंतर विद्वान् पुरुषकें तुम नें विषयोंका अनुभव कहा ॥ सो संभवतानहीं ॥ काहे तें ता विषयानुभव का कारण जो देहाभिमान है सो ता विद्वान् पुरुष विषे है नहीं ॥ और जो ऐसा कहो ॥ ता देहाभिमान तें विनाहीं प्रारब्ध कर्म के वश तें ता विद्वान् पुरुषकें सो विषयानुभव संभवै है ॥ सो यह तुमारा कहणा भी संभवतानहीं ॥ काहे तें लोक विषे ता देहाभिमान कूंहीं अन्वय व्यतिरेक करिकै ता विषयानुभव की कारणता सिद्ध है ॥ तहां जाग्रत्स्वप्न विषे ता देहाभिमान के विद्यमान हुए सो विषयानुभव होवै है ॥ और सुषुप्ति अवस्था विषे ता देहाभिमान के अभाव हुए सो विषयानुभव होतानहीं ॥ इस प्रकार के अन्वय व्यतिरेक करिकै ता देहाभिमान कूंहीं ता विषयानुभव के प्रति कारणता सिद्ध होवै है ॥ ता देहाभिमान के अभाव हुए केवल प्रार



तत्त्वा०

॥ २१ ॥

परि०

३

ब्धकर्मकेवशतैं ज्ञानवान्पुरुषकूं सोविषयानुभव संभवतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ सोप्रारब्धकर्म ताविषयानु  
 भवका अदृष्टकारणहै ॥ और सोदेहाभिमान ताविषयानुभवका दृष्टकारणहै ॥ और अदृष्टकारणसामग्री  
 दृष्टकारणसामग्रीतैंविना कोईकार्यकूं उत्पन्नकरिसकतीनहीं ॥ जो उत्पन्नकरतीहोवै ॥ तौं मृत्तिकाकु  
 लालादिकदृष्टसामग्रीतैंविनाहीं ताअदृष्टसामग्रीतैं घटादिककार्य उत्पन्नहोणेचाहिये ॥ यातैं तादेहाभि  
 मानकेअभावहूए ज्ञानवान्पुरुषकूं केवलप्रारब्धकर्मतैं सोविषयानुभव संभवतानहीं ॥ किंवा तादेहाभि  
 मानतैंविनाहीं ज्ञानवान्पुरुषका जो विषयानुभवादिकव्यवहार मानोंगे ॥ तौं श्रीभाष्यकारोंनैं ( त  
 मेतमविद्याख्यमात्मानात्मनोरितरेतराध्यासंपुरस्कृत्यसर्वेप्रमाणप्रमेयव्यवहारालौकिकावैदिकाश्चप्रवृत्ताः )  
 इसवचनकरिकै सर्वलौकिकवैदिकव्यवहारोंकी अध्यासपूर्वकप्रवृत्ति कथनकरीहै ॥ ताभाष्यवचनका  
 भी विरोधहोवैगा ॥ किंवा ( व्यवहारः अध्यासपूर्वकः व्यवहारत्वात् ) इसअनुमानकरिकै सर्वव्यवहा  
 रोंविषे अध्यासपूर्वकता सिद्धकरीहै ॥ सोयहअनुमानभी व्यभिचारीहोवैगा ॥ जिसकारणतैं ज्ञानवा  
 न्पुरुषकेव्यवहारविषे ताव्यवहारत्वरूपहेतुकेविद्यमानहूएभी सोअध्यासपूर्वकत्वरूपसाध्य हैनहीं ॥ और  
 जोऐसाकहो ॥ ज्ञानवान्पुरुषविषेभी बाधितानुवृत्तिकरिकै सोदेहाभिमान रहेहै ॥ यातैं ताज्ञानवान्के  
 व्यवहारविषे अध्यासपूर्वकत्वरूपसाध्यकेविद्यमानहूए सोव्यवहारत्वरूपहेतु तहांव्यभिचारीहोवैनहीं ॥  
 तथा ताभाष्यवचनकाभी विरोधहोवैनहीं ॥ सोयह तुमाराकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं जैसे शु  
 क्तिकेसाक्षात्कारकरिकै ताशुक्तिकेअज्ञानकीनिवृत्तितैं रजतभ्रमकीनिवृत्तिहूए पुनः तारजतभ्रमकीअनु  
 वृत्ति देखणेमेंआवतीनहीं ॥ तैसे आत्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तितैं देहाभिमानकेनिवृत्तहूए  
 पुनः तादेहाभिमानकीअनुवृत्तिकहणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ जोकदाचित् आत्मज्ञानकरिकैबाधितदेहाभि

॥ ११५५ ॥

मानकीभी पुनः अनुवृत्तिमानोंगे ॥ तौं शुक्तिज्ञानकरिकैबाधितरजतभ्रमकीभी पुनः अनुवृत्तिहोणीचा



मानकीभी पुनः अनुवृत्तिमानोंगे ॥ तों शुक्तिज्ञानकरिकै बाधितरजतभ्रमकीभी पुनः अनुवृत्तिहोणीचाहिये ॥ और जोऐसाकहो ॥ जैसे सोपाधिकभ्रमस्थलविषे शुक्लःस्फटिकः इसप्रकारके अधिष्ठानकेसाक्षात्कारकेविद्यमानहूएभी जपाकुसुमादिरूपउपाधिकेसमीपस्थितहूए लोहितःस्फटिकः याप्रकारकाअनुभवसर्वजनोंकूं प्रसिद्धहै ॥ तैसे ईहांभी अधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहूएभी उपाधिकीस्थितिपर्यंत ज्ञानवान्पुरुषकूं सोदेहाभिमान तथातादेहाभिमानपूर्वक सोविषयानुभव संभवैहै ॥ सोयह तुमाराकहणाभी असंगतहै ॥ काहेतैं ताजपाकुसुमकीन्यांई ईहां कोईउपाधि निरूपणहोइसकतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ अज्ञानकूं वा अज्ञानकेकार्यकूंहीं उपाधि कहणाहोवैंगा ॥ तेदोनों आत्मज्ञानकरिकै निवृत्तहोइगयैहैं ॥ यातैं आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहूए ताअज्ञानकेकार्यकीभीनिवृत्तिहोणेतैं ताज्ञानवान्पुरुषकूं प्रारब्धकर्मकेवशतैं विषयोंकाअनुभवकहणा सर्वथाअसंगतहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै निवृत्तहूआहैअज्ञान जिसका ऐसेज्ञानवान्पुरुषकूं ताप्रारब्धकर्मकेवशतैं सोविषयानुभव संभवैहै ॥ और ताविषयानुभवका कारणरूप जोदेहाभिमानहै ॥ सोदेहाभिमानभी ताज्ञानवान्पुरुषविषे बाधितानुवृत्तिकरिकैरहेहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तादेहाभिमानका कारणरूप जोअज्ञानहै सो आत्मज्ञानकरिकै निवृत्तहोइगयाहै ॥ और उपादानकारणकेनाशहूएतैंअनंतर कार्यकीअनुवृत्ति कहांभी देखणेविषेआवतीनहीं ॥ यातैं ज्ञानवान्पुरुषविषे तादेहाभिमानकीअनुवृत्तिकहणी असंगतहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ उपादानकारणकेनाशहूएभी कार्यकीअनुवृत्ति देखणेमेंआवैहै ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे तंतुआदिकउपादानकारणकेनाशतैंअनंतर एकक्षणपर्यंत पटादिककार्यकीअनुवृत्ति अंगीकारकरीहै ॥ तैसे सिद्धांतविषेभी अज्ञानरूपउपादानकारणकेनाशतैंअनंतर देहाभिमानादिरूपकार्यकी



तत्त्वा०

॥ २२ ॥

अनुवृत्ति संभवे है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ नैयायिकों का सिद्धांत तो श्रुति स्मृति आदिक प्रमाण तैरहित है ॥  
 तिस सिद्धांत कूं जो तुम अंगीकार करोगे ॥ तो तुमारे सिद्धांत विषे भी अप्रमाणता प्राप्त होवैंगी ॥ ॥ स  
 माधान ॥ ॥ अज्ञान की निवृत्ति तै अनंतर भी ज्ञानवान् पुरुष विषे बाधितानुवृत्तिकरि कै देहाभिमानादि  
 क रहे हैं इस अर्थ कूं हम केवल नैयायिकों के सिद्धांत मात्र तै ही सिद्ध नहीं करते ॥ किंतु इस हमारे सिद्धांत के  
 साधक श्रुति स्मृति युक्ति अनुभव आदिक अनेक प्रमाण विद्यमान हैं ॥ या तै नैयायिकों के मत की न्यां ई  
 हमारे सिद्धांत विषे अप्रमाणता प्राप्त होवै नहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जो पदार्थ उपादान कारण का निवर्त्त  
 क होवै है ॥ सो पदार्थ ता के कार्य का भी निवर्त्तक होवै है ॥ जैसे अग्नि तंतुरूप उपादान कारण की निवृत्ति  
 करता हू आ ता के पटरूप कार्य की भी निवृत्ति करे है ॥ तैसे सो आत्मज्ञान भी अज्ञान रूप उपादान कारण की  
 निवृत्ति करता हू आ ता अज्ञान के कार्य की भी अवश्य निवृत्ति करेगा ॥ और सो देहाभिमान भी ता अज्ञान  
 का कार्य है ॥ या तै ता देहाभिमान के निवृत्त हू ज्ञानवान् पुरुष कूं सो विषयानुभव संभवतानहीं ॥ ॥ स  
 माधान ॥ ॥ यद्यपि सो आत्मज्ञान अज्ञान का तथा ता अज्ञान के कार्य का निवर्त्तक है ॥ तथापि धनुष  
 तै छूटे हू बाण की न्यां ई आपणे फल देणे विषे प्रवृत्त हू आ प्रारब्ध कर्म ता ज्ञान तै प्रबल है ॥ या तै सो प्रारब्ध ता  
 अज्ञान के कार्य की निवृत्ति विषे प्रतिबंधक होवै है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ता प्रारब्ध कर्म कूं जो आत्मज्ञान तै  
 प्रबल मानोंगे ॥ तो ता प्रबल प्रारब्ध कर्म रूप प्रतिबंध के विद्यमान हू ता आत्मज्ञान तै अज्ञान की भी निवृ  
 त्ति नहीं होनी चाहिये ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ता आत्मज्ञान विषे एक तो अज्ञान का निवर्त्तकत्व अंश  
 है ॥ और दूसरा अज्ञान के कार्य का निवर्त्तकत्व अंश है ॥ तहां अज्ञान तै विना भी ज्ञानवान् पुरुष कूं प्रारब्ध  
 कर्म के फल का भोग बनिसके है ॥ या तै ता आत्मज्ञान विषे जो अज्ञान निवर्त्तकत्व अंश है ताका सो प्रार

परि०

३

॥ १५६ ॥

ब्ध कर्म प्रतिबंधक होतानहीं ॥ और ता अज्ञान के कार्य रूप जे देह इंद्रियादिक हैं तिनो तै विना इस पुरुष



हृत् और दूसरी अज्ञानके कार्यका निवर्तक है अतः ही अज्ञाननिवर्तकत्व अंश है ताका सोप्रार  
कर्मके फलका भोग बनिसके है ॥ सतें ता आत्मज्ञानविषे जो अज्ञाननिवर्तकत्व अंश है ताका सोप्रार

ब्धकर्म प्रतिबंधक होतानहीं ॥ और ता अज्ञानके कार्यरूप जे देह इंद्रियादिकहैं तिनो तैं विना इस पुरुष  
कूं सोप्रारब्धकर्मके फलका भोग संभवतानहीं ॥ या तैं ता आत्मज्ञानविषे जो अज्ञानके कार्यका निवर्तक  
त्व अंश है ताका सोप्रारब्धकर्म प्रतिबंधक होवै है ॥ अर्थात् सोप्रारब्धकर्म आपणे फल भोग देणे वासतै  
ता देह इंद्रियादिरूप कार्यकूं निवृत्त होणे देतानहीं ॥ या तैं आत्मज्ञान करिकै अज्ञानके निवृत्त हुए भी ज्ञान वा  
न पुरुषकूं बाधितानुवृत्तिकरिकै ता देहाभिमानके विद्यमान हुए सोप्रारब्धकर्म करिकै प्राप्त कन्या हू आ विष  
यानुभव संभवे है ॥ यह वार्ता श्रीव्यास भगवान् नैं भी ब्रह्मसूत्रों विषे कहि है ॥ तहां सूत्र ॥ ( भोगेन त्वित  
रेक्षयित्वा संपद्यते ) अर्थ यह ॥ आत्मज्ञान करिकै संचित कर्मों के नाश हुए तथा आत्मज्ञान तैं अनंतर कन्ये  
हू आगामिकर्मों के अस्पर्श हुए बाकी रह्ये हुए प्रारब्धकर्मों कूं भोग तैं निवृत्त करिकै यह ज्ञानवान् पुरुष नि  
विशेष ब्रह्मकूं प्राप्त होवै है ॥ अर्थात् विदेह कैवल्य रूप मोक्षकूं प्राप्त होवै है इति ॥ किंवा यह उक्त अर्थ श्रीवा  
र्त्तिककार नैं भी कहा है ॥ तहां श्लोक ॥ ( शास्त्रार्थस्य समाप्तत्वा न्मुक्तिः स्यात्तावतापि ते रागादयः संतुका  
मनतद्भावोऽपराध्यते ) अर्थ यह ॥ वेदांत शास्त्र का अर्थ रूप जो जीव ब्रह्म का एकत्व है ॥ ता एकत्व साक्षात् का  
र करिकै ही इस पुरुषकूं मुक्तिकी प्राप्ति होवै है ॥ ऐसे ज्ञानवान् पुरुष विषे राग द्वेषादिक बाधितानुवृत्तिकरिकै  
रहो ॥ तिन रागादिकों के विद्यमान हुए भी ता ज्ञानवान् पुरुषकूं मुक्ति विषे किंचित् मात्र भी हानि नही है  
इति ॥ किंवा यह उक्त अर्थ सर्व वेदांतरहस्य के जानणे हारे श्रीविद्यारण्य स्वामी नैं भी कहा है ॥ तहां श्लोक ॥  
( अप्रवेश्य चिदात्मानं पृथक् पश्यन्नहं कृतिं इच्छंस्तु कोटि वस्तूनि न बाधो ग्रंथि भेदतः ॥ १ ॥ ग्रंथि भेदेऽपि स  
भाव्या इच्छाः प्रारब्ध दोषतः बुद्ध्यापि पापबाहुल्यादसंतोषो यथा तव ॥ २ ॥ ) अर्थ यह ॥ जो पुरुष चैतन्य  
आत्माकूं अहंकारादिकों तैं पृथक् जाने है ॥ तथा तिन अहंकारादिकों कूं ता चैतन्य आत्मा तैं पृथक् जाने



तत्त्वा०

॥ २३ ॥

है ॥ सो ज्ञानवान्पुरुष जो कदाचित् कोटि वस्तुओं की भी इच्छा करे ॥ तौ भी ता अध्यासरूप ग्रंथिके भेदन तै  
 ता ज्ञानवान्पुरुष की किंचित् मात्र भी हानि होती नहीं ॥ और ता अध्यासरूप ग्रंथिके निवृत्त हूए भी तिस ज्ञा  
 नवान्पुरुष विषे प्रारब्ध दोष तै इच्छा संभवै है ॥ जैसे अहंकारादिकों तै आत्मा कूं पृथक् जानिकै भी पाप क  
 मों की बाहुल्यता तै तुमारे कूं असंतोष हुआ है इति ॥ या तै ज्ञानवान्पुरुष कूं भी प्रारब्ध कर्म के फल भोग वास  
 तै बाधितानुवृत्तिकरि कै सो देहाभिमान तथा राग द्वेषादिक संभवै है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तिन विद्यारण्य  
 स्वामी आदिक आचार्यों तै नहीं किसी स्थल विषे ता ज्ञानवान्पुरुष विषे रागादिकों का निषेध भी कन्या है ॥ त  
 हां श्लोक ॥ ( रागो लिंगम बोधस्य चित्तव्यायामभूमिषु ॥ न चाध्यात्माभिमानोपि विदुषोऽस्त्यासुरत्वतः वि  
 दुषोऽप्यासुरत्वं चेन्निःफलं ब्रह्म दर्शनं ) अर्थ यह ॥ इस पुरुष के चित्त विषे जो विषयों का राग है ॥ सो राग ही इस  
 पुरुष के अज्ञान के जनावणे हारा चिन्ह है ॥ अर्थात् तारागरूप लिंग तै ही इस पुरुष के अज्ञान का अनुमान  
 कन्या जावै है ॥ और इस पुरुष विषे अभिमान ही असुर भाव की प्राप्ति करे है ॥ या तै विद्वान्पुरुष कूं अध्या  
 त्म अभिमान भी होतान ही ॥ जो कदाचित् ता अभिमान करने तै विद्वान्पुरुष विषे भी सो असुर भाव होवै  
 गा ॥ तौ सो ब्रह्म साक्षात्कार ही निष्फल होवै गा इति ॥ इत्यादिक वचनों करि कै ता ज्ञानवान्पुरुष विषे रा  
 गादिकों का तथा देहाभिमान का निषेध कन्या है ॥ या तै ता ज्ञानवान्पुरुष विषे तेरागादिक संभवते नहीं ॥  
 ॥ समाधान ॥ ॥ उक्त वचनों करि कै आचार्यों तै ज्ञानवान्पुरुष विषे जो रागादिकों का निषेध कन्या  
 है ॥ सो दृढ अध्यास पूर्वक रागादिकों का निषेध कन्या है ॥ अर्थात् जैसे अज्ञानी पुरुष विषे आत्मा अहं  
 कारादिकों के दृढ अध्यास पूर्वक रागादिक होवै हैं ॥ तैसे ज्ञानवान्पुरुष विषे दृढ अध्यास पूर्वक तेरागादि  
 क होते नहीं ॥ जो कदाचित् इन वचनों का ऐसा अभिप्राय नहीं मानिये ॥ तौ ज्ञानवान्पुरुष विषे रागादि

परि०

३

॥ १५७ ॥



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



तत्त्वा०

॥ २४ ॥

रूपाधिकभ्रमहै ॥ यातैं ताशुक्तिकेज्ञानकूं तारजतभ्रमकीनिवृत्तिकरणेविषे कोईप्रतिबंधक नहींहै ॥ यातैं ताशुक्तिकेज्ञानकरिकै निवृत्तहूएतारजतभ्रमकी पुनः आवृत्तिहोतीनहीं ॥ और यहदेहाभिमानादिकतों सोपाधिकभ्रमहै ॥ तहां प्रारब्धकर्महीं उपाधिरूपहै ॥ यातैं आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहूएभी ता प्रारब्धकर्मरूपउपाधिकीस्थितिपर्यंत ज्ञानवान्पुरुषविषे बाधितानुवृत्तिरूपतैं तिनदेहाभिमानादिकोंकी स्थिति संभवैहै इति ॥ अथवा ऐसामानणा ॥ आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहूएभी ताअज्ञानका ले शमात्र बाकीरहेहै ॥ जिसअज्ञानलेशकूं लेशाऽविद्या कहेहैं ॥ ताअज्ञानलेशकीअनुवृत्तिकरिकैहीं ज्ञान वान्पुरुषकूं सोप्रारब्धकर्मकाभोग होवैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( द्वैतच्छा यारक्षणायास्तिलेश अस्मिन्नर्थेस्वानुभूतिःप्रमाणं ) अर्थयह ॥ आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहूएभी अभासमात्रद्वैतकेरक्षणकरणेवासतै ताअज्ञानकालेश बाकीरहेहै ॥ इसअर्थविषे आपणाअनुभवहीं प्रमा णहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ आत्मज्ञानकरिकैनिवृत्तहूएअज्ञानका बाकी लेशरहेहै यहपूर्व आपनैं कहा ॥ तहां सोअज्ञानकालेश क्याहै ॥ अर्थात् ताअज्ञानके किसीअवयवकानाम लेशहै ॥ अथवा ता अज्ञानके शक्तिकानाम लेशहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरो सो संभवतानहीं ॥ काहेतैं सिद्धांतवि षे ताअज्ञानकूं निरवयव तथासावयव अंगीकारकन्यानहीं ॥ किंतु दोनोंतैंविलक्षण अनिर्वचनीय अंगी कारकन्याहै ॥ और ताअज्ञानकूं सावयवमानिकै ताअज्ञानकेअवयवकूं जोलेशमानिये ॥ तौंभी आत्म ज्ञानकरिकै ताअज्ञानरूपअवयवीकेनिवृत्तहूएतैंअनंतर ताअवयवकीअनुवृत्ति संभवतीनहीं ॥ और अज्ञा नकेशक्तिकानाम लेशहै यहद्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरो सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं आत्मज्ञानकरि के ताशक्तिवालेअज्ञानकेनाशहूएतैंअनंतर ताअज्ञानरूपआश्रयतैंविना ताशक्तिकीस्थितिहीं संभवतीन

॥ १५८ ॥

हीं ॥ यातैं अज्ञानलेशकीअनुवृत्तिकरिकै ज्ञानवान्पुरुषकूं प्रारब्धकर्मकाभोग संभवतानहीं ॥ ॥ स



हीं ॥ यातैं अज्ञानलेशकी अनुवृत्तिकरि कै ज्ञानवान् पुरुषकूं प्रारब्धकर्मका भोग संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ आत्मज्ञान करि कै आवरणशक्ति तथा तादात्म्य अध्यास यह दोनों निवृत्त होइ जावैं हैं ॥ और विक्षेपशक्तिवाला अज्ञान ता आत्मज्ञान तैं अनंतर भी रहे है ॥ ता विक्षेपशक्तिवाले अज्ञान कूं हीं लेश कहे हैं ॥ और जैसे आवरणशक्तिका आत्मज्ञान के साथि विरोध है ॥ तैसे ता विक्षेपशक्तिका आत्मज्ञान के साथि विरोध है नहीं ॥ यातैं ता विक्षेपशक्तिवाले अज्ञान की अनुवृत्तिकरि कै ज्ञानवान् पुरुषकूं सो प्रारब्धकर्मका भोग संभवै है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ता विक्षेपशक्तिवाले अज्ञान करि कै ज्ञानवान् पुरुषकूं जैसे प्रारब्धभोग की प्राप्ति होवै है ॥ तैसे जन्मांतर की भी प्राप्ति होवैगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ता ज्ञानवान् कूं जन्मांतर के प्राप्ति का कोई निमित्त है नहीं ॥ काहेतैं सो अज्ञान आपणे स्वरूप तैं तो जन्म का हेतु होतानहीं ॥ किंतु धर्म अधर्म यह दोनों हीं इस पुरुष के जन्म के हेतु होवैं हैं ॥ सो धर्माधर्म भी संचित रूप हीं जन्म का हेतु होवै है ॥ ता संचित धर्माधर्म के स्थिति का हेतु आवरणशक्तिवाला अज्ञान है ॥ ता अज्ञान की आत्मज्ञान करि कै निवृत्ति हुए ते संचित कर्म भी नाश होइ जावैं हैं ॥ और आत्मज्ञान तैं अनंतर कन्ये हुए आगामिकर्मों का ता ज्ञानवान् पुरुषकूं लेप होतानहीं ॥ और प्रारब्धकर्मों का भोग करि कै नाश होवै है ॥ इस प्रकार शरीर के आरंभक कारण के अभाव तैं ता ज्ञानवान् पुरुषकूं जन्मांतर की प्राप्ति संभवै नहीं ॥ और जैसे अमिकरि कै दग्ध कन्या हुआ ब्रीहियवादिक बीज तृप्तिका हेतु हुआ भी अंकुर का हेतु होतानहीं ॥ तैसे सो विक्षेपशक्तिवाला अज्ञान इस ज्ञानवान् पुरुष के प्रारब्धकर्म के फल भोग विषे उपयोगी विषय दर्शन का हेतु हुआ भी जन्मांतर का हेतु होतानहीं ॥ और आत्मज्ञान करि कै ता आवरणशक्तिवाले अज्ञान की निवृत्तिकाल विषे जिस प्रारब्धकर्म नें आपणे फल भोग देणे वासतै ता विक्षेपशक्तिवाले अज्ञान लेश का रक्षण कन्याथा ॥ तिस प्रारब्धकर्म रूप प्रतिबं



तत्त्वा०

॥ २५ ॥

परि०

३

धककेनिवृत्तहूएतैंअनंतर सोअज्ञानलेश आपेहीं निवृत्तहोइजावैहै ॥ ताअज्ञानलेशकीनिवृत्तिवासतै पु  
नः आत्मज्ञानकीअपेक्षा होवैनहीं ॥ जिसकारणतैं ताअज्ञानलेशकेस्थितिकाप्रयोजक जोआवरणश  
क्तिवालाअज्ञानथा सो पूर्वहीं आत्मज्ञानकरिकै निवृत्तहोइगयाहै ॥ यातैं आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानके  
निवृत्तहूएभी ताउक्त अज्ञानलेशकीअनुवृत्तिकरिकै ज्ञानवान्पुरुषकूं सोप्रारब्धकर्मकाभोग संभवैहै इ  
ति ॥ अथवा ईहां ऐसीव्यवस्थाकरणी ॥ आत्माकाआवरण तथाअहंकारादिकोंकेसाथि आत्माका ता  
दात्म्यअध्यास यहदोनों केवल अज्ञानकरिकैहीं कन्येहूएहैं ॥ याकारणतैंहीं आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरि  
कै तेदोनों नाशहोइजावैहैं ॥ अर्थात् तेदोनों निरुपाधिकभ्रमरूपहैं ॥ यातैं अधिष्ठानआत्माकेसाक्षा  
त्कारकरिकै तिनदोनोंकीनिवृत्ति संभवैहै ॥ और विक्षेपतों कर्मसहितअविद्याकरिकै कन्याहूआहै ॥  
यातैं ब्रह्मविद्याकरिकै ताअविद्याकेनिवृत्तहूएभी ताप्रारब्धकर्मकेनाशपर्यंत सोविक्षेप नाशहोतानहीं ॥  
ताविक्षेपकूं सोपाधिकभ्रमरूपताहोणेतैं ॥ तहां कर्मसहितविक्षेपशक्तिवालाअज्ञानहीं उपाधिहै ॥ और  
जिसकालविषे फलभोगकरिकै सोप्रारब्धकर्म नाशहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोविक्षेपशक्तिवालाअज्ञान  
आपेहीं नाशहोइजावैहै ॥ ताकीनिवृत्तिवासतै ज्ञानकी वा योगकी अपेक्षाहोतीनहीं ॥ जैसे तैलवर्त्ति  
केनाशहूएतैंअनंतर प्रदीप आपेहीं नाशहोइजावैहै ॥ तैसे आत्मज्ञानकरिकै ताआवरणशक्तिवालेअ  
ज्ञानकेनिवृत्तहूए तथासंचितकर्मोंकेनिवृत्तहूए तथाफलभोगकरिकै प्रारब्धकर्मकेनिवृत्तहूए सोविक्षेपश  
क्तिवालाअज्ञान आपेहीं निवृत्तहोइजावैहै ॥ यहउक्तअर्थ अन्यग्रंथविषेभीकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( अ  
विद्यावृत्तितादात्म्ये विद्ययैवविनश्यतः विक्षेपस्यस्वरूपंतु प्रारब्धक्षयमीक्षते ) अर्थयह ॥ अविद्याकृतआ  
वरण तथाअहंकारादिकोंकेसाथि आत्माका तादात्म्यअध्यास यहदोनोंतों अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकी

॥ ११५९ ॥

विद्याकरिकैहीं नाशहोवैहैं ॥ और विक्षेपकास्वरूपता प्रारब्धकर्मकेनाशकूं देखताहै ॥ अर्थात् प्रारब्ध



विद्याकरिकेहीं नाश होवैहैं ॥ और विक्षेपका स्वरूप तो प्रारब्धकर्मके नाशकूं देखता है ॥ अर्थात् प्रारब्ध कर्मके नाश तें पूर्व सो विक्षेपका स्वरूप नाश होता नहीं ॥ किंतु ता प्रारब्धकर्मके नाश तें अनंतरहीं नाश होवै है इति ॥ या तें यह सिद्ध भया ॥ ज्ञानवान् पुरुष कूं जो विषयोंका अनुभव होवै है सो स्फटिक विषे लोहित भ्रम की न्यांई सो पाधिक भ्रम है ॥ या तें सो विषयानुभव ता आत्मसाक्षात्कारका विरोधी नहीं है ॥ या तें आत्मज्ञान करिके अज्ञानके निवृत्त हूए तें अनंतर प्रारब्धकर्म नें प्राप्त क्ये हूए अन्नपानादिक विषयों कूं अनुभव कर ता हू आभी ज्ञानवान् पुरुष अखंड एकर ससच्चिदानंद ब्रह्म रूप तें स्थित होवै है ॥ यह पूर्व उक्त आत्मज्ञानका फल संभवै है इति ॥ सो यह उक्त फल शारीरक मीमांसाशास्त्रके चतुर्थ अध्यायके पठन करिके सिद्ध होवै है ॥ तहां शारीरक मीमांसाशास्त्रके प्रथम अध्यायके पठन करने तें श्रवण की सिद्धि ॥ और द्वितीय अध्यायके पठन करने तें मनन की सिद्धि ॥ और तृतीय अध्यायके पठन करने तें निदिध्यासन की सिद्धि ॥ और चतुर्थ अध्यायके पठन करने तें आत्मसाक्षात्कार रूप फल की सिद्धि ॥ यह पूर्व उक्त प्रकार सांप्रदायिक आचार्य माने हैं इति ॥ और केई ग्रंथकार तो यह कहै हैं ॥ श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरुके मुख तें जो ता चतुर अध्याय रूप संपूर्ण शारीरक मीमांसाशास्त्रका पठन है ताका नाम श्रवण है ॥ और ता पठन क्ये हूए शास्त्रके अर्थका जो युक्तियों करिके चिंतन है ताका नाम मनन है ॥ और ता मनन क्ये हूए शास्त्रके अर्थकी जो पुनः पुनः चित्त विषे आवृत्ति है ताका नाम निदिध्यासन है ॥ ता श्रवण मनन निदिध्यासन तें अनंतर इस पुरुष कूं अहं ब्रह्मास्मि या प्रकारका साक्षात्कार होवै है इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ उपनयन रूप संस्कार तें रहित होणे तें ता वेदांत शास्त्रके अध्ययनके अनधिकारी जे मैत्रेयी आदिक स्त्री हैं ॥ तथा विदुरादिक शूद्र हैं ॥ तिनों कूं भी श्रुति स्मृति इतिहास पुराणों विषे आत्मज्ञानकी उत्पत्ति कथन करी है ॥ और ता वेदांत शास्त्रके अधिकारी जे जनक जडभरता



तत्त्वा०

॥ २६ ॥

दिकहैं ॥ तिनोँकुंभी ताशारीरकमीमांसाशास्त्रकेश्रवणादिकोंतैंविनाहीं केवल सिद्धगीतादिकोंकेश्रवण मात्रकरिकै आत्मज्ञानकीउत्पत्ति कथनकरीहैं ॥ यातैं संपूर्णशारीरकमीमांसाशास्त्रकेपठनतैं सोश्रवण सिद्धहोवैहैं यहपूर्वउक्तनियम संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ शुद्धहैअंतःकरणजिनोँका ऐसेजे व्युत्पन्न वा अव्युत्पन्न मुख्यअधिकारीहैं ॥ तिनमुख्यअधिकारीयोँकुंतोँ जीवब्रह्मकेएकत्वकूं प्रतिपादनकरेहारे एकश्लोकमात्रकरिकै अथवा अर्द्धश्लोकमात्रकरिकैहीं सोब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नहोवैहैं ॥ तहां इस पदकी इसअर्थविषे शक्तिहै और इसपदकी इसअर्थविषे लक्षणाहै याप्रकारतैं जिनपुरुषोंकुं पदपदार्थके शक्तिलक्षणारूपसंगतिका ज्ञानहै ॥ तेपुरुष व्युत्पन्न कहेजावैहैं ॥ और जेपुरुष तापदपदार्थकेसंगति ज्ञानतैंरहितहैं ॥ तेपुरुष अव्युत्पन्न कहेजावैहैं ॥ और जिनपुरुषोंनैं सगुणब्रह्मकेसाक्षात्कारपर्यंत उपासनाकरीहैं ऐसेकृतोपासकपुरुष मुख्यअधिकारी कहेजावैहैं ॥ अथवा पूर्वजन्मविषे श्रवणमननादिक सामग्रीकरिकैसंपन्नहूएभी जेपुरुष किसीप्रतिबंधकेवशतैं पुनःमनुष्यशरीरकूं प्राप्तहूएहैं ॥ तेपुरुष मुख्यअधिकारी कहेजावैहैं ॥ ऐसेव्युत्पन्नमुख्यअधिकारीकूं तथाअव्युत्पन्नमुख्यअधिकारीकूं आत्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे तासंपूर्णशास्त्रकेश्रवणादिकोंकी अपेक्षाहैनहीं ॥ किंतु वाक्यमात्रकेश्रवणतैंहीं तिनोँकुं सोआत्मसाक्षात्कार उत्पन्नहोवैहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं व्युत्पन्नमुख्यअधिकारीयोँकुंतोँ तावाक्यमात्रतैं ताब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्ति होवो ॥ परंतु अव्युत्पन्नमुख्यअधिकारीयोँकुं तावाक्यमात्रतैं ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्ति संभवतीनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ शब्दकीअचिंत्यशक्तिहोवैहैं ॥ यातैं ताव्युत्पन्नमुख्यअधिकारीकूंभी तावाक्यमात्रकेश्रवणतैं ताब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्ति बनिसकेहैं ॥ जैसे निद्राविषेसोयेहूएपुरुषकूं तहां तासंगतिज्ञानकेअभावहूएभी अन्यपुरुषकेवाक्यमात्रश्रवणतैं जाग्रतहोवै

परि०

३

॥ १६ ॥

हैं ॥ तैसे ताव्युत्पन्नमुख्यअधिकारीकूं तावाक्यमात्रकेश्रवणतैं ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिविषे कोईभी



अव्युत्पन्नमुख्य अधिकारी हूँ ना तावाक्यमात्रके श्रवणतें ताब्रह्मसाक्षात्कारकी उत्पत्तिविषे कोई भी बाधक नहीं है ॥ निद्राविषे सोये हुए पुरुष कूं तहां तासंज्ञाविज्ञानके अभावहोवै भी अन्य पुरुषके वाक्यमात्र श्रवणतें जाग्रत होवै

हैं ॥ तैसे ताअव्युत्पन्नमुख्य अधिकारी कूं तावाक्यमात्रके श्रवणतें ब्रह्मसाक्षात्कारकी उत्पत्तिविषे कोई भी बाधक नहीं है ॥ इहां यह तात्पर्य है ॥ जैसे निद्रातें उठे हुए पुरुष कूं घटादिकों के साथि चक्षुआदिक इंद्रियके सन्निकर्ष हुए तें अनंतर अयंघटः याप्रकारका चाक्षुषसाक्षात्कार उत्पन्न होवै है ॥ तैसे पूर्व अनेक जन्मों के पुण्यकर्मके परिपाकवशतें परमेश्वर अनुगृहीत शुद्ध अंतःकरण वाले पुरुष कूं एक श्लोक मात्रके श्रवण करिके अथवा अर्धश्लोक मात्रके श्रवण करिके अथवा वाक्यमात्रके श्रवण करिके सो ब्रह्मसाक्षात्कार अवश्य उत्पन्न होवै है ॥ और जैसे विक्षिप्तचित्त वाले उन्मत्त पुरुषों कूं घटादिक पदार्थों के साथि चक्षुआदिक इंद्रियों के संबंध हुए भी तिन घटादिकों विषे विपरीत व्यवहारहीं देखने में आवै है ॥ तैसे स्वस्थचित्त वाले पुरुषों कूं भी ता इंद्रियार्थके सन्निकर्ष तें अनंतर सो विपरीत व्यवहारहीं होता होवैगा याप्रकारकी कल्पना करी जावै नहीं ॥ इस प्रकार विषयों के प्राप्तिकी इच्छा वाले तथाराजसतामस वृत्तियों करिके स्थूलचित्त वाले ऐसे जे के ईक पंडित हैं ॥ तिन पंडितों कूं ता ब्रह्मसाक्षात्कारके उत्पत्तिका अभाव देखिके तिन मुख्य अधिकारीयों कूं वाक्यमात्रके श्रवण तें ब्रह्मसाक्षात्कारकी उत्पत्तिविषे असंभावना करी जाती नहीं ॥ यातें तिन पूर्व उक्त मुख्य अधिकारीयों कूं तावाक्यमात्रके श्रवणतें ब्रह्मसाक्षात्कारकी उत्पत्तिविषे कोई भी बाधक नहीं है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जबी पूर्व उक्तरीतिसे मुख्य अधिकारीयों कूं वाक्यमात्रके श्रवणतें ही ब्रह्मसाक्षात्कारकी उत्पत्ति भई ॥ तबी अनुपयोगी होणेतें ता शारीरक मीमांसादिक शास्त्रका आरंभहीं निष्फल होवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ पूर्व उक्त मुख्य अधिकारीयों तें भिन्न जे अमुख्य अधिकारी हैं ॥ तिनो के बोधवास तें ही ता शारीरक मीमांसादिक शास्त्रका आरंभ है ॥ अर्थात् तिन अमुख्य अधिकारीयों कूं तावाक्यमात्रके श्रवणतें सो ब्रह्मसाक्षात्कार होतानहीं ॥ किंतु ता शारीरक मीमांसादिक शास्त्रके पठनतें ही सो ब्रह्मसाक्षात्कार होवै है ॥ यातें अमुख्य अ



तत्त्वा०

॥ २७ ॥

परि०

३

धिकारीयोंकेवासतै ताशारीरकमीमांसादिकशास्त्रकाआरंभभी सफलहीहै ॥ तहां मुख्यअधिकारीपुरुषोंकूं श्लोककरिकै वा अर्द्धश्लोककरिकै ब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै यहवार्त्ता महाभारतविषे श्रीव्यासभगवान्नेभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( आत्मानंविंदतेयस्तु सर्वभूतगुहाशयं श्लोकेनयदिवार्द्धेन क्षीणंतस्यप्रयोजनं ) अर्थयह ॥ देशकालवस्तुपरिच्छेदतैरहित तथासर्वभूतोंकेबुद्धियोंकासाक्षी ऐसाजो सच्चिदानंदस्वरूप आत्माहै ॥ तिसआत्माकूं जोअधिकारीपुरुष एकश्लोककरिकै अथवा अर्द्धश्लोककरिकै अहंब्रह्मास्मि याप्रकारतै साक्षात्कारकरेहै ॥ तिसज्ञानवान्पुरुषका सर्वप्रयोजन क्षीणहोवैहै ॥ अर्थात् मनुष्यलोकतैआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनैकीआनंद लोकोंकूं प्रयोजनरूपकरिकैप्रसिद्धहैं ॥ तेसर्वआनंद ब्रह्मानंदकेअंतर्भूतहीहैं ॥ ताब्रह्मानंदकेप्राप्तहूए इसज्ञानवान्पुरुषकूं किसीभीलोककेआनंदकीइच्छा होतीनहीं इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थहीनैष्कर्म्यसिद्धिग्रंथविषे आचार्योंनै ( वाक्यश्रवणमात्रेणपिशाचवदवाप्नुयात् ) इत्यादिकवचनकरिकै कथनकन्याहै ॥ यातै तिनमुख्यअधिकारीयोंकूं वाक्यमात्रकेश्रवणतै ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्ति संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वकथनकन्येजे व्युत्पन्न तथाअव्युत्पन्न यहदोप्रकारके मुख्यअधिकारीहैं ॥ तिनदोनोंकूं वाक्यमात्रकेश्रवणतै उत्पन्नहूएब्रह्मसाक्षात्कारतैअनंतर किंचित् कर्त्तव्य रहेहै अथवा नहींरहेहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तिनदोनोंप्रकारके मुख्यअधिकारीयोंविषे जे अव्युत्पन्नमुख्यअधिकारीहैं ॥ तिनोंकूंतां ताब्रह्मसाक्षात्कारतैअनंतर ब्रह्माकारवृत्तियोंकाप्रवाहरूप ध्याननिष्ठा अपेक्षितहै ॥ काहेतै तिनअव्युत्पन्नअधिकारीयोंकीबुद्धि आप शास्त्रविषेकुशलनहींहै ॥ किंतु अन्यपुरुषोंकेउपदेशकेअधीनहै ॥ यातै तिनअव्युत्पन्नपुरुषोंकूं वाक्यमात्रकेश्रवणतै उत्पन्नहूआमी सोब्रह्मसाक्षात्कार भेदवादीपुरुषोंकेसंगदोषतै उत्पन्नभई असंभावनाविपरीतभावनाकरिकै प्र

॥ १६ ॥

तिबद्ध होइजावैहै ॥ और प्रतिबद्धज्ञानतै अज्ञानकोनिवृत्ति तथापरमपुरुषार्थकीप्राप्ति होतीनहीं ॥ और



तिबद्ध होइजावैहैं ॥ और प्रतिबद्धज्ञानतैं अज्ञानकीनिवृत्ति तथापरमपुरुषार्थकीप्राप्ति होतीनहीं ॥ और तेअव्युत्पन्नमुख्यअधिकारी जबी ताध्याननिष्ठाविषेरहेंगे ॥ तबी तिनोंकूं भेदवादीपुरुषोंकासंग होवैं गानहीं ॥ तासंगकेअभावहूए साअसंभावना तथाविपरीतभावनाभी तिनोंकूं होवैंगीनहीं ॥ यातैं ता प्रतिबंधतैंरहितब्रह्मसाक्षात्कारकरिकैं तिनअव्युत्पन्नमुख्यअधिकारीयोंकूं अज्ञानकीनिवृत्ति तथापरमपुरुषार्थकीप्राप्ति अवश्यहोवैहैं ॥ यातैं तिनअव्युत्पन्नमुख्यअधिकारीयोंकूं ब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर साध्या ननिष्ठा अवश्यअपेक्षितहै इति ॥ यहउक्तअर्थ गीताविषे श्रीभगवान्नेभी कहाहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अन्येत्वेवमजानंतः श्रुत्वान्येभ्यउपासते तेपिचातितरंत्येव मृत्युंश्रुतिपरायणाः) अर्थयह ॥ जेपुरुष आप शास्त्रकेविचारकरणेविषे कुशलनहींहैं ॥ तेपुरुष जबी दूसरेश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठपुरुषोंकेमुखतैं ब्रह्मकेस्वरूपकूं श्रवणकरिकैं ताब्रह्मका निरंतर ध्यानकरेहैं ॥ तबी तेश्रवणपरायणपुरुषभी ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकैं अज्ञानकूंनाशकरेहैं इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ श्रीविद्यारण्यस्वामीनेभी ध्यानदीपविषे कहाहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अत्यंतबुद्धिमांघाद्वा सामग्र्यावाप्यसंभवात् योविचारंनलभते ब्रह्मोपासीतसोऽनिशं ॥ मरणेब्रह्मलोकेवा तत्त्वंज्ञात्वाविमुच्यते) अर्थयह ॥ बुद्धिकीअत्यंतमंदतातैं अथवा विचारकीसामग्रीकेअभाव तैं जोपुरुष ब्रह्मकेविचारकूं नहींप्राप्तहोवैहैं ॥ सोपुरुष निरंतर तानिर्गुणब्रह्मकेध्यानकूंकरे ॥ सोध्यानकरतापुरुष मरणकालविषे अथवा ब्रह्मलोकविषे तानिर्गुणब्रह्मकेस्वरूपकूंसाक्षात्कारकरिकैं मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ पतंजलिभगवान्नेभी योगसूत्रोंविषेकहाहै ॥ तहांसूत्र ॥ (ततःप्रत्यक्चेतनाधिगमोऽतरायाभावश्च) अर्थयह ॥ तिसपरमात्माकेध्यानतैं इसपुरुषकूं प्रत्यक्आत्माकासाक्षात्कार होवैहैं ॥ और ताआत्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिविषे जितनेकीप्रतिबंधक होवैहैं तिनसर्वप्रतिबंधकों



तत्त्वा०  
॥ २८ ॥

कीभी ताध्यानतैहीं निवृत्तिहोवैहै इति ॥ यातैं तिनअव्युत्पन्नमुख्यअधिकारीयोंकूं ताब्रह्मसाक्षात्कार तैंअनंतर ताध्याननिष्ठाकीअपेक्षा अवश्यहै यहसिद्धभया ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं अव्युत्पन्न मुख्यअधिकारीयोंकूं ब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर ताध्याननिष्ठाकीअपेक्षारहो ॥ परंतु जेअधिकारी शास्त्रविषेव्युत्पन्नहैं ॥ तिनोंकूं ताध्याननिष्ठाकीअपेक्षा नहींहोवैंगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सर्वव्युत्पन्नअधिकारीयोंकूं ताध्याननिष्ठाकीअपेक्षाकाअभाव कहतेहो ॥ अथवा कोईकव्युत्पन्नअधिकारीकूं ताध्याननिष्ठाकीअपेक्षाकाअभाव कहतेहो ॥ तहां जोदूसरापक्ष अंगीकारकरो ॥ सोतौं हमारेकूंभी अंगीकारहै ॥ और जोप्रथमपक्ष अंगीकारकरो ॥ सो संभवतानहीं ॥ काहेतैं न्यायमीमांसादिकनानाशास्त्रोंकेविचारकरिकै तथापूर्वजन्मोंकेपापकर्मकेवशतैं जेपंडितजन संशयविपरीतभावनाकरिकै ग्रस्तहैं ॥ तिनव्युत्पन्नपंडितोंकूं वेदांतकेविचारतैंउत्पन्नहूआभी सोब्रह्मसाक्षात्कार अप्रामाण्यशंकाकरिकै दूषितहींहोवैहै ॥ याकारणतैं सो ब्रह्मसाक्षात्कार अज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ ऐसेव्युत्पन्नपंडितोंकूंतां तासंशयविपरीत भावनारूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिकरणेवासतै साध्याननिष्ठा अवश्यअपेक्षित होवैहै ॥ ताध्याननिष्ठाकरिकै तासंशयविपरीतभावनारूपप्रतिबंधकेनिवृत्तहूए ताअप्रतिबद्धब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै तिनव्युत्पन्नपंडितोंकूं मोक्षरूपपरमपुरुषार्थकीप्राप्ति होवैहै ॥ और जेव्युत्पन्नअधिकारी परमेश्वरकेअनुग्रहकरिकै ताअसंभाव नाविपरीतभावनातैरहितहैं ॥ तिनव्युत्पन्नअधिकारीपुरुषोंकूंतां ताब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर ताध्याननिष्ठाकीअपेक्षा होतीनहीं इति ॥ किंवा ध्यानकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकीहेतुता श्रीव्यासभगवान्नेंभी ब्रह्मसूत्रोंविषे कहीहै ॥ तहांसूत्र ॥ ( अपिसंराधनेप्रत्यक्षानुमानाभ्यां ) अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष ध्यान कालविषे एकाग्रचित्तकरिकै आपणेआत्मारूपतैंब्रह्मकूं साक्षात्कारकरेहै ॥ जिसकारणतैं श्रुतिनैं तथा

परि०  
३

॥ १६ २ ॥

स्मृतिनैं ताध्यानतैहीं ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति कथनकरोहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( ज्ञानप्रसादेनविशुद्धसत्त्वस्त



स्मृतिनैं ताध्यानतैंहीं ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( ज्ञानप्रसादेनविशुद्धसत्त्वस्त  
तस्तुतंपश्यतिनिष्कलं ध्यायमानः । कश्चिद्बीरः प्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन् ) अर्थयह ॥ शुद्ध  
अंतःकरणवालापुरुष निर्गुणब्रह्मकाध्यानकरताहूआ तानिर्गुणब्रह्मकूं साक्षात्कारकरेहै ॥ और बाह्यरूपा  
दिकविषयोंतैं निवृत्तकन्येहैंचक्षुआदिकइंद्रियजिसनैं ऐसाजोकोई ध्याननिष्ठपुरुषहै ॥ सोईहीं मोक्षकीइ  
च्छाकरताहूआ प्रत्यक्आत्माकूं साक्षात्कारकरेहै इति ॥ तहांस्मृति ॥ ( यंविनिद्राजितश्वासाः संतुष्टाः स  
जितेंद्रियाः ज्योतिःपश्यंतियुंजानास्तस्मैयोगात्मनेनमः ) अर्थयह ॥ निद्रातैरहित तथाप्राणायामकरि  
कै जीत्येहैंश्वासजिनोंनैं तथायथालाभविषेसंतुष्ट तथाजीत्येहैंचक्षुआदिकइंद्रियजिनोंनैं ऐसेपुरुष ध्यान  
योगकूंकरतेहूए जिसपरमात्मज्योतिकूं साक्षात्कारकरेहैं ॥ तिसयोगरूपपरमात्माकेताई हमारा नमस्का  
रहै इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ अन्यग्रंथविषेभीकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( बहुव्याकुलचित्तानां विचारात्त  
त्त्वधीर्नचेत् योगोमुख्यस्ततस्तेषां धीदर्पस्तेननश्यति ) अर्थयह ॥ बहुतव्याकुलहैचित्तजिनोंका ऐसेपुरु  
षोंकूं जोकदाचित् विचारकरणेतैं आत्मज्ञान नहींहोवै ॥ तों ऐसेपुरुषोंकूं सोध्यानरूपयोगहीं मुख्यसा  
धनहै ॥ जिसकारणतैं तिनपुरुषोंकीबुद्धिके संशयविपरीतभावनादिकदोष ताध्यानकरिकैहीं निवृत्तहो  
वैहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वउक्तरीतिसें संशयविपरीतभावनावालेपुरुषतों तासंशयविपरीतभाव  
नाकीनिवृत्तिकरणेवासतै ताध्यानकूंकरो ॥ परंतु जेज्ञानवान्पंडित तासंशयविपरीतभावनातैरहितहैं ॥  
तेभी ध्यानकरतेहूए देखणेमेंआवैहैं ॥ तेज्ञानवान्पंडित किसवासतै ध्यानकरेहैं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥  
संशयविपरीतभावनातैरहित तेज्ञानवान्पंडित जबी अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकीवृत्तियोंकाप्रवाहरूपध्या  
नकूं करेहैं ॥ तबी तिनोंकूं बाह्यविक्षेपकीनिवृत्तिकरिकै ब्रह्मानंदरूपदृष्टसुख विशेषहोवैहै ॥ तादृष्टसुख



तत्त्वा०

॥ २९ ॥

परि०

३

वासतैहीं तेज्ञानवान्पुरुष ध्यानकूँकरेहैं ॥ दूसराकोई ताध्यानकाप्रयोजन नहींहै ॥ जिसकारणतैं संशयविपरीतभावनारूपप्रतिबंधकीनिवृत्ति तथाआत्माकासाक्षात्कार यहदोनों तिनविद्वान्पुरुषोंकूँ पूर्वप्राप्तहींहैं ॥ परिशेषतैं ताध्यानका सोदृष्टसुखहीं फलहै ॥ यहवार्त्ता श्रीभगवान्नेभी गीताविषेकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( अनन्याश्रितयंतोमां येजनाःपर्युपासते तेषांनित्याभियुक्तानां योगक्षेमंवहाम्यहं ) अर्थयह ॥ मैंपरमेश्वरतैंभिन्नमायिकपदार्थोंविषे नहींहैरागजिनोंका तिनोंकानाम अनन्यहै ॥ ऐसेअनन्यहोइकै मैंप्रत्यक्अभिन्नपरमात्माकूँ चिंतनकरतेहूँ जे साधनचतुष्टयसंपन्नअधिकारीपुरुष मैंनिर्गुणपरमात्माका निरंतरध्यानकरेहैं ॥ अर्थात् विजातीयवृत्तियोंकापरित्यागकरिकै सजातीयवृत्तियोंकेप्रवाहरूप ध्यानकूँ करेहैं ॥ ऐसेमेरेध्यानपरायणतत्त्ववेत्तापुरुषोंकूँ मैंपरमेश्वर योगकी तथाक्षेमकी प्राप्तिकरूँहुं ॥ तहां अप्राप्तअर्थकीजाप्राप्तिहै ताकानाम योगहै ॥ और प्राप्तअर्थका जो परिरक्षणहै ताकानाम क्षेमहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अखंडएकरसआनंदरूपब्रह्मात्माविषे निष्ठावाले जेज्ञानवान्पुरुषहैं ॥ तिनोंकूँ कोईअप्राप्तआनंदहैनहीं ॥ काहेतैं मनुष्यलोकतैंलैके ब्रह्मलोकपर्यंत सर्वआनंदोंका जिसब्रह्मानंदविषे अंतर्भावहै ॥ सोब्रह्मानंद तिनज्ञानवान्पुरुषोंकूँ आपणाआत्मारूपकरिकै नित्यप्राप्तहींहै ॥ और उत्पत्तिविनाशतैंरहितहोणेतैं ताब्रह्मानंदका रक्षणभी संभवतानहीं ॥ अनित्यवस्तुकाहीं रक्षणहोवैहै ॥ यातैं ज्ञानवान्पुरुषोंकूँ मैंपरमेश्वर योगक्षेमकीप्राप्तिकरूँहुं यहभगवान्कावचन असंगतहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि तिनज्ञानवान्पुरुषोंकूँ कोईअप्राप्तअंश हैनहीं ॥ और सोब्रह्मानंद तिनोंकूँ नित्यहींप्राप्तहै ॥ यातैं तिनज्ञानवानोंका कोईयोगक्षेम हैनहीं ॥ तथापि ईहां योगक्षेमशब्दकरिकै यहअर्थ ग्रहणकरणा ॥ देहादिकसर्वअनात्मपदार्थोंविषे आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरिकै इसज्ञानवान्पुरुषकी जा ब्रह्मानंदरूपक

॥ १६३ ॥

रिकैस्थितिहै ताकानाम योगहै ॥ और प्रबलप्रारब्धकेयोगकरिकैभी जो ताब्रह्मनिष्ठतैंअप्रच्युतिहै ता



रिकै स्थिति है ताकानाम योग है ॥ और प्रबलप्रारब्धके योग करिकै भी जो ताब्रह्मनिष्ठार्ते अप्रच्युति है ता  
कानाम क्षेम है ॥ इस प्रकारका योगक्षेम ताज्ञानवान् पुरुषविषे भी संभव है ॥ यातें ( योगक्षेमं वहाम्यहं )  
इस उक्तवचन करिकै श्रीभगवान् इस प्रकारके योगक्षेम कूंहीं कहता भया है ॥ यातें ध्याननिष्ठज्ञानवान् पुरु  
षों कूं निरंतर सोदृष्टसुख प्राप्त होवै है ॥ यह अर्थ इस उक्तगीतावचन तें सिद्ध होवै है इति ॥ यह ही अर्थ श्रीभ  
गवान् नें ( मच्चित्तामद्गतप्राणा बोधयंतः परस्परं कथयंतश्च मानित्यं तुष्यंति चरमंति च ) इस श्लोकविषे भी  
कथन कन्या है ॥ इन गीताश्लोकोंका अर्थ हम नें गीतागूढार्थदीपिकानामाटीका विषे विस्तारतें कथन क  
न्या है ॥ जिस कूं जिज्ञासा होवै तिस नें तहां से जानिलेना इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जैसे मुमुक्षुजनों  
के प्रति श्रवणादिकोंकी अवश्य कर्तव्यताका बोधक विधि होवै है ॥ तैसे संशयविपरीत भावना तें रहित ज्ञा  
नवान् पुरुषोंके प्रति भी ताध्यानकी अवश्य कर्तव्यताका बोधक विधि क्युं नहीं होवै ॥ अर्थात् ज्ञानवान्  
पुरुषों नें भी सोध्यान अवश्य करणा या प्रकारकी वेदकी आज्ञा क्युं नहीं होवै ॥ और जो ऐसा कहो ॥ ता  
ज्ञानवान् पुरुष कूं ध्यानका विधान करने हारा कोई वेदका वाक्य है नहीं ॥ यातें ताज्ञानवान् पुरुष कूं ताध्या  
नका विधि नहीं ॥ सो यह तुमारा कहना भी संभवतानहीं ॥ काहेतें ( तमेव धीरो विज्ञाय प्रज्ञां कुर्वीत ब्राह्म  
णः ) अर्थ यह ॥ धैर्यवान् ब्राह्मण तिस परमात्मा कूं साक्षात्कार करिकै पश्चात् ता परमात्माका ध्यान करै ॥  
इस श्रुति नें ताज्ञानवान् पुरुष कूं भी ध्यानका विधान कन्या है ॥ और जो ऐसा कहो ॥ उत्पन्न हूँ आत्मसा  
क्षात्कार करिकै ही इस ज्ञानवान् पुरुष कूं मोक्षरूप परमपुरुषार्थकी प्राप्ति होवै है ॥ यातें ता आत्मज्ञान तें अनं  
तर सोध्यान करणा निष्फल ही है ॥ सो यह तुमारा कहना संभवतानहीं ॥ काहेतें इदानीं कालविषे ब्रह्म  
साक्षात्कारके विद्यमान हूँ भी ताध्यान रहित पुरुषों कूं पूर्वअज्ञान अवस्थाकी न्यांई सुखदुःखादिरूप संसारकी



तत्त्वा०

॥ ३० ॥

परि०

३

प्रतीति बनीरहेहै ॥ यातैं ताब्रह्मसाक्षात्कारमात्रकरिकै इसपुरुषकूं तामोक्षरूपपुरुषार्थकीप्राप्ति होतीनहीं ॥ किंतु ब्रह्मवेत्तापुरुषकेसमीपजाइकै श्रवणादिकोंतैं ब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरिकै यहपुरुष जबी जीवत्कालपर्यंत ताब्रह्मकेध्यानकाअभ्यासकरेहै ॥ तबीहीं इसपुरुषकूं तामोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं तामोक्षकीप्राप्ति वासतैं ज्ञानवान्पुरुषकूंभी जीवत्कालपर्यंत सोध्यान अवश्यकर्तव्यहै ॥ जोकदाचित् सोज्ञानवान्पुरुष ध्यानपरायण नहींहोवैंगा ॥ तों यथेष्टाचरणकीप्राप्तिकरिकै नरककूंहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( निःसंगतामुक्तिपदंयतीनां संगदशेषाः प्रभवन्तिदोषाः आरूढयोगोपि निपात्यतेऽधः संगेनयोगीकिमुताल्पसिद्धिः ) अर्थयह ॥ विषयासक्तबहिर्मुखजनोंकेसंगका जोपरित्याग है ताकानाम निःसंगताहै ॥ सानिःसंगताहीं संन्यासीयोंकूं मुक्तिकेप्राप्तिका मार्गहै ॥ जिसकारणतैं ता संगतैं इसपुरुषकूं कामादिकअनेकदोष उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनदोषोंकीप्राप्तितैं ज्ञानवान्पुरुषभी अधःपतन होवैहै ॥ तों मुमुक्षुजनकी क्यावार्त्ताहै इति ॥ यातैं तायथेष्टाचरणकीनिवृत्तिकरणेवासतैं संशयविपरीतभावनातैंरहितज्ञानवान्पुरुषोंकूंभी जीवत्कालपर्यंत सोब्रह्मकाध्यान अवश्यकरणेयोग्यहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ संशयविपरीतभावनातैंरहित ज्ञानवान्पुरुषकूं ताध्यानकरणेकाविधि नहींहै ॥ काहेतैं जि सपुरुषकूं दृढअध्यासपूर्वक देहाभिमानहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूंहीं आपणेआत्माविषे कर्तृत्वबुद्धि होवैहै ॥ और सोआत्माविषेकर्तृत्वबुद्धिवालापुरुषहीं शास्त्रकेविधिनिषेधका अधिकारीहोवैहै ॥ जैसे अज्ञानी पुरुषहैं ॥ और ज्ञानवान्पुरुषकूं तादेहाभिमानकेअभावतैं साकर्तृत्वबुद्धि हैनहीं ॥ यातैं सोज्ञानवान् पुरुष ताशास्त्रकेविधिनिषेधका अधिकारीनहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सोदेहाभिमान दोषकारकाहोवैहै ॥ एकतों कर्मजन्यहोवैहै ॥ दूसरा भ्रांतिजन्यहोवैहै ॥ तहां कर्मजन्यदेहाभिमानतों ताकर्मकेनाशतैंअनं

॥ १६४ ॥

तरहीं निवृत्तहोवैहै ॥ और दूसरा भ्रांतिजन्यदेहाभिमानतों अज्ञानकालविषेरेहै ॥ जबी आत्मज्ञानक



तरहीं निवृत्तहोवैहै ॥ और दूसरा भ्रांतिजन्यदेहाभिमानतौ अज्ञानकालविषेरहेहै ॥ जबी आत्मज्ञानकरिकै ताअज्ञानकीनिवृत्तितैं भ्रांतिकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी सोभ्रांतिजन्यदेहाभिमानभी निवृत्तहोइजावै है ॥ ऐसेदेहाभिमानतैरहितहोणेतैं कर्तृत्वबुद्धितैरहित जोज्ञानवानहै ॥ तिसज्ञानवान्पुरुषतैं शास्त्रप्रतिपादितसर्वअधिकार निवृत्तहोवैहै ॥ ऐसेज्ञानवान्पुरुषकूं सोध्यानविधि कैसेसंभवैगा ॥ किंतु नहींसंभवैगा ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीविद्यारण्यस्वामीनैं पंचदशीग्रंथविषे तिनज्ञानवान्पुरुषोंकाअनुभव कहाहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( व्याचक्षतांतेशास्त्राणि वेदानध्यापयंतुवा येऽत्राधिकारिणोमर्त्या नाधिकारोऽक्रियत्वतः ॥ १ ॥ शृण्वंस्त्वज्ञाततत्त्वास्ते जानन्कस्माच्छृणोम्यहं मन्यंतांसंशयापन्ना नमन्येऽहमसंशयः ॥ २ ॥ विपर्यस्तोनिदिध्यासेत्किं ध्यानमविपर्यये ) अर्थयह ॥ जेपुरुष कर्तृत्वबुद्धिवालेहोणेतैं अधिकारीहैं ॥ ते पुरुषहीं शास्त्रोंकूं व्याख्यानकरैं ॥ तथा वेदोंकूं पढावैं ॥ और मैतों अक्रियहूं ॥ यातैं हमारेकूं कोईभी अधिकार नहींहै ॥ और जिनपुरुषोंनैं प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकूं नहींजान्याहै ॥ तेपुरुष वेदांतशास्त्रकेश्रवणकूं करो ॥ और मैतों ताप्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकूं अपरोक्षजानताहूं ॥ यातैं मैं किसवासतै श्रवणकूं करूं ॥ और जेपुरुष ताआत्माविषेसंशयवालेहैं ॥ तेपुरुष तासंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै मननकूं करो ॥ और मैतों सर्वसंशयोंतैरहितहूं ॥ यातैं मैं किसवासतै मननकूं करूं ॥ और जेपुरुष विपरीत भावनावालेहैं ॥ तेपुरुषतों ताविपरीतभावनाकीनिवृत्तिवासतै निदिध्यासनकूं करो ॥ और मैतों ताविपरीतभावनातैरहितहूं ॥ यातैं हमारेकूं ताध्यानकरणेका क्याप्रयोजनहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ज्ञानवान्पुरुषकूं जो ध्यानकीकर्तव्यता नहींमानोंगे ॥ तों आत्मज्ञानतैं अनंतर ताध्यानकाविधानकरणेहारी जा ( तमेव धीरोविज्ञायप्रज्ञांकुर्वीतब्राह्मणः ) यहपूर्वउक्तश्रुतिहै सा अप्रमाणहोवैगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सा



तत्त्वा०

॥ ३१ ॥

श्रुति आत्माके अपरोक्षज्ञानतैं अनंतर ता ध्यानका विधान करती नहीं ॥ किंतु वेदांतके श्रवणमात्रजन्य ब्रह्मके अपरोक्षज्ञानतैं अनंतरहीं ता ब्रह्मके अपरोक्षज्ञानकी प्राप्तिवासतैं तानिदिध्यासनरूप ध्यानका विधान करे ॥ यातैं ता श्रुतिकूंभी अप्रमाणता होवै नहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ब्रह्मसाक्षात्कारतैं अनंतर ज्ञानवान् पुरुषकूं जो ध्यानकी कर्तव्यता नहीं मानोंगे ॥ तों ता ज्ञानवान् पुरुषकूं चित्तकी बहिर्मुखता करिकै यथेष्टा चरणकी प्राप्ति होवैगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सो ज्ञानवान् पुरुष भ्रांतिजन्य देहाभिमानतैं रहित है ॥ यातैं यथेष्टा चरणविषे प्रवृत्त होवै नहीं ॥ ता देहाभिमानवाले पुरुषहीं यथेष्टा चरणविषे प्रवृत्त होवै हैं ॥ तात्पर्य यह ॥ जो पुरुष मुमुक्षुदशाविषे भी शमदमादिकों करिकै ता यथेष्टा चरणतैं निवृत्त होवै है ॥ सो पुरुष ज्ञानदशाविषे ता यथेष्टा चरणविषे कैसे प्रवृत्त होवैगा ॥ किंतु नहीं प्रवृत्त होवैगा ॥ और ( निःसंगता मुक्तिपदं यतीनां ) यह पूर्व उक्त वचन तों आत्मज्ञानतैं रहित साधक पुरुषविषयक है ॥ तत्त्ववेत्ता सिद्ध पुरुषविषयक सो वचन नहीं है ॥ यातैं ता वचनतैं ध्यानतैं रहित ज्ञानवान् पुरुषका अधःपतन सिद्ध होवै नहीं ॥ किंवा ज्ञानवान् पुरुषकूं ध्यानका विधि नहीं है यह उक्त अर्थ श्रीव्यास भगवान् नैं भी ब्रह्मसूत्रोंविषे कथन कन्या है ॥ तहां सूत्र ॥ ( अनुज्ञापरिहारौ देहसंबंधाज्ज्योतिरादिवत् ) अर्थ यह ॥ यह कार्य अवश्यकरणे योग्य है या प्रकाशका जो शास्त्रकृत विधि है ताका नाम अनुज्ञा है ॥ और यह कार्य नहीं करणे योग्य है या प्रकारका जो शास्त्रकृत निषेध है ताका नाम परिहार है ॥ सो अनुज्ञापरिहाररूप विधिनिषेध इस पुरुषकूं आत्मज्ञानतैं पूर्व देहाभिमानतैं प्राप्त होवै है ॥ और आत्मज्ञानकालविषे ता देहाभिमानके निवृत्त हुए ता ज्ञानवान् पुरुषकूं सो शास्त्रकृत विधिनिषेध प्राप्त होतानहीं ॥ जैसे श्मशानका अग्नितों परित्याग कन्या जावै है ॥ और दूसरा अग्नि ग्रहण कन्या जावै है ॥ तथा जैसे मनुष्यशरीरका विष्टामूत्र परित्याग कन्या जावै है ॥ और गौशरी

परि०  
३

॥ १६५ ॥



रका विष्टामूत्र ग्रहणकन्याजावैहै ॥ तैसे देहाभिमानी अज्ञानी पुरुषों कूंतों सो शास्त्रकृत विधिनिषेध हो  
वैहै ॥ और ता देहाभिमान तैरहित ज्ञानवान् पुरुषों कूंतों सो विधिनिषेध होतानहीं इति ॥ किंवा ज्ञानवान्  
पुरुष कूंत किंचित् मात्र भी कर्तव्य नहीं है यह उक्त अर्थ श्री भगवान् नै भी गीता विषे ( यस्त्वात्मरतिरेव स्यादा  
त्मतृप्तश्च मानवः आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ १ ॥ नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेन ह कश्चन न चा  
स्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥ २ ॥ ) इन दो श्लोकों करिकै कथन कन्या है ॥ किंवा यह उक्त अर्थ पुराण  
विषे भी कथन कन्या है ॥ तहां श्लोक ॥ ( ज्ञाना मृतेन तृप्तस्य कृतकृत्यस्य योगिनः नैवास्ति किंचित् कर्तव्य  
मस्ति चेन्न स तत्त्ववित् ) अर्थ यह ॥ जो पुरुष अहं ब्रह्मास्मि या प्रकारके आत्मज्ञान रूप अमृत के पान करिकै  
तृप्त भया है ॥ या कारण तैहीं कृतकृत्य है ॥ अर्थात् जो संपादन करने योग्य था सो संपादन कन्या है जिसने ॥  
ऐसे ज्ञानवान् पुरुष कूंत किंचित् मात्र भी कर्तव्य नहीं है ॥ और जिस पुरुष कूंत किंचित् मात्र भी कर्तव्य है ॥  
सो पुरुष ज्ञानवान् ही नहीं है इति ॥ किंवा यह उक्त अर्थ श्री भगवान् भाष्यकार नै भी ( अहं ब्रह्मास्मीत्येत  
दवसाना एव सर्वे विधयः सर्वाणि च शास्त्राणि विधिप्रतिषेधमोक्षपराणि ) इत्यादिक वचन करिकै कथन कन्या  
है ॥ इस भाष्य वचन का यह अर्थ है ॥ इस पुरुष कूंत जब पर्यंत अहं ब्रह्मास्मि या प्रकारका साक्षात्कार नहीं  
उत्पन्न भया ॥ तब पर्यंत ही इस पुरुष ऊपरि सर्व विधियां हैं ॥ और विधि निषेध मोक्ष इन तीनों के प्रतिपाद  
क शास्त्र भी तब पर्यंत ही हैं ॥ और ता ब्रह्म साक्षात्कार की उत्पत्ति तै अनंतर ता ज्ञानवान् पुरुष ऊपरि ते विधियां  
भी नहीं हैं तथा ते शास्त्र भी नहीं हैं ॥ काहे तै देह इंद्रियादिकों विषे अहं मम अभिमान तैरहित जो ज्ञानवान् पु  
रुष है ॥ ता ज्ञानवान् पुरुष कूंत प्रमाता पणा संभवतानहीं ॥ और प्रमाता तै विना प्रमाण की प्रवृत्ति होती न  
हीं ॥ या तै ता ज्ञानवान् पुरुष कूंत किंचित् मात्र भी कर्तव्य नहीं है इति ॥ किंवा यह उक्त अर्थ ब्रह्म वेत्ता विद्वा



तत्त्वा०

॥ ३२ ॥

नपुरुषोंनैभी कथनकन्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( गौणमिथ्यात्मनोऽसत्वे पुत्रदेहादिबाधनात् तत्सद्ब्रह्माहमस्मीति बोधेकार्यकथंभवेत् ) अर्थयह ॥ आत्मा तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ गौणआत्मा होवैहै ॥ दूसरा मिथ्याआत्मा होवैहै ॥ तीसरा मुख्यआत्मा होवैहै ॥ तहां पुत्रभार्यादिकतौ गौणआत्मा कहे जावैहैं ॥ और अन्नमयादिकपंचकोश मिथ्याआत्मा कहेजावैहैं ॥ और तिनपंचकोशोंका अधिष्ठान रूप जो सत् चित् आनंद एकरस साक्षीआत्माहै सो मुख्यआत्मा कहाजावैहै ॥ तहां गौणआत्मा मिथ्याआत्मा इनदोनोंकेमिथ्यात्वनिश्चयहूए इसपुरुषकी तिनपुत्रभार्यादिकोंविषे तथा अन्नमयादिकपंचकोशोंविषे आत्मत्वबुद्धि निवृत्तहोइजावैहै ॥ तिसतैं अनंतर सर्वका अधिष्ठानभूत सच्चिदानंद एकरस ब्रह्म मैंहूं याप्रकारकासाक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै ॥ तासाक्षात्कारकेउत्पन्नहूए इसज्ञानवान्पुरुषकूं किंचित्मात्रभी कर्त्तव्य रहतानहीं इति ॥ किंवा इसउक्तअर्थकूं ( एषनित्योमहिमाब्राह्मणस्यनवर्द्धतेकर्मणानोकनीयान् । एतद्बुद्वाबुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्चभारत ) इत्यादिकअनेकश्रुतिस्मृतियां कथनकरैहैं ॥ या तैं संशयविपरीतभावनातैंरहित ज्ञानवान्पुरुषकूं किंचित्मात्रभी ध्यानादिकोंकीकर्त्तव्यता नहींहै ॥ परंतु सोज्ञानवान्पुरुषभी जबी ध्यानपरायण होवैहै ॥ तबी तिसकूं ब्रह्मानंदरूपदृष्टसुख अधिकहोवैहै ॥ और सोज्ञानवान्पुरुष जबी ध्यानपरायण नहींहोवैहै ॥ तबी तिसकूं बाह्यव्यवहारकीबाहुल्यताकरि कै केवल दृष्टदुःखमात्रहीं होवैहै ॥ कोईसंशयविपरीतभावनाकीउत्पत्तिकरिकै मोक्षकाप्रतिबंध होतानहीं ॥ काहेतैं बहुकाल श्रवणमनननिदिध्यासनकरिकै निश्चयकन्याहै ब्रह्मात्मतत्त्वजिसनैं ऐसाजो करत लामलककीन्याई आपणेअद्वयानंदस्वरूपकूंअनुभवकरणेहारा ज्ञानवान्पुरुषहै ॥ तिसज्ञानवान्पुरुषकूं प्रारब्धकर्मकेवशतैं किंचित्मात्र बाह्यव्यवहारकरिकै तेसंशयविपरीतभावनादिक संभवतेनहीं ॥ यातैं

परि०

३

॥ १६६ ॥

प्रारब्धकर्मकेवशतैं खानपानादिकव्यवहारकहूएभी सोज्ञानवान्पुरुषकूं मोक्ष अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ तामो



प्राणविक्रमकेवशतै किंचित्मात्रं Digitized by www.jagadgururambhadracharya.org तेसंश्रमविप्रदीतभावनादिक संभवतेनहीं ॥ यातै

प्रारब्धकर्मकेवशतैं खानपानादिकव्यवहारोंकेहूएभी ताज्ञानवान्पुरुषकूं मोक्ष अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ तामोक्षका कोईभी प्रतिबंध करिसकतानहीं इति ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवान्नेंभी ब्रह्मसूत्रोंविषे कहीहै ॥ तहांसूत्र ॥ ( तन्निष्ठस्यमोक्षोपदेशात् ) अर्थयह ॥ तिसब्रह्मात्माविषेहैनिष्ठाजिसकी ऐसाजो ज्ञानवान्पुरुषहै ॥ तिसज्ञानवान्पुरुषकूंहीं श्रुतिस्मृतिनैं मोक्षकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( तस्यतावदेव चिरंयावन्नविमोक्षेऽथसंपत्स्ये ) अर्थयह ॥ तिसज्ञानवान्पुरुषकूं विदेहमोक्षविषे तबपर्यंतहीं विलंबहै ॥ जबपर्यंत भोगकरिकै प्रारब्धकर्मतैंरहितनहींभया ॥ ताप्रारब्धकर्मकीनिवृत्तितैंअनंतर सोज्ञानवान्पुरुष निर्विशेषब्रह्मभावरूपविदेहमोक्षकूं अवश्यप्राप्तहोवैहै इति ॥ तहांस्मृति ॥ ( यएवंवेत्तिपुरुषं प्रकृतिंचगुणैःसह सर्वथावर्त्तमानोपि नसंभूयोऽभिजायते ) अर्थयह ॥ हेअर्जुन जोपुरुष देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितआनंदस्वरूपपरमात्माकूं अहंब्रह्मास्मि याप्रकार आपणाआत्मारूपकरिकै जानेहै ॥ तथा सत्व रज तम इनतीनगुणोंसहित मायारूपप्रकृतिकूं मिथ्याजानेहै ॥ सोविद्वान्पुरुष सर्वप्रकारतैंवर्त्तमानहूआभी अर्थात् प्रबलप्रारब्धकर्मकेवशतैं कदाचित् यथेष्टाचरणकूंकरताहूआभी पुनःजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं इति ॥ इसी आपणेअभिप्रायकूं श्रीभगवान् अष्टादशेअध्यायविषे प्रगटकरताभयाहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( यस्यनाहंकृतोभावो बुद्धिर्यस्यनलिप्यते हत्वापिसइमाँलोकान्नहंतिननिबध्यते ) अर्थयह ॥ हेअर्जुन जिसज्ञानवान्पुरुषकूं मैंकर्मकाकर्त्ताहूं याप्रकारकीभावनानहींहै ॥ तथा मैं इसकर्मकेफलकूंभोगोंगा याप्रकारतैं जिसज्ञानवान्पुरुषकीबुद्धि कर्मकेफलविषे लिपायमानहोतीनहीं ॥ सोज्ञानवान्पुरुष जोकदाचित् इनसर्वलोकोंकूंहननभीकरै ॥ तोंभी ताहननक्रियाका कर्त्ता होतानहीं ॥ तथा ताहननक्रियाजन्यअनिष्टफलकेसाथिभी संबंधवाला होतानहीं इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ शेषभगवान्नेंभी कहाहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( ह



तत्त्वा०

॥ ३३ ॥

यमेधशतसहस्राण्यथकुरुतेब्रह्मघातलक्षाणि परमार्थविन्नपुण्यैर्नचपापैःस्पृशतेविमलः ) अर्थयह ॥ अहं ब्रह्मास्मि याप्रकारकेसाक्षात्कारवाला जोतत्त्ववेत्तापुरुषहै ॥ सोतत्त्ववेत्तापुरुष जोकदाचित् शतसहस्र अश्वमेधयज्ञोंकूंकरीहै ॥ अथवा लक्षब्राह्मणोंकूंहननकरेहै ॥ तौभी सोतत्त्ववेत्तापुरुष ताअश्वमेधजन्यपुण्योंकरिकै तथाताब्रह्महत्याजन्यपापोंकरिकै लिपायमानहोतानहीं ॥ जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष विमलहै ॥ अर्थात् अविद्यादिकमलतैरहितहै इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ श्रीविद्यारण्यस्वामीनैंभी कथन कन्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( पूर्णबोधेतदन्यौद्वौ प्रतिबद्धौयदातदा मोक्षोविनिश्चितःकिंतु दृष्टदुःखंननश्यति ) अर्थयह ॥ वैराग्य १ बोध २ उपरति ३ इनतीनोंविषे इसपुरुषकूं जबी आत्माकासाक्षात्काररूपबोधतौ पूर्णहोवैहै ॥ और किसीपापप्रारब्धकेवशतैं वैराग्य उपरति यहदोनों प्रतिबद्धहोवैहैं ॥ तबी इसपुरुषकूं मोक्षतौ निश्चयकरिकैहोवैहै ॥ परंतु तावैराग्यउपरतिकेअभावतैं इसपुरुषका दृष्टदुःख निवृत्त होतानहीं इति ॥ ईहांयहतात्पर्यहै ॥ वैराग्य बोध उपरति यहतीनों परस्परसहायकहोणेतैं विशेषकरिकैतौ एकठेहीरहेहैं ॥ परंतु कोईस्थलविषे इनतीनोंका परस्पर वियोगभीहोवैहै ॥ तहां महान्तपकरिकैयुक्त तथापरमेश्वरकेअनुग्रहवाला ऐसाजो उत्तमअधिकारीहै ॥ तिसविषेतौ तेतीनों एकठेहीरहेहैं ॥ और मध्यमअधिकारीविषे किसीपापप्रारब्धकेवशतैं तिनोंका वियोगभीहोवैहै ॥ तावियोगविषेभी इतनाभेदहै ॥ जिसपुरुषकूं वैराग्य उपरति यहदोनोंतौ पूर्णहोवैहैं ॥ और आत्मसाक्षात्काररूपबोध प्रतिबद्ध होवैहै ॥ तिसपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्ति होतीनहीं ॥ किंतु तिसतपकेबलतैं उत्तमलोककीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जिसपुरुषकूं सोबोधतौ पूर्णहोवैहै ॥ और किसीपापप्रारब्धकेवशतैं वैराग्य उपरति यहदोनों प्रतिबद्ध होवैहैं ॥ तिसपुरुषकूं मोक्षतौ अवश्यहोवैहै ॥ परंतु दृष्टदुःख निवृत्तहोतानहीं इति ॥ अब प्रसं

परि०  
३

॥१६७॥

गते वैराग्य बोध उपरति इनतीनोंके साधन तथास्वरूप तथाफल तथापूर्णताकाअवधि यहचारों नि



गते वैराग्य बोध उपरति इनतीनोंके साधन तथास्वरूप तथाफल तथापूर्णताका अवधि यहचारों नि  
रूपणकरेहैं ॥ तहां इसलोकके तथापरलोकके विषयोंविषे सातिशय अनित्यता आदिकदोषोंकी जा  
दृष्टिहै ॥ सादोषदृष्टितौ वैराग्यका साधनहै ॥ और इसलोकपरलोककेविषयोंकेत्यागकी जाइच्छाहै  
सो वैराग्यका स्वरूपहै ॥ और विनाप्रयत्नतैप्राप्तहूएभोगोंविषेभी जोचित्तकी अदीनताहै सो वैराग्य  
का फलहै ॥ और सर्वलोकोंतैउत्कृष्टजोब्रह्मलोकहै तिसकूंभी तृणकीन्यांई तुच्छजानणा यह वैराग्यके  
पूर्णताका अवधिहै इति ॥ और श्रवण मनन निदिध्यासन यहतीनों ताबोधके साधनहैं ॥ और मिथ्या  
देहादिकोंतै जोप्रत्यक्आत्माकाविवेचनहै ॥ सो बोधका स्वरूपहै ॥ और अहंकारादिकोंकेसाथि आ  
त्माकातादात्म्यअध्यासरूपग्रंथिका जो पुनः अनुदयहै सो ताबोधका फलहै ॥ और जैसे अज्ञानीपुरु  
षोंकूं देहविषे दृढआत्मत्वबुद्धिहोवैहै ॥ तैसे परमात्माविषे जा दृढआत्मत्वबुद्धिहै सो ताबोधकेपूर्णताका  
अवधिहै इति ॥ और यमनियमादिक उपरतिके साधनहैं ॥ और मनकेसर्ववृत्तियोंकाजोनिरोधहै सो  
उपरतिका स्वरूपहै ॥ और लौकिकवैदिकसर्वव्यवहारोंका जोअभावहै सो ताउपरतिका फलहै ॥ और  
सुष्ठुप्तिकीन्यांई सर्वपदार्थोंकी जाविस्मृतिहै सो ताउपरतिकेपूर्णताका अवधिहै इति ॥ तहां असंभाव  
नाविपरीतभावनातै जोरहितपणाहै यहहीं ताब्रह्मसाक्षात्काररूपबोधकेपूर्णताका अवधिहै ॥ सोबोध  
केपूर्णताका अवधि विष्णुपुराणविषे पराशरमुनिनैभी कहाहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( अहंहरिःसर्वमिदंजनाई  
नो नान्यत्ततःकारणकार्यजातं इदंमनोयस्यनतस्यभूयो भवोद्भवाद्भृङ्गदाभवंति ) अर्थयह ॥ मैं तथाय  
हसर्वजगत् परमात्मरूपहींहै ॥ तिसपरमात्मातैभिन्न कोईभी कारण तथाकार्य हैनहीं ॥ इसप्रकारकी  
सर्वात्मबुद्धि जिसपुरुषकूं प्राप्तभईहै ॥ तिसपुरुषकूं पुनः संसारतैउत्पन्नभये शीतउष्णमानअपमानादि



तत्त्वा०

॥ ३४ ॥

कद्वंद्वरूपरोग प्राप्तहोतेनहीं इति ॥ किंवा यहबोधकेपूर्णताकाअवधि स्कंदपुराणविषेस्थितब्रह्मगीताविषे ब्रह्माकेप्रति महादेवनैभी कहाहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( अहंनिसर्वनचकिंचिदन्यन्निरूपणायामनिरूपणायां इयं हि वेदस्य पराहिनिष्ठा ममानुभूतिश्च न संशयश्च ) अर्थयह ॥ मैंही सर्वजगतरूपहूं ॥ मेरेतैंभिन्न को ईभीवस्तुनहींहै ॥ याप्रकारका जोसर्वात्मभावहै ॥ यहहीं सर्ववेदोंका परमतात्पर्यहै ॥ और हमाराभी यहहींअनुभवहै ॥ इससर्वात्मभावविषे तुमनै कदाचित्भी संशयनहींकरणा इति ॥ किंवा यहबोधकेपूर्णताकाअवधि उपदेशसहस्रीग्रंथविषे आचार्योंनैभी कथनकन्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( देहात्मज्ञानवज्ज्ञानं देहात्मज्ञानबाधकं आत्मन्येव भवेद्यस्य सनेच्छन्नपि मुच्यते ) अर्थयह ॥ जैसे अज्ञानीपुरुषोंकूं आपणेदेहविषे अहंमनुष्यः याप्रकारका दृढज्ञानहोवैहै ॥ तैसे जिसपुरुषकूं प्रत्यक्आत्माविषे अहंब्रह्मास्मि या प्रकारका संशयविपरीतभावनातैंरहित दृढज्ञान भयाहै ॥ जोज्ञान तादेहात्मज्ञानका नाशकरणेहाराहै ॥ ऐसेज्ञानवालापुरुष मोक्षकीनहींइच्छाकरताहूआभी अवश्य मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ किंवा यहबोधकेपूर्णताकाअवधि श्रीविद्यारण्यस्वामीनैभी तृप्तिदीपविषे कहाहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( असंदिग्धाविपर्यस्त बोधो देहात्मनीक्ष्यते तद्वदत्रेति निर्णेतुमयमित्यभिधीयते ) अर्थयह ॥ लौकिकपुरुषोंकूं आपणेदेहरूपआत्माविषे जैसे संशयविपरीतभावनातैंरहित मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं याप्रकारकाज्ञान देखणेविषेओवैहै ॥ तैसे इसअधिकारीपुरुषनै मुक्तिकीसिद्धिवासतै प्रत्यक्आत्माविषे संशयविपरीतभावनातैंरहित अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकाबोधहीं संपादनकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकारके निर्णयकरणेवासतैहीं श्रुतिविषे अयं यह पद कथनकन्याहै ॥ साश्रुति आगेकथनकरेंगे इति ॥ इत्यादिक अनेक श्रुतिस्मृतिआचार्यवाक्यरूप प्रमाणोंकरिकै सोबोधकेपूर्णताकाअवधि सिद्धहै ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया ॥ पूर्वउक्त विवेकादिकच

परि०

३

॥ १९६ ८ ॥



तुष्टयसाधनसंपन्नपुरुषकूं श्रवणमनननिदिध्यासनकरिके अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका ब्रह्मसाक्षात्कार हो  
 वैहै ॥ ताब्रह्मसाक्षात्कारतें अविद्याकी निवृत्ति तथा ब्रह्मभावरूपमुक्ति होवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ब्रह्म  
 साक्षात्कारतें इसपुरुषकूं अविद्याकी निवृत्ति तथा ब्रह्मभावरूपमुक्ति होवैहै ॥ इसअर्थविषे कौनप्रमाण  
 है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इसअर्थकूं साक्षात्वेदकी श्रुति तथा स्मृति कथनकरेहैं ॥ तहां श्रुति ॥ ( त  
 मेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति । तरतिशोकमात्मवित् । ब्रह्मविद्वद्ब्रह्मैव भवति । एवमेवैष संप्रसादोऽस्माच्छरीरात्स  
 मुत्थाय परं ज्योतिरुपसंपद्यस्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते । स उत्तमः पुरुषः । आत्मानं चेद्विजानीयादयमस्मीति  
 पूरुषः किमिच्छन्कस्य कामाय शरीरमनुसंज्वरेत् । यत्पूर्णानंदैकबोधस्तद्ब्रह्माहमस्मीति कृतकृत्यो भवति ) अ  
 र्थयह ॥ यह अधिकारी पुरुष तिसपरमात्माकूं अहंब्रह्मास्मि याप्रकार साक्षात्कारकरिके संसारके कारण  
 भूत अज्ञानरूपमृत्युकूं नाशकरेहै ॥ और आत्माके साक्षात्कारवाला पुरुष शोककूं तरेहै ॥ अर्थात् संसार  
 के कारणरूप अज्ञानकूं नाशकरेहै ॥ और ब्रह्मके साक्षात्कारवाला पुरुष ब्रह्मरूपही होवैहै ॥ और यह संप्र  
 सादनामाजीव विचारतें स्थूल सूक्ष्म शरीरके अभिमानकूं परित्यागकरिके अहंब्रह्मास्मि याप्रकारतें परब्रह्म  
 कूं आपणा आत्मारूप जानिके तापरब्रह्मरूपही होवैहै ॥ और जो अधिकारी ब्रह्मसाक्षात्कारकरिके ब्रह्म  
 रूपहूआहै ॥ सो अधिकारी उत्तमहै तथा पुरुषहै ॥ तहां ब्रह्मसाक्षात्कारकरिके निवृत्त होइ गयाहै अज्ञान  
 रूपतम जिसका ताका नाम उत्तमहै ॥ और सर्वत्रपूर्णकानाम पुरुषहै ॥ और नित्य अपरोक्षरूप तथा  
 सर्वका साक्षीरूप परमात्मा मैंहूं याप्रकारतें जबी कोई पुरुष प्रत्यक्ष आत्माकूं साक्षात्कारकरेहै ॥ तबी सो  
 ज्ञानवान् पुरुष किसकी इच्छा करताहूआ किसके वासतै शरीरकूं आश्रय करिके तपायमान होवैगा ॥ किंतु  
 नहीं तपायमान होवैगा ॥ और जो ब्रह्म अपरिच्छिन्न आनंदरूपहै तथा एकहै तथा बोधरूपहै सो ब्रह्म मैंहूं



तत्त्वा०

॥ ३५ ॥

याप्रकारकेज्ञानवालापुरुष कृतकृत्यहीहोवैहै इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ गीताविषे श्रीकृष्णभगवान्नेभी कहाहै ॥ ( एतदुध्वाबुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्चभारत । ज्ञानीत्वात्मैवमेतत् ) अर्थयह ॥ हेअर्जुन इसब्रह्मात्मतत्त्वकूं अहंब्रह्मास्मि याप्रकार साक्षात्कारकरिकै यहपुरुष बुद्धिमान्होवैहै तथाकृतकृत्यहोवैहै ॥ और ज्ञानवान्पुरुष मैंपरमेश्वरका आत्मारूपहीहै इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ शेषभगवान्नेभी कहाहै ॥ तहां श्लोक ॥ ( वृक्षाग्राच्युतपादोयद्वदनिच्छन्नपिक्षितौपतति तद्वद्गुणपुरुषज्ञोऽनिच्छन्नपिकेवलीभवति ) अर्थयह ॥ जैसे वृक्षकेऊपरितेंगिड्याहूआ पुरुष भूमिविषेपतनकी नहींइच्छाकरताहूआभी ताभूमिविषे अवश्य पडेहै ॥ तैसे आत्मसाक्षात्कारवान्पुरुष मोक्षकीनहींइच्छाकरताहूआभी अवश्य मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इत्यादिक अनेकश्रुतिस्मृतिवचन ब्रह्मसाक्षात्कारतें अविद्याकीनिवृत्ति तथाब्रह्मभावरूपमुक्तिकीप्राप्ति कथनकरेहैं ॥ यातें विचारकन्येहूएतत्त्वमसिआदिकमहावाक्यतेंउत्पन्नहूए अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेसाक्षात्कारकरिकै इसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं नित्यनिरतिशय अखंड एकरस आनंद ब्रह्मभावरूपमुक्ति प्राप्तहोवैहै यहसिद्धभया इति ॥ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्धनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृततत्त्वानुसंधाने तृतीयःपरिच्छेदःसमाप्तः ॥ ३ ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

इतिश्रीस्वामिचिद्धनानंदगिरिकृतप्राकृततत्त्वानुसंधाने तृतीयःपरिच्छेदःसमाप्तः ॥ ३ ॥

परि०  
३

॥ १६९ ॥



अथ श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतप्राकृत  
तत्त्वानुसंधानेचतुर्थपरिच्छेदप्रारंभः ॥ ४ ॥



तत्त्वा०

॥ १ ॥

परि०

४

॥ ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्यभ्योनमः ॥  
 अथ चतुर्थपरिच्छेदप्रारंभः ॥ तहां पूर्व तृतीयपरिच्छेदके अंतविषे ब्रह्मसाक्षात्कारतैं मुक्तिकी प्राप्ति कथनक  
 री ॥ सामुक्ति जीवन्मुक्ति १ विदेहमुक्ति २ इसभेदकरिकैं दो प्रकारकी होवैहै ॥ तहां केईकग्रंथकार जी  
 वन्मुक्तिकूं अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु एकविदेहमुक्तिहीं मानेहैं ॥ तिनोंकेमतकेखंडनकरणेवासतैं प्र  
 थम तिनोंकामत निरूपणकरेहैं ॥ ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकैं इसविद्वान्पुरुषकूं एकविदेहमुक्तिहीं होवैहै ॥  
 जीवन्मुक्ति होतीनहीं ॥ काहेतैं ताजीवन्मुक्तिविषे कोईभीप्रमाण नहींहै ॥ तथा ताजीवन्मुक्तिका को  
 ईलक्षणभी संभवतानहीं ॥ तथा ताजीवन्मुक्तिका कोईसाधनभी संभवतानहीं ॥ तथा ताजीवन्मुक्ति  
 का कोईअधिकारी संभवतानहीं ॥ तथा ताजीवन्मुक्तिका कोईफलरूपप्रयोजनभी संभवतानहीं ॥ और  
 लक्षणप्रमाणादिकोंतैंहीं वस्तुकीसिद्धिहोवैहै ॥ तिनलक्षणप्रमाणादिकोंकाअभावहोणेतैं साजीवन्मुक्ति  
 अंगीकारकरणेयोग्यनहींहै ॥ अब प्रमाणकेअभावतैं ताजीवन्मुक्तिकेअभावकूं सिद्धकरेहैं ॥ ताजीवन्मु  
 क्तिविषे कोईभी श्रुतिस्मृतिवचन प्रमाणनहींहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ( विमुक्तश्चविमुच्यते । सजीवन्मु  
 क्तउच्यते । स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ) इत्यादिक श्रुतिस्मृतिवचनहीं ताजीवन्मुक्तिविषे प्रमाणरूपहैं ॥ यातैं  
 ताजीवन्मुक्तिविषे प्रमाणकाअभावकहणा असंगतहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तिनश्रुतिस्मृतिवचनों  
 का ब्रह्मविद्याकीस्तुतिकरिकैं ब्रह्मविषेहीं तात्पर्यहै ॥ ताजीवन्मुक्तिविषे तात्पर्यनहींहै ॥ यातैं तिनव  
 चनोंतैं ताजीवन्मुक्तिकीसिद्धि होइसकैनहीं ॥ अब लक्षणकेअभावतैं ताजीवन्मुक्तिकेअभावकूं सिद्धक  
 रेहैं ॥ तहां अज्ञानकेनिवृत्तिकानाम जीवन्मुक्तिहै ॥ अथवा ब्रह्मभावकानाम जीवन्मुक्तिहै ॥ अथवा  
 जीवतअवस्थाविषे कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूपबंधकीनिवृत्तिकानाम जीवन्मुक्तिहै ॥ तहां प्रथमलक्षण वा द्वि

॥ १७० ॥

तीयलक्षण जोअंगीकारकरो ॥ सो समझलामहीं ॥ किंसाकारणसे विदेहमुक्तिविषेभी साअज्ञानकीनि  
 वृत्ति नष्टहोनेवाली है ॥ तद्विदेहमुक्तिहै ॥ तद्विदेहमुक्तिहै ॥ तद्विदेहमुक्तिहै ॥ तद्विदेहमुक्तिहै ॥



तीयलक्षण जो अंगीकार करो ॥ सो संभवतानहीं ॥ जिस कारण तें विदेहमुक्तिविषे भी सा अज्ञानकी निवृत्ति तथा सो ब्रह्मभाव विद्यमानहीं है ॥ ता विदेहमुक्तिविषे तिन दोनों लक्षणोंकी अतिव्याप्ति होवैगी ॥ और अतिव्याप्ति दोषवाला लक्षण आपने लक्ष्य अर्थकी सिद्धि करि सकतानहीं ॥ या तें ता प्रथम द्वितीय लक्षण तें ता जीवन्मुक्तिकी सिद्धि होइ सकती नहीं ॥ और जो तृतीयलक्षण अंगीकार करो ॥ सो भी संभवतानहीं ॥ काहे तें जीवत् अवस्थाविषे भोग देणे हारे प्रारब्ध कर्म के विद्यमान हूए ता कर्तृत्वादिक बंधकी निवृत्ति संभवती नहीं ॥ या तें सो तृतीयलक्षण भी असंभव दोषवाला होने तें ता जीवन्मुक्तिकी सिद्धि करि सकै नहीं ॥ किंवा जीवत् अवस्थाविषे सो कर्तृत्वादिक बंध साक्षी चैतन्य तें निवृत्त करते हो ॥ अथवा अहंकार तें निवृत्त करते हो ॥ तहां जो प्रथम पक्ष अंगीकार करो सो संभवतानहीं ॥ काहे तें ता साक्षी चैतन्यविषे वास्तव तें तौ सो बंध है नहीं ॥ किंतु अंतःकरण के तादात्म्य अध्यास तें सो बंध प्रतीत होवै है ॥ जबी आत्मसाक्षात्कार करि कै तिस तादात्म्य अध्यासकी निवृत्ति होवै है ॥ तबी सो आरोपित बंध भी निवृत्त होइ जावै है ॥ या तें ता साक्षी तें बंधकी निवृत्तिकरणे वास तै जीवन्मुक्तिका संपादन करणा व्यर्थ ही है ॥ और जो द्वितीय पक्ष अंगीकार करो सो भी संभवतानहीं ॥ काहे तें भोग के देणे हारे प्रारब्ध कर्म के विद्यमान हूए ता अहंकारगत स्वाभाविक बंधकी निवृत्ति संभवती नहीं ॥ तात्पर्य यह ॥ जिस धर्मीका जो स्वाभाविक धर्म होवै है ॥ सो स्वाभाविक धर्म ता धर्मीके विद्यमान हूए निवृत्त होतानहीं ॥ जैसे अग्निका उष्णत्व धर्म तथा जलका द्रवत्व धर्म ता अग्नि जल रूप धर्मीके विद्यमान हूए निवृत्त होतानहीं ॥ तैसे अहंकारका स्वाभाविक धर्म रूप सो कर्तृत्वादिक बंध भी ता अहंकार रूप धर्मीके विद्यमान हूए निवृत्त होवै गानहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ता अहंकारगत कर्तृत्वादिक बंधका यद्यपि स्वरूप तें नाश नहीं होता ॥ तथापि योगाभ्यास करि कै ता बंधका अभिभव हो



तत्त्वा०

॥ २ ॥

परि०

४

वैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे आत्मज्ञानतैं सोप्रारब्धकर्म प्रबलहोवैहै ॥ तैसे तायोगाभ्यासतैंभी सोप्रारब्धकर्म प्रबलहोवैहै ॥ और ताप्रारब्धकर्मकाभोग कर्तृत्वादिकअभिमानतैंविना संभवतानहीं ॥ यातैं ताप्रबलप्रारब्धकर्मकेविद्यमानहूए सोयोगाभ्यास ताकर्तृत्वादिकबंधका अभिभव करिसकैंगान हीं ॥ यातैं जीवत्अवस्थाविषे कर्तृत्वादिकबंधकेनिवृत्तिकानाम जीवन्मुक्तिहै यहउक्त जीवन्मुक्तिका लक्षण संभवतानहीं इति ॥ अब साधनकेअभावतैं ताजीवन्मुक्तिकेअभावकूं सिद्धकरेहैं ॥ तहां जीवन्मुक्ति कूंमानणेहारेवादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताजीवन्मुक्तिका आत्मज्ञान साधनहै अथवा योग साधन है ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरो सो संभवतानहीं ॥ काहेतैं सोआत्मज्ञान विदेहमुक्तिकाहीं साधन है ॥ ताजीवन्मुक्तिका साधननहीं ॥ और ( ज्ञानादेवतु कैवल्यं ) इत्यादिकश्रुतियोंनैं आत्मज्ञानतैं मुक्तिकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ कोईजीवन्मुक्तिकीप्राप्ति कथनकरीनहीं ॥ यातैं सोआत्मज्ञान विदेहमुक्ति काहीं साधनहै ॥ तैसे द्वितीयपक्षभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं जैसे श्रवणादिक आत्मज्ञानकेसाधनहैं ॥ तैसे सोयोगभी आत्मज्ञानकाहीं साधनहै ॥ यातैं तायोगकूंभी जीवन्मुक्तिकीसाधनता संभवैनहीं ॥ अब अधिकारीकेअभावतैं ताजीवन्मुक्तिकेअभावकूं सिद्धकरेहैं ॥ तहां ताजीवन्मुक्तिविषे मुमुक्षुकूंतां अधिकारीपणा संभवतानहीं ॥ किंतु ज्ञानवान्कूंहीं ताजीवन्मुक्तिका अधिकारी कहणाहोवैगा ॥ सो भी संभवतानहीं ॥ काहेतैं ( ज्ञानामृतेन तृप्तस्य कृतकृत्यस्य योगिनः नैवास्ति किंचित्कर्तव्यमस्ति चेन्न सतत्त्ववित् ॥ तस्य कार्यं न विद्यते ) इत्यादिकवचनोंनैं ज्ञानवान्कूं कर्तव्यताका निषेधकन्याहै ॥ जो ज्ञानवान्कूं जीवन्मुक्तिका अधिकारी मानोंगे ॥ तों ताज्ञानवान्कूं ताजीवन्मुक्तिकेसाधनोंकीकर्तव्यता अवश्यहोवैगी ॥ ताकरिकै तिनउक्तवचनोंका विरोधहोवैगा ॥ किंवा देहाभिमानवाला पुरुषहीं क

॥१७१॥

र्ताहोवैहै ॥ और ज्ञानवान्पुरुष तादेहाभिमानतैरहितहै ॥ यातैं कर्त्तापणेतैंभीरहितहै ॥ ताकर्त्तापणके



कर्त्ताहोवैहै ॥ और ज्ञानवान्पुरुष तादेहाभिमानतैरहितहै ॥ यातैं कर्त्तापणेतैंभीरहितहै ॥ ताकर्त्तापणके  
 अभावहूए ताज्ञानवान्पुरुषकी ताजीवन्मुक्तिकेसाधनोंविषे प्रवृत्तिसंभवतीनहीं ॥ यातैं ताज्ञानवान्पुरु  
 षकूं ताजीवन्मुक्तिविषे अधिकार संभवतानहीं ॥ और अधिकारतैंविना ताजीवन्मुक्तिकेसाधनोंकाअ  
 ध्यासभी संभवतानहीं इति ॥ अब फलरूपप्रयोजनकेअभावतैं ताजीवन्मुक्तिकेअभावकूं सिद्धकरैहैं ॥  
 तहां जीवन्मुक्तिकूंमानणेहारेवादीतैं यहपूछाचाहिये ॥ ताजीवन्मुक्तिका क्याप्रयोजनहै ॥ अर्थात् प्र  
 योजनतैंविना मंदपुरुषकीभी प्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ तों बुद्धिमान्पुरुषकी ताप्रयोजनतैंविना कैसेप्रवृत्ति  
 होवैगी ॥ यातैं ताजीवन्मुक्तिकेसंपादनविषे पुरुषकीप्रवृत्तिवासतै ताजीवन्मुक्तिका कोईप्रयोजन अव  
 यकह्याचाहिये ॥ तहां उत्पन्नहूएआत्मज्ञानकारक्षण ताजीवन्मुक्तिका प्रयोजनहै ॥ अथवा दुःखकाना  
 श प्रयोजनहै ॥ अथवा स्वरूपसुखकाआविर्भाव प्रयोजनहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरो सो सं  
 भवतानहीं ॥ काहेतैं तत्त्वमसिआदिकप्रमाणकरिकैजन्य तथाअज्ञानकेनिवृत्तकरणेविषेसमर्थ जो आ  
 त्मज्ञानहै ॥ तिसआत्मज्ञानका कोईभीबाधक हैनहीं ॥ और बाधकतैंहीं रक्षणहोवैहै ॥ यातैं ताज्ञान  
 कारक्षणहीं निरूपणहोइसकतानहीं ॥ इसप्रकार दुःखकानाश तथासुखकाआविर्भाव यहदोनोंभी ताजी  
 वन्मुक्तिका प्रयोजन नहींहैं ॥ जिसकारणतैं तेदोनों आत्मज्ञानकरिकैहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ और जोवस्तु  
 जिससाधनकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ सोवस्तु तिससाधनकाहीं फलहोवैहै ॥ अन्यसाधनकाफल होतानहीं ॥  
 यातैं दुःखकानाश तथासुखकाआविर्भाव यहदोनों आत्मज्ञानकाहींफलहैं ॥ ताजीवन्मुक्तिकाफलनहीं  
 हैं ॥ इसप्रकार प्रमाण स्वरूपलक्षण साधन अधिकारी प्रयोजन इनपांचोंकेअभावहोणेतैं ताजीवन्मु  
 क्तिकाअंगीकार निरर्थकहींहै ॥ यातैं आत्मज्ञानतैं एकविदेहमुक्तिहींहोवैहै ॥ जीवन्मुक्तिहोतीनहीं



तत्त्वा०

॥ ३ ॥

परि०

४

इति ॥ इसप्रकार केईकग्रंथकार जीवन्मुक्तिकाखंडनकरिकै एकविदेहमुक्तिहीं अंगीकारकरैहैं ॥ तिनोँ केमतकेखंडनकरणेवासतै अब तामुक्तिकाविभाग वर्णनकरैहैं ॥ सापूर्वउक्तमुक्ति दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौँ विदेहमुक्ति होवैहै ॥ दूसरी जीवन्मुक्ति होवैहै ॥ यद्यपि जीवन्मुक्तितैपश्चात् विदेहमुक्तिहोवै है ॥ यातैं प्रथम ताजीवन्मुक्तिकाहीं निरूपणकरणा उचितहै ॥ तथापि साजीवन्मुक्ति विवादकरिकै प्रस्तहै ॥ यातैं ताकानिरूपण अतिविस्तारतैंहोवैहै ॥ और विदेहमुक्तिविषे किसीका विवादहैनहीं ॥ यातैं ताकानिरूपण थोडेमेंहोवैहै ॥ यातैं सूचीकटाहन्यायकरिकै प्रथम विदेहमुक्तिकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां अहंब्रह्मास्मि याप्रकारके तत्त्वज्ञानवालेपुरुषका भोगकरिकैप्रारब्धकर्मकेनाशहूए जो वर्त्तमानशरीरकानाशहै ताकानाम विदेहमुक्तिहै ॥ यहविदेहमुक्ति श्रीव्यासभगवान्नेंभी ब्रह्मसूत्रोंविषे कथनकरीहै ॥ तहांसूत्र ॥ ( भोगेनत्वितरेक्षपयित्वासंपद्यते ) अर्थयह ॥ ज्ञानवान्पुरुष सुखदुःखकेअनुभवरूप भोगतैं पुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मकानाशकरिकै शरीरनाशतैंअनंतर अखंडएकरसआनंदब्रह्मात्मरूपतैंस्थितहोवैहै ॥ पुनः जन्मकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ काहेतैं तिसज्ञानवान्पुरुषका आत्मज्ञानकरिकै अज्ञान तथासंचितकर्म नाशहोइजावैहैं ॥ और ताआत्मज्ञानकेप्रभावतैं ताज्ञानवान्पुरुषकूं आगामिपुण्यपापकर्मका स्पर्शहींहोतानहीं ॥ और प्रतिबंधरूपप्रारब्धकर्मका भोगकरिकैनाशहूएतैंअनंतर वासनासहितविक्षेप शक्तिवालाअज्ञानभी नाशहोइजावैहै ॥ यातैं जन्मकीप्राप्तिकरणेहारे संचितकर्मादिककारणकेअभाव हूए सोज्ञानवान्पुरुष पुनःजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु इसवर्त्तमानशरीरकेनाशतैंअनंतर सोज्ञानवान्पुरुष निर्विशेषब्रह्मरूपहीं होवैहै इति ॥ यह उक्तविदेहमुक्तिकास्वरूप ( तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमोक्ष्येऽथसंपत्स्ये ) इसश्रुतिनैभी कथनकन्याहै ॥ यातैं साविदेहमुक्ति श्रुतिसूत्रप्रमाणकरिकैसिद्धहै ॥ ॥

॥१७२॥

शंका ॥ ॥ जिसपुरुषकूं अनेकजन्मोंकीप्राप्तिकरणेहारा प्रारब्धकर्म विद्यमानहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं प्र



शंका ॥ ॥ जिसपुरुषकूं अनेकजन्मोंकीप्राप्तिकरणेहारा प्रारब्धकर्म विद्यमानहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं प्रथमजन्मविषे आत्मज्ञानकेउत्पन्नहूए दूसराजन्म होवैहै अथवा नहींहोवैहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जो अंगीकारकरोंगे ॥ तौ ज्ञानकूं पाक्षिकपणा होवैंगा ॥ अर्थात् ताआत्मज्ञानकूं नियमतैं जन्मनिवृत्तिकोहेतु पणा नहींहोवैंगा ॥ और दूसरापक्ष जोअंगीकारकरोंगे ॥ तौ ( नाभुक्तक्षीयतेकर्मकल्पकोटिशतैरपि ) इसवचनकाविरोध प्राप्तहोवैंगा ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहूए ॥ ईहां केईकग्रंथकारतौ ऐसा समाधान करेहैं ॥ ( यावदधिकारमवस्थितिराधिकारिकाणां ) इससूत्रविषे श्रीव्यासभगवान्नें तथाश्रीभाष्यकारोंनें यहअर्थ निरूपणकन्याहै ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे जगत्व्यवहारकेचलावणेवासतै परमेश्वरनें स्थापनकन्येजे देवतादिक अधिकारीपुरुषहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं जितनेकालपर्यंत सोअधिकार होवैहै ॥ तितनेकालपर्यंत तिनोंकीस्थितिहोवैहै ॥ मध्यविषे किसीवरशापकेवशतैं तिनअधिकारीपुरुषोंकूं जन्मांतरकीप्राप्तिहूएभी आत्मज्ञानकाबाध होतानहीं ॥ तथा ताअधिकारकीसमाप्तिकालविषे तिनोंकूं मोक्षभी अवश्यहोवैहै इति ॥ इसप्रकार जिसपुरुषका प्रारब्धकर्म अनेकजन्मकेदेणेहाराहै ॥ तिसपुरुषकूं प्रथमजन्मविषे तत्त्वमसिआदिकवाक्यप्रमाणकेबलतैं आत्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिहूएतैंअनंतर ताप्रबलप्रारब्धकर्मकेवशतैं जन्मांतरकीप्राप्तिहूएभी ताज्ञानकाबाधहोतानहीं ॥ जिसकारणतैं सोप्रारब्धकर्मकाफल ताआत्मज्ञानका विरोधीहोतानहीं ॥ जोकदाचित् सोप्रारब्धकर्मकाफल ताआत्मज्ञानकाविरोधी होताहोवै ॥ तौ देवतादिकअधिकारीपुरुषोंके आत्मज्ञानकाभी ताप्रारब्धकर्मकेफलकरिकै बाधहोणाचाहिये ॥ और तिसपुरुषकूं ताआत्मसाक्षात्कारतैं सोब्रह्मभावरूपमोक्षभी अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ताआत्मज्ञानका सोपाक्षिकपणाभी होवैनहीं ॥ तथा ( नाभुक्तक्षीयतेकर्म ) इसवचनकाभी विरोधहोवैनहीं



तत्त्वा०

॥ ४ ॥

इति ॥ और केईकग्रंथकारतों ताउक्तशंकाका यहसमाधान करेहैं ॥ ( यस्तुविज्ञानवान्भवत्यमनस्कःसदा शुचिः सतुतत्पदमाप्नोति यस्माद्भूयो न जायते ॥ य एवं वेति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते ) इत्यादिक श्रुतिस्मृतियोंनैं ज्ञानवान्पुरुषके जन्मका निषेधकन्याहै ॥ यातैं जिसपुरुषका सोप्रारब्धकर्म अनेकजन्मकाहेतुहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं ताप्रथमजन्मविषे श्रवणादिकोंतैं सोआत्मज्ञान उत्पन्नहोतानहीं ॥ किंतु अंत्यजन्मविषेहीं सोआत्मज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रीवसिष्ठभगवान् नैंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( यस्येदं जन्म पाश्चात् तमाश्वेव महामते विशंति विद्याविमला मुक्तावेणुमि वोत्तमं ) अर्थयह ॥ हेमहामतिवालाराम जिसपुरुषका यहअंत्यजन्महोवैहै ॥ तिसपुरुषविषेहीं यहनिर्मलब्रह्मविद्या प्रवेशकरेहैं ॥ जैसे उत्तमजातिवालेवेणुविषे मोती प्रवेशकरेहैं इति ॥ यातैं पूर्वउक्तदोनोंपक्षोंविषे भोगकरिकेप्रारब्धकर्मकेनाशहूए तथादेहकेपातहूए सोज्ञानवान्पुरुष ब्रह्मात्मरूपकरिकेस्थितहोवैहै यहअर्थसिद्धभया इति ॥ और केईकग्रंथकारतों ताविदेहमुक्तिका यहस्वरूप कहेहैं ॥ भावीशरीर का जो अनारंभकपणाहै ताकानाम विदेहमुक्तिहै ॥ सायहविदेहमुक्ति ज्ञानकीउत्पत्तिकेसमकालहींहोवैहै ॥ अर्थात् इसपुरुषकूं जिसकालविषे आत्मज्ञान होवैहै ॥ तिसीकालविषे साविदेहमुक्ति होवैहै ॥ काहेतैं आत्मज्ञानकरिके अज्ञानकेनिवृत्तहूए संचितकर्मकाभी नाशहोइजावैहै ॥ और सोसंचितकर्महीं भावीशरीरका आरंभक होवैहै ॥ यातैं इसपुरुषकूं आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकालविषे साभावीशरीरकाअनारंभकत्वरूपविदेहमुक्ति बनिसकेहै ॥ यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( तीर्थेश्वपच गृहेवानष्टस्मृतिरपि परित्यजन्देहं ज्ञानसमकालमुक्तः कैवल्यं याति हतशोकः ) अर्थयह ॥ श्रीकाशीआदिक तीर्थविषे अथवा चांडालकेगृहविषे शरीरकूंपरित्यागकरताहूआ ॥ तथा सन्निपातादिकदोषकेवशतैं ब्र

परि०

४

॥१७३॥



ह्यात्मस्मृतितैरहितहूआभी ज्ञानवान्पुरुष केवल्यमोक्षकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ जिसकारणतें सोतत्त्ववेत्तापुरुष  
आत्मज्ञानकेसमकालहीं मुक्तहै ॥ तथा सर्वशोकोंतैरहितहै इति ॥ तहां इतनैपर्यंत विदेहमुक्तिका निरू  
पणकन्या ॥ अब जीवन्मुक्तिका निरूपणकरैहैं ॥ तहां प्रथम ताजीवन्मुक्तिकालक्षण कहैहैं ॥ श्रवणा  
दिकोंकरिकैउत्पन्नभयाहै ब्रह्मसाक्षात्कार जिसकूं ऐसाजो विद्वत्संन्यासीहै ॥ तिसविद्वत्संन्यासीकूं जी  
वत्अवस्थाविषे जो कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूपसर्वबंधप्रतीतिकीनिवृत्तिहै ताकानाम जीवन्मुक्तिहै ॥ ॥  
शंका ॥ ॥ यहजीवन्मुक्तिकालक्षण संभवतानहीं ॥ काहेतें भोगदेणेहारेप्रारब्धकर्मकेविद्यमानहूए ज्ञा  
नवान्पुरुषकूंभी साकर्तृत्वादिकबंधकीप्रतीति अवश्यकरिकैहोवैंगी ॥ जिसकारणतें ताकर्तृत्वभोक्तृत्वबु  
द्धितैविना सोप्रारब्धकर्मकेफलकाभोग संभवतानहीं ॥ यद्यपि सोकर्तृत्वादिकबंध साक्षीआत्मातेंतों ज्ञा  
नकरिकैहींनिवृत्तहोइगयाहै ॥ तथापि जलगतद्रवत्वधर्मकीन्यांई तथाअग्निगतउष्णत्वधर्मकीन्यांई अंतः  
करणकास्वाभाविकधर्मरूप सोकर्तृत्वादिकबंध ताअंतःकरणतें निवृत्तहोणेकूंअशक्यहै ॥ यातें कर्तृत्वा  
दिकसर्वबंधप्रतीतिकेनिवृत्तिकानाम जीवन्मुक्तिहै यहलक्षण संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे  
तत्त्वज्ञानतें प्रारब्धकर्म प्रबलहोवैहै ॥ तैसे ताप्रारब्धकर्मतेंभी योगाभ्यास प्रबलहोवैहै ॥ यातें तायोगा  
भ्यासकरिकै यद्यपि ताप्रारब्धभोगकेअनुकूलकर्तृत्वादिकबंधप्रतीतिकी आत्यंतिकनिवृत्ति होतीनहीं ॥  
तथापि तायोगाभ्यासकरिकै ताकर्तृत्वादिकबंधप्रतीतिका अभिभव अवश्यहोवैहै ॥ यातें सोपूर्वउक्त जी  
वन्मुक्तिकालक्षण संभवैहै ॥ जोकदाचित् प्रारब्धकर्मतें योगाभ्यासकूं प्रबल नहींमानिये ॥ तों पुरुषप्रय  
त्नकूंहीं व्यर्थताहोवैंगी ॥ तापुरुषप्रयत्नकेव्यर्थहूए चिकित्साशास्त्रतेंआदिलैके मोक्षशास्त्रपर्यंत सर्वशा  
स्त्रोंकाआरंभ निष्फलहोवैंगा ॥ ॥ शंका ॥ ॥ योगाभ्यासकरिकै जो प्रारब्धकर्मका प्रतिबंध मानों



तत्त्वा०

॥ ५ ॥

परि०  
४

गे ॥ तौ ( नाभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्पकोटिशतैरपि ) इसवचनका विरोधहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥  
 ताप्रारब्धकर्मकेविरोधी जे योगाभ्यासादिकहैं तिनोंके नहींविद्यमानहूएहीं सोउक्तवचन सार्थक हो  
 वैहै ॥ अर्थात् जिसप्रारब्धकर्मका कोईयोगाभ्यासादिक प्रतिबंधक नहींहै ॥ सोप्रारब्धकर्म भोगतैं  
 विना निवृत्तहोतानहीं ॥ जोकदाचित् किसीउपायकरिकैभी ताप्रारब्धकर्मकाप्रतिबंध नहींहोताहोवै ॥  
 तौ प्रारब्धकर्मविषेअत्यंतभक्तिवालेवादीकूंभी शास्त्रकेवचनोंका विरोधहोवैगा ॥ सोवचन यहहै ॥  
 श्लोक ॥ ( जन्मांतरकृतंपापं व्याधिरूपेणबाधते तच्छांतिरौषधैर्दानैर्जपहोमार्चनादिभिः ) अर्थयह ॥ इ  
 सपुरुषनैं पूर्वजन्मविषे कन्याजोपापकर्महै ॥ सोपापकर्म इसपुरुषकूं इसजन्मविषे ज्वरादिकव्याधिरूप  
 करिकै दुःखकीप्राप्तिकरेहै ॥ तिसकीशांति औषधोंकरिकै तथादानोंकरिकै तथा जप होम अर्चन आ  
 दिकोंकरिकै होवैहै इति ॥ इत्यादिकवचनोंनैं ताप्रारब्धपापकर्मकेशांतिवासतै औषधादिक उपाय क  
 थनकन्येहैं ॥ तिनसर्ववचनोंका विरोधहोवैगा ॥ यातैं योगाभ्यासकरिकै ताप्रारब्धकर्मकाअभिभव सं  
 भवैहै ॥ किंवा प्रारब्धकर्मकीअपेक्षाकरिकै योगाभ्यासादिक शास्त्रीयप्रयत्नकी प्रबलता वसिष्ठभगवा  
 ननैंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( आबाल्यादलमभ्यस्तैः शास्त्रसत्संगमादिभिः गुणैःपुरुषयत्नेन सोऽर्थः  
 संप्राप्यतेहितः ) अर्थयह ॥ पुरुषप्रयत्न दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ अशास्त्रीय होवैहै ॥ दूसरा शास्त्री  
 य होवैहै ॥ तहां श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैनिषिद्ध जोप्रयत्नहै ताकानाम अशास्त्रीयप्रयत्नहै ॥ जैसे  
 चोरीहिंसादिकप्रयत्नहै ॥ और श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं विधानकन्याजोप्रयत्नहै ताकानाम शास्त्रीयप्रय  
 त्नहै ॥ जैसे यज्ञदानादिकप्रयत्नहै ॥ तहां यहपुरुष अशास्त्रीयपुरुषप्रयत्नकरिकेतौ नरककूंहीं प्राप्तहो  
 वैहै ॥ और बाल्यअवस्थातैंलैके अभ्यासकन्येजे अध्यात्मशास्त्र सत्समागम शांति दांति आदिकगुण

॥१७४॥

हैं ॥ तिनगुणोंकरिकैयुक्त दूसरेशास्त्रीयपुरुषप्रयत्नकरिकै यहपुरुष मोक्षरूपपरमपुरुषार्थकूं प्राप्तहोवैहै इ



हैं ॥ तिन गुणों करिकै युक्त दूसरे शास्त्रीय पुरुष प्रयत्न करिकै यह पुरुष मोक्ष रूप परम पुरुषार्थ कूं प्राप्त होवै है इति ॥ यह उक्त अर्थ हीं ( उच्छास्त्रं शास्त्रितं चेति पौरुषं द्विविधं स्मृतं तत्रोच्छास्त्रमनर्थाय परमार्थाय शास्त्रितं ) इस श्लोक करिकै भी कथन कन्या है ॥ यातैं योगाभ्यासरूप शास्त्रीय प्रयत्न करिकै ता प्रारब्ध कर्म का अभिभव संभवै है ॥ यातैं सो पूर्व उक्त कर्तृत्वादिक बंध प्रतीतिकी निवृत्ति रूप जीवन्मुक्तिकालक्षण निर्दोष है इति ॥ अब ता जीवन्मुक्तिके अधिकारी का निरूपण करे हैं ॥ तहां श्रवणादिकों करिकै उत्पन्न भया है ब्रह्म साक्षात्कार जिस कूं ॥ तथा चित्त के विश्रांतिकी है कामना जिस कूं ॥ ऐसा जो विद्वत्संन्यासी है सोई हीं ता जीवन्मुक्तिके अधिकारी है ॥ अर्थात् ता जीवन्मुक्तिकी प्राप्ति वासतै ताके साधन रूप मनोनाश वासना क्षय कूं करणे हारा है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ता ब्रह्म साक्षात्कार करिकै निवृत्त होइ गया है अज्ञान तथा देहाभिमान जिस का ऐसा जो विद्वत्संन्यासी है ॥ तिस कूं कोई कार्य का कर्त्ता पणा हीं संभवतान हीं ॥ ता कर्त्ता पणे तैं विना तिस विद्वत्संन्यासी कूं ता जीवन्मुक्तिके अधिकारी पणा कैसे संभवैगा ॥ किंतु नहीं संभवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ आत्मज्ञान करिकै आवरण शक्ति वाले अज्ञान के नाश हूए भी प्रारब्ध कर्म के वशतैं विक्षेप शक्ति वाले अज्ञान लेश की स्थिति सर्व ग्रंथकारों नैं अंगीकार करी है ॥ यह वार्त्ता तृतीय परिच्छेद विषे विस्तारतैं कथन करि आये हैं ॥ यातैं ता विद्वान् पुरुष कूं भी बाधितानुवृत्ति करिकै सो देहाभिमान तथा कर्त्ता पणा बनिस के है ॥ ता करिकै तिस विद्वान् पुरुष कूं जीवन्मुक्तिके अधिकारी पणा भी संभवै है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ( ज्ञाना मृतेन तृप्तस्य कृतकृत्यस्य योगिनः नैवास्ति किंचित्कर्त्तव्यमस्ति चेन्न स तत्त्ववित् । तस्य कार्य न विद्यते ) इत्यादिक पूर्व उक्त स्मृति वचनों नैं कृतकृत्य रूप ज्ञानवान् कूं सर्व कर्त्तव्यता का निषेध कन्या है ॥ जबी ज्ञानवान् पुरुष कूं भी जीवन्मुक्ति वासतै मनोनाश वासना क्षय रूप साधनों की कर्त्तव्यता मानोंगे ॥ तबी ति



तत्त्वा०

॥ ६ ॥

नवचनोंका विरोध प्राप्त होवेंगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सो ज्ञानवान् दो प्रकारका होवै है ॥ एक तो कृतोपास्ति होवै है ॥ दूसरा अकृतोपास्ति होवै है ॥ तहां जिस पुरुषनें आत्मसाक्षात्कार तै पूर्व सगुणब्रह्म के साक्षात्कार पर्यंत उपासना करी है ॥ सो ज्ञानवान् पुरुष तो कृतोपास्ति कहा जावै है ॥ और जिसनें सा उपासना नहीं करी है ॥ सो ज्ञानवान् अकृतोपास्ति कहा जावै है ॥ तहां कृतोपास्ति ज्ञानवान् कृतों ता ज्ञान तै उत्तर जीवन्मुक्ति वास तै किंचित् मात्र भी कर्त्तव्यता होती नहीं ॥ जिस कारण तै ता कृतोपास्ति ज्ञानवान् का सो मनोनाश तथा वासना क्षय पूर्व ही सिद्ध है ॥ या तै आत्मज्ञान की प्राप्ति काल विषे ही सो कृतोपास्ति पुरुष जीवन्मुक्ति कूं प्राप्त होवै है ॥ और ज्ञानवान् पुरुष के प्रति कर्त्तव्यता का निषेध करने हारे जे श्रुति स्मृति वचन पूर्व कहें हैं ॥ ते वचन भी इस कृतोपास्ति ज्ञानवान् पुरुष के प्रति ही सर्व कर्त्तव्यता का निषेध करें हैं ॥ और लौकिक वैदिक व्यापार करिके चित्त की विश्रान्ति तै रहित जो अकृतोपास्ति ज्ञानवान् है ॥ तिस कृतों ज्ञान तै उत्तर जीवन्मुक्ति के वास तै मनोनाश वासना क्षय की कर्त्तव्यता होणे तै निरंकुश कृतकृत्य पणा नहीं है ॥ या तै ता अकृतोपास्ति ज्ञानवान् कृत जीवन्मुक्ति वास तै सो मनोनाश तथा वासना क्षय अवश्य कर्त्तव्य है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ऐसे चित्त विश्रान्ति तै रहित अकृतोपास्ति पुरुष कृत आत्मज्ञान ही नहीं उत्पन्न होवेंगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ज्ञान तो प्रमाण वस्तु दोनों के अधीन होवै है ॥ या तै सर्व कृत साधारण होवै है ॥ जैसे घटादिक वस्तु के साथि चक्षु आदिक प्रमाण के संबंध हूए सर्व लोकों कृत अयं घटः यह ज्ञान समान ही होवै है ॥ तैसे तत्त्वमसि आदिक महावाक्य के श्रवण तै अहं ब्रह्मास्मि या प्रकार का ज्ञान कृतोपास्ति नामा अकृतोपास्ति नामा सर्व अधिकारीयों कृत तुल्य ही होवै है ॥ जो कदाचित् ऐस नही मानिये ॥ तौ याज्ञवल्क्य कहोल जनक अजातशत्रु इत्यादिक गृहस्थों कृत सो आत्मज्ञान नहीं होना चाहिये ॥ जो इस अर्थ विषे इष्टा

परि०

४

॥ १७५ ॥

पत्तिकरोंगे ॥ तौ तिन याज्ञवल्क्यादिकों के दृष्टांत करिके अस्मदादिक पुरुषों विषे कोई भी पुरुष की ज्ञान के



कहो जलक अजातशत्रु इत्यादिकमहत्त्वोंके सो आत्मज्ञान नहीं होना चाहिये ॥ जो इस अर्थविषे इष्टा

पत्तिकरोंगे ॥ तौं तिनयाज्ञवल्क्यादिकोंके दृष्टांत करिके अस्मदादिकपुरुषोंविषे कोईभीपुरुषकी ज्ञानके श्रवणादिकसाधनोंविषे प्रवृत्ति नहीं होवैगी ॥ अर्थात् जबी याज्ञवल्क्यादिकमहान्पुरुषोंकूंभी श्रवणादिकोंकरिके आत्मज्ञानकी उत्पत्ति नहीं भई ॥ तबी अस्मदादिकोंकूं ताज्ञानकी उत्पत्ति कैसे होवैगी ॥ या प्रकारकी असंभावना करिके किसीभीपुरुषकी श्रवणादिकोंविषे प्रवृत्ति नहीं होवैगी ॥ यातैं यह सिद्ध भया ॥ श्रवणादिकोंकरिके उत्पन्न भया है ब्रह्मसाक्षात्कार जिसकूं तथाचित्तके विश्रांतिकी है इच्छा जिसकूं ऐसा जो विद्वत्संन्यासी है ॥ सोईहीं ताजीवन्मुक्तिका अधिकारी है ॥ यातैं अधिकारीके अभावतैं जीवन्मुक्तिका अभाव कहणा मिथ्या है इति ॥ अब ताजीवन्मुक्तिविषे प्रमाणकानिरूपण करेहैं ॥ तहां ताजीवन्मुक्तिविषे श्रुति स्मृति इतिहास पुराण इनचारोंके वचन प्रमाण हैं ॥ तेवचन यथाक्रमतैं दिखावैहैं ॥ तहां श्रुति ॥ ( विमुक्तश्च विमुच्यते ) अर्थ यह ॥ यद्यपि यह पुरुष आत्मज्ञानतैं पूर्वहीं मुमुक्षुदशाविषे राग द्वेषादिकोंतैं मुक्त है ॥ जिस कारणतैं ( शांतोदांतः ) इत्यादिक श्रुतिनैं शमदमादिकसाधनयुक्तपुरुषकूंहीं श्रवणादिकोंका अधिकारी कहा है ॥ तथापि ता आत्मज्ञानतैं पूर्व तिनरागद्वेषादिकोंतैं मुक्ति यत्नसाध्य होवै है ॥ और आत्मज्ञानतैं अनंतरतौं योगाभ्यास करिके वासनाक्षय तथामनोनाश दोनों अतिदृढ होवैहैं ॥ यातैं ताज्ञानवान्पुरुषविषे आभासरूपरागद्वेषादिकभी संभवते नहीं ॥ यातैं ताज्ञानकालविषे तिनरागद्वेषादिकोंतैं मुक्ति स्वतः सिद्ध होवै है ॥ इसी अभिप्राय करिके ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं श्रुतिनैं विमुक्त कहा है ॥ ऐसा विमुक्तजीवन्मुक्तपुरुष भोग करिके प्रारब्धकर्मके नाश हूए इसशरीरके नाशतैं अनंतर भावी बंधतैं विशेष करिके मुक्त होवै है इति ॥ यह श्रुति तत्त्वज्ञानतैं अनंतर विदेहमुक्ति तैं विलक्षण जीवन्मुक्तिकूं कथन करे है ॥ तथा ( तद्यथाऽहिर्निर्वयनीवल्मीके मृताप्रत्यस्ता शयीत एवमेवेदं शरीरं शेते अथायमशरीरोऽमृ



तत्त्वा०

॥ ७ ॥

परि०

४

तः प्राणो ब्रह्मैव तेज एव ) इत्यादिक श्रुतियां भी ता जीवन्मुक्ति कथन करे हैं ॥ या तैं सा जीवन्मुक्ति ता उक्त श्रुति प्रमाण करिके सिद्ध है इति ॥ किंवा वसिष्ठ भगवान् ने भी सा जीवन्मुक्ति कथन करी है ॥ तहां श्लोक ॥ ( यो जागर्त्ति सुषुप्तिस्थो यस्य जाग्रन्नविद्यते यस्य निर्वासनो बोधः स जीवन्मुक्त उच्यते ) अर्थ यह ॥ जो ब्रह्म वेत्ता पुरुष इंद्रियों के नहीं लय हुए जागता है ॥ अर्थात् जाग्रत् अवस्था कूं अनुभव करे है ॥ और ता जाग्रत् अवस्था विषे भी चक्षु आदिक इंद्रियों करिके रूपादिक विषयों कूं ग्रहण करता नहीं ॥ या तैं सो ब्रह्म वेत्ता पुरुष ता जाग्रत् अवस्था विषे स्थित हू आ भी सुषुप्ति विषे स्थित कहा जावै है ॥ या कारण तैं ही इंद्रियों करिके अर्थ का ज्ञान रूप जाग्रत् जिस ब्रह्म वेत्ता कूं नहीं विद्यमान है ॥ और जिस ब्रह्म वेत्ता का आपणे अखंड एकर स आनंद का अनुभव शुभ अशुभ सर्व वासना वों तैं रहित है ॥ सो ब्रह्म वेत्ता पुरुष जीवन्मुक्त कहा जावै है इति ॥ किंवा गीता के द्वितीय अध्याय विषे श्री भगवान् ने भी सो जीवन्मुक्त पुरुष स्थित प्रज्ञा नाम करिके कथन कन्या है ॥ तहां श्लोक ॥ ( प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ) अर्थ यह ॥ हे अर्जुन जिस अवस्था विषे यह विद्वान् पुरुष मन विषे स्थित सर्व कामों का परित्याग करे है ॥ तथा अखंड एकर स आनंद रूप प्रत्यक्ष आत्मा विषे योगाभ्यास तैं वश कन्ये हू ए मन करिके आपणे स्वरूप आनंद कूं अनुभव करता हू आ संतुष्ट होवै है ॥ तिस काल विषे सो विद्वान् पुरुष स्थित प्रज्ञ कहा जावै है ॥ तहां नहीं चलायमान है अहं ब्रह्मास्मि या प्रकार की प्रज्ञा जिस की ताका नाम स्थित प्रज्ञ है ॥ ईहां यह तात्पर्य है ॥ प्रज्ञा दो प्रकार की होवै है ॥ एक तो स्थिर प्रज्ञा होवै है ॥ और दूसरी अस्थिर प्रज्ञा होवै है ॥ तहां जन्मांतरों के पुण्य समूह के परिपाक तैं आकाश तैं पतन हू फल की न्याई तत्त्वमसि आदिक महावाक्य के श्रवण मात्र करिके इस पुरुष कूं जीव ब्रह्म के एकत्व कूं विषय करणे हारा जो अहं ब्रह्मास्मि या प्रकार का ज्ञान उत्पन्न होवै है ॥ सो

॥ ७ ७ ॥

वानतों व्यवहार की वाह्यता करिके तथा विषयों की आत्मिक करिके विस्मरण होइ जावै है ॥ या तैं सो वा



ज्ञानतों व्यवहारकीबाहुल्यताकरिके तथाविषयोंकीआसक्तिकरिके विस्मरण होइजावैहै ॥ यातें सोज्ञा  
न अस्थिरप्रज्ञा कहाजावैहै ॥ और योगाभ्यासकरिकेवशकन्याहैचित्तजिसनें ऐसेपुरुषकीबुद्धि जवी  
परपुरुषविषेआसक्तस्त्रीकेबुद्धिकीन्याई निरंतर ब्रह्मात्मतत्त्वकूंहीं चिंतनकरेहै ॥ अन्यवस्तुकूं चिंतनकर  
तीनहीं ॥ तवी साबुद्धि स्थिरप्रज्ञा कहीजावैहै ॥ इसीअभिप्रायकरिके श्रीवसिष्ठभगवान्नेंभी कहाहै ॥  
तहांश्लोक ॥ ( परव्यसनिनीनारी व्यग्रापिगृहकर्मणि तदेवास्वादयत्यंतः परसंगरसायनं ॥ १ ॥ एवंत  
त्त्वेपरेशुद्धे धीरोविश्रांतिमागतः तदेवास्वादयत्यंतर्वहिव्यवहरन्नपि ॥ २ ॥ ) अर्थयह ॥ परपुरुषविषे  
आसक्त जानारीहै ॥ सानारी बाह्यतें गृहकेसर्वकार्योंकूं करतीहूईभी अंतरचित्तविषे तापरपुरुषकेसंग  
जन्यसुखकूंहीं चिंतनकरेहै ॥ इसप्रकार जोज्ञानवान्पुरुष शुद्धपरमात्मतत्त्वविषे विश्रांतिकूंप्राप्तभयाहै ॥  
सोज्ञानवान्पुरुष बाह्यतें लौकिकवैदिकव्यवहारोंकूं करताहूआभी अंतरचित्तविषे तिसपरमात्मतत्त्वकूंहीं  
निरंतर चिंतनकरेहै इति ॥ किंवा यहउक्तजीवन्मुक्तपुरुषहीं गीताकेद्वादशेअध्यायविषे श्रीभगवान्नें  
भगवद्भक्तनामकरिके कथनकन्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( अद्वेष्टासर्वभूतानां मैत्रःकरुणएवच निर्ममोनिरहं  
कारः समदुःखसुखःक्षमी ॥ १ ॥ संतुष्टःसततंयोगी यतात्मादृढनिश्चयः मय्यर्पितमनोबुद्धियोंमद्भक्तःस  
मेप्रियः ॥ २ ॥ ) अर्थयह ॥ जोपुरुष सर्वभूतोंकेद्वेषतेंरहितहै ॥ तथा मैत्रीकरुणावालाहै ॥ तथा अहंमम  
अभिमानतेंरहितहै ॥ तथा समानहैसुखदुःख जिसकूं ॥ तथा क्षमावालाहै ॥ तथा सर्वदा संतुष्टहै ॥ तथा  
मनकेनिग्रहवालाहै ॥ तथा दृढनिश्चयवालाहै ॥ तथा मैंपरमात्माविषे अर्पणकन्याहैमनबुद्धिजिसनें ॥  
ऐसाजो मैंपरमेश्वरकामक्तहै सो मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ इसगीतावचन  
विषे श्रीभगवान्नें कथनकन्येजे अद्वेष्टादिकगुणहै ॥ तेगुणतों साधकसुमुश्रुविषेभी ( शांतोदांतः ) इत्या



तत्त्वा०

॥ ८ ॥

परि०

४

दिकश्रुतिप्रमाणतै सिद्धहैं ॥ यातैं तासाधकमुमुक्षुतैं ताजीवन्मुक्तपुरुषविषे कोईविशेषता सिद्धहोवैन  
 हीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ साधकमुमुक्षुविषे तेअद्वेष्टादिकगुण प्रयत्नसाध्य होवैहैं ॥ और जीवन्मुक्त  
 पुरुषविषे तेअद्वेष्टादिकगुण स्वभावसिद्ध होवैहैं ॥ यातैं तासाधकमुमुक्षुतैं ताजीवन्मुक्तपुरुषविषे विशेष  
 ता संभवैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( उत्पन्नात्मैक्यबोधस्य ह्यद्वेष्टृत्वादयो  
 गुणाः अयत्नतोभवंत्यस्य नतुसाधनरूपिणः ) अर्थयह ॥ अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकाबोध जिसपुरुषकूं उ  
 त्पन्नभयाहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूं तेअद्वेष्टृत्वादिकगुण विनार्हीप्रयत्नतैंहोवैहैं ॥ मुमुक्षुकीन्यांई साधनरू  
 पहोतेनहीं इति ॥ किंवा यहउक्तजीवन्मुक्तपुरुषहीं श्रीभगवान्नें गीताकेचतुर्दशेअध्यायविषे ( प्रका  
 शंचप्रवृत्तिंच मोहमेवचपांडव नद्वेष्टिसंप्रवृत्तानि ननिवृत्तानिकांक्षति ॥ १ ॥ उदासीनवदासीनो गुणै  
 र्योनविचाल्यते गुणावर्त्ततइत्येवं योवतिष्ठतिनेंगते ॥ २ ॥ समदुःखसुखःस्वस्थः समलोष्टाश्मकांचनः तु  
 ल्यप्रियाप्रियोधीरस्तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः ॥ ३ ॥ मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः सर्वारंभ  
 परित्यागी गुणातीतःसउच्यते ॥ ४ ॥ ) इनचारिश्लोकोंकरिकै गुणातीतनामकरिकैकथनकन्याहै ॥ इ  
 नगीताकेश्लोकोंकाअर्थ गीतागूढार्थदीपिकाविषे हमनें विस्तारतैंनिरूपणकन्याहै ॥ सो तहांसेंजानिले  
 णा इति ॥ किंवा यहउक्तजीवन्मुक्तपुरुषहीं महाभारतविषे श्रीव्यासभगवान्नें ब्राह्मणनामकरिकै क  
 थनकन्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( निराशिषमनारंभं निर्नमस्कारमस्तुतिं अक्षीणंक्षीणकर्माणं तंदेवाब्राह्मणं  
 विदुः ) अर्थयह ॥ जोपुरुष इष्टवस्तुकीप्रार्थनातैंरहितहै ॥ तथा सर्वआरंभतैंरहितहै ॥ तथा नमस्कार  
 तैंरहितहै ॥ तथा आपणीपरकीस्तुतिनिंदातैंरहितहै ॥ तथा विनाप्रयत्नतैंप्राप्तहूएवस्तुविषेभी दीनतातैं  
 रहितहै ॥ तथा निवृत्तहोइगएहैं सर्वलौकिकवैदिककर्म जिसके ॥ ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषकूं देवता ब्राह्मण

॥१७७॥

कहेहैं इति ॥ किंवा यहउक्तजीवन्मुक्तपुरुषहीं स्कंदपुराणविषे अतिवर्णाश्रमीनामकरिकै कथनकन्या



कहे हैं इति ॥ किंवा यह उक्त जीवन्मुक्त पुरुष हीं स्कंदपुराण विषे अतिवर्णाश्रमी नाम करिके कथन कन्या है ॥ तहां श्लोक ॥ ( यथा स्वप्न प्रपंचोऽयं मयि माया विजृम्भितः एवं जाग्रत्प्रपंचोपि मयि माया विजृम्भितः ॥ इति यो वेद वेदांतैः सोऽतिवर्णाश्रमी भवेत् ) अर्थ यह ॥ जैसे मैं प्रत्यक्ष आत्मा विषे यह स्वप्न प्रपंच माया करिके कल्पित है ॥ तैसे यह जाग्रत्प्रपंच भी मेरे विषे माया करिके कल्पित है ॥ इस प्रकार जो पुरुष वेदांत वचनों करिके सर्वप्रपंच कल्पना के अधिष्ठान रूप आत्मा कूं साक्षात्कार करे है ॥ सो तत्त्ववेत्ता पुरुष अतिवर्णाश्रमी कहा जावै है इति ॥ इस प्रकार ता जीवन्मुक्ति विषे श्रुति स्मृति इतिहास पुराण इन चारों के अनेक वचन प्रमाण हैं ॥ यातें ता विदेह मुक्तिकी न्यां ई सा जीवन्मुक्ति भी अवश्य अंगीकार करी चाहिये इति ॥ अब ता जीवन्मुक्तिके साधनों का निरूपण करे हैं ॥ तहां सा पूर्व उक्त जीवन्मुक्ति तत्त्वज्ञान १ वासना क्षय २ मनोनाश ३ इन तीनों के अभ्यास तें सिद्ध होवै है ॥ यातें ते तीनों ता जीवन्मुक्तिके साधन हैं ॥ तहां तिन तत्त्वज्ञानादिक तीनों की जा अति प्रयत्न तें पुनः पुनः आवृत्ति है ॥ यह हीं तिन तीनों का अभ्यास है ॥ सो तत्त्वज्ञानादिक तीनों का अभ्यास भी एक काल विषे कन्या हू आहीं जीवन्मुक्तिका हेतु होवै है ॥ जिस कारण तें अन्वय व्यतिरेक करिके तिन तीनों का परस्पर कार्यकारण भाव सिद्ध है ॥ ताके विषे प्रथम तत्त्वज्ञान वासना क्षय इन दोनों का परस्पर कार्यकारण भाव दिखावै हैं ॥ तहां यह दृश्यमान सर्वप्रपंच मिथ्या है ॥ और अद्वितीय आत्मा पारमार्थिक है ॥ यातें यह आत्मा हीं सर्व रूप है ॥ ता आत्मा तें भिन्न कोई भी वस्तु नहीं है ॥ या प्रकार के तत्त्वज्ञान के उत्पन्न हुए विषय के अभाव तें राग द्वेषादिरूप वासना क्षय होइ जावै है ॥ और ता तत्त्वज्ञान के अभाव हुए विषयों विषे सत्यपणा निवृत्त होवै नहीं ॥ यातें उत्तर उत्तर सो राग द्वेषादिरूप वासना का प्रवाह बन्यारहे है ॥ इस प्रकार के अन्वय व्यतिरेक करिके तिस तत्त्वज्ञान कूं वासना क्षय के प्रति कारणता



तत्त्वा०

९ ॥

परि०

४

सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकार वासनाक्षयकूंभी तत्त्वज्ञानकेप्रति कारणताहै ॥ तहां विवेककरिकै तथादोषदर्शनकरिकै तथामैत्रीकरुणादिकविरोधीवासनाकरिकै जबी इसपुरुषकी रागद्वेषादिरूपवासना क्षयहोवैहै ॥ तबीहीं इसपुरुषकूं श्रुतिआचार्यकेप्रसादतैं निर्मलमनविषे सोतत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ और तावा सनाक्षयकेअभावहूए सोमन रागद्वेषादिकोंकरिकै दूषितहोवैहै ॥ तादूषितमनवालेपुरुषकूं शमदमादिकसाधनसंपत्तिकेअभावतैं श्रवणादिक संभवैंगेनहीं ॥ ताकरिकै सोतत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवैंगानहीं ॥ इस प्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै तावासनाक्षयकूं तातत्त्वज्ञानकेप्रति कारणता सिद्धहोवैहै इति ॥ अब तत्त्वज्ञान मनोनाश इनदोनोंका परस्पर कार्यकारणभाव दिखावैहैं ॥ तहां तत्त्वज्ञानकेहूए इसपुरुषकूं प्रपंचकेमिथ्यात्वकानिश्रयहोवैहै ॥ तामिथ्यात्वनिश्चयकरिकै शुक्तिरजतकीन्यांई ताप्रपंचका बाधहोवैहै ॥ ताबाधितप्रपंचविषे सोमन प्रवृत्तहोतानहीं ॥ और सत्यरूपकरिकैनिश्चयकन्याजोआत्माहै ॥ सो आत्मा तामनकाविषयहैनहीं ॥ यातैं ताआत्माविषेभी सोमन प्रवृत्तहोइसकतानहीं ॥ इसप्रकार अंतर्बाह्यप्रवृत्तितैरहितहूआ सोमन काष्ठोंतैरहितवन्हिकीन्यांई आपेहीं लयहोइजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( यथानिरिंधनोवन्हिः स्वयोनावुपशाम्यति तद्वृत्तिक्षयाच्चित्तं स्वयोनावुपशाम्यति ) अर्थयह ॥ जैसे काष्ठादिरूपइंधनतैरहितहूआ वन्हि आपणे सामान्यतेजरूपकारणविषे लयहोवैहै ॥ तैसे अंतर्बाह्यसर्ववृत्तियोंकेनाशतैं चित्तभी आपणे अधिष्ठानरूपकारणविषे लयहोवैहै ॥ यहहीं तामनकानाशहै इति ॥ और तातत्त्वज्ञानकेअभावहूए ताप्रपंचविषे सत्यपणा निवृत्तहोतानहीं ॥ तिसतैं पदार्थाकारवृत्तियोंकरिकै बुद्धिकूंप्राप्तहूआ सोमन अत्यंतस्थूलहोवैहै ॥ ऐसेस्थूलताकूंप्राप्तहूएमनका नाशहोतानहीं ॥ इस प्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै तातत्त्वज्ञानकूं तामनोनाशकेप्रति कारणता सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकार ता

॥१७८॥



प्रकारके अन्वयव्यतिरेककरिके तावत्त्वज्ञानकृतमनोनाशकेप्रकारणता सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकार ता

मनोनाशकृंभी तत्त्वज्ञानकेप्रति कारणताहै ॥ तहां मनकेनाशहूए सर्वद्वैतवृत्तियोंकीनिवृत्तिहोणेतैं स  
र्वउपाधियोंतैंरहित इसपुरुषकूं श्रुतिआचार्यकेप्रसादतैं ब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै ॥ और तामनोनाशकेअ  
भावहूए विक्षिप्तचित्तवालेपुरुषकूं सोब्रह्मसाक्षात्कार होतानहीं ॥ इसप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिके ताम  
नोनाशकूं तत्त्वज्ञानकीकारणता सिद्धहोवैहै इति ॥ अब वासनाक्षय मनोनाश इनदोनोंका परस्पर कार्य  
कारणभाव दिखावेहैं ॥ तहां वासनाक्षयकेअभावहूए रागद्वेषादिकोंकरिके स्थूलभावकूंप्राप्तहूआचित्त  
विषयोंकेसन्मुखहोइके तिसतिसविषयकेआकार परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताविषयाकारहूएमनका कदा  
चित्भी नाशहोतानहीं ॥ और वासनाकेक्षयहूए वृत्तियोंकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ जिसकारणतैं तेवासना  
हीं वृत्तियोंकेउत्पत्तिकाबीजहैं ॥ बीजकेनाशहूए अंकुरकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं मनकानाशहोवैहै ॥  
इसप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिके तावासनाक्षयकूं मनोनाशकीकारणता सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकार ता  
मनोनाशकृंभी तावासनाक्षयकेप्रति कारणताहै ॥ तहां मनकेनाशहूए कोईप्रकारकीभीवृत्ति उत्पन्नहो  
तीनहीं ॥ यातैं सर्ववासना क्षयहोवैहैं ॥ और तामनोनाशकेअभावहूए प्रारब्धकर्मकेवशतैं विषयभोग  
विषेप्रवृत्तहूए चित्तविषे रागादिकअनेकवासना उत्पन्नहोवैहैं ॥ अर्थात् जैसे घृतादिकहविषकरिके अ  
ग्नि वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे विषयभोगकरिके तेरागादिकवासनाभी वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकारकेअ  
न्वयव्यतिरेककरिके तामनोनाशकूं वासनाक्षयकीकारणता सिद्धहोवैहै इति ॥ इसप्रकार तत्त्वज्ञान वा  
सनाक्षय मनोनाश इनतीनोंका परस्पर कार्यकारणभावहोणेतैं तिनतीनोंका एककालविषेहीं अभ्या  
सकरणा उचितहै ॥ तिसअभ्यासतैं इसपुरुषकूं जीवन्मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्त्ता वसिष्ठभगवान्  
नैभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( वासनाक्षयविज्ञानमनोनाशामहामते समकालंचिराभ्यस्ताभवंतिफलदा



तत्त्वा०

॥ १० ॥

परि०

४

॥ १७९ ॥

यिनः ) अर्थ यह ॥ हेमहामतिराम वासनाक्षय तत्त्वज्ञान मनोनाश यहतीनों एकेठेहीं बहुतकालपर्यंत अभ्यासकन्येहूए इसपुरुषकूं जीवन्मुक्तिरूपफलकीप्राप्तिकरेहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ विवेकादिक साधनचतुष्टयकीप्राप्तितैं अनंतर तत्त्वज्ञानकीप्राप्तिवासतै विविदिषासंन्यासकूंकरिकै श्रवणमनननिदिध्यासनकूंकरणेहारेपुरुषकूं सोतत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ और तातत्त्वज्ञानकीउत्पत्तितैं अनंतर जीवन्मुक्ति कीप्राप्तिवासतै विद्वत्संन्यासकूंकरिकै तत्त्वज्ञान वासनाक्षय मनोनाश इनतीनोंके अभ्यासकूंकरणेहारेपुरुषकूं ताजीवन्मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकारकाअर्थ पूर्वकहणेतैं सिद्धहोवैहै ॥ तहां श्रवणमननादिकोंतैं अनंतर तत्त्वमसिआदिकप्रमाणजन्य तत्त्वज्ञानका अभ्यास किसप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रथम ज्ञानवान्पुरुषकूं तिसतत्त्वज्ञानकीकर्त्तव्यताहीं संभवतीनहीं ॥ काहेतैं सोतत्त्वज्ञान महावाक्यरूपप्रमाण काफलरूपहोणेतैं पूर्वसिद्धहींहै ॥ असिद्धवस्तुकीहीं कर्त्तव्यताहोवैहै ॥ सिद्धवस्तुकी कर्त्तव्यताहोतीनहीं ॥ और सोज्ञान विषयरूपवस्तुके अधीनहोवैहै ॥ यातैं सोज्ञान करणेकूं वा नहींकरणेकूं वा अन्यथा करणेकूं शक्यहोतानहीं ॥ यातैं ताज्ञानकी कर्त्तव्यता संभवतीनहीं ॥ इसप्रकार ताज्ञानवान्पुरुषकूं ज्ञानकेसाधनरूपश्रवणादिकोंकीभी कर्त्तव्यता युक्तनहींहै ॥ जिसकारणतैं फलरूपज्ञानकेउत्पन्नहूए तिनश्रवणादिकोंकाअनुष्ठान व्यर्थहींहै ॥ यातैं उत्पन्नहूएतत्त्वज्ञानका अभ्यास निरूपणहोइसकतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ श्रवणादिकोंतैं उत्पन्नभयाजो अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका तत्त्वज्ञानहै ॥ तातत्त्वज्ञानका यहहीं अभ्यासहै ॥ जो कोईभीप्रकारकरिकै ताब्रह्मात्मतत्त्वका पुनःपुनः चिंतनकरणा ॥ अर्थात् वेदां तशास्त्रके श्रवणकरिकै अथवा कथनकरिकै अथवा पुस्तककेअवलोकनकरिकै अथवा पठनपाठनकरिकै जो ताब्रह्मात्मतत्त्वका पुनःपुनः अनुसंधानहै ॥ यहहीं तातत्त्वज्ञानका अभ्यासजानणा ॥ यह त



त्वज्ञानके अभ्यासका स्वरूप अन्य ग्रंथ विषे भी कहा है ॥ तहां श्लोक ॥ ( तच्चित्तं तत्कथनमन्योन्यं तत्प्रबो  
धनं एतदेकपरत्वं च ब्रह्माभ्यासं विदुर्बुधाः ) अर्थ यह ॥ जीव ब्रह्मका एकत्वरूप जो तत्त्व है ॥ तिस तत्त्वका  
जो पुनः पुनः चिंतन है ॥ तथा अधिकारी मुमुक्षुजनों के प्रति जो तिस तत्त्वका कथन है ॥ तथा आपने स  
मान विद्वान् पुरुषों के साथ मिलिके जो तिस तत्त्वका परस्पर बोधन है ॥ इत्यादिक कोई प्रकार करिके भी जो  
एक ब्रह्मात्म तत्त्व के चिंतन परायणता है ॥ तिस कूं विद्वान् पुरुष ब्रह्माभ्यास कहे हैं इति ॥ ॥ शंका ॥  
कोई प्रकार करिके भी ब्रह्मात्म तत्त्व के चिंतन कूं जो ब्रह्माभ्यास कहोंगे ॥ तों अनधिकारी पुरुषों के प्रति  
ताब्रह्मात्म तत्त्व के उपदेश कूं भी ब्रह्माभ्यासरूपता होनी चाहिये ॥ ऐसी शंका के निवृत्त करने वासतै अब प्र  
संगतैं ताब्रह्म विद्या के अधिकारी का तथा अनधिकारी का निरूपण करे हैं ॥ तहां जो पुरुष विवेकादिक च  
तुष्टय साधनों करिके संपन्न होवैं हैं ॥ तथा नम्रता वाला होवैं हैं ॥ तथा शिष्य भाव करिके युक्त होवैं हैं ॥ तथा  
गुरु ईश्वर विषे भक्ति वाला होवैं हैं ॥ तथा गुरु वेदांत वाक्यों विषे विश्वास वाला होवैं हैं ॥ सो पुरुष ही ब्रह्म विद्या का  
अधिकारी होवैं हैं ॥ ऐसे अधिकारी पुरुष के प्रति ही तत्त्व वेत्ता पुरुष नैं ब्रह्म विद्या का उपदेश करना ॥ और  
ऐसा अधिकारी पुरुष ही ताब्रह्म विद्या के श्रवणादिकों तैं आत्मज्ञान कूं तथा मोक्ष कूं प्राप्त होवैं हैं ॥ इसी अर्थ कूं  
( तस्मै स विद्वानुपसन्नाय प्राहेति सम्यक् प्रशांत चित्ताय शमान्विताय येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं प्रोवाच तां त  
त्त्वतो ब्रह्म विद्यां तस्मै मृदित कषायाय तमसः पारं दर्शयति भगवान्स नत्कुमारः ) इत्यादिक श्रुतियां कथन करे  
हैं ॥ तथा इसी अर्थ कूं ( यद्मं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति भक्तिं मयि परां कृत्वामामेवैष्यत्यसंशयः ॥ १ ॥  
न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रिय कृत्तमः भवितान च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥ २ ॥ ) इत्यादिक गीता व  
चन भी कथन करे हैं ॥ और जो पुरुष पूर्व उक्त अधिकारी के लक्षणों तैं रहित है ॥ सो पुरुष अनधिकारी कहा



तत्त्वा०

॥ ११ ॥

जावैहै ॥ ऐसे अनधिकारी पुरुष के ताई तत्त्ववेत्ता पुरुष नैं ब्रह्मविद्या का उपदेश नहीं करणा ॥ और ऐसा अनधिकारी पुरुष ता ब्रह्मविद्या कूं श्रवण करता हू आभी आत्मज्ञान कूं तथा मोक्ष कूं प्राप्त होतानहीं ॥ यह अर्थ भी ( वेदांते परमं गुह्यं पुरा कल्पे प्रचोदितं नाप्रशांता यदा तव्यं ना पुत्राया शिष्याय वै पुनः ) इत्यादिक श्रुति वचनों करिकै सिद्ध है ॥ तथा ( इदं तेना तपस्कायनाभक्ताय कदाचन न चाशुश्रूषे वाच्यं न च मां योऽभ्यस्यति ) इत्यादिक गीता वचन करिकै भी सिद्ध है ॥ तथा अन्य स्मृति विषे भी कहा है ॥ तहां श्लोक ॥ ( अशिष्याया विरक्ताय यत्किंचिदुपदिश्यते तत्प्रयात्यपवित्रत्वं गोक्षीरं श्वदृतौ यथा ) अर्थ यह ॥ जो पुरुष शिष्य भाव तैरहित है ॥ तथा वैराग्य तैरहित है ॥ ऐसे अनधिकारी पुरुष के ताई जो कोई उपदेश करीता है ॥ सो उपदेश अपवित्र भाव कूंहीं प्राप्त होवैहै ॥ जैसे श्वान की तुचा विषे पाया हू आ गौ का क्षीर अपवित्रता कूं प्राप्त होवैहै इति ॥ किंवा यह उक्त अर्थ अन्य स्मृति विषे भी कहा है ॥ तहां श्लोक ॥ ( नापृष्टः कस्यचिद्भूयान्न चान्यायेन पृच्छतः जानन्नपि च मेधावी जडवल्लोकमाचरेत् ) अर्थ यह ॥ यह विद्वान् पुरुष प्रश्न क्ये तै विना कोई कूंभी उपदेश नहीं करे ॥ तथा अन्याय करिकै पूछणे हारे पुरुष के प्रति भी उपदेश नहीं करे ॥ किंतु सर्व अर्थ कूं जानता हू आभी यह विद्वान् पुरुष लोक विषे जड की न्यांई विचरे इति ॥ या तै अधिकारी पुरुषों के प्रति जो ब्रह्मात्म तत्त्व का उपदेश है ॥ सो उपदेश ही ब्रह्माभ्यास कहा जावैहै ॥ अनधिकारी पुरुषों के प्रति ब्रह्मात्म तत्त्व का उपदेश ब्रह्माभ्यास कहा जावै नहीं यह सिद्ध भया इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तत्त्वज्ञान तै पूर्व भी मुमुक्षु जन कूं वासना क्षय का अभ्यास तथा मनोनाश का अभ्यास अपेक्षित ही है ॥ काहे तै जिस पुरुष काचित्त विषयों विषे आसक्त है ॥ तथा शमदमादिकों तैरहित है ॥ तथा एकाग्रता तैरहित है ॥ तिस पुरुष कूं सो तत्त्वज्ञान उत्पन्न होतानहीं ॥ या तै तत्त्वज्ञान तै पूर्व भी सो वासना क्षय मनोनाश का अभ्यास अवश्य

परि०

४

॥ ११८० ॥

क्या चाहिये ॥ जबी आत्मज्ञान तै पूर्व ही सो वासना क्षय मनोनाश सिद्ध भया ॥ तबी ता आत्मज्ञान तै पश्चा



कोचित्त विषयो विषय आसक्त है ॥ तथा शमदमोदिकोतिरहित है ॥ तथा एकप्रतीतिरहित है ॥ तिसपुरुष  
कूं सोतत्त्वज्ञान उत्पन्न होतानहीं ॥ यत्ते तत्त्वज्ञान तत्त्वज्ञान सोवासनाक्षयमनोनाशका अभ्यास अवश्य

कन्याचाहिये ॥ जबी आत्मज्ञानतें पूर्वहीं सोवासनाक्षयमनोनाश सिद्ध भया ॥ तबी ता आत्मज्ञानतें पश्चा  
त् जीवन्मुक्ति वासतै तावासनाक्षयमनोनाशके अभ्यासकरणे का कलुप्रयोजन नहीं है ॥ किंतु ता पूर्वसिद्ध  
वासनाक्षयमनोनाशके अभ्यासतें ही इस तत्त्ववेत्ता पुरुष कूं जीवन्मुक्तिकी प्राप्ति होवैगी ॥ समाधान ॥  
यद्यपि तत्त्वज्ञानतें पूर्वभी ता तत्त्वज्ञानकी प्राप्ति वासतै सोवासनाक्षयमनोनाशका अभ्यास अपेक्षित है ॥ त  
थापि तत्त्वज्ञानतें पूर्व विविदिषा संन्यासी कूं सोवासनाक्षयमनोनाशका अभ्यास तों गौण होवै है ॥ और श्र  
वणमननादिकों का अभ्यास प्रधान होवै है ॥ काहेतें श्रवण मनन निदिध्यासन यह तीनों तों तत्त्वमसि आ  
दिक वेदांत वाक्यों का विचार रूप होणेतें आत्मज्ञानके प्रति अंतरंग साधन हैं ॥ और वासनाक्षयमनोनाश तों  
अंतःकरण का शोधक होणेतें तिन श्रवणादिकों के सहकारी हैं ॥ यातें तत्त्वज्ञानतें पूर्व यथा कथंचित् वासना  
क्षयमनोनाशका अभ्यास करिके निरंतर श्रवणमननादिकों कूं करणे हारे विविदिषा संन्यासी कूं आत्मज्ञान  
उत्पन्न होवै है ॥ और विद्वत्संन्यासी कूं तों सोतत्त्वज्ञानका अभ्यास गौण होवै है ॥ और वासनाक्षयमनोना  
शका अभ्यास प्रधान होवै है ॥ काहेतें तत्त्वज्ञानकी उत्पत्तितें पूर्वहीं वेदांत श्रवणादिकों के अभ्यासका प्र  
योजन होवै है ॥ तत्त्वज्ञानकी उत्पत्तितें अनंतर तिन श्रवणादिकों के अभ्यासका कोई प्रयोजन होतानहीं ॥  
किंतु प्रारब्ध कर्मने प्राप्त कन्ये विषय भोग काल विषेहीं वासनाके अभिभव करणे वासतै किंचित् मात्र श्रवणा  
दिकों का अभ्यास अपेक्षित होवै है ॥ यातें विद्वत्संन्यासी कूं सोतत्त्वज्ञानका अभ्यास गौण होवै है ॥ और  
ता विद्वत्संन्यासीने तत्त्वज्ञानतें पूर्व वासनाक्षयमनोनाशका दृढ अभ्यास कन्या नहीं ॥ यातें ताके चित्त  
की विश्रान्ति होती नहीं ॥ और चित्तकी विश्रान्ति तें विना दृष्टदुःखकी निवृत्ति होती नहीं ॥ यातें ता चित्त  
की विश्रान्ति वासतै तिस विद्वत्संन्यासी कूं आत्मज्ञानतें अनंतर सोवासनाक्षयमनोनाशका अभ्यास अवश्य



तत्त्वा०

॥ १२ ॥

परि०  
४

अपेक्षित है ॥ यातें ताविद्वत्संन्यासीकूं सोवासनाक्षयमनोनाशका अभ्यास प्रधान है ॥ ता अभ्यास तें ही तिसविद्वत्संन्यासीकूं जीवन्मुक्तिकी प्राप्ति होवै है इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ चतुष्टयसाधनसंपन्न अधिकारी पुरुषकूं श्रवणमननादिकों करिके असंभावना विपरीत भावनारूप प्रतिबंध के निवृत्त हुए तत्त्वमसि आदि महावाक्य तें अहं ब्रह्मास्मि या प्रकारका अपरोक्षज्ञान उत्पन्न होवै है ॥ ता अपरोक्षज्ञान तें अज्ञानकृत आवरणकी निवृत्ति होइके ब्रह्मानंदरूप परमपुरुषार्थकी प्राप्ति होवै है ॥ और ता परमपुरुषार्थकी प्राप्ति परे दूसरा कोई कर्त्तव्य बाकी रहतानहीं ॥ और ( तस्य कार्य न विद्यते ) इत्यादिक श्रुति स्मृति वचन भी ता ज्ञानवान् कूं कर्त्तव्यताका निषेध करे हैं ॥ और जो ऐसा कहो ॥ चित्तकी विश्रांति वासतै तिस तत्त्ववेत्ता पुरुषकूं भी वासनाक्षयमनोनाशका अभ्यास बाकी कर्त्तव्य है ॥ सो यह कहना भी संभवतानहीं ॥ काहे तें महावाक्य जन्य अपरोक्षज्ञानका विषय भूत जो नित्य निरतिशय ब्रह्मानंद है ॥ ता ब्रह्मानंद विषे संलग्न हुए मनकी अन्य तुच्छ विषयों विषे प्रवृत्ति संभवती नहीं ॥ यातें ता ज्ञानवान् कूं सा चित्तकी विश्रांति स्वभावसिद्ध ही है ॥ ता तर्पयह ॥ जैसे सार्वभौमराज्यके आनंदकूं अनुभव करणे हारा चक्रवर्तिराजा एक ग्रामके अधिपतिके तुच्छ सुखकी इच्छा करतानहीं ॥ तैसे अखंड एकरस ब्रह्मानंदकूं अनुभव करणे हारा ज्ञानवान् पुरुषका चित्त तुच्छ विषय सुखकी इच्छा करै गानहीं ॥ यातें ज्ञानवान् पुरुषकूं सा चित्तकी विश्रांति स्वभावसिद्ध ही है ॥ ता चित्त विश्रांतिके वासतै ता ज्ञानवान् कूं किंचित् भी कर्त्तव्य नहीं है ॥ यातें तत्त्वज्ञान तें अनंतर वासनाक्षयमनोनाशके अभ्यासकी कर्त्तव्यताका नियमकरणा व्यर्थ है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ वेदांतशास्त्रके दो प्रकारके अधिकारी होवै हैं ॥ एक तो मुख्य अधिकारी होवै हैं ॥ दूसरे अमुख्य अधिकारी होवै हैं ॥ तहां जे पुरुष स गुणब्रह्मके साक्षात्कार पर्यंत उपासनाकूं करिके परमेश्वरके प्रसाद तें विषयों विषे दोषदृष्टिकरिके विवेकवैरा

॥ १२९ ॥

ग्यादिक साधनसंपन्न हुए श्रवणादिकों विषे प्रवृत्त होवै है ॥ त पुरुष तो मुख्य अधिकारी कहे जावै हैं ॥ ऐसे



ग्यादिकसाधनसंपन्नहूँ श्रवणादिकोंविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ तेपुरुषतों मुख्यअधिकारी कहेजावैहैं ॥ ऐसे मुख्यअधिकारीयोंकूंतों एकवार श्रवणादिकोंकरिकै जीवन्मुक्तिविषेपर्यवसानवाला तत्त्वज्ञानउत्पन्नहो वैहैं ॥ अर्थात् तिनमुख्यअधिकारीयोंकूँ तत्त्वज्ञानकेसमकालहीं जीवन्मुक्तिहोवैहैं ॥ जिसकारणतैं तिन मुख्यअधिकारीयोंकूँ तातत्त्वज्ञानतैंपूर्वहीं ताउपासनाकरिकै साचित्तकीएकाग्रतारूप चित्तविश्रांति सिद्धहै ॥ ऐसेकृतोपास्तिमुख्यअधिकारीयोंकूँ तत्त्वज्ञानतैंअनंतर सोवासनाक्षयमनोनाशकाअभ्यास अपेक्षितनहींहै ॥ और पूर्वउक्तश्रुतिस्मृतिवचनभी ऐसेमुख्यअधिकारीकूँहीं तत्त्वज्ञानतैंअनंतर कर्तव्यता का निषेध करैहैं ॥ और तासगुणब्रह्मकीउपासनातैंरहित जे इदानींकालकेपुरुष विवेकादिकसाधनसंपन्नहोइके ब्रह्मजिज्ञासातैं श्रवणादिकोंविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ तेअकृतोपास्तिपुरुष अमुख्यअधिकारी कहेजावैहैं ॥ ऐसेअमुख्यअधिकारीयोंकूँ तिनश्रवणादिकोंकरिकै सोतत्त्वसाक्षात्कारतों अवश्य उत्पन्नहोवैहैं ॥ परंतु ताज्ञानतैंपूर्व तिनोंने वासनाक्षयमनोनाशकाअभ्यास भलीप्रकारतैंकन्यानहीं ॥ यातैं तिनपुरुषों केचित्तकीविश्रांति होतीनहीं ॥ और तिनअमुख्यअधिकारीपुरुषोंकूँ श्रवणादिकोंतैंउत्पन्नभया जोब्रह्मसाक्षात्कारहै ॥ सोसाक्षात्कार महावाक्यरूपप्रमाणकरिकैजन्यहोणेतैं तथाब्रह्मात्मरूपविषयकेअबाधतैं प्रमारूपभीहै ॥ तथा अज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे योग्यभीहै ॥ परंतु वायुवालेदेशविषेस्थितदीपकीन्यांई प्रारब्धकर्मसंपादितभोगवासनाकरिकै कंपायमानहोणेतैं सोसाक्षात्कार कदाचित् असंभावनाविपरीत भावनारूपप्रतिबंधकेसंभवतैं अज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे समर्थ नहींहोवैहैं ॥ यातैं तिनअकृतोपास्तिअमुख्यअधिकारीयोंकूँ तासंभावितप्रतिबंधकीनिवृत्तिकरणेवासतैं तत्त्वज्ञानतैंअनंतर सोवासनाक्षयमनोनाशकाअभ्यास अवश्य करणेयोग्यहै ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीव्यासभगवान्ने ब्रह्मसूत्रोंविषे (आ



तत्त्वा०

॥ १३ ॥

परि०  
४

वृत्तिरसकृदुपदेशात् । आप्रायणात्तत्रापिहिदृष्टं ) इससूत्रकरिके अमुख्यअधिकारीयोंकेप्रति अभ्यासकी आवृत्ति कथनकरीहै ॥ यातैयहसिद्धभया ॥ पूर्वउक्त मुख्यअधिकारीयोंकूं तत्त्वज्ञानतैअनंतर वासना क्षयमनोनाशकेअभ्यासकी नहींअपेक्षाहूएभी ॥ तिनअमुख्यअधिकारीयोंकूं तत्त्वज्ञानतैअनंतर चित्तकी विश्रांतिवासतै सोवासनाक्षयमनोनाशकाअभ्यास अवश्य अपेक्षितहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ वासना केक्षयकरणेविषे इसपुरुषकी तबी प्रवृत्तिसंभवे ॥ जबी इसपुरुषकूं तावासनाकेस्वरूपकाज्ञानहोवै ॥ तावा सनाकेज्ञानतैविना तावासनाकेनिवृत्तकरणेविषे इसपुरुषकीप्रवृत्ति संभवतीनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तावासनाका साधारणलक्षण तथातावासनाकाविभाग तथातावासनाकाफल तथातिसतिसवासनाका विशेषलक्षण श्रीवसिष्ठभगवान्ने कथनकन्याहै ॥ सोसर्व तावसिष्ठभगवान्केवचनोंकरिके ईहांदिखावै हैं ॥ ताकेविषे प्रथम तावासनाका साधारणलक्षण कहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ ( दृढभावनयात्यक्तपूर्वापर विचारणं यदादानं पदार्थस्य वासनासाप्रकीर्तिता ) अर्थयह ॥ जिसदृढभावनाकरिके पूर्वअपरकेविचारतैविनाहीं पदार्थोंकाग्रहणहोवैहै ॥ अर्थात् हमारीभाषा सर्वभाषावोंतै समीचीनहै ॥ तथा हमारादेश सर्वदेशोंतैसमीचीनहै ॥ तथा हमाराकुल सर्वकुलोंतैउत्तमहै ॥ तथा हमारेपुत्रादिक सर्वतैसमीचीनहैं ॥ इत्यादिकअभिनिवेश जिसभावनाकरिकेहोवैहै ॥ साभावना विद्वान्पुरुषोंने वासना कहीतीहै इति ॥ अब तावासनाका विभाग तथाफल वर्णनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ ( वासनाद्विविधाप्रोक्ता शुद्धाचमलिना तथा मलिना जन्मनोहेतुः शुद्धाजन्मविनाशिनी ) अर्थयह ॥ साउक्तवासना दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौ शुद्धवासना होवैहै ॥ और दूसरी मलिनवासना होवैहै ॥ तहां मलिनवासनातौ इसपुरुषके जन्मकाकारणहोवैहै ॥ और शुद्धवासना जन्मकेनिवृत्तिकाकारणहोवैहै इति ॥ अब तामलिनवासनाका

॥ १८२ ॥



नमकाकारणहोवैहै ॥ और शुद्धवासना जन्मके निवृत्ति का कारण होवैहै इति ॥ अब तामलिनवासनाका

स्वरूपलक्षण कहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ ( अज्ञानसुघनाकारघनाहंकारशालिनी पुनर्जन्मकरीप्रोक्ता मलि  
नावासनाबुधैः ) अर्थयह ॥ ब्रह्मकेस्वरूपका आवरक जो अज्ञानहै ॥ ता अज्ञानकरिकै घनीभूतहूआहैआ  
कार जिसका ऐसाजो घनअहंकारहै ॥ ता अहंकारसहितजावासनाहै ॥ सावासना विद्वान्पुरुषोंने म  
लिनवासना कहीतीहै ॥ सामलिनवासनाहीं इसपुरुषकूं पुनःजन्मकीप्राप्ति करेहै ॥ तहां भ्रांतिज्ञानकीजा  
परंपराहै यहहीं ता अहंकारका घनाकारहै ॥ सो अहंकारका घनाकारपणा श्रीभगवान्ने गीताकेषोड  
शेअध्यायविषे आसुरसंपत्केनिरूपणप्रसंगविषे ( इदमद्यमयालब्धमिमंप्राप्त्येमनोरथं इदमस्तीदमपिमेभ  
विष्यतिपुनर्धनं ॥ १ ॥ असौमयाहतःशत्रुर्हनिष्येचापरानपि ईश्वरोहमहंभोगीसिद्धोहंबलवान्सुखी ॥ २ ॥  
आद्योभिजनवानस्मिकोन्योस्तिसदृशोमया यक्ष्येदास्यामिमोदिष्यइत्यज्ञानविमोहिताः ॥ ३ ॥ ) इनती  
नश्लोकोंकरिकै कथनकन्याहै इति ॥ अब शुद्धवासनाका स्वरूपलक्षण वर्णनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ ( पु  
नर्जन्मांकुरंत्यक्तास्थितंसंभ्रष्टबीजवत् देहार्थध्रियतेज्ञातज्ञेयाशुद्धेतिचोच्यते ) अर्थयह ॥ जावासना पुनः  
जन्मकेमूलकूंनाशकरिकै दग्धबीजकीन्याई देहकीस्थितिवासतै स्थितहोवैहै ॥ तथा जिसवासनाकरिकै  
अखंडएकरसआनंदवस्तु जान्याजावैहै ॥ सावासना शुद्धवासना कहीजावैहै इति ॥ अब पूर्वउक्तमलि  
नवासनाकाविभाग वर्णनकरेहैं ॥ तहां जन्मकीप्राप्तिकरणेहारी सामलिनवासना यद्यपि अनंतहोवैहै ॥  
तथापि स्मृतिविषे सामलिनवासना संक्षेपतैं तीनप्रकारकी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( लोकवासन  
याजंतोर्देहवासनयापिच शास्त्रवासनयाज्ञानंयथावन्नैवजायते ) अर्थयह ॥ सापूर्वउक्तमलिनवासना लो  
कवासना १ शास्त्रवासना २ देहवासना ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तिनतीनोंवासनावों  
विषे कोईभीवासना जिसपुरुषकूंहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं तावासनारूपप्रतिबंधकेवशतैं आत्माकायथार्थज्ञा



तत्त्वा०

॥ १४ ॥

परि०

४

न उत्पन्न होतानहीं इति ॥ अब लोकवासनाका निरूपण करेहैं ॥ तहां जिस आचरण के धारण करनेतैं सर्वलोक हमारी स्तुतिकरै कोई भी लोक हमारी निंदा नहीं करै ॥ ऐसे आचरण कूं मैं धारण करूं ॥ या प्र कारका जो अभिनिवेश है ताका नाम लोकवासना है ॥ सा लोकवासना शतकोटि जन्मों करिकै भी संपा दन करने कूं अशक्य है ॥ काहेतैं सर्वदूषणों तैं रहित तथा सर्वशुभगुणों करिकै संपन्न तथानमस्कारस्मरणादि कों करिकै सर्वपुरुषार्थों की प्राप्ति करने हारे जे रामकृष्णादिक ईश्वर हैं ॥ तिनों की भी सर्वलोक स्तुति करते न हीं ॥ किंतु केई कश्रेष्ठ पुरुष तों स्तुतिकरेहैं ॥ और केई कनीच पुरुष निंदा भी करेहैं ॥ जबी रामकृष्णादि कईश्वरों की भी सर्वलोक स्तुति नहीं करेहैं ॥ तबी अस्मदादिक जीवों की सर्वलोक स्तुति कैसे करेंगे किं तु नहीं करेंगे ॥ यातैं सा लोकवासना संपादन करने कूं अशक्य है ॥ यातैं इस अधिकारी पुरुष नैं तालोक वा सनाका परित्याग करिकै आपणे हित कूं हीं संपादन करना ॥ यह वार्त्ता अन्य ग्रंथ विषे भी कही है ॥ तहां श्लो क ॥ (विद्यते न खलु कश्चिदुपायः सर्वलोकपरितोषकरो यः सर्वथा स्वहितमाचरणीयं किं करिष्यति जनो बहु जल्पः) अर्थ यह ॥ जिस उपाय करिकै सर्वलोक स्तुतिकरें ॥ ऐसा कोई उपाय लोकशास्त्र विषे है न हीं ॥ यातैं इस अधिकारी पुरुष नैं तालोकवासनाका परित्याग करिकै सर्वप्रकारतैं आपणे हित कूं संपादन करना ॥ लोकों के निंदा स्तुतिकी तरफ नहीं देखना ॥ जिस कारणतैं तेलोक निंदा स्तुतिकरिकै कोई हानि लाभ क रिसकते नहीं इति ॥ किंवा यह उक्त अर्थ भर्तृहरि नैं भी कहा है ॥ तहां श्लोक ॥ (निंदंतु नीति निपुणाय दिवा स्तुवंतु लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वायथेष्टं अद्यैव वामरणमस्तु युगांतरे वा न्याय्यात्पथः प्रविचलंति पदं न धीराः) अर्थ यह ॥ नीति विषे कुशल पुरुष निंदा करो अथवा स्तुतिकरो ॥ और लक्ष्मी प्राप्त होवो अथवा चली जा वो ॥ और आज दिन विषे मरण होवो अथवा युगांतर विषे होवो ॥ परंतु धैर्यवान् विवेकी पुरुष शास्त्र विहि

॥ १९८३ ॥

तमार्ग तैं एक पद मात्र भी चलायमान होतै नहीं ॥ अर्थात् लोककृत निंदा स्तुति आदिकों की उपेक्षा करिकै वि



वो ॥ और आजदिनविषे मरणहोको ॥ अथवा सुमांतसुविषेहोको ॥ फलंतु धैर्यवान् विवेकी पुरुष शास्त्रविहि

तमार्गतेँ एकपदमात्रभी चलायमानहोतेनहीं ॥ अर्थात् लोककृतनिंदास्तुतिआदिकोंकीउपेक्षाकरिकै वि  
वेकीपुरुष आपणेहितकूँहीं संपादनकरेहैं इति ॥ किंवा तालोकवासनाविषेअभिनिवेशवालेपुरुषकूँ आ  
त्मज्ञान नहींउत्पन्नहोवैहै यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( नलोकचित्तग्रहणे रतस्य  
नभोजनाच्छादनतत्परस्य नशब्दशास्त्राभिरतस्य मोक्षो नचातिरम्यावसथप्रियस्य ) अर्थयह ॥ जोपुरुष सर्व  
प्रकारतेँ लोकोंकेचित्तरंजनकरणेविषे प्रीतिवालाहै ॥ तथा जोपुरुष भोजनआच्छादनविषेहीं तत्परहै ॥  
तथा जोपुरुष व्याकरणादिकअनात्मशास्त्रविषे अभिनिवेशवालाहै ॥ तथा जोपुरुष अत्यंतरमणीकगृ  
होंविषे प्रीतिवालाहै ॥ ऐसेपुरुषकूँ मोक्ष प्राप्तहोतानहीं ॥ यातेँ मोक्षकीइच्छावालेपुरुषनेँ सालोकवास  
ना सर्वप्रकारतेँ परित्यागकरणी इति ॥ अब शास्त्रवासनाका निरूपणकरेहैं ॥ तहां शास्त्रकेतात्पर्यकूँ  
नग्रहणकरिकै ताशास्त्रकेअध्ययनादिकोंकी जावासनाहै ताकानाम शास्त्रवासनाहै ॥ साशास्त्रवासना  
भी पाठवासना १ अर्थवासना २ अनुष्ठानवासना ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां सम  
ग्रआयुषपर्यंत वेदशास्त्रोंकेपाठकाहीं अध्ययनकरतेरहणा ताशास्त्रकेतात्पर्यकूँनहींजानणा याकानाम  
पाठवासनाहै ॥ सापाठवासना भरद्वाजकूँ होतीभईहै ॥ तहां भरद्वाजऋषि आयुषकेतीनभागपर्यंत अ  
र्थात् ७५ पंचसप्ततिवर्षपर्यंत वेदोंकेपाठकूँ अध्ययनकरताभया ॥ तथा अतिजीर्णवृद्धअवस्थाकूँप्राप्तहो  
ताभया ॥ ऐसेभरद्वाजकूँदेखिकै देवराजइंद्र ताभरद्वाजकेसमीपआइकै कहताभया ॥ हेभरद्वाज जो  
कदाचित् मैं तुमारेताई आयुषका चतुर्थभाग देवों ॥ तौं तिसचतुर्थभागआयुषकरिकै तूं क्यासंपाद  
नकरैगा ॥ ऐसेइंद्रकेवचनकूँश्रवणकरिकै सोभरद्वाजऋषि ताचतुर्थआयुषभागविषेभी मैं वेदोंकेपाठका  
हींअध्ययनकरौंगा याप्रकारकावचन कहताभया ॥ तिसतेँअनंतर सोइंद्र ताभरद्वाजकी पाठवासना



तत्त्वा०

॥ १५ ॥

केनिवृत्तकरणेवासतै ताभरद्वाजकेप्रति वेदोंकूपर्वतरूपकरिकै दिखावताभया ॥ तिनवेदरूपपर्वतोंतैं ए  
कएकमुष्टिलैके ताभरद्वाजकेप्रति कहताभया ॥ हेभरद्वाज अबपर्यंत तुमनैं यहमुष्टिमात्रवेद अध्ययन  
करेहैं ॥ यहपर्वतरूपवेद बाकी अध्ययनकरणेकूंरहतेहैं ॥ ऐसेइंद्रकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोभरद्वाज ता  
पाठवासनातैं निवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोइंद्र ताभरद्वाजकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेश करताभ  
या ॥ यहगाथा तैत्तिरीयकश्रुतिविषे भरद्वाजोपाख्यानविषे प्रसिद्धहै इति ॥ और वेदशास्त्रोंकेतात्पर्य  
कूंनजानिकरिकै समग्रआयुषपर्यंत तिनवेदशास्त्रोंकेअर्थका अध्ययनकरीजाणा याकानाम अर्थवास  
नाहै ॥ साअर्थवासनाभी तापाठवासनाकीन्यांई दुःसंपाद्यहोणेतैं मलिनवासनाहींहै ॥ याकारणतैंहीं  
विद्वान्पुरुषोंनैं यहकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( अनंतशास्त्रंबहुवेदितव्यमल्पश्रकालोबहवश्रविघ्नाः यत्सा  
रभूतंतदुपासितव्यं हंसोयथाक्षीरमिवांबुमिश्रं ॥ १ ॥ अधीत्यचतुरोवेदान् धर्मशास्त्राण्यनेकशः यस्तुब्र  
ह्मनजानाति दर्वीपाकरसंयथा ॥ २ ॥ ) अर्थयह ॥ शास्त्र अनंतहैं ॥ तथा शास्त्रप्रतिपादितपदार्थभी  
अनंतहैं ॥ तेपदार्थ अल्पकालकरिकै जान्येजातेनहीं ॥ और इसपुरुषकीआयुष अत्यंतअल्पहै ॥ ताअल्प  
आयुषविषेभी रोगादिकअनेकविघ्न प्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसेविघ्नयुक्तअल्पआयुषकरिकै तिनसर्वशास्त्रोंकाअर्थ  
जानणेकूंअशक्यहै ॥ यातैं जैसे हंसपक्षी जलमिश्रितक्षीरतैं क्षीरमात्रकूंहीं ग्रहणकरेहै ॥ तैसे इसअधिका  
रीपुरुषनैंभी सर्वशास्त्रोंकासारभूत जोब्रह्मात्मरूपअर्थहै सोईहीं ग्रहणकरणेयोग्यहै इति ॥ किंवा जोपु  
रुष चारिवेदोंकेअर्थकूं अध्ययनकरेहै ॥ तथा अनेकधर्मशास्त्रोंकेअर्थकूं अध्ययनकरेहै ॥ परंतु अहंब्रह्मा  
स्मि याप्रकारतैं ब्रह्मकूंजानतानहीं ॥ सोपुरुष दर्वीकेतुल्यहै ॥ अर्थात् जैसे दर्वी अनेकप्रकारकेव्यंज  
नोंविषेफिरेहै ॥ परंतु तिनव्यंजनोंकेरसकूंजानतीनहीं ॥ कडछीकानाम दर्वीहै इति ॥ और श्रुतिस्मृति

परि०

४

॥ १८४ ॥



नो विषे फिरे है ॥ परंतु तिन व्यंजनो के सत्त्व गुण जिनहीं On the काली कानाम दवी है इति ॥ और श्रुति स्मृति

रूपशास्त्रने विधान कन्ये जे कर्म हैं ॥ तिन कर्मों के अनुष्ठान विषे ही समग्र आयुष व्यतीत करणी या कानाम अनुष्ठान वासना है ॥ सा अनुष्ठान वासना निदाघ कूं होती भई है ॥ तहां ऋभुनामा ऋषिने पुनः पुनः उपदेश कन्या हू आभी सो निदाघ ता अनुष्ठान वासना करिके ब्रह्मात्मतत्त्व कूं नहीं जानता भया ॥ तीसरे वार ता ऋभु के उपदेश तें अति क्लेश तें सर्व अनुष्ठान का परित्याग करिके ब्रह्मात्मतत्त्व कूं साक्षात्कार करता भया ॥ यह वार्त्ता विष्णु पुराण विषे विस्तार तें कथन करी है ॥ या तें सा पूर्व उक्त तीनों प्रकार की शास्त्र वासना आत्मज्ञान का प्रतिबंध कही है इति ॥ अब देह वासना का निरूपण करे हैं ॥ तहां इस भौतिक स्थूल शरीर विषे जो अभिनिवेश है ता कानाम देह वासना है ॥ सा देह वासना भी दो प्रकार की होवै है ॥ एक तो देह विषयक होवै है ॥ दूसरी देह संबंधी गुण विषयक होवै है ॥ तहां मनुष्योऽहं ब्राह्मणोऽहं या प्रकार की जा वासना है सा देह विषयक वासना कही जावै है ॥ और दूसरी देह संबंधी वासना भी शास्त्रीय १ लौकिक २ इस भेद करिके दो प्रकार की होवै है ॥ तहां प्रथम शास्त्रीय वासना भी दो प्रकार की होवै है ॥ एक तो गुणाधान प्रयुक्त होवै है ॥ दूसरी दोष निवृत्ति प्रयुक्त होवै है ॥ तहां शास्त्र विहित गंगा स्नानादिकों करिके जो देह विषे सद्गुणों के धारण की वासना है ॥ सा वासना गुणाधान प्रयुक्त कही जावै है ॥ और शौच आचमनादिकों करिके जो देह तें दोषों के निवृत्त करने की वासना है ॥ सा वासना दोष निवृत्ति प्रयुक्त कही जावै है ॥ इस प्रकार सा लौकिक वासना भी दो प्रकार की होवै है ॥ तहां तैल पान मरिच भक्षणादिकों करिके जो देह विषे सौंदर्यादि कर्तव्यों के धारण करने की वासना है सा प्रथम है ॥ और मल निवर्त्तक औषध जलादिकों करिके जो देह तें मल के निवृत्त करने की वासना है सा दूसरी है ॥ यह सर्व देह वासना ज्ञान का प्रतिबंध क होने तें तथा जन्मांतर का हेतु होने तें मलिन वासना ही है इति ॥ किंवा लोक वासना शास्त्र वासना देह वासना इन उक्त तीन वासना



तत्त्वा०

॥ १६ ॥

परि०

४

वोंतैंअन्यभी ज्ञानकेप्रतिबंधकमलिनवासना गीताकेषोडशेअध्यायविषे श्रीभगवान्ने (दंभोदर्पोऽभिमा  
 नश्चक्रोधःपारुष्यमेवच ) इत्यादिकवचनकरिकै दंभदर्पादिआसुरसंपतरूपकरिकै कथनकरीहैं ॥ इसप्रका  
 र स्त्रीपुत्रादिकविषयोंकी जेअभिलाषाहैं तेभी मलिनवासनाहीहैं ॥ तेसर्वमलिनवासना ज्ञानकाप्रतिबं  
 धकहोणेतैं मुमुक्षुजननैं निवृत्तकरणेयोग्यहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तिनमलिनवासनावोंकीनिवृत्ति कि  
 सउपायतैंहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तेमलिनवासना पूर्वउक्तरीतितैं अनेकप्रकारकीयाहैं ॥ यातैं  
 वसिष्ठादिकमुनियोंनैं तिनवासनावोंके निवृत्तिकेउपायभी अनेकप्रकारके कहेहैं ॥ तहां नित्यअनित्य  
 वस्तुकाविवेक तथाविषयोंविषेदोषोंकादर्शन तथामहात्माजनोंकासत्संग तथाविषयीजनोंकेसंगकाप  
 रित्याग तथामैत्रीकरुणादिकविरोधीवासनाकीउत्पत्ति इत्यादिकउपायोंकरिकै तिनमलिनवासनावोंकी  
 निवृत्ति होवैहै ॥ यातैं तिनविवेकादिकउपायोंकरिकै आपणेअंतःकरणविषे जो तिनमलिनवासनावों  
 कीउत्पत्ति नहींहोणेदेणी यहहीं तावासनाक्षयकाअभ्यासहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( दृश्यासंभवबोधेन रागद्वे  
 षादितानवे रतिर्नवोदितायातु बोधाभ्यासंविदुःपरं ) अर्थयह ॥ यहदृश्यमानसर्वप्रपंच अधिष्ठानआत्मा  
 तैंभिन्नरूपकरिकै वास्तवतैंनहींहै ॥ याप्रकारका जो दृश्यप्रपंचकेअसंभवकाबोधहै ॥ ताबोधकरिकै प्र  
 पंचरूपविषयकेअभावतैं रागद्वेषादिरूपवासनाकेनिवृत्तहूए इसपुरुषकी आपणेस्वरूपानंदकेअनुभववि  
 षे जादृढप्रीति उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसकूं विद्वान्पुरुष वासनाक्षयकाअभ्यास कहेहैं इति ॥ अब अन्यप्र  
 कारतैं तिसमलिनवासनाके निवृत्तिकेउपायकूंप्रतिपादनकरणेहारेवाक्यकूंकहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ ( असं  
 गव्यवहारित्वाद्भवभावनवर्जनात् शरीरनाशदर्शित्वाद्वासनानप्रवर्त्तते ) अर्थयह ॥ मैंअसंगहूं याप्रका  
 रकेवृत्तियोंकाप्रवाहरूप जोव्यवहारहै ॥ ताव्यवहारकेनिरंतरकरणेतैं इसपुरुषविषे दूसरीवासना प्रवृत्त

॥ १७ ८५ ॥

होतीनहीं ॥ तथा प्रपंचकेस्मरणका जोपरित्यागहै तिसतैंभी दूसरीवासना प्रवृत्तहोतीनहीं ॥ तथा



केवृत्तियोंका प्रवाहरूप जो व्यवहार है तिसमें भी दूसरी वासना प्रवृत्त होती है ॥

होती नहीं ॥ तथा प्रपंचके स्मरणका जो परित्याग है तिसमें भी दूसरी वासना प्रवृत्त होती नहीं ॥ तथा निरंतर आपणेशरीरके मरणका जो दर्शन है तिसमें भी दूसरी रागादिरूप वासना प्रवृत्त होती नहीं इति ॥ तहां आपणेमरणके दर्शन तें रागादिरूप वासना नहीं होवै है यह वार्त्ता अन्य ग्रंथविषे भी कही है ॥ तहां श्लोक ॥ ( मस्तकस्थायिनं मृत्युं यदि पश्येदयं जनः आहारोऽपि न रोचेत् किमु तान्या विभूतयः ) अर्थ यह ॥ आपणेमस्तक ऊपरि स्थित जो मृत्यु है ॥ तिस मृत्युकुं जो कदाचित् यह पुरुष देखे ॥ तों इस पुरुषकुं भोजन भी प्रिय नहीं लागेगा ॥ तों अन्य विभूतियां कैसे प्रिय लागेगी किंतु नहीं लागेगी इति ॥ अब संसारविषे दोषका प्रतिपादक वचन कहे हैं ॥ श्लोक ॥ ( दुःखं जन्म जरा दुःखं दुःखं मृत्युः पुनः पुनः संसारमंडलं दुःखं पच्यं ते यत्र जंतवः ) अर्थ यह ॥ जन्म भी दुःखरूप है ॥ तथा जरा भी दुःखरूप है ॥ तथा पुनः पुनः मरण भी दुःखरूप है ॥ ईहां बहुत क्या कहें ॥ यह सर्व संसारमंडल दुःखरूप ही है ॥ जिस संसारमंडलविषे यह सर्व अज्ञानी जीव पुनः पुनः जन्म मरणादिकों कुं प्राप्त होवै हैं ॥ इस प्रकार आत्मा तें भिन्न सर्व जगत्कुं दुःखरूप करिके चिंतन करे हारे पुरुषकी रागद्वेषादिरूप सर्वमलिन वासना निवृत्त होवै हैं इति ॥ किंवा विषयलंपट पुरुषों के संगका जो परित्याग है ॥ सो भी मलिन वासनाकी निवृत्ति द्वारा इस पुरुषके मोक्षका साधन होवै है ॥ यह वार्त्ता विष्णुपुराणविषे भी कथन करी है ॥ तहां श्लोक ॥ ( निःसंगता मुक्तिपदं यतीनां संगोऽदोषः प्रभवति दोषाः आरूढयोगोऽपि निपात्यतेऽधः संगेन योगी किमु ताल्पसिद्धिः ) अर्थ यह ॥ विषयासक्त पुरुषों के संगका परित्यागरूप जा निःसंगता है ॥ सानिःसंगता ही संन्यासीयोंकुं मुक्तिके प्राप्ति का मार्ग है ॥ जिस कारण तें तिन विषयासक्त पुरुषों के संगतें इस पुरुषविषे रागद्वेष मोहादिक सर्वदोष प्राप्त होवै हैं ॥ तिन मलिन वासनारूप दोषों नें योगारूढ पुरुष भी अधः पतन करीता है ॥ तों योगारूढ होनेकी इच्छावाला पुरुष



तत्त्वा०

॥ १७ ॥

परि०

४

क्युंनहीं अधःपतनकरीयेंगा इति ॥ किंवा इसतत्त्ववेत्तापुरुषनें सर्वप्रकारतैं विषयलंपटपुरुषोंकेसंगतैंर  
 हितहोणा ॥ यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( तस्माच्चरेतवैयोगी सतांधर्ममगर्हयन्  
 जनायथावमन्येरन् गच्छेयुर्नैवसंगतिं ) अर्थयह ॥ यहतत्त्ववेत्तापुरुष श्रेष्ठपुरुषोंकेधर्मकूं नहींदूषितकर  
 ताहूआ इसप्रकारतैं लोकविषेविचरे ॥ जैसे यहविषयासक्तलोक अपमानकरतेहूए संगतिकूंनहींप्राप्तहो  
 वैं इति ॥ किंवा यहवार्त्ता भारतविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( अहेरिवगणाद्भीतः सन्मानान्नरकादि  
 व कुणपादिवचस्त्रीभ्यस्तंदेवाब्राह्मणंविदुः ) अर्थयह ॥ जैसे देहाभिमानीपुरुष सर्पतैंभयकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥  
 तैसे जोविद्वान्पुरुष लोकोंकेसमूहतैं भयकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और जैसे लोक नरकतैं भयकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥  
 तैसे जोविद्वान्पुरुष सन्मानतैं भयकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और जैसे लोक मृतकशरीरतैं भयकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तैसे  
 जोपुरुष स्त्रीजनोतैं भयकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूं देवता ब्राह्मणकहेहैं ॥ अर्थात् जीवन्मुक्त क  
 हेहैं इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ श्रीभागवतविषेभी कहाहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( संगंत्यजेतमिथुनव्रतिनांमु  
 मुक्षुः सर्वात्मनानविसृजेद्वहिरिन्द्रियाणि एकश्चरेद्रहसिचित्तमनंतईशे युंजीततद्रतिषुसाधुषुचेत्प्रसंगः ॥१॥  
 स्त्रीणांतत्संगिनांसंगं त्यक्त्वादूरतआत्मवान् क्षमीविविक्तआसीनश्चितयेन्मामतंद्रितः ॥ २ ॥ ) अर्थयह ॥  
 मुमुक्षुजन विषयासक्तस्त्रीपुरुषोंकेसंगकूं सर्वप्रकारतैं परित्यागकरै ॥ तथा चक्षुआदिकएकादशइंद्रियों  
 कूं बाह्यरूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्तनहींकरै ॥ जिसकारणतैं इंद्रियोंकूंविषयोंविषेप्रवृत्तकरणेतैं मनुभग  
 वान्नें ( अकुर्वन्विहितंकर्म निंदितंचसमाचरन् प्रसजन्निन्द्रियार्थेषु नरःपतनमृच्छति ) इसवचनकरिकै  
 नरककीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ किंतु यहमुमुक्षुजन एकांतदेशविषे एकाकीस्थितहोइकै अपरिच्छिन्नईश्वर  
 विषे चित्तकूंजोडे ॥ अर्थात् निरंतर ब्रह्माध्यानकरै ॥ और जोकदाचित् सोचित्त-आपणेचंचलस्व

॥१८६॥

भावतैं तापरब्रह्मविषेस्थितनहींहोवैं ॥ ता तापरब्रह्मविषेप्रातिवालेजमहात्माहै तिनोंका संगकरै ॥ १ ॥



नरककीप्राप्ति कथनकराहै ॥ किंतु यहमुमुक्षुजन एकांतदेशविषे एकाकास्थितहोइके अपारिच्छन्नइश्वर  
विषे चित्तकुंजोडे ॥ अर्थात् निरंतर ब्रह्मकीध्यानकरै ॥ और जोकिदाचित् सोचित्-आपणेचंचलस्व

भावतैं तापरब्रह्मविषेस्थितनहींहोवै ॥ तौ तापरब्रह्मविषेप्रीतिवालेजेमहात्माहै तिनोँका संगकरै ॥ १ ॥  
किंवा यहमुमुक्षुजन स्त्रीयोँके तथास्त्रीआसक्तपुरुषोँके संगकुं दूरतैंपरित्यागकरिकै एकांतदेशविषेस्थित  
होइकै मैंपरमेश्वरकुं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारतैंध्यानकरै इति ॥ २ ॥ ताध्यानकाफल स्मृतिविषेभी कहाहै ॥  
तहांश्लोक ॥ ( अहमस्मिपरंब्रह्म वासुदेवाख्यमव्ययः इतियस्यस्थिराबुद्धिः समुक्तोनात्रसंशयः ) अर्थ  
यह ॥ वासुदेवहैनामजिसका ऐसाजो उत्पत्तिविनाशतैंरहितपरब्रह्महै ॥ सोपरब्रह्म मैंहूं इसप्रकारकीस्थि  
रबुद्धि जिसपुरुषकीहै ॥ सोपुरुष मुक्तहीहै ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै इति ॥ किंवा  
यहब्रह्मध्यानकाफल विष्णुपुराणविषे यमराजानैंभी मृत्युकेप्रति कहाहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( सकलमिद  
महंचवासुदेवः परमपुमान्परमेश्वरःसएकः इतिमतिरचलाभवत्यनंते हृदयगतेव्रजतान्विहायदूरात् ) अर्थ  
यह ॥ यहसर्वजगत् तथामैं वासुदेवरूपहीहैं ॥ सोवासुदेव परमपुरुषहै तथापरमेश्वरहै तथाएकअद्विती  
यहै ॥ इसप्रकारकीअचलबुद्धि जिनपुरुषोँकी हृदयदेशविषेस्थितपरमात्माविषे होवैहै ॥ हेमृत्यु तिनपु  
रुषोँकुं तुमनैं दूरतैंपरित्यागकरिकैचलना ॥ अर्थात् परब्रह्मकेध्यानपरायणपुरुषोँकुं पुनःमृत्युकीप्राप्तिहो  
तीनहीं इति ॥ यातैंयहसिद्धभया ॥ जोपुरुष विषयासक्तस्त्रीपुरुषोँकेसंगकापरित्यागकरिकै ब्रह्मकाचिं  
तनकरैहै ॥ तिसपुरुषकी तेसर्वमलिनवासना निवृत्तहोवैहैं इति ॥ अब सत्संगकुं वासनाकीनिवृत्तिद्रा  
रा मोक्षकीसाधनताकाप्रतिपादकवचन कहेहैं ॥ श्लोक ॥ ( महत्सेवांद्वारमाहुर्विमुक्तेस्तमोद्वारंयोषि  
तांसंगिसंगं महांतस्तेसमचित्ताःप्रशांता विमन्यवःसुहृदःसाधवोये ) अर्थयह ॥ विद्वान्पुरुष महत्पुरुषोँ  
केसेवाकुं मुक्तिकासाधन कहेहैं ॥ और स्त्रीयोँकेसंगीपुरुषोँकेसंगकुं नरककेप्राप्तिकासाधन कहेहैं ॥  
तहां महत्पुरुष किसकानामहै ॥ जेपुरुष समचित्तहैं ॥ अर्थात् समब्रह्मविषेहै चित्त जिनोँका ॥ अथवा



तत्त्वा०

॥ १८ ॥

परि०

४

शत्रुमित्रविषेहै समचित्त जिनोंका ॥ तथा जेपुरुष अतिशयकरिकै शांतस्वभाववालेहैं ॥ तथा क्रोधतैर हितहैं ॥ तथा सुहृद्हैं ॥ अर्थात् अनुपकारीपरिभीउपकारकरणेहारेहैं ॥ तथा साधुहैं ॥ अर्थात् शम दमकरिकैसंपन्नहैं ॥ ऐसेगुणोंवालेपुरुषहीं महत्पुरुष कहेजावैहैं ॥ ऐसेमहत्पुरुषोंका जो श्रद्धाभक्तिपूर्वक संगहै ॥ सोसंगभी तामलिनवासनाकीनिवृत्तिद्वारा मोक्षकाहींसाधन होवैहै इति ॥ किंवा स्त्रीतत्संगियोंकेसंगविषे नरककीसाधनताभी शास्त्रविषेकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( योषिद्विरण्याभरणांबरादि द्रव्येषुमायारचितेषुमूढः प्रलोभितात्माद्युपभोगबुद्ध्या पतंगवन्नश्यतिनष्टदृष्टिः ) अर्थयह ॥ स्त्री सुवर्ण आभूषण वस्त्र इत्यादिक जेमायारचितपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंविषे लोभकूंप्राप्तभयाहैमनजिसका ऐसा जो अविवेकीपुरुषहै ॥ सो तिनपदार्थोंविषे उपभोगबुद्धिकरिकै पतंगकीन्यांई नाशहोवैहै ॥ जिसका रणतैं सोपुरुष विवेकदृष्टितैरहितहै इति ॥ अब मैत्रीकरुणादिकविरोधीवासनाकरिकै तिनमलिनवासनावोंकीनिवृत्ति कहेहैं ॥ तेमैत्रीआदिकविरोधीवासना पतंजलिभगवान्नें योगसूत्रोंविषेकहीहैं ॥ तहांसूत्र ॥ ( मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणांभावनातश्चित्तप्रसादनं ) अर्थयह ॥ मैत्री १ करुणा २ मुदिता ३ उपेक्षा ४ यहचारिप्रकारकी शुभवासना होवैहैं ॥ तहां सुखीप्राणीयों विषे यहसर्व हमारेहींहैं ॥ याप्रकारकी जाभावनाहै ताकानाम मैत्रीहै ॥ और दुःखीप्राणीयोंविषे जैसे हमारेकूं दुःखमतहोवै तैसे इनप्राणीयोंकूंभी दुःखमतहोवै याप्रकारकी जाभावनाहै ताकानाम करुणा है ॥ और पुण्यवान्पुरुषोंकूंदेखिकै जा प्रसन्नताहै ताकानाम मुदिताहै ॥ और पापीपुरुषोंतैं जा उदासीनताहै ताकानाम उपेक्षाहै ॥ इसप्रकारकी मैत्रीआदिकचारिभावनावालेपुरुषकी राग द्वेष अस्र या मद मात्सर्य आदिक सर्वमलिनवासना निवृत्तहोइजावैहैं ॥ तिसतैं इसपुरुषकाचित्त शुद्धहोवैहै इति ॥

॥ १८ ॥



दासिनताह ताकानाम उपक्षेह ॥ इसप्रकारिका मन्त्रादिकचाराभावनावालपुरुषका राग द्वेष अस्र  
या मद मात्सर्य आदिक सर्वमलिनवासना निवृत्तहोइजावैह ॥ तिसरै इसपुरुषकाचित्त शुद्धहोवैहै इति ॥

इसप्रकार गीताकेषोडशेअध्यायविषे श्रीभगवान्ने ( अभयंसत्त्वसंशुद्धिज्ञानयोगव्यवस्थितिः दानंदम  
श्रयज्ञश्च स्वाध्यायस्तपआर्जवं ॥ १ ॥ अहिंसासत्यमक्रोधस्त्यागःशांतिरपैशुनं दयाभूतेष्वलोलुप्तं मार्दवं  
ह्रीरचापलं ॥ २ ॥ तेजःक्षमाधृतिःशौचमद्रोहोनातिमानिता भवंतिसंपदंदैवीमभिजातस्यभारत ॥ ३ ॥ )  
इनतीनश्लोकोंकरिकै कथनकरीजा दैवीसंपत्है ॥ तादैवीसंपत्तरूपविरोधीवासनाकेअभ्यासकरिकै दंभ  
दर्पादिक आसुरीसंपत्तरूपमलिनवासना निवृत्तहोइजावैहै ॥ इसप्रकार तागीताकेत्रयोदशेअध्यायविषे  
श्रीभगवान्ने ( अमानित्वमदंभित्वमहिंसाक्षांतिरार्जवं आचार्योपासनंशौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥ १ ॥  
इंद्रियार्थेषुवैराग्यमनहंकारएवच जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनं ॥ २ ॥ असक्तिरनभिष्वंगः पुत्र  
दारगृहादिषु नित्यंचसमचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ३ ॥ मयिचानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी वि  
विकृतदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥ ४ ॥ अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनं एतज्ज्ञानमितिप्रोक्तम  
ज्ञानंयदतोन्यथा ॥ ५ ॥ ) इनपंचश्लोकोंकरिकै कथनकन्येजे अमानित्व अदंभित्व आदिक ज्ञानकेसाध  
नहैं ॥ तिनअमानित्वादिकसाधनोंकेअभ्यासकरिकै तिनोतैंविपरीत भ्रांतिज्ञानकेसाधन मानदंभादिक  
निवृत्तहोइजावैहैं ॥ इनगीताश्लोकोंकाअर्थ गीतागूढार्थदीपिकाविषे हमनैं विस्तारतैंनिरूपणकन्याहै ॥  
सो तहांसैंजानिलेणा ॥ ग्रंथविस्तारकेभयतैं ईहांलिख्यानहीं इति ॥ इसप्रकार सोविद्वत्संन्यासी जबी  
संकल्पपूर्वक तिनमैत्रीआदिकशुभवासनावोंकूं तथादैवीसंपत्कूं तथाअमानित्वादिकधर्मोंकूं अभ्यासक  
रिकैं संपादनकरेहै ॥ तबी सूर्यकेउदयहूए जैसे तम निवृत्तहोवैहै ॥ तैसे ताविद्वत्संन्यासीकी तेपूर्वउक्त  
सर्वमलिनवासना निवृत्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर सोविद्वत्संन्यासी अजिहत्वादिकषट्धर्मोंकूं अभ्यासक  
रिकैं संपादनकरै ॥ तेअजिहत्वादिकधर्म स्मृतिविषेकथनकरैहैं ॥ तहांश्लोक ॥ ( अजिह्वःषंडकःपंगुरंधो



तत्त्वा०

॥ १९ ॥

बधिरएवच मुग्धश्चमुच्यतेभिधुःषड्भिरेतैर्नसंशयः ) अर्थयह ॥ अजिह्व १ पंडक २ पंगु ३ अंध ४ बधिर ५ मुग्ध ६ इनषट्धर्मोंकेसेवनकरणेतें संन्यासी जीवन्मुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातें तासंन्यासीनैं तेषट्धर्म अवश्यसंपादनकरणे इति ॥ अब तिनअजिह्वत्वादिकषट्धर्मोंके शास्त्रप्रमाणकरिकै यथाक्रमतें लक्षण कहेहैं ॥ अथअजिह्वलक्षणं ॥ श्लोक ॥ ( इदमिष्टमिदंनेति योऽश्रन्नपिनसज्जते हितंसत्यमितंवक्ति तमजिह्वंप्रचक्ष्यते ) अर्थयह ॥ जोसंन्यासी अन्नादिकोंकूंभक्षणकरताहूआभी यहअन्न स्वादुहै यहअन्न अस्वादुहै याप्रकारकावचन कहतानहीं ॥ तथा हितकारी सत्य प्रमित याप्रकारकेवचनकूं उच्चारणकरेहै ॥ सोसंन्यासी अजिह्व कह्याजावैहै इति ॥ अथपंडकलक्षणं ॥ श्लोक ॥ ( अद्यजातांयथानारीं तथाषोडशवार्षिकीं शतवर्षांचयोदृष्ट्वा निर्विकारःसंपंडकः ) अर्थयह ॥ जैसे आजदिनविषेजन्मीहूई अतिबालक स्त्रीकूं देखिकै तथाशतवर्षकीअतिवृद्धस्त्रीकूं देखिकै कामरूपविकार उत्पन्नहोतानहीं ॥ तैसे जोसंन्यासी षोडशवर्षकीयुवास्त्रीकूं देखिकैभी कामरूपविकारतैरहितहोवैहै ॥ सोसंन्यासी पंडक कह्याजावैहै ॥ नपुंसककानाम पंडकहै इति ॥ अथपंगुलक्षणं ॥ श्लोक ॥ ( भिक्षार्थमटनंयस्य विष्मूत्रकरणायच योजनान्नपरंयाति सर्वथापंगुरेवसः ) अर्थयह ॥ जिससंन्यासीका भिक्षाकेवासतैहीं गमन होवैहै ॥ तथा विष्ठा मूत्रकेपरित्यागकरणेवासतै गमन होवैहै ॥ अन्यकिसीप्रयोजनवासतै गमन होतानहीं ॥ तथा जोसंन्यासी एकयोजनतैअधिकमार्ग चलतानहीं ॥ सोसंन्यासी पंगु कह्याजावैहै इति ॥ अथअंधलक्षणं ॥ श्लोक ॥ ( तिष्ठतोव्रजतोवापि यस्यचक्षुर्नदूरगं चतुर्युगांभुवंत्यक्त्वा परिव्राट्सोऽधुच्यते ) अर्थयह ॥ जिससंन्यासीका स्थितहूए वा चलतेहूए चक्षुइंद्रिय चतुर्युगभूमिकूंछोडिकै दूरनहींजावैहै ॥ सोसंन्यासी अंध कह्याजावैहै ॥ ईहां चारिहस्तकानाम युगहै ॥ चतुर्युगभूमि षोडशहस्तपरिमाण होवैहै इति ॥

परि०

४

॥ १९८ ॥

अथबधिरलक्षणं ॥ श्लोक ॥ ( हिताहितमनाराम वचःशोकावहचयत् श्रुत्वापिनशृणोतियो बधिरःसप्र



अथबधिरलक्षणं ॥ श्लोक ॥ ( हिताहितं मनो रामं वचः शोकावहं च यत् श्रुत्वापि न शृणोति यो बधिरः स प्रकीर्तितः ) अर्थ यह ॥ जो संन्यासी हर्षकी प्राप्ति करणे हारे अनुकूल वचन कूं तथा शोक की प्राप्ति करणे हारे प्रतिकूल वचन कूं श्रवण करिके भी नहीं श्रवण करे है ॥ अर्थात् हर्ष शोक कूं प्राप्त होतानहीं ॥ सो संन्यासी बधिर कहा जावै है इति ॥ अथ मुग्ध लक्षणं ॥ श्लोक ॥ ( सान्निध्ये विषयाणां च समर्थोऽविकलैर्द्रियः सुप्तवद्वर्त्तते नित्यं स भिक्षुर्मुग्ध उच्यते ) अर्थ यह ॥ विषयों के समीप प्राप्त हूए जो संन्यासी समर्थ हू आभी तथा सर्व इंद्रियों करिके संपन्न हू आभी तिन विषयों विषे प्रवृत्त होतानहीं ॥ किंतु सुषुप्त पुरुष की न्यांई तिन विषयों तें उपरा मरहे है ॥ सो संन्यासी मुग्ध कहा जावै है इति ॥ इस प्रकार अजिहत्वादि कषट्धर्मों का अभ्यास करिके पश्चात् चिन्मात्र वासना का अभ्यास करै ॥ तहां यह नाम रूपात्मक सर्व जगत् चैतन्य विषे कल्पित होणे तें स्वतः सत्ता स्फुरण तें रहित है ॥ या तें ता अधिष्ठान चैतन्य के सत्ता स्फुरण पूर्व कहीं ता जगत् का सत्ता स्फुरण होवै है ॥ इस प्रकार जगत् विषे नाम रूप दोनों अंशों कूं मिथ्यात्व निश्चय तें उपेक्षा करिके सर्वत्र परिपूर्ण अस्ति भाति प्रिय रूप अधिष्ठान चैतन्य मैं हूं या प्रकार की जा निरंतर भावना है ता कानाम चिन्मात्र वासना है ॥ सा चिन्मात्र वासना भी दो प्रकार की होवै है ॥ एक तों कर्ता कर्म करण इस त्रिपुटी के स्मरण पूर्वक चिन्मात्र वासना होवै है ॥ और दूसरी ता त्रिपुटी के स्मरण तें रहित केवल चिन्मात्र वासना होवै है ॥ तहां इस सर्व जगत् कूं मैं आपणे मन करिके चिन्मात्र रूप जानता हूं इस प्रकार तें कन्यी हूई जा भावना है ॥ सा भावना तों प्रथम त्रिपुटी पूर्वक चिन्मात्र वासना है ॥ इस चिन्मात्र वासना का संप्रज्ञात समाधिको टि विषे अंतर्भाव है ॥ अर्थात् इस प्रथम चिन्मात्र वासना कूंहीं योग शास्त्र वाले संप्रज्ञात समाधि कहे हैं ॥ और कर्ता कर्म करण इस त्रिपुटी के स्मरण तें रहित मैं चिन्मात्र हूं या प्रकार की जा भावना है ॥ सा भावना केवल चिन्मात्र वासना



तत्त्वा०

॥ २० ॥

परि०  
४

कहीजावैहै ॥ इस केवलचिन्मात्रवासनाका असंप्रज्ञातसमाधिकोटिविषे अंतर्भावहै ॥ अर्थात् इस केवलचिन्मात्रवासनाकूंहीं योगशास्त्रवाले असंप्रज्ञातसमाधि कहेहैं ॥ तहां सर्वजगत्कूं चिन्मात्ररूपता शुक्रनें बलिकेप्रति कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( चिदिहास्तीहचिन्मात्रं सर्वचिन्मयमेवतत् चित्त्वंचिदहमेते च लोकाश्चिदितिसंग्रहः ) अर्थयह ॥ हेराजन् इससर्वजगत्विषे चैतन्यहीं अधिष्ठानरूपतें व्याप्यकरिकै रखाहै ॥ यातें यहसर्वजगत् चैतन्यमात्रहींहै ॥ तूंभी चैतन्यरूपहींहैं ॥ तथा मैंभी चैतन्यरूपहींहूं ॥ तथा यहसर्वलोकभी चैतन्यरूपहींहैं इति ॥ इसप्रकार चिन्मात्रवासनाके दृढअभ्यासकीयेहूए पूर्वउक्तसर्वम लिनवासना निवृत्तहोवैहैं ॥ यहहीं वासनाक्षयकाअभ्यासहै इति ॥ अब मनोनाशकेकहणेवासतै प्रथम मनकास्वरूप कहेहैं ॥ लाक्षासुवर्णादिकोंकीन्यांई सावयव तथाकामादिकवृत्तिरूपकरिकैपरिणामवाला जो अंतःकरणहै ॥ सोअंतःकरणहीं मननरूपहोणेतें मन कहाजावैहै ॥ सोमन सत्त्व रज तम यहतीनगुणरूपहोवैहै ॥ काहेतें सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंके यथाक्रमतेंविकाररूप जे सुख दुःख मोह यहतीनधर्महैं ॥ तेतीनोंधर्म तामनकेआश्रितहूए प्रतीतहोवैहैं ॥ यातें तामनविषे सत्त्वादित्रिगुणरूपताहीं सिद्धहोवैहै ॥ तहां सोमन राजसतामसवृत्तियोंकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहूआ अतिस्थूल होवैहै ॥ सोस्थूलमन आत्माकेसाक्षात्कारवासतै योग्यनहींहोवैहै ॥ काहेतें दुर्विज्ञेयहोणेतें आत्मा अतिसूक्ष्महै ॥ ऐसेसूक्ष्मआत्माका स्थूलमनकरिकै साक्षात्कार संभवतानहीं ॥ जैसे स्थूलकुदालकरिकै सूक्ष्मवस्त्रकासीवना संभवतानहीं ॥ किंतु सूक्ष्मसूचीकरिकैहीं तासूक्ष्मवस्त्रकासीवना संभवैहै ॥ तैसे सूक्ष्ममनकरिकैहीं तासूक्ष्मआत्माकासाक्षात्कार संभवैहै ॥ और ( दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिः ) यहश्रुतिभी अतिसूक्ष्मबुद्धिकरिकैहीं आत्माकासाक्षात्कार कहेहै ॥ यातें आत्माकेसाक्षात्कारवासतै मनकीसूक्ष्मता

॥ १९८९ ॥

अवश्यअपेक्षितहै ॥ सामनकीसूक्ष्मता राजसतामसवृत्तियोंकेतिरोधकरिकै सिद्धहोवैहै ॥ यातें तिनवृत्तियोंकेतिरोधकरिकै जो मनकेसूक्ष्मताकामंषादनहै यहहीं तामनकानाशहै ॥ ईहां यहतात्पर्यहै ॥ सो



आवश्यकतै ॥ सामनकीसूक्ष्मता राजसतामसवृत्तियोंकेनिरोधकरिके सिद्धहोवैहै ॥ यातें तिनवृ  
 त्तियोंकेनिरोधकरिके जो मनकेसूक्ष्मताकासंपादनहै यहहीं तामनकानाशहै ॥ ईहां यहतात्पर्यहै ॥ सो  
 मनकानाश अरूपनाश १ सरूपनाश २ इसभेदकरिके दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां तामनका पुनःउत्था  
 नतैरहित जो स्वरूपतैहींनाशहै ताकूं अरूपनाश कहैहैं ॥ और स्वरूपतै तामनकेविद्यमानहूएभी उ  
 पायकरिके जो तामनकेवृत्तियोंकानाशहै ताकूं सरूपनाश कहैहैं ॥ तहां मनकेअरूपनाशकरिकेतों इ  
 सतत्त्ववेत्तापुरुषकूं विदेहमुक्तिकीप्राप्ति होवैहै ॥ और मनकेसरूपनाशकरिके जीवन्मुक्तिकीप्राप्ति हो  
 वैहै ॥ यातें ईहां मनोनाशशब्दकरिके सोसरूपनाशहीं विवक्षितहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ राजस  
 तामसवृत्तियोंकेनिरोधकरिके मनकीसूक्ष्मताकेसंपादनकूं आपनैं मनोनाश कहा ॥ सोवृत्तियोंकानि  
 रोध किसउपायतै होवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तावृत्तिनिरोधकेउपाय वसिष्ठभगवान्ने चारिप्रका  
 रकेकहैहैं ॥ तहांश्लोक ॥ ( अध्यात्मविद्याधिगमः साधुसंगमएवच वासनासंपरित्यागः प्राणस्पंदनिरो  
 धनं ॥ एतास्तुयुक्तयःपुष्टाः संतिचित्तजयेकिल ) अर्थयह ॥ अध्यात्मविद्याधिगम १ साधुसंगम २ वा  
 सनासंपरित्याग ३ प्राणस्पंदनिरोधन ४ यहचारिप्रकारकेउपाय चित्तकेजयकरणेविषे प्रबलकारणहैं ॥  
 तहां प्रत्यक्आत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकेकथनकरणेहारी जाविद्याहै ताकानाम अध्यात्मविद्याहै ॥ ताअ  
 ध्यात्मविद्याकीजाप्राप्तिहै ताकानाम अध्यात्मविद्याऽधिगमहै ॥ सोभी चित्तकेजयका साधनहै ॥ का  
 हेतै यहनामरूपात्मकसर्वजगत् मिथ्याहींहै ॥ मैहीं सर्वत्रपरिपूर्ण परमानंदएकरसहूं ॥ मेरैतैभिन्न को  
 ईभी कारण वाकार्य नहींहै ॥ मैहीं सर्वरूपहूं ॥ याप्रकारकीअध्यात्मविद्याकेप्राप्तहूए यहतत्त्ववेत्तापु  
 रुष सर्वदृश्यप्रपंचकूं मिथ्यारूपकरिकेजानेहै ॥ यातें ताविद्वान्पुरुषकामन तादृश्यप्रपंचविषेभी प्रवृत्तहो



तत्त्वा०

॥ २१ ॥

परि०

४

॥ १९० ॥

वैनहीं ॥ और आत्मातों मनवाणीका अविषय है ॥ यातें ता आत्माविषे भी सोमन प्रवृत्त होवैनहीं ॥ इ  
 सप्रकार अंतरबाह्य प्रवृत्ति तैरहित दूआ सोमन सर्ववृत्तियोंके अनुदयतें इंधनरहित अग्निकीन्याई आपणे अ  
 धिष्ठानरूप कारणविषे लय होवै है ॥ यातें सा अध्यात्मविद्याकी प्राप्ति तामनोनाशविषे मुख्य कारण है ॥  
 और जो पुरुष बुद्धिकी मंदता करिकै ता अध्यात्मविद्याके संपादन करनेविषे असमर्थ है ॥ तिस पुरुषके प्रति  
 दूसरा साधुसंगम उपाय है ॥ काहेतें ते महात्मा पुरुष इस अधिकारी पुरुषकूं पुनः पुनः प्रत्यक्ष आत्माकी ब्र  
 ह्मरूपता तथा जगत्कामिंथ्यापणा स्मरण करावै हैं तथा बोधन करे हैं ॥ ता करिकै इस अधिकारी पुरुषकूं अ  
 ध्यात्मविद्याकी प्राप्ति होइके सोमनोनाश होवै है ॥ यातें सो साधुसंगम भी ता अध्यात्मविद्याकी प्राप्ति द्वा  
 रा तामनोनाशका उपाय है ॥ किंवा जो पुरुष विद्यामद धनमद कुलमद आचारमद इत्यादिक मदोंक  
 रिकै युक्त दूआ ता साधुसंगमकूं भी नहीं करि सकता ॥ तिस पुरुषके प्रति तामनके निरोधका वासना संपरि  
 त्यागरूप उपाय है ॥ तहां विवेक करिकै जो तामदादिरूपमलिन वासनाकी निवृत्ति है ताका नाम वासना  
 संपरित्याग है ॥ अब तिन विद्यामदादिकोंका स्वरूप तथा तामदके निवर्तक विवेकका स्वरूप वर्णन करे हैं ॥  
 इस भूमिलोकविषे एक मैंहीं पंडित हूं ॥ मेरेतें अन्य दूसरा कोई पंडित है नहीं ॥ जे पुरुष पंडित कहावते हैं ते  
 कछु भी नहीं जानते ॥ या प्रकारका जो मानस अभिमान है ॥ सो अभिमान विद्यामद कहा जावै है ॥ ता  
 विद्यामदकी या प्रकारके विवेकतें निवृत्ति होवै है ॥ पंडितपणेके अभिमानवाले जे बालाकि शाकल्य आदि  
 कहए हैं ॥ तिनोंका भी अजात शत्रु याज्ञवल्क्यादिक विद्वान् पुरुषों करिकै पराभव होता भया है ॥ और म  
 नुष्योंतैलैके श्रीदक्षिणामूर्तिपर्यंत तारतम्यता करिकै विद्याका उत्कर्षपणा देखनेविषे आवै है ॥ सर्वका आ  
 दिगुरु जो श्रीदक्षिणामूर्ति सदाशिव है ॥ तिसविषे ही निरतिशय विद्याका उत्कर्षपणा है ॥ दूसरे सर्व पंडितों

विषे सातिशय विद्याका उत्कर्षपणा है ॥ यातें हमारे कूं भी कोई अभिमान पंडित पराभव करेगा ॥ इस प्रकारके  
 निरंतर चिंतन करनेतें सो विद्यामद विनाश होवै है ॥ तैरहित दूआ सोमन सर्ववृत्तियोंके अनुदयतें इंधनरहित अग्निकीन्याई आपणे अ



विषे सातिशय विद्याकाउत्कर्षणहै ॥ यातैं हमारेकूंभी कोईअधिकपंडित पराभवकरेंगा ॥ इसप्रकारके निरंतरचिंतनकरणेतैं सोविद्यामद निवृत्तहोइजावैहै ॥ और मैंहीं धनवानहूं मेरेसमान कोईधनवान् न हींहै ॥ याप्रकारका जो मानसअभिमानहै ताकानाम धनमदहै ॥ ताधनमदकी इसप्रकारकेविवेकतैं निवृत्तिहोवैहै ॥ लक्षपतिपुरुषनैं जो व्यवहारकरीताहै ॥ सो व्यवहार अलक्षपतिपुरुषनैं करिसकीता नहीं ॥ यातैं तालक्षपतिपुरुषकरिकै ताअलक्षपतिपुरुषका पराभव होवैहै ॥ इसप्रकार कोटिपतिपुरुषकरिकै तालक्षपतिपुरुषकाभी पराभव होवैहै ॥ मैंरंककी क्यागणतिहै ॥ मेरेतैंअधिक कुबेरकेतुल्य बहुत धनवानहैं ॥ याप्रकारके निरंतरचिंतनकरणेतैं सोधनमद निवृत्तहोइजावैहै ॥ इसप्रकार हमाराकुल सर्वतैंश्रेष्ठहै याप्रकारका अभिमानरूपजोकुलमदहै ॥ तथा हमाराआचार सर्वतैंश्रेष्ठहै याप्रकारका अभिमानरूप जोआचारमदहै ॥ तिनदोनोंमदोंकीभी यथायोग्यविवेकतैं निवृत्तिहोइजावैहै ॥ इसप्रकार विवेककरिकै जोपुरुष विद्यामदादिक मलिनवासनावोंकी निवृत्तिकरेहै ॥ तिसपुरुषका साधुसंगमादिकों कीप्राप्तिकरिकै सोमनोनाश सिद्धहोवैहै ॥ यातैं सोवासनासंपरित्यागभी तामनोनाशका उपायहै इति ॥ किंवा तिनमलिनवासनावोंकी अतिप्रबलतातैं जोपुरुष ताउक्तविवेककरिकै तिनवासनावोंकेपरित्याग करणविषे समर्थ नहींहोइसकेहै ॥ तिसपुरुषकेप्रति शास्त्रनैं प्राणसंपदकानिरोधनरूपउपाय कथनकन्या है ॥ अर्थात् सोपुरुष प्राणकेनिरोधकरिकै तामनोनाशकूं सिद्धकरै ॥ अब ताप्राणनिरोधकेउपायका निरूपणकरैहैं ॥ तहांश्लोक ॥ ( प्राणायामदृढाभ्यासाद्युक्त्याचगुरुदत्तया आसनाशनयोगेन प्राणस्पंदोनिरुध्यते ) अर्थयह ॥ योगाभ्यासकरणेहारेगुरुनैं प्राप्तकरी जायुक्तिहै ॥ तायुक्तिकरिकै कन्याजो प्राणायामका दृढाभ्यासहै ॥ तिसअभ्यासतैं तथाआसनयोगकरिकै तथाअशनयोगकरिकै प्राणोंकेगति



तत्त्वा०

॥ २२ ॥

परि०

४

॥ १९१ ॥

कानिरोधहोवैहै इति ॥ अब इसीश्लोकके अर्थकृंविस्तारतैं कथनकरेहैं ॥ ताकेविषे प्रथम प्राणायामकाप्रका  
र दिखावैहैं ॥ सो प्राणायाम पूरक १ रेचक २ कुंभक ३ इसभेदकरिकैं तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां वा  
मनासिकाकरिकैं बाह्यवायुका जो अंतरपूरणहै ताकानाम पूरकहै ॥ और दक्षिणानासिकाकरिकैं ता  
अंतरवायुका जो बाह्यपरित्यागहै ताकानाम रेचकहै ॥ और ताप्राणवायुका जो रोकणाहै ताकानाम  
कुंभकहै ॥ सो कुंभकभी अंतर १ बाह्य २ इसभेदकरिकैं दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां पूरणकन्येहूएवायुका  
जो हृदयदेशविषे रोकणाहै ताकानाम अंतरकुंभकहै ॥ और रेचनकन्येहूएप्राणवायुका जो शरीरकेबाह्य  
देशविषे रोकणाहै ताकानाम बाह्यकुंभकहै ॥ तहां षोडशमात्रावोंकरिकैंतों पूरककरणा ॥ और बत्तीस  
मात्रावोंकरिकैं रेचककरणा ॥ और चौसठमात्रावोंकरिकैं कुंभककरणा ॥ अर्थात् पूरकतैंद्विगुणा रेचक  
करणा ॥ और रेचकतैंद्विगुणा कुंभक करणा ॥ ईहां मात्रानाम कालपरिमाणकाहै ॥ सो आत्मपुरा  
णके एकादशेअध्यायविषे विस्तारतैंनिरूपणकन्याहै ॥ इसप्रकारके प्राणायामकेअभ्यासतैं सोप्राणके  
गतिकानिरोध होवैहै ॥ ताप्राणनिरोधतैं सोमनोनाश होवैहै ॥ किंवा ताप्राणायामकूं प्राणनिरोधद्वारा  
मनोनाशकीउपायता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ सो दिखावैहैं ॥ योगी दोप्रकारका होवैहै ॥ ए  
कतों दैवीसंपत्तरूपशुभवासनावाला योगी होवैहै ॥ और दूसरा तादैवीसंपत्तैरहित आसुरीसंपत्तरूप  
मलिनवासनावाला योगी होवैहै ॥ तहां प्रथमयोगीकृतों श्रुतिनैं पूर्वमंत्रकरिकैं निरंतरब्रह्मकाचिंतनरूप  
पराजयोग उपदेशकन्याहै ॥ सो पूर्वमंत्र यहहै ॥ ( त्रिभिरुन्नतं स्थाप्य समं शरीरं हृदीन्द्रियाणि मनसा सन्नि  
वेश्य ब्रह्मोडुपेन प्रतरेत विद्वान् सोतांसि सर्वाणि भयावहानि ) अर्थ यह ॥ यह विद्वान् योगी पुरुष एकांतदे  
शविषे पवित्र आसन ऊपरि आपणेशरीरकूं कटिग्रीवादिकदेशतैंसम स्थापनकरिकैं तथा आपणे हृदयविषे

मनसहित सर्व इंद्रियोंका निरोध करिकैं अहं ब्रह्मास्मि या प्रकारका निरंतर चिंतन करे ॥ ताब्रह्मचिंतनरूप



मन सहित सर्व इंद्रियों का निरोध करिकै अहं ब्रह्मास्मि या प्रकार का निरंतर चिंतन करै ॥ ता ब्रह्म चिंतन रूप नौ का करिकै सो विद्वान् योगी भय की प्राप्ति करणे हारे मायारूप नदी के प्रवाहों कूं तरै इति ॥ और दूसरे योगी के प्रति तों श्रुति नैं दूसरे मंत्र करिकै प्राण निरोध का उपाय रूप हठ योग उपदेश कन्या है ॥ सो द्वितीय मंत्र यह है ॥ ( प्राणान् प्रपीडये हसु युक्त चेष्टः क्षीणे प्राणे नासिकयोच्छ्वसीत दुष्टाश्च युक्तमिव वाहमेनं विद्वान् मनो धारयेदप्रमत्तः ) अर्थ यह ॥ युक्त हैं अहार विहारादि के चेष्टा जिस की ऐसा योगी पुरुष पूर्व उक्त पूरक रेचक कुंभक क्रम तैं प्राणायाम कूं करिकै प्राणों के गति का निरोध करै ॥ तिस तैं अनंतर जैसे प्रमाद तैं रहित सारथी पुरुष दुष्ट अश्व युक्त रथ कूं बलात् कार सैं श्रेष्ठ मार्ग विषे धारण करै ॥ तैसे प्रमाद तैं रहित सो विद्वान् योगी दुष्ट इंद्रिय युक्त मन कूं विषयों तैं निवृत्त करिकै आनंद एकर स ब्रह्म विषे धारण करै ॥ अर्थात् तिस ब्रह्म विषे एकाग्र चित्त वाला होवै इति ॥ अब आसन योग का निरूपण करै ॥ तहां आसन योग का स्वरूप तथा ता आसन योग के साधन तथा ता आसन योग का फल यह तीनों पतंजलि भगवान् नैं यथा क्रम तैं ( स्थिर सुखमासनं ॥ १ ॥ प्रयत्न शैथिल्य अनंत समापत्तिभ्यां ॥ २ ॥ ततो द्वंद्वानभिधातः ॥ ३ ॥ ) इन तीनों सूत्रों करिकै कथन करै ॥ इन तीनों सूत्रों का यह अर्थ है ॥ चलायमानता तैं रहित तथा सुख की प्राप्ति करणे हारा जो आसन है ॥ सो ईहीं योग का अंग भूत आसन कहा जावै ॥ १ ॥ सो आसन प्रयत्न शैथिल्य अनंत समापत्ति इन दोनों साधनों तैं सिद्ध होवै ॥ तहां लौकिक वैदिक कर्मों का जो त्याग है ताका नाम प्रयत्न शैथिल्य है ॥ तहां जो पुरुष लौकिक वैदिक कर्मों विषे प्रवर्तमान है ॥ तिस पुरुष का सो स्थिर आसन होइ सकतानहीं ॥ या तैं ता लौकिक वैदिक कर्म का त्याग भी ता आसन का साधन है ॥ और जो अनंत भगवान् आपणे सहस्र फणों ऊपरि इस पृथिवी कूं धारण करिकै वर्तमान है ॥ सो अनंत भगवान् में हूं या प्रकार का जो चिंतन है ताका



तत्त्वा०

॥ २३ ॥

नाम अनंतसमापत्तिहै ॥ इस अनंतसमापत्तिकरि कै ता आसन के प्रतिबंध कडुरित नाश होवै हैं ॥ २ ॥  
 और तिस आसन के जयकरणे तैं इस योगी का शीत उष्णादिक द्वंद्वों करि कै ता डन होवै नहीं ॥ अर्थात् शीत  
 उष्णादिक द्वंद्वों की जानि वृत्ति है यह ही ता आसन योग का फल है इति ॥ ३ ॥ अब अशन योग का निरूप  
 ण करे हैं ॥ तहां श्लोक ॥ ( द्वौ भागौ पूरये दन्त्रैर्जलेनैकं प्रपूरयेत् मारुतस्य प्रचारार्थं चतुर्थमवशेषयेत् ) अर्थ  
 यह ॥ योगाभ्यास करणे हारा पुरुष आपणे उदर के दो भागों कूं तों अन्न करि कै पूरण करै ॥ और एक भाग  
 कूं जल करि कै पूरण करै ॥ और प्राण वायु के सुख पूर्वक संचार वासतै एक भाग कूं खाली राखै इति ॥ इस  
 प्रकार प्राणायाम आसन योग अशन योग इन तीनों करि कै प्राण के गति का निरोध होवै है ॥ ता प्राण के  
 निरोध हूए सर्व चित्त की वृत्तियां निरुद्ध होवै हैं ॥ जिस कारण तैं चित्त के वृत्तियों का उदय प्राण की गति के अ  
 धीन ही होवै है ॥ तात्पर्य यह ॥ जो पदार्थ जिस वस्तु के अधीन होवै है ॥ सो पदार्थ ता वस्तु के निरोध हूए नि  
 रुद्ध होवै है ॥ जैसे पट तंतुओं के अधीन होणेतैं तिन तंतुओं के निरोध हूए निरुद्ध होवै हैं ॥ तथा जैसे बाह्य इं  
 द्रिय चित्त के अधीन होणेतैं ता चित्त के निरोध हूए निरुद्ध होवै हैं ॥ तैसे चित्त की वृत्तियां प्राण गति के अधी  
 न होणेतैं ता प्राण के निरोध हूए निरुद्ध होवै हैं ॥ तिस तैं अनंतर स्वभाव तैं ही आत्मा अनात्मा कार जो अंतः  
 करण है ॥ सो अंतःकरण अनात्मा कार वृत्तियों के निरोध हूए एक आत्मा कार ही होवै है ॥ इस प्रकार तैं जो  
 चित्त के वृत्तियों का निरोध है ॥ सो निरोध ही मनोनाश कहा जावै है ॥ ऐसे मनोनाश के प्राप्त हूए इस विद्वान्  
 न पुरुष कूं ता आत्म एकाकार मन करि कै आनंद एकरस अपरिच्छिन्न रूप प्रत्यक् आत्मा अनुभव होवै है ॥ इसी  
 उक्त अर्थ कूं पूर्ववृद्ध आचार्यों नैं ( आत्मानात्माकारं स्वभावतोऽवस्थितं सदाचित्तं आत्मैकाकारतयातिरस्कृ  
 तानात्मदृष्टिं विदधीत ) इस श्लोक करि कै कथन कया है ॥ और इसी उक्त वृत्तियों के निरोध कूं पातंजलशा

परि०

४

॥ १९२ ॥

स्वाले योग नाम करि कै कहै हैं ॥ तहां पातंजलशास्त्र ( योगाधिपति निरोधः ) अर्थ यह ॥ चित्त के सर्व



स्ववाले योगनामकरिके कहें हैं ॥ तहां पतंजलि सूत्र ॥ ( योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ) अर्थ यह ॥ चित्तके सर्व  
 वृत्तियोंका जो निरोध है ताका नाम योग है ॥ तहां प्रमाण १ विपर्यय २ विकल्प ३ निद्रा ४ स्मृति ५  
 यह पंचप्रकारकी चित्तकी वृत्तियां होवें हैं ॥ तहां प्रमाणजन्य जो प्रमाज्ञान है ताका नाम प्रमाणवृत्ति है ॥  
 तहां योगशास्त्रविषेतों प्रत्यक्ष १ अनुमान २ शब्द ३ यह तीनों ही प्रमाण मान्ये हैं ॥ यातें तिनोंके मतवि  
 षे साप्रमावृत्ति भी तीन प्रकारकी होवें हैं ॥ और वेदांतसिद्धांतविषे सो प्रमाण प्रत्यक्ष १ अनुमान २ उप  
 मान ३ शब्द ४ अर्थापत्ति ५ अनुपलब्धि ६ इसभेदकरिके षट्प्रकारका मान्या है ॥ यातें वेदांतसि  
 द्धांतविषे साप्रमावृत्ति भी षट्प्रकारकी ही होवें हैं ॥ साषट्प्रकारकी प्रमावृत्ति द्वितीयपरिच्छेदविषे विस्तार  
 रतें निरूपण करि आये हैं ॥ और मिथ्याज्ञानका नाम विपर्यय है ॥ और संशयका नाम विकल्प है ॥ और  
 संस्कारजन्यज्ञानका नाम स्मृति है ॥ इन तीनोंका स्वरूप पूर्वतृतीयपरिच्छेदविषे विस्तारतें निरूपण करि  
 आये हैं ॥ और तामसीवृत्तिकाना नाम निद्रा है ॥ इन पंचप्रकारकी वृत्तियोंका जो निरोध है ताका नाम यो  
 ग है ॥ अथवा पूर्वकथन करीजे मैत्रीकरुणादिक दैववृत्तियां हैं ॥ तथा दंभदर्पादिक आसुरवृत्तियां हैं ॥  
 तिनसर्ववृत्तियोंके निरोधका नाम योग है इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तिनवृत्तियोंके निरोधका कौनसा ध  
 न है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ पतंजलि भगवान् ने ( अभ्यासवैराग्याभ्यांतनिरोधः ) इस सूत्रकरिके अ  
 भ्यास वैराग्य इन दोनोंकूं ही तावृत्तिनिरोधका साधन कहा है ॥ तथा श्रीभगवान् ने भी गीताविषे ( अ  
 संशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलं अभ्यासेन तु कौंतेय वैराग्येण च गृह्यते ) इसश्लोककरिके ता अभ्यासवैरा  
 ग्यकूं ही मनके निग्रहका साधन कहा है ॥ तहां जिसवस्तुविषे दोषदृष्टि तें वैराग्य होवें है ॥ तिसवस्तुविषे  
 मनकी प्रवृत्ति होती नहीं ॥ यातें ता वैराग्यकूं मनके निग्रहकी साधनता संभवै है ॥ ता वैराग्यका स्वरूप द्वि



तत्त्वा०

॥ २४ ॥

परि०

४

तीयपरिच्छेदविषे विस्तारतैर्निरूपणकरिआयेहैं ॥ यातैं पुनःईहांनिरूपणकरतेनहीं ॥ और अभ्यासतों  
 तायोगकेप्रति अंतरंगसाधनहै ॥ ताअंतरंगसाधनकी बहिरंगसाधनोंतैंविना सिद्धिसंभवतीनहीं ॥ यातैं  
 उपायसहित तिनबहिरंगसाधनोंकानिरूपणकरिकै ताअभ्यासकेनिरूपणकरणेवासतै प्रथम ताफलरूपवृ  
 त्तिनिरोधका विभाग वर्णनकरैहैं ॥ सोचित्तकीवृत्तियोंकानिरोधरूपयोग दोप्रकारका होवैहै ॥ एकतों  
 संप्रज्ञातसमाधिरूपनिरोध होवैहै ॥ और दूसरा असंप्रज्ञातसमाधिरूपनिरोध होवैहै ॥ तहां कर्त्ता कर्म  
 करण इसत्रिपुटीकेअनुसंधानतैरहित जो एकलक्ष्यवस्तुविषयक सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम  
 संप्रज्ञातसमाधिहै ॥ तहां इससंप्रज्ञातसमाधिका अंगभूतजोसमाधिहै ताकेविषे तात्रिपुटीकेअनुसंधान  
 पूर्वक सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाह होवैहै ॥ ताअंगसमाधिविषे इससंप्रज्ञातसमाधिकेलक्षणकी अतिव्या  
 प्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै ईहां त्रिपुटीकेअनुसंधानतैरहितपणा कहाहै ॥ यहसंप्रज्ञातसमाधिकास्वरूप अ  
 न्यग्रंथविषेभी कहाहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( विलाप्यविकृतिंकृत्स्नां संभवव्यत्ययक्रमात् परिशिष्टं तु चिन्मात्रं  
 सदानंदं विचिंतयेत् ॥ १ ॥ ब्रह्माकारमनोवृत्तिप्रवाहोऽहंकृतिं विना संप्रज्ञातः समाधिः स्याद्भ्यानाभ्यास  
 प्रकर्षजः ॥ २ ॥ ) अर्थयह ॥ चेतनविषेअध्यस्त जितनाकी अज्ञान तथाताअज्ञानकाकार्यप्रपंचहै ॥ ति  
 ससर्वप्रपंचकूं उत्पत्तिक्रमतैंविपरीतक्रमतैं स्थूलसूक्ष्मादिक्रमकरिकै चिदात्माविषेलयकरिकै अर्थात् ता  
 चिदात्मातैं यहप्रपंच भिन्ननहींहै याप्रकारकानिश्रयकरिकै बाकीरह्याजो सदानंदरूपचिन्मात्रहै तिसकूं  
 गुरुउपदिष्टमहावाक्यतैं अभेदरूपकरिकैचिंतनकरै ॥ अर्थात् मैं सच्चिदानंदब्रह्मरूपहींहूं याप्रकारका  
 चिंतनकरै ॥ १ ॥ और त्रिपुटीकाअनुसंधानरूपअहंकृतिंतैंविना जो अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकी मनके  
 वृत्तियोंकाप्रवाहहै ॥ सोप्रवाह संप्रज्ञातसमाधि कहाजावैहै ॥ सोसंप्रज्ञातसमाधि ध्यानाभ्यासकेप्रकर्ष

॥ १९३ ॥

तैं उत्पन्नहोवैहै इति ॥ अब योगशास्त्रकीरीतिसे इससंप्रज्ञातसमाधिरूपयोगके अष्टअंगोंकावर्णनकरे



तै उत्पन्नहोवैहें इति ॥ अब योगशास्त्रकीरीतिसें इससंप्रज्ञातसमाधिरूपयोगके अष्टअंगोंकावर्णनकरे  
 हैं ॥ तहां यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ य  
 हअष्ट तासंप्रज्ञातसमाधिके अंगहोवैहें ॥ ताकेविषेभी यमादिकपंचतों तासंप्रज्ञातसमाधिके बहिरंगसा  
 धनहैं ॥ और धारणादिकतीन अंतरंगसाधनहैं ॥ अथयमवर्णनं ॥ अहिंसा १ सत्य २ अस्तेय ३ ब्र  
 ह्मचर्य ४ अपरिग्रह ५ इसभेदकरिकै सोयम पंचप्रकारका होवैहै ॥ तहां शरीर मन वाणी इनतीनोंक  
 रिकै कोईभीप्राणीकूं पीडानहींकरणी याकानाम अहिंसाहै ॥ और यथार्थवचनकाजोउच्चारणहै ताका  
 नाम सत्यहै ॥ और बलात्कारसें वा छलकपटसें जो परायेधनादिकोंका नहींहरणहै ताकानाम अ  
 स्तेयहै ॥ और शरीरयात्राविषेउपयोगीपदार्थोंतैं अधिकपदार्थोंका जोअसंग्रहहै ताकानाम अपरिग्रह  
 है ॥ और अष्टांगमैथुनतैं जोरहितपणाहै ताकानाम ब्रह्मचर्यहै ॥ ताअष्टांगमैथुनकास्वरूप शास्त्रविषे  
 यहकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( स्मरणंकीर्तनंकेलिः प्रेक्षणंगुह्यभाषणं संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिर्वृतिरेव  
 च ॥ १ ॥ एतन्मैथुनमष्टांगं प्रवदंतिमनीषिणः विपरीतंब्रह्मचर्यमनुष्ठेयमुमुक्षुभिः ॥ २ ॥ सत्संगसन्निधि  
 त्यागदोषदर्शनतोभवेत् ) अर्थयह ॥ स्मरण १ कीर्तन २ केलि ३ प्रेक्षण ४ गुह्यभाषण ५ संकल्प ६  
 अध्यवसाय ७ क्रियानिर्वृति ८ इनअष्टोंकानाम अष्टांगमैथुनहै ॥ तहांभोग्यबुद्धिकरिकै स्त्रीयोंका चि  
 त्तविषे चिंतनकरणा याकानाम स्मरणहै ॥ और वाणीसें तिनस्त्रीयोंकेगुणोंकाकथनकरणा याकानाम  
 कीर्तनहै ॥ और तिनस्त्रीयोंकेसाथि द्यूतादिकक्रीडाकरणी याकानाम केलिहै ॥ और भोग्यबुद्धिकरि  
 कै जो तिनस्त्रीयोंकादेखणाहै ताकानाम प्रेक्षणहै ॥ और एकांतदेशविषे जो तिनस्त्रीयोंकेसाथिभाषण  
 है ॥ ताकानाम गुह्यभाषणहै ॥ और तिनस्त्रीयोंकेप्राप्तिकीजाइच्छाहै ताकानाम संकल्पहै ॥ और ति



तत्त्वा०

॥ २५ ॥

परि०

४

नस्त्रीयोंकेप्राप्तिका जो बुद्धिविषेनिश्रयकरणाहै ताकानाम अध्यवसायहै ॥ और तिनस्त्रीयोंका जोसंभोगहै ताकानाम क्रियानिर्वृतिहै ॥ इनअष्टोंकं विद्वान्पुरुष अष्टांगमैथुन कहेहैं ॥ और इसअष्टांगमैथुनतैं जोरहितपणाहै तिसकूं ब्रह्मचर्य कहेहैं ॥ सोब्रह्मचर्य मुमुक्षुजनोंने अवश्यसंपादनकरणा ॥ जिसकारणतैं ( यदिच्छंतोब्रह्मचर्यचरंति सत्येनलभ्यस्तपसाह्येषआत्मासम्यक्ज्ञानेनब्रह्मचर्येणनित्यं अंतःशरीरेज्योतिर्मयोहिशुभ्रोयंपश्यंतियतयःक्षीणदोषाः ) इत्यादिकश्रुतियां ताब्रह्मचर्यकूंहीं आत्मज्ञानका तथा मोक्षका साधनकहेहैं ॥ सोब्रह्मचर्य सत्संगतैं सिद्धहोवैहै ॥ तथा विषयासक्तस्त्रीपुरुषोंकेसन्निधित्यागतैं सिद्धहोवैहै ॥ तथा देहकेदोषदर्शनतैं सिद्धहोवैहै ॥ तहां सत्संगकूं ब्रह्मचर्यकीसाधनता आचार्योंनैं ( कातवकांताधरगतचिंता वातुलतवकिंनास्तिनियंता त्रिजगतिसज्जनसंगतिरेका भवतिभवार्णवतरणे नौका ) इसवचनकरिकै कथनकरीहै ॥ यातैं तासत्संगकूं ब्रह्मचर्यकीसाधनता संभवैहै ॥ और देहविषेदोषोंकादर्शन प्रल्हादनें कथनकन्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( मांसासृक्पूयविण्मूत्रस्नायुमज्जास्थिसंहतौ देहेचेत्प्रीतिमान्मूढो भवितानरकेपिसः ) अर्थयह ॥ मांस रुधिर पूय विष्ठा मूत्र नाडी मज्जा अस्थि इत्यादिकमलिनपदार्थोंकासमूहरूप जोयहदेहहै ॥ तादेहविषे जोमूढपुरुष प्रीतिवालाहै ॥ सोमूढपुरुष नरकविषेभी प्रीतिवालाहोवैगा इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ भगवान्नेंभी कहाहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( स्वदेहाशुचिगंधेन नविरज्येतयःपुमान् वैराग्यकारणंतस्य किमन्यदुपदिश्यते ) अर्थयह ॥ जोपुरुष आपणेदेहकेअशुचिगंधकरिकै वैराग्यकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं दूसरा वैराग्यकाकारण क्याउपदेशकरणा इति ॥ इसप्रकार आपणेदेहके तथास्त्रीकेदेहके दोषोंकंचिंतनकरणेहारेपुरुषकूं तादेहविषे रागहोवैनहीं ॥ यातैं ॥ तादोषदर्शनकूं ब्रह्मचर्यकीसाधनता संभवैहै ॥ इसप्रकार तासन्निधित्यागकूंभी ताब्रह्मचर्यकी

॥ १९४ ॥

साधनताहै ॥ याकारणतैंहीं स्मृतिनें मुमुक्षुजनकेप्रति स्त्रीकेसंभाषणवदिकोंका निषेधकन्याहै ॥ तहांश्लो



साधनता है ॥ या कारण तैहीं स्मृतिनै मुमुक्षुजनके प्रति स्त्रीके संभाषणादिकोंका निषेधक-या है ॥ तहां श्लोक ॥ ( न संभाषेत्स्त्रियं कांचित्पूर्वदृष्टांचनस्मरेत् कथांचवर्जयेत्तासां न पश्येलिखितामपि ) अर्थ यह ॥ यह मुमुक्षुजन किसी भी स्त्रीके साथ संभाषण नहीं करै ॥ तथा पूर्वदेखी हुई स्त्रीका चित्तविषे स्मरण भी नहीं करै ॥ और तिन स्त्रियोंकी कथाका भी परित्याग करै ॥ तथा चित्रकी लिखी हुई स्त्रीकूं भी नहीं देखै इति ॥ १ ॥ अथ नियमवर्णनं ॥ सो नियम शौच १ संतोष २ तप ३ स्वाध्याय ४ ईश्वरप्रणिधान ५ इसभेदकरिकै पंचप्रकार का होवै है ॥ तहां शौच अंतर १ बाह्य २ इसभेदकरिकै दो प्रकारका होवै है ॥ तहां मैत्रीकरुणादिकोंकरिकै अंतःकरणकूं रागद्वेषादिकोंतैरहितकरणा याकानाम अंतरशौच है ॥ और जलमृत्तिकादिकोंकरिकै शरीरकूं शुद्धकरणा याकानाम बाह्यशौच है ॥ और यथालाभविषे जाप्रसन्नता है ताकानाम संतोष है ॥ और हित मित पवित्र ऐसे अन्नका जो भोजन है ताकानाम तप है ॥ और प्रणवादिक पवित्र मंत्रोंका जो जप है ताकानाम स्वाध्याय है ॥ और अनुष्ठानकन्ये हूँ ऐनित्यादिक कर्मोंका जो परमेश्वरविषे समर्पण है ताकानाम ईश्वरप्रणिधान है इति ॥ २ ॥ अथ आसनवर्णनं ॥ ता आसनका स्वरूप तथा साधन तथा फल पूर्व वर्णन करि आये हैं ॥ सो ईहां भी जानिलेना ॥ सो उक्त आसन शारीरक १ बाह्य २ इसभेदकरिकै दो प्रकारका होवै है ॥ तहां पद्म स्वस्तिक भद्र इत्यादिक आसन शारीरक आसन कहा जावै है ॥ इन आसनोंका स्वरूप आत्मपुराणके अष्टम अध्यायविषे हमनें निरूपण क-या है ॥ सो तहांसें जानिलेना ॥ और सर्वउपद्रवोंतैरहित एकांतदेशविषे जो कुशा मृगचर्म वस्त्रादिरूप आसन है सो बाह्य आसन कहा जावै है इति ॥ ३ ॥ अथ प्राणायामवर्णनं ॥ सो प्राणायाम पूरक १ रेचक २ कुंभक ३ इसभेदकरिकै तीन प्रकार का होवै है ॥ यह प्राणायाम पूर्व वर्णन करि आये हैं ॥ सो ईहां भी जानिलेना इति ॥ ४ ॥ और चक्षुआ



तत्त्वा०

॥ २६ ॥

दिकइंद्रियोंका जो रूपादिकविषयोंतैनिवारणहै ताकानाम प्रत्याहारहै इति ॥ ५ ॥ इनयमादिकपंच बहिरंगसाधनोंकेसिद्धहूएतैअनंतर इसअधिकारीपुरुषनै तासंप्रज्ञातसमाधिके धारणा ध्यान समाधि इ नतीनअंतरंगसाधनोंविषे प्रयत्नकरणा ॥ तहां बहिरंगसाधनोंकेसंपादनपूर्वक अंतरंगसाधनोंकासंपा दनकरणा यहशास्त्रउक्तअनुक्रम अजितचित्तपुरुषकेवासतैहै ॥ और जिसपुरुषकूं पूर्वजन्मकेपुण्यपरिपा कवशतै अंतःकरणकीशुद्धिहूए प्रथमहीं तेधारणादिकअंतरंगसाधन प्राप्तहूएहैं ॥ तिसपुरुषनै तिनयमा दिकपंचबहिरंगसाधनोंविषे पुनःप्रयत्न करणानहीं इति ॥ अथ धारणावर्णनं ॥ तहां मूलाधार १ म णिपूरक २ स्वाधिष्ठान ३ अनाहत ४ आज्ञा ५ विशुद्ध ६ इनषट्चक्रोंविषे किसीएकचक्रविषे जो चित्तकास्थापनहै ॥ अथवा प्रत्यक्आत्माविषे जो चित्तकास्थापनहै अर्थात् तिसएकप्रत्यक्आत्माका जोस्मरणहै ताकानाम धारणाहै ॥ इनषट्चक्रोंकास्वरूप आत्मपुराणके एकादशेअध्यायविषे विस्तार तैनिरूपणकन्याहै ॥ सो तहांसेजानिलेणा इति ॥ ६ ॥ अथ ध्यानवर्णनं ॥ तहां चैतन्यरूपलक्ष्यवस्तुविषे जो सजातीयवृत्तियोंका प्रवाहकरणाहै ताकानाम ध्यानहै ॥ सो सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहभी दोप्र कारका होवैहै ॥ एकतों विजातीयवृत्तियोंकरिकै विच्छिन्न होवैहै ॥ और दूसरा विजातीयवृत्तियोंक रिकै अविच्छिन्न होवैहै ॥ तहां प्रथमप्रवाहतों ध्यान कहाजावैहै ॥ और दूसराप्रवाह समाधि कहा जावैहै ॥ तहां सोसमाधिभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतों कर्त्ता कर्म करण इसत्रिपुटीकेअनुसंधानपूर्व क होवैहै ॥ और दूसरा तात्रिपुटीकेअनुसंधानतैरहित होवैहै ॥ तहां प्रथमसमाधितों अंगरूपसमाधि कहाजावैहै ॥ और दूसरासमाधि अंगीरूपसमाधि कहाजावैहै ॥ तहां साधनकानाम अंगहै ॥ और फलकानाम अंगीहै इति ॥ ८ ॥ अब तासमाधिकेविघ्नोंकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां संप्रज्ञातसमाधिकीउ

परि०

४

॥ १९५ ॥

त्पत्तिविषे लय १ विक्षेप २ कषाय ३ रसास्वाद ४ यहचारविघ्नहोवैहैं ॥ तिनविघ्नोंकेविद्यमानहूए सो



त्पत्तिविषे लय १ विक्षेप २ कषाय ३ रसास्वाद ४ यहचारिविघ्नहोवैहें ॥ तिनविघ्नोंकेविद्यमानहूए सो  
 संप्रज्ञातसमाधि होतानहीं ॥ तहां निद्राकानाम लयहै ॥ और विषयोंका जोपुनःपुनःअनुसंधानहै ता  
 कानाम विक्षेपहै ॥ और रागद्वेषादिकोंकरिकै जो चित्तका स्तब्धीभावहै ताकानाम कषायहै ॥ और  
 समाधिकेआरंभकालविषे जो सविकल्पकआनंदका आस्वादनहै ताकानाम रसास्वादहै इति ॥ अब  
 श्रीगौडपादाचार्यकेवचनोंकरिकै तिनलयादिकविघ्नोंकेनिवृत्तिकाउपाय वर्णनकरैहैं ॥ तहांश्लोक ॥ ( ल  
 येसंबोधयेचित्तं विक्षिप्तंशमयेत्पुनः सकषायंविजानीयात् समप्राप्तंनचालयेत् ॥ १ ॥ नास्वादयेद्रसंतत्र  
 निःसंगप्रज्ञयाभवेत् ) अर्थयह ॥ योगाभ्यासकरतेहूए इसपुरुषकाचित्त जबी निद्रारूपलयकेसन्मुखहो  
 वै ॥ तबी सोअभ्यासवान्पुरुष प्राणायामकरिकै तथानिद्राशेषकीनिवृत्तिकरिकै तथास्वल्पभोजनादिकों  
 करिकै ताचित्तकूं निद्रातैंजाग्रत्करै ॥ और विक्षेपकूंप्राप्तहूएचित्तकूं विषयोंविषेदोषदर्शन ब्रह्मकाचित्त  
 न सत्संग उपासना आदिकउपायकरिकै एकाग्रकरै ॥ अर्थात् ताविषयचित्तनरूपविक्षेपतैंरहितकरै ॥  
 तहां ब्रह्मकेचित्तनतैं चित्त विक्षेपतैंरहितहोवैहै यहवार्त्ता भगवान्नेंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( विष  
 यान्ध्यायतश्चित्तं विषयेषुविषज्जते मामनुस्मरतश्चित्तं मय्येवप्रविलीयते ) अर्थयह ॥ विषयोंकूंचित्तनकर  
 णेहारेपुरुषकाचित्त तिनविषयोंविषेहीं संबंधवाला होवैहै ॥ और मैंपरमेश्वरकूंस्मरणकरणेहारेपुरुषकाचि  
 त्त मैंपरमेश्वरविषेहीं लयहोवैहै इति ॥ किंवा सत्संगकूं विक्षेपकेनिवृत्तिकीकारणता वसिष्ठभगवान्नें क  
 थनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( संतःसदैवगंतव्याः यद्यप्युपदिशंतिन याहिस्वैरकथास्तेषामुपदेशाभवन्ति  
 ताः ) अर्थयह ॥ इसमुमुक्षुजननैं महात्माजनोंकेसमीप सर्वदा गमनकरणा ॥ यद्यपि तेमाहात्माजन  
 इसमुमुक्षुकेप्रति साक्षात्उपदेश नहींकरतेहोवैं ॥ तथापि तिनमहात्माजनोंकी जेस्वाभाविककथाहैं ॥



तत्त्वा०  
॥ २७ ॥

तेकथाहीं इसमुमुक्षुकेप्रति उपदेशरूप होवैहैं इति ॥ किंवा आचार्योंनैभी (संगःसत्सुविधीयतांभगव  
तोभक्तिर्ददाधीयतां) इत्यादिकवचनकरिकै तासत्संगकीकर्तव्यता कथनकरीहै ॥ इसप्रकार विक्षेपकूं  
निवृत्तकरिकै पश्चात् कषायसहितचित्तकूंजानिकै ताकषायकीभीनिवृत्तिकरै ॥ और समब्रह्मविषेप्राप्त  
हूएचित्तकूं ताब्रह्मतैचलायमान नहींकरै ॥ और समाधिकेआरंभकालविषे प्राप्तहूए सविकल्पकआनंद  
कूंभी आस्वादन नहींकरै ॥ किंतु उदासीनब्रह्मप्रज्ञाकरिकैयुक्तहोवै इति ॥ इसप्रकारकेउपायोंकरिकै  
जबी तेलयादिकविघ्न निवृत्तहोवैहैं ॥ तबी सोसंप्रज्ञातसमाधि उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकार संप्रज्ञातसमा  
धिकेअभ्यासकरिकै जबी मन प्रत्यक्आत्माविषे एकाग्रताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी तामनविषे एकऋतंभरा  
नामाप्रज्ञा उत्पन्नहोवैहै ॥ तहां अतीत अनागत दूर व्यवहित सूक्ष्म इत्यादिकसर्वपदार्थोंकूं विषयकर  
णेहारा जो योगीकाप्रत्यक्षहै ताकानाम ऋतंभराप्रज्ञाहै ॥ ऐसीऋतंभराप्रज्ञाविषेस्थितयोगीकूं निर्विक  
ल्पकसमाधि प्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं ताऋतंभराप्रज्ञाकूंभी निरोधकरिकै तासंप्रज्ञातसमाधिकेअभ्यासकूं  
करणेहारेयोगीकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोइके परवैराग्य उत्पन्नहोवैहै ॥ तापरवैराग्यकास्वरूप पूर्व  
द्वितीयपरिच्छेदविषे कथनकरिआयेहैं ॥ तिसपरवैराग्यतैंअनंतरभी इसपुरुषकूं अभ्यास करणेयोग्यहै ॥  
तहां किसीभीउपायकरिकै मैं सर्ववृत्तियोंकेनिरोधरूपअसंप्रज्ञातसमाधिविषे स्थितहोवों याप्रकारका  
जो उत्साहरूपप्रयत्नहै ॥ ताकानाम अभ्यासहै ॥ यहहींअभ्यासकालक्षण पतंजलिभगवान्नें योगसू  
त्रोंविषे (तत्रस्थितौप्रयत्नोऽभ्यासः) इससूत्रकरिकै कथनकन्याहै ॥ ताउत्साहरूपप्रयत्नकेभीनिरोधहू  
ए सर्ववृत्तियोंकानिरोधहोवैहै ॥ सोसर्ववृत्तियोंकानिरोधहीं असंप्रज्ञातसमाधि कहाजावैहै ॥ ॥ शं  
का ॥ ॥ ताउत्साहरूपप्रयत्नकेनिरोधविषे दूसराकोईसाधनहै अथवा नहींहै ॥ तहां जोप्रथमपक्ष अं

परि०  
४

॥ १९६ ॥

गीकारकरोंगे ॥ तों अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यहहैं ताउत्साहरूपप्रयत्नकेनिरोधवासतैं अंगी



गीकारकरोंगे ॥ तौ अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ काहेतैं ताउत्साहरूपप्रयत्नकेनिरोधवासतै अंगी  
कारकन्या जोदूसरासाधनहै ॥ ताकेविद्यमानहूए सोअसंप्रज्ञातसमाधि होवैंगानहीं ॥ यातैं तासाधन  
केनिरोधवासतै कोईतीसरासाधन मानणाहोवैंगा ॥ तातीसरेसाधनकेनिरोधवासतै कोईचतुर्थसाधन  
मानणाहोवैंगा ॥ इसप्रकार आगेआगे साधनोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्ति होवैंगी ॥ और  
ताप्रयत्नकेनिरोधका कोईसाधन नहींहै यहद्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरोंगे ॥ तौ साधनतैंविना ताप्रय  
त्नकानिरोधहीं नहींसंभवैंगा ॥ और जोकहो सोप्रयत्न आपहीं आपकानिरोधक होवैहै ॥ सोभी संभ  
वतानहीं ॥ काहेतैं आपणेकरिकैआपणानिरोध अत्यंतविरुद्धहै ॥ और लोकविषेभी ऐसादेखणेविषेआव  
तानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सोउत्साहरूपप्रयत्न सर्ववृत्तियोंकेनिरोधकूंकरताहूआ आपणेनिरोधकूं  
भी आपहींकरैहै ॥ जैसे कतकरज जलकेमृत्तिकाकूंनिवृत्तकरिकै आपभी आपेहींनिवृत्तहोइजावैहै ॥  
ताकतकरजकेनिवृत्तकरणेवासतै कोईदूसरेसाधनकीअपेक्षा होतीनहीं ॥ तैसे ताउत्साहरूपप्रयत्नकेनि  
रोधकरणेवासतै कोईदूसरेसाधनकीअपेक्षा होतीनहीं ॥ यातैं अनवस्थादोषकी तथादृष्टविरोधदोषकी  
प्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा यहउक्त असंप्रज्ञातसमाधिकास्वरूप अन्यशास्त्रविषेभी कहाहै ॥ तहांश्लोक ॥  
( मनसोवृत्तिशून्यस्य ब्रह्माकारतयास्थितिः असंप्रज्ञातनामासौ समाधिरभिधीयते ॥ १ ॥ प्रशांतवृत्ति  
कंचित्तं परमानंददीपकं असंप्रज्ञातनामासौ समाधिर्योगिनांप्रियः ॥ २ ॥ ) अर्थयह ॥ सर्ववृत्तियोंतैं  
शून्यमनकी जा ब्रह्माकारतारूपतैंस्थितिहै ॥ सास्थितिहीं योगशास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं असंप्रज्ञातसमाधिना  
मकरिकै कहीतीहै ॥ १ ॥ किंवा उक्तअभ्यासकरिकै निवृत्तहोइगईहैं सर्ववृत्तियांजिसकी ऐसाजो पर  
मानंदकाप्रकाशक चित्तहै ॥ सोईहीं योगीजनोंकूंप्रिय असंप्रज्ञातसमाधिहै इति ॥ अब ताअसंप्रज्ञातस



तत्त्वा०

॥ २८ ॥

परि०

४

॥ १९७ ॥

माधिका अन्यसाधनभी कहैहैं ॥ सो असंप्रज्ञातसमाधि पूर्वउत्तरीतिसैं केवल परवैराग्यतैंहीं नहीं प्राप्त हो  
 वैहै ॥ किंतु ईश्वरके प्रणिधानतैंभी सो समाधि प्राप्त होवैहै ॥ तहां योगसूत्र ॥ ( ईश्वरप्रणिधानाद्वा ) अर्थ  
 यह ॥ सो असंप्रज्ञातसमाधि पूर्वउक्तकर्मतैंभी प्राप्त होवैहै ॥ तथा ईश्वरप्रणिधानतैंभी प्राप्त होवैहै ॥ अब  
 ताईश्वरप्रणिधानके स्वरूप कहने वासतै प्रथम ईश्वरका स्वरूप वर्णन करैहैं ॥ तहां योगसूत्र ॥ ( क्लेशकर्मवि  
 पाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः ) अर्थ यह ॥ क्लेश १ कर्म २ विपाक ३ आशय ४ इन चारों करि  
 कै असंबद्ध जो पुरुषविशेष है ताका नाम ईश्वर है ॥ तहां प्रथम क्लेश अविद्या १ अस्मिता २ राग ३ द्वेष ४  
 अभिनिवेश ५ इस भेद करिकै पंचप्रकारका होवैहै ॥ सो पंचप्रकारका क्लेश प्रथम परिच्छेदविषे निरूपण  
 करि आयेहैं ॥ और कर्मतों शुक्ल १ कृष्ण २ मिश्र ३ इस भेद करिकै तीन प्रकारका होवैहै ॥ तहां शास्त्र  
 विहित पुण्यकर्मकानां शुक्लकर्म है ॥ और शास्त्रनिषिद्ध पापकर्मकानां कृष्णकर्म है ॥ और पुण्यपापदो  
 नोंकानां मिश्रकर्म है ॥ यह तीन प्रकारका कर्मतों अयोगी पुरुषोंका होवैहै ॥ और योगी पुरुषोंका तो अशु  
 क्लृष्ण यह चतुर्थकर्म होवैहै ॥ यह उक्त अर्थ पतंजलि भगवान् ने ( कर्माशुक्लकृष्णयोगिनस्त्रिविधमितरेषां )  
 इस सूत्र करिकै कथन कन्या है ॥ और कर्मके फलकानां विपाक है ॥ सो विपाक जाति १ आयुष २ भोग ३  
 इस भेद करिकै तीन प्रकारका होवैहै ॥ और ताकर्मफलके भोगजन्य जे संस्काररूप वासना हैं ताका नाम  
 आशय है ॥ ऐसे क्लेश कर्म विपाक आशय इन चारों करिकै संबद्ध जीव होवैहैं ॥ और ईश्वरतों तिन चारों  
 करिकै असंबद्ध होवैहै ॥ तथा सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् होवैहै इति ॥ अब ताईश्वरप्रणिधानका स्वरूप वर्णन क  
 रैहैं ॥ तहां योगसूत्र ॥ ( तस्य वाचकः प्रणवः । तजपस्तदर्थभावनं ) अर्थ यह ॥ ताउक्त ईश्वरका वाचक प्रण  
 वशब्द है ॥ ताँ ॐकाररूप प्रणवका जो जप है ॥ तथा माँडूक्य उपनिषद पंचीकरणवार्तिक उक्त प्रकारतैं

ता प्रणवके अर्थका जो चिंतन है ॥ ताका नाम ईश्वरप्रणिधान है ॥ सो प्रणव अर्थके चिंतनका प्रकार पूर्व प्र



ताप्रणवके अर्थका जो चिंतन है ॥ ताका नाम ईश्वरप्रणिधान है ॥ सो प्रणव अर्थके चिंतन का प्रकार पूर्व प्र  
 थम परिच्छेद विषे निरूपण करि आये हैं इति ॥ अब अन्य प्रकारतें दृष्टांत सहित ताप्रणवशब्दके अर्थकूं कहे  
 हैं ॥ तहां (तद्योऽहं सोऽसौ योऽसौ सोऽहं) इस श्रुतिविषे सशब्द करिके परमात्माका कथन कन्या है ॥ और  
 अहंशब्द करिके प्रत्यक् आत्माका कथन कन्या है ॥ तहां सः अहं इन दोनों शब्दोंका परस्पर सामानाधिक  
 रण्य है ॥ यातें तिन दोनों शब्दोंनैं ताब्रह्म आत्माका एकत्व हीं कथन करीता है ॥ यातें सोऽहं इस वाक्य  
 का जैसे परमात्मामैं हूं या प्रकारका जीवब्रह्मका एकत्वरूप अर्थ है ॥ तैसे ता ॐ काररूप प्रणवका भी सो  
 जीवब्रह्मका एकत्व हीं अर्थ है ॥ सो दिखावै हैं ॥ सोऽहं इस वाक्यविषे व्याकरण की रीतिसें सकार हकार  
 इन दोनों वर्णोंके लोप कीये हूए बाकी ॐ अं ऐसा वाक्य रहे है ॥ ताके विषे भी व्याकरण की रीतिसें पूर्वरू  
 पनामासंधि करिके अकारके लोप कीये हूए ॐम् ऐसा शब्द सिद्ध होवै है ॥ यह वार्त्ता अन्य शास्त्रविषे भी क  
 ही है ॥ तहां श्लोक ॥ ( सकारं च हकारं च लोपयित्वा प्रयोजयेत् संधिच पूर्व रूपाख्यं ततोऽसौ प्रणवो भवेत् )  
 अर्थ यह ॥ सोहं इस वाक्यविषे सकारकूं तथा हकारकूं लोप करिके तिसतें अनंतर पूर्वरूपनामासंधिके की  
 ये हूए ता सोहंशब्दतें ॐम् यह प्रणव सिद्ध होवै है इति ॥ यातें सोऽहंशब्दकी न्यांई ॐ इस प्रणवशब्दका  
 भी सो परमात्मामैं हूं यह हीं अर्थ सिद्ध होवै है ॥ इस प्रकारके जीवब्रह्मका एकत्वरूप प्रणवके अर्थका जो चिं  
 तन है ताका नाम ईश्वरप्रणिधान है ॥ इस प्रकारके ईश्वरप्रणिधानतें इस अधिकारी पुरुष ऊपरि ईश्वरका अनुग्रह  
 होवै है ॥ ताईश्वरके अनुग्रहतें इस पुरुषकूं ता असंप्रज्ञात समाधिकी प्राप्ति अवश्य होवै है ॥ यातें ता परवैराग्य  
 की न्यांई यह ईश्वरप्रणिधान भी ता असंप्रज्ञात समाधिका साधन है इति ॥ अथवा इस अधिकारी पुरुषनैं भू  
 मिका जयक्रम करिके ता समाधिका अभ्यास करणा ॥ सो भूमिका वोंके जयका क्रम श्रुतिविषे कथन कन्या



तत्त्वा०

॥ २९ ॥

है ॥ तहांश्रुति ॥ ( यच्छेद्वाङ्मनसीप्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञानआत्मनि ज्ञानमात्मनिमहति नियच्छेच्छांतआत्मनि ) अर्थयह ॥ लौकिकवैदिकसर्वशब्दोंकेउच्चारणकाहेतुरूप जोवाक्इंद्रियहै ॥ तिसवाक्इंद्रियकूं यह अधिकारीपुरुष मनविषे लयकरै ॥ अर्थात् वाकादिकइंद्रियोंकेसर्वव्यापारोंकापरित्यागकरिकै केवल मनकेव्यापारमात्रकरिकै स्थितहोवै ॥ तथापि इसअधिकारीपुरुषनें समाधिकेउत्पत्तिकालपर्यंत प्रणवमंत्रकेजपकापरित्याग नहींकरणा ॥ किंतु ताप्रणवजपतैंअन्यवाक्व्यापारतैंरहितहोणा ॥ इसप्रकार गौमहिषादिकोंकीन्याई जो वाणीकासम्यक्निरोधहै ॥ सोनिरोध प्रथमभूमिका कहीजावैहै ॥ १ ॥ ताप्रथमभूमिकाकेजयहूएतैंअनंतर तामनकानिरोधरूपदूसरीभूमिकाविषे प्रयत्नकरै ॥ अर्थात् तासंकल्पविकल्परूपमनकूं ज्ञानात्माविषे लयकरै ॥ तहां मनुष्योऽहं ब्राह्मणोऽहं इत्यादिक जो विशेषअहंकारहै ताकानाम ज्ञानात्माहै ॥ ताज्ञानात्ममात्ररूपकरिकैस्थितहोवै ॥ इसप्रकार सर्वसंकल्पविकल्पोकापरित्यागकरिकै बालमूकादिकोंकीन्याई जा निर्मनस्ताहै सा द्वितीयभूमिका कहीजावैहै ॥ २ ॥ ताद्वितीयभूमिकाकेजयहूएतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष ताविशेषअहंकारकानिरोधरूपतृतीयभूमिकाविषे प्रयत्नकरै ॥ अर्थात् ताविशेषअहंकारकूं महत्आत्माविषे लयकरै ॥ अर्थात् मनुष्योऽहं ब्राह्मणोऽहं इत्यादिक विशेषअहंकारकापरित्यागकरिकै अस्मितामात्र बाकीरहै ॥ तहां अहंकारकी जासूक्ष्मअवस्थाहै ताकानाम अस्मिताहै ॥ इसीअस्मिताकूं महत्तत्त्व कहैहैं तथासूक्ष्मअहंकार कहैहैं ॥ इसप्रकार आलसीउदासीनकीन्याई जो विशेषअहंकारतैंरहितपणाहै सा तृतीयभूमिका कहीजावैहै ॥ ३ ॥ तातृतीयभूमिकाकेजयहूएतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष ताअस्मिताकानिरोधरूपचतुर्थभूमिकाविषे प्रयत्नकरै ॥ अर्थात् ताअस्मितारूप महत्आत्माकूं एकरसचैतन्यरूपशांतआत्माविषे लयकरै ॥ अर्थात् ताअस्मिताकाभीपरि

परि०

४

॥ १९८ ॥

त्यागकरिकै केवल चैतन्यमात्र बाकीरहै ॥ यद्यपि अन्यश्रुतिविषे महत्तत्त्वतैं अव्यक्त परकहाहै ॥ और



त्यागकरिके केवल चैतन्यमात्र बाकीरहै ॥ यद्यपि अन्यश्रुतिविषे महत्तत्त्वतें अव्यक्त परकह्याहै ॥ और ताअव्यक्ततें चैतन्यपुरुष परकह्याहै ॥ यातें ईहांभी तामहत्तत्त्वका अव्यक्तविषेहीं लयकहणा उचित था ॥ तथापि कारणविषेनिरुद्धहूआकार्य लयकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ यातें ताअव्यक्तरूपकारणविषे तामहत्तत्त्वरूपकार्यकेलयकरणेतें इसपुरुषकूं निद्राहींप्राप्तहोवैंगी ॥ सोनिरोधसमाधि प्राप्तहोवैंगानहीं ॥ या कारणतें ताअव्यक्तकापरित्यागकरिके तामहत्तत्त्वका चैतन्यआत्माविषेलयकह्याहै ॥ इसप्रकार चैतन्य आत्माविषे जोचित्तका सर्वप्रकारतेंनिरोधहै ॥ सोनिरोधहीं असंप्रज्ञातसमाधिरूप चतुर्थभूमिका कही जावैहै ॥ ४ ॥ इसप्रकार उक्तचारिभूमिकावोंविषे पूर्वपूर्वभूमिकाकेजयहूएतेंअनंतर उत्तरउत्तरभूमिका केजयक्रमकरिके जो समाधिकाअभ्यासहै ॥ तिसतेंभी सोअसंप्रज्ञातसमाधि प्राप्तहोवैहै इति ॥ तहां पूर्वकथनकन्ये जे समाधिअभ्यासकेप्रकार तिनोंविषे कोईप्रकारके समाधिअभ्यासकरिके जो अंतःकरणकेअतिसूक्ष्मताका आपादनहै इसीकानाम मनोनाशहै ॥ और तासूक्ष्ममनकरिके इसअधिकारीपुरुषकूं प्रथम त्वंपदकेलक्ष्यअर्थरूपप्रत्यक्आत्माका साक्षात्कार होवैहै ॥ तिसतेंअनंतर तत्त्वमसि आदि कमहावाक्यकरिके अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका ताप्रत्यक्आत्माकेब्रह्मरूपत्वकासाक्षात्कार होवैहै ॥ इस प्रकारतें तासमाधिअभ्यासकूंभी ब्रह्मसाक्षात्कारकीसाधनताहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ श्रीव्यासभगवान्ने ब्रह्मसूत्रोंविषे ( एतेनयोगःप्रत्युक्तः ) इससूत्रकरिके सांख्यशास्त्रकीन्यांई योगशास्त्रकाभी खंडन कन्याहै ॥ और सोपूर्वउक्त समाधिकाअभ्यास योगशास्त्रविषेहीं कथनकन्याहै ॥ यातें तासमाधिअभ्यासकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकीसाधनतामानणेविषे ताव्याससूत्रका विरोधहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सांख्यशास्त्रकीन्यांई योगशास्त्रवालेभी अचेतनप्रधानकूंहीं महत्तत्त्वादिक्रमकरिके जगत्काकारण माने



तत्त्वा०

॥ ३० ॥

परि०

४

हैं ॥ सो प्रधानकारणवाद सिद्धांतविषे अंगीकारहैनहीं ॥ यातें ता प्रधानकारणवादके खंडनअभिप्राय करिकैहीं तासूत्रकारनैं योगशास्त्रका खंडनकन्याहै ॥ कोईनिरोधसमाधिरूपयोगके खंडनअभिप्रायकरिकै तायोगशास्त्रका खंडननहींकन्या ॥ जिसकारणतें सिद्धांतविषेभी चित्तकेनिरोधतैरहित विक्षिप्तपुरुषकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्ति संभवतीनहीं ॥ यातें ब्रह्मसाक्षात्कारवासतै सोचित्तकानिरोध अवश्य अपेक्षितहै ॥ किंवा ( समाध्यभावाच्च । अपिसंराधनेप्रत्यक्षानुमानाभ्यां । निदिध्यासितव्यः । विज्ञायप्रज्ञां कुर्वीत । ध्यानेनात्मनिपश्यंति । ध्यानयोगेनसंपश्यन्नात्मन्यात्मानमात्मना ) इत्यादिक सूत्र श्रुति स्मृति वचनोंकरिकैभी तानिरोधरूपयोगकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकीसाधनता सिद्धहोवैहै ॥ यातें महावाक्य जन्यब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिविषे सोसमाधिअभ्यास अवश्यअपेक्षितहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तासमाधिकूं जोब्रह्मसाक्षात्कारका साधनमानोंगे ॥ तों तासमाधितैरहितपुरुषोंकूं सोब्रह्मसाक्षात्कार नहींहोनाचाहिये ॥ और वासिष्ठादिकग्रंथोंविषे जनकादिकोंकूं तासमाधितैविनाहीं केवल सिद्धगीताकेश्रवणमात्रतें ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ सोसर्व असंगत होवेंगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ केवल समाधिकरिकैहीं सोब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै यहनियम नहींहै ॥ किंतु विवेककरिकैभी सोब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै ॥ तहां अंतःकरणका तथाताअंतःकरणकेवृत्तियोंका प्रकाशक जो त्वंपदकालक्ष्यअर्थरूप प्रत्यक्षसाक्षीहै ॥ तासाक्षीआत्माकूं अन्नमयादिकपंचकोशोंतें पृथक्करिकैनिश्चयकरणा याकानामविवेकहै ॥ ताविवेककरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यतें अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका ब्रह्मसाक्षात्कार अवश्यहोवैहै ॥ यातें तासमाधिकीन्याई सोविचाररूपविवेकभी ताब्रह्मसाक्षात्कारकाहेतुहै ॥ ईहां यहतात्पर्यहै ॥ ताब्रह्मसाक्षात्कारके दोप्रकारकेअधिकारी होवैहैं ॥ एकतों बहुव्याकुल

॥ १९९ ॥

चित्तवाले होवैहैं ॥ और दूसरे अव्यक्तचित्तवाले होवैहैं ॥ तहां प्रथमअधिकारीयोंकूं तों तानिरोधसमाधितैरहितहोवैहैं ॥ सोसमाधिअभ्यास होवैहै ॥ और तदोपरिअधिकारीयोंकूं तों तासमाधितैरहितहोवैहैं ॥



चित्तवाले होवैहैं ॥ और दूसरे अव्याकुलचित्तवाले होवैहैं ॥ तहां प्रथम अधिकारीयोंकूं तौ तानिरोधस  
 माधिके अभ्यासतैंहीं सो ब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै ॥ और दूसरे अधिकारीयोंकूं तौ तासमाधिके अभ्यासतैं वि  
 नाहीं केवल विचारमात्र करिकै सो ब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभी कहीहै ॥ तहां  
 श्लोक ॥ ( अव्याकुलधियां मोहमात्रेणाच्छादितात्मनां सांख्यनामाविचारोऽयं मुख्योऽज्ञादितिसिद्धिदः ) अ  
 र्थयह ॥ जिन पुरुषोंकी बुद्धि व्याकुलतातैरहितहै ॥ तथा अज्ञानमात्र करिकै आवृत्तहै आत्माजिनोंका ॥ ऐ  
 से पुरुषोंकूं यह सांख्यनामाविचारहीं ब्रह्मसाक्षात्कारका मुख्यसाधनहै ॥ जिसकारणतैं सो सांख्यनामा  
 विचार इस अधिकारी पुरुषकूं तासमाधि अभ्यासकी अपेक्षा करिकै शीघ्रहीं ब्रह्मसाक्षात्कारकी प्राप्ति करेहै  
 इति ॥ इसप्रकार समाधिकूं तथा विचाररूपविवेककूं अधिकारीके भेद करिकै अर्थवत्ताहोनेतैं विकल्प करि  
 कै ब्रह्मसाक्षात्कारकी साधनताहै ॥ यातैं समाधितैं विना केवल विचारमात्रतैं ब्रह्मसाक्षात्कारकी प्राप्ति कूं  
 कथन करणे हारेवचनोंका तथा समाधितैं ब्रह्मसाक्षात्कारकी प्राप्ति कूं कथन करणे हारेवचनोंका परस्परविरोध  
 होवैनहीं ॥ किंतु उक्त अधिकारीके भेद करिकै ते दोनों प्रकारके वचन सार्थकहैं इति ॥ किंवा यह उक्त अ  
 र्थ श्रीवसिष्ठभगवान् नैंभी कथन कन्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ ( द्वौ क्रमौ चित्तनाशस्य योगो ज्ञानं च राघव यो  
 गस्तद्वृत्तिरोधो हि ज्ञानं सम्यगवेक्षणं ॥ १ ॥ असाध्यः कस्यचिद्योगः कस्यचिज्ज्ञाननिश्चयः प्रकारौ द्वौ त  
 तो देवो जगाद परमेश्वरः ॥ २ ॥ ) अर्थयह ॥ हे राघव ब्रह्मसाक्षात्कारविषे उपयोगी जाचित्तकी सूक्ष्मता  
 है ॥ तासूक्ष्मताका आपादनरूप जो चित्तकानाशहै ॥ ताचित्तनाशके दो कारण होवैहैं ॥ एकतौ योग  
 कारण होवैहै ॥ और दूसरा विवेक कारण होवैहै ॥ तहां चित्तके सर्ववृत्तियोंका जो निरोधहै ताकानाम  
 योगहै ॥ और अन्नमयादिक पंचकोशोंतैं प्रत्यक् आत्माकूं जो पृथक् करिके देखनाहै ताकानाम विवेक



परि०  
४

1120011

अभावहै यहवादीकाकहणा खंडनहूआ इति ॥ अब ताजीवनमुक्तिकेप्रयोजनका वर्णनकरेहैं ॥ तहां ता



अभावहै यहवादीकाकहणा खंडनहूआ इति ॥ अब ताजीवन्मुक्तिकेप्रयोजनका वर्णनकरैहैं ॥ तहां ता जीवन्मुक्तिके ज्ञानरक्षा १ तप २ विसंवादाभाव ३ दुःखनिवृत्ति ४ सुखाविर्भाव ५ यहपंच प्रयोजन होवैहैं ॥ तहां उत्पन्नभयाहैब्रह्मसाक्षात्कार जिसकूं ऐसाजो तत्त्ववेत्तापुरुषहै ॥ तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं जो पुनःसंशयविपर्ययकीअनुत्पत्तिहै ताकानाम ज्ञानरक्षाहै ॥ साज्ञानरक्षा जीवन्मुक्तिकेअभ्यासतैंहीं सिद्ध होवैहै ॥ यातैं ताज्ञानरक्षाकूं जीवन्मुक्तिकाप्रयोजनपणा संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसपुरुषकूं वेदांतशास्त्ररूपप्रमाणकरिकै ब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नभयाहै ॥ तिसपुरुषकूं तासाक्षात्कारतैंअनंतर सोसंशय विपर्यय प्राप्तहींनहींहै ॥ और प्राप्तवस्तुकाहीं निषेधहोवैहै ॥ अप्राप्तवस्तुका निषेध होतानहीं ॥ यातैं सोज्ञानरक्षारूप जीवन्मुक्तिकाप्रयोजन संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि शास्त्रप्रमाणविषे कुशल जेमुख्यअधिकारीहैं ॥ तिनोंकूं ताब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर सोसंशयविपर्यय संभवतानहीं ॥ तथापि अन्यअधिकारीयोंकूं निमित्तकेवशतैं सोसंशयविपर्यय संभवैहै ॥ तहां भ्रांतपुरुषोंकेवचनहीं ता संशयविपर्ययविषे निमित्तहैं ॥ सोदिखावैहैं ॥ तहां केईकभ्रांतपुरुषतों यहकहेहैं ॥ जेपुरुष आपणेकूं ब्रह्मज्ञानी मानैहैं ॥ तिनपुरुषोंविषेभी अज्ञानीपुरुषोंकीन्यांई मनुष्योऽहं ब्राह्मणोऽहं याप्रकारकाव्यवहार देखणेविषेआवैहै ॥ तथा रागद्वेषादिकभी देखणेविषेआवैहैं ॥ जोकदाचित् इसपुरुषकूं वेदांतश्रवणादिकोंतैं ब्रह्मका अपरोक्षसाक्षात्कार होता ॥ तों तेरागद्वेषादिक नहींहोते ॥ यातैं तिनश्रवणादिकोंतैं इस पुरुषकूं आपातज्ञानहीं होवैहै ॥ इसप्रकारके भ्रांतवाचालपुरुषोंकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै ताअव्युत्पन्नअधिकारीकूं उत्पन्नहूएसोसाक्षात्कारविषेभी संशयविपर्यय होइजावैहै ॥ और केईकभ्रांतपुरुषतों ऐसाकहे हैं ॥ मरणपर्यंत वेदांतकेश्रवणादिकोंकरिकैभी इसपुरुषकूं ब्रह्मका अपरोक्षज्ञान होतानहीं ॥ किंतु ति



तत्त्वा०

॥ ३२ ॥

परि०

४

नवेदांतवाक्योंतैं इसपुरुषकूं परोक्षज्ञानहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ जिसकारणतैं तिनपुरुषोंविषे तापरोक्षज्ञानका हीं चिन्ह देखणेविषेआवैहै ॥ अपरोक्षज्ञानका कोईचिन्ह देखणेविषेआवतानहीं ॥ किंवा जोकदाचित् इसपुरुषकूं इदानींकालविषेभी सोब्रह्मसाक्षात्कार होताहोवै ॥ तौं तासाक्षात्कारकरिकै आवरणसहित अज्ञानकेनिवृत्तहूए ताज्ञानवान्पुरुषकूं ईश्वरकीन्याई सर्वज्ञतादिक होणेचाहिये ॥ जिसकारणतैं शुकसनकादिकपूर्वज्ञानीयोंविषे ईश्वरकीन्याई तेसर्वज्ञतादिकधर्म शास्त्रतैंप्रतीतहोवैहैं ॥ और जोकोईऐसाक है ॥ तेसर्वज्ञतादिक तपका वायोगका फलहैं ॥ ज्ञानका फलनहींहैं ॥ तेशुकसनकादिकज्ञानी तपयोग वालेहूएहैं ॥ यातैं तिनोंविषे सर्वज्ञतादिक होतेभयेहैं ॥ और इदानींकालकेज्ञानवान् तातपयोगतैंरहित हैं ॥ यातैं तिनोंविषे तेसर्वज्ञतादिकधर्म नहींहैं ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं तपयोग वालेपुरुषोंकूंहीं आत्मज्ञान होवैहै ॥ तातपयोगतैंरहितपुरुषोंकूं सोआत्मज्ञानहीं होतानहीं ॥ यातैं इदानींकालविषे श्रवणादिकोंतैंउत्पन्नहूआज्ञान आपातरूपहीं होवैहै ॥ अज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषेअसमर्थज्ञानकानाम आपातज्ञानहै ॥ इसप्रकारके भ्रांतमूर्खलोकोंकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै ताअव्युत्पन्नअधिकारीकूं उत्पन्नहूएसाक्षात्कारविषेभी संशयविपर्यय होइजावैहै ॥ और जबी तेअधिकारीपुरुष ब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर पूर्वउक्तरीतिसें ताजीवन्मुक्तिकाअभ्यास करैहैं ॥ तबी तिनअधिकारीपुरुषोंकूं तिन भ्रांतपुरुषोंकासंगहीं होतानहीं ॥ यातैं तेसंशयविपर्यय उत्पन्नहोतेनहीं ॥ यहहीं ताज्ञानकीरक्षाहै ॥ यातैं ताज्ञानरक्षाकूं जीवन्मुक्तिकाप्रयोजनपणासंभवैहै ॥ किंवा अस्मदादिकअकृतोपास्तिपुरुषोंकूं ब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर उक्तनिमित्ततैं तेसंशयादिकहोवैहैं इसवार्त्ताविषे कोईआश्चर्यनहींहै ॥ किंतु पूर्व शुक राघव निदाघ भगीरथ आदिकोंकूंभी ताअपरोक्षज्ञानतैंअनंतर तेसंशयादिक होतेभयेहैं ॥ तहां

॥ २०१ ॥

शुकदेवकूं प्रथम आपेहींविवेककरिकै ॥ ब्रह्मसाक्षात्कार ॥ उत्पन्नहोता ॥ पश्चात् ताज्ञानविषेसंशयकूंप्राप्तोके सोश्रवणसें आपेनेसाक्षात्कारहोतानहीं ॥ किंवा तेने



शुकदेवकूं प्रथम आपेहींविवेककरिकै ब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नहोताभया ॥ पश्चात् ताज्ञानविषेसंशयकूं प्रा  
 प्तहोइकै सोशुकदेव आपणेव्यासपिताकेसमीपजाइकै पूछताभया ॥ तिसशुकदेवकेप्रति सोव्यासभग  
 वान् तिसीतत्त्वकाउपदेश करताभया ॥ तौंभी ताशुकदेवका सोसंशय नहींनिवृत्तहोताभया ॥ तिस  
 तैअनंतर सोव्यासभगवान् ताशुकदेवकूं राजाजनककेसमीप भेजताभया ॥ तहां जनककेउपदेशतै  
 सोशुकदेव तासंशयतैरहितहोताभया ॥ तथा निर्विकल्पकसमाधिकूं प्राप्तहोइकै मुक्तिकूं प्राप्तहोताभया ॥  
 यहकथा वासिष्ठरामायणविषे प्रसिद्धहै ॥ इसप्रकार निदाघादिकोंकीकथाभी पुराणादिकोंविषेप्रसिद्धहै  
 ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताज्ञानवान्पुरुषकूं सोसंशयविपर्यय रहो ॥ ताकरिकै तिसकी क्याहानिहै ॥ ॥  
 समाधान ॥ ॥ जैसे अज्ञान मोक्षकाप्रतिबंधक होवैहै ॥ तैसे सोसंशयविपर्ययभी मोक्षकाप्रतिबंधक  
 हीं होवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रीभगवान्नेंभी गीताविषे ( अज्ञश्चाश्रद्धधानश्चसंशयात्माविनश्यति ) इसवच  
 नकरिकै कथनकरीहै ॥ यातै इसविद्वान्पुरुषनें ताजीवन्मुक्तिकेअभ्यासकरिकै तासंशयविपर्ययकीनि  
 वृत्ति अवश्यकरीचाहिये इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं आत्माकातौं संशयविपरी  
 तभावनातैरहित दृढअपरोक्षज्ञान भयाहै ॥ और व्यवहारकीबाहुल्यताकरिकै सोपूर्वउक्त जीवन्मुक्तिका  
 अभ्यास भयानहीं ॥ तिसअधिकारीपुरुषका मोक्ष होवैहै अथवा नहींहोवैहै ॥ तहां तिसका मोक्षहो  
 वैहै यहप्रथमपक्ष जो अंगीकारकरो ॥ तौं ताजीवन्मुक्तिकेअभ्यासकीव्यर्थता होवैंगी ॥ काहेतै मोक्ष  
 तैअधिक कोईपदार्थ हैनहीं ॥ सोमोक्षतौं आत्मज्ञानकरिकैहीं प्राप्तहोवैहै ॥ यातै सोजीवन्मुक्तिकाअ  
 भ्यास व्यर्थहीहै ॥ और दृढअपरोक्षज्ञानवालेका मोक्ष नहींहोवैहै यहद्वितीयपक्ष जो अंगीकारकरो ॥  
 तौं आत्मज्ञानतैमोक्षकीप्राप्तिकूं कथनकरणेहारे ( ज्ञानादेवतुकैवल्यं ) इत्यादिकश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रका



तत्त्वा०  
॥ ३३ ॥

परि०  
४

विरोधहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि दृढअपरोक्षज्ञानीकूं मोक्षकीप्राप्ति अवश्यहोवैहै ॥ तथा  
पि ताजीवन्मुक्तिकेअभ्यासतैंविना दृष्टसुखकीप्राप्ति होतीनहीं ॥ यातैं तादृष्टसुखकीप्राप्तिवासतैं ताज्ञा  
नवान्कूंभी सोजीवन्मुक्तिकाअभ्यास संभवैहै ॥ अर्थात् सोदृष्टसुखहीं ताजीवन्मुक्तिकेअभ्यासका प्र  
योजनहै ॥ और जीवन्मुक्तपुरुषोंकूंभी भूमिकाकीतारतम्यताकरिकै तादृष्टसुखकी तारतम्यताहीं होवै  
है ॥ तहांश्रुति ॥ ( आत्मक्रीडाआत्मरतिः क्रियावानेवब्रह्मविदांवरिष्ठः ) अर्थयह ॥ आत्माविषेहै अपरो  
क्षअनुभवरूपक्रीडा जिसकी ताकानाम आत्मक्रीडहै ॥ अर्थात् अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेअपरोक्षज्ञान  
वालेविद्वान्कानाम आत्मक्रीडहै ॥ इसीआत्मक्रीडविद्वान्कूं शास्त्रविषे ब्रह्मवित् इसनामकरिकै कथन  
करैहैं ॥ और आत्माविषेहैं विजातीयवृत्तियोंकेतिरस्कारपूर्वकसाक्षात्काररूपरति जिसकी ताकानाम  
आत्मरतिहै ॥ अर्थात् आत्माकेआनंदका निरंतर अपरोक्षअनुभवकरणेहारेकानाम आत्मरतिहै ॥ इसी  
आत्मरतिविद्वान्कूं शास्त्रविषे ब्रह्मविद्वर इसनामकरिकै कथनकरैहैं ॥ और ब्रह्मकेध्यानकानाम क्रिया  
है ॥ सोब्रह्मकाध्यान जिसकूंप्राप्तभयाहै ताकानाम क्रियावानहै ॥ अर्थात् ब्रह्मात्मएकत्वविषेसमाधिवा  
लेपुरुषकानाम क्रियावानहै ॥ इसीक्रियावानविद्वान्कूं शास्त्रविषे ब्रह्मविद्वरीयान् इसनामकरिकै कथन  
करैहैं ॥ यहब्रह्मविद्वरीयान् आपकरिकै उत्थानकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु परकरिकै उत्थानकूंप्राप्तहोवै  
है ॥ और जोविद्वान्पुरुष आपकरिकै वा परकरिकै उत्थानकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ सोविद्वान्पुरुष ब्रह्मवि  
दांवरिष्ठ इसनामकरिकै कहाजावैहै इति ॥ तहां ब्रह्मवित् १ ब्रह्मविद्वर २ ब्रह्मविद्वरीयान् ३ ब्रह्मविद्व  
रिष्ठ ४ यह श्रुतिउक्तचारोंविद्वान् वसिष्ठभगवान्नें ज्ञानकीसप्तभूमिकावोंविषे चतुर्थभूमिकातैंलैके यथा  
क्रमतैं कथनकन्येहैं ॥ तेसप्तभूमिकायहहैं ॥ श्लोक ॥ ( ज्ञानभूमिःशुभेच्छास्यात्प्रथमासमुदाहृता विचा

॥२०२॥

रणाद्वितीयास्यातृतीयातनुमानसा ॥ ॥ पुनः ॥ सत्त्वाप्राप्तिप्रतुर्थीयासतोऽसंसक्तिनामिका पदार्थाभाविनी



रणाद्वितीयास्याचृतीयातनुमानसा ॥ १ ॥ सत्त्वापत्तिश्चतुर्थीस्यात्ततोऽसंसक्तिनामिका पदार्थाभाविनी  
 षष्ठीसप्तमीतुर्यगास्मृता ॥ २ ॥ ) अर्थयह ॥ शुभइच्छा १ विचारणा २ तनुमानसा ३ सत्त्वापत्ति ४  
 असंसक्ति ५ पदार्थाभाविनी ६ तुरीया ७ यहसप्त ज्ञानकीभूमिका कहीजावैहैं ॥ तिनसप्तभूमिकावाँ  
 विषे प्रथम शुभइच्छातौ श्रवणरूपहै ॥ और दूसरी विचारणा मननरूपहै ॥ और तीसरी तनुमानसा  
 निदिध्यासनरूपहै ॥ ताश्रवणमनननिदिध्यासनकास्वरूप पूर्व द्वितीयपरिच्छेदविषे कथनकरिआयेहैं ॥  
 यातैं तेतीनोंभूमिका साधनरूपहैं ॥ और सत्त्वापत्तिनामाचतुर्थभूमिकाविषे इसपुरुषकूं ब्रह्मसाक्षात्कार  
 उत्पन्नहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं ताचतुर्थीभूमिकाविषेस्थितपुरुषकूं ब्रह्मवित् कहेहैं ॥ और पंचमीआदिक  
 भूमिकाविषेस्थित ज्ञानवान्पुरुषोंकूं चित्तकेविश्रांतिकीतारतम्यताकरिकै तादृष्टसुखकीभी तारतम्यताहीं  
 होवैहै ॥ यातैं पंचमीभूमिकावालातौ ब्रह्मविद्वर कह्याजावैहै ॥ और षष्ठीभूमिकावाला ब्रह्मविद्वरीया  
 न् कह्याजावैहै ॥ और सप्तमीभूमिकावाला ब्रह्मविद्वरिष्ठ कह्याजावैहै ॥ तहां ब्रह्मविद्वर १ ब्रह्मविद्वरी  
 यान् २ ब्रह्मविद्वरिष्ठ ३ यहतीनों जीवन्मुक्त कहेजावैहैं ॥ तहां ( भूयश्चांतेविश्वमायानिवृत्तिः । ज्ञाने  
 नतुतदज्ञानंयेषांनाशितमात्मनः ) इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंनैं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेब्रह्मज्ञानकरिकै  
 अज्ञानकीनिवृत्ति कथनकरीहै ॥ और ( ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति । ब्रह्मविदाप्नोतिपरं । ज्ञानीत्वात्मैवमेतत् )  
 इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंनैं ब्रह्मज्ञानतैं ब्रह्मभावकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और अज्ञानकीनिवृत्तिपूर्वक  
 जाब्रह्मभावकीप्राप्तिहै तिसीकानाम मोक्षहै ॥ सोमोक्ष ब्रह्मवित् १ ब्रह्मविद्वर २ ब्रह्मविद्वरीयान् ३ ब्र  
 ह्मविद्वरिष्ठ ४ इनचारोंकूं समानहीं होवैहै ॥ तामोक्षविषे किंचित्मात्रभी विलक्षणता नहींहै ॥ परंतु  
 सोदृष्टसुख तारतम्यताकरिकैहोवैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( तारतम्येनस



तत्त्वा०

॥ ३४ ॥

वैपांचतुर्णासुखमुत्तमं तुल्याचतुर्णामुक्तिः स्यादृष्टसौख्यं विशिष्यते ) अर्थयह ॥ ब्रह्मावदादिकचारोंकूं ता  
 रतम्यताकरिकै सुखहोवैहै ॥ और मुक्तितों चारोंकूं समान होवैहै ॥ तामुक्तिविषे किंचित्मात्रभी वि  
 शेषताहोतीनहीं ॥ किंतु तादृष्टसुखविषेहीं विशेषता होवैहै इति ॥ अब ताजीवन्मुक्तिके तपरूपद्वितीय  
 प्रयोजनका निरूपणकरैहैं ॥ तहां चित्तकीजाएकाग्रताहै ताकानाम तपहै ॥ यहतपकास्वरूप स्मृति  
 विषेभी कथनकन्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( मनसश्चेंद्रियाणांच ह्येकाग्र्यं परमंतपः सज्यायः सर्वधर्मेभ्यः सधर्मः  
 परउच्यते ) अर्थयह ॥ मनका तथाचक्षुआदिकइंद्रियोंका जोएकाग्रपणाहै यहहीं परमतपहै ॥ और  
 योगवेत्तापुरुषोंनैभी सोचित्तकीएकाग्रतारूपधर्महीं अभिहोत्रादिकसर्वधर्मोंतैं श्रेष्ठ कहीताहै इति ॥ इ  
 सीएकाग्रतारूपयोगकूं गीताविषे श्रीभगवान् नै ( तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपिमतोऽधिकः क  
 र्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ) इसवचनकरिकै सर्वधर्मोंतैं अधिक कहाहै ॥ ॥ शंका ॥  
 प्रारब्धकर्मकेभोगकरिकै विक्षिप्तचित्तवाला जोज्ञानवान् है ॥ तिसकूं सोचित्तकीएकाग्रतारूपतप कैसे  
 होवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि चतुर्थभूमिकावाले ज्ञानवान् पुरुषकूंभी प्रपंचके मिथ्यात्वनिश्च  
 यकरिकै तथाचैतन्यआत्माकेसत्यत्वनिश्चयकरिकै साचित्तकीएकाग्रता विद्यमानहै ॥ तथापि ताज्ञान  
 वान्कूं प्रारब्धकर्मकेभोगकालविषे बाधितानुवृत्तिकरिकै नामरूपात्मकप्रपंचकीप्रतीति होवैहै ॥ यातैं  
 ताज्ञानवान्कूं निरंकुश चित्तकीएकाग्रता संभवतीनहीं ॥ और जीवन्मुक्तज्ञानवान्कातों योगाभ्यास  
 करिकै मन नष्टहोइगयाहै ॥ यातैं ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं सर्ववृत्तियोंकेअनुदयतैं सा निरंकुश चित्तकीए  
 काग्रता संभवैहै ॥ सोनिरंकुशचित्तकीएकाग्रतारूपतपहीं ताजीवन्मुक्तिका प्रयोजनहै ॥ ॥ शंका ॥  
 सोजीवन्मुक्तपुरुषोंकातप किसविषे उपयोगीहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सोजीवन्मुक्तोंकातप लोक

परि०  
४

॥ २०३ ॥

संग्रहवासतैं होवैहै ॥ तहां आप सदाचारविषेप्रवृत्तहोइके लोकोंकूंभी तासदाचारविषेप्रवृत्तकरणा या



संग्रहवासतै होवैहै ॥ तहां आप सदाचारविषेप्रवृत्तहोइकै लोकोंकूंभी तासदाचारविषेप्रवृत्तकरणा या कानाम लोकसंग्रहहै ॥ तालोकसंग्रहवासतैहीं ताविद्वान्पुरुषके तपादिकहोवैहै ॥ यहवार्त्ता गीताविषे श्रीभगवान्नेभी ( लोकसंग्रहमेवापिसंपश्यन्कर्तुमर्हसि ) इसवचनकरिकै कथनकरीहै ॥ तहां तासंग्रहकाअधिकारीलोक शिष्य १ भक्त २ तटस्थ ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारका होवैहै ॥ तहां शास्त्रप्रतिपादित सत्मार्गविषेवर्त्तणेहारा शिष्य कहाजावैहै ॥ सोशिष्यतों ब्रह्मवेत्तागुरुनैउपदेशकन्येहूएमार्ग करिकै वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंतैं प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरताहूआ मुक्तिकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( आचार्यवान्पुरुषोवेद तस्यतावदेवचिरं यावन्नविमोक्ष्येऽथसंपत्स्ये ) अर्थयह ॥ ब्रह्मवेत्ताआचार्यकेशरणकूंप्राप्तहूआ शिष्यहीं ब्रह्मकूं साक्षात्कार करेहै ॥ और तिसज्ञानवान्पुरुषकूं तवपर्यंतहीं विदेहमोक्षविषे विलंबहै ॥ जबपर्यंत भोगकरिकै प्रारब्धकर्मतैरहित नहींभया ॥ ताप्रारब्धकर्मकेनिवृत्तहूएतैंअनंतर सोज्ञानवान् विदेहमोक्षकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ और ताजीवन्मुक्तज्ञानीपुरुषका जोभक्तहै ॥ सो भक्तभी ताज्ञानवान्पुरुषके पूजनअर्चनकरिकै तथाअन्नपानवस्त्रादिकपदर्थोंकेदेणेकरिकै मनवांछितपदार्थोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( यंयंलोकंमनसासंविभर्त्ति विशुद्धसत्त्वः कामयतेयांश्चकामान् तंलोकंजयतेतांश्चकामान् तस्मादात्मज्ञं ह्यर्चयेद्भूतिकामः ) अर्थयह ॥ श्रद्धाभक्तिपूर्वक शुद्धअंतःकरणतैं ज्ञानवान्पुरुषके पूजनादिकोंकूंकरताहूआ यहभक्तजन जिसजिसलोककेप्राप्तिकीइच्छाकरेहै ॥ तथा जिनजिनपदार्थोंकेप्राप्तिकीकामनाकरेहै ॥ तिसतिसलोककूं तथातिनतिनपदार्थोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं संपदाकीइच्छावालापुरुष श्रद्धाभक्तिकरिकै ब्रह्मवेत्तापुरुषकेहीं पूजनादिककरै इति ॥ यहवार्त्ता स्मृतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( यद्येकोब्रह्मविद्भुंक्ते जगत्तर्पयतेऽखिलं तस्माद्ब्रह्मविदेदेयं यद्यस्तिव



तत्त्वा०

॥ ३५ ॥

परि०

४

स्तुकिंचन) अर्थयह ॥ जिसपुरुषके गृहविषे एकभी ब्रह्मवेत्ता पुरुष जबी भोजन करेहै ॥ तबी सर्वजगत् कूं तृप्त करेहै ॥ अर्थात् सर्वजगत् की तृप्तिकरणें तैं जो पुण्य होवैहै ॥ सो पुण्य एक ब्रह्मवेत्ता पुरुषके भोजन करावणें तैं होवैहै ॥ या तैं इस पुरुषके पास जो कोई अन्न वस्त्रादिक प्रिय वस्तु होवै ॥ सो वस्तु इस पुरुष नैं ता ब्रह्मवेत्ता पुरुषके तांई ही देना योग्य है इति ॥ यह वार्त्ता अन्य स्मृतिविषे भी कही है ॥ तहां श्लोक ॥ ( यत्फलं लभते मर्त्यः कोटिब्राह्मणभोजनैः तत्फलं समवाप्नोति ज्ञानिनं यस्तु भोजयेत् ॥ ज्ञानिभ्यो दीयते यच्च तत्कोटिगुणितं भवेत् ) अर्थयह ॥ यह जीव कोटि ब्राह्मणोंके भोजन करावणे करिकै जिस फल कूं प्राप्त होवैहै ॥ तिसफल कूं यह पुरुष एक ज्ञानवान् पुरुषके भोजन करावणे करिकै प्राप्त होवैहै ॥ और ज्ञानवान् पुरुषके तांई जो वस्तु दीया जावैहै ॥ सो कोटिगुणा अधिक होवैहै इति ॥ इत्यादिक अनेक श्रुति स्मृति वचन ज्ञानवान् पुरुषकी सेवा तैं मनवांछित पदार्थोंकी प्राप्ति कूं कथन करेहैं इति ॥ और तटस्थ पुरुष तों दो प्रकारका होवै है ॥ एक तों सत् मार्गवर्त्ती होवैहै ॥ और दूसरा असत् मार्गवर्त्ती होवैहै ॥ तहां सत् मार्गवर्त्ती तटस्थ तों ता जीवन्मुक्त पुरुषकी सदाचारविषे प्रवृत्ति कूं देखिकै आप भी ता सदाचारविषे प्रवृत्त होवैहै ॥ यह वार्त्ता गीताविषे श्री भगवान् नैं भी ( यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्त्तते ) इस श्लोक करिकै कथन करीहै ॥ और दूसरा असत् मार्गवर्त्ती तटस्थ तों ता जीवन्मुक्त पुरुषके दृष्टि पात करिकै सर्व पापों तैं रहित होवैहै ॥ तहां स्मृति ॥ ( यस्यानुभवपर्यं ता बुद्धिस्तत्त्वे प्रवर्त्तते तद्दृष्टिगोचराः सर्वे मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ) अर्थयह ॥ अहं ब्रह्मास्मि या प्रकारके अपरोक्ष अनुभव पर्यंत जिस पुरुषकी बुद्धि प्रत्यक्ष तत्त्वविषे प्रवर्त्तमान है ॥ तिस ज्ञानवान् पुरुषकी दृष्टिके जे जे पुरुष विषय होवैहैं ॥ ते सर्व पुरुष सर्व पापों तैं रहित होवैहैं इति ॥ और ता जीवन्मुक्त ज्ञानवान् पुरुषका जे दुष्ट पुरुष द्वेष करेहैं तथा निंदा करेहैं ॥ ते दुष्ट पुरुष ता ज्ञा

॥ २०४ ॥

नवान् पुरुषके पाप कूं ग्रहण करेहैं ॥ तहां श्रुति ॥ ( तस्यानुप्रादायानुवर्त्तन्ति सुहृदः साधुकृत्यं द्विषन्तः पापकृ



नवान्पुरुषके पापकूं ग्रहणकरेहैं ॥ तहांश्रुति ॥ ( तस्यपुत्रादायमुपयंति सुहृदःसाधुकृत्यं द्विषंतःपापकृत्यं ) अर्थयह ॥ तिसज्ञानवान्पुरुषके धनादिकपदार्थोंकूं पुत्र लेजावैहैं ॥ और पुण्यकर्मकूं सेवाकरणे हारेसुहृदजन लेजावैहैं ॥ और पापकर्मकूं द्वेषकरणेहारेनिंदकपुरुष लेजावैहैं इति ॥ इसप्रकार ताजीवन्मुक्तपुरुषका सोतप लोकसंग्रहवासतै होवैहै ॥ सोतप ताजीवन्मुक्तिका द्वितीयप्रयोजनहै इति ॥ अब ताजीवन्मुक्तिके विसंवादाभावरूप तीसरेप्रयोजनका निरूपणकरेहैं ॥ तहां सोजीवन्मुक्तपुरुष व्युत्थान कालविषे दुष्टपुरुषोंकृतनिंदादिकोंकूं श्रवणभीकरेहै ॥ तथा पाखंडी क्रूर निष्ठुर आदिकपुरुषोंकूं देखताभी है ॥ तौंभी ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं रागद्वेषादिकवृत्तियां उत्पन्नहोतीनहीं ॥ यातैं ताजीवन्मुक्तपुरुषका तिननिंदकदुष्टपुरुषोंकेसाथि कलहरूपविसंवाद होतानहीं ॥ और जोपुरुष ताजीवन्मुक्तिकेअभ्यासतैरहि तहै ॥ तिसपुरुषकातौं तिनदुष्टजनोंकेसाथि सर्वदा सो कलहरूपविसंवाद होतारहेहै ॥ यातैं ताविसंवादाभावविषे जीवन्मुक्तिकाप्रयोजनपणा संभवैहै ॥ यहवार्त्ता वृद्धआचार्योंनैंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ( ज्ञात्वासदातत्त्वनिष्ठाननुमोदामहेवयं अनुशोचामहेचान्यान्नभ्रांतैर्विवदामहे ) अर्थयह ॥ सर्वदा तत्त्वनिष्ठाविषेस्थितपुरुषोंकूंदेखिकै हम आनंदकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तातत्त्वनिष्ठातैरहितपुरुषोंकूंदेखिकै हम शोककूंकरेहैं ॥ और भ्रांतपुरुषोंकेसाथि हम विवादकूंकरतेनहीं इति ॥ यहविसंवादकाअभाव ताजीवन्मुक्तिका तृतीयप्रयोजनहै इति ॥ अब ताजीवन्मुक्तिके दुःखनिवृत्तिरूपचतुर्थप्रयोजनका वर्णनकरेहैं ॥ तहां सादुःखनिवृत्ति दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौं ऐहिकदुःखनिवृत्ति होवैहै ॥ और दूसरी पारलौकिकदुःखनिवृत्ति होवैहै ॥ तहां आत्मज्ञानकरिकै भ्रांतिकीनिवृत्तिहोणेतैं तथायोगाभ्यासकरिकै सर्ववृत्तियोंकानिरोधहोणेतैं जीवन्मुक्तपुरुषकाचित्त केवल आत्माकारहीं होवैहै ॥ अन्याकार होतानहीं ॥



तत्त्वा०

॥ ३६ ॥

परि०

४

॥ २०५ ॥

यातें प्रारब्धभोगकेविद्यमानहूएभी ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं दुःख प्रतीतहोतानहीं ॥ किंतु सर्वदुःखोंकीनिवृत्ति होवैहै ॥ इसीकानाम ऐहिकदुःखनिवृत्तिहै ॥ यहऐहिकदुःखनिवृत्तिहीं ( आत्मानंचेद्विजानीयादयमस्मीतिपूरुषः किमिच्छन्कस्यकामायशरीरमनुसंज्वरेत् ) इसश्रुतिविषे कथनकरीहै ॥ और आत्मज्ञानकरिकैअज्ञानकेनिवृत्तहूए संचितसर्वकर्मोंका नाशहोइजावैहै ॥ और आत्मज्ञानकेप्रभावतें ज्ञानवान्पुरुषकूं आगामिकर्मोंका स्पर्शहीं होतानहीं ॥ और सोअज्ञानसहितसंचितकर्महीं तापारलौकिकदुःखका हेतु होवैहै ॥ ताकेनाशहूए ताजीवन्मुक्तपुरुषके सर्वपारलौकिकदुःखोंकीनिवृत्ति होवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( एतं हवावनतपति किमहंसाधुनाकरवं पापमकरवं ) अर्थयह ॥ मैं पुण्यकर्मकूं किसवासतै नहींकरताभया ॥ और मैं पापकर्मकूं किसवासतै करताभया ॥ याप्रकारकीचिंत्तारूपअग्नि जैसे अज्ञानीपुरुषकूं तपाय मानकरेहै ॥ तैसे जीवन्मुक्तपुरुषकूं सोचिंत्तारूपअग्नि तपायमान करतानहीं इति ॥ यद्यपि चतुर्थभूमिकावालेज्ञानवान्पुरुषकूंभी सादुःखकीनिवृत्ति होवैहै ॥ तथापि ताज्ञानवान्पुरुषकूं प्रारब्धभोगकालविषे बाधितानुवृत्तिकरिकै अहंसुखी अहंदुःखी इत्यादिकअनुभव होवैहै ॥ यातें ताज्ञानवान्की सादुःख निवृत्ति सुरक्षित नहींहोवैहै ॥ और जीवन्मुक्तपुरुषकूं योगाभ्यासकरिकै सर्ववृत्तियोंकानिरोध होवैहै ॥ यातें ताजीवन्मुक्तपुरुषकी सादुःखनिवृत्ति सुरक्षित होवैहै ॥ अर्थात् ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं कोईकालविषे भी सोदुःख प्रतीतहोतानहीं ॥ यातें तादुःखनिवृत्तिविषे जीवन्मुक्तिकाप्रयोजनपणा संभवैहै ॥ यहदुःख निवृत्ति ताजीवन्मुक्तिका चतुर्थप्रयोजनहै इति ॥ अब ताजीवन्मुक्तिके सुखाविर्भावरूपपंचमप्रयोजन का निरूपणकरेहैं ॥ तहां ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै तथायोगाभ्यासकरिकै ताजीवन्मुक्तपुरुषका अज्ञान तथाअज्ञानकृतआवरण तथाव्यवहाररूपविक्षेप निवृत्तहोइजावैहै ॥ और सोअज्ञानकृतआवरण तथावि

क्षेपहीं ब्रह्मानंदकेअनुभवविषे प्रतिबंधक होवैहै ॥ ताप्रतिबंधकीनिवृत्तिहूए ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं जो



क्षेपहीं ब्रह्मानंदके अनुभवविषे प्रतिबंधक होवैहै ॥ ताप्रतिबंधककी निवृत्तिहूए ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं जो  
 परिपूर्णब्रह्मानंदका निरंतर अनुभवहोवैहै ताकानाम सुखाविर्भावहै ॥ तहांश्रुति ॥ ( समाधिनिर्धूतम  
 लस्यचेतसो निवेशितस्यात्मनियत्सुखं भवेत् नशक्यते वर्णयितुं गिरातदा स्वयंतदंतःकरणेन गृह्यते ) अर्थ  
 यह ॥ समाधिकरि कै निवृत्त होइ गया है रागद्वेषादिरूपमल जिसका ॥ तथा केवल आत्माविषे है स्थिति जि  
 सकी ॥ ऐसा जोचित है ॥ तिसचित्तकूं तासमाधिकालविषे जोस्वरूपसुख प्राप्त होवैहै ॥ सोसुख वाणी  
 करि कै वर्णन कन्याजातानहीं ॥ किंतु सोसुख ताअंतःकरणनै आपहीं ग्रहण करीता है इति ॥ यहसुख  
 का आविर्भाव ताजीवन्मुक्तिका पंचमप्रयोजन है ॥ इसप्रकार ताजीवन्मुक्तिके पंचप्रयोजनों के सिद्धहूए  
 प्रयोजनके अभावतैं जीवन्मुक्तिका अभाव कहना मिथ्याही है इति ॥ इसप्रकार स्वरूपलक्षण प्रमाण सा  
 धन अधिकारी फल इनपांचों के निरूपण करि कै इसचतुर्थपरिच्छेदविषे विदेहमुक्ति जीवन्मुक्ति यहदोप्र  
 कारकी मुक्ति निरूपण करी ॥ तातैं यह अर्थ सिद्ध भया ॥ ब्रह्मवेत्ता जीवन्मुक्तपुरुष भोग करि कै प्रारब्धकर्म  
 के नाश हूए तैं अनंतर इसवर्त्तमानशरीर के नाश हूए अखंड एकर स ब्रह्मानंदरूपतैं स्थित होवैहै ॥ ताब्रह्मवेत्ता  
 पुरुषका पुनः उत्थान होतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ ( नतस्य प्राणा उत्क्रामंत्यत्रैव समवलीयंते । ब्रह्मैव सन्ब्रह्मा  
 प्येति । ब्रह्मविद्ब्रह्मैव भवति ) अर्थ यह ॥ तिसज्ञानवान्पुरुषके प्राण अर्थात् लिंगशरीर मरणकालविषे इ  
 सशरीरतैं उत्क्रमण करतानहीं ॥ किंतु प्रत्यक् आत्माविषेहीं लयकूं प्राप्त होवैहै ॥ तात्पर्य यह ॥ जैसे अ  
 ज्ञानी पुरुषका लिंगशरीर इसशरीर के नाश हूए तैं अनंतर कर्मके फल भोग वासतैं परलोकविषे जावैहै ॥ तैसे  
 ज्ञानवान्पुरुषका सोलिंगशरीर परलोकविषे जातानहीं ॥ काहेतैं ताज्ञानवान्पुरुषका प्रारब्धकर्मतों  
 भोग करि कै नष्ट होइ जावैहै ॥ और संचितकर्म ज्ञान करि कै नष्ट होइ जावैहै ॥ और आगामिकर्मका ज्ञान



तत्त्वा०

॥ ३७ ॥

परि०  
४

के प्रभाव तै स्पर्श होतानहीं ॥ और अज्ञानका भी आत्मज्ञान करिके नाश होइ गया है ॥ और ते अज्ञान सं-  
चित कर्मादिकहीं पुनः जन्म के कारण होवै हैं ॥ ता कारण के नाश हुए ज्ञानवान् पुरुष का सोलिंग शरीर पुनः  
जन्म की प्राप्ति वास तै इस शरीर तै उत्क्रमण करतानहीं ॥ किंतु इस प्रत्यक् आत्मा विषेहीं लय कूं प्राप्त होवै है  
इति ॥ और सो ज्ञानवान् पुरुष जीवत् अवस्था विषेहीं ब्रह्म साक्षात्कार करिके अज्ञान के निवृत्त हुए ब्रह्म रूप हू  
आहीं प्रारब्ध कर्म की निवृत्ति तै अनंतर ब्रह्म रूप करिके स्थित होवै है ॥ और ब्रह्म वेत्ता पुरुष ब्रह्म रूपहीं होवै है  
इति ॥ किंवा यह आत्मज्ञान का मोक्ष रूप फल विष्णु पुराण विषे भी कथन कन्या है ॥ तहां श्लोक ॥ ( विभेद  
जन के ज्ञानेनाशमात्यंतिकंगते आत्मनो ब्रह्मणो भेदमसंतकः करिष्यति ॥ १ ॥ तद्वावभावमापन्नस्ततो  
सौपरमात्मनः भवत्यभेदो भेदश्च तस्या ज्ञानकृतो भवेत् ॥ २ ॥ ) अर्थ यह ॥ जीव ब्रह्म के भेद का जनक जो  
अज्ञान है ॥ ता अज्ञान का ब्रह्म साक्षात्कार करिके अत्यंत नाश हुए ता जीवात्मा के तथा ब्रह्म के असत् भेद कूं  
कौन करेगा ॥ किंतु कोई भी करेगा नहीं ॥ और ब्रह्म साक्षात्कार करिके ब्रह्म भाव कूं प्राप्त हू आ यह जीवा  
त्मा ता ब्रह्म के साथि अभिन्नहीं होवै है ॥ और इस जीवात्मा का जो ब्रह्म के साथि भेद प्रतीत होता था ॥ सो  
भेद अज्ञान कृत था ॥ ता अज्ञान के नाश हुए सो भेद भी निवृत्त होइ जावै है ॥ या तै सो ज्ञानवान् पुरुष अखंड  
एकरस ब्रह्म रूप तै स्थित होवै है इति ॥ किंवा यह उक्त फल श्रीव्यास भगवान् नैं भी ब्रह्म सूत्रों विषे कहा है ॥  
तहां सूत्र ॥ ( अस्मिन्नस्य च तद्योगं शास्ति ) अर्थ यह ॥ इस ब्रह्म वेत्ता पुरुष का इस ब्रह्म विषे अभेदहीं होवै है ॥  
इस अर्थ कूं श्रुति कथन करे है ॥ सा श्रुति यह है ॥ ( यदा ह्येवैष एतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽभयं  
प्रतिष्ठां विंदतेऽथ सोऽभयंगतो भवति ) अर्थ यह ॥ यह साधन चतुष्टय संपन्न अधिकारी पुरुष जिस काल विषे  
स्थूल सूक्ष्म कारण शरीर तै विलक्षण नित्य अपरोक्ष रूप प्रत्यक् आत्मा विषे अभय प्रतिष्ठा कूं प्राप्त होवै है ॥ तिसका

॥ २०६ ॥

लविषे सो अधिकारी पुरुष अखंड एकरस ब्रह्म भाव कूं प्राप्त होवै है इति ॥ या तै यह सिद्ध भया ॥ अहं ब्रह्मास्मि



लविषे सो अधिकारी पुरुष अखंड एकर स ब्रह्मभाव कूं प्राप्त होवै है इति ॥ यातैं यह सिद्ध भया ॥ अहं ब्रह्मास्मि  
तत्त्वमसि इत्यादिक महावाक्य जन्य अपरोक्ष ज्ञान तैं अज्ञान की निवृत्ति पूर्वक ब्रह्मभावरूप मोक्ष प्राप्त होवै है ॥  
और सो मुक्त पुरुष पुनरावृत्तिकूं प्राप्त होतानहीं ॥ अर्थात् पुनः जन्म कूं प्राप्त होतानहीं ॥ तहां श्रुति ॥ ( न  
स पुनरावर्त्तते ) अर्थ यह ॥ सो मुक्त पुरुष पुनः जन्म कूं प्राप्त होतानहीं इति ॥ यह वार्त्ता गीता विषे श्री भग  
वान् नैं भी कही है ॥ तहां श्लोक ॥ ( तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः गच्छन्त्यपुनरावृत्तिज्ञाननि  
र्धूतकल्मषाः ) अर्थ यह ॥ तिस परमात्मा विषे ही है बुद्धि तथा मन तथा निष्ठा जिनों की ॥ तथा सो परमा  
त्मा ही है परमस्थान जिनों का ॥ तथा आत्मज्ञान करिके निवृत्त होइ गए हैं सर्व पापरूप कल्मष जिनों के ॥  
ऐसे ज्ञानवान् पुरुष अपुनरावृत्तिकूं ही प्राप्त होवै हैं ॥ अर्थात् पुनः जन्म कूं प्राप्त होते नहीं इति ॥ किंवा यह उ  
क्त अर्थ श्री व्यास भगवान् नैं भी ब्रह्मसूत्रों विषे कहा है ॥ तहां सूत्र ॥ ( अनावृत्तिः शब्दादनावृत्तिः शब्दात् )  
अर्थ यह ॥ तत्त्ववेत्ता पुरुषों कूं पुनः जन्म मरण की निवृत्ति रूप अनावृत्ति ही होवै है ॥ जिस कारण तैं श्रुति स्मृ  
ति रूप शास्त्र ही इस अर्थ कूं कथन करे है ॥ तात्पर्य यह ॥ जिस पुरुष कूं तों इसी मनुष्य शरीर विषे श्रवणादिकों  
करिके ब्रह्मसाक्षात्कार की उत्पत्ति भई है ॥ तिस पुरुष कूं तों इसी मनुष्य शरीर विषे सो ब्रह्मभावरूप मोक्ष होवै  
है ॥ इसी अर्थ कूं ( यदा सर्वे प्रमुच्यंते कामायेऽस्य हृदि स्थिताः अथ मर्त्योऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्म समश्नुते ) यह श्रु  
ति कथन करे है ॥ और जे निष्काम पुरुष अहं ग्रह उपासना करिके ब्रह्मलोक कूं जावै हैं ॥ तिन उपासक पुरु  
षों कूं ता ब्रह्मलोक विषे ही ब्रह्मसाक्षात्कार होइ के ब्रह्मा के साथि मोक्ष होवै है ॥ इस अर्थ कूं भी ( ब्रह्मणा सह ते  
सर्वे संप्राप्ते प्रतिसंचरे परस्याति कृतात्मानः प्रविशंति परंपदं ) इत्यादिक स्मृति वचन कथन करे हैं ॥ और जे स  
काम पुरुष पंचाग्नि विद्यादिकों करिके ब्रह्मलोक विषे जावै हैं ॥ तिन सकाम पुरुषों कूं ता ब्रह्मलोक विषे सो ब्र



तत्त्वा०

॥ ३८ ॥

ह्यसाक्षात्कार होतानहीं ॥ याकारणतैंहीं तिनसकामपुरुषोंकी ताब्रह्मलोकतैं पुनः आवृत्ति होवैहै ॥ इ  
सअर्थकूंभी ( इमं मानवमावर्त्तनावर्त्तते । आब्रह्मभुवनालोकाः पुनरावर्त्तिनोऽर्जुन ) इत्यादिकश्रुतिस्मृति  
वचन कथनकरैहैं ॥ सर्वप्रकारतैं ब्रह्मसाक्षात्कारवालापुरुष पुनरावृत्तितैंरहित ब्रह्मभावरूपमोक्षकूंहीं प्राप्त  
होवैहै इति ॥ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वा  
मिचिद्धनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृततत्त्वानुसंधाने चतुर्थः परिच्छेदः समाप्तः ॥ ४ ॥ ॥ समाप्तोऽयं त  
त्त्वानुसंधाननामाग्रंथः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥

सर्वमुमुक्षुजनोंकूंविदितहोवै के श्रीस्वामीआदित्यगिरिकीमंडलीकेअधिष्ठाता श्रीस्वामीअच्युतानंद  
गिरिनैं एक उपनिषदसारनामाग्रंथ हिंदुस्थानीभाषाविषेकन्याहै ॥ तिसग्रंथमें ईशादिकदशउपनिषदोंका  
अर्थ संक्षेपतैंनिरूपणकन्याहै ॥ तिसउपनिषदसारग्रंथकूं तेस्वामी कोईकालविषे छपाइकैप्रसिद्धकरेंगे  
इति ॥

परि०  
४

॥ २०७ ॥



42822





DIGITIZED C-DAC

2005-2006 '11 JAN 2006

॥ इति श्रीस्वामीचिद्धनानंदगिरिकृततत्त्वानुसंधानंसमाप्तं ॥









20.4

DIGITIZED C D A C  
2005-2006

19 JAN 2006

19 JAN 2006



कोई विद्यापीठ पन्द्रह दिन से अधिक पुस्तक नहीं  
रख सकता ।

पुस्तकों पर सर्वप्रकार की विद्यानियां लगायी  
अविवेकित है ।

२०/२५  
सो. संख्या २५  
पुस्तक संख्या २५  
श्री ३५



